❖ विषय सूची ❖

क्रम संख्या	प्रकरणों के नाम	पृष्ठ संख्या
१.	अनुभूमिका	१
२.	स्वलीला अनुशीलन	१०
३.	मन्दसोर	२०
४.	उज्जैन में उत्सव	५०
५.	औरंगाबाद वृत्तान्त	५६
६.	विविध दर्शन सार	११४
७.	बुढ़ानपुर	१६८
८.	रसूल से मुनकर	१८६
९.	आकोट की बीतक	१८८
१०.	रामनगर की बीतक	२२०
११.	गढ़ा का वृत्तान्त	२६२
१२.	मिलाप	२८०
१३.	पद्मावती लीला - सुकराना	३४२
१४.	अष्ट पहर मंगलाचरण	३५२
	अष्ट पहर की सेवा शुरू	
१५.	प्रथम पहर	३८२

१६.	दूसरा पहर	४०८
१७.	राजभोग	४२८
१८.	तीसरा पहर	४५६
१९.	चौथा पहर	४७८
२०.	पाँचवाँ पहर	४९८
२१.	छट्ठा पहर	५२६
२२.	सातवाँ पहर	५६२
२३.	आठवाँ पहर	५८४
२४.	छत्तीस कारखाना	६३६
२५.	गरमी के दिनों की सेवा	६४२

उत्तरांश - तृतीय खण्ड समाप्त ।



❖ अनुभूमिका ❖

अहो! ..... श्री निजधामस्थ सुमन सुन्दरसाथजी!

यह संसार सागर अति निरस, धोखेदार, छल-कपट से भरा हुआ पुनः अविश्वसनीय, निर्दयी, दुस्तरातिदुस्तर एवम् विभिन्न अनर्थमय गुणों से युक्त है। ऐसे इस पानी के बुलबुले सदृश क्षणिक जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिनने के अवधि काल में भी मुझे आज पुनः लोकाभ्युदय गहन विषयात्मक स्व-समाज सेवा का अति सुहावना अवसर उपलब्ध हुआ है। फलतः मेरे दिमाग का सातवें आसमान में होना[1] कोई अस्वाभाविक बात नहीं है । किंतु इस जागनी के ब्रह्माण्ड में मुझ जैसे अशक्त शारीरिक अवस्थावाले व्यक्ति पर धामधनी श्री राजजी द्वारा ऐसी अहोभाग्यमय सुअवसर की प्रेरणायुक्त असीमातिअसीम अनुकम्पा होना, तो वास्तव में मेरे दीनैकबन्धो परमपूज्य धामधनी स्वरूप गुरुप्रवर बाबाजी श्री लक्ष्मीदासजी महाराज, नवतनपुरी (जामनगर) की आत्मीय प्रेरणा, अपार दया-कृपा के सिवाय अकाट्य रूपेण असम्भव है।

अतः उनकी हृदयस्थ आत्मीय प्रेरणा, असीम दया-कृपा के प्रतिफल जो कार्य आगे होने जा रहा है, उन सभी प्रतिक्रियाओं के प्रति मैं मेरे धामधनी स्वरूप श्री गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक होता हूँ और मैं अपने आपको आजीवन उनका ऋणी मानता रहूँगा। उक्त प्रकार की असीम, अपार दया-कृपा अथवा यह कहा जाय कि उनकी अदृश्य हार्दिक अनुकम्पा के कारण ही मैं ७६ साल की उम्र में अपने अंत समय में भी दम तोड़ना छोड़कर रहल-पहल एवं बची-कुची हिम्मत और ताकत बटोरकर अपने समाज-सेवार्थ फूँक से पहाड़ उड़ाने[2] जैसा कार्य अर्थात् स्वामी श्री लालदासजी महाराज कृत मूल बीतक साहेब को सवाल-जवाब के रूप में प्रकाशित कर समाज के समक्ष रखने जा रहा हूँ।

आज से पहले अपने श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-निजानन्द सम्प्रदाय में करीब २५-३० बीतकों की रचना हो चुकी है। उनमें से स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब उक्त सभी बीतकों की आधारभूता एवम् मूल बीतक साहेब है। श्री निजानन्द सम्प्रदाय में जिस प्रकार श्री प्राणनाथजी के बाद श्री

१. बड़ा घमंड करना । २. थोडी-सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना ।

लालदासजी का स्थान है, उसी प्रकार प्रणामी साहित्य में उपास्य ग्रन्थ "श्री कुलजम स्वरूप साहेब-श्री तारतम सागर" के बाद "स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब" का स्थान है। इसीलिए अन्य बीतकों में स्वामी लालदास कृत बीतक साहेब सर्वाधिक प्राचीन, पूज्य और विश्वसनीय है तथा प्रणामी समाज में इसे प्रथम दर्जे की मान्यता प्राप्त है।

आदिकाल से प्रचलित इस बीतक साहेब में कुल ७३ प्रकरण और ४३७७ चौपाइयाँ हैं। इसी बीतक ग्रन्थ के सवाल-जवाब के रूप में प्रकाशित प्रस्तुत ग्रन्थ आप लोगों के समक्ष उपस्थित है, जिसमें कुल ५४७७ सवाल-जवाब हैं। उक्त ५४७७ सवाल-जवाब को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। जैसे -

१. प्रथम खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या १२५० रहेगी और बीतक की मजल शुरूआत से लेकर सूरत की बीतक पर्यन्त आयेगी।

२. द्वितीय खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या २०१६ होगी। पुनः मजल सूरत से लेकर उदयपुर की बीतक पर्यन्त आयेगी।

३. तृतीय खण्ड में सवाल-जवाब की कुल संख्या २२११ होगी। पुनः मजल मंदसोर से लेकर अष्ट पहर की सेवा पर्यन्त अर्थात् बीतक समाप्ति तक होगी। अतः संक्षिप्त रूप में :-

(१) प्रथम भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या १२५० होगी।

(२) द्वितीय भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या २०१६ होगी।

(३) तृतीय भाग में सवाल-जवाब की कुल संख्या २२११ होगी।

अतः तीनों खण्डों को मिलाकर सवाल-जवाब की कुल संख्या (१२५०+२०१६+२२११=५४७७) पाँच हजार चार सौ सतहत्तर होगी।

उपरोक्त स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब में मुख्यतः तीन स्वरूप की बीतक आती है। इनमें से कौन-कौन से स्वरूप किस-किस कार्यार्थ आये और वे किस प्रकार इस दुस्तर संसार सागर के बीच आये निजधामस्थ समाज के साथ-साथ संसार की सर्वात्माओं को सब धान बाइस पसेरी[१] के दर्जे में रखकर शेर के मुँह में हाथ डालने[२] जैसा कार्य सम्पन्न कर गये ?

---

१. भले-बुरे को समान जानना । २. साहस का काम करना ।

वर्तमान कलिकाल गुण ग्रस्त निजानन्दी-प्रणामी प्रचारकों को श्रीमन्निजानन्द-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म सिद्धान्त अन्तर्गत इस मान्यता को ध्यान में लेकर चलना जरूरी और अनिवार्य देखने में आ रहा है। क्योंकि हमारा धर्म सिद्धान्त टकसाली बात करनेवाले[१] प्रचारकों को मान्यता देता है, न कि बकवादी एवम् धर्म का दाना बिगाड़नेवाले नामधारी प्रचारकों को! अतः श्री लालदास कृत बीतक साहेब में स्थित, "तीन स्वरूपों की बीतक" विषय को निम्न प्रकार से समझने पर टट्टी की आड़ में शिकार करने[२] के प्रतिफलरूपी पाप-अपराध से बच सकते हैं। जैसे -

१) **"पीउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप"**

- (श्री प्रकाश हिन्दी, प्र.१७/चौ.९)।

पीउ (मूल मिलावेवाले धनीजी का जोश) व्रज में, रास में और जागनी के ब्रह्माण्ड के तीन स्वरूप के रूप में ब्रह्मात्माओं को खेल दिखलाने हेतु पाँच बार पञ्चभौतिक शरीर धारण कर संसार में आये। मूल मिलावेवाले श्री राजजी ने इन ब्रह्माण्ड के कार्यकलाप का मुद्दार भी इन तीन मर्द स्वरूपों के ऊपर ही सौंपा है। जैसे -

"मरद तीनों पर है मुद्दार"

पुनश्च -

२) **"ए तीनों सूरत हैं एक,सो रसूल तीनों सरूप बिसेक"**

- (श्री बड़ा कयामतनामा, प्र.१२/चौ.२)।

अतः तीनों स्वरूप-बसरी, मलकी और हकी में से बसरी स्वरूप ***"रास खेलके आये बरारब स्याम"*** अर्थात् बरारब-अरबवाले तृतीय श्याम स्वरूप मुहम्मद साहेब हैं। पुनः मलकी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और हकी स्वरूप श्री मेहराज अर्थात् महामति श्री प्राणनाथजी हैं। यसर्थ हे मेरे आत्मीय बन्धुओं, धामस्थ दोस्त अथवा निजानन्दी - प्रणामी प्रचारकों! अपने दिमाग को थोड़ी-सी कसरत कराना जी। आप लोग व्यर्थ में आकाश में छेद करने[३] जैसी हिम्मत क्यों करने लगे हो? वह भी श्री सद्गुरु और महामति स्वरूपों

१. प्रामाणिक बात करना। २. धूर्तता से छिपकर कार्य साधना; छिपकर पाप करना।
३. बड़ी चालाकी दिखलाना।

के खिलाफ? वाह रे वाह! मेरे मित्र बन्धुओं!! तारतम वाणी के इलमी कहलाकर ऐसा? अपनी-अपनी आँखों से निहारकर निम्नोक्त प्रमाण देख लीजिये न !

३) बसरी मलकी और हकी, ए तीनों के जुदे खिताब।
एक फुरमान ल्याई दूसरी कुंजी, तीसरी खोले किताब।।

- (श्री छोटा कयामतनामा, प्र.१/चौ.८)।

श्री श्यामाजी के तीनों स्वरूपों-बसरी, मलकी और हकी को अलग- अलग प्रकार की शोभा (उपाधियाँ) प्राप्त हुई हैं। अतः किससे प्राप्त हुई? मूल मिलावेवाले श्री राजजी से। उनमें से एक परमात्मा (श्री राजजी) का सन्देश लेकर आए, दूसरे ने तारतम ज्ञानरूपी कुंजी प्रदान की, तो तीसरे ने सभी धर्मग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को स्पष्ट किया।

अतः उक्त तीनों मर्द स्वरूपों-बसरी-मुहम्मद साहेब, मलकी-श्री सद्गुरु देवचन्द्रजी और हकी-श्री मेहराज (महामति श्री प्राणनाथजी) को इस जागनी के ब्रह्माण्ड में किन-किन कार्यों का श्रेय अथवा खिताब मिला? अतः बसरी स्वरूप को ला, इल्लाह अर्थात् क्षर, अक्षर से परे इलिल्लाह-अक्षरातीत ब्रह्मधाम खुदा के अर्शरूपी लक्ष्य को संसार में अवतरित करने का तथा वहाँ के लोगों को शरीअत के मार्ग पर चलाकर इंसानियत की मर्यादा का पालन कराने का, पुनः ब्रह्म एवम् ब्रह्मात्माओं के दूसरी बार स्वप्निक जगत्-खेल में आने विषय की साक्षी रखने का खिताब अथवा श्रेय मिला। मलकी स्वरूप-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी को हकीकत-वास्तविकता अथवा वास्तविक ब्रह्म को इंगित करनेवाला ब्रह्म मंत्र-तारतम ज्ञान खेल में अवतरित कर उस ब्रह्मज्ञानाधार प्रथम स्वरूप द्वारा दिए हुए लक्ष्य में पहुँचाने का, प्रेम-सेवारूपी भक्ति-मार्ग जाहिर करने का खिताब-श्रेय मिला। पुनः हकी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी को विज्ञान दर्जे के तारतम-मारफती ज्ञान के माध्यम से सृष्टि के सारे धर्मग्रन्थों के गुह्य-गोप्य अथवा सांकेतिक बातुनी भेदों को खुलस्त कर तीनों सृष्टियों को एक अद्वैत ब्रह्म के चरणों में दृढ़ विश्वास दिलाकर मायावी भूमिका से परे बेहद स्थित अक्षर-अक्षरातीत ब्रह्म के चरण तले सच्चिदानन्दमय भूमिका में पहुँचाने अथवा अखण्ड मुक्तिस्थान में अखण्ड करने का खिताब-श्रेय प्राप्त हुआ। इतना ही नहीं, जड़-चेतन की मुक्ति का विधान जाहिर करने का खिताब अथवा श्रेय भी उन्हीं को दिया गया। अतः

उक्त तीनों स्वरूपों को उक्त भिन्न-भिन्न कार्यों का खिताब-श्रेय दिया तो, किसने? स्वयं मूल मिलावेवाले अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी ने! इस प्रकार की गुह्य वास्तविकता को समझे बिना श्री राजजी के आदेश के विरुद्ध आत्मघातरूपी प्रचार-प्रसार करके मेरे निजानन्दी-प्रणामी प्रचारक बन्धु धर्मस्थान एवम् धर्म सिद्धान्त विरुद्ध जीवन यापन कर अन्त में कहाँ प्रस्थान करने के लिए कमर बाँध रहे हैं? हे मेरे मित्रगणों! आकाश-पाताल एक करके[9] भी जघन्य अपराधरूपी कार्य में क्यों प्रवृत्त होते हो? अतः आप प्रचारकों से विनयपूर्वक कहता हूँ कि कृपया धर्म-सिद्धान्त द्रोही साबित होने से पहले ही अपनी-अपनी आँखों में तारतमरूपी चश्मा पहनकर निम्नोक्त चौपाई प्रमाण के रूप में देख लीजिये न! जैसे-

४) बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत।
ए तीनों महंमद की, बीच अरस वाहेदत ।।

-(श्री मारफत सागर, प्र.१४/चौ.८५)।

अरे मेरे आत्मीय बन्धुओं! अथवा वर्तमान तारतम ज्ञान के नामधारी निजानन्दी इलमियों!! *"बसरी मलकी और हकी, ए तीनों एक सूरत"* कहा, अतः किसकी एक सुरत? पुनः अर्श वाहेदत के मुहम्मद कौन हैं? अतः उनकी तीन सूरतों (स्वरूपों) को अलग करनेवाले सिद्धान्तद्रोही क्या वाणी-बीतक के दुश्मन तथा श्री राजजी के ही द्रोही नहीं होंगे? अहो मेरे धामस्थ आत्माधार सम्बन्धी निजानन्दी-प्रणामी धर्मप्रचारकों! बिचारा समाज जैसे उस समय निजानन्दाचार्य श्री सद्गुरु और महामति श्री प्राणनाथजी के आश्रय पर निर्भर था, वैसे ही आज का समाज आप लोगों पर आश्रित तथा निर्भर है। अतः क्या आप वर्तमान समाज को उन दोनों सिद्धान्त प्रदत्त महापुरुषों के सिद्धान्त से विमुख बनाकर धुन्धुकारी-परीक्षित मार्ग पर जबरदस्ती घसीटकर दौड़ाने से मूल मिलावेवाले श्री राजजी स्वरूप की नजर में एक कर्त्तव्यपरायण सच्चे धर्मप्रचारक साबित हो पायेंगे? अतः निम्नोक्त चौपाई भी देख लीजिये। जैसे -

५) रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्ला कलाम ।
बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी ।।

-(श्री बड़ा कयामतनामा, प्र. ५/चौ. ३७)।

---

9. बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जाँच-पड़ताल करना ।

रसूल-मुहम्मद साहेब, रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और इमाम-महामति श्री प्राणनाथजी-ये तीनों ही मूल में एक ही स्वरूप हैं। इस बात की साक्षी अल्लाह कलाम-श्री मुख बानी है। उक्त तीनों ही बसरी, मलकी और हकी स्वरूप हैं। जागनी के ब्रह्माण्ड में ये तीनों स्वरूप ही अक्षरातीत ब्रह्म-श्री राजजी के प्रेमरूपी अमृत को तारतम ज्ञान के माध्यम से तीनों सृष्टियों को पिलानेवाले हैं और पिला रहे हैं।

अरे मेरे प्रियात्माओं में भी अग्रगण्य, निजानन्दी-प्रणामी धर्म-प्रचारकों! हाय रे हाय!! श्री राजजी के हुकम-आदेश के स्वरूपयुक्त श्री श्यामाजी का ही अंग भंग करना और अपने ही सिद्धान्त विरुद्ध समाज-द्रोही बनकर धाम में मुँह दिखाने का दावा भी करना? वाह रे वाह!! "हम तुम एक बतन के" हैं, इसलिए सविनय हाथ जोड़ता हूँ कि अपनी आत्मा के उद्धार के लिये श्री लालदास कृत बीतक साहेब के अष्ट-पहर के मंगलाचरण की चौपाई नं. १९ को अच्छी तरह से निहारकर देखिये जरा क्योंकि आप लोग बाणी-बीतक को मानने और सद्गुरु तथा महामति को जाननेवाले कहलाते तो हो, परन्तु किसके आधार पर मानते तथा जानते हो, यह भी विचारणीय है न? अतः

६) बसरी मलकी और हकी, ए हुकम तीन सूरत ।
तिन दई हैयाती दुनी को, करी सैयन वास्ते सरत ।।

बसरी-मुहम्मद साहेब, मलकी-श्री देवचन्द्रजी तथा हकी-श्री मेहराज ठाकुर (महामति श्री प्राणनाथजी), ये तीनों परब्रह्म श्री राजजी के आदेश के स्वरूप हैं। इन स्वरूपों ने संसार के लोगों को अखण्ड मुक्ति प्रदान की। इनमें से हुकम के स्वरूप ने ब्रह्मात्माओं के संसार में प्रकट होने की भविष्यवाणी की थी।

अतः वर्तमान अग्रगण्य तारतम ज्ञान के निजानन्दी-प्रणामी धर्म-प्रचारकों! मैं इसलिए आप लोगों को सचेत कर रहा हूँ कि कहीं आप लोग जिस हाँडी में खा रहे हैं, उसी में छेद तो नहीं कर[9] रहे हैं न ? वर्तमान समाज के कर्णधार विशिष्ट धुरन्धर ब्रह्मज्ञानज्ञ- तारतम ज्ञानज्ञ मेरे आत्मीय दोस्तों! मैं तो आप लोगों के चलन-व्यवहार, धर्म प्रचार-प्रसार को देख-सुनकर

9. उपकार के बदले अपकार (अवगुण) करना ।

चक्कर में पड़ा हुआ हूँ। यसर्थ आप जैसों के समक्ष प्रश्न कर रहा हूँ। मैं अपनी धृष्टता के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। किंतु हे धुरन्धर अथवा विशिष्ट विद्वानों! मैं श्री मारफत सागर प्र. १३ की चौ. १२ से डरता हूँ, जहाँ कहा है कि, *"तो कह्या जलना याको होए"* परब्रह्म सम्बन्धी ब्रह्मात्माओं का दावा लेनेवाले ये सभी जीवों को उनके दावा लेने मात्र से अथवा इस जघन्य अपराध के कारण नरक की अग्नि में जलना पड़ेगा, तो सिद्धान्तद्रोही, श्री राजजी-द्रोहियों की कौन-सी गति होगी?

पुनः श्री बड़ा कयामतनामा ग्रंथ के प्र.८ की चौ. ४० को देखकर आप प्रचारकों के प्रति दया-भाव भी उत्पन्न होता है, जहाँ कहा है कि -

जो सके ना सांच कर, सो जले दोजख माहें काफर ।
भिस्त दोजखी दूरथें देखें, त्यों त्यों जलें आप विसेखें ।।

जो लोग अन्तिम समय में अवतरित परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथजी के सिद्धान्त को नहीं मानते हैं, वे नास्तिक सिद्धान्तद्रोही लोग नरक की आग में जलते हैं। मुक्तिस्थलों में रहनेवाली मुक्तात्माओं के सुखों को दूर से देखकर वे सिद्धान्तद्रोही और अधिकाधिक रूप से नरकाग्नि में सन्तप्त होते रहते हैं।

अतः मुझे दुःख हो रहा है क्योंकि जीवन भर के शुभाशुभ कर्म का फल, तो धर्म सिद्धान्त देनेवाले स्वरूप के हाथ में ही है न! उक्त चौपाई के आधार पर यहाँ एक जमात निजानन्द सिद्धान्त हम रहे। अंततः हममें से कोई धाम में, तो कोई नरक में होंगे, तो? जब एक दूसरे में परस्पर चार आँख होगी, तब नरकवाले कैसे नरकाग्नि की बढ़ती ताप सहन कर सकेंगे तथा धाम (भिस्त) वाले उनकी गतिविधि को देखकर कैसे अपने आप को सँभाल सकेंगे?

यसर्थ *"एक मिलाय खोल दीजिए, ए वस्तु पावे तब"* के अनुसार उक्त सभी चौपाइयों का मिलान कर अभी-इसी वक्त सतर्क हो जाने में ही आप सबका कल्याण देखकर मैं अर्ज कर रहा हूँ। देखिये तो भी मेरे लिये नहीं, बल्कि अपनी-अपनी आत्मा के लिये ही देखने का कष्ट करें। अभी यहाँ मात्र छः प्रमाण दिए गए हैं। जरूरत पड़ने पर अनगिनत

और कइयों प्रमाण दिए जा सकते हैं। किंतु आशा करता हूँ कि उक्त प्रमाणों के द्वारा ही अपनी आत्मा का कल्याण करने की ओर अग्रसर होंगे एवम् मुझे पुनः कष्ट उठाना नहीं पड़ेगा।

लक्ष्यबोध करानेवाला उक्त आत्मीय ज्ञान निजधामस्थ आत्माओं के जीवन में अत्यधिक उपयोगी साबित होगा। अतः उक्त तीनों स्वरूपों के जीवन-यात्रा विषयक ज्ञान ब्रह्मात्माओं के लिए जीवन यापन में अवर्णनीय रूपेण फलदायक सिद्ध होगा, इस बात में किंचित् मात्र भी शंका की गुंजाइश नहीं है क्योंकि इन स्वरूपों ने आत्मा के तरण-तारण के लिए साधक को जिन-जिन विषय-वस्तुओं को हृदयाङ्गम करना जरूरी होता है, उन्हें समाज के समक्ष शरीर से कलेजा निकालकर रख देने सदृश समर्पित कर दिया है। अतः उक्त बातों को हृदयाङ्गम कर सृष्टि की सर्वात्माएँ अपनी आत्मा को एक के तीन बनाने[1] की होड़ से बचा सकती हैं और निःशंक बनकर लक्ष्य में पहुँच सकती हैं।

इन तीन महानातिमहान पुरुषों के वास्तविक लक्ष्यबोध ज्ञान का अनुकरण कर निजधामस्थ उन आत्माओं को, जो संसार सागर में भूली-भटकी, मारी-मारी फिर रहीं हैं, अवश्यमेव ही अपने धनी के कदम पर कदम रखकर चलने का प्रेममय आह्वान प्राप्त होगा और "यथा नाम तथा गुणः" चरितार्थ तुल्याने में वे अवश्यमेव कामयाब हो सकेंगी। जैसे -

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।

-(श्री सिनगार, प्र. २३/चौ.६२)।

उक्त स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब को हमारे निजानंदी -श्री कृष्ण प्रणामी समाज में स्वयं साध्य स्वरूप हमारे इष्ट द्वारा ही कथित रचना का दर्जा एवम् महत्त्व प्राप्त है। इसीलिए उक्त बीतक साहेब के प्रत्येक प्रकरण के अंत में महामतिजी की छाप दिखाई पड़ती है। अतः जिस प्रकार निष्कलंक बुद्धावतार महामति श्री प्राणनाथजी द्वारा प्रदत्त श्री मुखवाणी - श्री कुलजम स्वरूप साहेब और स्वामी श्री लालदास कृत बीतक साहेब उनके तत्कालीन समाज के लिए नहीं थी, क्योंकि वे स्वयं श्री मुख

१. अनुचित लाभ उठाना।

वाणी में कहते हैं, *"चरने हैं सो तो आए सही, पर पिछले कारन ए बानी कही"* - (श्री प्रकाश हिन्दी, प्र.३४/चौ.२०), उसी प्रकार मुझ कालबूत द्वारा हो रहा यह प्रकाशन कार्य मेरे समकालीन वर्तमान मात्र जीभ चलानेवाले समाजार्थ हरगिज़ नहीं है क्योंकि ये लोग तो सत्तू बाँधकर मेरा पीछा करना[१] छोड़ते नहीं हैं।

तथापि समाज भले जूते की नोक पर मारना[२] न छोड़े, मेरे कार्यों में टाँग अड़ाने का धर्म पालन करते ही रहे, फिर भी मेरी ओर से उन्हें यही आशीर्वाद है कि वे मेरे कलेजे को मसलना[३] कभी न छोड़ें, हमेशा मसलते ही रहें क्योंकि संसार-समाज में यही तो प्रसिद्ध रूपेण प्रचलित है कि गधा खेत खाय, जुलाहा मारा जाय[४] !

अन्ततोगत्वा वर्तमान समकालीन निजानन्दी-प्रणामी समाज समक्ष सविनय निवेदन करता हूँ कि आप लोग मेरे परमार्थी कार्यों के विषय में एक का एक खाये जाने[५] का स्वधर्म तुरन्त परित्याग दें। छट्ठी के दिन भाग्यविधाता ने उनके नसीब में मेरे कार्यकलाप में मदद पहुँचाने का लिखा ही न हो, *"सुख ताले लिख्या नाहीं"* तो वे बिचारे क्या करें? अपितु मेरी धामस्थ दिलदार आत्माएँ-सखियाँ तो जरूर ही इन ग्रन्थों से लाभ उठायेंगी और इन ग्रन्थों की जतन-इज्जत भी करेंगी।

इस प्रकार के मनोवांछित अधूरे-मधुरे भरोसे के साथ मैं अपनी कलम बन्द करने जा रहा हूँ। आशा है, इन बातों पर मेरी धामस्थ दिलदार सज्जन श्रद्धा सुमन आत्माएँ विचार-विवेक जरूर करेंगी।

सुज्ञेषु किं बहुना

दिनांक १७/१२/२०१३

लेखक-

दीनदयाल।

---

१. बुरी तरह से परेशान करना। २. अति तुच्छ समझना। ३. हृदय को चोट पहुँचाना। ४. अपराध कोई करे और दण्ड किसी दूसरे को दिया जाय। ५. आपस में द्वेष करना।

❖ स्वलीला अनुशीलन ❖

धर्मप्रेमी धामस्थ अद्वैत दिलवाली आत्माओं ! जागनी के ब्रह्माण्ड का अत्यधिक सुहावना अवसर हमें प्राप्त हुआ है। पुनः इस उत्तमातिउत्तम साधनयुक्त ब्रह्माण्ड में प्राप्त मानव जीवन को सार्थक बनाने हेतु ब्रह्मज्ञान-तारतम ज्ञान ग्रन्थ भी अपने हाथ में ही है। किंतु श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त - श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत प्रचारकों द्वारा वर्तमान समाज की आत्माओं का कल्याण-उद्धार तभी हो सकेगा, जब वे स्वयं सिद्धान्त प्रदत्त महापुरुषों - सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी के सैद्धान्तिक धर्म-मार्ग पर चलें और सामाजिक आत्माओं को भी चलावें।जैसे -

चलना हादी के पीछल, रखना कदम पर कदम ।
आदमी चले न चाल रूह की, इत दुनी मार न सके दम।।

-(श्री सिनगार, प्र. २३/चौ.६२)।

अरे प्रिय धामस्थ आत्माओं! हादी-सद्गुरु के सिद्धान्त को छोड़कर मनमानी चलनेवालों को कदम पर कदम रखकर चलनेवाला थोड़े ही कहेंगे। आप सब जरा सिद्धान्त विषय देखकर ब्रह्मात्माओं की चाल चलें, न कि दुनियाई दम भरें। हे मेरे धामस्थ दोस्तों! आप सबके दिमाग में यह बात यथातथ्य क्यों नहीं आती कि सूरज धूल डालने से नहीं छिपता[1]। अतः सैद्धान्तिक बात तो सैद्धान्तिक ही है। वह अविकल्प एवम् अकाट्यरूपेण रहेंगी। मेरे निजानन्दी धर्मप्रचारक दोस्तों! श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त कलियुगी वि.सं. १६७८ में प्रकट हुआ है और श्रीमद्भागवत ग्रन्थ द्वापर युग की रचना है। अतः वेदों से लेकर श्रीमद्भागवत तक के तमाम धर्मग्रन्थ सृष्टि मात्र की मानवात्माओं की जिस कमी को दूर न कर सके, उस कमी को दूर करने के लिए ही श्रीमन्निजानन्द धर्म सिद्धान्त प्रकट हुआ है। इस विषय में श्रीमन्निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी को तारतम प्रदान करते समय स्वयं श्री राजजी ने श्यामजी के मंदिर में क्या कहा था? क्या आप नहीं जानते? अतः आप लोग जरा अपनी अँतड़ियों को टटोलकर[2] ध्यान देकर निम्न प्रामाणिक चौपाई पर विचार-विवेक कर

---

१. नीचों की दुष्टता से भले आदमियों का गुण नहीं छिपता ।

२. भेद या रहस्य का पता लगाना ।

लीजिये, जो स्वयं श्री राजजी-तारतम देनेवाले स्वरूप ने हादी-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी से कहे थे। जैसे-

यह भागवत कागद तुम्हारा, ए तुम्हें खुले कलाम ।
और कोई ना खोल सके, ए जो खलक आम ।।

-(श्री लालदास कृत बीतक साहेब, प्र.६/चौ.३२)।

अर्थ :- यह भागवत ग्रन्थ तुम्हारा ही पत्र है। इसमें निहित ब्रह्मज्ञान के शब्द एवम् गूढ़ रहस्य तुम्हें ही स्पष्ट होंगे। चौदह लोकों के भले सभी जन मिलें, किंतु इसके रहस्य एवम् वास्तविकता को वे प्रकट नहीं कर सकेंगे क्योंकि तुम्हारे सिवाय कोई अन्य इसे समझ सकें, तभी तो खोलकर प्रकट कर सकेंगे।

इसलिये उक्त प्रामाणिक चौपाई के रहस्य को समझकर हे मेरे आत्मीय दोस्तों! अभी इस विषय में सचेत हो जाइये, जिससे अन्त काल धाम चलते समय छाती चौड़ी करके चलने[1] के बदले, सिर पकड़कर रोना[2] न पड़े। यसर्थ मैं हाथ जोड़कर आग्रह करता हूँ कि शीघ्रातिशीघ्र आत्मघाती मार्ग छोड़कर अपना सैद्धान्तिक मार्ग अपना लीजिए। मेरे प्रिय मित्रों! श्रीमद्भागवत ग्रन्थ विषय में "शास्त्र श्रवण श्री भागवत"-ऐसा क्यों कहा? इस विषय में गहनतापूर्वक विचार-विमर्श करो। गहनतापूर्वक विचार-विवेक करने पर विवेकशील आत्माएँ अवश्य समझ जायेंगी कि एक तो भागवत में "अद्वैत ब्रह्म नाम" को अविकल्प रूपेण निश्चित कर बताया गया है। जैसे-

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम्।
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ।।

-(श्रीमद्भागवत, स्कन्ध १०/१४-३२)।

अर्थ :- अहो! नन्द आदि व्रजवासी गोपों के धन्य भाग्य हैं। वास्तव में वे ही अहोभाग्यशाली हैं क्योंकि परमानन्द स्वरूप सनातन परिपूर्ण ब्रह्म आप, उनके अपने सगे-सम्बन्धी और सुहृद हैं।

इस ग्रन्थ की दूसरी विशेषता है - मिथ्या स्वप्निक सृष्टि विषय में देवर्षि श्री नारद मुनि द्वारा वेदव्यासजी को दिया हुआ "चतुः श्लोकी

१. निर्भय होकर चलना। २. बड़ा पश्चात्ताप करना ।

भागवत", जिसमें स्वप्निक ब्रह्माण्ड से जागृत ब्रह्माण्ड की ओर तथा नाशवन्त ब्रह्माण्ड से अविनाशी ब्रह्माण्ड बेहद भूमिका की ओर इशारा किया गया है। अतः महामति श्री प्राणनाथजी इस विषय को स्पष्ट रूप से दिखाते हुए कहते हैं कि हे मुमुक्षु आत्माओं!

अस्कंध बीजो मुनिए कह्यो, चत्रसलोकी जांहे।
ब्रह्मांडनी जिहां उतपन, अरथ जुओ तांहे ।।

-(श्री प्रकाश गुजराती, प्र. ३१/चौ.६६)।

तीसरी विशेषता यह है कि वेदव्यासजी को समझाते हुए नैष्ठिक ब्रह्मचारी देवर्षि नारद मुनि कहते हैं कि हे वेदव्यासजी! अद्वैत ब्रह्म श्री कृष्ण नाम बिना के धार्मिक नामधारी थोथे ज्ञानयुक्त साहित्य तो, कौवे का तीर्थरूप हैं। जैसे -

"तद्वायसं तीर्थमुशन्ति मानसाः
न यत्र हंसा निरमन्त्युशिक्षयाः।"

अतः कौवे के तीर्थरूपी थोथे ज्ञान में मानसरोवररूपी पचीस पक्ष में विहार करनेवाली तारतम ज्ञान की समझ प्राप्त परमहंसरूपी ब्रह्मात्माएँ कभी रमण-भ्रमण अथवा क्षणिक जीवन के अमूल्य समय को व्यर्थ बरबाद नहीं करेंगी। उक्त त्रिविध विशेषताओं के कारण ही "शास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्धि जागृत को ज्ञान" कहा है। परन्तु ब्रह्मनाम मात्र से आत्मा जागृत नहीं होती। यसर्थ अपनी आपबीती लीला से आत्म-जागृत करने हेतु कहते हैं कि -

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग ।।

- (श्री कलश हिन्दी, प्र.२३/चौ.१)।

अर्थ :- हे सुन्दरसाथजी! अब आप लोग जागृत होकर इस जागनी के सुख को देखिये। यह जागनी का सुख सुहागिनियों के लिये ग्रहण करने योग्य है। तीनों लीलाओं-ब्रज, रास तथा जागनी का ब्रज अर्थात् नवतनपुरी में सद्गुरु स्वरूप द्वारा की हुई ३४ साल की आड़ीका लीला एवम् चौथी-परमधाम पचीस पक्ष की लीला को इस जागनी के ब्रह्माण्ड में जानकर-

समझकर अनुभव करना ही आत्म-जागृति का सुख प्राप्त करना है।

अतः हे मेरे धामस्थ एकात्मरूप दोस्तों! ठण्डे दिमाग से विचार-विवेक करो। अपने अन्दर के अक्ल के दुश्मनपना को तिलाञ्जलि देकर आप सब अक्ल के पुतले[1] साबित होना क्यों नहीं चाहते? जरा विचार-विवेकशील दृष्टि से निहारकर धर्म सिद्धान्त की ओर देखिये तो कि महामति स्वरूप ब्रह्मलीला के विषय में ब्रह्मात्माओं को इशारे से क्या कह रहे हैं। जैसे - हे ब्रह्मात्माओं!

व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण।
ए पगलां सरवे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण ।।

-(श्री रास ग्रन्थ, प्र.४/चौ.११)।

अर्थ :- व्रज लीला हमारी लीला है, जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। नरसैयाँ के वचन इसके साक्षी हैं। हे ब्रह्मात्माओं! यदि आप जानना चाहती हो, तो यह हमारा अपना ही मार्ग है। देखकर सावधानीपूर्वक इसे शिरोधार्य करो।

अतः यह बात विचारणीय है कि यदि भागवत ग्रन्थान्तर्गत वर्णित व्रज लीला मनन करने योग्य थी, तो श्री मुख बानी में *"व्रजलीला अति मोटी छे, जो जो शुकजीनां वचन प्रमाण"* ऐसा क्यों नहीं कहा गया? इसके बदले *"जो जो नरसैयां वचन प्रमाण"* क्यों कहा गया? अहो! वर्तमान समाज के धुरन्धर विद्वानों!! क्या अब भी आप लोगों पर भागवतरूपी सनक सवार होने[2] में कुछ शेष बचा है? ठण्डे दिमाग से विवेचन कर लीजिये, जिससे समाज भी पथभ्रष्ट होने से बचे और आप लोगों के लिए भी अन्तकाल में अंग-अंग मुसकराते[3] हुए श्री राजजी के आगे मुख दिखाने का रास्ता सुरक्षित रहे। पुनश्चः-

रास नरसैए रे नव वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह ।
चरण पसाए रे वालातणे, तमे सांभलो कहुं हुं तेह ।।

-(श्री रास ग्रंथ, प्र.५/चौ.२)।

अर्थः- भक्त नरसैयाँ ने रासलीला का वर्णन नहीं किया। मेरे मन

---

१. बड़ा बुद्धिमान् पुरुष । २. बुद्धि भ्रष्ट होना । ३. अति प्रसन्न होना ।

में यह इच्छा है कि मैं अपनी उस लीला का वर्णन करूँ। सद्गुरु धनी के चरणों के प्रताप से मैं रास लीला का वर्णन करता हूँ। हे ब्रह्मात्माओं! आप अपनी आपबीती लीला को ध्यानपूर्वक सुनिये क्योंकि हमारी अपनी रास लीला राजा परीक्षित के शंकापूर्ण प्रश्न के कारण शुकदेवजी द्वारा वर्णन नहीं हो पाई। जैसे -

अ) "प्रश्न चूक्यो भयो अजान, रास लीला ना बरनवी परवान।"
ब) "मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो।"
क) "सो केहेनेवाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या।"
ड) "पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया बचनके रोस।"
इ) अब सुकजीके केती कहूं बान,
सार काढने ग्रह्यो पुरान ।
सबको सार कह्यो ए जो रास,
ए जो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास ।।

-(श्री प्रकाश हिन्दी, प्र. ३३/चौ. १२, १३, १८, २२,२५)।

अर्थ :-अ) राजा परीक्षित भूलकर प्रश्न कर देने के कारण रास लीला के आनन्द से वञ्चित रह गया। इस प्रकार रास लीला का वर्णन न हो पाया। ब) अब मैं पहले की भाँति योगी का योगी ही रह गया और तू भी मात्र राजा ही रह गया। इस प्रकार रास लीला के सुखानन्द का वर्णन नहीं किया जा सका। क) हे राजन! मेरी अन्तरात्मा में विराजमान होकर कोई शक्ति मुझसे ये बचन कहला रही थी। अब वह शक्ति चली गई और मैं यहाँ अकेला ही बैठा रह गया। ड) रास लीला का वर्णन तो परब्रह्म परमात्मा के आवेश से हो रहा था। वह आवेश राजा परीक्षित के शंकापूर्ण प्रश्न के कारण शुकदेव मुनि के क्षुब्ध हो जाने पर उतर गया। इ) शुकदेवजी की वाणी की अब मैं कितनी चर्चा करूँ? उसका सार निकालने के लिए ही मैंने श्रीमद्भागवत की चर्चा की है और पूरे भागवत ग्रन्थ का सार यह "रास लीला" है, जिसका प्रकाश (विस्तार) श्री इन्द्रावती के मुख से (श्री रास ग्रन्थ के माध्यम से) हुआ।

अतः वर्तमान युग के श्री निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-

प्रचारकों! उपरोक्त चौपाइयों के आधार पर काल कवलित होने[1] से पहले ही शीघ्रातिशीघ्र स्व-आत्म-जागृति के साधन पर विचार-विवेक कर लीजिये। इस तरह न आव देखना न ताव[2] और औंधी खोपड़ी के[3] मनुष्य का-सा जीवन व्यतीत करना जागनी के ब्रह्माण्ड के अहोभाग्यमय जीवन प्राप्त बुद्धिजीवियों के लक्षण नहीं हैं। हे मेरे मित्रगणों! जो धामस्थ आत्माएँ खेल में आकर धाम, धनी और अपने आपको विस्मृत कर बैठीं हैं, उनकी जागनी परमधाम का अंकुर होने के कारण उनकी आपबीती लीलाओं द्वारा ही होगी। आप लोगों की अक्ल पर पत्थर पड़ने[4] के कारण ही आप स्वधर्म प्रचारक-अग्रगण्य होते हुए भी निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी समाज को दूसरों की मायागुण ग्रस्त जैसे श्रीमद्भागवत में वर्णित स्वर्ग के देवताओं के (१) गुरु बृहस्पतिजी का अपने भाई उतथ्य की गर्भवती पत्नी ममता द्वारा बलपूर्वक गर्भाधान कराकर भारद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न कराना (२) चक्रवर्ती सम्राट राजा ययाति का एक हजार वर्ष तक विषयों को भोगने-कामासक्त रहने पर भी विषय भोगों से अतृप्त रह जाना (३) पुनः चित्ररथ के पुत्र शशबिन्दु का अपनी दस हजार पत्नियों द्वारा प्रत्येक से लाख-लाख सन्तान उत्पन्न कर एक अरब सन्तान का विस्तार करने जैसी कथाओं के मण्डान में जबरदस्ती घसीट रहे हैं। उक्त विषय लम्पट देवगुरुओं, सम्राटों की आपबीती कहानी के माध्यम से आप प्रचारकगण निजानन्दी - श्री कृष्ण प्रणामी समाज को परमधाम ले जा रहे हैं या नर्क में पहुँचा रहे हैं? अरे प्रचारकों! उक्त प्रकार का मायावी विषययुक्त ज्ञान सुनाते हुए आह्वान करना कि "श्रीमद्भागवत श्रवण से ही परमधाम जाते हैं।" अरे बकवादियों !! क्या आप भागवत श्रवण से ही परमधाम (अक्षरातीत धाम) गये किन्हीं एक-दो व्यक्तियों के नाम गिनवा सकते हैं ? यदि नहीं, तो इस तरह कहते हुए गधे की-सी चिल्लाहट करना, यह कैसी विडम्बना है?

आपकी अपनी अक्ल पर पत्थर पड़ने के कारण ही आप थोथे ज्ञान के आधार पर "श्रीमद्भागवत श्रवण से ही परमधाम जाते हैं" इस प्रकार का आह्वान करते फिर रहे हो। अपने सैद्धान्तिक ज्ञान विषय अँतड़ियाँ टटोलने की शक्ति न पहुँच पाने पर दूसरों की आपबीती कहानी लेकर उक्त प्रकार का आह्वान करते फिरने में क्या आपको जरा-सी भी शर्म नहीं

---

१. मृत्यु को प्राप्त होना। २. सोच विचार कुछ भी न करना।
३. परम मूर्ख मनुष्य। ४. भले-बुरे का ज्ञान न होना, मति भ्रष्ट या विवेकरहित होना।

आई? तथापि अन्त काल सामने आने पर खोपड़ी रँगाना[1] न पड़े, ऐसे धर्म मार्ग पर चलने के लिए सप्रेम आग्रह करता हूँ।

अरे जागनी के ब्रह्माण्ड की जागृत आत्माओं! आप सब धर्म-प्रचारकों के दर्जे में हैं। यसर्थ पूछता हूँ कि श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त में प्रणामी धर्म समाज के आत्माओं की जागनी कौन-सी लीलाओं के माध्यम से करने का आह्वान किया गया है? उपरोक्त चौपाई में वर्णित चारों लीलाओं में से ब्रज और रास लीला के विषय में स्पष्ट रूप से क्या इशारा किया गया है? अतः हमारे जागनी कार्य विषय में वशिष्ठ सार और श्रीमद्भागवत ग्रन्थ दृष्टान्त रूप में हैं, जिसमें वर्णन किया गया है कि क्रमशः किस प्रकार भगवान श्री रामचन्द्रजी को गुरु वशिष्ठजी ने रामचन्द्रजी की ही पूर्व आपबीती लीला से और भगवान विष्णु ने ब्राह्मणरूप धारण कर भक्त मारकण्डेय ऋषि को धोबिन रूप में उनकी ही पूर्व आपबीती लीला श्रवण कराकर जागृत किया था। उपरोक्त दोनों तथ्य निजानन्दी-श्री कृष्ण प्रणामी धर्मान्तर्गत आत्माओं के आत्म-जागृति हेतु दृष्टान्त रूप हैं। प्रामाणिक रूप में सिद्धान्त हमारे जागनी क्षेत्र की आत्माएँ हैं। अतः हे प्रणामी धर्मप्रचारकों! अब विचार-विवेक कीजिए कि आप हमारे समाज की आत्माओं को कौन-सी लीला द्वारा, वह भी कहाँ की और किसके द्वारा वर्णित लीलाओं द्वारा जागृत कर रहे हो? निजानन्दीय धर्म प्रचार-प्रसार क्षेत्र के विद्वान महानुभावों! उक्त प्रामाणिक बातों, विषय-वस्तुओं को अपनी निजधामस्थ सखियों को देने के विषय में तो मैं आप सबसे सत के बनजारे बनने का ही आग्रह कर रहा हूँ। यसर्थ आप सब यदि महामतिजी द्वारा प्रदत्त चारों लीलाओं के माध्यम से धर्म प्रचार-प्रसार करते, तो अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ी मारने[2] जैसे असोच्य और हानिकारक परिस्थिति से उबर जाते अथवा बच पाते।

अतः हे मेरे धामस्थ एकदिली जमात की प्रियात्माओं! ***"तीन लीला चौथी घर की"*** में ब्रज लीला देखने के लिए भक्त नरसैयाँ का ग्रन्थ ढूँढ़ने की जरूरत एवम् आवश्यकता नहीं है। नरसैयाँ से भी उत्तम ब्रज लीला का ज्ञान श्री इन्द्रावती के मुखारविन्द से ही प्रकट हुआ है। अतः उसे ही हृदयाङ्गम करना अपेक्षित है। क्योंकि एक तो भक्त नरसैयाँ स्वयं ब्रज लीला में शामिल नहीं था, दूसरे नरसैयाँ का ब्रज लीला वर्णन बिना तारतम

---

१. सिर फोड़कर लोहू बहाना। २. अपने हाथों से अपनी हानि करना।

का है। पुनः श्री इन्द्रावती आत्मा स्वयं ब्रज लीला में शामिल है तथा उनके श्री मुख से वर्णित ब्रज लीला तारतम द्वारा वर्णित होने के कारण सर्वोपरि उत्तम एवम् ग्राह्य है। श्री इन्द्रावती आत्मा द्वारा वर्णित ब्रज लीला द्वारा हम लोग अपनी आपबीती लीला का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं।

हे मेरे धामस्थ प्यारे सुन्दरसाथजी! श्री इन्द्रावती आत्मा ने ब्रज-लीला का वर्णन तारतम के माध्यम से श्री कुलजम स्वरूप साहेब-तारतम सागर अन्तर्गत श्री रास ग्रन्थ के १) "प्रेम सेवा वाले प्रगट किधी" और २) "एणे पगले आपण चालिए" ३) रास लीला के दौरान अन्तर्ध्यान के समय में स्वयं ब्रज लीला का अनुकरण करते समय के वर्णनवाले प्रकरण में तथा ४) श्री कलश ग्रंथ के गोकुल लीला में ब्रज लीला का अच्छी तरह से बोध कराया है। उक्त चारों स्थानों के वर्णन द्वारा स्पष्ट अनुभव किया जा सकता है कि उस लीला के दौरान हम लोगों के कौल (कहना), फैल (चलना) और हाल (लक्षण-दशा) कैसे थे! हमारी चित्तवृत्ति निरन्तर कहाँ केन्द्रित थी, जिसके कारण रास लीला में दौड़ते समय वह संसार सागर हमारे लिए गौपदबच्छ भी नाम मात्र के लिए ही रहा। यसर्थ आप सब यदि इसी कौल, फैल और हाल की ओर इशारा करके हमें सावचेत करते हुए कहा है कि, "ए पगला सर्वे आपणा, तमे जाणी सको ते जाण" और "ऐणे पगले चालजो, पगला एह प्रमाण सुन्दरसाथजी"।

प्यारे धामस्थ सुन्दरसाथजी! दूसरी श्री रास लीला श्री कुलजम स्वरूप साहेब-तारतम सागर के प्रथम ग्रन्थ 'श्री रास' के वर्णन द्वारा अनुभव कर लीजिये। तीसरी लीला श्री नवतनपुरी में सद्गुरु स्वरूप द्वारा चौंतीस साल तक की गई आड़ीका आदि लीला है, जिसका अनुभव - जानकारी श्री लालदास कृत बीतक साहेब और श्री कुलजम स्वरूप साहेब के श्री प्रकाश ग्रन्थ द्वारा किया जा सकता है। पुनः चौथी लीला घर - श्री परमधाम की लीला है, जिसे श्री परमधाम पचीस पक्ष की चर्चनी एवम् खिलवत, परिक्रमा, सागर और सिनगार-इन ग्रन्थों द्वारा स्वयं जागृत होकर निजधामस्थ आत्माओं के दिल-दिमाग में भराकर उन्हें जागृत करके जागनी के ब्रह्माण्ड में ही इसका भोग-अनुभव किया जा सकता है। यही श्रीमन्निजानन्दीय - श्री कृष्ण प्रणामी धर्म सिद्धान्त में प्रचार-प्रसार द्वारा आत्म-जागृति की वास्तविक रीत है।

उपरोक्त धर्म सिद्धान्त प्रदत्त मार्ग से स्वयं वंचित रहकर समाज को भी वंचित कराना, यह तो स्वयं को आसमान पर खींचने जैसी बिडम्बना है। निजानन्द स्वामी श्री सद्गुरु और महामति श्री प्राणनाथजी के धर्म सिद्धान्त के समक्ष ऐसी प्रदर्शनी करते क्या आप सबको जरा-सी भी शर्म नहीं आती?

हे कलिकाल गुण ग्रस्त धर्मप्रचारकों! हे मेरे दोस्तों!! आप लोग अभी से आँख-कान खोलकर चलना और सामाजिक आत्माओं को भी चलाना शुरू कर दीजिये, नहीं तो पीछे अवश्यमेव ही सिद्धान्त प्रदत्त उभय महाजनों-श्री सद्गुरु और श्री महामति स्वरूपों के दरबार में सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुँह काला[1] प्रत्यक्ष होगा। ऐसी विकट परिस्थिति के सामने आने पर सामाजिक आत्माएँ उन्हें कैसे देख अथवा सहन कर सकेंगी?

अतः धर्मप्रेमी धामस्थ सुन्दरसाथजी और धर्मप्रचारक मेरे दोस्तों! मैं तो एक ओर धर्म सिद्धान्त को देखता हूँ, तो दूसरी ओर धर्मप्रचारकों को!! पुनः सिद्धान्त प्रदत्त दोनों ही "महाजनो येन गतः स पन्थाः" सद्गुरु स्वरूप और महामति श्री प्राणनाथजी के आगे तौबा खींचते हुए यही कहता हूँ कि हे धनी! यह मुहावरा साकार रूप में प्रत्यक्ष हो गया है, जैसे- "कुतिया चोरों मिल गई, पहरा किसको दें[2]" अर्थात् जब कुतिया और चोरों मिल गये, तब पहरा किसको दें ? अर्थात् कुतिया-धर्म सिद्धान्त रक्षक गादीपति हैं, चोर-स्वगुरुज्ञान द्रोही, कुपथगामी, नामधारी विद्वान, धर्म सिद्धान्त भक्षक, सलाहकार मंत्री ही चोर हैं। ये राजा और मंत्री मिल गये, तो धर्म-सिद्धान्त की रक्षा कौन करे ? निम्नोक्त प्रकार से बकवाद करनेवाले सलाहकार, मंत्री की जबान मूल से उखाड़कर उसी की हथेली पर रखने के लिए श्रीमन्निजानन्द धर्म-सिद्धान्त हरगिज़ पीछे हटेगा नहीं। इसलिए हे धनी! आपके चरणों में प्रार्थना करता हूँ कि इन नामधारी धर्मप्रचारकों को थोड़ी-सी सद्बुद्धि प्रदान करने का कष्ट अवश्य करें, जिससे कि सामाजिक आत्माओं का उद्धार-कल्याण हो सके।

---

१. सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता ।
२. रक्षक जब चोरों से मिल जाते हैं तब रखवाली नहीं हो सकती ।

नोट :-

श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्तान्तर्गत वर्तमान तीनों पुरी धाम एवम् द्वादश परमहंस पीठों सहित पन्द्रह गादीपति महाराज अपने-अपने क्षेत्र में धर्म-सैद्धान्तिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार द्वारा जागनी अभियान का विस्तार कर रहे हैं। उक्त गादीपतियों का मुख्यतः कर्तव्य है कि वे स्वधर्म सिद्धान्त के रक्षक बनते हुए सिद्धान्त भक्षकों को भी धर्म सिद्धान्त के प्रति श्रद्धा-विश्वास दिलाएँ और स्व-इष्ट के प्रति प्रेम उत्पन्न कराएँ ।

परन्तु अपने-अपने स्थान से भविष्य के लिए निकले-निकाले हुए सैद्धान्तिक ज्ञान की तालीम से सम्पन्न नामधारी विद्वान प्रचारक ही सैद्धान्तिक "प्राणनाथ साहित्य"-धर्म के उपास्य ग्रन्थ श्री कुलजम स्वरूप साहेब-श्री तारतम सागर और श्री बीतक साहेब, पुनः श्रीमन्निजानन्द स्वामी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी - इन उभय स्वरूपों के प्रति चर्म चक्षु - सूकर दृष्टि लेकर बैठे हैं। अतः वे स्वयं उक्त ब्रह्म लीलामय ब्रह्मज्ञान के प्रति अंगुलियाँ उठाते[9] हुए भोले-भाले साधारण धर्मानुयायी समाज को भी बीतक, वाणी और उभय स्वरूपों के प्रति चर्म चक्षु - सूकर दृष्टि वाला ही बना रहे हैं। यसर्थ मैं आग्रह करता हूँ कि ऐसे मात्र नामधारी विद्वान प्रचारक उत्पन्न करने से तो धर्मस्थान छोड़कर अपने प्रचारकों को साथ लेकर अपने गाँव में ही गौशाला - भैंसशाला खड़ा करके घास काटते हुए जीवन गुजारा करना अत्युत्तम है क्योंकि "जघन्य गुण वृत्तिस्थाः" उक्त प्रकार करते, तो स्वयं भी बचते और धर्म-समाज भी बच पाता!!

सुज्ञेषु किं बहुना -

- लेखक
दीनदयाल।

सूचना :- ता. २४ जून २०१९ के दिन शाम ७.३० बजे अपने आत्मीय सुंदरसाथ के साथ मोबाईल फोन में हुए वार्तालाप के दौरान श्री प्राणनाथजी स्वरूप और तारतम सागर-श्री कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत वाणी-ज्ञान विषय प्रयुक्त किए गए आक्षेप आरोपयुक्त भर्त्सनापूर्ण शब्दों सहित कहे गये १० प्रश्नों की रिकॉर्डिंग सहित सप्रमाण जवाब समय के लिए सुरक्षित है। जरूरत पड़ने पर नाम-स्थान के साथ स्पष्ट किया जायेगा । जहाँ तक मुझे आगे बढ़ना न पड़े, दया करना! सावधान !!!

---

१. बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना ।

❁ स्वामी श्री लालदास कृत बीतक के सवाल ❁

❁ मन्दसोर ❁

स. १ - महामति श्री प्राणनाथजी जब उदयपुर छोड़कर रामपुरा-दुधलाई गाँव में आए, तब उदयपुर में क्या हुआ?

स. २ - महाप्रभु श्रीजी साहेबजी किस वि. सं. में मन्दसोर आए थे?

स. ३ - इस समय श्रीजी स्वरूप ने जो वैरागी भेष धारण किया है, वह कैसा लगता है?

ज. ३ - इस समय श्रीजी स्वरूप ने जो अनुपम वैरागी भेष धारण किया →

स. ४ - श्रीजी स्वरूप के सिर पर पहनी टोपी और कनढपी युक्त छवि कैसी दिखाई देती है?

ज. ४ - श्रीजी स्वरूप के सिर पर किनारी लगी टोपी शोभायमान है और →

स. ५ - श्री प्राणनाथजी के मस्तक पर लगे तिलक सहित उनके मुखमण्डल की शोभा कैसी है?

ज. ५ - धामधनी श्री प्राणनाथजी के सुन्दर मस्तक पर दो ऊर्ध्व रेखाओं →

स. ६ - स्वामी श्रीजी साहेब ने सिंगार में क्या-क्या धारण किया है? देखने में उनका स्वरूप कैसा लगता है?

ज. ६ - श्री प्राणनाथ प्रभु ने निर्गुण भेष धारण किया हुआ है। उनके श्रवणों में मुद्रा सुशोभित है। कानों में सोने के-से रंगवाले दो बाले पहने →

❋ स्वामी श्री लालदास कृत बीतक के जवाब ❋

❋ मन्दसोर ❋

ज. १ - महामति श्री प्राणनाथजी जब उदयपुर से चलकर रामपुरा-दुधलाई गाँव में आए, तब औरंगजेब ने उदयपुर के राणा राजसिंह पर चढ़ाई कर दी और उदयपुर क्षेत्र में उथल-पुथल मच गई।

ज. २ - महाप्रभु श्रीजी साहेबजी जब वि. सं. १७३६ (ई. स. १६७९) समाप्त हुआ और वि. सं. १७३७ (ई. स. १६८०) आरम्भ ही हुआ था, तब मन्दसोर आए थे।

→ है, उनके उस अलौकिक स्वरूप की अनुपम छवि को देखकर ऐसा लगता है, मानों उस छवि के आगे करोड़ों कामदेव की सुन्दरता फीकी पड़ जाती है।

→ उसके ऊपर उन्होंने कनढपी पहनी है। उक्त प्रकार टोपी पर पहनी हुई कनढपी के कारण शोभा ऐसी जान पड़ती है कि मानों दो लाल धागों की डोरी-सी लगी हुई हो।

→ के बीच चन्दन का सुन्दर तिलक लगा हुआ है। गौर वर्ण पर गोपीचन्दन सुन्दररूपेण सुशोभ्य है। इस समय श्रीजी का मुखमण्डल चन्द्रमा के समान प्रतीत होता है।

→ हुए हैं। श्री राजजी के मुख की प्रेममय छवि अत्यंत मनोहर लगती है। उनका त्रिगुणातीत निर्गुण भेषयुक्त स्वरूप देखने में *"एह छबि ब्रह्मांड में, शोभा सब ऊपर"* अर्थात् अनुपम, अवर्णनीय एवम् अकथ्य लगता है।

स. ७ - श्रीजी साहेबजी के कांतिमय शरीर पर क्या अत्यन्त आकर्षक लगता है? उनका कम्बल कैसा है?

ज. ७ - श्रीजी साहेबजी के कंठ में तुलसी की कंठी और बड़ी-बड़ी चार →

स. ८ - श्रीजी साहेबजी ने स्वयं अपने हाथों से सुन्दर गुदड़ी सहित अन्य क्या-क्या तैयार किए हैं?

ज. ८ - श्रीजी साहेब ने स्वयं अपने हाथों से वस्त्रों के टुकड़ों को जोड़कर →

स. ९ - श्रीजी साहेबजी द्वारा पहनी हुई धोती कैसी है-स्पष्ट करो?

ज. ९- महामति श्री प्राणनाथजी एक ही धोती को इस प्रकार पहन लेते →

स. १०-श्रीजी साहेबजी ने तूँबा कहाँ-कहाँ पकड़े हुए हैं? पुनः झोली में क्या भरकर उन्होंने वह झोली कंधे पर धारण की है?

स. ११-श्रीजी साहेबजी पाँव में क्या पहने हुए हैं और ब्रह्ममुनियों के साथ वे कैसे चल रहे हैं?

स. १२-अपने धामधनी का भेष अनुकरण करके कौन आनन्दित होकर धामधनी के साथ चल रहे हैं?

ज. १२- अपने धामधनी श्रीजी साहेबजी द्वारा पहने हुए भेष का अनुकरण →

स. १३-श्री तेजकुँवरबाई ने कैसा भेष धारण किया है और उनका अनुकरण किसने किया है?

ज. १३- श्री तेजकुँवरबाई ने भी निर्गुण भेष धारण किया हुआ है। उन्होंने →

→ मालाएँ सुशोभ्य हैं। उनके कांतिमय शरीर पर मेखली, अल्की और चोगा (अलग-अलग प्रकार के जामा) अधिकाधिक आकर्षक प्रतीत होते हैं। उनका कम्बल लोई धागे के भराव से युक्त है।

→ ओढ़ने-बिछाने के लिए एक सुन्दर गुदड़ी तैयार की है और साथ ही सेली-छोटा दुपट्टा, जाप करने की मालाएँ-सुमरनी और मुत्तका-गोमुखी-जपमाला रखने की एक छोटी थैली भी अपने हाथ से तैयार की है।

→ हैं कि धोती का आधा भाग अँगोछे का काम करता है और आधा भाग उपरनी (उत्तरीय) का काम देता है। उनका यह स्वरूप ब्रह्माण्ड में सभी भेषों से बढ़कर और सुशोभनीय प्रतीत होता है।

ज. १०- श्रीजी साहेबजी ने एक तूँबे का बरतन हाथ में तथा दूसरा तूँबे का बड़ा पात्र कमर में बाँध रखा है। अन्य निर्गुण भेष की सभी सामग्रियाँ झोली में भरकर वह झोली उन्होंने कंधे पर धारण की हुई है।

ज. ११- श्रीजी साहेबजी पाँव में पनही (खड़ाऊँ) पहने हुए हैं। पनही पहने वे चुस्त एवम् उन्मत्त चाल से धाम के ब्रह्ममुनियों के साथ हँसते हुए आनन्दपूर्वक आगे बढ़ रहे हैं।

→ करके सुन्दरसाथ समूह में शामिल सभी भाई भी वही निर्गुण वस्त्रादि पहनकर संसार का मायावी नाटक देखते-देखते अपने धामधनी के साथ अत्यन्त आनन्दपूर्वक चल रहे हैं।

→ भी साधु भेष की सभी सामग्रियाँ धारण कर रखी हैं। उनके भेष का अनुकरण स्त्री वर्ग ने किया है। उक्त प्रकार सुन्दरसाथ सहित श्रीजी स्वरूप और श्री बाईज्यूराज वैरागी भेष में कलियुगी शक्तियों से संघर्ष करते हुए आगे बढ़ते जा रहे हैं।

स. १४-मन्दसोर में कहाँ-किस गाँव में ब्रह्ममुनियों ने अपने हाथों से हवेली का निर्माण किया था?

ज. १४- श्री प्राणनाथजी जमात सहित मन्दसोर के रामपुरा गाँव की ओर →

स. १५-अपने हाथों से ईंटें उठा-उठाकर बनाई हुई हवेली में सुन्दरसाथ ने किसके रहने का प्रबन्ध किया?

स. १६-वह गाँव किसने बसाया था और उस गाँव के मुखिया कौन थे?

स. १७-किसने श्रीजी स्वरूप की सेवा तो बहुत की, परन्तु ऊपरी विश्वास के कारण वह श्रीजी स्वरूप को पहचान न सकी?

स. १८-बैरीसाल किसका भाई था? वह मन में श्रीजी स्वरूप के प्रति कैसी भावना रखकर श्रीजी स्वरूप के पास आया था?

स. १९-उसकी कुभावना देखकर ब्रह्मात्माओं-मोमिनों ने किसके आगे फरियाद की?

स. २०-मोमिनों की फरियाद सुनकर ब्रह्मात्माओं की सुरक्षा के लिए कौन सामने आई?

स. २१-पूरनमल चारन की माता क्या कहते हुए तलवार लेकर बैरीसाल के आगे श्रीजी के रक्षार्थ खड़ी हो गयी?

ज. २१- पूरनमल चारन की माता यह कहते हुए तलवार लेकर बैरीसाल →

→ जा रहे थे। उसी राह पर चारनों (भाट लोगों) का एक गाँव था। उसी गाँव में ब्रह्ममुनियों ने स्वयं ईंटें उठा-उठाकर अपने हाथों से एक हवेली का निर्माण किया था।

ज. १५- अपने हाथों से ईंटें उठा-उठाकर खड़ी की हुई हवेली में ब्रह्ममुनियों ने श्री बाईज्यूराज सहित महिला वर्ग के रहने का प्रबन्ध किया।

ज. १६- वह गाँव पूरनमल भाई ने बसाया था। चारनों के इस गाँव के मुखिया पूरनमल भाई ही थे।

ज. १७- गाँव के मुखिया पूरनमल की माताजी ने बाह्य स्वरूप की पहचान से श्रीजी स्वरूप की बहुत ही सेवा की, परन्तु ऊपरी विश्वास के कारण उन्हें श्रीजी के दिव्य आत्म-स्वरूप की पहचान न हो पायी।

ज. १८- दज्जालरूप बैरीसाल चारनों के गाँव के मुखिया पूरनमल चारन का भाई था। दज्जालरूपी कुभावना से ग्रस्त होने के कारण उसके मन में श्रीजी के प्रति विरोधी भावनाएँ उत्पन्न हुई। अतः वह मन में सुन्दरसाथ को लूट लेने की दुर्भावनापूर्ण योजना बनाकर श्रीजी स्वरूप के पास आया था।

ज. १९- दज्जालरूपी बैरीसाल की कुभावना को समझकर ब्रह्मात्माओं-मोमिनों ने भाटों-चारनों के राजा पूरनमल चारन के घर जाकर उसकी फरियाद करते हुए सुरक्षा की माँग की।

ज. २०- ब्रह्मात्माओं-मोमिनों की फरियाद सुनकर उनके रक्षार्थ पूरनमल की माता बड़ा साहस दिखाकर सामने आई।

→ के आगे खड़ी हो गयी, "इन साधु-संन्यासियों पर जो बुरी नजर करेगा, उसके मैं तलवार से दो टुकड़े कर दूँगी या तो खुद मर कर स्त्री हत्या का पाप उसके सिर पर डाल दूँगी। मेरे घर आए साधुजन को कोई बुरी नजर से क्यों देखे?"

स. २२-बैरीसाल के आदमी लज्जित होकर क्यों भाग खड़े हुए? कौन मुँह काला कर लौट गया?

स. २३-चारनों के गाँव की हवेली छोड़कर जमात के साथ श्रीजी साहेबजी कहाँ चले?

स. २४-हवेली को छोड़कर श्री प्राणनाथजी एवम् मोमिनों ने पुनः कहाँ डेरा डाला?

स. २५-उस समय मन्दसोर के चारों ओर किसने घेरा डाला हुआ था?

स. २६-मन्दसोर में सार्वजनिक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन मोमिन क्या करते थे?

स. २७-मोमिनों की मधुर एवम् रोचक आवाज को सुनकर कौन श्रोता के रूप में आने लगे?

स. २८-मोमिनों की वाणी सुनकर सर्वप्रथम कौन आया? किसके मन में बड़ी चोट लगी?

स. २९-किसने अपने कुछ साथियों सहित आकर सनंध की वाणी श्रवण की?

स. ३०-वे सब कौन हैं, जो चर्चा श्रवण करके श्रीजी के प्रति अटूट विश्वास लेकर धर्म पर समर्पित हुए?

ज. ३०- वे वही लोग थे, जो शेरखान कोहटी के साथ चर्चा श्रवण करने →

ज. २२- पूरनमल चारन की माता का अपूर्व साहस देखकर बैरीसाल के आदमी लज्जित होकर भाग खड़े हुए। बैरीसाल का भी कुछ बस न चल सका। वह भी काला मुँह लेकर वापस लौट गया।

ज. २३- पूरनमल चारन के गाँव में स्वयं अपने हाथों से बनाई हुई हवेली को छोड़कर सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी मन्दसोर पधारे।

ज. २४- स्वयं अपने हाथों से ईंटों द्वारा निर्माण की हुई हवेली को छोड़कर श्रीजी साहेबजी और श्री बाईज्यू सहित ब्रह्मात्माएँ मन्दसोर चले। वहाँ पहुँचकर हरिप्रसाद के निवास पर डेरा डाला।

ज. २५- उस समय मन्दसोर के चारों ओर दिल्ली के बादशाह औरंगजेब की फौज ने घेरा डाला हुआ था।

ज. २६- मन्दसोर में हरिप्रसाद के घर के सामने सार्वजनिक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन मोमिन सनंध की वाणी का सुमधुर स्वर में गायन करते थे।

ज. २७- इस प्रकार मोमिनों के सुमधुर एवम् रोचक स्वर में गायी हुई वाणी सुनकर शाही लशकर के कुछ लोग श्रोता के रूप में आने लगे।

ज. २८- मोमिनों की वाणी सुनकर सर्वप्रथम दौलत खाँ पठान आया। उक्त रोचक वाणी सुनकर उसके मन में बड़ी चोट लगी। वह पूर्ण विश्वास के साथ सुन्दरसाथ जमात में शामिल हो गया।

ज. २९- शेरखान कोहटींने अपने कुछ साथियों के साथ आकर सनंध की वाणी श्रवण की।

→ आते थे। चर्चा श्रवण करते-करते उन सबमें तुरन्त स्वामी श्री प्राणनाथजी के प्रति अटूट विश्वास उमड़ आया और वे सब निजानन्द धर्म पर समर्पित हो गए।

स. ३१-श्रीजी साहेब के साथियों ने क्या गाया, जिसे सुनकर दौलत खाँ पठान को जोश आ गया?

स. ३२-किनके मुँह से बार-बार "बिना एक मुहम्मद" ही निकलते रहता था?

स. ३३-उक्त भाई अपने मुँह से बार-बार किस कथन के अतिरिक्त कुछ नहीं कहते थे?

स. ३४-इसी समय कौन, कहाँ से और किनका पत्र लेकर मन्दसोर आ पहुँचे?

ज. ३४- उक्त प्रकार के वातावरण के बीच अचानक उदयपुर से कृपाराम →

स. ३५-उक्त पत्र में किनके विषय में और क्या लिखा हुआ था?

ज. ३५- उक्त पत्र में उदयपुर के सुन्दरसाथ के विषय में यह लिखा था →

स. ३६-उस पत्र में लिखी हुई बातों को पढ़कर श्रीजी साहेबजी को क्या हुआ और उन्होंने क्या किया?

ज. ३६- उक्त पत्र में वर्णित सुन्दरसाथ के विलाप ने श्रीजी साहेबजी के मन को छू लिया। उन्हें उस समय असह्य दर्द की अनुभूति हुई। →

स. ३७-श्रीजी द्वारा मूल स्वरूप को पुकार किए गए प्रकरण अभी हमें कहाँ देखने और पढ़ने को मिलते हैं?

ज. ३७- श्रीजी स्वरूप द्वारा मूल स्वरूप को की गई दर्द निवारक पुकार →

ज. ३१- श्री प्राणनाथजी के साथियों-ब्रह्मात्माओं ने सनंध की वाणी में से *"बिना एक मुहम्मद"* की सनंध वाणी गायी, जिसे सुनकर दौलत खाँ पठान को असह्य हो गया और उसे जोश आ गया ।

ज. ३२- दौलत खाँ पठान के मुँह से बार-बार *"बिना एक मुहम्मद"*, *"बिना एक मुहम्मद"* ही निकलते रहता था।

ज. ३३- दौलत खाँ पठान अपने मुँहसे बार-बार *"बिना एक मुहम्मद"* के सिवाय अन्य कुछ नहीं कहते थे, जिसका तात्पर्य है कि संसार में मुहम्मद साहेब के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

→ भाई एक पत्र लेकर आये। वह पत्र उदयपुर के उन सुन्दरसाथ द्वारा भेजा हुआ था, जो लोग अपनी जान के रक्षार्थ पर्वत और कन्दराओं में छिपकर रह रहे थे।

→ कि औरंगजेब की फौज के प्रकोप से आतंकित होकर सुन्दरसाथ पहाड़ों एवम् जंगलों में भूखे-प्यासे छिपे हुये हैं और बिलख-बिलखकर विलाप कर रहे हैं।

→ तब मुहम्मद के स्वरूप इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी ने एकाग्र होकर श्री परमधाम में विराजमान पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी को पुकार की, "हे सर्वशक्तिमान् स्वामी! आपकी अंगनाओं पर क्या-क्या आतंक मचाया जा रहा है!" उक्त प्रकार छः प्रकरणों द्वारा पुकार की।

→ विरह के छः प्रकरणों के रूप में अवतरित हुए हैं, जो श्री मुखवाणी-तारतम सागर के किरंतन नामक ग्रन्थ में दर्ज किए गए हैं। उन प्रकरणों को हम किरंतन ग्रंथ में पढ़ सकते हैं। इन्हें *"विरह के छः प्रकरण"* भी कहते हैं।

स. ३८-किसने, किसके लिए और किसके आगे पुकार की? उक्त पुकार का प्रतिफल क्या हुआ?

ज. ३८- इमाम मेहदी स्वरूप ने मूल मिलावे के स्वरूप से उदयपुर के सुन्दरसाथ की रक्षा हेतु पुकार की,जिसका प्रतिफल यह हुआ कि पहाड़ों और कन्दराओं में छिपे सुन्दरसाथ पुनः अपने-अपने →

स.३९- इस समय कौन श्रीजी स्वरूप के दर्शन करने आया? किनके सत्संग से, कौन प्रसन्न हुआ?

स. ४०-किसने बैठकर लालदासजी से अनेक बातें कीं? उनसे लालदासजी ने क्या कहा?

ज. ४०- दूसरी बार इब्राहीम ने श्री लालदासजी के संग, उनके पास बैठकर →

स.४१- तब इब्राहीम ने किससे और क्या नकल उतारी, जिसे श्रीजी साहेबजी ने स्वयं सुना?

स.४२- कुरान की इन आयतों में क्या मिला, जिसे पढ़कर श्री प्राणनाथजी को सुख का अनुभव हुआ?

स.४३- श्री प्राणनाथजी ने इस विषय में किनसे और क्या कहा?

स.४४- पुनः किसने और किससे कुरान के कुछ अन्य प्रसंग भी उतार देने के लिए कहा?

स. ४५-उक्त कार्य करवाने के लिए किसने और किसे पारिश्रमिक देने का लोभ दिखाया?

➞ घरों में आकर बस गए। औरंगजेब की फौज की दृष्टि पर श्री राजजी ने पर्दा डाल दिया, जिससे सुन्दरसाथ तो उन आतंकवादी फौजों को देख सकते थे, परन्तु फौज के सिपाही सुन्दरसाथ को नहीं देख पाते थे। अतः बिना देखे कैसे कष्ट पहुँचा सकते थे? इस प्रकार सुन्दरसाथ श्री राजजी की मेहेर तले रहकर बच गये।

ज. ३९- इसी समय इब्राहीम श्रीजी साहेबजी के दर्शनार्थ आया। श्री प्राणनाथजी के सत्संग से वह अत्यंत ही प्रसन्न हुआ। पुनः दूसरी बार भी वह दर्शनार्थ आया।

➞ उनसे अनेक बातें कीं। तब बातों-बातों में श्री लालदासजी ने उनसे पूछा, "क्या आप हमारा एक काम कर देंगे? कुरान में से एक प्रसंग उतारकर हमें देंगे?"

ज. ४१- तब राजी खुशी से इब्राहीम ने कुरान का एक सूरा-अध्याय उतार दिया, जिसकी कई आयतों-पद पंक्तियों को श्रीजी साहेबजी ने स्वयं सुना।

ज. ४२- कुरान की आयतों में अपने धाम की बातों को सुनकर श्रीजी साहेबजी को आत्मीय सुख का अनुभव हुआ।

ज. ४३- श्री प्राणनाथजी ने इस विषय में लालदासजी से कहा, "कुरान में सब हमारी ही बातें लिखी हुई हैं। यदि इब्राहीम अन्य प्रसंगों को भी हमारे लिए उतार देते, तो एक महत्त्वपूर्ण कार्य हो जाता।"

ज. ४४- पुनः श्री लालदासजी ने इब्राहीम से कहा, "मैं आपसे कुरान के कुछ अन्य प्रसंग भी उतरवाना चाहता हूँ।"

ज. ४५- श्री लालदासजी ने इब्राहीम को उक्त कार्य करने पर पारिश्रमिक देने का लोभ दिखाया। तब वह उक्त कार्य करने के लिए तैयार हो गया।

स. ४६-दूसरे दिन प्रातः कौन लालदास महाराज के पास आया और उसने क्या किया?

स.४७- इब्राहीम ने उस दिन कुरान में से कितने अध्याय उतारकर, किसके हाथ में दिये?

स. ४८-किसमें अपनी बातें मिलने पर एक पड़ाव पूरा हुआ और इस विषय में कौन बहुत प्रसन्न हुए?

स. ४९-किसमें और क्या मिलने पर, किसका हृदय निःशंक बन गया?

स. ५०-रात को एक बंगले में बैठकर कुरान उतारने में कौन-कौन शामिल थे? पास में लेटकर कौन उन प्रसंगों को सुन रहे थे?

स. ५१-कुरान उतारते-उतारते इब्राहीम ने किस शब्द के प्रति "यह शब्द ठीक नहीं है"- ऐसा कहा?

स. ५२-इब्राहीम की उक्त बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी ने उससे क्या कहा?

स. ५३-तब इब्राहीम ने स्वयं उन बातों को खुलस्त करते हुए क्या कहा?

ज. ५३- तब इब्राहीम ने उन बातों को स्वयं खुलस्त करते हुए श्रीजी →

ज. ४६- दूसरे दिन प्रातः इब्राहीम लालदास महाराज के पास आया और उसने कुरान का सोलहवाँ सिपारा उतारने का कार्य प्रारंभ कर दिया।

ज. ४७- इब्राहीम ने उस दिन कुरान के दो सूरा-अध्याय उतारकर लालदासजी के हाथ में दिये, जिससे श्री प्राणनाथजी को बहुत ही आत्म-शान्ति मिली।

ज. ४८- कुरान ग्रन्थ में अपनी बातें मिल जाने पर जागनी के कार्य का एक पड़ाव पूरा हुआ। यह देखकर श्री प्राणनाथजी अधिकाधिक प्रसन्न हुए।

ज. ४९- कुरान ग्रन्थ में अपने परमधाम का वृत्तान्त एवम् ब्रह्मात्माओं की जागनी लीला के संकेत पाकर कुरान के प्रति श्रीजी का हृदय निःशंक बन गया।

ज. ५०- रात को एक जगह बंगले में बैठकर इब्राहीम और लालदासजी कुरान उतारने में शामिल थे, वहीं पास में लेटे-लेटे श्रीजी साहेब उन प्रसंगों को सुन रहे थे।

ज. ५१- कुरान उतारते-उतारते अचानक एक शब्द - *"अरजुइ न पहुँचे कान"* पढ़कर इब्राहीम कहने लगा, "यहाँ किसी अनपढ़ ने भूल से अपनी कलम चला दी है। यह शब्द ठीक नहीं है।"

ज. ५२- इब्राहीम की उक्त बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी ने उससे कहा, "आपने अभी-अभी क्या पढ़ा था? कृपा करके वह एक बार पुनः पढ़कर सुनाइये। मैं वह शब्द फिर से सुनना चाहता हूँ।"

→ स्वरूप से कहा, "अरे! इसमें तो लिखा है कि मुहम्मद की उम्मत के जो सुन्नी मुसलमान हैं, उनकी अरजुइ-प्रार्थना खुदा तक नहीं पहुँचती। जाहिरी शराअ का पालन करनेवाले मोमिनों की कोटि में नहीं आते। मतलब कोई भी मोमिनों की श्रेणी में नहीं आ सकता।"

स. ५४-इब्राहीम की बातें सुनने के पश्चात् श्रीजी साहेब ने उससे क्या कहा?

स. ५५-"कोई क्या जाने उन क्या लिखा"-यह वाक्यांश किनके श्री मुख का है? इसे स्पष्टरूपसे खुलस्त कीजिए।

ज. ५५- *"कोई क्या जाने उन क्या लिखा"- यह वाक्यांश श्री* →

स. ५६-श्रीजी साहेबजी कहाँ बैठकर, कौनसा वृत्तान्त पढ़कर बहुत ही सन्तुष्ट हुए?

स. ५७-उक्त प्रकार की बातें कुरान में मिलने पर श्रीजी साहेब ने क्या अनुभव किया?

स. ५८-इस वक्त सुन्दरसाथजी से श्रीजी साहेबजी ने किस विषय में, क्या कहा?

ज. ५८- इस समय सुन्दरसाथजी से श्रीजी स्वरूप ने कहा, "देखो ! हमें →

स. ५९-श्रीजी स्वरूप सभी सुन्दरसाथ को किस बात की खुशखबरी लिखकर भेजने के लिए कहने लगे?

ज. ५९- श्रीजी साहेबजी कहने लगे, " अहो! यह खुशखबरी-शुभ समाचार →

स. ६०-लालदासजी और इब्राहीम कब से, कब तक एकान्त में बैठकर कुरान उतारते थे?

ज. ५४- इब्राहीम की उक्त बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी ने उससे कहा, "तुम कुरान में लिखे शब्दों को मत बदलो। जैसे वचन लिखे हैं, उन्हें वैसे ही रहने दो।"

→ प्राणनाथजी के श्री मुख का है। उक्त वाक्यांश द्वारा श्रीजी स्वरूप यह कहना चाहते हैं, "अरे! यही तो वे शब्द हैं, जिनके अर्थ आप लोग नहीं समझ पा रहे। हर कोई कैसे समझ पाएगा कि मुहम्मद साहेब इन शब्दों द्वारा क्या कह गये हैं? उनके उस भाव को ही हम लोग नहीं समझ पा रहे हैं।"

ज. ५६- जहाँ कुरान की आयतें उतारने का कार्य चल रहा था, वहीं पास में लगकर एक चबूतरा था। उस पर बैठकर श्रीजी ब्रह्मात्माओं की जगत् यात्रा का वृत्तान्त पढ़कर अत्यंत खुश और सन्तुष्ट हुए।

ज. ५७- उक्त प्रकार की बातें कुरान में मिलने पर श्रीजी साहेबजी ने यह अनुभव किया, "अब हमारे मन की सभी मनोकामनाएँ अथवा हमारे सभी कार्य पूर्ण हो जायेंगे।"

→ अपने सिद्धान्त के लिए जिन प्रमाणों की आवश्यकता थी, वे सभी प्रमाण हमें मूल बातों सहित कुरान में मिल गये हैं। अब आप सबको प्रमाण जुटाने के लिए कुछ नहीं करना पड़ेगा।"

→ समस्त सुन्दरसाथ को लिखकर भेज दो कि श्री राजजी की अपार कृपा से यह वस्तु प्राप्त हुई है और हम यह उनके साथ बाँट रहे हैं।"

ज. ६०- श्री लालदासजी और इब्राहीम सायंकाल से कुरान उतारने बैठते थे और रातभर तब तक उतारते थे, जब तक सुबह नहीं हो जाती थी।

स. ६१-इब्राहीम जब प्रातःकाल घर चला जाता था, तब लालदासजी महाराज कहाँ जाते थे?

स. ६२-इस प्रकार कौन-कौनसे चार सिपारे कुरान में से उतरवाये गये?

स. ६३-पुनः कुरान के कितनवें सिपारे की, कितनवीं सूरत उतरवायी गयी और तत्पश्चात् क्या किया गया ?

ज. ६३- पुनः इब्राहीम द्वारा कुरान के तीसवें सिपारे की छत्तीसवीं सूरत- →

स. ६४-उक्त सिपारा पूरा होने के बाद कौन-कौनसा सिपारा उतरवाया गया ?

ज. ६४- उक्त सिपारा पूरा होने के पश्चात् दूसरा, तीसरा और चौथा →

स. ६५-पाँचवाँ सिपारा उतारते समय किसके मन में और क्या उत्पन्न हुआ? वह क्या सोचने लगा?

स. ६६-जब इब्राहीम तफसीर हुसैनी छीनने का निश्चय कर श्रीजी स्वरूप के पास आया, तो वह आकर श्रीजी स्वरूप से क्या कहने लगा?

स. ६७-इब्राहीम सीधे सादे मोमिनों को क्या डर दिखाकर भयभीत करने की ओर गया?

ज. ६७- इब्राहीम ने प्रमाणरहित बातों को लेकर वाद-विवाद करना शुरू →

स. ६८-इब्राहीम लालदास महाराज से क्या कहते हुए, क्या माँगने लगा?

ज. ६१- प्रातः काल जब इब्राहीम अपने घर चला जाता था, तब श्री लालदासजी दातौन आदि नित्य क्रिया करने चले जाते थे।

ज. ६२- उक्त प्रकार सोलह, सत्रह, अठारह और उन्नीस-ये चार सिपारे कुरान में से उतरवाये गये।

→ अध्याय उतारने का कार्य करवा लिया गया। तत्पश्चात् अलिफ लाम मीम से अर्थात् पहले सिपारे से कुरान उतरवाना शुरू किया गया।

→ सिपारा उतरवाने का कार्य किया गया। तत्पश्चात् पाँचवाँ सिपारा आरम्भ किया गया। इस प्रकार ब्रह्मात्माएँ धीरे-धीरे पूरा कुरान उतरवाते चले गये।

ज. ६५- पाँचवाँ सिपारा उतारते समय इब्राहीम के मन में दज्जालरूपी दुर्भावना उत्पन्न हुई। वह यह विचार करने लगा, "इनसे मैं यह तफसीर हुसैनी छीन लूँ, तब मेरा मन शान्त होगा।"

ज. ६६- जब इब्राहीम तफसीर हुसैनी छीनने का निश्चय कर श्रीजी स्वरूप के पास आया, तब वह श्रीजी के आगे उलटी-सीधी बातों की साक्षियाँ दे-देकर झंझट करने लगा।

→ कर दिया। वह बेधड़क होकर उतारी हुई हुसैनी तफसीर माँगने लगा। वह मोमिनों को सीधा सादा और सरल हृदयवाला जानकर शरीअती राज्य का भय दिखाने लगा।

ज. ६८- इब्राहीम लालदास महाराज से यह कहते हुए तफसीर हुसैनी माँगने लगा कि वह उसे अपने घर ले जाना चाहता है।

स. ६९-इब्राहीम की बातें सुनकर लालदासजी ने उसे किस तरह पहचान लिया?

स. ७०-लालदासजी इब्राहीम की चाल-ढाल देखकर क्या विचार करने लगे?

स. ७१-इब्राहीम को मेहनताना देकर उतरवायी हुई तफसीर हुसैनी के विषय में लालदासजी क्या सोचने लगे?

ज. ७१- इब्राहीम को मेहनताना देकर उतरवायी हुई हुसैनी तफसीर के →

स. ७२-इब्राहीम की बातों से उसके मन को भाँपकर श्रीजी ने उसे कैसे शब्दों में उत्तर दिया?

स. ७३-श्रीजी के द्वारा दृढ़तापूर्ण शब्दों में उत्तर सुनकर इब्राहीम ने उन्हें क्या धमकी दी?

स. ७४-इब्राहीम की बुरी नीयतयुक्त उपद्रवी बातें सुनकर सबको कैसा लगा?

ज. ७४- इब्राहीम की उपरोक्त धमकी भरी बातों और उपद्रव मचाने की →

स. ७५-इब्राहीम द्वारा श्रीजी स्वरूप के साथ की हुई अविश्वसनीय एवं उपद्रवी बातें किसने सुनी?

स. ७६-उक्त बातें सुनते ही कौन पठान दौड़कर श्रीजी साहेबजी के पास आया और उनसे क्या पूछा?

ज. ७६- उक्त बातें सुनते ही मुहब्बत खाँ पठान भागते हुए यथाशीघ्र श्रीजी →

ज. ६९- इब्राहीम की बातों से लालदासजी ने उसकी कुदृष्टि को पहचान लिया कि इसके मन में दज्जाल ने घुसकर इसका विश्वास छीन लिया है।

ज. ७०- इब्राहीम की चाल-ढाल देखकर लालदासजी विचार करने लगे कि यह उपद्रव खड़ा करने का कार्य कर रहा है।

→ विषय में लालदासजी सोचने लगे, "मैं तफसीर हुसैनी इब्राहीम को क्यों दूँ? यह तो दीन इसलाम-निजानन्द धर्म से विमुख हो रहा है।"

ज. ७२- उक्त प्रकार इब्राहीम की बातें सुनकर उसके मन को भाँपकर श्री प्राणनाथजी ने उसे समझाने के विचार से दृढ़तापूर्ण शब्दों में उत्तर दिया।

ज. ७३- श्रीजी के द्वारा दृढ़तापूर्ण शब्दों में उत्तर सुनकर इब्राहीम ने श्रीजी स्वरूप को मुसलमानों को भड़काकर उत्पात-तूफान मचाने की धमकी दी।

→ नीयत देखकर सभी सुन्दरसाथ मन ही मन बहुत दुःखी हुए और सब मिलकर सलाह करने लगे, "अब हमें इस विषय क्या करना चाहिए?"

ज. ७५- उक्त प्रकार इब्राहीम द्वारा श्रीजी साहेबजी के साथ की हुई अविश्वसनीय एवम् उपद्रवी बातें मुहब्बत खाँ पठान ने सुनी ।

→ साहेबजी के पास उपस्थित हुआ और उनसे पूछा, "आप किस लिए चिन्तित और दुःखी हैं? आपको दुःखी देखकर मैं भी दुःखी हूँ। आप कृपया मुझे अपनी चिन्ता का कारण बताइए।"

स. ७७-मुहब्बत खाँ ने जब श्रीजी से उनकी चिन्ता का कारण पूछा, तब श्रीजी साहेबजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ७७- मुहब्बत खाँ ने जब उक्त प्रकार श्रीजी से उनके चिन्तित होने →

स. ७८-इब्राहीम द्वारा दी हुई धमकी भरी बातों को सुनते ही मुहब्बत खाँ क्रोधित होकर क्या कहने लगा?

स. ७९-वहाँ से उठकर मुहब्बत खाँ कहाँ गया और क्या लेकर, तत्पश्चात् कहाँ पहुँचा?

ज. ७९- श्री प्राणनाथजी के पास से उठकर मुहब्बत खाँ तुरन्त इब्राहीम →

स. ८०-मुहब्बत खाँ को इब्राहीम की पत्नी ने इब्राहीम के बारे में क्या बताया?

स. ८१-इब्राहीम की पत्नी की बातें सुनकर मुहब्बत खाँ पठान ने क्या किया?

स. ८२-मुहब्बत खाँ की ऊँची आवाज सुनते ही इब्राहीम ने तुरन्त बाहर आकर क्या किया?

ज. ८२- जब मुहब्बत खाँ ने ऊँची आवाज और कटु शब्दों में इब्राहीम को →

स. ८३-इब्राहीम की बातें सुनकर मुहब्बत खाँ ने उससे क्या कहा?

ज. ८३- इब्राहीम की उक्त बातें सुनकर मुहब्बत खाँ ने उससे कहा, "तूने हादी (सद्गुरु) को क्यों दुःखी किया? ऐसा कपटभरा कर्म →

→ का कारण पूछा, तब श्रीजी साहेब ने इब्राहीम की सारी बातें बतायीं कि "इब्राहीम ने सीधे सादे धर्मनिष्ठ साथियों के बीच उपद्रव खड़ा करने की धमकी दी है।" उक्त प्रकार धमकी की बातें सुनते ही मुहब्बत खाँ इब्राहीम के प्रति अत्यंत क्रोधित हो उठा।

ज. ७८- इब्राहीम द्वारा उपद्रव खड़ा करने की धमकीपूर्ण बातों को सुनते ही मुहब्बत खाँ क्रोधित होकर बोला, "मैं यहाँ मन्दसोर में सबके सामने इब्राहीम का सिर फोड़कर चूर-चूर कर दूँगा।"

→ के घर गया।उसने यहीं से अपने कन्धे पर कुतका (चमड़े से मढ़ा हुआ डंडा) ले लिया था। इस तरह तैयार होकर मुहब्बत खाँ पठान सीधे इब्राहीम के घर गया और जाकर उसकी पत्नी से पूछा, "कहाँ गया इब्राहीम?"

ज. ८०- जब क्रोध भरे वचनों में मुहब्बत खाँ ने इब्राहीम की पत्नी से "इब्राहीम कहाँ है?" इस प्रकार पूछा, तब उसकी पत्नी ने कहा, "वे घर पर नहीं हैं। वे तो निकाह सुनाने गये हैं।"

ज. ८१- इब्राहीम की पत्नी ने मुहब्बत खाँ को इब्राहीम जिस दिशा में निकाह सुनाने गए हैं, वह दिशा बता दी, तब मुहब्बत खाँ उसका नाम लेकर चिल्लाते-चिल्लाते उसी ओर चला गया।

→ पुकारा, तब मुहब्बत खाँ की ऊँची आवाज सुनकर इब्राहीम आवाज को पहचानकर घर से बाहर आया और तुरन्त मुहब्बत खाँ से कहने लगा, "आप मुझ पर इतने क्रोधित क्यों हैं? मैं तो आपका दास हूँ। आप जो भी आज्ञा देंगे, मैं वही करने को तत्पर हूँ।"

→ तूने किस लिए किया? मेरे सामने तो तूने स्वीकार किया था कि ये हादी हमारे पालनहार हैं, प्यारे इमाम हैं और मैं इनका दास हूँ। अभी किस लिए तूने अपने विचारों को बदल डाला? तेरा उन पर से विश्वास कैसे उठ गया?"

स. ८४-इब्राहीम के सामने मुहब्बत खाँ ने किस विषय में रसूल की सौगंद खायी?

स. ८५-जब मुहब्बत खाँ ने रसूल की सौगंद खायी, तब इब्राहीम क्या करने लगा?

स. ८६- इब्राहीम के उक्त व्यवहार को देखकर मुहब्बत खाँ ने उससे क्या कहा?

ज. ८६- इब्राहीम के उक्त व्यवहार को देखकर मुहब्बत खाँ ने उससे कहा, →

स. ८७-दूसरे दिन प्रातःकाल उठते ही कौन भागते-भागते श्रीजी के पास आया और क्या करने लगा?

स. ८८-जब इब्राहीम भागते-भागते श्रीजी के पास आया, तब उस समय श्रीजी साहेबजी के पास कौन बैठा था? उसने इब्राहीम से क्या कहा?

स. ८९-"पर कहा करीं डरता हूँ हादी से"- यह वाक्यांश किनके मुख का है? उक्त वाक्यांश के वास्तविक तात्पर्य को स्पष्ट कीजिए ।

ज. ८९- *"पर कहा करीं डरता हूँ हादी से"-यह वाक्यांश नूर मुहम्मद के* →

स. ९०-श्रीजी साहेबजी के चरणों में इब्राहीम ने मनुहार करते हुए क्या कहा?

ज. ९०- इब्राहीम ने पछताते और सिसकते-सिसकते श्रीजी के चरणों में मनुहार करते हुए कहा, "मैं आपका दास हूँ, मुझसे भूल हो गई। →

ज. ८४- इब्राहीम के सामने मुहब्बत खाँ ने इब्राहीम को मार डालने की सौगंद खाते हुए कहा, "सौगंद रसूल की! तुझे अब मैं किसी प्रकार जीवित नहीं छोड़ूँगा। मैं तुझे मार डालूँगा।"

ज. ८५- उक्त प्रकार जब मुहब्बत खाँ ने रसूल की सौगंद खाई, तब तुरन्त ही इब्राहीम मुहब्बत खाँ के चरणों में गीदड़ की तरह कायर होकर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाते हुए क्षमा माँगने लगा।

→ "उठ नीच! तू हादी श्री प्राणनाथजी के चरणों में जाकर क्षमा माँग!! उन्हें प्रसन्न कर !!! अन्यथा मैं तुझे जीवित नहीं छोड़ूँगा क्योंकि सदैव प्रसन्नचित्त रहनेवाले हादी आज तेरे ऐसे व्यवहार से अत्यन्त दुःखी हो रहे हैं।"

ज. ८७- दूसरे दिन प्रातःकाल उठते ही इब्राहीम भागते-भागते श्रीजी साहेब के पास आया और उसने श्रीजी के चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया। मारे शर्म के वह सिर ही नहीं उठा पा रहा था।

ज. ८८- जब इब्राहीम भागते-भागते श्रीजी के पास आया, उस समय श्रीजी के पास नूर मुहम्मद बैठा था। उसने इब्राहीम से कहा, "उठकर खड़े हो जा मुरदार! मेरा तो जी चाहता है कि तेरे पेट में कटारी भोंककर तुझे यहीं समाप्त कर दूँ।"

→ मुख का है। इस वाक्यांश द्वारा वे यह कहना चाहते हैं, "तुझे मैं यहीं समाप्त कर कब्रिस्तान पहुँचा देता। परन्तु मैं क्या करूँ? इन हादी-सद्गुरुजी की ऐसी आज्ञा नहीं है। तुझे मारने के लिए मुझे केवल उन्हीं का डर है। अन्यथा ऐसी अशिष्टता दिखाकर तू यहाँ से जीवित उठकर नहीं जा सकता था।"

→ कृपया आप मुझे क्षमा कर दीजिए। सचमुच ही मैंने आपके साथ अनुचित व्यवहार किया है। मैंने गद्दारी की है। किन्तु अब तो मैंने आपके चरण पकड़ लिये हैं, जिन्हें मैं कभी भी और किसी भी तरह नहीं छोड़ूँगा।"

स. ९१-जब इब्राहीम वहाँ उपस्थित अन्य सभी के चरणों में लगकर क्षमायाचना करने लगा, तब श्रीजी ने क्या किया?

स. ९२-पाँचवाँ सिपारा उतारना किसने आरंभ किया और पूरा कर सौंप भी दिया?

स. ९३-इस समय "ए कलियुग के नाम" अर्थात् कलियुगी वृत्तिग्रस्त बादशाह औरंगजेब ने क्या हुकम किया?

स. ९४-बादशाह के आदेश से सुन्दरसाथजी की क्या हालत हुई?

ज. ९४- बादशाह औरंगजेब के आदेशानुसार उसकी फौज ने मन्दसोर →

स. ९५-कौन,कहाँ छिपकर रहने लगे? पुनः अवसर देखकर कैसे श्रीजी स्वरूप के दर्शनार्थ आते थे?

स. ९६-भोजन-प्रसाद की व्यवस्था न होने के कारण कहाँ से और कौन झोलियाँ भर-भरकर श्रीजी के लिए टुकड़े ले आते थे?

ज. ९६- चारों ओर बादशाह औरंगजेब की फौज ने घेरा डाल रखा था। →

स. ९७-श्रीजी साहेबजी उन टुकड़ों को कैसे और क्या कहते हुए ग्रहण करते थे?

स. ९८-श्री प्राणनाथजी के प्रश्नों को सुनकर सुन्दरसाथजी क्या उत्तर देते थे?

ज. ९१- जब इब्राहीम रोते-रोते उपस्थित समस्त सुन्दरसाथ के चरणों को स्पर्श कर क्षमायाचना करते हुए गिड़गिड़ाने लगा, तब श्रीजी साहेबजी ने उसे क्षमा कर दिया।

ज. ९२- तत्पश्चात् इब्राहीम के भाई ने कुरान का पाँचवाँ सिपारा उतारना आरंभ किया और पूरा सिपारा उतारकर लालदासजी को सौंप भी दिया।

ज.९३- इस समय कलियुग नामवाले दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने दज्जाल के वशीभूत होकर अपनी सेना को मन्दसोर प्रान्त पर चढ़ाई करने का हुकम किया।

→ पर चढ़ाई कर दी। इस समय वहाँ के सभी सुन्दरसाथ भयभीत होकर अलग-अलग स्थानों पर रहने लगे, किन्तु किसी ने अपने चित्त को विचलित होने नहीं दिया।

ज. ९५- वे सभी सुन्दरसाथ जो श्रीजी साहेबजी के पास आते थे, इधर-उधर छिपकर रहने लगे। परन्तु अवसर देखकर दिन में एक बार तो अवश्य ही श्रीजी के दर्शनार्थ आते थे।

→ भोजन-प्रसाद बनाने हेतु न सामान ले आते बनता था और न जाते ही बनता था। अतः संन्यासी भेष धारण किये हुए सुन्दरसाथ इधर-उधर घूम-फिरकर घर-घर से टुकड़े माँगकर झोलियों में भरकर ले आते थे। समूह-समूह में भोजन पकाने की व्यवस्था कहीं नहीं हो पा रही थी।

ज. ९७- इस प्रकार ब्रह्मात्माओं द्वारा माँगकर लाये हुए टुकड़ों को श्रीजी स्वरूप रुचिपूर्वक ग्रहण करते थे और पूछते थे, "अरे भाई ! यह टुकड़ा बहुत ही स्वादिष्ट है। किसकी झोली का है?"

ज. ९८- उक्त प्रकार श्रीजी साहेबजी द्वारा रुचिपूर्वक ग्रहण करते हुए पूछने पर उसके जवाब में वह टुकड़ा लानेवाले भाई कहते थे, "यह मेरी झोली का टुकड़ा है। इन्हें मैं माँगकर लाया हूँ।"

स. ९९- इस समय श्रीजी साहेबजी किस तरह विनोदपूर्ण बातें करते थे?

स.१००- "मैं अजमावत तुम को"-श्रीजी स्वरूप के इस वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?

ज.१००- *"मैं अजमावत तुम को"*-श्रीजी साहेबजी इस वाक्यांश द्वारा कहना चाहते हैं, "हे सुन्दरसाथजी! पहले आप लोग कैसे थे? दिन में दस जनों को देकर खानेवाले ! *"बडे घराने सब* →

स.१०१- उक्त वाक्यांश के प्रत्युत्तर में मोमिनों ने क्या (कैसा) जवाब दिया?

ज.१०१- उक्त वाक्यांश के उत्तर में मोमिनों ने कहा, "हे धनी! हमें यह →

स.१०२- यहाँ श्री प्राणनाथजी ने सुन्दरसाथजी को उत्साहित करते हुए क्या कहा?

ज.१०२- यहाँ श्रीजी साहेबजी ने सुन्दरसाथजी को उत्साहित करते हुए →

स.१०३- इस समय सभी सुन्दरसाथ का मुखमण्डल कैसा प्रतीत होता था?

स.१०४- यहाँ इस वक्त श्री बाईज्यूराज ने सुन्दरसाथजी की सेवा के विषय में क्या किया?

स.१०५- यहाँ सुन्दरसाथ परस्पर किस प्रकार एक-दूसरे की सेवा करने लगे थे?

स.१०६- यहाँ किस विषय में, किसी (औरंगजेब की फौज) के मन में शंका-उपशंकाएँ उत्पन्न नहीं हो पाती थीं?

ज. ९९- इस वक्त श्रीजी साहेबजी टुकड़े माँगकर लानेवाले साथियों पर अत्यन्त प्रसन्न होते थे और हँस-हँसकर विभिन्न प्रकार की हँसी-विनोदपूर्ण बातें भी करते थे।

→ *कोई जाने*" अर्थात् समाज में बड़े प्रतिष्ठित और इज्जतदार थे और आज सबके घर-घर में पहुँचकर टुकड़े माँगने की स्थिति में पहुँच गये हो। पहले किस प्रकार माया में मस्त थे? अब वह मायावी पदवी कहाँ चली गयी? आपको इन परिस्थितियों में पहुँचाकर आपके धैर्य की परीक्षा ली जा रही है।"

→ घड़ी-ऐसा दिन पुनः कब मिलेगा?" इस तरह ऐसी स्थिति में पहुँचकर भी सुन्दरसाथ प्रसन्नचित्त रहते थे और परस्पर हँसी-विनोद करके आपस में घुल-मिलकर प्रेमपूर्वक रहते थे।

→ कहा, "तुम लोगों ने संसार के मर्यादारूपी दज्जाल का सिर तोड़ दिया है। जिस लोक मर्यादा, कुल मर्यादा और वेद मर्यादा में लोग सन्धि-सन्धि बँधे हुए हैं, उस कुटुम्ब-कबीले और परिवार की अभिलाषा तक आप में शेष नहीं रही।"

ज.१०३- इस समय सभी सुन्दरसाथ के मुखमण्डल पर अपूर्व तेज झलकता था। इनके साथ इस समय विशेषरूप से जबराईल का नूर था।

ज.१०४- इस आपत्ति-विपत्ति के समय में श्री तेजकुँवरी-बाईज्यूराजजी बड़े प्रेम एवम् दर्द भरे कोमल दिल से दाल पकाकर साथियों के आगे रखती थीं। सेवा में उनका मन सदैव देदीप्यमान रहता था।

ज.१०५- यहाँ सभी सुन्दरसाथजी परस्पर बहुत सतर्क होकर प्रसन्नचित्त से एक-दूसरे की सेवा करने लगे थे।

ज.१०६- यहाँ तो सभी सुन्दरसाथ विभिन्न प्रकार के सेवा-कार्यों में मस्त होकर परस्पर प्रेमपूर्ण व्यवहार करते थे। इसलिए किसी →

→ (औरंगजेब की फौज) के मन में जमात के प्रति शंका-संदेह →

स.१०७- किनके भाग्य में जितना लिखा था, वे उतना सुख भोगकर धाम चले गये?

स.१०८- मुकुन्ददासजी को यहाँ से श्रीजी साहेबजी ने क्या कहकर, कहाँ, किनके पास भेजा?

ज.१०८- मुकुन्ददासजी को श्रीजी साहेबजी ने मन्दसोर से औरंगाबाद →

स.१०९- श्रीजी स्वरूप ने मुकुन्ददासजी को कहाँ जाकर अवसर मुताबिक विचार-विवेक करके, किस लिए पत्र लिखने को कहा?

स.११०- श्रीजी साहेबजी की आज्ञा शिरोधार्य करके मुकुन्ददासजी कहाँ पहुँचे अथवा किससे मिलने गये?

स.१११- किन्हें मुकुन्ददासजी की चर्चा सुनकर बड़ा आनन्द हुआ और उन्होंने कौनसा प्रस्ताव स्वीकार कर लिया?

ज.१११- औरंगाबाद के राजा भावसिंह हाड़ा को मुकुन्ददासजी की चर्चा सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। जब वे चर्चा सुनकर बड़े आनन्दित →

स.११२- उसी समय किसने और किसे औरंगाबाद से संदेश लेकर पत्रवाहक के रूप में मन्दसोर भेजा?

स.११३- किसने, किसे सम्मानपूर्वक आग्रह सहित आमंत्रित किया?

स.११४- पत्र पढ़कर समस्त सुन्दरसाथ सहित श्रीजी साहेबजी को क्या हुआ?

→ उत्पन्न होने का प्रश्न ही नहीं उठता था।

ज.१०७- यहाँ मन्दसोर में बिचारे नाहना भाई धाम चले। उनके भाग्य में जितना लिखा था, वे उतने ही समय सुन्दरसाथ के बीच रहने का सुख प्राप्त कर धाम चले गये।

→ स्थित भावसिंह हाड़ा के पास यह कहकर भेजा, "आप उनके पास जाकर यह जानने का प्रयत्न करो कि उनकी आत्मा जागृत होने योग्य है अथवा माया में लिप्त मृतप्राय हो चुकी है।"

ज.१०९- श्रीजी स्वरूप ने मुकुन्ददासजी को औरंगाबाद पहुँचकर राजा भावसिंह हाड़ा उन्हें बुलायें, तो योग्य अवसर देखकर विचार-विवेक करके उन्हें वहाँ आने के लिए पत्र लिखकर भेजने को कहा।

ज.११०- श्रीजी साहेबजी की आज्ञा शिरोधार्य करके मुकुन्ददासजी औरंगाबाद स्थित राजा भावसिंह हाड़ा से मिलने गये।

→ हो उठे, तब मुकुन्ददासजी ने उनसे कहा, "तुम श्रीजी साहेबजी को बुलाकर चर्चा द्वारा उनकी पहचान कर लो।" मुकुन्ददासजी द्वारा रखा गया यह प्रस्ताव राजा भावसिंह ने स्वीकार कर लिया।

ज.११२- उसी समय मुकुन्ददासजी ने एक कासिद को मन्दसोर श्रीजी के पास भेजा।

ज.११३- औरंगाबाद के राजा भावसिंह ने स्वामी श्री प्राणनाथजी को ससम्मान आग्रहपूर्वक अपने राजमहल में आमंत्रित किया।

ज.११४- मुकुन्ददासजी द्वारा भेजा हुआ औरंगाबाद के राजा भावसिंह हाड़ा का पत्र पढ़कर श्रीजी साहेबजी सहित समस्त सुन्दरसाथ बड़े खुश एवम् सन्तुष्ट हुए।

स.११५- अब मन्दसोर छोड़कर श्रीजी साहेबजी सहित सुन्दरसाथ आगे कहाँ प्रस्थान करने की तैयारी करने लगे?

स.११६- श्रीजी स्वरूप अपनी जमात सहित मन्दसोर में कितने महीने रहे?

स.११७- किसकी आज्ञा समझकर श्रीजी साहेबजी मन्दसोर से प्रस्थान कर रहे हैं?

स.११८- अन्ततोगत्वा बीतककार क्या कह रहे हैं? इसके पहले उन्होंने कहाँ का वृत्तान्त कहा और इसके आगे वे कहाँ का वृत्तान्त कहेंगे?

ज.११८- अन्ततोगत्वा बीतककार श्री लालदासजी महाराज कह रहे हैं,"हे धाम के सुन्दरसाथजी! अब यहाँ मन्दसोर की बीतक →

❋ उज्जैन में उत्सव ❋

स. १ - श्रीजी साहेबजी और जमात मन्दसोर से सवारी पर चले या पैदल?

स. २ - मन्दसोर से असवारी पर सवार होकर जमात सहित श्रीजी साहेबजी कितने पड़ावों में और कहाँ-कहाँ होते हुए उज्जैन पहुँचे?

स. ३ - उज्जैन स्थित श्री धनबाई के घर श्रीजी साहेबजी जमात सहित किस महीने की, कौनसी तिथि को पहुँचे?

स. ४ - उज्जैन में सर्वप्रथम श्री प्राणनाथजी के प्रति श्रद्धा लेकर कौन धर्म में शामिल हुआ?

ज.११५- अब मन्दसोर छोड़कर श्रीजी साहेबजी सहित सुन्दरसाथ औरंगाबाद की ओर प्रस्थान करने की तैयारी करने लगे।

ज.११६- श्रीजी स्वरूप अपनी जमात सहित मन्दसोर में आठ महीने रहे।

ज.११७- श्रीजी साहेबजी इसे मूल मिलावे पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की आज्ञा समझकर मन्दसोर से आगे की ओर प्रस्थान कर रहे हैं।

→ पूरी हुई। अब इसके उपरान्त यहाँ से आगे की ओर प्रस्थान किया जा रहा है। श्री राजजी की आज्ञा से आगे औरंगाबाद की बीतक अगले प्रकरण में कहूँगा।"

- (प्रकरण ५१, सवाल-जवाब नं. ११८, कुल सं. ३२६६+११८ =३३८४)।

❋ उज्जैन में उत्सव ❋

ज. १ - श्रीजी साहेबजी ब्रह्मात्माओं की जमात के साथ मन्दसोर से असवारी पर सवार होकर सीता मऊ आये। एक भी सुन्दरसाथ पैदल नहीं चले। सबके सब असवारी पर सवार होकर चले हैं।

ज. २ - मन्दसोर से श्री प्राणनाथजी और श्री बाईज्यूराज सहित सुन्दरसाथ समुदाय असवारी पर सवार होकर नौलाई होते हुए उज्जैन पहुँचे। इस कठिन यात्रा के दौरान श्रीजी स्वरूप सहित जमात भी पड़ावों पर रुकते-रुकते मन्दसोर से उज्जैन पहुँचे।

ज. ३ - उज्जैन स्थित श्री धनबाई के घर श्रीजी साहेबजी जमात सहित भादों माह के शुक्ल पक्ष की छट्ठी के दिन पहुँचे।

ज. ४ - उज्जैन में सर्वप्रथम भगवान भाई चौधरी श्री प्राणनाथजी के प्रति श्रद्धा-विश्वास सहित पूर्ण निष्ठा लेकर श्रीमन्निजानन्द धर्म में शामिल हुए।

स. ५ - किसने ससम्मान श्रीजी साहेबजी सहित सुन्दरसाथजी को भोजन कराया?

स. ६ - किनके पुत्र का नाम नानजी है, जिसने श्री प्राणनाथजी को दूसरी मंजिल (अटारी) पर पधराया ?

स. ७ - भगवान भाई के घर में कौन-कौन श्रीजी साहेबजी की चर्चा सुनकर अपनी आत्मा जागृत कर धर्म में शामिल हुए?

स. ८ - उज्जैन स्थित भगवान भाई और धनबाई के घर में हुई चर्चा में निजानन्द धर्म मार्ग पर कौन-कौन समर्पित हुए?

स. ९ - श्री प्राणनाथजी को सम्मानपूर्वक अपने घर मे आमंत्रित कर किसने उत्सव किया?

स. १०-किनके घर में भजन-कीर्तन, उत्सवादि किया गया और उनकी इच्छा पूर्ण कर दी गयी?

स. ११-श्री रामजी और धनजी भाई ने जागृत होकर क्या-क्या किया?

ज. ११- श्री रामजी और धनजी भाई भी यहीं चर्चा सुनकर जागृत होकर →

स. १२-वे कौन भाई हैं, जिन्होंने उत्सव-रसोई, चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन सहित बड़े हाव-भाव और प्रेम-प्रीत के साथ श्रीजी स्वरूप और जमात की सेवा की, परन्तु सुन्दरसाथ जमात में आ नहीं सके?

ज. ५ - उज्जैन में बाबूजी नामक एक सज्जन ने रसोई बनाकर सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी को ससम्मान प्रेम-भाव से भोजन कराया।

ज. ६ - बाबूजी नामक सज्जन के सुपुत्र का नाम नानजी भाई है। उन्होंने श्री प्राणनाथजी को दूसरी मंजिल (अटारी) पर पधराया।

ज. ७ - भगवान भाई के घर में भगवान भाई के पुत्र बूला भाई, कानजी भाई, मन भाई है और धनबाई तथा उनके सम्बन्धी दामोदरदास आदि ब्रह्ममुनि श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनकर निजानन्द धर्म सिद्धान्त पर समर्पित हुए।

ज. ८ - उज्जैन में भगवान भाई और धनबाई के घर में हुई चर्चा सुनकर लालजी भाई और उनके पुत्र बूला भाई जागृत हुए। पुनः कान्हजी नामक एक दूसरे साथी तथा उनके भाई बेनी भाई भी यहाँ श्रीजी साहेबजी द्वारा की गई चर्चा से प्रभावित होकर निजानन्द धर्म सिद्धान्त पर समर्पित हुए।

ज. ९ - लालजी भाई ने श्री प्राणनाथजी और श्री बाईज्यूराज सहित समस्त सुन्दरसाथ को सम्मानपूर्वक अपने घर आमंत्रित कर उत्सव का आयोजन किया।

ज. १०- मोहन भाई के घर में उत्सव-रसोई, भजन-कीर्तन, चर्चा आदि बड़े आनन्द सहित सम्पन्न हुआ। श्री प्राणनाथजी ने मोहन भाई की इच्छा पूर्ण करके उन्हें आशीर्वाद भी दिया।

→ निजानन्द धर्म में दीक्षित हुए। उन्होंने भी श्रीजी साहेबजी को अपने घर में सादर आमंत्रित किया। श्रीजी साहेबजी ने सुन्दरसाथ सहित उनके घर पधारकर उनकी मनोकामनाएँ पूर्ण कर दीं।

ज. १२- उन भाई का नाम है-कान्हजी भाई। उन्होंने बड़े प्रेम से अपने घर में श्रीजी स्वरूप सहित जमात के लिए रसोई-भोजन आदि का प्रबन्ध किया और बड़े हाव-भाव एवम् प्रेम-प्रीत के साथ सबको भोजन कराया। परन्तु अंकुर न होने के कारण सुन्दरसाथ जमात में शामिल नहीं हो सके।

स. १३ -वे बहन कौन थी, जिन्होंने श्रीजी स्वरूप को अपने घर बुलाकर भलीभाँति उनकी सेवा-शुश्रूसा की और अत्यंत पवित्रतापूर्वक श्रीजी के लिए विभिन्न प्रकार के रुचिकर और स्वादिष्ट व्यंजन बनाये?

स. १४-किसने अपने घर में विधिवत् उत्सव-रसोई आदि का आयोजन किया और श्री प्राणनाथजी सहित साथ को बड़े प्रेम और उत्साह के साथ भोजन कराया?

स. १५-किसने प्रसन्नतापूर्वक प्रबन्ध कर श्रीजी स्वरूप को उच्चासन पर बिठाकर उनके दिव्य स्वरूप का दर्शन किया और बड़ी इच्छा से उन्हें आरोगाया?

स. १६-उज्जैन में किस युगलजोड़ी ने श्री प्राणनाथजी को स्नेहसिक्त भाव से आमंत्रित किया? पुनः किनकी मनोकामना श्रीजी स्वरूप ने पूर्ण कर दी?

स. १७-किस भाई ने स्नेहपूर्वक श्रीजी स्वरूप की अपने घर में पधरावनी की? अन्य किस-किस ने अपने-अपने घरों में श्रीजी स्वरूप को आमंत्रित कर पधराया ?

ज. १७- कान्हजी भाई स्नेहपूर्वक श्रीजी साहेबजी को अपने घर ले गये →

स. १८-उज्जैन के समाज के प्रतिष्ठित और धनाढ्य लोगों ने कहाँ-कहाँ श्रीजी स्वरूप को सादर आमंत्रित किया और उनसे आशीर्वाद की माँग की?

ज. १८ -उज्जैन के समाज के प्रतिष्ठित और धनाढ्य लोगों ने श्रीजी स्वरूप →

ज. १३- जीवली बहन ने श्री प्राणनाथजी को अपने घर बुलाया और भलीभाँति उनकी सेवा-शुश्रूसा की। उन्होंने स्वयं श्रीजी के लिए पवित्रतापूर्वक विभिन्न प्रकार के रुचिकर और स्वादिष्ट व्यंजन बनाये।

ज. १४- धनजी भाई और ऊका भाई ने भी अपने-अपने घरों में श्रीजी साहेबजी सहित जमात के लिए विधिवत् भोजन-रसोई आदि का प्रबन्ध किया। इन्होंने अपने-अपने घरों में प्रेमपूर्वक जमात सहित श्रीजी स्वरूप को आमंत्रित कर बड़े उत्साह के साथ उन्हें आरोगाया।

ज. १५- बालबाई ने प्रसन्नतापूर्वक श्रीजी स्वरूप सहित समस्त सुन्दरसाथ को भोजन आरोगाया और अपने मन में अत्यधिक आनन्द लेकर श्रीजी साहेबजी को उच्चासन पर विराजमान कराकर उनके दिव्य स्वरूप का दर्शन किया।

ज. १६- उज्जैन में भूधर भाई और फूलबाई ने श्री प्राणनाथजी को स्नेहसिक्त भाव से अपने घर में आमंत्रित किया। उक्त युगलजोड़ी की मनोकामना श्रीजी स्वरूप ने पूर्ण कर दी।

→ और घर में पाँवड़ा बिछाकर श्रीजी स्वरूप की पधरावनी की। उनके साथ-साथ मुरली भाई,आनन्दजी और श्यामजी ने भी श्री प्राणनाथजी स्वरूप को अपने-अपने घरों में आमंत्रित करके प्रेम से उनकी पधरावनी की और भली प्रकार से सेवा की।

→ को अपने-अपने घरों, मिलों, कारखानों एवम् दुकानों में सादर आमंत्रित कर प्रेम से उनकी पधरावनी की। उज्जैन में जिन-जिन्होंने अपनी जो-जो मनोकामनाएँ श्री प्राणनाथजी स्वरूप के आगे रखी, श्री प्राणनाथजी उन सबको तथास्तु कहते गये।

स. १९-उक्त प्रकार श्रीजी स्वरूप जमात सहित उज्जैन में कितने दिन ठहरे? पुनः वे उज्जैन से प्रस्थान कर कहाँ चले?

स. २०-श्रीजी स्वरूप उज्जैन से कहाँ-कहाँ होते हुए, कितने-कितने दिन रहते हुए नुनेरे पहुँचे?

स. २१-श्रीजी स्वरूप नुनेरे कितने दिन रहे? पुनः कहाँ होते हुए उन्होंने गन्तव्य स्थान औरंगाबाद की ओर प्रस्थान किया?

स. २२-बीतककार श्री लालदासजी इसके उपरान्त कहाँ महत्त्वपूर्ण चर्चा होने का इशारा कर रहे हैं?

❋ औरंगाबाद वृत्तान्त ❋

स. १ - श्री प्राणनाथजी जमात सहित उदयपुर के राणा के राज्य से कहाँ-कहाँ होते हुए दुधलाई आये?

स. २ - कहाँ के और कैसे लोगों ने सुन्दरसाथ जमात को बेमतलब परेशान किया?

स. ३ - कहाँ से श्रीजी साहेबजी ने मुकुन्ददासजी को राजा भावसिंह के पास भेजा था?

ज. ३ - दुधलाई से ही श्रीजी साहेबजी ने मुकुन्ददास, केशवदास, खिमाई →

ज. १९- उक्त प्रकार महामति श्री प्राणनाथजी बाईस दिन उज्जैन में ठहरे। पुनः तेईसवें दिन उज्जैन से नौलाई की ओर प्रस्थान किया।

ज. २०- श्रीजी स्वरूप उज्जैन में २२ दिन रहकर तेईसवें दिन निकले और नौलाई में एक दिन ठहरकर साथियों सहित नुनेरे ग्राम पहुँचे।

ज. २१- श्रीजी स्वरूप नुनेरे गाँव में सिर्फ एक दिन ठहरकर बुढ़ानपुर आये। पुनः बुढ़ानपुर में भी मात्र एक दिन रहकर वे सुन्दरसाथ जमात सहित अपने गन्तव्य स्थान औरंगाबाद की ओर प्रस्थान कर चले।

ज. २२- बीतककार श्री लालदासजी महाराज अब इसके उपरान्त गन्तव्य स्थान औरंगाबाद में महत्त्वपूर्ण चर्चा होने का और उस चर्चा का वर्णन करने के विषय में पहले से ही इशारा कर रहे हैं।

- (प्रकरण ५२, सवाल-जवाब नं. २२, कुल सं. ३३८४+२२=३४०६)।

❋ औरंगाबाद वृत्तान्त ❋

ज. १ - श्री प्राणनाथजी स्वरूप जमात सहित राणा राजसिंह के राज्य उदयपुर से रामपुरा होते हुए दुधलाई नामक गाँव में उतरे और ठहरने की व्यवस्था की।

ज. २ - दुधलाई गाँव के ईर्ष्यालु लोगों के मन में बैठकर दज्जाल ने सुन्दरसाथ जमात को बेमतलब परेशान किया।

→ और वल्लभदास-इन चार भाइयों को औरंगाबाद स्थित राजा भावसिंह हाड़ा के पास हिन्दू धर्म रक्षार्थ उनके मनोभावों को जानने के लिए भेजा था।

स. ४ - मुकुन्ददासजी के साथ अन्य कौन-कौन औरंगाबाद गये थे?

स. ५ - मुकुन्ददासजी साधु भेष में कितने महीने तक राजा भावसिंह से भेंट करने का प्रयत्न करते रहे?

स. ६ - औरंगाबाद में मुकुन्ददास ने वेदान्त पक्ष की जानकारी रखनेवाले विद्वान साधुओं के साथ बैठकर क्या किया?

स. ७ - राजा भावसिंह से मिलने के लिए आये हुए कौन-कौन उनसे मिले बिना ही लौटने लगे?

स. ८ - उक्त लौटनेवालों में से कौन वापस लौट जाने के विषय में असहमति दिखाकर राजा भावसिंह से मिलने के लिए रुक गये?

स. ९ - मुकुन्ददासजी क्या विचार करते रहे?

ज. ९ - मुकुन्ददासजी यह सोचते और विचार करते रह गए, "मुझ पर इतना विश्वास कर श्रीजी साहेबजी ने मुझे यहाँ भेजा है। अब मैं →

स. १०-किसने और किस लिए भिक्षा माँगकर दो रुपये इकट्ठे किए?

स. ११-मुकुन्ददासजी ने उन दो रुपयों से क्या किया? ऐसा करने की जरूरत उन्हें क्यों पड़ी?

स. १२-भिक्षा माँगकर इकट्ठा किए हुए दो रुपयों द्वारा तैयार की हुई प्रसाद की थैली में मुकुन्ददासजी ने क्या-क्या रखा था?

ज. ४ - मुकुन्ददासजी के साथ केशवदास, खिमाई और वल्लभदास-ये तीन भाई औरंगाबाद गये थे।

ज. ५ - उक्त तीनों भाई-खिमाई, वल्लभदास और केशवदास तो एक दुकान पर बैठे थे। मुकुन्ददासजी निर्गुण-साधु भेष धारण कर कई महीनों तक भावसिंह से भेंट करने का प्रयत्न करते रहे।

ज. ६ - औरंगाबाद में मुकुन्ददासजी ने वेदान्त पक्ष की जानकारी रखनेवाले विद्वान साधुओं के पास बैठकर वेदान्त पक्ष की खोज की।

ज. ७ - उक्त तीन जन जो मुकुन्ददासजी के साथ राजा भावसिंह से मिलने आये थे, जैसे केशवदासजी, खिमाई भाई और वल्लभदास भाई राजा भावसिंह से मिले बिना ही लौटने लगे।

ज. ८ - श्रीजी साहेबजी द्वारा औरंगाबाद के राजा भावसिंह से मिलने के लिए भेजे गए चार जनों में से अग्रगण्य मुकुन्ददासजी राजा भावसिंह से मिले बिना ही लौटने में असहमति दिखाकर राजा से मिलने के लिए रुक गये।

→ उनका विश्वासघाती बनकर भावसिंह राजा से मिले बिना ही कैसे लौट सकता हूँ? तब तो मैं श्रीजी को मुँह दिखाने के लायक भी नहीं रहूँगा।"

ज. १०- निर्गुण भेषयुक्त मुकुन्ददासजी ने शहर में भिक्षा माँगकर दो रुपये इकट्ठे किए क्योंकि बहुत दिन हो चुके थे। लेकर आया हुआ सारा पैसा खर्च हो चुका था। यसर्थ भिक्षा माँगने के दिन आ गये।

ज. ११- उन दो रुपयों से मुकुन्ददासजी ने एक रेशमी थैली बनवाई, जिससे वे राणा को पहुँचाने की सामग्री उसमें डाल सकें।

ज. १२- भिक्षा माँगकर इकट्ठा किए हुए दो रुपयों द्वारा तैयार की हुई प्रसाद की थैली में मुकुन्ददासजी ने राजा भावसिंह हाड़ा के लिए प्रसाद →

→ रख दिया और वेदान्त तथा भागवत के तैयार किये हुए प्रश्न भी →

स. १३-महन्त रामदास कौन था और वह क्या करता था?

स. १४-बाजार के बीच निर्गुण भेषवाले दोनों साधुओं की कैसी बातें हुई?

ज. १४- एक दिन बाजार के बीच निर्गुण भेषधारी रामदास महन्त से मुकुन्ददासजी की भेंट हुई। तब मुकुन्ददासजी ने उनसे राजा भावसिंह हाड़ा से मिलने का उपाय पूछा। तब महन्त रामदास ने पूछा, "राजा से आपको क्या काम है? आप राजा से क्यों मिलना चाहते हैं?" तब मुकुन्ददासजी ने कहा, "मुझे धर्म विषय में उनसे सत्संग करना है।" तब पुनः महन्त रामदास ने पूछा, "क्या धर्म, कौनसा धर्म? आप किस धर्म के अनुयायी हैं?" तब मुकुन्ददासजी ने कहा, "मैं श्री कृष्ण प्रणामी हूँ।" तब महन्त रामदास ने कहा, "हम भी तो श्री कृष्ण को ही मानते हैं। तो →

स.१५-रामदास महन्त ने क्यों अचानक मारते-मारते मुकुन्ददासजी को नाला पार करा दिया?

स.१६- रामदास महन्त ने मुकुन्ददासजी को नाला पार करवाकर क्या धमकी दी?

ज. १६- रामदास महन्त ने मुकुन्ददासजी को नाला पार करवाकर धमकी →

स.१७-जब महन्त रामदास ने मुकुन्ददासजी के प्रति उक्त दुर्व्यवहार किया, तब मुकुन्ददासजी ने क्या विचार किया?

→ उसमें रख दिये। इस तरह भावसिंह हाड़ा से भेंट करने की तैयारी उन्होंने कर ली।

ज. १३- महन्त रामदास देवी के मन्दिर का महन्त था। वह भावसिंह हाड़ा के यहाँ पुरोहित का कार्य भी करता था।

→ तुम्हारे धर्म में ऐसी क्या विशेषता है?" तब मुकुन्ददासजी ने कहा, "कृष्ण मात्र कहने से नहीं होता। कृष्ण नाम में तीन भेद हैं। जैसे -

साक्षात्कृष्णो व्रजे नित्यं स्वांशेनैव विहारिणः।
तस्यांशो हि मथुरायां वासुदेवो जगद्गुरुः॥
द्वारकायां तदंशोऽस्ति विष्णुवीर्यो यतः प्रभुः।

-(सनत्कुमार संहिता)।

अर्थः साक्षात् कृष्ण व्रजविहारी हैं। व्रज में विहार करनेवाले कृष्ण के अंशरूप मथुरावाले कृष्ण हैं। अतः मथुरावाले कृष्ण के अंशरूप द्वारिकावाले अर्थात् द्वारिकाधीश-रणछोड़ कृष्ण हैं।" उक्त निर्गुण भेषधारी साधुओं में उक्त प्रकार की बातें हुई।

ज. १५- मुकुन्ददासजी के मुख से शास्त्रों द्वारा प्रमाणित बातें सुनकर महन्त रामदास ने उन्हें ईर्ष्यावश मार-पीटकर नाला पार करा दिया, जिससे वे राजा भावसिंह से न मिल सकें।

→ देते हुए कहा, "यदि तुम औरंगाबाद में रहोगे, तो हम तुम्हें पुनः मारेंगे। कदाच तुमने राजा भावसिंह हाड़ा को समझा-बुझाकर उनके विचारों को बदलने अथवा उन्हें पथ भ्रष्ट करने की कोशिश की, तो हम दूसरी बार बुरी तरह तुम्हारी पिटाई कर देंगे।"

ज. १७- उक्त प्रकार जब महन्त रामदास ने मुकुन्ददासजी के प्रति दुर्व्यवहार करके छोड़ा, तब मुकुन्ददासजी विचार करने लगे, "मध्य कलियुग का प्रतिरूप यह महन्त राजा भावसिंह हाड़ा से मिलने में बाधकरूप बनकर खड़ा हुआ है। मुझे अब बड़ी →

→ सावधानी से आगे काम करना पड़ेगा। कदाच सावधानी में कमी →

स. १८-वहाँ एक देवी का मन्दिर था, उसमें कौन था? मुकुन्ददासजी वहाँ क्यों छिपकर रहे?

ज. १८- राजा भावसिंह के राजदरबार से थोड़ी ही दूरी पर एक देवी का मन्दिर था। राजा उस मंदिर में देवी के दर्शनार्थ जाता था। उस →

स. १९-मुकुन्ददासजी ने भावसिंह हाड़ा से मिलने के विषय में क्या दृढ़कर निश्चय किया?

स. २०-जब राजा भावसिंह देवी के दर्शनार्थ मंदिर में आये, तब मुकुन्ददासजी ने क्या किया?

स. २१-मुकुन्ददासजी द्वारा दी हुई प्रसाद की थैली लेकर भावसिंह ने क्या किया?

स.२२- देवी के मंदिर में दर्शन-पर्शन करने के पश्चात् राजा भावसिंह ने क्या किया?

स. २३-मुकुन्ददासजी से मिलते ही राजा भावसिंह हाड़ा ने किनके विषय में, क्या-क्या पूछा?

ज. २३- मुकुन्ददासजी से मिलते ही राजा भावसिंह ने उनसे स्वामी श्रीजी →

स. २४-भावसिंह हाड़ा ने पत्र के साथ क्या पढ़ा और तत्पश्चात् विचार-विमर्श करने लगा?

स.२५-वहाँ कौन दज्जालरूप में बैठा था और उसने मुकुन्ददासजी को देखते ही क्या कहा?

→ आयी, तो कलियुगग्रस्त यह महन्त मुझसे लड़ता रहेगा।"

→ मन्दिर का महन्त राजा का पुरोहित निर्गुण भेषधारी रामदास महन्त ही था। मुकुन्ददासजी वहाँ उस महन्त से छिपकर बैठे थे, जिससे कि राजा के मंदिर में दर्शनार्थ आते ही वे प्रसाद के रूप में तैयार की हुई थैली उन्हें पकड़ा दें।

ज. १९- मुकुन्ददासजी ने उक्त प्रकार से प्रश्न-पत्र के रूप में अपनी बातें और प्रसाद राजा के हाथ तक पहुँचाने का दृढ़ निश्चय कर लिया और इसलिए वे मंदिर में छिपकर बैठे थे।

ज. २०- जब राजा भावसिंह देवी के दर्शनार्थ मंदिर में आये, तब मुकुन्ददासजी ने पत्रवाली थैली तुरन्त उनके हाथ में पकड़ा दी।

ज. २१- स्वामी मुकुन्ददासजी द्वारा दी हुई वह प्रसाद की थैली व पत्र लेकर राजा भावसिंह ने अपने सिर चढ़ाया।

ज. २२- देवी के मंदिर में दर्शन-पर्शन के पश्चात् राजा भावसिंह अपनी बैठक-कोठे में आकर बैठा और मुकुन्ददासजी को वहीं पर बुलवा लिया।

→ साहेबजी के समाचार पूछे। पुनः यह भी कहा, "स्वामी कृष्णदासजी कहाँ हैं? उन्होंने आपको यहाँ क्यों भेजा है? आप अपने मन की वे बातें यहाँ प्रकट करें, जिसकी आशा लेकर आप यहाँ आये हैं।"

ज. २४- भावसिंह हाड़ा ने पत्र खोलकर पढ़ा और साथ ही पत्र के अन्दर लिखे श्रीमद्भागवत और वेदान्त के प्रश्न भी पढ़े। तत्पश्चात् मंदिर में ही उन प्रश्नों पर विचार-विमर्श करने लगा।

ज. २५- दज्जाल स्वरूप रामदास वहीं बैठा था। उसने मुकुन्ददासजी को देखकर ईर्ष्या और कपट भरे शब्दों में कहा, "ये लोग तो कृष्ण के दो स्वरूप बताते हैं, जो किसी भी शास्त्र में नहीं लिखा है। →

→ इनसे बात करना तो दूर रहा, इनका तो मुँह भी नहीं देखना →

स. २६-महन्त रामदास की बातें सुनकर राजा भावसिंह ने उससे क्या कहा?

ज. २६- महन्त रामदास की उक्त ईर्ष्या और द्वेषपूर्ण बातें सुनते ही राजा →

स. २७-महन्त रामदास के विषय में राजा भावसिंह ने क्या समझ (जान) लिया?

ज. २७- महन्त रामदास के विषय में राजा भावसिंह ने यह भलीभाँति →

स.२८- राजा भावसिंह ने रामदास महन्त से मुकुन्ददासजी को ठहराने के विषय में क्या कहा?

स. २९-राजा की बातें सुनते ही महन्त रामदास पुरोहित ने क्या विचार व्यक्त किया?

ज. २९- राजा की उक्त बातें सुनते ही महन्त रामदास पुरोहित अपने विचार व्यक्त करने के लिए तुरन्त बोल उठा, "अरे! मैं भी निर्गुणी →

स. ३०-मुकुन्ददासजी को क्या और कब बोलना तथा स्पष्ट कर दिखाना ही पड़ा?

ज. ३०- जब महन्त रामदास पुरोहित ने साधु बनकर मुकुन्ददासजी की →

स. ३१-मुकुन्ददासजी ने मात्र दिखाया ही या भावसिंह राजा से कुछ कहा भी?

ज. ३१- जब महन्त रामदास ने राजा से कहा, "इनके रहने की व्यवस्था →

→ चाहिए।"

→ भावसिंह ने उससे कहा, "तुम ऐसी बात क्यों करते हो? ये तो अच्छी-भली बातों की चर्चा करते हैं। ये तो हमारी आत्म-परात्म स्वरूप की पहचान कराने की बातें करते हैं।"

→ समझ (जान) लिया कि महन्त रामदास कलियुगी दज्जाल का स्वरूप है। यह उचित कमाई खानेवाले पण्डितों में से नहीं है। इसके मन में मुकुन्ददासजी के प्रति ईर्ष्या एवम् शत्रुत्व है। इसलिए यह उनकी निन्दा करने पर तुला हुआ है।

ज. २८- राजा भावसिंह ने महन्त रामदास से मुकुन्ददासजी को ठहराने के विषय में कहा, "मुकुन्ददासजी को हमारी हवेली के पास ठहराने का प्रबन्ध कर दीजिए।"

→ साधु और ये भी निर्गुणी साधु! साधु की सेवा करना तो साधु ही जाने। ये कोई राजकुमार थोड़े ही हैं। आपकी हवेली में तो राजा, मंत्री अथवा राजा या मंत्री के दर्जे के लोग ठहरते हैं। यदि आपकी आज्ञा हो, तो हमारे मन में इनकी सेवा करने की इच्छा है।"

→ सेवा करने की शुभेच्छा प्रकट की, तब तुरन्त ही मुकुन्ददासजी को महन्त रामदास द्वारा की हुई सेवा के प्रकार को स्पष्टकर दिखाना और बोलना ही पड़ा ।

→ हम अपने घर में करेंगे।" तब मुकुन्ददासजी सोचने लगे, "यदि राजा हाँ कर देगा, तो क्या होगा?" तब मुकुन्ददासजी ने अपनी पीठ दिखाते हुए राजा से कहा, "इन्होंने पहले ही हमारी अच्छी सेवा की है।"

स. ३२-जब राजा भावसिंह ने मुकुन्ददासजी के पीठ पर डंडे के निशान देखे, तो उन्हें क्या हुआ?

स. ३३-राजा भावसिंह ने पुरोहित महन्त रामदास को क्या सजा दी?

स. ३४-राजा भावसिंह हाड़ा ने महन्त रामदास से क्या-क्या कहा?

स. ३५-पुनः महन्त रामदास को विदा करने के पश्चात् राजा भावसिंह हाड़ा ने मुकुन्ददासजी से क्या कहा?

स. ३६-दूसरे दिन राजा भावसिंह हाड़ा ने राजसभा में अपने पण्डितों से प्रश्न पूछते हुए क्या कहा?

ज. ३६- दूसरे दिन राजसभा में अपने पालतू पण्डितों को बुलवाकर प्रश्न →

स. ३७-उन पण्डितों ने राजा द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देने के बदले मुकुन्ददास के प्रति क्या किया?

स. ३८-पण्डितों की निन्दनीय बातें सुनकर राजा भावसिंह हाड़ा ने उन पण्डितों से क्या कहा?

ज. ३८- पण्डितों की निन्दनीय बातें सुनते ही उन्हें रोकते हुए राजा भावसिंह →

स. ३९-मुकुन्ददासजी ने राजा भावसिंह हाड़ा को पण्डितों को प्रश्न पूछने और पुछवाने के विषय में क्या सलाह दी?

ज. ३९- उक्त प्रकार की बातों के बाद मुकुन्ददासजी ने राजा भावसिंह से →

ज. ३२- जब मुकुन्ददासजी ने राजा भावसिंह को अपनी पीठ दिखायी, तब उनकी पीठ पर डंडे के निशान देखकर राजा भावसिंह को बहुत ही दुःख हुआ।

ज. ३३- राजा भावसिंह ने दज्जालरूपी रामदास महन्त को बुरी गाली देते हुए धक्का मारकर वहाँ से उठा दिया।

ज. ३४- राजा भावसिंह ने महन्त रामदास से कहा, "मेरे यहाँ जो अतिथि आते हैं, उनकी तुम ऐसी सेवा करते हो! तुम अभी तुरन्त हमारे प्रदेश-राज्य से निकल जाओ। किसी अन्य प्रदेश में जाकर बसो।"

ज. ३५- पुरोहित महन्त रामदास को देश निकाला देने के पश्चात् राजा भावसिंह हाड़ा ने मुकुन्ददासजी को सान्त्वना दी।

→ पूछते हुए राजा भावसिंह हाड़ा ने उनसे कहा, "आप लोग अपने-अपने चित्त को चौकस करके इनके प्रश्नों का उत्तर दीजिए, जिससे मन में ज्ञान का प्रकाश हो जाये।"

ज. ३७- जब उन पण्डितों से राजा द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देते नहीं बना, तो वे मुकुन्ददास की निन्दा करने पर तुल गये।

→ ने उनसे कहा, "अरे नादानों! तुमसे प्रश्न का उत्तर देते नहीं बनता, तो व्यर्थ की बातें क्यों बनाते हो? बिना सार की बातें बनाना विद्वत्ता की बेइज्जती करना है।"

→ कहा, "आप इन्हें आज्ञा दें। ये लोग हमसे जो प्रश्न पूछेंगे, हम उनका उत्तर देकर इन पण्डितों का मन सन्तुष्ट कर देंगे। पुनः हम इन पण्डितों से जो प्रश्न पूछें, वे उनका उत्तर देकर हमें सन्तुष्ट करें।"

स. ४०-मुकुन्ददासजी ने शास्त्रार्थ के दौरान हार-जीत के विषय में क्या शर्त रखी थी?

स. ४१-उन पण्डितों ने मुकुन्ददासजी से पूछने के लिए कितने प्रश्न तैयार किए?

स. ४२-पुनः मुकुन्ददासजी के पास उन पण्डितों से पूछने के लिए केवल कितने प्रश्न थे?

स. ४३-उक्त प्रकार की शर्त रखे मुताबिक प्रश्नों के जवाब देने के लिए कितने दिनों की मुद्दत रखी गयी थी?

स. ४४-राजा ने प्रश्नों के उत्तर के साथ पण्डितों के वेतन के विषय में कैसी आज्ञा दी?

ज. ४४- राजा भावसिंह ने प्रश्नों के उत्तर खोलने के लिए पन्द्रह दिन के →

स. ४५-स्वामी मुकुन्ददासजी को पण्डितों द्वारा दिए गए अस्सी प्रश्नों का उत्तर देने में कितने दिन लगे?

स. ४६-पण्डितों के प्रश्नों का जवाब देकर मुकुन्ददासजी ने उनसे क्या कहा?

स.४७- जब पण्डितों को तेईस प्रश्नों में से एक भी प्रश्न का जवाब नहीं आया, तब पण्डितों ने क्या किया?

ज. ४७- जब मुकुन्ददासजी द्वारा पूछे गये तेईस प्रश्नों में से पण्डितों को →

ज. ४०- मुकुन्ददासजी ने शास्त्रार्थ के दौरान हार-जीत के विषय में यह शर्त रखी थी, "हम दोनों में से जो पराजित हो, उसके गले में जूतों की माला पहनाकर उसे नगरभर में घुमाया जाये।"

ज. ४१- औरंगाबाद के राजा भावसिंह के पालतू पण्डितों ने मुकुन्ददासजी से पूछने के लिए कुल अस्सी प्रश्न तैयार किये।

ज. ४२- पुनः मुकुन्ददासजी के पास उन पण्डितों से पूछने के लिए केवल तेईस प्रश्न थे।

ज. ४३- उक्त प्रकार की शर्त रखे मुताबिक उभय पक्षों को प्रश्नों का उत्तर देकर खुलस्त करने के लिए पन्द्रह दिनों की मुद्दत दी गई थी।

→ मुद्दत की घोषणा करने के साथ-साथ यह भी घोषणा की कि जब तक प्रश्नों का उत्तर खुलस्त नहीं हो जाता, तब तक पण्डितों को दैनिक वेतन नहीं दिया जायेगा। अन्त में प्रश्नों के उत्तर खुलस्त हो जाने के बाद पूरा वेतन देने की घोषणा कर दी गयी।

ज. ४५- पण्डितों ने मिलकर जो अस्सी प्रश्न पूछे थे, उनका उत्तर देने में स्वामी मुकुन्ददासजी को एक भी दिन नहीं लगा। उन सभी प्रश्नों का स्पष्टीकरण मुकुन्ददासजी ने उसी दिन कर दिया।

ज. ४६- पण्डितों को प्रश्नों का उत्तर कबूल कराने के पश्चात् मुकुन्ददासजी ने उनसे कहा, "आप हमारे प्रश्नों का उत्तर निर्धारित समय में दे दीजिएगा। निर्णय राजा भावसिंह करेंगे।"

→ एक भी प्रश्न का उत्तर सही नहीं आया, तब उन सबने रात को मिलकर विचार किया और वे सब मिलकर मुकुन्ददासजी के पास आये तथा कहने लगे, "हम लोगों के ऊपर बड़ी भारी मार पड़ रही है।"

स. ४८-मुकुन्ददासजी के पास आकर पण्डितों ने श्रीजी साहेबजी के नाम पर क्या कहा?

ज. ४८- मुकुन्ददासजी के पास आकर पण्डित लोग कहने लगे, "यदि आपके गुरु-स्वामीजी ने ऐसा ही कहा है कि आप यहाँ आकर →

स. ४९-पण्डितों की उक्त बातें सुनने के बाद मुकुन्ददासजी ने उनसे क्या कहा?

स. ५०-राजा भावसिंह हाड़ा से मुकुन्ददासजी ने दूसरे दिन क्या बात की?

ज. ५०- दूसरे दिन मुकुन्ददासजी ने राजा भावसिंह से कहा, "ये पण्डित लोग हमारे प्रश्नों का उत्तर क्या देंगे? ये प्रश्न तो परमधाम की →

स. ५१-मुकुन्ददासजी के कहने पर राजा भावसिंह ने उन पण्डितों को क्या किया और कितना वेतन दिया?

स. ५२-प्रातः समय मुकुन्ददासजी ने उन पण्डितों से मिलकर क्या कहा?

स. ५३-तीसरे दिन से राजा भावसिंह क्या करने लगा?

स. ५४-जब राजा भावसिंह जागृत हो उठा, तब उसने मुकुन्ददासजी से क्या कहा?

स. ५५-भावसिंह ने क्या और कैसा प्रबन्ध कर श्रीजी साहेब को अपने घर बुलाया?

→ पण्डितों की जीविका नष्ट करें, तब तो हम कर ही क्या सकते हैं? हम मन में संतोष करके बैठ जायेंगे। अन्यथा आप इस विपत्ति से हमें छुटकारा दिला दीजिए। हम दस बार आपसे हार मानते हैं।"

ज. ४९- जब सभी पण्डितों ने मिलकर मुकुन्ददासजी के आगे आपसे "*हम हारें दसबेर*"-ऐसा कबूल किया, तब मुकुन्ददासजी ने सान्त्वना देते हुए उनसे कहा, "हम इस सम्बन्ध में राजा से पुनः बात करेंगे।"

→ अखण्ड लीला से सम्बन्धित हैं। इनका मन वहाँ तक पहुँच नहीं पायेगा। वे लोग रात्रि में मेरे पास आये थे और उन्होंने दस बार हार स्वीकार करते हुए कहा-हमारा वेतन पूर्ववत् शुरू करा दीजिए। हमारे ऊपर बड़ी मार पड़ रही है। अतः हमें बचा लीजिए।"

ज. ५१- मुकुन्ददासजी द्वारा उक्त अर्ज करने पर राजा भावसिंह ने पण्डितों को क्षमा कर दिया और उन्हें आधा वेतन कम करके शेष आधा वेतन देने की आज्ञा दी।

ज. ५२- प्रातः समय मुकुन्ददासजी ने उन पण्डितों से मिलकर कहा, "हमने तुम्हारा काम कर दिया।"

ज. ५३- तीसरे दिन से राजा भावसिंह एकाग्र होकर, चित्त देकर मुकुन्ददासजी की चर्चा श्रवण करने लगा। चर्चा श्रवण करते-करते उसे अपनी आत्मा की पहचान हो गई।

ज. ५४- जब राजा भावसिंह हाड़ा जागृत हो उठा, तब उसने मुकुन्ददासजी से कहा, "आप श्रीजी साहेबजी को हमारी ओर से आमंत्रित कीजिए। आप स्वयं जाकर उन्हें यहाँ ले आइये।"

ज. ५५- राजा भावसिंह ने मुकुन्ददासजी से कहा, "हम यहीं से सवारी का प्रबन्ध किये देते हैं। ऊँट, हथिनी आदि साधन आप बूँदी →

→ गाँव से ले लीजियेगा। घोड़े यहाँ से ले जाइये। किसी को भी पैदल नहीं लाना। सबको असवारी पर सवार कर लाना। रास्ते →

स. ५६-श्री प्राणनाथजी, श्री बाईज्यूराज तथा जमात के रहने के लिए राजा भावसिंह ने कहाँ की हवेली लिखकर दे दी?

स. ५७-श्रीजी साहेबजी को भावसिंह के घर में ले आने के लिए औरंगाबाद से कौन आये?

स. ५८-राजा भावसिंह ने सवारी के साथ अन्य क्या-क्या भेजा था? जमात सहित श्रीजी साहेबजी किसके खर्च से औरंगाबाद पहुँचे?

स. ५९-राजा भावसिंह की हवेली में पहुँचते ही जमात सहित श्रीजी साहेबजी की खबर पूछने कौन दौड़कर आया और श्रीजी के चरणों में प्रणाम किया?

स. ६०-श्री प्राणनाथजी के दिव्य स्वरूप का दर्शन पाते ही राजा भावसिंह अपने आपको क्या मानने लगा और उसे क्या हुआ?

स. ६१-कौन स्वयं श्रीजी की सेवा में संलग्न हो गये? हवेली में कैसी व्यवस्था की थी?

ज. ६१- राजा भावसिंह हाड़ा स्वयं श्रीजी की सेवा में संलग्न हो गए। →

स. ६२-किसके भावपूर्ण कीर्तन सुनकर राजा भावसिंह हाड़ा आनन्द विभोर हो उठता था?

→ का खर्च ले जाइये।"-इस तरह अच्छी तरह आमंत्रित कर एक पत्र भी लिखकर मुकुन्ददासजी के हाथों भेज दिया।

ज. ५६- राजा भावसिंह ने मुकुन्ददासजी को बाईज्यूराज एवम् सुन्दरसाथ जमात सहित श्रीजी साहेबजी को ठहराने के लिए बूँदी गाँव में स्थित एक हवेली लिखकर दे दी।

ज. ५७- उक्त प्रकार से प्रबन्ध मिलाने के पश्चात् मन्दसोर से श्रीजी साहेबजी को औरंगाबाद राजा भावसिंह के घर ले आने के लिए सवारी लेकर मुकुन्ददासजी आये।

ज. ५८- राजा भावसिंह ने सवारी के साथ एक सुन्दर आमन्त्रण-पत्र और रास्ते का सारा खर्च भी भेजा था। अतः जमात सहित श्रीजी साहेबजी राजा भावसिंह हाड़ा के खर्च से औरंगाबाद पहुँचे।

ज. ५९- जमात सहित श्रीजी साहेबजी के हवेली में आगमन का शुभ समाचार सुनते ही राजा भावसिंह हाड़ा श्रीजी साहेबजी की खबर पूछने दौड़कर आया और आकर आदर सहित श्रीजी साहेबजी के चरणों में प्रणाम किया।

ज. ६०- श्री प्राणनाथजी के दिव्य स्वरूप के दर्शन पाकर राजा भावसिंह अपने आपको धन्य-धन्य और अपने जीवन को कृतकृत्य मानने लगा। उसे बड़ा आत्म-संतोष हुआ।

→ उसने हवेली में चर्चा-कथा के साथ-साथ भजन-कीर्तन, उत्सव-रसोई आदि की सुन्दर व्यवस्था की थी, जिससे आनन्द की वृद्धि होने लगी।

ज. ६२- नरसैयाँ के भावपूर्ण कीर्तन सुनकर राजा भावसिंह हाड़ा आनन्द विभोर हो उठता था।

स. ६३-किसके समान आनन्द में निमग्न होकर राजा भावसिंह अपनी सुध-बुध खोकर, क्या करने लगता था?

स. ६४-किसके मन में श्रीजी साहेबजी के प्रति, क्या-क्या उत्पन्न हुआ?

स. ६५-राजा भावसिंह श्री प्राणनाथजी को किनके समान मानकर सेवा करने लगा?

स. ६६-अब राजा भावसिंह नित्य प्रति क्या करने लगा? उसे श्रीजी स्वरूप की चर्चा-कीर्तन सुनकर कैसा लगता था?

ज. ६६-अब राजा भावसिंह हाड़ा के मन में स्वामी श्री प्राणनाथजी के प्रति →

स. ६७-जब कुरान और मुसलमानों के विषय की बातें चर्चा में आईं, तब राजा भावसिंह ने श्रीजी साहेब से क्या पूछा?

ज. ६७- एक दिन जब श्रीजी साहेबजी ने कुरान ग्रन्थ को लेकर चर्चा की, तब राजा भावसिंह मन में विचार करने लगा। उसने श्रीजी साहेबजी से पूछा, "मुसलमान लोग आपकी बातों की साक्षी →

स. ६८-अपने चारों मुसलमानों के कुरान द्वारा इमाम मेहदी स्वीकार कर लेने पर राजा भावसिंह स्वयं क्या करने को कहने लगा?

ज. ६८- अपने चारों मुसलमानों द्वारा कुरान की साक्षी के आधार पर →

स. ६९-औरंगाबाद के मुसलमान पठानों को तालीम देनेवाला उस्ताद (शिक्षक) कौन था?

ज. ६३- ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मात्माओं के समान आनन्द में निमग्न होकर राजा भावसिंह अपनी सुध-बुध खोकर नृत्य करने लगता था।

ज. ६४- राजा भावसिंह हाड़ा के मन में श्री प्राणनाथजी के प्रति श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न हुआ।

ज. ६५- राजा भावसिंह श्री प्राणनाथजी को दृढ़ मन से परब्रह्म परमात्मा के समान मानकर उनकी सेवा करने लगा।

→ भक्ति-भाव में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं रही। श्री प्राणनाथजी को वह नित्य अपने महल में प्रतिष्ठित करने लगा अथवा अन्तःपुर में ले जाकर पधराने लगा। श्रीजी की चर्चा में जब रास लीला का वर्णन और कीर्तन होता था, तब उसे सुनकर भावसिंह हाड़ा के मन में प्रसन्नता एवम् आनन्द उमड़ आता था।

→ कैसे देंगे? आप आखर जमाने के खाविंद के आने की और कयामत जाहिर करने की बातें स्पष्ट करके हमारे यहाँ रहनेवाले मुसलमानों के मन को सन्तुष्ट कर दीजिए। आप कयामत के दावे की चर्चा सुनाकर मेरे चार मुसलमानों को कुरान की साक्षी द्वारा इमाम मेहदी के आने की और कयामत के समय के प्रति विश्वास दिला दीजिए।"

→ महामति श्री प्राणनाथजी को आखर जमाने का खाविंद-इमाम मेहदी स्वीकार कर लेने पर राजा भावसिंह स्वयं अपने आपको धर्म पर निछावर कर औरंगजेब से धर्मयुद्ध करने के लिए दिलोजान से कमर बाँधकर तैयार होने के लिए कहने लगा।

ज. ६९- औरंगाबाद के मुसलमान पठानों को कुरान-हदीसों की तालीम देकर उन्हें विद्वान-जानकार बनानेवाला उस्ताद (शिक्षक) जहान मुहम्मद था।

स. ७०-राजा भावसिंह के उक्त प्रकार से कहने पर श्री प्राणनाथजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ७०- राजा भावसिंह हाड़ा के उक्त प्रकार से कहने पर श्री प्राणनाथजी →

स. ७१ "वही लोग समझकर आयेंगे और स्वयं आपको समझायेंगे कि कुरान तुम्हारा है। अतः कमर बाँध लो धर्मयुद्ध के लिए!"-ऐसा कौन और किससे कह रहे हैं?

ज. ७१- "वही लोग आपके पास आकर पूर्ण निष्ठा के साथ कहेंगे कि →

स. ७२-तब भावसिंह ने श्रीजी स्वरूप की बातें स्वीकार कर क्या कहा?

ज. ७२- तब राजा भावसिंह ने श्रीजी स्वरूप की बातों को स्वीकार करते →

स. ७३-उक्त प्रकार से निश्चय कर राजा भावसिंह ने चार मुसलमानों को कहाँ भेज दिया?

ज. ७३- उक्त प्रकार से निश्चय कर राजा भावसिंह ने अपने चारों →

स. ७४-अब श्री प्राणनाथजी किन ग्रन्थों से उन चार मुसलमानों को कौनसे विषय समझाने लगे?

स. ७५-इसी समय उदयपुर के जागृत कौन भाई औरंगाबाद आ पहुँचे? वे किसके भक्त थे?

स. ७६-बुद्ध गीता और बुद्ध स्त्रोत कौन और कहाँ से लाये थे?

स. ७७-भवानी भट्ट श्रीजी के पास आकर नित्य प्रति क्या करते थे?

→ ने उनसे कहा, "आप उन मुसलमानों को हमें सौंप दीजिए। हम उनसे चर्चा करके उन्हें कुरान का यथार्थ अर्थ समझा देंगे। निःसंदेह ही वे हमारी बातों पर विश्वास करेंगे।"

→ आपके द्वारा प्रतिपादित धर्म ही सच्चा दीन इसलाम है। कुरान आपकी अपनी लीला का साक्षीरूपी ग्रन्थ है। इसलिए आप औरंगजेब से धर्मयुद्ध के लिए तैयार हो जाइये"-ऐसा श्रीजी स्वरूप राजा भावसिंह से कह रहे हैं।

→ हुए कहा, "हमें आपकी बातों पर पूर्ण विश्वास है। ये निश्चित ही सत्य एवम् श्रेष्ठ हैं। आप अपने ज्ञान द्वारा मुसलमानों को समझाने का प्रयास कीजिए। कयामत और इमाम मेहदी का संसार में प्रकट होना अपने-आप में एक महत्त्वपूर्ण बात है।"

→ मुसलमान साथियों-अधिकारियों को प्रतिदिन दोनों समय श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनने के लिए भेज दिया। प्रमाण सहित बोधदायी चर्चा आरम्भ हुई । औरंगाबाद में उन सबका यह कार्य मुख्य रहा।

ज. ७४- अब उक्त चार मुसलमानों को श्रीजी साहेबजी कुरान और हुसैनी तफसीर द्वारा कयामत के समय कब्र से मुर्दे उठने, इमाम मेहदी का प्रकटीकरण तथा कयामत के सात निशान आदि बातें समझाने लगे।

ज. ७५- इसी समय उदयपुर के जागृत भवानी भट्ट नामक एक भाई औरंगाबाद आ पहुँचे। वे भवानी देवी के भक्त थे। उनसे भवानी देवी प्रसन्न थी।

ज. ७६- बुद्ध गीता और बुद्ध स्त्रोत भवानी भट्ट भाई दक्षिण से लेकर आये थे।

ज. ७७- भवानी भट्ट भाई नित्य प्रति श्रीजी की सेवा में पहुँचकर झुककर श्रीजी के चरणों में प्रणाम किया करते थे। इससे उनकी आत्मा →

→ को सुख-संतोष प्राप्त होता था। ये भाई प्रतिदिन चर्चा के समय →

स. ७८-भवानी भट्ट को श्री प्राणनाथजी ने तारतम सम्बन्धी ज्ञान द्वारा किस बात की थोड़ी-सी पहचान करायी?

स. ७९-इस समय अन्य कौन भाई औरंगाबाद आ पहुँचे, जो श्रीजी स्वरूप से उदयपुर में मिले थे?

स. ८०-अव्वल खाँ भाई ने श्रीजी साहेबजी के स्वरूप में किनका साक्षात्कार किया था?

स. ८१-अव्वल खाँ श्रीजी साहेबजी के पास किन-किन को बुला लाये और उनकी चर्चा सुनवायी?

स. ८२-उक्त भाइयों ने अपनी चर्चा श्रवण कर श्रीजी स्वरूप की किस रूप में पहचान कर ली?

स. ८३-किस भाई को किन-किन विषयों की समझ नहीं आ रही थी?

स. ८४-कौन भाई पूर्ण विश्वास आने पर किससे संघर्ष करने लगे?

स. ८५-वे भाई किनके आज्ञा तले रहकर विशेष कार्य करके शोभा प्राप्त करना चाहते थे?

स. ८६-किन पठानों के साथ श्रीजी स्वरूप की आध्यात्मिक विषयों को लेकर अलौकिक चर्चा हुई?

→ वाणी पढ़ते और नियमपूर्वक श्रीजी के दर्शनार्थ आते थे।

ज. ७८- भवानी भट्ट के ऊपर श्रीजी साहेबजी ने कृपा करके उन्हें तारतम ज्ञान द्वारा आत्मा की कुछ पहचान करा दी।

ज. ७९- इस समय अव्वल खाँ भाई औरंगाबाद आ पहुँचे। सुन्दरसाथ के बीच बैठकर उन्होंने श्रीजी के दिव्य स्वरूप के दर्शन किये। वे हादी (सद्गुरु) से उदयपुर में मिले थे।

ज. ८०- अव्वल खाँ भाई ने श्रीजी स्वरूप में अपने हक-परमात्मा का साक्षात्कार किया था।

ज. ८१- अव्वल खाँ श्रीजी साहेबजी के पास मिहीन खाँ और जहान मुहम्मद को बुला लाये और उन्हें चर्चा सुनवायी तथा प्रेम-संवाद की बातें समझायीं ।

ज. ८२- उक्त भाइयों ने अपनी चर्चा श्रवण करने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप में हक स्वरूप की धीरे-धीरे पहचान कर ली।

ज. ८३- मिहीन खाँ को चर्चा सुनकर कयामत और इमाम मेहदी के प्रकटीकरण पर पूर्ण विश्वास नहीं आ पा रहा था। किन्तु उन्हें भी यहाँ पूर्ण विश्वास आ गया।

ज. ८४- मिहीन खाँ को पूर्ण विश्वास आ जाने के कारण वे इमाम मेहदी स्वरूप श्रीजी साहेबजी की आज्ञा के अधीन होकर दज्जाल द्वारा खड़ी की गयी विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करने लगे।

ज.८५- मिहीन खाँ पठान इमाम मेहदी स्वरूप श्रीजी साहेबजी की आज्ञा के तले रहकर आगे बढ़कर कुछ विशेष कार्य करके शोभा प्राप्त करना चाहते थे।

ज. ८६- सौदागर पठानों के साथ श्री प्राणनाथजी की आध्यात्मिक विषयों को लेकर अलौकिक चर्चा हुई।

स. ८७- जहान मुहम्मद चर्चा में श्रवण की हुई किन बातों पर गहराई से विचार करने लगे?

स. ८८-कौन बारम्बार चिन्तित हो उठते थे और चाहते थे कि उन्हें आत्म-ज्ञान की बातें समझ में आयें?

स. ८९-वास्तव में जहान मुहम्मद धार्मिक विद्वत्ता में कैसे थे और उनके अन्दर कहाँ का अंकुर था?

स. ९०-सारे मुसलमान समाज के पठानों में जहान मुहम्मद को कैसी प्रतिष्ठा प्राप्त थी?

स. ९१-जहान मुहम्मद श्रीजी के अनुगामी बन जाने पर लोग उन्हें भला-बुरा क्यों कहने लगे?

ज. ९१- जिस किसी ने भी यह सुना कि उनके उस्ताद (शिक्षक) जहान →

स. ९२-भवानी भट्ट कितने बजे वाणी पढ़कर निवृत्त होते थे और श्रीजी स्वरूप भोजन कर कब विश्राम करते थे?

स. ९३-कितने घड़ी दिन शेष रहते श्रीजी स्वरूप विश्राम से उठकर बैठ जाते थे?

स. ९४-श्रीजी स्वरूप जब उठकर बैठते थे, तब उपस्थित सुन्दरसाथ से कहाँ का वार्तालाप करते थे?

स. ९५-श्री राजजी के दिव्य स्वरूप एवम् सिंगार का वर्णन कब-किस समय होता था?

ज. ८७- जहान मुहम्मद ने सनंध वाणी की चर्चा सुनी थी और सनंध द्वारा श्रवण की हुई बातों पर वे गहराई से विचार करने लगे।

ज. ८८- भाई जहान मुहम्मद ही बारम्बार चिन्तित हो उठते थे और दिल से चाहते थे कि उन्हें किसी भी प्रकार आत्म-ज्ञान की पूरी पहचान हो जाये और वे बातें उनकी समझ में आने लगें।

ज. ८९- वास्तव में जहान मुहम्मद आरबी भाषा के इतने बड़े विद्वान थे कि उन्हें आरबी खाँ के नाम से जाना जाता था। उन्हें कुरान का पूरा अर्थ आता था। उनके अन्दर परमधाम का अंकुर था ।

ज. ९०- औरंगाबाद में जितने भी पठान थे, उन सभी को जहान मुहम्मद ही तालीम देते थे। पठान समाज में उन्हें उस्ताद (शिक्षक) की प्रतिष्ठा प्राप्त थी।

→ मुहम्मद श्री प्राणनाथजी पर पूर्ण विश्वास करके उनके अनुगामी बन गये हैं, वे सभी लोग अपनी-अपनी समझ के अनुसार अनुमान लगाकर उन्हें भला-बुरा कहने लगे क्योंकि उनके समाज की नाक कट गयी और इज्जत की धज्जियाँ उड़ गयी ।

ज. ९२- भवानी भट्ट डेढ़ पहर अथवा साढ़े दस बजे तक श्रीजी की चर्चा में वाणी पढ़कर निवृत्त हो जाते थे। तब श्री प्राणनाथजी भोजन ग्रहण कर शोभायुक्त सेज पर विश्राम किया करते थे।

ज. ९३- सात घड़ी दिन शेष रहने पर अथवा दोपहर के साढ़े तीन बजे श्रीजी स्वरूप विश्राम से उठकर बैठ जाते थे।

ज. ९४- श्री प्राणनाथजी स्वरूप जब उठकर पलंग पर बैठते थे, तब उपस्थित सुन्दरसाथ से वाणी-चर्चा एवम् प्रश्नोत्तर के रूप में परमधाम का वार्तालाप करते थे।

ज. ९५- सायंकाल को परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के दिव्य स्वरूप के दर्शन एवम् सिंगार का वर्णन होता था, जिससे सुन्दरसाथ प्रत्यक्षानुभूति करते थे।

स. ९६- श्रीजी साहेब की भावभीनी और प्रभावशाली चर्चा कब-किस समय होती थी?

स. ९७- सुन्दरसाथ संध्याकाल में श्रीजी स्वरूप की आरती उतारकर क्या करते थे?

स. ९८- संध्याकालीन आरती एवम् दर्शनादि के पश्चात् क्या कार्यक्रम चलता था?

स. ९९- श्रीजी स्वरूप की चर्चा के समय दोनों तरफ कौन-कौन, क्या-क्या लेकर बैठते थे?

स.१००- इस समय की चर्चा कैसी होती थी और श्रोतागण चर्चा श्रवण कर क्या अनुभव करते थे?

स.१०१- श्रीजी साहेबजी यहाँ किन-किन धर्मग्रन्थों से, किस तरह चर्चा श्रवण कराते थे?

स.१०२- सुन्दरसाथजी इस समय कैसे-किस प्रकार चर्चा श्रवण करते थे?

स.१०३- जहान मुहम्मद को कौन लेकर आये थे? पुनः जहान मुहम्मद ने कितने महीने चर्चा सुनी?

स.१०४- जहान मुहम्मद जब चर्चारस में डूब जाते थे, तो क्या होता था? पुनः वे चर्चा भी कैसे सुनते थे?

ज.१०४- श्रीजी के मुखारविन्द की चर्चा सुनकर जब जहान मुहम्मद →

ज. ९६- सायंकाल श्री राजजी-परब्रह्म परमात्मा के दिव्यातिदिव्य स्वरूप एवम् सिंगार वर्णन के साथ श्रीजी स्वरूप द्वारा भावभीनी और प्रभावशाली चर्चा होती थी।

ज. ९७- सायंकाल में जब श्रीजी साहेबजी की आरती उतारी जाती थी, तब उस समय समस्त सुन्दरसाथ स्वामीजी के दिव्य स्वरूप के दर्शन करने के लिए खड़े हो जाते थे।

ज. ९८- संध्याकालीन आरती एवम् दर्शनादि के पश्चात् चर्चा आदि का कार्यक्रम चलता था।

ज. ९९- श्रीजी स्वरूप की चर्चा के समय एक तरफ स्वामी लालदासजी कुरान शरीफ़ लेकर बैठते थे, तो दूसरी ओर भवानी भट्ट श्रीमद्भागवत लेकर बैठते थे।

ज.१००- इस समय दोनों पक्षों के धर्मग्रन्थों के रहस्य स्पष्ट करते हुए श्री प्राणनाथजी मंत्रमुग्ध कर देनेवाली चर्चा करते थे तथा श्रोतागण चर्चा श्रवण कर आनन्द विभोर हो उठते थे।

ज.१०१- श्रीजी साहेबजी इस समय की चर्चा में कुरान और पुरान-इन दोनों धर्मग्रन्थों के अर्थ साक्षी दे-देकर समझाते थे।

ज.१०२- इस समय सुन्दरसाथजी प्रेममग्न होकर ध्यान से चर्चा सुनते थे तथा जिज्ञासा होने पर प्रश्न भी करते थे। कई साथी इस समय हाथ में वाणी लिये रहते थे।

ज.१०३- जहान मुहम्मद को अब्बल खाँ श्रीजी साहेबजी के पास लेकर आये थे। उन्होंने दो मास तक श्रीजी की चर्चा सुनी।

→ चर्चारस में डूब जाते थे, तब वे एकदम प्रेमविभोर हो उठते थे। पुनः वे मन को एकाग्र करके बड़े ध्यान से दृढ़तापूर्वक चर्चा सुनते थे ।

स.१०५- जहान मुहम्मद स्वयं चर्चा समझने के विषय में क्या करते थे? इस विषय में वे किनसे विचार-विमर्श करते थे?

स.१०६- जहान मुहम्मद सुनी हुई लीलाओं का छल-फल (निर्णय) किन-किनके साथ करते थे?

स.१०७- एक दिन जहान मुहम्मद लालदास और उत्तमदास के आगे क्या कहते हुए अपने घर को चले गये?

ज.१०७- एक दिन जहान मुहम्मद को कोई जटिल विषय लालदास और उत्तमदास के साथ विचार-विमर्श करने पर भी नहीं समझ में →

स.१०८- उक्त बात भागते-भागते जाकर श्रीजी के कानों तक किसने पहुँचायी?

स.१०९- उक्त बातें सुनने के पश्चात् उत्तमदास भाई को श्रीजी साहेबजी ने क्या कहा?

स.११०- "उन्हें बुलाने की जरूरत नहीं। प्रातः काल वे स्वयं ही भागते-भागते मेरे पास आयेंगे।"-ऐसा किसने, किससे कहा?

स.१११- दूसरे दिन प्रातः क्या हुआ? श्रीजी की शरण में आकर जहान मुहम्मद क्या कहने लगे?

ज.१११- दूसरे दिन प्रातः श्रीजी साहेबजी के कहे प्रमाण जहान मुहम्मद →

ज.१०५- जहान मुहम्मद स्वयं चर्चा समझने के विषय में बहुत ही कोशिश करते थे। चर्चा में सुनी हुई बातों पर विचार-विवेक करते थे तथा जो विषय उन्हें कठिन लगते थे, उन्हें वे लालदासजी और उत्तमदासजी से विचार-विमर्श करके समझना चाहते थे।

ज.१०६- जहान मुहम्मद सुनी हुई लीलाओं का छल-फल (निर्णय) लालदासजी और उत्तमदासजी के साथ करते थे।

→ आया। अतः वे यह कहते हुए अपने घर को चले गये, "मैं अब यहाँ कभी जल ग्रहण नहीं करूँगा। मैंने दो मास तक परिश्रम करके चर्चा श्रवण की, फिर भी मेरी आत्मा निर्मल-पवित्र नहीं हुई।"

ज.१०८- उत्तमदास ने घबराकर भागते-भागते जाकर उक्त बात श्रीजी साहेबजी के कानों तक पहुँचायी और पूछा, "मैं जहान मुहम्मद को बुला लाऊँ?"

ज.१०९- उत्तमदास भाई की बातें सुनने के पश्चात् श्रीजी ने उनसे कहा, "उन्हें बुलाने की जरूरत नहीं है, जाने दो। उसने यहाँ अपने कानों से चर्चा सुनी है।"

ज.११०- *"उन्हें बुलाने की जरूरत नहीं। प्रातः काल वे स्वयं ही भागते-भागते मेरे पास आयेंगे।"*- ऐसा श्रीजी स्वरूप ने उत्तमदास भाई से कहा।

→ भागते-भागते श्रीजी के पास आये और उनके चरणों में माथा टेककर प्रार्थना करते हुए कहने लगे, "हे स्वामी! आप मुझे भली प्रकार समझाते क्यों नहीं? अब मुझे केवल आपके चरणों की ही आस है!"

स.११२- जहान मुहम्मद की मनोकामना सुनकर श्री प्राणनाथजी ने उन्हें क्या सलाह दी?

ज.११२- जहान मुहम्मद की मनोकामना सुनकर श्रीजी साहेबजी ने →

स.११३- जहान मुहम्मद ने एक दिन श्रीजी साहेबजी से क्या प्रश्न किया?

ज.११३- जहान मुहम्मद श्रीजी के कहे प्रमाण नित्य प्रति चर्चा सुनने →

स.११४- जहान मुहम्मद के उक्त प्रश्नों का समाधान श्री प्राणनाथजी ने किस ग्रन्थाधार कर दिया?

स.११५- कयामत के वक्त मुर्दों के कब्र से उठने की बात का समाधान करने के पश्चात् श्रीजी स्वरूप ने उन्हें दूसरी कौनसी बात बतायी?

स.११६- जहान मुहम्मद जिन-जिन मुद्दों को समझ नहीं पा रहे थे, उनकी आँटियों को श्रीजी स्वरूप ने किस प्रकार निवारण कर दिया?

ज.११६- जहान मुहम्मद जिन-जिन मुद्दों को समझ नहीं पा रहे थे, जैसे- →

स.११७- नूर जलाल-कूटस्थ अक्षर ब्रह्म ने नूर जमाल-अक्षरातीत श्री राजजी से क्या जानने की इच्छा की थी?

ज.११७- कूटस्थ अक्षर-नूर जलाल ने अक्षरातीत ब्रह्मधाम में स्थित नूर →

→ उन्हें यह सलाह दी, "आप केवल आठ दिन मेरी चर्चा ध्यान से सुन लीजिए। आप प्रतिदिन केवल एक पहर-तीन घंटे की चर्चा सुनने के लिए आइये और तब देखिए कि आपको कैसा आत्म-प्रकाश प्राप्त होता है।"

→ आने लगे। एक दिन उन्होंने श्रीजी साहेबजी से यह प्रश्न किया, "कयामत के दिन कब्र से मुर्दे किस प्रकार उठेंगे? कृपया इस प्रश्न का समाधान कर दीजिए।"

ज.११४- जहान मुहम्मद के उक्त प्रश्न का समाधान श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने कुरान निकालकर कर दिया तथा उसमें आए कयामत के समय में मुर्दे उठने के प्रसंग को खोलकर उन्हें स्पष्ट समझा दिया।

ज.११५- श्रीजी स्वरूप ने जहान मुहम्मद को कुरान खोलकर कयामत के समय कब्र से मुर्दे उठने का प्रसंग समझाने के साथ-साथ यह भी बता दिया कि इस संसार की रचना ब्रह्ममुनियों-मोमिनों के लिए ही की गई है।

→ कयामत के समय कब्र से मुर्दों का उठना और प्रेम-संवाद के कारण ब्रह्मात्माओं का संसार में दुःखपूर्ण खेल देखने के लिए अवतरित होना, इन विषयों की आँटियों को श्रीजी स्वरूप ने स्पष्टतः खुलस्त कर निवारण कर दिया।

→ जमाल-अक्षरातीत श्री राजजी से परमात्मा (खुदा) की अंतरंग लीला एवम् ब्रह्मसृष्टियों के विशुद्ध प्रेम को देखने की माँग की थी अथवा वह अंतरंग प्रेम लीला जानने-देखने की इच्छा प्रकट की थी।

स.११८- नूर जलाल की इच्छापूर्ति के लिए नूर जमाल ने क्या-क्या किया?

स.११९- दो तकरार के पश्चात् यह तीसरा इण्ड-जागनी का ब्रह्माण्ड किसके लिए रचा गया?

स.१२०- रास लीला में सखियों के साथ रास लीला करनेवाले स्वरूप पुनः कहाँ आये?

स.१२१- रास लीला खेलनेवाले स्वरूप ने पुनः अरब में आकर मुहम्मद नाम से क्या-क्या किया और भविष्य के विषय में क्या वादा किया?

ज.१२१- रास लीला खेलनेवाले स्वरूप ने पुनः अरब देश में प्रकट होकर →

स.१२२- उक्त स्वरूप (मुहम्मद) ने संसार में दूसरी बार कब आने की शर्त की?

ज.१२२- उक्त स्वरूप ने संसार में दूसरी बार आने के विषय में कहा- →

स.१२३- पुनः उन्होंने हूद तूफान और नूह तूफान में लीला करनेवाली रूहों के विषय में क्या भविष्य कहा?

ज.१२३- पुनः उन्होंने हूद तूफान और नूह तूफान में लीला करनेवाली →

स.१२४- कयामत के समय में कौन काज़ी बनकर आएँगे और किस-किसके पाप-पुण्य का हिसाब लेंगे?

ज.११८- नूर जलाल की उक्त इच्छापूर्तिरूपी कार्य-कारणवश अक्षरातीत खुदा-परमात्मा-नूर जमाल ने उन्हें लैल तुल कद्र के दो खण्डों (टुक) को एक साथ ब्रज और रासमण्डल के रूप में दिखा दिया।

ज.११९- दो तकरार अर्थात् ब्रज और रास लीला के पश्चात् रास रात्रि के समय हुए प्रलय के उपरान्त यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड भी ब्रह्मात्माओं की इच्छा पूर्ण करने के लिए रचा गया।

ज.१२०- रास लीला में सखियों के साथ रास लीला रचानेवाले ब्रह्म के हुकम-आदेश-शक्ति स्वरूप श्री कृष्णजी मुहम्मद साहेब के रूप में अरब देश में आये।

→ चालीस साल की अवस्था में नूर तजल्लाह अथवा अक्षरातीत दिव्य धाम में पहुँचकर खुदा के मुखारविन्द के प्रत्यक्ष कलाम सुनकर उतारे और कयामत के समय खुदा के इमाम मेहदी के रूप में आने का भविष्य कहा तथा उस समय स्वयं भी इमाम मेहदी के साथ होने का वादा किया।

→ "जब खुदा-इमाम मेहदी काज़ी बनकर इनसाफ करने उतरेंगे, तब उस समय मोमिनों के साथ इमाम मेहदी के पास आखरी मुहम्मद के रूप में स्वयं मैं भी रहूँगा।" इस तरह शर्त की।

→ रूहों के विषय में भविष्य बताते हुए कहा, "जो रूहें हूद और नूह तूफान-ब्रज और रास लीला में थीं, वे पुनः तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में प्रकट होंगी।"

ज.१२४- कयामत के समय में स्वयं खुदा-परमात्मा इमाम मेहदी के रूप में आएँगे और काज़ी बनकर तीनों प्रकार के जीवों अथवा सर्वजनों की करनी-पाप-पुण्यरूपी कर्मों का लेखा-जोखा लेंगे।

स.१२५- कयामत के दौरान स्वयं खुदा-परमात्मा काज़ी-इमाम मेहदी के रूप में आकर किन रूहों की सिफारिश करेंगे?

स.१२६- उस समय किसके प्रकाश से सबमें सद्बुद्धि का विस्तार होगा और फलस्वरूप क्या होगा?

स.१२७- चौदह लोकों की जहान इश्क और ईमान लेकर किसकी शरण में आयेगी?

स.१२८- पुनः उस समय चौदह लोकों की जहान के दिल-दिमाग और जबान पर क्या होगा?

स.१२९- सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर (नूर जलाल) की नींद उड़ने पर क्या होगा?

स.१३०- कूटस्थ अक्षर ब्रह्म की नींद उड़ने और स्वप्न की सारी सृष्टि उनके चित्त में चुभने का क्या तात्पर्य है?

ज.१३०- कूटस्थ अक्षर ब्रह्म की नींद उड़ने और स्वप्न की सारी सृष्टि →

स.१३१- जब ब्रह्मात्माएँ मूल मिलावे में जागृत होकर ब्रह्म, ब्रह्मधाम और ब्रह्मात्माएँ एक रूप हो जायेंगे, तब क्या होगा?

स.१३२- तब मूल अक्षर ब्रह्म (नूर जलाल) के देश-अन्तःकरण में कौन उठेंगे?

ज.१२५- कयामत के दौरान स्वयं खुदा-परमात्मा काज़ी-इमाम मेहदी के रूप में आकर ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों की बड़ाई करके उनकी सिफारिश करेंगे।

ज.१२६- उस समय तारतम ज्ञान के प्रकाश से संसार के सभी लोगों में सद्बुद्धि का विस्तार होगा, जिसके फलस्वरूप समूचे संसार में एक खुदा-एक ब्रह्म का ही सत्य धर्म रह जायेगा।

ज.१२७- एकमेव ब्रह्मज्ञान अर्थात् तारतम ज्ञान के कारण चौदह लोकों की जहान इश्क और ईमान लेकर एक ही परमात्मा की शरण में आयेगी।

ज.१२८- पुनः उस समय चौदह लोकों की जहान के दिल-दिमाग और जबान पर अक्षर और अक्षरातीत ब्रह्म की सत्ता के सिवाय अन्य किसी की सत्ता नहीं रहेगी।

ज.१२९- तारतम के प्रताप एवम् परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की आज्ञा से कूटस्थ अक्षर ब्रह्म (नूर जलाल) की नींद का आवरण उड़ने पर सारी सृष्टि उनके हृदय में चुभ जायेगी।

→ उनके चित्त में चुभने का तात्पर्य यह है कि जब कूटस्थ अक्षर ब्रह्म जागृत होकर स्वप्न की लीलाओं का स्मरण करेंगे, तब रंगमहल की आनन्दमयी लीलाओं के साथ तीनों ब्रह्माण्ड की तीनों लीलाएँ उनके हृदय में अंकित होकर अखण्ड हो जायेंगी।

ज.१३१- जब ब्रह्मात्माएँ मूल मिलावे में जागृत होकर ब्रह्म, ब्रह्मधाम और ब्रह्मात्माएँ एक रूप हो जायेंगे, तब अक्षर ब्रह्म अक्षर धाम में जागृत होकर व्रज, रास, जागनी और परमधाम की आनन्दमयी लीलाओं का स्मरण करेंगे।

ज.१३२- तब मूल अक्षर ब्रह्म (नूर जलाल) के देश-अन्तःकरण में अनादि काल से अंकित स्थान में नये आठ प्रकार के बहिश्तों में सांसारिक जीव कायम होंगे अथवा उठेंगे।

स.१३३- पंचभौतिक तनरूपी कब्र में नींदग्रस्त हुई रूहें खुदा-ब्रह्म के प्रति ईमान लेकर कूटस्थ अक्षर-नूर जलाल के चित्तरूपी बेहद के बहिश्त में कब उठेंगी?

स.१३४- जहान मुहम्मद को श्रीजी स्वरूप ने कुरान में कहे प्रमाण कब्र से मुर्दे उठने का वास्तविक अर्थ किस तरह समझाया?

ज.१३४- जहान मुहम्मद को श्रीजी स्वरूप ने कुरान में कहे प्रमाण कयामत के समय कब्र से मुर्दे उठने का वास्तविक अर्थ समझाते हुए कहा, "पंचभौतिक शरीररूपी कब्र में कुम्भकर्णवत् जन्म-जन्मान्तर से नींदग्रस्त जीव का कयामत के समय इमाम मेहदी →

स.१३५- उक्त आँकड़ी खुलते ही जहान मुहम्मद को क्या आया तथा फलस्वरूप दज्जालों का क्या हुआ?

ज.१३५- उक्त प्रकार परमधाम की अनुभूति करानेवाली आँकड़ी के →

स.१३६- श्रीजी ने जहान मुहम्मद को दिन में एक बार की चर्चा कितने दिनों तक सुनने को कहा था?

स.१३७- मात्र कितने दिनों में जहान मुहम्मद के अन्तर्पट खुल गये और उसे जोश आ गया? तब समाज में क्या हुआ?

ज.१३७- श्री प्राणनाथजी की अभूतपूर्व कथा-चर्चा श्रवण कर मात्र तीन →

स.१३८- किस भाई को कितने दिनों में हकीकत और मारफत की पहचान हो गई?

स.१३९- मुसलमान भाइयों में से कौन-कौन अब नित्य प्रति इमाम मेहदी की मजलिस में आने लगे?

ज.१३३- परब्रह्म (खुदा) के प्रति मन में विश्वास और तारतम ज्ञान प्राप्त करने के बाद जब रूहें पंचभौतिक शरीररूपी कब्र छोड़ देंगी, तब (कयामत के समय) वे अक्षर ब्रह्म के चित्तरूपी बेहद के आठों बहिश्तों में अखण्ड हो जायेंगी अथवा उठ जायेंगी।

→ के ज्ञान द्वारा जागृत होना ही कब्र से मुर्दे उठना है।" तब जहान मुहम्मद ने अपने हृदय में उतारा कि "परब्रह्म-खुदा पर निष्ठा रखनेवाली आत्माओं की जागृति के लिए मुहम्मद साहेब ने कुरान में कहा है कि उक्त आत्माएँ पंचभौतिक शरीररूपी कब्र में अज्ञान की नींद सो रही हैं तथा वे इमाम के ज्ञान द्वारा ही उठेंगी। कहे प्रमाण मुहम्मद साहेब की आखरी कड़ी (सूरत) इमाम मेहदी स्वरूप अपनी आत्माओं को जागनी लीला में कयामत के लिए निर्धारित समय पर जाति-स्मरण करा रहे हैं।"

→ खुलते ही जहान मुहम्मद को आवेश-जोश आ गया, जिसे देखकर तारतम ज्ञान के विरोधी तत्त्व अर्थात् दज्जाल लोग काँप उठे और उन्हें बड़ा भारी नुकसान हुआ। जहान मुहम्मद की रूह का जागृत होना ही दज्जालों का नुकसान होना है।

ज.१३६- श्रीजी साहेबजी ने जहान मुहम्मद को दिन में एक बार की चर्चा आठ दिन तक सुनने को कहा था।

→ ही दिनों में जहान मुहम्मद को पूर्ण विश्वास आ गया। तीसरे दिन की चर्चा से उनके अन्तर्पट खुल गये और तब उन्हें जोश आने लगा। तब समाज में भारी नुकसान हुआ। अबसे जहान मुहम्मद निजानन्द धर्म में पक्के बने।

ज.१३८- जहान मुहम्मद भाई को तीन ही दिनों में हकीकत और मारफत की पहचान हो गयी।

ज.१३९- मुसलमान भाइयों में से जहान मुहम्मद, अव्वल खाँ और मिहीन खाँ अब नित्य प्रति इमाम मेहदी की मजलिस में चर्चा सुनने →

→ के लिए आने लगे और ध्यानपूर्वक मग्न होकर चर्चा श्रवण →

स.१४०- उक्त मुसलिम भाइयों के पीछे-पीछे अन्य भी लोग चर्चा-मजलिस में आने लगे। परन्तु बार-बार जोश किसे आने लगा?

स.१४१- इमाम मेहदी स्वरूप श्री राजजी उक्त भाई को क्या कहकर सान्त्वना देते थे?

ज.१४१- इमाम मेहदी स्वरूप श्रीजी साहेबजी जहान मुहम्मद के सिर →

स.१४२- कौन भाई कयामत को याद करते समय लाहूत का नाम सुनते ही जोश में आकर बार-बार गिर पड़ते थे?

ज.१४२- जहान मुहम्मद भाई ही बारम्बार सचेत करने पर भी जब चर्चा →

स.१४३- उक्त प्रकार की चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन रात्रि में कब तक चलता था?

ज.१४३- उक्त प्रकार की चर्चा इस समय रातभर चलती थी। जब डेढ़ →

स.१४४- रात की चर्चा श्रवणार्थ आये हुए श्रोतागण वापस घर कब जाते थे?

स.१४५- जब सुन्दरसाथ यहाँ रास की रामतें गाते थे, तब श्रीजी स्वरूप कहाँ होते थे?

ज.१४५- चर्चा श्रवणार्थ आये हुए श्रोतागणों के घर चले जाने के बाद, →

स.१४६- औरंगाबाद के राजा भावसिंह हाड़ा की हवेली में उक्त प्रकार की चर्चा कितने मास तक चली?

→ करने लगे।

ज.१४०- उक्त तीनों मुसलिम भाइयों के पीछे-पीछे अन्य अनेक मुसलमान भाई चर्चा सुनने मजलिस में आने लगे । परन्तु उन सबके बीच बैठे जहान मुहम्मद को बार-बार अपूर्व जोश आता था।

→ पर अपना वरद्हस्त रखकर उन्हें शान्त करते थे और सान्त्वना देते हुए कहते थे, "जहान मुहम्मद! धैर्य रखो। निश्चय ही आप हमारे साथी-ब्रह्ममुनियों में से हो । आप हममें एक हो गये हो।"

→ में लाहूत-परमधाम का नाम श्रवण करते थे, तो उन्हें जोश आ जाता था और वे कयामत-आध्यात्मिक जागनी का ध्यान कर भाव विह्वल होकर गिर पड़ते थे।

→ घंटा रात्रि शेष रह जाती अर्थात् जब प्रातः के साढ़े चार बजते थे, तब श्रोतागण अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान करते थे। चर्चा में सुनी हुई बातों पर विचार-विमर्श होते रहता था।

ज.१४४- रात की चर्चा में आये हुए श्रोतागण रातभर चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन में निमग्न रहते थे। पुनः प्रातः साढ़े चार बजे अपने घर को प्रस्थान करते थे।

→ पीछे बैठे सुन्दरसाथ रास की रामतें गाते थे। इस समय श्रीजी स्वरूप कुछ अल्पाहार लेकर झूले या पलंग पर विश्राम करते थे।

ज.१४६- औरंगाबाद के राजा भावसिंह हाड़ा की हवेली में जागनी लीला का यह कार्यक्रम चार मास तक निरन्तर चलता रहा। चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन के आनन्द में सम्पूर्ण रात्रि व्यतीत हो जाती थी।

स.१४७- औरंगाबाद में हुई चार मास की चर्चा-कथा, उत्सव-रसोई, भजन-कीर्तन आदि में सुन्दरसाथ को कैसा अनुभव हुआ?

ज.१४७- औरंगाबाद में हुए चार माह के चर्चा-कथा, भजन-कीर्तन, →

स.१४८- पठान फतेह मुहम्मद कौन था और वह कैसी नीयतवाला था?

स.१४९- फतेह मुहम्मद ने जब श्री प्राणनाथजी की बातें सुनी, तब उसने जहान मुहम्मद को किसकी पहचान करा देने को कहा?

स.१५०- फतेह मुहम्मद ने आखर जमाने के खाविन्द की पहचान के विषय में क्या शर्त रखी और कबूल किया?

स.१५१- उक्त बात की शर्त किस-किसके बीच हुई थी?

स.१५२- चालीस हदीसे लेकर कौन भाई, किनके पास आये और उन्होंने क्या कहा?

ज.१५२- पठान फतेह मुहम्मद द्वारा लिखकर दिये हुए चालीस हदीसे →

स.१५३- उक्त भाई की बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी ने उनसे क्या कहा और क्यों?

ज.१५३- उक्त भाई जहान मुहम्मद की बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी ने →

→ उत्सव-रसोई की धूम-धाम में चार माह चार दिन सदृश व्यतीत हुए। प्रतिदिन यहाँ घर-घर में उत्सव-रसोई तथा कीर्तन आदि हुआ करते थे। श्री प्राणनाथजी के सत्संग में रहकर सुन्दरसाथ ने अभूतपूर्व आनन्द एवम् आत्म-शान्ति का अनुभव किया।

ज.१४८- पठान फतेह मुहम्मद एक मँजा (निपुण) हुआ राजनीतिज्ञ था। वह अत्यन्त क्रूर और ज़ालिम प्रवृत्तिवाला था तथा कुरान एवम् तफसीर का अधकचरा ज्ञानी था।

ज.१४९- फतेह मुहम्मद ने जब श्री प्राणनाथजी की प्रशंसा सुनी, तब उसने जहान मुहम्मद से कहा कि वह उसे उन वैरागी (श्री प्राणनाथजी) की सम्पूर्ण पहचान करा दे कि वे कैसे हैं और क्या चाहते हैं?

ज.१५०- जहान मुहम्मद के हाथ में पठान फतेह मुहम्मद ने चालीस हदीसे लिखकर दिए और कहा, "यदि श्रीजी साहेबजी इसके अर्थ बता देंगे, तो यह निश्चित हो जायेगा कि वे ही कुरान में वर्णित आखर जमाने के खाविन्द-इमाम मेहदी हैं।"

ज.१५१- उक्त श्रीजी साहेबजी द्वारा चालीस हदीसे खोल देने पर उन्हें आखर जमाने का खाविन्द कबूल कर हादी कर लेने की शर्त फतेह मुहम्मद और जहान मुहम्मद के बीच हुई थी।

→ लेकर जहान मुहम्मद श्री प्राणनाथजी के पास आया और फतेह मुहम्मद ने उसके साथ लगाई हुई शर्त विषयक बातें श्रीजी के आगे रख दीं। पुनः यह आग्रह किया, "आप उन हदीसों के अर्थ खोल दें।"

→ उनसे कहा, "जहान मुहम्मद! रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी की तारतम कुंजी तुम्हें भी तो प्राप्त है, तो स्वयं तुम ही इसका अर्थ क्यों नहीं कर देते? जाओ, तुम स्वयं ही उन चालीस हदीसों का अर्थ कर दो।"

स.१५४- श्रीजी साहेबजी ने जहान मुहम्मद की बातें सुनकर उन हदीसों द्वारा क्या किया?

ज.१५४- जब जहान मुहम्मद ने कुरान का अर्थ समझाने के लिए तारतम →

स.१५५- हकीकत और मारफत की आँकड़ी खुलते ही जहान मुहम्मद को क्या हुआ?

ज.१५५- तारतम ज्ञान के प्रताप से हकीकत-परमधाम के वास्तविक →

स.१५६- उन चालीस हदीसों के माध्यम से जहान मुहम्मद ने कौनसा नया तत्त्व प्राप्त किया?

स.१५७- तब जहान मुहम्मद ने फतेह मुहम्मद के पास जाकर उससे क्या पूछा?

ज.१५७- तब जहान मुहम्मद ने फतेह मुहम्मद के पास जाकर कहा, "यदि →

स.१५८- अच्छाजी! कुरान और हदीसों में खुदा (परमात्मा) का स्वरूप बताया है या नहीं?

स.१५९- तब जहान मुहम्मद ने फतेह मुहम्मद से कहा कि आपका जवाब कुरान और हदीसों के अनुकूल है या नहीं, तब फतेह मुहम्मद ने जवाब में क्या कहा?

ज.१५९- जब जहान मुहम्मद ने फतेह मुहम्मद से कहा कि आपका जवाब →

स.१६०- जब जहान मुहम्मद ने फतेह मुहम्मद से "म्याराज की रात्रि में मुहम्मद साहेब ने खुदा के सम्मुखीन होकर बातें की थी, इस विषय में तुझे सन्देह है या नहीं?"-

→ ज्ञानरूप कुंजी की चाह दिखायी, तब श्रीजी साहेबजी की कृपा से उन्हें तारतम ज्ञान प्राप्त हुआ और उन हदीसों द्वारा उन्हें हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म की पूर्ण पहचान हो गई।

→ ज्ञान और मारफत-अन्तरंग लीला का अनुभव प्राप्त होते ही जहान मुहम्मद का ध्यान बका-अखण्ड परमधाम में स्थिर हो गया और उसे अक्षरातीत खुदा-ब्रह्म-श्री राजजी के दीदार (दर्शन) हो गए।

ज.१५६- जहान मुहम्मद ने उन चालीस हदीसों के माध्यम से मारफत की अन्तरंग लीला का अनुभव और श्री राजजी महाराज का दीदार (दर्शन) प्राप्त किया।

→ तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दे दो, तो मुझ पर तुम्हारा बहुत बड़ा एहसान होगा। अतः तुम यह बताओ कि खुदा का स्वरूप है या नहीं?"

ज.१५८- जी हाँ ! कुरान और हदीसों में खुदा का स्वरूप बताया है, बताया है !!

→ कुरान और हदीसों के अनुकूल है या नहीं, तब फतेह मुहम्मद ने जवाब में कहा," जी हाँ! मेरा जवाब कुरान और हदीसों के अनुकूल ही है कि अर्श में खुदा का स्वरूप है।"(अर्श में खुदा का स्वरूप है, तभी न मुहम्मद साहेब ने खुदा द्वारा कहे नब्बे हजार हरफ सुने। अर्श में खुदा का जुल्फेकार स्वरूप है। इन बातों में जरा-सी भी शंका नहीं है।)

ज.१६०- जब जहान मुहम्मद ने फतेह मुहम्मद से *"म्याराज की रात्रि में मुहम्मद साहेब ने खुदा के सम्मुखीन होकर बातें की थी, इस विषय में तुझे सन्देह है या नहीं?"*- ऐसा प्रश्न किया, तब फतेह →

ऐसा प्रश्न किया, तब उस प्रश्न का उत्तर उसने क्या दिया?

स.१६१- फतेह मुहम्मद ने श्री प्राणनाथजी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के विषय में क्या कहा?

ज.१६१- फतेह मुहम्मद ने श्री प्राणनाथजी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त →

स.१६२- "दिल्लीवाला शराअ का कट्टर है। अतः अभी वह कयामत का दौर कैसे स्वीकार करेगा?"-यह बहाना किसने बनाया और इस बहाने के पीछे क्या वास्तविकता थी?

ज.१६२- *"दिल्लीवाला शराअ का कट्टर है। अतः अभी वह कयामत* →

स.१६३- "चालीस हदीसों के मायने खोलने की शर्त लगाते समय दिल्लीवाला नहीं था?"-ऐसा किसने कहा और इस कथन का क्या तात्पर्य है?

ज.१६३- *"चालीस हदीसों के मायने खोलने की शर्त लगाते समय* →

स.१६४- फतेह मुहम्मद ने जहान मुहम्मद को स्पष्ट नकारते हुए क्या कहा?

ज.१६४- फतेह मुहम्मद ने जहान मुहम्मद को स्पष्ट नकारते हुए कहा, →

स.१६५- फतेह मुहम्मद के उक्त जवाब के प्रत्युत्तर में जहान मुहम्मद ने क्या कहा?

ज.१६५- फतेह मुहम्मद की उक्त बातें सुनने के पश्चात् प्रत्युत्तर में जहान मुहम्मद ने कहा, "हदीसों की बातें सत्य सिद्ध हुई हैं। तुम्हारे →

→ मुहम्मद ने जवाब दिया, "इन बातों पर मुझे तनिक भी संदेह नहीं है।"

→ करने के विषय में जहान मुहम्मद से कहा, "हमें उक्त बातों में जरा-सी भी शंका-उपशंका नहीं है। किन्तु हम श्री प्राणनाथजी के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त नहीं कर सकते क्योंकि जाहिरी शराअ का हमारे मन पर गहरा प्रभाव है तथा बाह्य रूप में कट्टर शराअ का पालन करनेवाले महान् शासक का दबदबा है।"

→ *का दौर कैसे स्वीकार करेगा?"*-यह बहाना फतेह मुहम्मद ने बनाया और इस बहाने के पीछे वास्तविकता यह थी कि दिल्लीवाले का नाम लेकर फतेह मुहम्मद वचन से विमुख हो रहा था क्योंकि श्रीजी साहेबजी को हादी कबूलकर उसे हादी करना ही नहीं था। अतः जब वह शर्त हार गया, तो उक्त बहाना बनाने लगा।

→ *दिल्लीवाला नहीं था?"*-ऐसा जहान मुहम्मद ने कहा। उसके इस कथन का तात्पर्य यह है कि चालीस हदीसों के मायने खोलने की शर्त लगाते समय फतेह मुहम्मद ने क्या यह नहीं सोचा था कि यदि वह शर्त हार जायेगा, तो दिल्लीवाला क्या कहेगा?

→ "आपकी उक्त बातों पर मुझे तनिक भी संदेह नहीं है। परन्तु ये दोनों बन्धन अर्थात् लोक लाज का भय एवम् शाही प्रकोप हमें मार डालेगा। इसलिए हम प्रकट रूप से अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकते।"

→ जैसे अवज्ञाकारियों का वश नहीं चलेगा।" पुनः कहता है कि "जब तक बादशाह इनके उपदेश से प्रभावित होकर धर्म को स्वीकार नहीं कर लेता, तब तक हम लोग आगे होकर उनसे पहले विश्वास कैसे करें!"

स.१६६- उक्त बातें सुनने पर जहान मुहम्मद ने पूर्व शर्तानुसार क्या कहा?

ज.१६६- फतेह मुहम्मद की उक्त बातें सुनने पर जहान मुहम्मद ने पूर्व →

स.१६७- जब फतेह मुहम्मद द्वारा उक्त प्रकार मुकर जाने और शर्त बदलाने पर दोनों-जहान मुहम्मद और फतेह मुहम्मद के बीच अनबन हो गई, तब क्या हुआ?

स.१६८- उक्त प्रकार की बातें घटित होने पर सभी पठानों ने संगठित होकर क्या किया?

स.१६९- सभी पठान मिलकर जहान मुहम्मद से क्या कहने लगे?

ज.१६९- तत्पश्चात् सभी पठान मिलकर जहान मुहम्मद से कहने लगे, →

स.१७०- उक्त कार्य-कारणवश पठानों और जहान मुहम्मद के बीच क्या होने लगा?

स.१७१- उक्त झगड़े की बातें किसने सुनी? तब उन्होंने जहान मुहम्मद को क्यों रोका?

ज.१७१- उक्त झगड़े की बातें श्री प्राणनाथजी के कानों तक पहुँची। तब श्रीजी स्वरूप ने जहान मुहम्मद को रोकते हुए कहा, "आप →

स.१७२- श्री प्राणनाथजी द्वारा रोकने पर जहान मुहम्मद ने उनसे क्या कहा?

ज.१७२- उक्त प्रकार श्रीजी द्वारा रोकने पर जहान मुहम्मद ने उनसे →

→ शर्तानुसार फतेह मुहम्मद से कहा, "तुम्हारा विश्वास बादशाह के प्रति है, न कि खुदा-मुहम्मद के प्रति! अन्यथा इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी के रूप में हक की पहचान करके भी तुम ऐसा क्यों कहते?"

ज.१६७- जब फतेह मुहम्मद द्वारा उक्त प्रकार मुकर जाने और शर्त बदलाने पर दोनों-जहान मुहम्मद और फतेह मुहम्मद के बीच अनबन हो गई, तब जहान मुहम्मद ने उनको समझाना ही छोड़ दिया।

ज.१६८- उक्त प्रकार की बातें घटित होने पर सभी पठानों ने संगठित होकर निश्चय किया कि किसी भी तरह जहान मुहम्मद को श्री प्राणनाथजी के पास जाने से रोकना होगा।

→ "तुम क्यों उस वैरागी के चरणों में झुकते हो? तुमने उन्हें आखर जमाने का हादी कैसे पहचान लिया?"-ऐसे कहकर सबने उसे श्रीजी स्वरूप की जमात में शामिल होने से रोका।

ज.१७०- उक्त कार्य-कारणवश पठानों और जहान मुहम्मद के बीच प्रतिदिन झगड़ा होने लगा।

→ क्यों उन लोगों से हठपूर्वक झगड़ा करने जाते हो? इस युग में दज्जालों का ही साम्राज्य है। ये पठान तो जाहिलों के बाप हैं। इनसे युक्तिपूर्वक नीति से ही छुटकारा पाया जा सकता है। आपको शक्ति लगाकर उनसे सामना नहीं करना चाहिए।"

→ कहा, "ये दज्जाल के दास मुझे भी आपके पास आने से रोकते हैं। मैं उनकी ये अनुचित बातें क्यों मान लूँ? एक ब्रह्ममुनि होने के नाते यदि मैं यहाँ न आऊँ, तो मेरे दृढ़ विश्वास के भंग होने का भय है।"

स.१७३- उक्त पठानों का कहना मान लेने पर जहान मुहम्मद को क्या खतरा था?

ज.१७३- जहान मुहम्मद ने श्रीजी साहेबजी के स्वरूप में अपने साहेब- →

स.१७४- इस समय सभी पठानों ने मिलकर जहान मुहम्मद के विषय में क्या सलाह-मशविरा किया?

स.१७५- जहान मुहम्मद को मार डालने से पहले पठानों ने क्या करने का निश्चय किया?

स.१७६- एक दिन रात्रि में कितने पठान मिलकर श्रीजी के पास आये?

स.१७७- जब दस-बारह पठान मिलकर श्रीजी साहेबजी के पास आये, तब वहाँ क्या चल रहा था?

ज.१७७- जब रात्रि के समय दस-बारह पठान मिलकर श्रीजी साहेबजी →

स.१७८- श्रीजी साहेबजी के सामने दोनों ओर क्या पधराया हुआ था?

स.१७९- रोशनी के लिए दोनों ओर पंक्तिबद्ध क्या जल रहे थे?

स.१८०-उस समय वहाँ उपस्थित मोमिन रूहें-ब्रह्मात्माएँ किसमें तल्लीन थीं?

स.१८१- उस मजलिस में आकर दज्जाल वृत्ति से ग्रस्त पठान लोग क्या कहने लगे?

→ स्वामी को पा लिया था। अपने नेत्रों से उसने श्रीजी में इमाम मेहदी के प्रत्यक्ष दर्शन कर लिये थे। अतः यदि वह उनके पास आता, तो उसे मात्र जान का खतरा था। किंतु यदि वह उनके पास न आता, तो ईमान का खतरा था।

ज.१७४- इस समय सभी पठानों ने मिलकर जहान मुहम्मद को जान से मार डालने का निश्चय किया क्योंकि उसने मुसलमान धर्म छोड़कर उनसे सम्बन्ध ही तोड़ डाला था।

ज.१७५- जहान मुहम्मद को मार डालने से पहले पठानों ने वैरागी साधु-श्रीजी साहेबजी से संघर्ष करने का निश्चय किया।

ज.१७६- एक दिन रात्रि में दस-बारह पठान मिलकर महामति श्री प्राणनाथजी के पास आये।

→ के पास आये, उस समय वहाँ सामने ही श्रीजी साहेबजी विराजमान थे। उनके सामने कुरान की टीका हुसैनी तफसीर रखी हुई थी तथा बड़ी श्रद्धा और विश्वास से उसका अध्ययन हो रहा था।

ज.१७८- श्रीजी साहेबजी के दोनों ओर सुन्दरसाथ का समूह सभा के रूप में बैठा हुआ था। सबके सम्मुख रेहलों पर धार्मिक ग्रन्थ रखे हुए थे और बड़े ध्यान से उन्हें पढ़ा जा रहा था।

ज.१७९- रोशनी के लिए दोनों ओर पीतल के विशाल दीपक जल रहे थे, जिनका प्रकाश चहुँदिस फैल रहा था।

ज.१८०- पंक्ति में जाज्वल्यमान् पीतल के दीपक की रोशनी में वहाँ उपस्थित सभी मोमिन रूहें-ब्रह्मात्माएँ श्रीजी के साथ परस्पर चर्चा में तल्लीन थीं।

ज.१८१- विज्ञजनों की ऐसी मजलिस को देखकर दज्जाल वृत्ति से ग्रस्त पठान लोग वाद-विवाद कर शोर मचाने लगे और कहने लगे, →

→ "हे भगतजी! यह क्या हो रहा है? हम आपसे बलपूर्वक संघर्ष करेंगे। एक ओर तो आप टीका-माला धारण कर हिन्दू भेष →

स.१८२- पठानों की उक्त बातें सुनकर श्रीजी ने क्या कहा?

ज.१८२- पठानों की उक्त प्रकार की बातें सुनकर श्रीजी साहेबजी ने उनसे →

स.१८३- श्रीजी साहेबजी के पश्चात् किसने उन पठानों से क्या कहा और क्या पूछा?

स.१८४- "आप सबको धार्मिक जबान हिलाने की तालीम किसने दी?"-ऐसा किसने कहा? इस कथन द्वारा वे क्या कहना चाहते हैं?

ज.१८४- *"आप सबको धार्मिक जबान हिलाने की तालीम किसने* →

स.१८५- उक्त प्रकार के वाद-विवाद द्वारा किस-किसको क्या हुआ? वे क्यों डर गये?

ज.१८५- उपरोक्त प्रकार के वाद-विवाद को देखकर मिहीन खाँ को →

स.१८६- "यारो उठो जिमी फिरी"- यह वाक्यांश किसके मुख का है तथा इस वाक्यांश का तात्पर्य क्या है?

ज.१८६- *"यारो उठो जिमी फिरी"*-यह वाक्यांश उन पठानों के मुख →

स.१८७- जब उन पठानों ने अव्वल खाँ और जहान मुहम्मद को जोश में देखा, तब क्या हुआ?

→ रखते हो और दूसरी ओर कुरान पढ़ते हो! ऐसा क्यों? आप हिन्दू लोग कुरान पढ़ें और उसकी चर्चा करें या सुनें, यह हम मुसलमानों को स्वीकार नहीं है!"

→ कहा, "हम आपको मना करते हैं। हम तो मुहम्मद साहेब और खुदा में प्रेम सम्बन्ध स्थापित कर रहे हैं और उस प्रेम को आप छिपाने को कहते हो। यह उपदेश आप लोगों को किसने दिया?"

ज.१८३- श्रीजी साहेबजी के उपरोक्त बातें कहने के पश्चात् जहान मुहम्मद कहने लगा, "आपको यह ज्ञान किसने दिया है कि खुदा और मुहम्मद से प्रेम करनेवालों को दुःख दो?"

→ *दी?"* - ऐसा जहान मुहम्मद ने कहा। उनका पठानों को ऐसा कहने का तात्पर्य यह है कि "आप सबका गुरु तो मैं ही हूँ न! मुझसे ही कुरान की शिक्षा लेकर स्वयं बड़प्पन दिखा रहे हो! अपने आपको श्रेष्ठ समझकर बेईमानों की-सी जबान चलाते हो!"

→ बहुत ही क्रोध आ गया। गाजी खाँ पर भी जबराईल का जोश चढ़ गया। पठानों के रूप में मजलिस में बैठा दज्जाल इनकी जोश भरी बातें सुनकर डर गया।

→ का है। इस वाक्यांश का तात्पर्य यह है कि "यहाँ तो हद हो गयी।" हमें मारने और हमारे साथ लड़ने के लिए तो स्वयं हमारे यार-लोग ही तैयार खड़े हैं। हमारे लोग ही हमें मारने को तैयार हैं, तो साधु महात्मा को क्या कहें?

ज.१८७- जब उन पठानों ने अव्वल खाँ और जहान मुहम्मद को जोश में देखा, तो पठानों का साहस दम तोड़ गया। उनकी हिम्मत निस्तेज हुई।

स.१८८- वे दज्जालरूपी पठान क्या कहते हुए नौ दो ग्यारह हो गए?

ज.१८८- वे दज्जालरूपी पठान कहने लगे, "हे भगतजी! आप हमें क्षमा →

स.१८९- उक्त पठानरूपी दज्जाल जब वहाँ से बचकर भाग निकले, तो कहाँ जाकर शोर मचाने लगे?

स.१९०- "यारो बड़ा जादूगर"-ऐसा किसने, किससे कहा? उन्होंने किसे जादूगर कहा और क्यों?

ज.१९०- *"यारो बड़ा जादूगर"* -ऐसा दज्जाल की औलाद-पठान लोग →

स.१९१- अचानक इसी बीच भावसिंह हाड़ा को क्या हुआ? पुनः उसके स्थान पर औरंगाबाद के राजा के रूप में कौन आसीन हुआ?

ज.१९१- उक्त प्रकार का वातावरण था, तभी अचानक राजा भावसिंह →

स.१९२- भावसिंह हाड़ा के स्थान में आये हुए दज्जालरूपी फतेह मुहम्मद ने क्या हुकम किया?

स.१९३- उस समय जमात सहित श्री प्राणनाथजी कहाँ बैठे हुए थे और क्या कराने में तल्लीन थे?

ज.१९३- उस समय श्री प्राणनाथजी जमात सहित फतेह मुहम्मद के →

स.१९४- श्रीजी स्वरूप किसे आर्थिक लोभ दिखाकर कुरान उतरवा रहे थे? कौन-कौन शामिल थे?

➞ कर दीजिए। हमारा मन आपके प्रति निर्मल हो चुका है। हमें आपसे कोई द्वेष नहीं रहा। अब हम सब यहाँ से वापस जा रहे हैं।"-इस प्रकार कहते हुए वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गये।

ज.१८९- उक्त पठानरूपी दज्जाल जब हाथ जोड़कर माफी माँगते हुए वहाँ से भाग गये, तब वहाँ से अपने समाज-दज्जाल की फौज के बीच पहुँचकर निन्दा करते हुए शोर मचाने लगे।

➞ आपस में कहने लगे। वे श्री प्राणनाथजी को जादूगर कहने लगे क्योंकि पठानों के अनुसार श्रीजी स्वरूप उन्हें मारने और मरवाने के लिए उनके ही वंशज-मुसलमानों को तैयार कर रहे थे, तभी तो उन्हें मारने के लिए उनके ही लोग खड़े हो गये।

➞ हाड़ा की मृत्यु हो गई तथा उनके उपरांत दज्जालरूपी विरोधी लोगों ने तरह-तरह से श्रीजी की निन्दा की और सुन्दरसाथ को कष्ट पहुँचाने का प्रयास करते रहे। कार्य-कारणवश राजा भावसिंह हाड़ा की जगह पर फतेह मुहम्मद राजा के रूप में आसीन हुआ।

ज.१९२- भावसिंह हाड़ा के स्थान में आये हुए दज्जालरूपी फतेह मुहम्मद ने राजसिंहासन पर आसीन होते ही सेवकों को आदेश दिया, "तुम उन वैरागियों को ढूँढ़कर पकड़ लाओ। हम उन्हें कैद कर लेंगे।"

➞ मुहल्ले में उसकी हवेली के अत्यंत निकट ही स्थित एक मुल्ला के घर में ठहरे हुए थे और वहाँ बैठकर कुरान की नकल उतरवाने में तल्लीन थे। वहाँ का वातावरण ऐसा था कि किसी पर भी विश्वास करना कठिन था।

ज.१९४- श्रीजी स्वरूप एक मौलवी को आर्थिक लोभ दिखाकर कुरान की अनुकृति (अनुवाद) करवा रहे थे। उस मौलवी को सहयोग देने के लिए वहाँ लालदासजी और चरनदासजी भी शामिल थे।

स.१९५- राजा भावसिंह हाड़ा के निधन के बाद तीन दिन तक श्रीजी स्वरूप कहाँ थे और बाहर क्या हो रहा था?

ज.१९५- राजा भावसिंह हाड़ा के निधन के तीन दिन बाद तक श्रीजी →

स.१९६- फतेह मुहम्मद के सैनिक कहाँ और क्या ढूँढ़ रहे थे? न मिलने पर उन्होंने किसे पकड़ लिया?

ज.१९६- फतेह मुहम्मद के सैनिक औरंगाबाद शहर के चप्पे-चप्पे में श्री →

स.१९७- फतेह मुहम्मद के सैनिकों ने भवानी भट्ट से पूछताछ करते हुए क्या कहा?

ज.१९७- फतेह मुहम्मद के सैनिकों ने भवानी भट्ट से जमात सहित श्रीजी →

स.१९८- शहर के लोगों ने सैनिकों के पूछने पर वैरागियों का ठिकाना कैसे बता दिया?

ज.१९८- शहर के लोगों ने फतेह मुहम्मद के सैनिकों द्वारा वैरागियों का पता-ठिकाना पूछने पर कहा, "वैरागियों की जमात सहित →

स.१९९- इस समय फतू अल्लाह (फतेह मुहम्मद) के घर कौन आया और उसने वहाँ किसे देखकर, उनसे क्या पूछा?

स.२००- जहान मुहम्मद द्वारा श्रीजी के विषय में पूछने पर वैरागी साधु ने क्या जवाब दिया?

स.२०१- वैरागी साधु की बात सुनकर जहान मुहम्मद ने उनसे क्या कहा?

ज.२०१- वैरागी साधु की बात सुनकर जहान मुहम्मद ने उनसे कहा, "क्या आप लोगों को फतेह मुहम्मद जैसे अत्याचारी से डर नहीं लगता? वह तो दज्जाल का प्रतिरूप ही है। उसके सैनिक →

→ साहेबजी फतेह मुहम्मद के मुहल्ले में उसकी हवेली के निकट ही स्थित एक हवेली में ठहरे हुए थे। बाहर फतेह मुहम्मद के सैनिक उन्हें और उनकी जमात को पकड़ने के लिए चारों ओर ढूँढ़-ढूँढ़कर हैरान हो रहे थे।

→ प्राणनाथजी और उनकी जमात को ढूँढ़ रहे थे। उनके न मिलने पर उन्होंने भवानी भट्ट को पकड़ लिया और श्रीजी के विषय में पूछताछ करने लगे।

→ की खबर पूछी। परन्तु भवानी भट्ट ने कुछ भी नहीं बताया। तब वे लोग भवानी भट्ट को कहने लगे, "तुम हमें वैरागियों का ठिकाना बता दो। हम तो अपनी सारी शक्ति लगाकर उन्हें ढूँढ़ते-ढूँढ़ते पूरी तरह थक चुके हैं।"

→ श्री प्राणनाथजी तो *"भड़कल दरवाजा"* की पूर्व दिशा की हवेली में हैं।" पुनः दूसरी जगह के लोग तो कहने लगे, "अरे ! अब तुम लोगों का यहाँ-वहाँ भटकना व्यर्थ है । वे तो शहर छोड़कर कहीं अन्यत्र ही चले गये हैं।"

ज.१९९- इसी समय फतू अल्लाह (फतेह मुहम्मद) से मिलने उसके घर जहान मुहम्मद आया और उसने वहाँ श्रीजी के पास रहनेवाले वैरागियों को देखकर उनसे श्री प्राणनाथजी के बारे में पूछा।

ज.२००- जहान मुहम्मद द्वारा श्रीजी के विषय में पूछने पर वैरागी साधु ने उनसे कहा, "श्री प्राणनाथजी इसी हवेली में ठहरे हैं।"

→ आप सबको ढूँढ़ते-ढूँढ़ते परेशान हो रहे हैं। वे आप सबको सर्वत्र ढूँढ़ चुके हैं। यह मुहल्ला तो स्वयं फतेह मुहम्मद का ही है। वह आप लोगों से बलपूर्वक लड़ेगा। अतः बेहतर यही होगा कि सुन्दरसाथ सहित सद्गुरु-हादी को यहाँ से निकालकर सुरक्षित स्थान पर ले जाया जाय।"

स.२०२- जहान मुहम्मद ने जब वैरागी साधु से कहा, "मुझे स्वामीजी के दर्शन कराओ।" तब वैरागी साधु उन्हें कहाँ ले गया?

ज.२०२- जब जहान मुहम्मद ने वैरागी साधु से कहा, *"चलो! मुझे* →

स.२०३- जब जहान मुहम्मद स्वामी श्री प्राणनाथजी से मिले, तब दिन का कितना समय हुआ था?

स.२०४- उस समय वहाँ क्या कार्य चल रहा था, जिसकी आस छोड़ दी गयी?

स.२०५- किसे,कहाँ से बुलवाया गया और कौनसा कार्य स्थगित कर दिया गया ?

स.२०६- श्रीजी साहेबजी ने साथियों को लेकर कहाँ से प्रस्थान किया और कहाँ पहुँचने पर सबेरा हुआ?

स.२०७- औरंगाबाद से प्रस्थान कर बुढ़ानपुर जाते समय श्रीजी स्वरूप को कौन भाई मिले? उन्हें कहाँ तक श्रीजी स्वरूप अपने साथ ले गए?

स.२०८- श्रीजी साहेबजी ने भीमसेन भाई से क्या लिखवाया और किसे, क्या तथा कहाँ ले जाने को कहा?

ज.२०८- भीमसेन भाई बुढ़ानपुर पहुँचकर कुछ दिनों तक ब्रह्ममुनियों →

स.२०९- बुढ़ानपुर से श्रीजी साहेबजी ने औरंगाबाद में किस-किस को प्रश्न-पत्र भेजा?

ज.२०९- श्रीजी साहेबजी ने बुढ़ानपुर से कुरान के प्रश्न-पत्र औरंगाबाद →

→ *स्वामीजी के दर्शन कराओ।"* तब वैरागी साधु उन्हें अपने साथ अन्दर ले गया। वहाँ पहुँचकर जहान मुहम्मद ने महाप्रभु श्रीजी के चरणों में प्रणाम किया और सम्पूर्ण वस्तुस्थिति से उन्हें अवगत करा दिया।

ज.२०३- जब जहान मुहम्मद स्वामी श्री प्राणनाथजी से मिले, तब सायंकाल का समय था तथा सूर्यास्त होने जा रहा था।

ज.२०४- उस समय वहाँ एक मुल्ला के घर में हुसैनी तफसीर की अनुकृति का कार्य चल रहा था। विपरीत परिस्थितियाँ देखकर उस कार्य के पूर्ण होने की आस छोड़ दी गई।

ज.२०५- चरनदासजी को मुल्ला के घर से बुलवा लिया गया और हुसैनी तफसीर की अनुकृति का कार्य स्थगित कर दिया गया।

ज.२०६- श्रीजी स्वरूप ने तत्काल ही जमात सहित औरंगाबाद से प्रस्थान किया। तब साथियों सहित श्रीजी साहेबजी औरंगाबाद से सात कोस दूर आ गए, तब सबेरा हुआ।

ज.२०७- औरंगाबाद से प्रस्थान कर बुढ़ानपुर जाते समय श्रीजी स्वरूप को रास्ते में भीमसेन भाई मिले। श्रीजी साहेबजी उन्हें बुढ़ानपुर तक अपने साथ ले आए।

→ के बीच रहे। इसी दरमियान श्रीजी साहेबजी ने उनसे कुरान के प्रश्न लिखवाए और कुरान के प्रश्नोंवाला वह पत्र मलूकचन्द को औरंगाबाद के फतू अल्लाह (फतेह मुहम्मद) आदि तक पहुँचाने को कहा।

→ में फतू अल्लाह (फतेह मुहम्मद), हिदायतुल्ला काज़ी और दीवान आदि के नाम पर भेजे, जिनसे उनकी आत्मा जागृत हो जाय तथा वे कयामत की रोज का फायदा उठा सकें।

स.२१०- अलग-अलग प्रश्न-पत्र औरंगाबाद में कितने जनों को भेजा गया?

स.२११- उन पत्रों में किस-किसके विषयों में पूछकर जवाब माँगा गया था?

स.२१२- पुनः आकोट से औरंगाबाद प्रश्न-पत्रों का जवाब लेने किस-किस को भेजा गया?

स.२१३- "उन्हें जरा समझाओ, जिससे कि उन्हें कयामत की पहचान हो।"- ऐसा किस-किसको कहा गया?

ज.२१३- श्रीजी साहेबजी ने उक्त तीन जनों-वीरजी, शेख बदल और →

स.२१४- श्री बीतककार यहाँ-इसके आगे कहाँ की महत्त्वपूर्ण चर्चा करने को कह रहे हैं?

ज.२१४- बीतककार स्वामी श्री लालदासजी महाराज कहते हैं, "हे →

❋ विविध दर्शन सार ❋

स. १ - सुकराना मतलब क्या? कहाँ के, किस सुकराना को याद करने को कहा है?

ज. १ - सुकराना का मतलब है-दया, कृपा, मेहेर अर्थात् श्री धनीजी →

स. २ - धनी की बातुनी मेहेर क्या है, जिससे मूल की लीला का बोध होता है?

ज. २ - मूल लीला, जिसकी रचना श्री राजजी ने खेल में आने के पूर्व →

ज.२१०- अलग-अलग प्रश्न-पत्र औरंगाबाद में हिदायतुल्ला आदि अधिकारियों को तीन जिल्दों में भेजा गया।

ज.२११- उन पत्रों में कयामत और इमाम मेहदी के प्रकट होने के समय का विवरण लिखा था। इसी समय एक पत्र दीवान दलेल खाँ के नाम पर भी इसी आशय से भेजा गया था।

ज.२१२- पुनः श्री प्राणनाथजी ने आकोट से वीरजी, शेख बदल और लाल खाँ को प्रश्न-पत्रों का जवाब लेने औरंगाबाद भेजा।

→ लाल खाँ को यह समझाकर भेजा, "किसी भी प्रकार मुसलिम अधिकारियों को कयामत का विषय समझा-बुझाकर दीन की यथार्थ राह पर ले आओ।"

→ ब्रह्मात्माओं! यह तो औरंगाबाद की बीतक है। अब इसके आगे आकोट की रोचक और महत्त्वपूर्ण चर्चा करेंगे। यसर्थ श्रवणार्थ कमर बाँधकर इन्तजार करो।"

-(प्रकरण ५३, सवाल जवाब नं.२१४, कुल सं.३४०६+२१४ =३६२०)।

❋ विविध दर्शन सार ❋

→ ने ब्रह्मात्माओं पर जागनी के ब्रह्माण्ड में किस प्रकार तारतम ज्ञान लाकर उनकी हर प्रकार की इच्छा की पूर्ति कर दया-कृपावत् धनवट किया। उन बातों को तारतम के माध्यम से विचार-विवेकवत् याद करो।

→ की थी, उस लीला का नाम है - *"प्रेम-संवाद"*। इसी मूल लीला के कारण हम ब्रह्मात्माएँ संसाररूपी नाट्यशाला में दुःखरूपी खेल देखने अवतरित हुईं। यही धनी-श्री राजजी की बातुनी मेहेर है।

स. ३ - इस संसार सागर के बीच वेद और कतेब के माध्यम से किस तत्त्व की खोज का प्रयास किया गया?

स. ४ - खोजरूपी बोझ लेकर कौन थक गए? किन्हें खोज करते-करते सृष्टिकर्ता अक्षर भी नहीं मिल सके?

स. ५ - परमात्मा की खोज करनेवालों ने किसके आधार पर खोज की?

स. ६ - वेदों, शास्त्रों, पुराणों और उपनिषदों आदि का मूल आधार क्या है?

स. ७ - किसने और सृष्टि के किस आद्य तत्त्व का नेत-नेत कहकर निर्णय किया?

ज. ७ - वेदवक्ता ब्रह्माजी ने सृष्टि के आद्यकाल में परमात्मा तत्त्व के →

स. ८ - एक अद्वैत परमात्मा की पहचान-जानकारी किस-किस को नहीं है?

ज. ८ - एक अद्वैत ब्रह्म-परमात्मा की पहचान ब्रह्माण्ड के सर्वेसर्वा-ब्रह्मा, विष्णु, महेश अर्थात् पालनकर्ता, उत्पत्तिकर्ता और संहारकर्ता को भी नहीं है। उन अद्वैत परमात्मा पद के लिए तो कहा है कि - →

स. ९ - आप्तजनों की खोज और उनके द्वारा किये गये निर्णय से किन्हें आत्म-शान्ति नहीं होती और क्यों?

ज. ९ - आप्तजनों द्वारा सृष्टि के आद्यकाल से करते आए खोज द्वारा →

ज. ३ - इस संसार सागर के बीच आज तक जितने भी वेद, कतेब आदि धर्मग्रन्थ हुए, उन सबके माध्यम से परमात्मा तत्त्व की खोज का प्रयास किया गया।

ज. ४ - तीनों गुणों के मालिक त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश आदि देव खोजरूपी बोझ वहन करते-करते थक गए, परन्तु उन्हें खोज करते-करते सृष्टिकर्ता अक्षर भी नहीं मिल सके।

ज. ५ - संसार में परमात्मा की खोज करनेवाले संत-महात्माओं ने वेद, कतेब, शास्त्र और पुराणों आदि के वचनों के आधार पर परमात्मा-ब्रह्मतत्त्व की खोज की।

ज. ६ - वेदों, पुराणों, शास्त्रों और उपनिषदों आदि का मूल आधार वेद है। पुनः वेद चार हैं तथा चारों वेदों का सार तथा आधाररूप अथर्ववेद है क्योंकि अथर्ववेद स्वसंवेद को इंगित करता है।

→ विषय में अपनी खोज के दरमियान नेत-नेत अर्थात् यहाँ नहीं है, यहाँ नहीं है अथवा जहाँ तक मैं गया मैं उस परमात्मा तत्त्व तक नहीं पहुँच पाया, ऐसा निर्णय किया।

→ जेहि पद नारायण भजे, ब्रह्मा विष्णु महेश।
महाविष्णु वांछत सदा, मोहे पहुँचाओ वा देश ।।

अर्थात् परमतत्त्व-परम पद के विषय में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की तो बात ही क्या करना? इन तीनों से परे स्थित नारायण और उनसे भी परे स्थित आदिनारायण- महाविष्णु भी उस पद की वांछना करते हुए भटक रहे हैं।

→ प्राप्त तत्त्व ज्ञान से किसी को भी आत्म-शान्ति नहीं होती क्योंकि उन्होंने अद्वैत परमात्मा तत्त्व को द्वैत के अन्दर ठहराने की कोशिश की। उन्हें अद्वैत ब्रह्म-परमात्मा की अद्वैत भूमिका ही नहीं मिल सकी, तो उन्हें आत्म-शान्ति कहाँ से होगी?

स. १०-किसने उन सबके ज्ञान को धाम की आत्माओं के लिए सीमित-निर्धारित कर दिया?

ज. १०- उन खोजी लोगों-आप्तपुरुष आदि के द्वारा दिये गये ज्ञान से, →

स. ११-आज तक संसार के लोग कितना अथवा कहाँ तक जानते थे और क्या नहीं जानते थे?

स. १२-किसने नारायणी सृष्टि के जीवों के हाथ पकड़कर उन्हें परलोक के परम तत्त्व-अक्षर और अक्षरातीत की पहचान करा दी?

स. १३-पुनः किसे और किसके प्रति पूर्ण विश्वास में दृढ़ करा दिया?

स. १४-किनके गुण, पक्ष और इन्द्रियाँ परमात्मा के साथ सम्बन्ध के विषय में साक्षी देंगे?

स. १५-इन ब्रह्ममुनियों की प्रशंसा और उनकी महिमा का गान किस-किसने किया है?

स. १६-सृष्टिकर्ता-कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को कहाँ की, कैसी और किस लीला की जानकारी नहीं थी?

स. १७-उस स्थान की तथा उन लीलाओं की अनुभूति प्राप्त करने की समझ कहाँ, किसने और किसे दी?

→ उन सबके ज्ञान को धाम की आत्माओं-ब्रह्मसृष्टि स्वरूप सुन्दरसाथ के लिए श्री प्राणनाथजी ने स्पष्ट करके उनकी सीमा निर्धारित कर दी।

ज. ११- आज तक संसार के लोग चौदह लोक के अन्दर स्थित इन्द्र, ब्रह्मा, विष्णु और महेश तक ही जानते थे। उन्हें इससे परे अक्षर ब्रह्म और अक्षरातीत ब्रह्म की पहचान ही नहीं थी।

ज. १२- महामति श्री प्राणनाथजी ने नारायणी सृष्टि के जीवों सहित सुन्दरसाथजी के हाथ पकड़कर उन्हें अक्षर और अक्षरातीत ब्रह्म की पहचान करा दी।

ज. १३- उक्त अक्षर-अक्षरातीत ब्रह्म तत्त्व के प्रति सृष्टि के सभी लोगों को दृढ़तापूर्वक पूर्ण विश्वास करा दिया।

ज. १४- परात्पर अक्षरातीत ब्रह्मधाम के ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों के गुण, पक्ष और इन्द्रियाँ प्रियतम परमात्मा की ओर प्रवृत्त होकर उनके साथ अपने सम्बन्ध की साक्षी देंगे।

ज. १५- इन ब्रह्ममुनियों-मोमिन रूहों की प्रशंसा और उनकी महिमा का गान विभिन्न शास्त्रों में और अनेकों भाषाओं में विभिन्न साधु-संतों ने किया है।

ज. १६- सृष्टिकर्ता-कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को जागृतावस्था में भी परब्रह्म के दिव्य धाम-रंगमहल में अपने इष्ट-श्री राजजी और श्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओं-सखियों के बीच की अन्तरंग और आनन्दमयी लीला की जानकारी नहीं थी।

ज. १७- परात्पर ब्रह्मधाम के अन्तरंग लीलाओं की आनन्दानुभूति प्राप्त करने की समझ श्री धनीजी ने संसार में अवतरित ब्रह्मात्माओं को प्रदान की।

स. १८-महामति श्री प्राणनाथजी ने किस बुद्धि द्वारा,तारतम की सहायता से क्या किया?

ज. १८- महामति श्री प्राणनाथजी ने उस जागृत बुद्धि द्वारा जिसे मूल- →

स. १९-कैसे संसार के बीच, किसने धाम का साक्षात् अनुभव करानेवाला, क्या वर्णन किया?

स. २०-श्री प्राणनाथजी ने ब्रह्ममुनियों को कहाँ-किसके अन्दर की और क्या बात बता दी?

स. २१-मूल स्वरूप के चित्त में ब्रह्मात्माओं को सुख देने के विषय में क्या था?

स. २२-कहाँ के लीला-विहार विषयक बातों का ज्ञान किसे नहीं है?

स. २३-महामति श्री प्राणनाथजी ने कहाँ की, किन लीलाओं को सांसारिक जीवों के लिए सुगम बना दिया?

स. २४-श्री राजजी-परब्रह्म परमात्मा ने किनके ऊपर कृपा की? पुनः उस कृपा का अनुभव अन्य किसने किया?

स. २५-उक्त ज्ञान और ज्ञानानुभव के संसार में प्रकट होने के विषय में कुरान में क्या कहा है?

ज. २५- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं के इस खेल में →

स. २६-कुरान शरीफ़ में जग्जीवों को आत्म-जागृति का ज्ञान कब प्राप्त होने को कहा है?

→ मिलावेवाले श्री राजजी ने रासमण्डल में जोश खींचकर अक्षर धाम में जागृत किया था, निजानन्द स्वामी श्री सद्गुरु द्वारा प्रदत्त उस जागृत बुद्धि के साथ-साथ तारतम ज्ञान की सहायता से परमधाम के यथार्थ स्वरूप की पहचान करा दी।

ज. १९- महामति श्री प्राणनाथजी ने इस नश्वर संसार के बीच में ब्रह्मात्माओं के मूल घर-श्री परमधाम का साक्षात् अनुभव करानेवाले ज्ञान का वर्णन किया।

ज. २०- श्रीजी साहेबजी ने ब्रह्ममुनियों को रंगमहल के अन्दर हुई चर्चा अर्थात् प्रेम-संवाद की बातें भी बता दीं।

ज. २१- *"अक्षरात्परतः परः"* - अक्षरातीत ब्रह्म मूल स्वरूप श्री राजजी के चित्त में ब्रह्मात्माओं को सुख देने के विषय में एक अविरल भाव था।

ज. २२- अक्षर परे अक्षरातीत ब्रह्मधाम के लीला-विहार विषयक बातों का ज्ञान अक्षर ब्रह्म जैसे को भी नहीं है, तो त्रिदेवा-ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवों को कैसे हो सकता है!

ज. २३- महामति श्री प्राणनाथजी ने ब्रह्मधाम के लीलास्थलों को त्रिगुण द्वारा उत्पन्न स्वप्नवत् सांसारिक जीवों के लिए सुगम-सुलभ बना दिया ।

ज. २४- श्री राजजी-परब्रह्म परमात्मा ने धाम की अपनी प्रियात्माओं के ऊपर कृपा की। पुनः इस संसार के अन्य मायावी जीवों ने भी ब्रह्मात्माओं की संगति से उस कृपा का अनुभव किया।

→ अवतरित होने से ग्यारह सौ वर्ष पूर्व ही कुरान में सम्पूर्ण बातें लिखकर भेज दी थी। उन्होंने कुरान में उक्त ज्ञान का आत्मानुभव ग्यारहवीं और बारहवीं सदी में प्रकट होने को कहा है।

ज. २६- कुरान शरीफ़ में संसार के सम्पूर्ण जगजीवों को आत्म ज्ञान-आत्म-जागृति का ज्ञान *"फर्दाए रोज"* अर्थात् कयामत के समय मिलने को कहा है।

स. २७-धाम की ब्रह्मात्माओं पर श्री राजजी की कृपा किस रूप में अवतरित हुई?

स. २८-उस कृपा का अनुभव कराने के लिए श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं के प्रति क्या किया?

स. २९-परब्रह्म परमात्मा ने किनके आने के, कितने वर्ष पूर्व, कुरान में क्या लिखकर भेजा?

स. ३०-श्री राजजी-परब्रह्म परमात्मा द्वारा कुरान में लिखकर भेजी हुई बातों को पढ़नेवाले भी क्यों नहीं समझ पाये?

ज. ३०- अक्षरातीत श्री राजजी-परब्रह्म परमात्मा द्वारा भेजे गए संदेशरूपी कुरान को सांसारिक जीवों ने पढ़-पढ़कर खोज करने की बहुत →

स. ३१-तीनों सृष्टियों में से निजधर्म पर कौन समर्पित हैं, जिनके हाथ में इसलाम का अधिकार दिया गया है?

स. ३२-किन आत्माओं ने हकीकत और मारफत को स्पष्ट करके दुनिया के बीच रख दिया?

ज. ३२- ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्ममुनियों के माध्यम से हकीकत-परात्पर ब्रह्म के →

स. ३३-हकीकत और मारफत का वास्तविक अर्थ क्या समझना चाहिए, स्पष्ट करो?

स. ३४-इन ब्रह्मात्माओं द्वारा क्या जानकर (समझकर) जीवात्माएँ उनकी आज्ञा के अधीन हुईं?

ज. २७- धाम की ब्रह्मात्माओं पर परब्रह्म परमात्मा की कृपा-दया असंख्य रूपों में अवतरित हुई।

ज. २८- उस कृपा का अनुभव कराने के लिए हमारे स्वामी श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं के अन्तर चक्षु (दिव्य दृष्टि) खोल दिये अर्थात् उन्हें बातुनी दृष्टि प्रदान की।

ज. २९- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं के दूसरी बार खेल में उतरने के ग्यारह सौ वर्ष पूर्व ही कुरान में यह लिखकर भेज दिया था कि अर्श की रूहें दूसरी बार खेल में आ रही हैं।

→ कोशिश की, किन्तु कोई भी ब्रह्मधाम के संकेतों को समझ नहीं पाये क्योंकि कुरान की बातें तो ब्रह्मधाम के अंकुरवाली आत्माओं को भी तारतम द्वारा समझ में आती हैं, किंतु सांसारिक जीव तो उक्त अंकुर और तारतम दोनों से रहित थे।

ज. ३१- तीनों सृष्टियों-ब्रह्म, ईश्वरी और जीवों में से ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मसृष्टियाँ धर्म पर समर्पित हैं तथा इन ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों के हाथ में ही इसलाम का पूर्ण अधिकार सौंपा गया है।

→ वास्तविक ज्ञान और मारफत-परमात्मा में एकाकार होने की भाव-दशा का स्पष्ट रूप में वर्णन है। अतः उक्त ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्ममुनियों ने ही हकीकत और मारफती ज्ञान को दुनिया के सामने रख दिया।

ज. ३३- परम तत्त्व परमात्मा-खुदा अथवा ब्रह्मतत्त्व के ज्ञान को हकीकत एवम् उन परमात्मा-खुदा में प्रेम से एकाकार (अद्वैत) होने की भावना को मारफत कहते हैं।

ज. ३४- इन ब्रह्मात्माओं के ज्ञान द्वारा संसार की संपूर्ण जीवात्माएँ ब्रह्मात्माओं को ब्रह्म समान जानकर उनकी आज्ञा के अधीन हुईं।

स. ३५-मात्र कौन लोग हकीकी दीन इसलाम पर समर्पित हो सके अथवा हुए?

ज. ३५- मात्र नूर परे नूर तजल्लाह अथवा अक्षर परे अक्षरातीत की →

स. ३६-किन्होंने कुरान की रहस्यमयी बातों को समझ लिया और समस्त ज्ञान-ग्रन्थों की पूँजी किसकी हो गयी?

स. ३७-किसके ऊपर, किसने बातुनी मेहेर (कृपा) की?

स. ३८-श्री राजजी ने समय-समय पर किसके ऊपर जाहिरी (प्रत्यक्ष) रूप में भी कृपा की?

स. ३९-किसने, किसके विश्वास, प्रेम और श्रद्धा को ज्यों का त्यों बनाये रखा है?

स.४०- सर्वप्रथम किसने, कहाँ और किसके ऊपर आई हुई कठिनाइयों को दूर किया?

स. ४१-कौन, कहाँ और किसके अधीन रहकर संसार में धन्य-धन्य कहलाई?

स. ४२-आज तक इस संसार में कौन और किसके चरणों की वन्दना करते हैं?

स. ४३-वे कौन हैं, जिनकी चरण-रज प्राप्त करने की इच्छा त्रिदेवादि देव भी रखते हैं?

→ ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के अधीन रहनेवाले लोग ही हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म पर हर प्रकार से समर्पित हो सके अथवा हुए।

ज. ३६- ब्रह्मसृष्टियों ने कुरान की रहस्यमयी-गुह्य बातों को अच्छी तरह से समझ लिया । तब समस्त ईश्वरीय ज्ञान-ग्रन्थों की पूँजी इनकी हो गयी।

ज. ३७- मोमिनों-ब्रह्मसृष्टियों पर श्री राजजी ने आन्तरिक बातुनी मेहेर की है।

ज. ३८- धामधनी श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं पर समय-समय पर जाहिरी (प्रत्यक्ष) रूप में भी कृपा की है।

ज. ३९- धाम के धनी श्री राजजी ने ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के विश्वास और प्रेममय श्रद्धा को ज्यों का त्यों बनाये रखा है। उनकी कृपा (दया) का प्रत्यक्ष अनुभव कीजिए।

ज. ४०- श्री अक्षरातीत धाम से सर्वप्रथम ब्रह्मात्माएँ व्रज में गोपियों के रूप में प्रकट हुईं। व्रज में उनके ऊपर जितनी भी कठिनाइयाँ आईं, उन सबको व्रजेश श्री राजजी ने कृपा करके दूर कर दिया।

ज. ४१- व्रज,रास में अपने धनी की कृपा (दया) के अधीन रहकर ब्रह्मात्माएँ संसार में अथवा चौदह लोक में धन्य-धन्य कहलाईं और अपने धाम को चली गईं।

ज. ४२- आज तक इस संसार में व्रजमण्डल की गोपियों के चरणों की सभी वन्दना करते हैं।

ज. ४३- व्रजमण्डल की अनपढ़, अहीर क़ौम की ग्वालिन कहलानेवाली गोपियों की चरण-रज प्राप्त करने की इच्छा त्रिदेवादि देव भी रखते हैं, परन्तु प्राप्त नहीं कर पाए। अब भी उनकी चरण-रज के इच्छित होकर भटक रहे हैं ।

स. ४४-किनके प्रेम के रहस्य को समझकर, किसने और कैसी अनुभूति की?

स.४५- किसने और कहाँ रास लीला को दूसरा दिन कहा है? पुनः पहले दिन की लीला कौनसी है?

स. ४६-पहले दिन की लीला कहाँ और कितने दिन तक हुई? पुनः वह किस-किस की लीला है?

ज. ४६- पहले दिन की लीला कालमाया के ब्रह्माण्ड के मृत्युलोक के →

स. ४७-दूसरे दिन की लीला कहाँ हुई? इन दोनों लीलाओं में कुछ अन्तर है या नहीं? यदि है, तो क्या?

ज. ४७- पहले दिन में खेली गई व्रज लीला के उपरान्त ब्रह्मात्माओं ने रास लीला में पदार्पण किया। रास लीला को ही दूसरे दिन की लीला कहा गया है। यह लीला बेहद में स्थित केवल ब्रह्म की स्वामिनी के मन अंतःकरण में योगमाया का ब्रह्माण्ड रचाकर →

स. ४८-वह कौनसी लीला है, जिसका वर्णन सुनने की शक्ति त्रिदेवा आदि देवों में भी नहीं है?

ज. ४८- दूसरे दिन में ब्रह्मात्माओं और ब्रह्म स्वरूप श्री कृष्णजी द्वारा खेली गई रास रमण की किशोर लीला का वर्णन सुनने की शक्ति →

स. ४९-किस-किसने, किस-किस लीला के आनन्द की अनुभूति करने की इच्छा की? पुनः क्यों नहीं कर सके?

ज. ४९- व्रज एवम् रास लीलाओं द्वारा प्राप्त होनेवाले आनन्द की अनुभूति →

ज. ४४- उक्त गोपियों के प्रेममय रहस्यों-गुह्यतम भेदों को समझकर सुन्दरसाथ ने ब्रह्मानन्द की अनुभूति की।

ज. ४५- मुहम्मद साहेब ने अपने सद्धर्मग्रन्थ कुरान में रास लीला को दूसरे दिन की लीला करके स्पष्ट कहा है। अतः पहले दिन की लीला है-ग्यारह वर्ष बावन दिन की व्रज लीला।

→ बयालीस पुरा-व्रजमण्डल में हुई। यह लीला ग्यारह वर्ष बावन दिन की थी तथा अक्षरातीत श्री कृष्ण और गोपियों के बीच खेली गयी थी, जिसके विषय में कहा है-*"गोपी कृष्ण अनादि एक हैं, जल तरंग ज्यों वारी।"*

→ रमी गयी थी। यह लीला एक लम्बी रात्रि में रमी गयी थी। यह लीला भी उन्हीं गोपियों और श्री कृष्ण द्वारा रमी गयी थी। उक्त उभय लीलाओं में अन्तर है। व्रज लीला हद में कालमाया का ब्रह्माण्ड रचाकर की हुई श्री कृष्ण की बाल लीला है। पुनः रास बेहद में योगमाया का ब्रह्माण्ड रचाकर की हुई श्री कृष्ण की किशोर लीला है। उक्त दोनों लीलाओं में से व्रज की लीला दिन और रात्रि में खेली गई लीला है तथा अखण्ड रासमण्डल की लीला एक लम्बी रात्रि मात्र में खेली गई लीला है।

→ त्रिदेवा आदि देवों में भी नहीं है क्योंकि त्रिदेवा आदि देव त्रिगुणात्मक मायावी विकारयुक्त हैं। अतः माया और त्रिगुणातीत प्रेमस्वरूप ब्रह्म की प्रेममय अथवा आत्मीय लीला होने के कारण ही ऐसा कहा है।

→ करने की इच्छा-चाह सबने अर्थात् त्रिगुणादि देवों, ऋषि-महर्षियों तथा मानवों एवम् दानवों ने भी की, किन्तु उक्त वर्णित लीलाएँ आत्मीय और प्रेममयी तथा ब्रह्मलीलाएँ होने के कारण इस लीला को उक्त जन प्राप्त नहीं कर सके।

स. ५०-अनेकों उपाय करने के बाद भी रास रात्रि को प्राप्त न कर सकने का कारण क्या है?

स. ५१-रास लीला का रहस्य क्या है? आज तक उस रहस्यमयी लीला के विषय में मात्र अटकलें ही क्यों लगायी जाती रहीं?

ज. ५१- "रास लीला, जिस लंबी रात्रि में खेली गई, वह रात्रि कौनसी →

स. ५२-व्रज से रास में आए। पुनः रास लीला के पश्चात् वे स्वरूप कहाँ गए?

ज. ५२- श्री कृष्णजी के स्वरूप में अक्षरातीत के हुकम की जो शक्ति →

स. ५३-रास रमण करानेवाले स्वरूप अरब देश में क्यों और किसके लिये आये?

ज. ५३- रास रमण करानेवाले स्वरूप अरब देश में ब्रह्मात्माओं की →

स. ५४-तीसरा दिन कौनसा है? उस दिन की लीला कैसी है और कितने वर्ष की है?

ज. ५४- अरब देश के कुरेशी जाति में प्रकट, मुहम्मद नाम से प्रसिद्ध मुहम्मद साहेब के तिरसठ साल के जीवनकाल को ही तीसरा दिन कहा →

स. ५५-अरब में आनेवाले स्वरूप खुदा के अर्श से आनेवालों के लिए क्या लेकर आये और क्या जाहिर किया?

ज. ५५- अरब में आनेवाले स्वरूप खुदा से मिलकर खुदा के अर्श-अक्षरातीत ब्रह्मधाम से आनेवाली ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के लिए →

ज. ५०- अनेकों उपाय करने के बाद भी रास रात्रि को प्राप्त न कर सकने का कारण यह है कि प्राप्त करने की चाहना रखनेवाले इच्छुक जन हद्द के हैं तथा यह लीला बेहद्द में अखण्ड है।

→ है?"-यही रास लीला का रहस्य है। इस विषय को संसार के विद्वानों ने अनुमान (अटकल) द्वारा ढूँढ़ना चाहा, किन्तु उनके हाथ कुछ नहीं लगा क्योंकि ब्रह्मसृष्टियों के बिना अन्य कोई भी इस ब्रह्मलीला के रहस्य को समझ सकने का सामर्थ्य नहीं रखता। यह अन्य सबके सामर्थ्य से परे की बात है।

विद्यमान थी, जिस शक्ति ने रास रमण कराया था, वही शक्ति जागनी के ब्रह्माण्ड के आरम्भ में मुहम्मद साहेब के रूप में अरब देश के कुरेशी जाति में प्रकट हुई।

→ मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए आए थे। वे ब्रह्मात्माओं के आने से ग्यारह सौ वर्ष पूर्व ही ब्रह्मात्माओं के लिए कुरान के रूप में ब्रह्मवाणीरूपी प्रत्यक्ष साक्षी लेकर आये थे।

→ है। उन्होंने अरब में प्रकट होकर ब्रह्मवाणी को सत्य साबित करने के लिए अनेक चमत्कार दिखाये। उन्होंने ग्यारह सौ साल पूर्व ही कुरान में ब्रह्मात्माओं के अवतरण का वर्णन कर दिया था। किन्तु उनके एक शब्द का भी अर्थ कोई समझ नहीं पाया ।

→ नब्बे हजार हरफ सुनकर आये। उन्होंने खुदा-परमात्मा अर्श-ब्रह्मधाम में हैं, वे उनसे मिलकर आये हैं और स्वयं खुदा-ब्रह्म ने उन्हें वचन दिया है कि वे आखर के वक्त, कयामत के समय आयेंगे आदि विषयों को संसार में जाहिर कर दिया।

स. ५६-कुरान में लिखी हुई बातें कुरान और हदीसे पढ़नेवालों को भी क्यों समझ में नहीं आयी?

ज. ५६- कुरान में लिखी हुई बातें कुरान और हदीसे पढ़नेवालों को भी इसलिए समझ में नहीं आयी क्योंकि कुरान नूर परे नूर तजल्लाह →

स. ५७-चौथे दिन में कौन आये, कहाँ से आये और क्यों आये?

ज. ५७- चौथे दिन में अक्षरातीत धाम से श्री श्यामाजी अवतार श्रीमन्निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी प्रकट हुये। वे इस संसार →

स. ५८-निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी के समय में ब्रह्मात्माओं ने क्या समझने का प्रयास नहीं किया?

स. ५९-उक्त कहे प्रमाण प्रयास न करने का प्रतिफल उन्हें क्या मिला?

ज. ५९- उक्त प्रकार सद्गुरु स्वरूप के जीवनकाल में ब्रह्मात्माओं द्वारा →

स. ६०-अद्वैत ब्रह्म परमात्मा के आनन्दावतार कौन हैं? उनका ज्ञान कितने वर्ष तक छिपा रहा?

ज. ६०- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म के आनन्दावतार श्री श्यामाजी-सद्गुरु →

स. ६१-उनका दूसरा जामा कौन हैं? रूह अल्लाह के ज्ञान को रूहों-आत्माओं तक किसने पहुँचाया?

स. ६२-पाँचवाँ दिन कहाँ से, कहाँ तक है तथा इस दिन में क्या-क्या कार्य हुए?

ज. ६२- पाँचवाँ दिन महामति श्री प्राणनाथजी का जीवनकाल अथवा →

→ अर्थात् अक्षर परे अक्षरातीत धाम से आया है तथा उसे पढ़नेवाले नासूत और मलकूत के थे (हैं)। यसर्थ वे कुरान के वास्तविक अर्थों को समझ नहीं पाये। कुरान ब्रह्मात्माओं की चिट्ठी है। उसमें उनके ही घर की बातें लिखी हुई हैं। यसर्थ घरवाले ही घर से आई हुई चिट्ठी पढ़कर समझ सकते हैं, अन्य कोई नहीं।

→ में खेल देखने आई ब्रह्मात्माओं को अपने घर वापस ले जाने के लिए आये थे। उनका कहना था, *"हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम।"*

ज. ५८- चौथे स्वरूप श्रीमन्निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी चौथे दिन में आए। उनके जीवनकाल में श्री परमधाम की ब्रह्मात्माओं ने परमात्मा श्री राजजी को जानने के लिए विवेकमय प्रयास नहीं किया।

→ विचार-विवेकवत् ध्यान न देने के परिणाम स्वरूप सद्गुरु द्वारा जागृत की गई तारतम प्राप्त तीन सौ तेरह ब्रह्मात्माएँ पुनः माया में भ्रमित हो गयीं। उन्हें पुनः दूसरी बार जागृत करने की आवश्यकता पड़ गयी।

→ श्री देवचन्द्रजी अथवा रूह अल्लाह स्वरूप हैं। उनकी अवतरण लीला का ज्ञान एक सौ वर्ष (वि. सं.१६३८ से १७३८) तक छिपा रहा अर्थात् जीवों में जाहिर नहीं हो सका।

ज. ६१- रूह अल्लाह का दूसरा जामा स्वामी श्री प्राणनाथजी हैं। रूह अल्लाह के ज्ञान को इमाम मेहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने रूहों-आत्माओं तक पहुँचाया।

→ इमाम मेहदी स्वरूप के नेतृत्व का दिन है। पाँचवें दिन में श्रीजी ने कयामत अर्थात् आत्म-जागृति के फर्दाए रोज-कल के दिन का रहस्य समझने का द्वार खोल दिया।

स. ६३-श्रीजी साहेबजी स्वरूप वेद-कतेब ग्रन्थाधार कौन-कौन स्वरूप हैं तथा उन्होंने कौनसा दरवाजा खोल दिया?

ज. ६३- श्रीजी साहेबजी वेद-कतेब ग्रन्थाधार निष्कलंकावतार-श्री राजजी

स. ६४-रसूल के तीन स्वरूप कहाँ आए, किस लिए आए तथा वे कौन-कौन हैं? पुनः उन्होंने क्या-क्या कार्य किये?

ज. ६४- अक्षरातीत-नूर तजल्लाह से आये हुए रसूल साहेब के उन तीनों स्वरूपों की पहचान करो, जिन्होंने बारह हजार ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के लिए बहुत-से कार्य किये। इन तीन स्वरूपों में से बसरी स्वरूप ने अरब में आकर ब्रह्म-खुदा के ब्रह्मधाम-अर्श अजीम का लक्ष्य तथा ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के अवतरण की साक्षी

स. ६५-लोगों को पहचान हो जाय, इस ध्येय से इन तीनों स्वरूपों ने क्या-क्या चमत्कार किये?

ज. ६५- उक्त तीनों स्वरूपों में से बसरी स्वरूप के प्रकटीकरण की रात को -

रसूल आए जिन बखत, कंगूरा गिरा बुतखाने का।
तब लोगों कह्या रसूल का, जाहेर होने का माजजा ।।

- (श्री खुलासा, प्र. २ / चौ. ३५) ।

अर्थात् एक चमत्कार हुआ। पुनः उन्होंने अर्श पहुँचकर कलमा

स. ६६-छठाँ दिन कौनसा है? पुनः कुरान धर्मग्रंथ में छट्ठे दिन में क्या होने को कहा है?

ज. ६६- सद्धर्मग्रन्थ कुरान में जागनी के ब्रह्माण्ड में ब्रह्मसृष्टियों के जागकर एकत्रित-इकट्ठे होने के समय को ही छठाँ दिन कहा है।

→ के पाँचवें स्वरूप, विजयाभिनन्द बुद्धनिष्कलंकावतार, इमाम मेहदी, आखर जमाने के खाविंद, अतः उभय पक्ष के अद्वैत महामति श्री प्राणनाथजी हैं। उन्होंने फर्दाए रोज कयामत के दिन खुलनेवाले रहस्यों को समझने का द्वार खोल दिया।

→ रखी और शरीअत का मार्ग चलाया। मलकी स्वरूप मारवाड़ में प्रकट हुए। वे ब्रह्मतत्त्व ढूँढ़ते-ढूँढ़ते हल्लार देश जामनगर आए और वहाँ तारतम महामंत्ररूपी माल प्राप्त किया। हकी स्वरूप ने सिंध देश में आकर धाम की ब्रह्मात्माओं को ढूँढ़ निकाला तथा सारी दुनिया को आठ प्रकार की मुक्ति प्रदान की। ब्रह्मात्माओं के लिए उन्होंने तारतम वाणी प्रकट की और सबके आगे अखण्ड ब्रह्म और ब्रह्मधाम को जाहिर किया। जग्जीवों को भी अखण्ड में पहुँचाया। ब्रह्म और ईश्वरी आत्माओं को उनके अपने-अपने धाम के प्रत्यक्ष धामधनी प्राप्त करा दिये।

→ उतारा। इंसानों को अपनी पहचान कराने के लिए कई करामात (चमत्कार) किये। परन्तु एक भी इंसान उनकी पहचान न कर सका। मलकी स्वरूप ने भी अपने स्वरूप की पहचान कराने के लिए संसार में कई उपाय किये। दो चोपदारों में से एक को कुएँ पर फिराया, तो दूसरे को बारह कोस चलाया । हकी स्वरूप ने तो वेद, पुराण, कुरान, हदीसों के गुह्यातिगुह्य, गोप्यातिगोप्य रहस्यमय संकेतों को खोलकर स्पष्ट कर दिया। तब भी चमड़ी की दृष्टि रखनेवाले उनकी पहचान कर अपना आत्मोद्धार-अपनी आत्मा का उत्थान नहीं कर सके। पतन ही कर डाले।

→ पुनः धर्मग्रन्थ कुरान में छट्ठे दिन में सृष्टि के शुरू से लेकर आज तक ढूँढ़ने पर भी जो ब्रह्म-खुदा नहीं मिले थे, उन ब्रह्म-खुदा के अर्श-घर सहित उनकी आद-अनाद लीलाओं को भी जाहिर होने को कहा है। जैसे *"तब जाहिर होवे अरश"*।

स. ६७-श्री राजजी के जोश-जबराईल द्वारा की हुई भविष्यवाणी के अनुसार क्या प्रकट हुआ?

ज. ६७- उक्त प्रकार छट्ठे दिन में अनेक ब्रह्मात्माएँ-सुन्दरसाथ समुदाय में →

स. ६८-पाँचों ही दिनों की चमत्कारपूर्ण लीलाएँ कौन देखेंगे अथवा इसके वारिसदार कौन हैं?

स. ६९-पाँचों ही दिनों की चमत्कारी लीलाओं के वारिसदार मोमिन ही क्यों हैं?

ज. ६९- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म परमात्मा ने सृष्टि रचायी । शास्त्रों में लिखवाया और उन ब्रह्मात्माओं के लिए स्वयं पाँच स्वरूप में →

स. ७०-अक्षरातीत की ब्रह्मात्माओं को जागृत करने के लिए श्री प्राणनाथजी ने क्या किया?

स. ७१-तारतम के ब्रह्मज्ञान को सर्वप्रथम ग्रहण करने में किसका नाम है?

ज. ७१- अक्षरातीत के तारतम सम्बन्धी ब्रह्मज्ञान को उसी धाम की ब्रह्मात्माएँ ही समझेंगी और ग्रहण भी करेंगी क्योंकि यह ज्ञान →

स. ७२-मुहम्मद साहेब के समय में हुये चमत्कार के रहस्यों-बातुनी भेदों को कौन जानते हैं?

स. ७३-सांसारिक मायावी जीवों अथवा आम लोगों ने अरब में मुहम्मद साहेब को किस रूप में जाना?

→ सम्मिलित हुईं। उन आत्माओं के लिए ही श्री राजजी के आवेश जबराईल द्वारा प्रकट हुई भविष्यवाणी के अनुसार सारा कार्य संपन्न हुआ। अर्श की सारी दैवत चार किताबों के माध्यम से उतर आयी।

ज. ६८- कुरान धर्मग्रन्थ में कहे अनुसार पाँचों ही दिनों की चमत्कारपूर्ण लीलाएँ ब्रह्मसृष्टि-मोमिन देखने और समझनेवाले हैं। इन लीलाओं के वारिसदार भी वे मोमिन-ब्रह्मात्माएँ ही हैं।

→ होकर उन्हें अपने पास में लेकर लीला की। अतः ब्रह्मात्माओं के साथ उन ब्रह्म-परमात्मा द्वारा की हुई लीलाओं के वारिसदार स्वयं ब्रह्मात्माओं के बिना अन्य कौन हो सकता है? जैसे पिता की संपूर्ण सम्पदा का वारिसदार उनका बेटा ही होता है। उसी तरह ब्रह्मवाणी में निहित ज्ञान ब्रह्मसृष्टि की सम्पत्ति है। अतः वह सारी पूँजी-सम्पदा ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को मिली।

ज. ७०- अक्षरातीत की ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं को जागृत करने के लिए महामति श्री प्राणनाथजी ने ब्रह्मज्ञान रूप अठारह हजार वाणी प्रकट की, जिसके अन्दर सारा ज्ञान है।

→ सुनते ही उन्हें अपने घर की सभी बातें तुरन्त समझ में आ जायेंगी। उनके बाद ईश्वरी आत्माएँ लेंगी तथा उनके भी बाद जीवात्माएँ वह ज्ञान धीरे-धीरे समझकर लेते जायेंगी। अन्त में सृष्टि की जितनी भी आत्माएँ हैं, उन सबको यह ज्ञान लेना ही पड़ेगा और वे लेंगे भी।

ज. ७२- मुहम्मद साहेब के समय में जितने भी चमत्कार हुये, उन सबके बातुनी भेद इसलाम का रहस्य जाननेवाली एक मात्र ब्रह्मात्माएँ-मोमिन रूहें ही जान पायेंगी ।

ज. ७३- सांसारिक मायावी जीवों अथवा आम लोगों ने अरब में मुहम्मद साहेब के सांसारिक रूप एवम् उनके चमत्कारों को बाह्य चमड़ी की दृष्टि से ही देखा और जाना।

स. ७४-किन-कैसे लोगों ने, उन्हें कष्ट पहुँचाने के लिए क्या-क्या उपाय किये?

स. ७५-उन उपद्रवी लोगों का सिर फोड़कर मुहम्मद साहेब ने अरब देश में क्या किया?

स. ७६-किनसे साधारण मनुष्य जैसी भावना लेकर मिले, वे स्वरूप भी उन लोगों से उसी भावनानुसार मिले?

स. ७७-किसने और कैसे लोगों को ऊपरी रूप से तो कसौटी पर कसा, परन्तु अन्दर से क्या किया?

स. ७८-यहाँ कौनसे मुहम्मद को, किसके रूप में, क्या मिला?

स. ७९-कोई भी, किनके नेतृत्व को नहीं समझ सके?

ज. ७९- शराअ के लोगों में से कोई भी "मुहम्मद का नेतृत्व यहाँ इमाम →

स. ८०-अरब के मुहम्मद स्वरूप पुनः कहाँ आकर विराजे? किसने और किसे पहचाने बिना ही ठुकरा दिया?

ज. ८०- सांकेतिक रूप में कही हुई भविष्यवाणी के अनुसार अरब के →

स. ८१-अहंकार के वशीभूत हुए कौन लोग इमाम मेहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी से लड़ने के लिए खड़े हो गये?

ज. ८१- इमाम मेहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने दिल्ली में शराअ के लोगों →

ज. ७४- मुहम्मद साहेब के अवज्ञाकारी-सत विरोधी लोगों ने उन्हें कष्ट पहुँचाने के लिए अकारण ही कई उपद्रव मचाये तथा उनके दिव्य संदेश को भी ठुकरा दिया।

ज. ७५- उन उपद्रवी लोगों का सिर फोड़कर मुहम्मद साहेब ने उनके अभिमान को नष्ट कर दिया और इसलाम धर्म का जाहिरी रूप अर्थात् शरीअत का मार्ग प्रकट किया।

ज. ७६- इमाम मेहदी निष्कलंक बुद्ध स्वरूप से जो जैसी भावना लेकर मिले, वे स्वरूप भी उन लोगों से उसी प्रकार मिले।

ज. ७७- इमाम मेहदी स्वरूप ने अपने पर विश्वास न करनेवाले लोगों को जाहिरी रूप से तो कसौटी पर कसा, परन्तु अन्दर से उन पर अपनी कृपा-दृष्टि बनाए रखी।

ज. ७८- यहाँ अव्वल के मुहम्मद को इमाम मेहदी के रूप में उनके द्वारा कहे भविष्य की सिद्धी मिली।

→ मेहदी के रूप में हो रहा है"- इस बात को समझ नहीं सके। इसीलिए जिन अवज्ञाकारियों को उन स्वरूप पर विश्वास नहीं हुआ, वे उलटे उनसे लड़ने के लिए सामने खड़े हो गये।

→ मुहम्मद स्वरूप यहाँ इमाम मेहदी के रूप में आकर विराजे हैं। इस रहस्यमय बात को समझे बिना ही शराअ के लोगों ने उनका पैगाम ठुकरा दिया तथा कुरान और मुहम्मद के विमुख हो गए।

→ को पैगाम भेजा। उस समय अहंकार के वशीभूत होकर बादशाह और काज़ियों ने उनके पैगाम को ठुकरा दिया और उनसे लड़ने के लिए खड़े हो गये।

स. ८२-खुदा-परमात्मा की प्रेरणा से किसे और कैसी सुगन्ध मिली, जिससे वे उनके अनुयायी बन गये?

स. ८३-किन लोगों के वंशजों में, किसके प्रति और कैसी उन्नति (वृद्धि) होती गयी?

स. ८४-उपरोक्त प्रकार से किनके द्वारा चलाये हुए, किस धर्म के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ा तथा उसका प्रतिफल क्या हुआ?

स. ८५-कौन लोग जागृत होने पर अंत तक मुहम्मद साहेब के आखरी स्वरूप के लिए धर्मविरोधी दज्जालों से संघर्ष करते रहे?

स. ८६-मुहम्मद साहेब के संसार से प्रस्थान के बाद कितने वर्षों तक इसलाम धर्म की वृद्धि होती रही?

स. ८७-मुहम्मद स्वरूप ने भविष्यवाणी में खुदा-परमात्मा और अपने लिए क्या कहा था?

स. ८८-मुहम्मद साहेब ने "मेरे तीन स्वरूप जागनी के ब्रह्माण्ड में आयेंगे, उन्हें पहचानना"- ऐसा किससे कहा था?

ज. ८८- अरबवाले मुहम्मद स्वरूप ने भविष्यवाणी करते समय अपने →

स. ८९-कुरान के सिद्धान्त विषय में मुहम्मद साहेब के तीन स्वरूपों की कार्य-विशेष पहचान क्या-क्या है?

ज. ८९- कुरान के सिद्धान्त के अनुसार मुहम्मद साहेब (श्यामाजी) के →

ज. ८२- अक्षरातीत परमात्मा की प्रेरणा से जिन-जिन लोगों को इसलाम के यथार्थ रूप-निजानन्द धर्म की सुगन्ध मिली, जिससे वे लोग उनके अनुयायी बन गये।

ज. ८३- जिन लोगों को इसलाम के यथार्थ रूप-निजानन्द धर्म की सुगन्ध मिली, उन लोगों के वंशजों में धर्म के प्रति दृढ़तापूर्ण विश्वास की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी।

ज. ८४- उपरोक्त प्रकार से निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी द्वारा चलाये हुए निजानन्द सैद्धान्तिक धर्म के प्रति लोगों का विश्वास दिन दूना रात चौगुना बढ़ता गया। फलस्वरूप सामान्य लोग भी श्रीमन्निजानन्द धर्म के अनुयायी बन गये।

ज. ८५- उक्त प्रकार जब सामान्य लोगों की धार्मिक भावनाएँ जागृत होने लगी, तब वे मुहम्मद साहेब के इमाम मेहदी स्वरूप के लिए अवज्ञाकारी धर्मविरोधी दज्जालों से अंत तक पूर्ण विश्वास के साथ बारम्बार संघर्ष करते रहे।

ज. ८६- अरब के मुहम्मद साहेब के संसार से प्रस्थान करने के उपरान्त ग्यारह सौ वर्षों तक इसलाम धर्म की वृद्धि होती रही।

ज. ८७- अव्वल के मुहम्मद स्वरूप ने भविष्यवाणी में कहा था, "जब परमात्मा के आवेश स्वरूप पुनः संसार में आएँगे, तब हम भी उनके साथ आयेंगे। इस बात में कोई शंका नहीं है।"

→ शिष्यों से यह भी कहा था, "मेरे (श्यामाजी के) तीन स्वरूप इस संसार-जागनी के ब्रह्माण्ड में प्रकट होंगे। आप लोग उनकी पहचान कर लेना।"

→ तीन स्वरूपों में से बसरी स्वरूप शराअ देनेवाले हैं। मलकी स्वरूप ज्ञान के हकीकत की जानकारी लाकर माल अर्थात् तारतम लानेवाले हैं तथा हकी स्वरूप रूहों को परमात्मा से मिलाकर मारफत में लानेवाले हैं।

स. १०-कौनसे तीन स्वरूप कहाँ पहुँच गये, जहाँ फरिश्ते और संसार के अन्य जीव तक नहीं पहुँच पाये?

ज. १०- उक्त तीन स्वरूप अर्थात् बसरी, मलकी और हकी स्वरूप ऐसी →

स. ११-कौन, किनकी पहचान कर विश्वास करने को कह रहे हैं?

ज. ११- "अरे हो! अक्षरातीत परमधाम के ऐसे स्वरूप की पहचान कर →

स. १२-अर्श की रूहों के विषय में मुहम्मद साहेब ने कुरान धर्मग्रन्थ में क्या कहा है?

स. १३-स्वयं मुहम्मद साहेब संसार में किनके लिए आने को कहते हैं और लोगों से किनके दर्शन की आशा रखने को कहते हैं?

स. १४-खुदा-ब्रह्म का आदेशरूपी धर्मग्रन्थ कौनसा है और वह किसके लिए अवतरित हुआ है?

स. १५-कौन स्वरूप कहते हैं कि कुरान के वचनों को मेरे मन के अतिरिक्त अन्य कोई ग्रहण नहीं कर सकते?

स. १६-उक्त कथन में कहे प्रमाण कुरान के ब्रह्मज्ञान को मोमिनों के सिवाय अन्य कोई पहचान नहीं सकेंगे, ऐसा क्यों?

स. १७-किसका धाम में अंकुर है? पुनः सद्गुरु ने किसे पूर्णब्रह्म के प्रति पूर्ण विश्वास प्रदान किया?

→ जगह पर अर्थात् परात्पर पूर्णब्रह्म परमात्मा के इतने समीप जा पहुँचे कि जहाँ पर ईश्वरी सृष्टि और संसार के अन्य मुर्शिद-धर्मगुरु आदि भी नहीं पहुँच पाये।

→ उन पर पूर्णरूपेण विश्वास करना।"- इस प्रकार अरब के तृतीय श्याम स्वरूप अपने धर्मानुयायी लोगों को सावचेत करते हुए कह रहे हैं।

ज. ९२- रसूल मुहम्मद साहेब ने अर्श की रूहों के विषय में धर्मग्रन्थ कुरान में कहा है, "पूर्णब्रह्म परमात्मा की रूहें उस अक्षरातीत धाम से खेल देखने के लिए संसार में अवतरित होंगी।"

ज. ९३- स्वयं मुहम्मद साहेब इस संसार में अर्श रूहों के लिए पुनः आने को कहते हैं और लोगों से ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के दर्शनों की आशा रखने और उनके साथ-साथ स्वयं उनकी अपनी पहचान कर लेने को कहते हैं।

ज. ९४- खुदा-ब्रह्म का आदेशरूपी धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ़ है। वह इस संसार में ब्रह्मात्माओं के लिए ही अवतरित हुआ है।

ज. ९५- इमाम मेहदी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी कहते हैं, "कुरान धर्मग्रन्थ के उन वचनों को ब्रह्मज्ञान से प्रकाशित मेरे मन के अतिरिक्त और कोई नहीं ग्रहण कर सकता।"

ज. ९६- उक्त कथन में कहे प्रमाण कुरान के ब्रह्मज्ञान को मात्र मोमिन रूहें-ब्रह्मात्माएँ ही पहचान सकेंगी। अन्य जीवों में तो इतनी शक्ति ही नहीं है कि वे इसे समझ सकें।

ज. ९७- अक्षरातीत ब्रह्मधाम से अवतरित ब्रह्मात्माओं का परमधाम में अंकुर विद्यमान है और संसार में मात्र उनके ही मन में सद्गुरु ने पूर्णब्रह्म के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास प्रदान किया है।

स. ९८- कुरान के भेदों को कौन समझेंगे और कौन उसके अन्दर के प्रसंगों को समझ नहीं सकेंगे?

स. ९९- धर्मग्रन्थ कुरान पर अन्य कौन विश्वास कर ही नहीं सकते? पुनः उन्हें धाम के अंकुररहित क्यों कहा है?

स.१००- कुरान में निहित ज्ञान की हकीकत और मारफत ज्ञान के रहस्यों को किसने, किसके लिए भलीभाँति स्पष्ट कर दिया?

स.१०१- किनके सर्वसम्मत सदुपदेशों को सुनकर और उनके स्वरूप का दर्शन कर कौन चकित होंगे?

स.१०२- कौन श्रीजी स्वरूप की पहचान न कर सकने से उस खुदा-ब्रह्म और उनके धाम को नहीं पा सकेंगे?

स.१०३- कयामत के सात निशान का वर्णन कुरान में किस प्रकार है?

ज.१०३- कुरान धर्मग्रन्थ में कयामत के समय प्रकट होनेवाले सात →

स.१०४- उन सात निशानों के रहस्यों को कौन समझ सकेंगे और प्रत्यक्ष नजरों से देख भी सकेंगे?

स.१०५- कुरान-पुराण, वेद-कतेब के रहस्यों को खोलने के लिए कौन और क्या लेकर संसार में आये?

ज.१०५- कुरान-पुराण, वेद-कतेब तथा अन्य धर्मग्रन्थों के रहस्यों को →

ज. ९८- कुरान के अन्दर के भेदों को मात्र ब्रह्मात्माएँ ही जान अथवा समझ सकेंगी। ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों के अतिरिक्त अन्य कोई भी कुरान के अन्दर के प्रसंगों को समझ नहीं पाएगा।

ज. ९९- धर्मग्रन्थ कुरान पर मोमिनों के अलावा अन्य कोई विश्वास कर ही नहीं सकते। कुरान के ज्ञान पर श्रद्धा-विश्वास न आने पर ही उन्हें धाम के अंकुररहित कहा है।

ज.१००- ब्रह्मात्माओं के लिए ही कुरान में निहित ज्ञान की हकीकत एवम् परब्रह्म की पहचान अर्थात् मारफत ज्ञान के रहस्य को श्रीजी साहेबजी ने भलीभाँति स्पष्ट कर दिया।

ज.१०१- संसार के लोग श्रीजी के सर्वसम्मत सदुपदेशों को सुनकर उनके स्वरूप के दर्शन कर चकित होंगे।

ज.१०२- सांसारिक लोग-धर्म विरोधी, अवज्ञाकारी जन श्रीजी के स्वरूप की पहचान न कर पाने के कारण पालनहार सर्वेश्वर परमात्मा और उनके धाम को नहीं पा सकेंगे।

→ निशानों का वर्णन सांकेतिक रूप में किया गया है। वे सात निशान बातुनी हैं, किंतु उन्हें लोग जाहिरी रूप में ढूँढ़ते अथवा देखना चाहते हैं।

ज.१०४- उन सातों निशानों के रहस्य को समझकर उन घटनाओं को प्रत्यक्ष रूप में वे ही देख और समझ सकेंगे, जिनके दिल तारतम ज्ञान से प्रकाशित तथा निःशंक हैं।

→ स्पष्ट रूप से खोलने के लिए ईसा-रूह अल्लाह-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी कुंजी के रूप में संसार में ब्रह्मतारक तारतम मंत्र-तारतम ज्ञान लेकर आये।

स.१०६- उन स्वरूप की पहचान किसे हुई तथा पहचान होने पर उन्होंने क्या किया?

ज.१०६- उन ईसा-रूह अल्लाह-सद्गुरु स्वरूप श्री श्यामाजी अवतार →

स.१०७- हजरत मुहम्मद साहेब के जाने के कितने समय बाद सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी आये?

ज.१०७- अरबस्तान में प्रकट हजरत मुहम्मद साहेब के जाने के बाद →

स.१०८- पुनः सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी स्वरूप संसार के बीच कितने समय रहे तथा उन्होंने क्या-क्या किया?

ज.१०८- रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी इस संसार के पंचभौतिक तन में चौहत्तर वर्ष रहे। उन्होंने पाँच वर्ष →

स.१०९- किनके दिव्य स्वरूप को प्रत्यक्ष देखने पर भी लोग उन्हें पहचान नहीं पाए? ऐसा क्यों?

ज.१०९- रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के दिव्य स्वरूप को प्रत्यक्ष देखने पर भी लोग उन्हें पहचान नहीं →

स.११०- रूह अल्लाह स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने इस धरती पर क्या-क्या चमत्कार किये?

ज.११०- रूह अल्लाह स्वरूप सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के दिव्य स्वरूप →

स.१११- उन्होंने संसार को क्या दिया?

स.११२- सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी इस संसार में अवतरित होते समय अपने साथ किसे लेकर आये?

ज.११२- श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी श्री अक्षरातीत →

→ के दिव्य स्वरूप की पहचान ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को हुई। पहचान हो जाने पर उक्त ब्रह्मात्माएँ धर्म पर समर्पित होकर सुन्दरसाथ समुदाय में शामिल हुई।

→ दसवीं सदी पूरी होने में सवा नौ वर्ष अवशेष थे, तब श्रीमन्निजानन्द स्वामी श्री देवचन्द्रजी मारवाड़ देश के उमरकोट गाँव में प्रकट हुये।

→ की अवस्था से वेद, पुराण, शास्त्रों द्वारा खोज करके सार निकाला, तारतम कुंजी उतारी। तारतम कुंजी द्वारा ३१३ आत्माओं की जागनी की और अंत में इन्द्रावती आत्मा को सब कुछ सौंप दिया।

→ सके क्योंकि बाइबल ग्रन्थ में पहले ही कहा था, "जब ईसा (रूह अल्लाह) आयेंगे, तब उनके मुँह पर पर्दा होगा। इसलिए उन्हें कोई पहचान नहीं सकेगा।" अतः वही भविष्य यहाँ साकार हुआ। उक्त स्वरूप ने अनेकों चमत्कारों द्वारा अपना परिचय दिया, परन्तु सब व्यर्थ हुआ।

→ के प्रताप से इस धरती पर अनेक चमत्कार हुये। जैसे-मूर्ति द्वारा दूध पीना, प्रेतों का स्वरूप बदलकर ऊर्ध्व गति को प्राप्त करना। पुनः चोपदारों का रातभर कुएँ के चारों ओर फिरना और बारह कोस आगे निकल जाना आदि-आदि।

ज.१११- उन्होंने संसार को अद्वैत ब्रह्मज्ञान प्रदान किया। इतना ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने पर भी लोग उन्हें नहीं पहचान सके।

→ धाम से खेल में अवतरित होते समय अपने साथ बारह हजार ब्रह्मात्माओं को लेकर आये अर्थात् उनके साथ धाम से बारह हजार ब्रह्माङ्गनाएँ भी खेल में अवतरित हुईं।

स.११३- उनके साथ मायावी बुद्धिवाले कब से, कब तक संघर्ष करते रहे?

स.११४- दज्जालों द्वारा श्री देवचन्द्रजी से डरने और उनसे संघर्ष करने का क्या कारण है?

ज.११४- श्री देवचन्द्रजी तारतमरूपी ब्रह्मज्ञान लेकर आये हैं। अतः →

स.११५- रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी की शक्ति श्री देवचन्द्रजी के जीवनकाल के पश्चात् कहाँ गयी?

स.११६- अवज्ञाकारी दज्जालों ने अंत में क्या समझ लिया और वह समझ उन दज्जालों को कब आई?

ज.११६- उक्त प्रकार को देखकर दज्जालों ने समझ लिया कि बुद्धि के →

स.११७- उक्त दज्जाल कब और कैसी भावनाओं से ग्रस्त होकर श्रीजी स्वरूप से लड़ने और संघर्ष करने को तैयार हुए?

स.११८- उक्त दज्जाल किसके विषय में, क्या विचार कर श्रीजी स्वरूप के विरुद्ध खड़े हुए?

ज.११८- उक्त दज्जालों ने विचार किया कि ये स्वरूप मेरे अधीन होकर →

स.११९- "अरे! इन स्वरूप के आगे तो मेरा कुछ भी जोर नहीं चलता !!"- ऐसा कौन सोच रहा है?

ज.११३- श्री श्यामाजी अवतार-सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी के साथ दज्जाल स्वरूप धर्म विरोधी अवज्ञाकारी लोग वि. सं. १९३८ से लेकर कयामत के समय तक संघर्ष करते रहे और रहेंगे।

→ दज्जाल स्वरूप भयभीत हो उठे कि "ये स्वरूप कयामत के दिन मुझे मार डालेंगे।" इस कार्य-कारणवश दज्जाल भयभीत होकर उनसे संघर्ष करते ही रहे।

ज.११५- रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी की शक्ति श्री देवचन्द्रजी के जीवनकाल के पश्चात् दूसरे जामे में अर्थात् श्री मेहराज ठाकुर अथवा इमाम के स्वरूप में प्रविष्ट हुई।

→ अवतार इन स्वरूप का उद्देश्य ही मुझ अज्ञानरूपी दज्जाल को मार डालना है। यह समझ उन दज्जालों को तब आई, जब श्री देवचन्द्रजी की शक्ति श्री मेहराज ठाकुर में प्रविष्ट हुई।

ज.११७- जब दज्जालों को उक्त बातें समझ में आई, तब दज्जाल अज्ञानी, ईर्ष्यालु और विरोधी लोगों के मन में पैठकर श्रीजी साहेबजी स्वरूप से प्रत्यक्ष रूप में लड़ने के लिए तैयार हो गए।

→ माया में भ्रमित हुई ब्रह्मात्माओं को ज्ञान प्रदान कर मेरे चंगुल से मुक्त कर परमात्मा के निकट-चरणों में पहुँचा रहे हैं। अतः वे श्रीजी स्वरूप के विरुद्ध खड़े हो गये ।

ज.११९- "अरे! इन स्वरूप की दिव्यता के सामने तो मेरा बल एवम् मेरी शक्ति तुच्छ होती जा रही है और मैं कुछ भी नहीं कर पा रहा हूँ !!"- ऐसा दज्जाल स्वरूप इबलीस-मन सोच रहा है।

स.१२०- किसने और किसे असफल करने के लिए चार फौजें तैयार की?

स.१२१- दज्जालों द्वारा श्रीजी के विरोध में संघर्ष करने के लिए तैयार की गईं चार फौजें कौन-कौनसी हैं?

ज.१२१- दज्जालों द्वारा श्रीजी के विरोध में संघर्ष करने के लिए जो चार →

स.१२२- उक्त चार फौजें कैसे लोगों को भुलाने और किनके चरण छुड़ाने के लिए तैयार की गई हैं?

ज.१२२- उक्त चार फौजें धर्म मार्ग में अधकचरे-अधपक्के किंतु →

स.१२३- कौन लोग ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को देखते ही उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने की कोशिश करने लगते हैं?

स.१२४- उन दज्जालों की कला कैसे लोगों के प्रति काम करती है और किन पर उनका जोर नहीं चलता?

ज.१२४- उन दज्जालों की कला ब्रह्मज्ञान में अधूरे और अधपक्के लोगों →

स.१२५- श्रीजी साहेबजी में बैठकर किसका ज्ञान लेकर, कौन नरसिंघा फूँक रहा है?

स.१२६- धर्म के नाम पर फैली हुई थोथी मान्यताओं और असत्य धारणाओं का ध्वंस कब हुआ?

स.१२७- थोथी मान्यताओं और असत्य धारणाओं के उड़ जाने पर लोग श्रीजी के पास उनके दर्शनार्थ कैसे आये?

ज.१२०- दज्जाल स्वरूप अजाजील के पुत्र इबलीस ने श्रीजी स्वरूप की मेहनत को असफल करने और ब्रह्मात्माओं-मोमिनों को माया में भुलाने के लिए चार फौजें तैयार की।

→ फौजें तैयार की गई हैं, वे निम्नलिखित हैं। जैसे - १) बेईमान स्त्री २) बाजे बजानेवाले लोग ३) व्याकरणवादी विद्वान ४) चतुर जादूगर।

→ परमात्मा की सच्ची राह पर चलनेवालों को उलझा-उलझाकर पथभ्रष्ट करके परमात्मा के चरण छुड़वाकर माया की ओर लगाने के लिए तैयार की गई हैं।

ज.१२३- उक्त चार फौजें जहाँ कहीं भी ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों को देखती हैं, वहीं उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने की कोशिश करने लगती हैं।

→ के प्रति काम करती है। किन्तु जिन लोगों को परब्रह्म-परमात्मा के प्रति पूर्ण विश्वास है, वे इन फौजों के एक भी शब्द नहीं सुनते। इसीलिए उनकी ओर आकृष्ट नहीं हो पाते। इन पर उन दज्जालों का जोर नहीं चल पाता।

ज.१२५- श्रीजी साहेबजी में बैठकर बुद्धजी का ज्ञान लेकर असराफील-बुद्धि का फरिश्ता नरसिंघा फूँक रहा है।

ज.१२६- वि. सं. १७३५ (हि.स. १०९० तथा ई. स. १६७८) में धर्म के नाम पर फैली हुई थोथी मान्यताओं एवम् असत्य धारणाओं के पहाड़ का ध्वंस हो गया।

ज.१२७- उक्त प्रकार से थोथी, अधर्मवत् मान्यताओं और असत्य धारणाओं के ध्वंस होते ही जनसमूह श्रीजी के दिव्य स्वरूप के दीदार-दर्शन करने भाग-भागकर आने लगे।

स.१२८- अजाजीलरूपी दज्जाल ने अवज्ञाकारियों के अन्दर बैठकर क्या उत्पात मचाया?

स.१२९- उन दज्जालों के उत्पात का प्रभाव किस पर पड़ा और किस पर नहीं पड़ा तथा क्यों?

ज.१२९- उक्त वर्णित दज्जालों के उत्पात का प्रभाव परमधाम से →

स.१३०- असराफील के नरसिंघारूपी स्वर फूँकने के समय की भविष्यवाणी किसकी है और कहाँ हुई थी?

ज.१३०- अरब में प्रकटे अव्वल स्वरूप मुहम्मद साहेब ने "कयामत के →

स.१३१- परमात्मा और परमात्मा के अलौकिक सुखानन्द से लोगों को वंचित रखनेवाले दज्जाल कौन हैं?

स.१३२- ब्रह्मात्माओं को श्रीजी साहेबजी ने कैसे दज्जाल के मुख से निकाला और धाम में पहुँचाया?

स.१३३- श्री राजजी के आवेश-जोश ने तीनों ब्रह्माण्डों में ब्रह्मात्माओं की किस तरह रक्षा की और उन्हें पवित्र बनाये रखा?

ज.१३३- तीनों ब्रह्माण्डों में से श्री राजजी के आवेश स्वरूप जबराईल ने व्रज में अघासुर, बघासुर, कालिय नाग, कंस आदि असुरों →

स.१३४- वह जोश मोमिनों के दिल को हमेशा कैसे पवित्र रखता है?

ज.१३४- श्री राजजी का जोश-जबराईल ब्रह्मात्माओं के दिल में परब्रह्म →

ज.१२८- अजाजीलरूपी दज्जाल ने अवज्ञाकारी लोगों के मन में बैठकर आसुरी प्रवृत्तियों के रूप में उत्पात मचाया।

→ अवतरित ब्रह्मात्माओं को भ्रमित न कर सका। अन्य सभी लोगों पर उक्त उत्पात का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। ब्रह्मात्माओं में तारतम की समझ होने के कारण दज्जाल उनका कुछ नहीं बिगाड़ सके।

→ समय असराफील नरसिंघा फूँकेगा तथा उसकी आवाज से बड़े-बड़े पर्वत गिर पड़ेंगे।" - ऐसी भविष्यवाणी कुरान धर्मग्रन्थ के अन्तर्गत की थी।

ज.१३१- परमात्मा और परमात्मा के अलौकिक सुखानन्द से लोगों को वंचित रखनेवाले दज्जाल उनके अपने स्वजन, परिवार और कुटुम्बीजन ही हैं।

ज.१३२- श्रीजी साहेबजी ने ब्रह्मात्माओं को उक्त कथित दज्जालों की सेना के बन्धन से तारतम ज्ञान द्वारा मुक्त कराया और निजघर की अनुभूति देकर परमधाम पहुँचाया।

→ से ब्रह्मात्माओं की रक्षा की। पुनः रासमण्डल में अन्तर्ध्यान के दौरान वियोग में मूर्च्छित ब्रह्मात्माओं को अपनी शक्ति द्वारा बल प्रदान कर विभिन्न प्रकार से विलास कराया। अब यहाँ जागनी के ब्रह्माण्ड में तारतम मंत्र के तारतम ज्ञान द्वारा निःशंक बनाकर उनके मन, बुद्धि, चित्त तथा अहं आदि सभी अंगों को पवित्र बनाये रखा है।

→ परमात्मा का प्रेम उत्पन्न कर उनके अन्तःकरण को चिन्मय प्रकाश से भर देता है। इस प्रकार उनका दिल हमेशा प्रेममय बना रहता है।

स.१३५- बारह मोमिनों ने बादशाह तक किसका संदेश पहुँचाने के लिए जान की बाजी लगा दी?

ज.१३५- धाम के मोमिनों में से बारह साथियों ने धर्मग्रन्थ कुरान में →

स.१३६- उन दज्जालों ने क्या जानकर मोमिनों को संदेश पहुँचाने की कोशिश करने से रोका?

ज.१३६- उन दज्जालों ने श्रीजी स्वरूप की इमाम के रूप में पहचान तो →

स.१३७- उन दज्जालरूपी अवज्ञाकारियों ने किस प्रकार साहस कर मोमिनों से संघर्ष किया?

स.१३८- क्या उक्त दज्जाल मोमिनों को संदेश पहुँचाने से रोक सके?

ज.१३८- अवज्ञाकारी दज्जालों ने मोमिनों को संदेश पहुँचाने के विषय →

स.१३९- इमाम मेहदी के प्रकट होने का संदेश देने पर अवज्ञाकारियों ने मोमिनों के साथ कैसा व्यवहार किया?

स.१४०- जब मोमिन और बादशाह आमने-सामने हुए, तब बादशाह को क्या हुआ?

ज.१४०- जब मोमिन और बादशाह आमने-सामने हुए, तब मोमिनों ने →

स.१४१- बादशाह के अग्रगण्य काज़ियों ने बादशाह के मन में कैसी शंकाएँ डाल दी?

ज.१४१- कयामत का सन्देश पाकर और ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों के दर्शन से →

→ लिखे अनुसार अपना मूल दायित्व समझकर खुदा-हादी का संदेश अर्थात् कयामत के संदेश को बादशाह तक पहुँचाने के प्रयास में जान की बाजी लगा दी।

→ की, किंतु ईर्ष्यालु लोगों के मन में बैठकर सोचने लगे, "ये मुझे मारने के लिए ही प्रकट हुये हैं।" उक्त प्रकार सोच-समझकर मोमिनों को पैगाम पहुँचाने से रोक दिया और पैगाम को तुकरा दिया।

ज.१३७- उन दज्जालरूपी अवज्ञाकारियों ने श्रीजी और मोमिनों से कमर बाँधकर दृढ़ निश्चय कर साहस से संघर्ष किया।

→ में तरह-तरह की विघ्न-बाधाएँ पहुँचायी। उनकी तरह-तरह से निन्दा भी की। अनेकों कष्ट भी दिये। परन्तु मोमिनों ने बादशाह तक संदेश पहुँचाकर ही छोड़ा। मोमिनों के इस संघर्ष को काज़ी रोक नहीं सके।

ज.१३९- इमाम मेहदी के प्रकट होने का अथवा कयामत जाहिर होने का संदेश सुनते ही दज्जालरूप अवज्ञाकारियों ने मोमिनों को बहुत ही दुःख-कष्ट पहुँचाया। अन्त में पैगाम भी तुकरा दिया और मोमिनों को कैद में डाल दिया।

→ कलमा द्वारा बादशाह को जोश में समझाया। उस समय मोमिनों की बातों से बादशाह को पूर्ण विश्वास हो आया कि ये इमाम का पैगाम लेकर आनेवाले मोमिन ही हैं। तब बादशाह ने तीन-तीन बार आसा भी चूमा।

→ प्रभावित होकर बादशाह के हृदय में तो विश्वास उत्पन्न हो चुका था, किन्तु उनके दज्जालरूपी काज़ियों ने निन्दा कर-करके जागनेवाले बादशाह के मन में विभिन्न शंका-उपशंकाएँ उत्पन्न करा दीं। इसलिए बारह मोमिनों के प्रति दुर्व्यवहार किया जाने लगा।

स.१४२- जिन बारह मोमिनों ने बादशाह से दिन में रू-बरू बातें की थीं, उनके साथ रू-बरू बातें करने के बाद भी दुर्व्यवहार क्यों किया गया?

ज.१४२- जिन बारह मोमिनों ने बादशाह से दिन में रू-बरू बातें की थीं, उनके साथ रू-बरू बातें करने के बाद भी दुर्व्यवहार किया गया क्योंकि रातों-रात शाहजहाँ के समय के कर्मचारियों और →

स.१४३- महामति श्री प्राणनाथजी ने संघर्ष के समय मोमिनों के रक्षार्थ क्या किया?

ज.१४३- महामति श्री प्राणनाथजी ने अपने साथियों को दज्जाल से →

स.१४४- कयामत की साक्षी के लिए महामति स्वरूप द्वारा की गई पुकार के फलस्वरूप क्या हुआ?

स.१४५- शरीअत का मूल स्थान कहाँ है ? यह मूल स्थान मक्का है या मदीना? वहाँ से कितने वसीयतनामे आये?

स.१४६- उन चारों वसीयतनामों में क्या संदेश लिखा हुआ था?

ज.१४६- उन चारों वसीयतनामों में हादी मुहम्मद ने इमाम और ईसा के →

स.१४७- शरीअत के लोगों ने उस वसीयतनामे में लिखी हुई बातों पर क्या किया?

ज.१४७- मक्का से आए उक्त वसीयतनामों में कयामत के समय प्रकट →

स.१४८- कैसी प्रवृत्तिवालों में अपार शक्ति सम्पन्न दज्जाल विद्यमान रहता है?

→ वर्तमान कर्मचारियों ने मिलकर बादशाह के कान भर दिये कि "ये मोमिन नहीं, बल्कि दुश्मन-हिन्दू राजाओं द्वारा भेजे हुए षड्यन्त्रकारी हैं। तुझे खत्म करने के लिए हिन्दू राजा ने इन्हें यहाँ भेजा है।" इस प्रकार की शंकाएँ उत्पन्न हो जाने पर मोमिनों की जाँच-पड़ताल की जाने लगी। इस कार्य-कारणवश मोमिनों के साथ दुर्व्यवहार किया गया।

→ संघर्ष करते-करते, जूझते देख बेतुल्लाह-परमधाम की ओर देखकर श्री राजजी से पुकार की और कयामत की गवाही-साक्षी के लिए उनसे प्रार्थना की।

ज.१४४- महामति स्वरूप ने कयामत के निश्चित समय की साक्षी के लिए श्री राजजी से पुकार-प्रार्थना की, जिसके फलस्वरूप शरीअत के मूल स्थान से साक्षीरूपी वसीयतनामा आया।

ज.१४५- शरीअत का मूल स्थान अरबस्तान में है। पुनः मूल स्थान मक्का है न कि मदीना। मूल स्थान मक्का से कयामत के समय की पुष्टि के लिए चार वसीयतनामे आये।

→ जाहिर होने का, कयामत के समय में इमाम के पैगाम आने का और स्वयं खुदा के काज़ी होकर कज़ा करने विषय की भविष्यवाणी रूपी साक्षी लिखी थी।

→ होनेवाले निशानों का स्पष्ट उल्लेख किया गया था। परन्तु शरीअत के अवज्ञाकारियों-काज़ियों ने उन बातों पर तनिक भी विचार नहीं किया।

ज.१४८- आसुरी प्रवृत्तियों के रूप में सभी मनुष्यों के मन में अपार शक्ति से सम्पन्न दज्जाल विद्यमान रहता है।

स.१४९- वह अपार शक्तियों से सम्पन्न दज्जाल अन्य सभी को क्या करना चाहता है?

स.१५०- चार वसीयतनामे अरब-मक्का से किसके पास आये?

स.१५१- जब इमाम स्वरूप श्रीजी ने परमात्मा-खुदा का संदेश बादशाह के पास पहुँचाया, तब बादशाह ने उस संदेश के बदले में क्या किया अथवा क्या करने की ठानी?

स.१५२- ऐसे समय में श्री प्राणनाथजी ने कहाँ से और किसे संदेशवाहक बनाकर कहाँ-किसके पास भेजा?

ज.१५२- उपरोक्त प्रकार की हलचल के समय में श्री प्राणनाथजी ने →

स.१५३- उस संदेश के विषय में जसवन्त सिंह राठौर ने क्या किया?

स.१५४- उस संदेश को ठुकराने के प्रतिफल जसवन्त सिंह राठौर को क्या हुआ?

स.१५५- मेरता से श्री प्राणनाथजी कहाँ पहुँचे? मुसलमानों ने किसका कड़ा विरोध किया?

ज.१५५- मेरता से श्री प्राणनाथजी झण्डा लेकर जयध्वनि की घोषणा →

स.१५६- मुसलमानों ने क्या सोचकर कयामत का संदेश ठुकराया और मोमिनों को कष्ट दिया?

ज.१५६- मुसलमानों ने सोचा, "ये मोमिन फर्दाए रोज अर्थात् कल →

ज.१४९- अपार शक्तियों से सम्पन्न दज्जालरूपी आसुरी प्रवृत्तिवाले मनुष्य अन्य सभी को अपने अधीन रखना चाहते हैं।

ज.१५०- चार वसीयतनामे अरब-मक्का से हिन्द के खलीफ़ों-यवन सम्राटों के पास आये।

ज.१५१- जब इमाम स्वरूप श्रीजी ने परमात्मा-खुदा का संदेश बादशाह के पास पहुँचाया, तब बादशाह के दज्जालरूपी अधिकारियों ने कमर बाँधकर हकीकी दीन इसलाम के सामने खड़े रहकर संघर्ष करने की ठान ली।

→ मेरता से श्री गोवर्धन भाई को संदेशवाहक बनाकर काबुल के जमरूद्ध में राजा जसवन्त सिंह के पास भेजा और कहा, "तुम जाकर उन्हें धर्मयुद्ध का समाचार दो।"

ज.१५३- श्री प्राणनाथजी द्वारा भेजा गया उक्त संदेश जब जसवन्त सिंह राठौर के पास पहुँचा, तब उसने उस पर ध्यान ही नहीं दिया। उसमें विश्वास की कमी दिखी।

ज.१५४- जब राजा जसवन्त सिंह राठौर ने श्री प्राणनाथजी के विश्वास का घात कर दिया, तब इसी बीच आजूज-माजूजरूपी काल ने उसे धर दबोचा अर्थात् उसका प्राणान्त हो गया।

→ करते हुए गोकुल, मथुरा होते हुए दिल्ली पहुँच गये। वहाँ कट्टर शराअ में बँधे हुए अंधे मुसलमानों ने श्रीजी स्वरूप का कड़ा विरोध किया।

→ होनेवाले कयामत का संदेश देकर हमें उठाने आए हैं।" तब उन्होंने मोमिनों द्वारा लाए गए पैगाम को ठुकरा दिया और मोमिनों को कैद कर कष्ट दिया।

स.१५७- उन अवज्ञाकारी काज़ियों ने मिलकर पैगाम के विषय में क्या सलाह-मशविरा किया?

स.१५८- पुनः उन मुसलमान काज़ियों ने बादशाह को किस प्रकार बारह मोमिनों के साथ बात करने से मना किया?

ज.१५८- पुनः बादशाह के पूर्व कार्यकर्ता तथा वर्तमान कर्मचारियों ने मिलकर बादशाह को घेर लिया और बादशाह को मोमिनों से →

स.१५९- बारह मोमिन जितने भी संदेश बादशाह को भेजते थे, बादशाह के कर्मचारी उनका क्या करते थे?

स.१६०- बादशाह के राजदरबार में कैसे-कैसे लोगों ने बादशाह को घेर रखा था?

स.१६१- आसुरी प्रवृत्तिवालों के कारण पैगाम पहुँचाने के कार्य विषय में क्या हुआ?

स.१६२- जब बादशाह ने स्वयं मोमिनों के मुख से संदेश सुना था, तब क्या हुआ था?

स.१६३- किस समय विरोधियों ने बादशाह को इसलाम धर्म पर आने से रोका?

ज.१६३- जब बादशाह ने मोमिनों की बातों से प्रभावित होकर आसा →

स.१६४- किसने औरंगजेब को राजनैतिक पक्ष की बातें सुनाकर उसके मन में डर उत्पन्न कर दिया?

ज.१५७- उन अवज्ञाकारी काज़ियों ने मिलकर उक्त पैगाम के विषय में यह निश्चय किया, "हमें इनकी बातों को सुनना ही नहीं है। पुनः न ही उन्हें अपने संग रखना है।"

→ रू-बरू बात करने से भटका दिया। मोमिनों को दुश्मन-हिन्दू राजाओं द्वारा भेजे हुए षड्यन्त्रकारी बताकर काज़ियों ने बादशाह के मन में विभिन्न शंकाएँ उत्पन्न कर दीं। इस प्रकार परस्पर बात करने में रुकावट डाल दी। तब बादशाह ने बारह मोमिनों से रू-बरू बात न करने की बात स्वीकार कर ली।

ज.१५९- सुन्दरसाथ अर्थात् बारह मोमिन जितने भी संदेश बादशाह को भिजवाते थे, दज्जालरूपी कर्मचारी उन संदेशों को नष्ट कर देते अथवा छिपा देते थे।

ज.१६०- बादशाह के राजदरबार में जितने भी लोग थे, वे सब के सब आसुरी प्रवृत्तियों के अधीन रहकर दज्जाल सदृश आचरण करनेवाले थे। उक्त प्रकार के लोगों ने बादशाह को घेर रखा था।

ज.१६१- आसुरी प्रवृत्तियों के परवश होने के परिणाम स्वरूप कोई भी परमात्मा के दिव्य संदेशरूपी पैगाम को सतर्क होकर अपना नहीं सके। अपनाने के बदले ठुकरा दिया।

ज.१६२- जब बादशाह ने मोमिनों के मुख से रू-बरू संदेश सुना था, तब बादशाह ने उनसे प्रभावित होकर आसा चूमा था। उन्होंने मोमिनों की बातों पर पूर्ण विश्वास कर लिया था।

→ चूमा, तब दज्जाल लोग सत्य मार्ग-इसलाम धर्म पर विश्वास लाने से बादशाह को रोकने के लिए अग्रसर हो उठे। इस प्रकार विरोधियों ने राह में विघ्न डालकर बादशाह को आत्मा की पहचान नहीं होने दी।

ज.१६४- बादशाह औरंगजेब के दिल-दिमाग में राजनैतिक दृष्टि से विशेषकर षड्यन्त्रकारी शंकाएँ उत्पन्न करानेवाले काज़ी का नाम है-गुरजबरदार, जो शाहजहाँ के समय में न्यायाधीश था।

स.१६५- दज्जाल स्वरूप काज़ी ने बादशाह को डर दिखाते हुए क्या-क्या कहा?

ज.१६५- दज्जाल स्वरूप काज़ी गुरजबरदार ने औरंगजेब बादशाह के →

स.१६६- "तुम मेरा कहना मानोगे, तो तुम्हारा साम्राज्य रहेगा।"-ऐसा बादशाह से किसने कहा?

स.१६७- अन्य दज्जालों ने बादशाह को क्या-क्या डर दिखाया?

ज.१६७- उक्त बातों का सहारा लेकर अन्य दज्जाल लोगों ने बादशाह को डर दिखाते हुए कहा, "यदि तुम श्री प्राणनाथजी को इमाम →

स.१६८- बादशाह के विचारों को अपने अनुकूल देखकर कौन, कहाँ आया?

स.१६९- बारह मोमिनों के पास आकर कलियुगग्रस्त दज्जाल ने उनसे क्या कहा?

ज.१६९- बारह मोमिनों के पास आकर कलियुगग्रस्त दज्जाल ने उनसे →

स.१७०- दज्जाल स्वरूप कर्मचारी ने मोमिनों को क्या करने की चेतावनी दी?

स.१७१- दज्जालों के बुरे विचारों को समझने के पश्चात् ब्रह्ममुनि वहाँ से कैसे सुरक्षित बच आये?

स.१७२- कलिकालग्रस्त दज्जाल के अधीन हुए लोगों ने क्रोध के परवश होकर क्या-क्या किया?

ज.१७२- कलिकालग्रस्त दज्जाल के अधीन हुए लोगों ने क्रोध के परवश →

→ मन में डर उत्पन्न करने के लिए कहा, "यदि तुमने इन मोमिनों की बातों को स्वीकार कर लिया, तो तुम्हारा शासनाधिकार और तुम्हारी मान-प्रतिष्ठा नष्ट हो जायेगी। तुम उनकी बातों को क्यों मान रहे हो?"

ज.१६६- "यदि तुम मेरे अधीन रहोगे और मेरा कहना मानोगे, तो तुम्हारा साम्राज्य बना रहेगा।" -ऐसा शाहजहाँ के समय में न्यायाधीश रह चुके काज़ी गुरजबरदार ने बादशाह से कहा।

→ स्वरूप में स्वीकार कर उनके अधीन रहोगे, तो तुम पर विभिन्न अत्याचार होंगे। समस्त सांसारिक सुख-सुविधाएँ नष्ट-भ्रष्ट हो जायेंगी।"

ज.१६८- बादशाह के विचारों को अपने अनुकूल देखकर कलियुगी प्रवृत्तियों से ग्रस्त कर्मचारी बारह मोमिनों के पास आया।

→ कहा, "बादशाह के दिल में इमाम मेहदी के प्रति विश्वास पैदा करके तुम लोगों ने हमारी शासन व्यवस्था में हलचल क्यों मचा दी?"

ज.१७०- दज्जाल स्वरूप कलियुगी प्रवृत्तिग्रस्त कर्मचारी ने ब्रह्ममुनियों को चेतावनी देते हुए कहा, "तुम लोग यहाँ से भाग जाओ। अन्यथा हम तुम्हें कैद कर लेंगे।"

ज.१७१- दज्जालों के बुरे विचारों को भाँपकर ब्रह्ममुनि भयभीत हो गये। परन्तु महाप्रभु की आज्ञा से वे वहाँ से छुटकारा पाकर सुरक्षित बच आये।

→ होकर परमात्मा का संदेश ठुकरा दिया और ब्रह्मप्रिय बारह मोमिनों को कारागार में बन्द कर दिया। उन्हीं लोगों ने बादशाह के आगे मोमिनों की निन्दा करके बादशाह के विचारों को परिवर्तित कर दिया।

स.१७३- उक्त प्रकार के राजमद में उन्मत्त बादशाह को ईसा और इमाम के प्रकटीकरण की पहचान ऊपरवाले ने कैसे करायी?

ज.१७३- उक्त प्रकार के राजमद में उन्मत्त हुए बादशाह को ईसा और →

स.१७४- औरंगजेब के राजमद में मस्त होने के साथ-साथ मुगल साम्राज्य में क्या होने लगा?

स.१७५- ब्रह्मात्माओं-मोमिनों को किसका सामना करना पड़ा और श्री राजजी ने उन्हें कैसे सुरक्षित रखा?

ज.१७५- ईसा और इमाम के प्राकट्य का संदेश पहुँचाते समय बारह →

स.१७६- सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी ने तत्पश्चात् कहाँ पहुँचकर क्या किया?

स.१७७- वहाँ किसके भाई थे, जिसने श्रीजी साहेबजी का विरोध किया?

स.१७८- श्रीजी साहेबजी के छोड़कर जाते ही सुलतान की फौज ने कहाँ के, किसको सिंहासन से उठा दिया?

स.१७९- परमात्मा ने किसे और कैसे अपने आश्रय में सुरक्षित रखकर बचाया?

स.१८०- उस समय श्रीजी साहेबजी ने आपत्तियों से घिरे सुन्दरसाथ के लिए क्या किया?

ज.१८०- उस समय श्री प्राणनाथजी ने आपत्तियों से घिरे सुन्दरसाथ के →

→ इमाम के प्रकटीकरण की सूचना देना जरूरी समझकर और सुन्दरसाथ पर बादशाह द्वारा होते हुए अत्याचारों को देखकर परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने औरंगजेब के सिंहासन को उलटा दिया।

ज.१७४- औरंगजेब के राजमद के अंधेपन में मस्त होने के साथ-साथ तेरह पीढ़ी से चलता आया मुसलमानों का मुगल साम्राज्य ही अस्त हो गया।

→ मोमिनों को अनेकों कष्टों का सामना करना पड़ा। परन्तु प्रियतम परमात्मा श्री राजजी ने उन्हें अपने संरक्षण में लेकर सुरक्षित रखा।

ज.१७६- सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी ने तत्पश्चात् दिल्ली छोड़कर उदयपुर, पहुँचकर लाधू मसानी को जागृत किया।

ज.१७७- उदयपुरसे मन्दसोर जाते रामपुरा के निकट चारनों के गाँव के मुखिया पूरनमल चारन का भाई बैरीसाल था। उसने विरोधी बनकर श्री प्राणनाथजी का विरोध किया।

ज.१७८- श्रीजी के उदयपुर छोड़कर मन्दसोर पहुँचते ही उदयपुर के राजा राजसिंह को सुलतान की फौज ने मारकर सिंहासन से उठा दिया।

ज.१७९- परमात्मा प्रियतम श्री राजजी ने उदयपुर के सुन्दरसाथ को अपने आश्रय में सुरक्षित रखकर बचाया।

→ प्रति प्रियतम श्री राजजी से विनय किया और कलिकालरूपी दज्जाल का बोलबाला देखकर साथियों को उससे बचाये रखने की प्रार्थना की।

स.१८१- महामति श्री प्राणनाथजी की प्रार्थना सुनकर श्री राजजी ने उनके रक्षार्थ क्या किया?

स.१८२- कुरान के दसवें सिपारे में क्या हकीकत है? क्या यह बात पहले से ही वहाँ लिखी हुई थी?

ज.१८२- कुरान के दसवें सिपारे में कयामत के समय जगह-जगह पर →

स.१८३- मन्दसोर से श्री प्राणनाथजी सुन्दरसाथ जमात के साथ कहाँ पहुँचे और कितने समय रहे?

स.१८४- कहाँ की ब्रह्मात्माओं ने श्रीजी के चरणों में अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया?

स.१८५- कहाँ की, कौनसी ब्रह्मात्माएँ जीवनभर श्रीजी के साथ रहीं?

स.१८६- कहाँ होते हुए श्री प्राणनाथजी औरंगाबाद पहुँचे? पुनः वहाँ कौन रहता था?

स.१८७- भावसिंह कौन था और कैसा था? उसने अखण्ड ज्ञान कब तक और कितना लिया?

ज.१८७- भावसिंह हाड़ा औरंगाबाद का हिन्दू राजा था। वह औरंगाबाद →

स.१८८- भावसिंह हाड़ा श्रीजी स्वरूप से क्या चाहता था? उसके प्रतिफल उसे क्या प्राप्त हुआ?

स.१८९- भावसिंह हाड़ा की मृत्यु के बाद कौन राजा हुआ? उसने क्या करना चाहा?

ज.१८९- राजा भावसिंह के निधन के पश्चात् उसकी जगह पर दज्जाल →

ज.१८१- महामति श्री प्राणनाथजी की प्रार्थना सुनकर श्री राजजी ने उनके रक्षार्थ अपने आवेश-शक्ति अर्थात् जोश-जबराईल को भेज दिया।

→ मोमिन आत्माओं के प्रति होनेवाली घटनाओं और उनकी सुरक्षा की हकीकत विषय का ज्ञान है। ये बातें हजार साल पहले ही कुरान में लिखी हुई थीं।

ज.१८३- मन्दसोर से चलकर श्री प्राणनाथजी अपनी जमात सहित उज्जैन पहुँचे और वहाँ २२ दिन ठहरे।

ज.१८४- उज्जैन के सुन्दरसाथ-ब्रह्ममुनियों ने धर्म-कार्य के लिए श्रीजी के चरणों में अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया।

ज.१८५- उज्जैन की उक्त ब्रह्मात्माएँ श्रीजी साहेबजी के उद्देश्य की पूर्ति के लिए जागनी-कार्य में जीवनभर उनके साथ रहीं।

ज.१८६- बुढ़ानपुर होते हुए श्री प्राणनाथजी जमात सहित औरंगाबाद पहुँचे। वहाँ राजा भावसिंह हाड़ा रहता था।

→ की प्रजा का प्रिय, हिन्दू धर्म के प्रति कट्टर और हिम्मतदार राजा था। भावसिंह में धाम का जितना अंकुर था, उसने उतना ही अखण्ड ज्ञान का लाभ लिया।

ज.१८८- राजा भावसिंह श्रीजी स्वरूप से चमत्कारों की अपेक्षा करने लगा था। अतः इसी बीच वह कालचक्र का ग्रास बन गया।

→ स्वरूप अधर्मी फतेह मुहम्मद राजगद्दी पर बैठा। राजगद्दी पर बैठते ही उसने सैनिकों की फौज को हुकम किया, "साधु की जमात को पकड़ लाओ। मैं उन्हें कैद में डाल दूँगा।"

स.१९०- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने कैसे सबको अपनी पनाह तले रखा?

स.१९१- श्री राजजी ने कुरान के माध्यम से किनका संदेशा याद कराया?

स.१९२- कुरान के उक्त किस्से द्वारा कौन मूल बातें याद दिला रहे हैं?

स.१९३- असराईल की सन्तान कौन है? कुरान में कहा है, "फेरून को मूसा ने परास्त किया।" तो यहाँ फेरून कौन है और मूसा कौन है? पुनः यहाँ नील नदी किसे कहा है?

ज.१९३- बनी असराईल सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी हैं। उनके बनी-लड़के (नजरी पुत्र) श्री मेहराज - श्री प्राणनाथजी हैं तथा उनकी सन्तान- →

स.१९४- यहाँ किसने, किसको और क्या दिया? किससे सम्पूर्ण उलझनें सुलझ जायेंगी?

स.१९५- बीतककार यहाँ ब्रह्मात्माओं-मोमिनों से क्या कह रहे हैं? वे किसकी कृपा के प्रति आभार मानने को कह रहे हैं और क्यों? उन्होंने ऐसा क्या किया, जिससे उनके प्रति आभार मानने को कहा है?

ज.१९५- बीतककार स्वामी श्री लालदासजी ब्रह्मात्माओं के लिए आह्वान करते हुए कह रहे हैं, "हे धामस्थ सुन्दरसाथजी! परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की कृपा का आभार मानो कि उन्होंने →

ज.१९०- अक्षरातीत प्रियतम श्री राजजी ने अपनी सभी आत्माओं को अपने आश्रय में सुरक्षित रखकर दज्जालरूप फतेह मुहम्मद की आशाओं पर पानी फेर दिया।

ज.१९१- अक्षरातीत धनी *"सब विध पियाजी समरथ"* ने कुरान के माध्यम से संदेश भेजकर अपनी आत्माओं को असराईल की संतान का किस्सा याद कराया और उस पर विचार करने को कहा।

ज.१९२- कुरान के किस्से-मूल बातें अर्थात् फेरून बादशाह के साथ हुई मूसा पैगम्बर की लड़ाई द्वारा श्रीजी स्वरूप कयामत के समय की लड़ाई की याद दिला रहे हैं।

→ सुन्दरसाथ जमात धाम के मोमिन हैं। कुरान में कहा है, *"मूसा ने फेरून को परास्त किया।"* अतः यहाँ श्री प्राणनाथजी मूसा पैगम्बर हैं। फेरून बादशाह सुलतान औरंगजेब है। कुरान के अनुसार नील नामक नदी में फेरून की फौज डूबकर मर गयी थी। औरंगजेब की फौज (काज़ी-कर्मचारी) का मोहरूपी समुद्र-दस विध के दोजखरूपी नदी में डूबना ही नील नदी में डूबना है। वहाँ खुदा ने फेरून को नील नदी में डुबाकर नष्ट कर दिया था और मूसा पैगम्बर की रक्षा की थी।

ज.१९४- यहाँ अक्षरातीत श्री राजजी ने अपनी आत्माओं को ब्रह्मवाणी-कुलजम प्रदान की है। श्री राजजी द्वारा दिए हुए ब्रह्म वचनों पर ध्यान देने से सम्पूर्ण उलझनें सुलझ जायेंगी।

→ किस प्रकार दज्जाल से आपका संघर्ष कराया। पुनः किस प्रकार आपको बचाकर अपनी पनाह में ले लिया!!" वे परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के प्रति आभार मानने को कह रहे हैं क्योंकि श्री राजजी ने दज्जाल के साथ संघर्ष के दौरान मोमिनों की सुरक्षा कर उन्हें अपनी पनाह में लेकर बचा लिया।

- (प्रकरण ५४, सवाल जवाब नं. १९५, कुल सं. ३६२०+१९५ =३८१५)।

❀ बुढ़ानपुर ❀

स. १ - महामति श्री प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ समाज के साथ औरंगाबाद से कहाँ पहुँचे और वहाँ पहुँचकर उन्होंने क्या कार्य किया?

स. २ - एक बार पुनः मोमिनों से कट्टर कर्मकाण्डी-शरीअत (शराअ) वालों का संघर्ष कहाँ हुआ?

स. ३ - कहाँ से, लालदासजी पैगाम लेकर कहाँ, किसके पास गये?

ज. ३ - बुढ़ानपुर से लालदासजी श्रीजी साहेबजी के आदेशानुसार सन्देश →

स. ४ - शेख इसलाम काज़ी ने लालदासजी को घर के अन्दर बुलाकर क्या पूछा?

स. ५ - काज़ी द्वारा उक्त प्रकार से पूछे जाने पर लालदास महाराज ने उन्हें क्या जवाब दिया?

ज. ५ - काज़ी शेख इसलाम द्वारा उक्त प्रकार से पूछे जाने पर लालदास →

स. ६ - पुनः काज़ी के प्रश्नों का जवाब देने के बाद काज़ी से लालदासजी ने क्या माँग की?

ज. ६ - उक्त प्रकार काज़ी के प्रश्नों का जवाब देने के बाद लालदासजी →

स. ७ - क्या इसके पहले भी शेख इसलाम के पास कोई पैगाम लेकर गये थे? यदि गये थे, तो कौन?

❋ बुढ़ानपुर ❋

ज. १ - महामति श्री प्राणनाथजी औरंगाबाद से अपने सुन्दरसाथ समाज को साथ लेकर बुढ़ानपुर पहुँचे। वहाँ से उन्होंने बादशाह औरंगजेब के पास अपना संदेश भेजा।

ज. २ - एक बार पुनः मोमिनों को दिल्ली में कट्टर कर्मकाण्डी-शरीअत (शराअ) का पालन करनेवाले मुसलमानों से सत्यधर्म के लिए संघर्ष करना पड़ा।

→ लेकर कट्टर शराअ पर चलनेवाले मुसलमान अधिकारियों के पास दिल्ली पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने काज़ी शेख इसलाम से भेंट की और श्रीजी द्वारा लिखा हुआ संदेश-पत्र उनके पास भेज दिया।

ज. ४ - शेख इसलाम काज़ी ने श्री लालदासजी को घर के अन्दर बुलाकर उनसे पूछा, "आप अब तक कहाँ रहे और अब किस लिये आये हो?"

→ महाराज ने उन्हें उत्तर दिया, "हे काज़ी शेख इसलामजी! हमें हमारे हादी-सद्गुरु ने ही आपके पास भेजा है। इस पत्र में आपको हादी ने जो वचन लिखकर भेजे हैं, कृपया आप हमें उन वचनों के उत्तर देने की कृपा करें।"

→ ने काज़ी से पुनः कहा, "इसके पहले भी अजमेर से मलूकचन्द भाई आपके पास कुरान के प्रश्न लेकर आये थे। अतः इस बार तो आप इन वचनों पर विचार करके इनका उत्तर हमें अवश्य दे दीजिए।"

ज. ७ - हाँ जी! इसके पूर्व भी अजमेर से मलूकचन्द भाई शेख इसलाम को संदेश देने के लिए प्रश्न-पत्र लेकर गये थे। उस बार भी उसने जवाब नहीं दिया था।

स. ८ - उक्त बातों के पश्चात् शेख इसलाम काज़ी ने लालदासजी से क्या कहा?

ज. ८ - लालदासजी की उक्त माँग के पश्चात् काज़ी शेख इसलाम ने →

स. ९ - पुनः शेख इसलाम काज़ी ने क्या बहाना करके, लालदासजी को कब बुलवाया?

ज. ९ - शेख इसलाम काज़ी ने "कल प्रातः काल में आना। तब हम →

स. १०-दूसरे दिन उस काज़ी के घर जाते समय लालदासजी के साथ अन्य कौन था?

स. ११-शेख इसलाम काज़ी अपने धर्म के प्रति कैसा था?

स. १२-दूसरे दिन श्री लालदासजी की किससे चर्चा हुई और वहाँ अन्य कौन बैठे थे?

ज. १२- दूसरे दिन जब लालदासजी काज़ी शेख इसलाम के घर गए, तब →

स. १३-शेख इसलाम काज़ी ने लालदासजी से कौनसी पुस्तिका माँगी तथा उसमें क्या था?

स. १४-किसके मित्रों ने उस ग्रन्थ के चर्चा के प्रसंग के प्रश्न को अशुद्ध कहा?

स. १५-उक्त प्रकार की बातों को सुनकर काज़ी और उसके मित्रों से लालदासजी ने क्या कहा?

→ लालदासजी से कहा, "आप पर कुरान के रहस्य अच्छी प्रकार से प्रकट हुये हैं। हम आपसे बाद में चर्चा करेंगे। अभी हमारे मित्र यहाँ आवश्यक कार्य से आये हैं।"

→ आपके साथ चर्चा करेंगे। अभी हम अन्यत्र जा रहे हैं। आपको जो कुछ भी कहना हो, वह कल प्रातःकाल में ही कहना।"-इस प्रकार बहाना करके लालदासजी को दूसरे दिन सुबह बुलवाया।

ज. १०- दूसरे दिन काज़ी शेख इसलाम के घर जाते समय लालदासजी के साथ नूर मुहम्मद भी थे। लालदासजी नूर मुहम्मद को साथ लेकर काज़ी के घर गए थे।

ज. ११- शेख इसलाम काज़ी अपने धर्म-शराअ के प्रति बेहद कट्टर और इसलाम धर्म का पक्का अधिकारी था।

→ उसके पास उसके अन्य भी हितैषी मित्रगण बैठे थे। इसी बीच शेख इसलाम काज़ी से लालदासजी की कुरान शरीफ़ ग्रन्थ के आधार पर चर्चा हुई।

ज. १३- शेख इसलाम काज़ी ने लालदासजी से कुरान ग्रन्थ पर आधारित प्रश्नों की पुस्तिका माँगी, जिसमें कयामत के समय विषयक बातें लिखी हुई थी। उसी को लेकर विचार-विमर्श होने लगा।

ज. १४- शराअ के कट्टर शेख इसलाम काज़ी के मित्रों ने उस ग्रन्थ के चर्चा के प्रसंग के प्रश्न को अशुद्ध अथवा त्रुटिपूर्ण कहा।

ज. १५- उक्त प्रकार की बातें सुनकर लालदासजी ने काज़ी और उसके मित्रों से कहा, "आप लोगों के विवेकहीन विचारों के सम्बन्ध में हम आपसे क्या कहें?"

स. १६-पुनः लालदासजी ने उस पुस्तक के विषय में काज़ी लोगों से क्या कहा?

ज. १६- लालदासजी ने उक्त पुस्तक के विषय में काज़ी और उसके मित्रों →

स. १७-लालदासजी की उक्त प्रकार की बातें सुनकर शेख इसलाम काज़ी ने क्या कहा?

ज. १७- लालदासजी की उक्त बातें सुनकर शेख इसलाम काज़ी बोला, →

स. १८-अब शेख इसलाम काज़ी की बातें सुनने के पश्चात् लालदासजी ने उससे क्या कहा?

ज. १८- शेख इसलाम काज़ी की उक्त बातें सुनने के पश्चात् लालदासजी →

स. १९-लालदासजी की बातें सुनते ही शराअ के शैतानों ने क्या किया?

स. २०-उसके पश्चात् काज़ी तथा अन्य कर्मचारी क्या विचार करने लगे?

स. २१-शेख इसलाम काज़ी और उसके मित्र-वर्ग क्रोधित होकर कठोर शब्द बोलने के परवश क्यों हुये?

स. २२-शेख इसलाम काज़ी और उसके मित्रों ने क्रोधित होकर क्या आरोप लगाया?

ज. २२- शेख इसलाम काज़ी तथा उसके मित्रों ने क्रोधित होकर कहा, →

स. २३-जब उनकी उक्त बातें सुनकर लालदासजी को भी क्रोध आ गया, तब उन्होंने क्या किया?

→ से कहा, "अरे भाइयों! यह सब कुरान के हदीसे ही तो हैं। आप इन्हें ही त्रुटिपूर्ण और अशुद्ध कहते हैं!! तो अब हम आपके समक्ष कयामत के दिन के सम्बन्ध में क्या चर्चा करें?"

→ "हम कुरान और हदीसों को त्रुटिपूर्ण कदापि नहीं कह सकते। किन्तु यह लिखनेवाले की भूल है । ऐसा लगता है कि यह कम पढ़े-लिखे लोगों की लिखावट है।"

→ ने कहा, "इसे लिखनेवालों का इसमें तनिक भी दोष नहीं है। आप इनके बातुनी अर्थ अथवा इसके आन्तरिक आशय को समझने का प्रयास कीजिए। आपको तुरन्त ही तत्त्वबोध हो जायेगा।"

ज. १९- लालदासजी की उक्त बातें सुनते ही शैतान के वशीभूत उन मुसलमानों ने लालदासजी के हाथ से वह पुस्तक छीन ली।

ज. २०- उसके पश्चात् जब दज्जाल ने काज़ी तथा उन कर्मचारियों का मन फिरा दिया, तो वे लालदासजी से लड़ने के लिए तत्पर हो गये तथा लड़ने-झगड़ने की ओर विचार करने लगे।

ज. २१- काज़ी शेख इसलाम और उसके मित्र-वर्ग कुरान के प्रश्नों के उत्तर नहीं दे पाये थे। अतः वे क्रोधित होकर कठोर शब्द प्रयोग कर उक्त प्रकार बोलने के परवश हो गये।

→ "आप स्वयं ही इस नवीन पुस्तक में कुरान के कलाम-आयतें उतारकर ले आये हो। आपने इस पुस्तक में असत्य बातें लिखी हैं। आप इसलाम के प्रति द्वेष भाव लेकर आये हो।"-इस प्रकार कुरान का अत्यधिक भय बताकर अनुचित आरोप लगाने लगे।

ज. २३- काज़ी और उसके मित्रों की बातें सुनकर जब लालदासजी को भी क्रोध आ गया, तब उन्होंने मुसलमान काज़ी के हाथ से अपनी पुस्तक छीन ली।

स. २४-जब लालदासजी ने अपनी पुस्तक छीन ली, तब काज़ी ने क्या कहा?

स. २५-शेख इसलाम काज़ी ने उक्त बातें कहते-कहते क्या कर डाला?

स. २६-पुनः काज़ी ने लालदासजी को विनम्र स्वर और कपटपूर्ण भाव से क्या कहा?

स. २७- लालदासजी को काज़ी शेख इसलाम के विषय में क्या पता चल गया?

ज. २७- काज़ी के मुख से उक्त प्रकार की बातें सुनकर लालदासजी पूरी →

स. २८-तत्पश्चात् श्री लालदासजी महाराज ने काज़ी शेख इसलाम से क्या कहा?

स. २९-शेख इसलाम काज़ी ने क्रोध को अन्दर ही दबाकर बाहर से नम्रतापूर्वक लालदासजी से क्या कहा?

ज. २९- अपने क्रोध को अन्दर ही दबाकर दिखावे के लिए नम्रतापूर्ण →

स. ३०-पुनः शेख इसलाम काज़ी कौनसी बात बारम्बार दोहराने लगा?

स. ३१-काज़ी शेख इसलाम की उक्त प्रकार की बातें सुनकर लालदासजी ने उससे क्या कहा?

ज. ३१- काज़ी शेख इसलाम की उक्त प्रकार की बातें सुनकर लालदासजी →

ज. २४- जब उक्त प्रकार से लालदासजी ने अपनी पुस्तक छीन ली, तब काज़ी ने कहा, "यह प्रश्नों की पुस्तिका हम अपने पास रखना चाहते हैं।"

ज. २५- शेख़ इसलाम काज़ी ने उक्त बातें कहते हुए लालदासजी से पुनः वह पुस्तक छीन ली और तुरन्त अपने सेवक को सौंप दी।

ज. २६- उक्त प्रकार के व्यवहार के पश्चात् काज़ी ने लालदासजी से विनम्र स्वर और कपटपूर्ण भाव से कहा, "अब इसके उपरान्त उस पुस्तिका के सम्बन्ध में आप क्या कहना चाहते हैं?"

→ तरह से समझ गये कि काज़ी पूरी तरह बदल गया है। उन्हें अब निश्चित हो गया कि अब काज़ी की नीयत बदल गई है और यह हमें मार डालने का षड्यन्त्र रच रहा है। इसकी ऐसी बातों को कानों से नहीं सुनना चाहिये। अब यहाँ से चले जाना ही बेहतर होगा।

ज. २८- शेख़ इसलाम काज़ी की बिगड़ी हुई नीयत की पहचान होते ही लालदासजी ने उससे कुछ नहीं कहा। उसकी बातें वे सुनते ही रहे।

→ स्वर में काज़ी शेख़ इसलाम ने लालदासजी से पुनः कहा, "आप हमसे क्या कह रहे थे? हमें आपके मुख से कुरान की ऐसी बातें सुनकर बहुत भला लग रहा है। आप हमारे समक्ष इमामत-धर्म का नेतृत्व करने का दावा करते हो!"

ज. ३०- "क्या आप हमारे समक्ष इमामत-धर्म का नेतृत्व करने का दावा करते हो?"- यह वाक्यांश काज़ी शेख़ इसलाम बारम्बार दोहराने लगा।

→ ने उनसे कहा, "हम आप जैसे सम्मानित और प्रतिष्ठावान् महानुभाव से क्या कह सकते हैं? हम तो वही बात कहेंगे, जो अब तक कही है। इससे अधिक हमें और क्या कहना है?"

स. ३२-लालदासजी की उक्त बातें सुनकर पुनः काज़ी शेख इसलाम ने क्या कहा?

स. ३३-शेख इसलाम काज़ी की बात सुनते ही लालदासजी ने क्रोधित होकर उससे क्या कहा?

ज. ३३- शेख इसलाम काज़ी की उक्त प्रकार की बातें सुनकर लालदासजी →

स. ३४-"अब हम तुम्हारे पास कभी नहीं आयेंगे।"- ऐसा कहकर जब लालदासजी वहाँ से निकल गये, तब काज़ी और उसके मित्र क्या करने लगे?

स. ३५-काज़ी शेख इसलाम के वापस बुलाने पर लालदासजी ने क्या विचारकर, क्या कहा?

ज. ३५- काज़ी शेख इसलाम के वापस बुलाने पर लालदासजी ने विचार →

स. ३६-नूर मुहम्मद और लालदासजी काज़ी शेख इसलाम के घर से निकलकर कहाँ गये?

स. ३७-मुफ्ती अब्दुल रहमान को लालदासजी ने क्या समझाया?

स. ३८-अब्दुल रहमान को लालदासजी ने किसका वृत्तान्त सुनाया?

स. ३९-उक्त बातों के सिवाय लालदासजी ने मुफ्ती अब्दुल रहमान से अन्य क्या बातें कही?

ज. ३९- शेख इसलाम काज़ी के वृत्तान्त के अलावा लालदासजी ने मुफ्ती →

ज. ३२- लालदासजी की उक्त बातें सुनकर काज़ी शेख इसलाम ने कहा, "पत्र लिखनेवाले ने स्वयं ही राह नहीं पायी।"

→ अत्यंत क्रोधित होते हुए बोले, "आपको ऐसी अनुचित बातें अपने मुख से नहीं कहनी चाहिए। अब हम आपको कयामत एवम् इमाम मेहदी का संदेश देने कभी नहीं आयेंगे। हम इसलाम धर्म को लेकर अपने घर वापस जा रहे हैं।"

ज. ३४- जब उक्त कथित कथन कहकर लालदासजी वहाँ से निकल गये, तब काज़ी और उनके मित्र पुनः नूर मुहम्मद और लालदासजी को बुलाने लगे।

→ किया, "इन लोगों ने स्वामी श्री प्राणनाथजी के प्रति अवज्ञा दिखाई है। अब तो इनका मुँह भी नहीं देखना चाहिए।" यह विचारकर उससे कह दिया, "अब मैं तुम्हारा मुख देखने कभी नहीं आऊँगा।"

ज. ३६- नूर मुहम्मद और लालदासजी काज़ी शेख इसलाम के घर से निकलकर सीधे मुफ्ती अब्दुल रहमान के घर पहुँचे।

ज. ३७- मुफ्ती अब्दुल रहमान से मिलकर लालदासजी ने उसे श्री प्राणनाथजी द्वारा भेजा गया कयामत का दिव्य संदेश सुनाया। कयामत के निशान और इमाम मेहदी के प्रकट होने की बातें भी कही।

ज. ३८- अब्दुल रहमान को लालदासजी ने शेख इसलाम काज़ी तथा कट्टर शराअ के अनुगामी लोगों का वृत्तान्त सुनाया।

→ अब्दुल रहमान से यह भी कहा, "हमने तो संदेश पहुँचाकर अपना फर्ज उतार दिया। किन्तु शेख इसलाम काज़ी तथा उसके साथियों ने पैगाम के प्रति अवज्ञा दिखाई और दुष्टाई की।"

स. ४०-उक्त बातों के पश्चात् लालदासजी ने अब्दुल रहमान को कौनसा संदेश दिया?

ज. ४०- उक्त बातों के पश्चात् लालदासजी ने मुफ्ती अब्दुल रहमान से →

स.४१- "हम और आप श्री परमधाम की आत्माएँ हैं।"-इस प्रकार कहते हुए लालदासजी अब्दुल रहमान को अन्य क्या-क्या समझाने लगे?

ज. ४१- *"हम और आप श्री परमधाम की आत्माएँ हैं।"-इस प्रकार कहते* →

स. ४२-"आप भी इन्हें पहचानकर उन पर विश्वास करें।" अतः कौन, किससे और किस पर विश्वास करने को कह रहे हैं?

स. ४३-लालदासजी की उक्त बातों को सुनने के पश्चात् मुफ्ती अब्दुल रहमान ने क्या जवाब दिया?

ज. ४३- लालदासजी की उक्त बातें सुनने के पश्चात् मुफ्ती अब्दुल →

स. ४४-अब्दुल रहमान की बातें सुनने के बाद लालदासजी ने उनसे क्या पूछा?

स. ४५-पुनः अब्दुल रहमान ने "इकतलाफ" नामक किताब की बातों के विषय में लालदासजी से क्या कहा?

ज. ४५- अब्दुल रहमान ने *"इकतलाफ"* नामक किताब की बातों के →

स. ४६-अब्दुल रहमान द्वारा उक्त प्रकार से कहने पर लालदासजी महाराज ने उसे क्या सलाह दी?

→ कहा, "अब हम आपको परमात्मा का संदेश दे रहे हैं, जिससे बाद में आप हमारे ऊपर किसी प्रकार का दोषारोपण न कर सकें और न ही यह कह सकें कि हमसे पहले किसी ने कहा ही नहीं। बाद में आपको बड़ा पश्चात्ताप होगा।"

→ हुए लालदासजी अब्दुल रहमान को समझाने लगे, "इसलिए हम कान पकड़कर आपका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर रहे हैं। हम आपको यह विश्वास दिलाना चाह रहे हैं कि हमने परमात्मा के संदेशवाहक रसूल के श्रीजी के स्वरूप में प्रत्यक्ष दर्शन किये हैं।"

ज. ४२- ऐसा श्री लालदासजी मुफ्ती अब्दुल रहमान से कह रहे हैं। वे कहते हैं, "मैंने श्रीजी स्वरूप में संदेशवाहक रसूल साहेब के प्रत्यक्ष दर्शन किये हैं। अतः आप भी श्रीजी स्वरूप पर विश्वास कर उनमें रसूल के दर्शन प्राप्त करें।"

→ रहमान ने कहा, "रसूल साहेब के आने की बात कयामत के समय के लिए लिखी हुई है। कयामत तो अभी बहुत दिन बाद होगी। आप लोग आज ही कयामत का संदेश लेकर क्यों आये हो?"

ज. ४४- अब्दुल रहमान की बातें सुनकर लालदासजी ने उनसे पूछा, "आपने यह कैसे समझ लिया कि कयामत का समय अभी दूर है?"

→ विषय में लालदासजी से कहा, "यह प्रसंग इकतलाफ नामक किताब में लिखा है। किन्तु हमारी समझ में न आने के कारण मन में सन्देह बना हुआ है।"

ज. ४६- अब्दुल रहमान द्वारा उक्त प्रकार से कहने पर लालदासजी महाराज ने उसे प्रेमपूर्वक सलाह दी, "अरे! आप वह पुस्तक →

→ जिसका नाम *"इकतलाक"* है, हमारे पास ले आइये। हम अभी →

स. ४७-तत्पश्चात् श्री लालदासजी ने अब्दुल रहमान को कुरान में से क्या निकालकर दिखाया और किससे सम्बन्धित बातें की?

स. ४८-लालदासजी द्वारा उक्त प्रकार से समझाने पर अब्दुल रहमान ने क्या कहा?

ज. ४८- लालदासजी द्वारा कुरान में से उक्त प्रसंग निकालकर दिखा →

स. ४९-अब्दुल रहमान की उक्त बातें सुनकर लालदासजी ने उससे क्या कहा?

ज. ४९- अब्दुल रहमान की उक्त प्रकार की बातें सुनकर लालदासजी ने →

स. ५०-कुरान में लिखी हुई बातें भूतकाल के लिए हैं या भविष्यकाल के लिए हैं?

ज. ५०- पुनः लालदासजी समझा रहे हैं, "अरे! पहले का युग बीत चुका है। परन्तु बीते हुए समय के इतिहास को मात्र समझ लेने से हाथ →

स. ५१-रसूल साहेब ने पुनः आने का वादा किया था। अतः वे पुनः आये या नहीं?

ज. ५१- इस विषय में लालदासजी खुलस्त करके समझा रहे हैं, "यदि कुरान की बातों को भूतकाल की कहानियाँ कहा जाये, तो क्या →

स. ५२-रसूल साहेब ने पुनः आने को कहा था, तो वे अभी कहाँ हैं?

→ आपको सभी तिथियाँ मिलाकर सिद्ध करके समझा देते हैं कि कयामत का निर्धारित समय आ गया है।"

ज. ४७- तत्पश्चात् श्री लालदासजी ने मुफ्ती अब्दुल रहमान को कुरान में से कयामत और इमाम मेहदी के अवतरण आदि से सम्बन्धित प्रश्न खोजकर दिखा दिये और उनके सही उत्तर भी समझा दिये।

→ और समझा देने के बाद मुफ्ती अब्दुल रहमान ने कहा, "यह सभी घटनाएँ पहले ही घट चुकी हैं। उन्हीं कहानियों को कुरान में लिख दिया गया है।"

→ उससे कहा, "आप लोगों में कुरान को सही रूप से समझने में बड़ी भूल हो रही है। इसलिए आप सब कुरान के महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को साधारण समझ रहे हैं और उन्हें किस्सों-कहानियों की संज्ञा दे रहे हैं।"

→ में क्या आयेगा? रसूल द्वारा कुरान में लिखी बातें वर्तमान के लिए हैं। उन विषयों को भूतकाल में डालोगे, तो कुरान की बातों का हमारे और तुम्हारे लिए मतलब ही क्या रहा? आप कितनी बातें भूतकाल में डाल रहे हैं और कितनी बातें भविष्य में! तो विचार करो कि आप वर्तमान में क्या करोगे?"

→ रसूल साहेब ने जो पुनः आने का वादा किया था, वह भी कहानी ही है? वे नहीं आयेंगे? नहीं! कुरान की भविष्यवाणियाँ यहाँ सच हो रही हैं। रसूल आ गये हैं। कयामत का समय चल रहा है। मैं इमाम मेहदी का ही संदेश लेकर आया हूँ। अतः आप इसे ठुकराइये नहीं। यदि ठुकराओगे, तो पीछे पछताओगे।"

ज. ५२- कुरान में रसूल साहेब ने पुनः आने को कहा था। अतः वे अभी श्रीजी स्वरूप के अन्दर हैं। श्रीजी स्वरूप में रसूल साहेब को प्रत्यक्ष कर लो।

स. ५३-कुरान में वर्णित कल का दिन-कयामत कौनसा दिन है? क्या वह दिन अभी नहीं है?

स. ५४-कुरान में कहे प्रमाण मोमिनों के प्रकट होने की बातें क्या अभी हो रही हैं?

ज. ५४- कुरान में कहे प्रमाण कयामत के समय मोमिनों के प्रकट होने →

स. ५५-कुरान की रहस्यमय बातें कौन जाहिर करेंगे, ऐसा कुरान में लिखा है?

ज. ५५- कुरान की रहस्यमय बातें जैसे कयामत का समय, इमाम मेहदी →

स. ५६-लालदासजी अब्दुल रहमान को उक्त संदेश सुनाने का क्या कारण बताते हैं?

ज. ५६- रसूल के साथी ब्रह्मात्मा-मोमिन सुन्दरसाथ के रूप में यहाँ प्रकट →

स. ५७-मुफ्ती अब्दुल रहमान के घर कितने दिनों तक सत्संग चला?

स. ५८-श्रीजी साहेबजी ने लालदासजी को पत्र भेजकर क्या निर्देश दिया?

स. ५९-पत्र लेकर लालदासजी के पास कौन आया? लालदासजी ने किसका आदेश पढ़ा?

स. ६०-उस पत्र में श्री प्राणनाथजी ने "सौ बात की एक ही बात" क्या लिखी थी?

ज. ६०- परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने उस पत्र में "सौ बात की एक →

ज. ५३- कुरान में जिस कयामत के दिन का उल्लेख किया गया है, वही घड़ी आज चल रही है।

→ की बातों का समय यही है। कुरान में कहा है कि इमाम का पैगाम मोमिन सभी को पहुँचायेंगे। वही संदेशरूपी पैगाम पहुँचाने के लिए रसूल साहेब श्रीजी ने हमें भेजा है।

→ का प्रकट होना, मोमिनों का पैगाम पहुँचाना, पुनः आखर जमाने के खाविंद का काज़ी के रूप में कजा करना आदि हादी के हुकम से मोमिन जाहिर करेंगे, ऐसा कुरान में लिखा है।

→ हुए हैं। यह रहस्य लालदासजी अब्दुल रहमान को सुनाने का कारण बता रहे हैं, "बाद में कोई हम पर किसी प्रकार का दोष न देना कि हमने बताकर अपना कर्तव्य पूरा नहीं किया।"

ज. ५७- मुफ्ती अब्दुल रहमान के घर तीन दिन सत्संग चला। तीन दिन बाद तुरन्त ही लालदासजी को श्रीजी स्वरूप का पत्र मिला।

ज. ५८- श्रीजी साहेबजी ने लालदासजी को पत्र भेजकर यह निर्देश दिया, "अब आप वहाँ तनिक भी न ठहरें। शीघ्रातिशीघ्र वापस चले आएँ। यह पत्र हमने इसी उद्देश्य से लिखा है।"

ज. ५९- श्री प्राणनाथजी के हाथों लिखा हुआ पत्र लेकर लालदासजी के पास नारायणदास भाई आये। उसमें लालदासजी ने परब्रह्म स्वरूप श्रीजी का आदेश पढ़ा।

→ *ही बात* " यह लिखी थी, "यह पत्र पढ़ने के बाद वहाँ का पानी पीना भी हराम समझना। पानी पीने तक के लिए भी वहाँ नहीं रहना। शीघ्रातिशीघ्र प्रस्थान कर मेरे पास लौट आना।"

स. ६१-शराअ के अनुगामी लोग कौन हैं? इस समय किसका बोलबाला है? कयामत के शत्रु कौन हैं?

स. ६२-पत्र पढ़कर लालदासजी किसके साथ चल पड़े? कौन आकर उनसे यहाँ मिला?

स. ६३-कौन परस्पर ऐसी बातें करने लगे, "शराअ परस्त लोग कभी भी ईमान लानेवाले नहीं हैं"?

स. ६४-दिल्ली से प्रस्थान कर श्री लालदासजी तथा अन्य साथी कितने दिनों में श्री प्राणनाथजी के चरणों में आ पहुँचे?

स. ६५-लालदासजी को श्रीजी द्वारा उन्हें तुरन्त वापस बुलाने का कारण कहाँ आकर पता चला?

ज. ६५- श्री प्राणनाथजी से मिलकर बातें करने पर जब लालदासजी ने →

स. ६६-श्रीजी साहेब के दिव्य स्वरूप और उनके कृपा के प्रताप को देखकर उन लोगों को क्या हुआ?

स. ६७-किसने, किसे और कहाँ से बचाकर अपने पास सुरक्षित रख लिया?

स. ६८-बीतककार श्री लालदासजी के अनुसार ब्रह्मधाम के मोमिनों को अपनी छत्र-छाया में रखकर किसने उनकी रक्षा की?

ज. ६१- काज़ी शेख इसलाम और उनके मित्र-वर्ग शराअ के अनुगामी लोग हैं। वहाँ दज्जाल का बोलबाला है। दज्जालों द्वारा शासित लोग कयामत के शत्रु हैं।

ज. ६२- श्रीजी स्वरूप द्वारा भेजी हुई चिट्ठी पढ़कर लालदासजी नारायणदासजी के साथ चल पड़े। इस समय नूर मुहम्मद उनसे आकर मिले।

ज. ६३- नूर मुहम्मद और लालदासजी परस्पर ऐसी बातें करने लगे, "ये शराअ परस्त लोग हमारे कहने पर कभी भी ईमान लानेवाले नहीं हैं।"

ज. ६४- दिल्ली से प्रस्थान कर श्री लालदासजी तथा अन्य साथी तीसरे दिन श्रीजी स्वरूप के चरणों में आ पहुँचे।

→ श्री प्राणनाथजी को सम्पूर्ण वृत्तान्त सुनाया, जो उन सबके साथ हो रहा था, तब जाकर लालदासजी को श्रीजी द्वारा उन्हें तुरन्त वापस बुलाने का कारण पता चला।

ज. ६६- श्रीजी साहेब के दिव्य स्वरूप एवम् उनकी असीम कृपा के प्रताप को देखकर सभी लोग मन ही मन उनके प्रति कृतज्ञ हुए।

ज. ६७- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने कृपा करके लालदासजी महाराज को मृत्यु के मुख से निकालकर अपनी छत्र-छाया में सुरक्षित रख लिया।

ज. ६८- बीतककार श्री लालदासजी कहते हैं, "हे सुन्दरसाथजी! श्रीजी स्वरूप ने ही मुझे तथा ब्रह्मधाम के अन्य मोमिनों को अपनी छत्र-छाया में रखकर हमारी रक्षा की।"

– (प्रकरण ५५, सवाल जवाब नं. ६८, कुल सं. ३८१५+६८ =३८८३)।

❋ रसूल से मुनकर ❋

स. १ - कुरान धर्मग्रन्थ के दसवें सिपारे में मोमिनों के संघर्ष के विषय में किस जगह पर, क्या लिखा हुआ है?

स. २ - कुरान में वर्णित प्रतिष्ठित व्यक्ति कहाँ का था तथा उसने क्या अवज्ञा की थी?

स. ३ - कुरान में वर्णित छट्ठे दिन में मोमिन-ब्रह्मात्मा एकत्रित होंगे और दुनिया के सभी लोग सत्य धर्म मार्ग पर आने लगेंगे। अतः कुरान में वर्णित छठाँ दिन कौनसा है?

स. ४ - किस सदी में ब्रह्मात्माओं की आत्म-जागृति कही है और यह जागनीकाल कब तक चलता रहेगा? पुनः किसे इमाम की पहचान हुई?

स. ५ - सुन्दरसाथ कहाँ चर्चा करने बैठे हैं और सभी ने अपनी-अपनी जीवन-कहानी कही तथा तत्पश्चात् कहाँ की बातें याद की?

स. ६ - अनुभूति के आधार पर किसने गुप्त खिलवत के प्रकाश को साक्षी देकर व्यक्त किया?

ज. ६ - अपनी अनुभूति के आधार पर ब्रह्मात्माओं-मोमिनों ने साक्षी देते →

स. ७ - उक्त प्रसंग को सुनकर काज़ी को क्या हुआ तथा उसने क्या कहा?

❋ रसूल से मुनकर ❋

ज. १ - कुरान धर्मग्रन्थ के दसवें सिपारे के अन्तर्गत सत्ताईसवें पृष्ठ पर ब्रह्मात्माओं-मोमिनों और शराअ के अनुगामी आसुरी प्रवृत्तिवालों के बीच हुए ज्ञानयुद्ध-संघर्ष का प्रसंग लिखा है।

ज. २ - कुरान के अनुसार वह प्रतिष्ठित व्यक्ति कीनान का था। वह बादशाह के यहाँ काज़ी था। उसने रसूल द्वारा प्रेषित कयामत के आमंत्रण को ठुकराने की अवज्ञा की थी।

ज. ३ - कुरान ग्रन्थ में वर्णित छठाँ दिन यही है। अतः उस ग्रन्थाधार मोमिन-ब्रह्मात्मा एकत्र हो ही रहे हैं और दुनिया के सभी लोग भी सत्य धर्म मार्ग पर प्रवृत्त हो रहे हैं।

ज. ४ - कयामत का समय ग्यारहवीं सदी है। इसी समय ब्रह्मात्माओं की आत्म-जागृति कही है। ब्रह्मात्माओं का जागनीकाल दस वर्ष तक चलता रहेगा। सभी को श्रीजी के स्वरूप में इमाम की पहचान हुई।

ज. ५ - जागनी के ब्रह्माण्ड में जागृत सुन्दरसाथ परस्पर चर्चा करने बैठे हैं। सभी ने अपना-अपना वृत्तान्त, अपनी जीवन-कहानी कही और तत्पश्चात् अपने मूल स्वरूप-परात्मा की बातें याद की।

→ हुए जागनी के ब्रह्माण्ड के जागनी रास में गुप्त खिलवत के प्रकाश अर्थात् परमधाम के मूल मिलावा में परब्रह्म श्री राजजी से हुई चर्चा को व्यक्त किया ।

ज. ७ - उक्त प्रसंग को सुनकर काज़ी विमुख हो गया और बोला, "मेरे साथ हक की कोई चर्चा नहीं हुई। आप सब मेरे सम्मुख सर्वथा असत्य बातें कर रहे हो।"

स. ८ - सभी ब्रह्मात्माओं ने काज़ी के विचार को सुनकर उस शैतान काज़ी शेख इसलाम को क्या किया?

स. ९ - धर्मविरोधी लोगों ने किसे पथभ्रष्ट करने का प्रयास किया?

स. १०-किन सभी ने औरंगजेब और उसके कर्मचारियों को धिक्कारा और क्या कहा?

ज. १०- उक्त विषय शराअ के सभी लोगों ने औरंगजेब और उसके सेवकों →

स. ११-स्वामी श्री लालदासजी इस विषय में क्या कहते हैं?

स. १२-कैसे लोगों को, कैसी वस्तु दिखाई नहीं देती तथा दिखाई न देने की ठोस वजह क्या है?

ज. १२- अधर्म के पुतले अवज्ञाकारी, धर्मद्रोही दज्जालों को सत्य वस्तु →

❋ आकोट की बीतक ❋

स. १ - महामति श्री प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ जमात को लेकर बुढ़ानपुर से कहाँ गये और वहाँ कितने समय तक रहे ?

स. २ - पुनः वहाँ ठहरकर श्रीजी स्वरूप क्या करते रहे और आगे की योजना के विषय में क्या किया?

ज. ८ - सभी ब्रह्मात्माओं-मोमिनों ने काज़ी के विचार को सुनकर शरीअत के अनुगामी-अवज्ञाकारी शराअ के शैतान काज़ी शेख इसलाम को धिक्कारा ।

ज. ९ - धर्मविरोधी अवज्ञाकारी लोगों ने परमात्मा-ख़ुदा से मिलनेवालों को पथभ्रष्ट करने का प्रयास किया।

→ को धिक्कारा और कहा, "आसुरी प्रवृत्ति के गुलाम बने इन अधिकारियों ने हम सभी को परमधाम की हकीकत-यथार्थता एवम् परमात्मा की पहचान करानेवाला ज्ञान नहीं लेने दिया।"

ज. ११- बीतककार स्वामी श्री लालदासजी इस विषय में कहते हैं, "हे ब्रह्मात्माओं-मोमिनों! यह सब उस धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ़ में लिखी हुई भविष्यवाणी के अनुसार ही हुआ है।"

→ दिखाई नहीं देती और न ही वे उस पर विचार कर पाते हैं। उसकी ठोस वजह यह है कि इनके दिल, आँखों और कानों पर अज्ञान की मोहर लगी हुई है ।

-(प्रकरण ५६,सवाल-जवाब नं. १२, कुल सं. ३८८३+१२=३८९५)।

❋ आकोट की बीतक ❋

ज. १ - अपने श्री परमधाम के ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं की जमात को साथ लेकर श्री प्राणनाथजी बुढ़ानपुर से चलकर आकोट आ पहुँचे। वहाँ उन्होंने चार माह ठहरकर जागनी का कार्य किया।

ज. २ - आकोट में चार मास रहकर श्रीजी स्वरूप साथ की जागनी का कार्य करते रहे। पुनः सभी सुन्दरसाथ के समाचार मालूम किये और आगे क्या करना है, इस विषय में विचार किया।

स. ३ - औरंगाबाद में किसे पत्र भेजा गया था तथा उस पत्र में किस पर आधारित प्रश्न रखे गये थे?

स. ४ - वास्तविकता को याद दिलाते हुए उस पत्र में फतू अल्लाह को क्या लिखा हुआ था?

स. ५ - यदि फतू अल्लाह संसार के बीच मुहम्मद साहेब के हकीकी दीन का विरोधी न बना होता, तो क्या हो सकता था?

स. ६ - औरंगाबाद में धर्म पर समर्पित होनेवालों को किसने विचलित कर दिया था?

स. ७ - फतू अल्लाह का उक्त कार्य धर्मार्थ था या अधर्म? फतू अल्लाह खुदा का मित्र था या शत्रु?

स. ८ - फतू अल्लाह अपने आप को क्या समझता था? वह किसका उत्तर अवश्य देता?

स. ९ - श्रीजी स्वरूप फतू अल्लाह से कब उसके धर्म में प्रविष्ट होने को कह रहे हैं?

स. १०-क्या फतू अल्लाह श्रीजी स्वरूप को मुहम्मद साहेब के धर्म में प्रविष्ट करा सकता था? यदि हाँ, तो कैसे?

स. ११-क्या फतू अल्लाह कुरान में लिखे हुए ईश्वरीय वचनों को श्रीजी के प्रश्नों के अनुसार समझा सकता था? तब श्रीजी उन्हें क्या मानने को तैयार थे?

ज. ३ - औरंगाबाद में रहनेवाले फतू अल्लाह को प्रश्न-पत्र भेजा गया था। उस पत्र में कुरान के प्रारंभिक-मूल पर आधारित प्रश्न लिखकर रखे गये थे।

ज. ४ - वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए उस पत्र में फतू अल्लाह को लिखा गया था, "आप हमसे पहले भी धर्म-संघर्ष करने के लिए तैयार हुए थे।"

ज. ५ - यदि फतू अल्लाह संसार के बीच मुहम्मद साहेब के हकीकी दीन का विरोधी न बना होता, तो धर्म के यथार्थ रूप हकीकी दीन इसलाम का विस्तार हो जाता था। किंतु फतू अल्लाह ही अपने धर्म-विस्तार का विरोधी होकर बाधक बन गया।

ज. ६ - औरंगाबाद में जो लोग चर्चा सुनकर धर्म पर समर्पित हो रहे थे, उन्हें फतू अल्लाह ने विचलित कर दिया था।

ज. ७ - मुहम्मद साहेब के हकीकी दीन इसलाम के अनुसार उक्त कार्य अधर्म था। फतू अल्लाह खुदा का शत्रु और धर्म का विरोधी था।

ज. ८ - फतू अल्लाह अपने आप को कुरान का आरिफ-ब्रह्मज्ञान का जानकार समझता था। यदि वह कुरान का आरिफ होता, तो वह श्रीजी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर अवश्य देता।

ज. ९ - यदि फतू अल्लाह श्रीजी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दे, तो श्रीजी स्वरूप उसके इसलाम धर्म में प्रविष्ट होने को कह रहे हैं।

ज. १०- फतू अल्लाह श्रीजी स्वरूप को उनके द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देकर उन्हें मुहम्मद साहेब के धर्म में प्रविष्ट करा सकता था। किंतु वह ऐसा करने में असमर्थ रहा।

ज. ११- फतू अल्लाह कुरान में लिखे हुए ईश्वरीय वचनों को श्रीजी के प्रश्नों के अनुसार समझाने की ताकत नहीं रखता था। यदि उसमें आरिफ की शक्ति होती, तो वह समझाने में पीछे क्यों →

→ हटता? ऐसा कर सकने में समर्थ होने पर श्रीजी स्वरूप उसे आरिफ →

स. १२-यदि फतू अल्लाह धर्मज्ञ होता, तो श्रीजी स्वरूप द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिये बिना वह क्या नहीं करता था?

स. १३-यदि फतू अल्लाह श्रीजी के प्रश्नों का जवाब देकर उन्हें सन्तुष्ट करता, तो श्रीजी क्या करते थे?

स. १४-फतू अल्लाह द्वारा श्रीजी के प्रश्नों का जवाब दे देने पर कौन, किस लिए तत्पर बैठे हैं?

स. १५-फतू अल्लाह कौनसा महत्त्वपूर्ण कार्य छोड़कर पीछे हट रहा था?

स. १६-क्या फतू अल्लाह कुरान में लिखे नाजी फिरका में से है? यदि होता, तो वह क्या कर सकता था?

ज. १६- कुरान के अन्दर नाजी फिरका अर्थात् धर्मनिष्ठ मोमिनों की प्रशंसा →

स. १७-मुहम्मद साहेब के अनुसार बड़ी दरगाह की रूहें कितनी हैं? क्या फतू अल्लाह उनमें से है?

स. १८-अमेत सालून नामक ग्रंथ में किन रूहों की महिमा गायी है?

स. १९-यदि ब्रह्म के अंग मोमिन अथवा नूर बिलंद से आई रूहों में से फतू अल्लाह होते, तो वे अपना परिचय किस प्रकार देते?

→ मानने को तैयार थे।

ज. १२- यदि फतू अल्लाह धर्मज्ञ होता, तो जब तक वह श्रीजी स्वरूप द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर देकर श्रीजी स्वरूप को सन्तुष्ट नहीं कर देता, तब तक खाना-पीना तक को वर्जित समझकर अन्य कोई कार्य न करता।

ज. १३- यदि फतू अल्लाह श्रीजी के प्रश्नों का जवाब देकर उन्हें सन्तुष्ट करता, तो वह जो अथवा जैसा कहता, श्रीजी वैसा ही करते थे।

ज. १४- फतू अल्लाह द्वारा श्रीजी के प्रश्नों का जवाब दे देने पर हिन्दुओं के लाखों परिवार यथार्थ इसलाम धर्म को अपनाने के लिए तत्पर बैठे हैं।

ज. १५- फतू अल्लाह श्रीजी स्वरूप द्वारा पूछे गए प्रश्नों का जवाब देकर उन्हें सन्तुष्ट कर हिन्दुओं के लाखों परिवारों को इसलाम धर्म में शामिल करने जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य को छोड़कर पीछे हट रहा था।

→ लिखी हुई है। अतः यदि फतू अल्लाह कुरान में लिखे अनुसार नाजी फिरका में होता, तो वह श्रीजी स्वरूप को ब्रह्म प्रेरित वचनों के रहस्य से अवश्य अवगत करा सकता था।

ज. १७- बड़ी दरगाह-परमधाम के मूल मिलावे की जो आत्माएँ परब्रह्म श्री राजजी के चरणों में विराजमान हैं, उनकी संख्या मुहम्मद साहेब ने बारह हजार बतायी है। किन्तु फतू अल्लाह उनमें से नहीं है।

ज. १८- अमेत सालून नामक ग्रंथ में ब्रह्मात्माओं की बड़ी महिमा गायी है। कहा गया है कि उनके समान श्रेष्ठ अन्य कोई भी नहीं है।

ज. १९- यदि कुरान के आरिफ कहलानेवाले फतू अल्लाह ब्रह्म के अंग-मोमिन अथवा ब्रह्मसृष्टि अथवा नूर बिलंद से आई रूहों में से होते, तो वे श्रीजी द्वारा पूछे गए एक-एक प्रश्नों का उत्तर देकर उन्हें सन्तुष्ट कर अपना परिचय देते थे।

स. २०-ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाइबल में मोक्ष-धाम किस नाम से लिखा है? यदि फतू अल्लाह उस धाम से अवतरित हुए होते, तो क्या करते थे?

स. २१-क्या फतू अल्लाह कुरान शरीफ़ में वर्णित यहूदियों-खुदा की ओर पलटनेवालों में से हैं? यहूदियों के विषय में पैगम्बर ने क्या भविष्यवाणी की थी?

स. २२-"जिन यहूदियों के बीच मुहम्मद पातशाही करेंगे, वे कहाँ हैं, कौन हैं?" श्रीजी स्वरूप द्वारा ऐसा प्रश्न पूछने पर क्या फतू अल्लाह उसका जवाब दे पाया? इस प्रश्न का जवाब कौन दे सकेगा?

स. २३-कुरान शरीफ़ के अनुसार किसकी जमात सर्वश्रेष्ठ है?

स. २४-कयामत के समय बनी असराईल कहाँ से, कहाँ तक कमर बाँधेंगें, ऐसा कहा है?

स. २५-क्या फतू अल्लाह "उक्त कथित समुदायों में से वह स्वयं किस समुदाय में है"-इस बात का सप्रमाण उत्तर दे पाया? क्यों?

स. २६-यदि फतू अल्लाह उक्त प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ रहा, तो श्रीजी उसे क्या करने का आग्रह कर रहे हैं? कौन उसे नि:शंक बना सकते थे?

ज. २०- ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाइबल में मोक्ष-धाम का वर्णन *"लाहूत"* नाम से किया गया है। अतः यदि फतू अल्लाह उस लाहूत नामक धाम से अवतरित हुए होते, तो वे अपनी जानकारी प्रदान करने की कृपा अवश्य करते थे।

ज. २१- नहीं ! फतू अल्लाह कुरान शरीफ़ में वर्णित यहूदियों-खुदा की ओर पलटनेवालों में से नहीं हैं। पैगम्बर के भविष्यानुसार यहूदियों की जमात के बीच मुहम्मद आकर धर्म स्थापित करेंगे, ऐसा कहा है।

ज. २२- *"जिन यहूदियों के बीच मुहम्मद पातशाही करेंगे अथवा प्रथम धर्मराज्य स्थापित करेंगे, वे कहाँ हैं, कौन हैं?"* श्रीजी स्वरूप द्वारा ऐसा प्रश्न पूछने पर फतू अल्लाह कुछ भी नहीं कह पाया। अतः इस प्रश्न का जवाब तो वे ही दे सकेंगे, जो स्वयं उस जमात के होंगे।

ज. २३- कुरान शरीफ़ के अनुसार बनी असराईल की जमात सर्वश्रेष्ठ है।

ज. २४- कयामत के समय बनी असराईल धर्म प्रचार-प्रसारार्थ हजार महीने तक कमर बाँधकर खुदा परमात्मा के संदेश को संसार में फैलाएँगे, ऐसा कुरान में कहा है।

ज. २५- अपने आप को कुरान का आरिफ माननेवाला फतू अल्लाह इस बात का सप्रमाण उत्तर नहीं दे पाया क्योंकि वह इस बात को निश्चित ही नहीं कर पाया था। उसे अपनी पहचान नहीं थी।

ज. २६- यदि फतू अल्लाह "उक्त समुदायों में से वह किस समुदाय में है"-इस बात का सप्रमाण उत्तर देकर श्रीजी को सन्तुष्ट कर सकने में असमर्थ रहा, तो श्रीजी स्वरूप उसे अपने पास आने का आग्रह कर रहे हैं। श्रीजी स्वरूप ही उसे सारी बातों का उत्तर देकर निःशंक बना सकते थे।

स. २७-उक्त प्रकार के प्रश्नों के उत्तर की माँग कर, वह प्रश्न-पत्र किसे भेजा गया?

स. २८-क्या उक्त प्रश्नों का उत्तर वह दे सका? यदि नहीं, तो न देने पर उसे क्या हुआ?

स. २९-उक्त प्रकार के प्रश्न-पत्र औरंगाबाद से किस-किस के नाम पर भेजे गये?

स. ३०-यह सब कार्य कहाँ बैठकर किया गया? किस विषय का संदेश भेजा गया?

स. ३१-क्या उक्त लोगों ने प्रश्न-पत्र में लिखे विषयों पर विचार-विवेक किया? यदि नहीं, तो न करने की वजह क्या थी?

ज. ३१- उक्त प्रकार के प्रश्न-पत्र के विषय में उक्त विवेकहीन संसार के →

स. ३२-इसी समय कौन अपने भाई से भागकर यहाँ आ पहुँचा? क्यों?

स. ३३-उनको मानव के रूप में किसकी पहचान हुई थी? उसका परिणाम क्या हुआ?

स. ३४-अव्वल खाँ को श्री प्राणनाथजी ने क्या आशीर्वाद दिया और सलाह देते हुए क्या कहा?

ज. ३४- अव्वल खाँ को श्री प्राणनाथजी ने आशीर्वाद देते हुए कहा, "तुम्हें →

ज. २७- उक्त प्रकार से प्रश्न-पत्र बनाकर श्री प्राणनाथजी ने आकोट से औरंगाबाद फतू अल्लाह को भेज दिया।

ज. २८- उक्त प्रकार के संकेत लिखकर जब आकोट से फतू अल्लाह को प्रश्न-पत्र भेजा गया, तब उसके द्वारा किसी भी प्रश्न का समाधान नहीं हो पाया। अतः वह लज्जित हो गया।

ज. २९- उपरोक्त प्रकार के प्रश्न-पत्र औरंगाबाद से काज़ी हिदायतुल्ला, दीवान अमानत खाँ, बहादुर खाँ और फतू अल्लाह के नाम पर भेजे गये।

ज. ३०- यह सब कार्य आकोट में बैठकर किया गया। आकोट से सभी प्रमुख लोगों के पास कयामत का संदेश पहुँचाया गया ।

→ लोग माया में लिप्त होकर मुर्दे के समान हो जाने के कारण कुछ भी विचार-विवेक नहीं कर सके। सबके सब लज्जित होते हुए रह गए। कोई भी विचार-विवेक कर जवाब नहीं दे सके क्योंकि वे लोग यथार्थ में दीन इसलाम के सिद्धान्त की पहचान से भी रहित हैं। अतः वे क्या जवाब देंगे?

ज. ३२- इसी समय आकोट में अव्वल खाँ अपने भाई से अलग होकर भागकर आ पहुँचा क्योंकि उसे इमाम मेहदी की पहचान हो गयी थी।

ज. ३३- अव्वल खाँ को मानव के रूप में अपने हक की पहचान हो गयी थी। इसलिये वह कैसे रह सके? परिणाम यह हुआ कि वह मायावी-सांसारिक सम्बन्धियों के बीच नहीं रह सका।

→ संसार के व्यवहार तनिक भी आकर्षित न कर पायेंगे। तुम अपने परिवार में रहकर परमात्मा का चिन्तन करते रहो। जैसे ही हमें स्थायी ठिकाना मिल जाएगा, हम तुम्हें खबर करेंगे। हम तुमको अवश्य बुलायेंगे। तुम दुःखी और निराश न हो। तुम हमें आत्मा के समान प्रिय हो। तुम तो धैर्यवान् और शूरवीर मोमिन हो।"

स. ३५-पुनः अव्वल खाँ को श्रीजी साहेबजी स्वरूप ने क्या किया तथा किस लिए उसे चिन्तन आदि नियम पालन करने को कहा?

स. ३६-ऐसा किसने और किससे कहा, "आप धैर्यपूर्वक कुछ दिनों तक अपने भाइयों के साथ रहो"?

स. ३७-पुनः उसके उपरान्त अव्वल खाँ को श्रीजी स्वरूप ने क्या-क्या कहकर समझाया?

स. ३८-आकोट के किसने श्री प्राणनाथजी के स्वरूप की पहचान कर ली?

स. ३९-उन चौधरी ने श्रीजी स्वरूप की कैसे श्रद्धा-विश्वास से सेवा की?

ज. ३९- आकोट का चौधरी श्रीजी के सदुपदेश से अत्यन्त प्रभावित हुआ। →

स. ४०-चौधरी साहेब ने जमात सहित श्रीजी को कैसे आमंत्रित किया और पहुँचने पर क्या किया?

स. ४१-पुनः आमंत्रित कर बुलाने के पश्चात् चौधरी साहेब ने किस तरह से श्रीजी स्वरूप का आदर-सम्मान किया?

स. ४२-चौधरी साहेब ने किस ध्येय से जमात सहित श्रीजी स्वरूप को आमंत्रित किया था और क्या करके उसने अपने आप को धन्य-धन्य माना?

ज. ३५- अव्वल खाँ को श्री प्राणनाथजी ने सान्त्वना दी और परमात्मा प्राप्त करने के लिए चिन्तन आदि नियमों का पालन करने का उपदेश दिया।

ज. ३६- ऐसा श्रीजी स्वरूप ने अव्वल खाँ से कहा।

ज. ३७- उसके उपरान्त अव्वल खाँ को श्रीजी स्वरूप ने कहा, "अब शीघ्र ही ब्रह्मसृष्टियों की जागनी का कार्य प्रत्यक्ष होगा। तुम्हारी परात्मा परमधाम में बैठी है। वही अपना सच्चा घर है।"

ज. ३८- आकोट के चौधरी ने श्री प्राणनाथजी की पहचान कर ली।

→ सांसारिक गुरु मानकर जैसी सेवा की जाती है, उतना ही उसने श्रीजी स्वरूप का आदर-सत्कार किया। उसका विश्वास उतना ही था।

ज. ४०- चौधरी साहेब ने दो-चार बार प्रेमपूर्वक आग्रह से सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी को प्रीति-भोज के लिए आमंत्रित किया और पहुँचने पर बड़ा सम्मान किया।

ज. ४१- चौधरी साहेब ने बड़ी पवित्रता के साथ आचार-विचारों का पूरा ध्यान रखकर अच्छी तरह से श्रीजी को भोजन आरोगाया और उनकी सेवा की।

ज. ४२- आकोट के चौधरी ने समस्त सुन्दरसाथ को श्रीजी के साथ भोजन कराने के ध्येय से सादर आमंत्रित किया था। अपने पूरे परिवार और कुटुम्बीजनों सहित जमात के मध्य बैठकर उसने स्वयं भोजन कराया तथा अपने को धन्य-धन्य माना।

स. ४३-चौधरी साहेब ने किस मुताबिक चर्चा-कीर्तन आदि का सुख लिया?

स. ४४-किसकी जिज्ञासा पूर्ण करने के लिए आकोट में ठहरकर, श्री प्राणनाथजी ने क्या किया?

स.४५- आकोट में श्रीजी की चर्चा सुनने की इच्छा से कौन आया? वह कौन था?

स.४६- जब उसने श्रीजी के श्री मुख से चर्चा सुनी, तब उसे क्या हुआ?

स.४७- चर्चा सुनकर वह कैसा अनुभव करने लगा अथवा उसे कहाँ का अनुभव हुआ?

ज. ४७- उस ब्राह्मण को चर्चा सुनकर ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे दिव्य →

स.४८- उस ब्राह्मण की दशा कैसी हुई? वह हमेशा क्या कहने और क्या करने लगा?

ज. ४८- उक्त ब्राह्मण का अब फैल और हाल बदल गया । उसे अपने →

स.४९- वह ब्राह्मण जब श्री प्राणनाथजी के पास से अपने घर चला जाता था, तब घर जाकर भी वह क्या-क्या करते ही रहता था?

स.५०- उसकी स्थिति कैसी हो चुकी थी? उसे वास्तव में क्या प्राप्त हो गया था?

ज. ४३- चौधरी साहेब ने अपनी आत्मा के अंकुर के अनुसार चर्चा-कीर्तन और सेवा का सुख प्राप्त किया।

ज. ४४- आकोट के भक्तजनों की जिज्ञासा पूर्ण करने के लिए आवश्यकतानुसार आकोट में ठहरकर श्री प्राणनाथजी ने चर्चा-कथा आदि द्वारा जागनी कार्य किया।

ज. ४५- आकोट में एक ब्राह्मण श्रीजी की चर्चा सुनने की इच्छा से आया, जो बराड़ परगना के एक अधिकारी का गुमाश्ता अथवा कर्मचारी (मुनीम) था।

ज. ४६- उक्त ब्राह्मण ने जब श्रीजी साहेबजी के मुखारविंद की मधुरवाणी में सन्त कबीर की चर्चा सुनी, तो उसका हृदय द्रवित हो उठा।

→ दृष्टि प्राप्त हो जाने से उसके अन्तःकरण में प्रकाश हो आया हो। ऐसा दाव लग गया कि उसे अखण्ड धाम का साक्षात् अनुभव हो गया।

→ शरीर की सुधि ही न रही। उसकी सुरता नित्य धाम में रमण करने लगी। उसे किसी बात का ध्यान न रहता था। वह मगन होकर हमेशा, "तू ही तू है अर्थात् सब करने-करानेवाले आप ही हैं"-ऐसा कहने लगा।

ज. ४९- वह ब्राह्मण जब श्री प्राणनाथजी के पास से अपने घर चला जाता था, तब भी विचलित स्थिति में बार-बार घर से श्रीजी के चरणों में आता-जाता ही रहता था।

ज. ५०- उसकी स्थिति ताना कोरी के समान हो गई थी। उसे वास्तव में अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो गयी थी।

स.५१- जब कभी कोई भी उससे कुछ भी पूछता था, तब वह क्या जवाब देता था?

स.५२- वह अपने मुँह से कुछ नहीं कहता था और कभी कहता भी था, तो क्या कहता था?

स.५३- उसे समझाने के लिए कोई कुछ भी कहता, परन्तु वह कुछ नहीं कहता था, इसका कारण क्या था?

ज. ५३- उस ब्राह्मण को समझाने के लिए उससे यदि किसी भी बात की →

स. ५४-एक दिन प्रातः श्रीजी कहाँ और क्या कर रहे थे? तब सामने कौन आया, वह किसमें एकाग्र था? उसे किस बात का भान नहीं रहा? अतः वह कहाँ चला गया?

ज. ५४- एक दिन प्रातः श्रीजी स्वरूप नदी किनारे दातुन के लिए आये थे और दातुन कर रहे थे। तभी उन्होंने देखा कि सामने नदी के →

स. ५५-ध्यान में लीन उस ब्राह्मण का क्या हुआ? उसे पानी में बहते किसने देखा?

ज. ५५- श्रीजी के स्वरूप में एकाग्र हुए उस ब्राह्मण का जब ध्यान लग →

स. ५६-उस ब्राह्मण को नदी से किसने बाहर निकाला? उसके भीगे हुए कपड़े उतारकर उसे दूसरे कपड़े पहनाये गये। ये सब बातें उस ब्राह्मण को पता चली या नहीं? यदि नहीं, तो क्यों?

स. ५७-जब उस ब्राह्मण से भोजन के विषय में पूछा गया, तो उसने जवाब में क्या कहा?

ज. ५१- उस ब्राह्मण से जब कभी कोई भी कुछ भी पूछता था, तो वह एक ही जवाब अर्थात् *"तुम ही हो-तुम ही हो"* इतना ही कहता था।

ज. ५२- वह ब्राह्मण अपने मुँह से और कुछ नहीं कह पाता था। कभी कुछ कहता भी, तो बस इतना ही कहता था, "मैं आपकी शरण में आया हूँ।"

→ चर्चा की जाती, तो उसके मुँह से एक शब्द भी न निकलता था। वह सुनकर चुप रह जाता था। इसका कारण था कि उसकी सुरता अक्षर धाम में स्थिर हो गई थी।

→ उस पार से वह ब्राह्मण आ रहा है। आते-आते उसकी दृष्टि श्रीजी पर पड़ी और वह श्रीजी स्वरूप में ही एकाग्र हो गया। उस समय उसे अपने शरीर की सुधि न रही। वह कहाँ जा रहा है, बीच में क्या आया है आदि किसी भी बात का उसे कुछ भान न रहा। आते-आते वह सीधे नदी में ही प्रवेश कर गया और पानी में बहता चला गया।

→ गया, तो वह अपनी सुध-बुध खो बैठा। वह ब्राह्मण नदी के बीच गिर पड़ा और बहते चला जा रहा था। तब श्रीजी स्वरूप ने उसे बहते हुए देखा।

ज. ५६- श्रीजी के कहने पर जो श्रीजी के पास थे, वे भाई दौड़कर नदी में कूद पड़े और उसे पकड़कर बाहर निकाला। उसके गीले कपड़े उतारकर सुखाए गए और पुनः उसे पहनाए गए। इन सब बातों का भी उसे भान नहीं था क्योंकि उसकी सुरता अक्षर धाम में पहुँच चुकी थी।

ज. ५७- भोजन-प्रसाद के विषय में पूछने पर उस ब्राह्मण ने कहा, "मुझे तो कुछ भी स्मरण नहीं है। घर के आस-पास के लोगों का कहना है, "हमें विश्वास है कि इसकी रसोई में तीन दिन से भोजन ही नहीं बना।"

स. ५८-उक्त दशा में पहुँचे ब्राह्मण का श्रीजी ने क्या किया?

स. ५९-श्री प्राणनाथजी ने उसे किस विषय में बहुत समझाया? न मानने पर श्रीजी स्वरूप ने उसका क्या किया?

स. ६०-उस ब्राह्मण के भाइयों ने किस तरह उसे उसके घर पहुँचा दिया?

स. ६१-उस ब्राह्मण की आत्मा ने श्रीजी के सान्निध्य में जमात के बीच कितना सुख प्राप्त किया?

स. ६२-उस ब्राह्मण का नाम क्या था? पुनः वह कहाँ का रहनेवाला था?

स. ६३-परमात्मा प्राप्ति के लिए श्रीजी में उसकी कैसी श्रद्धा थी?

स. ६४-श्री प्राणनाथजी आकोट से जमात के साथ चलकर कहाँ पहुँचे?

स. ६५-श्रीजी स्वरूप कापस्तानी पहुँचकर वहाँ क्या करने लगे? वहाँ कितने जन धर्म में आये?

ज. ६५- कापस्तानी में अपने घर-धाम की आत्माओं के बीच बैठकर →

स. ६६-मूल घर-श्री निजधाम की थोड़ी-सी पहचान मिलते ही जमात के बीच कौन आया?

ज. ५८- उसकी उक्त दशा देखकर श्रीजी ने उसके ध्यान को वापस संसार की ओर लौटा लिया।

ज. ५९- श्री प्राणनाथजी ने उसे अपने घर लौट जाने के विषय में बहुत समझाया, किन्तु वह अपने घर वापस जाने के लिए तैयार नहीं हुआ। तब श्रीजी ने उसके भाइयों को बुलवाया।

ज. ६०- उस ब्राह्मण के भाई उसे पालकी में बैठाकर ले गये और उसके घर पहुँचा दिया।

ज. ६१- उस ब्राह्मण की आत्मा में पार का जितना अंकुर प्रस्फुटित था, उसने उतना ही सुख प्राप्त किया। अपनी योग्यता एवम् अधिकार से अधिक नहीं पा सका।

ज. ६२- उस ब्राह्मण का नाम शुकदेव था। वह उदयपुर का रहनेवाला था।

ज. ६३- उस ब्राह्मण ने श्रीजी के चरणों में परमात्मा की प्राप्ति के लिए अपनी आत्मा सौंप दी थी। उसके भाग्य में जितना सुख लिखा था, वह उतना ही प्राप्त कर सका।

ज. ६४- महामति श्री प्राणनाथजी आकोट से चलकर ब्रह्ममुनि समाज सहित कापस्तानी आ पहुँचे।

→ श्रीजी स्वरूप परमधाम की चर्चा करने लगे। वहाँ तीन जन मिले, जिनका नाम है-दगड़ा, दत्ता और अमराजी भाई। ये तीनों ही श्री परमधाम की जमातवाले साथी थे।

ज. ६६- मूल घर-श्री निजधाम की थोड़ी-सी चर्चा सुनने के उपरान्त अमराजी भाई भी निजानन्द धर्म में आ गए।

स. ६७-अमराजी भाई धर्म में किस प्रकार दीक्षित हुए?

ज. ६७- अमराजी भाई चर्चा में अपने कुटुम्बीजनों और परिवार के सदस्यों →

स. ६८-श्री प्राणनाथजी कापस्तानी से अपने सुन्दरसाथ समाज को लेकर कहाँ गये?

स. ६९-अच्छाजी! श्रीजी साहेबजी कापस्तानी नामक गाँव में कितने दिन रहे? पुनः वहाँ से एलचपुर पहुँचते ही उन्हें किसने रोक लिया?

स. ७०-परसाजी भाई ने श्री प्राणनाथजी के चरणों में क्या प्रार्थना की?

ज. ७०- श्री प्राणनाथजी के चरणों में हाथ जोड़कर परसाजी भाई ने कहा, →

स. ७१-परसाजी भाई के गाँव में तीन-चार दिन ठहरने के पश्चात् श्रीजी ने किस ओर प्रस्थान किया?

स. ७२-राह में चलते समय श्रीजी स्वरूप को कैसे फकीर मिले? उन्होंने श्रीजी की क्या सेवा की?

स. ७३-क्या वे फकीर श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनकर जाग गए?

स. ७४-एलचपुर से चलकर जमात के साथ श्रीजी स्वरूप कहाँ पहुँचे और वहाँ कितने दिन रहे?

→ को साथ लेकर आए। किन्तु अखण्ड नित्य धाम के प्रति पक्का विश्वास होने के कारण केवल अमराजी ही सुन्दरसाथ समाज का अंग बन पाए।

ज. ६८- उक्त प्रकार कापस्तानी में पाँच-दस दिन ठहरकर श्रीजी अपने साथियों सहित एलचपुर चले आए ।

ज. ६९- श्री प्राणनाथजी कापस्तानी गाँव में पाँच-दस दिन ठहरकर पुनः एलचपुर पहुँचे । एलचपुर से जमात के साथ जुलूस आगे बढ़ रहा था कि बीचों-बीच परसाजी भाई ने आकर जमात को रोक लिया।

→ "यदि आप साथी-समुदाय सहित यहीं ठहरें, तो मैं आपकी खूब सेवा करूँगा। मेरे बहुत सारे ज्वारी के खेत-खलिहान हैं। अतः मैं आप सबके भोजन का भार वहन कर सकता हूँ।"

ज. ७१- एलचपुर गाँव में परसाजी भाई के घर तीन-चार दिन ठहरकर उन्हें सेवा का लाभ प्रदान कर श्री प्राणनाथजी ने जमात सहित देवगढ़ की ओर प्रस्थान किया।

ज. ७२- एलचपुर से आगे मार्ग में अनेकों पड़ावों पर ठहरना पड़ा। मार्ग पर चलते समय उन्हें किसी संघ के एक फकीर-साधु मिले। उन्होंने कुछ साखियाँ देकर श्री प्राणनाथजी की सेवा की।

ज. ७३- वे फकीर श्री प्राणनाथजी की अलौकिक चर्चा सुनकर मात्र प्रभावित ही हुए। परन्तु श्रीजी के स्वरूप के रहस्य की पहचान नहीं कर सके। अतः जागृत नहीं हुए।

ज. ७४- श्री प्राणनाथजी अपनी ब्रह्मांगना-जमात के साथ एलचपुर से चलकर देवगढ़ पहुँचे और वहाँ चार दिन ठहरे।

स. ७५-कहाँ के, किसने श्री प्राणनाथजी के संदेश पर ध्यान नहीं दिया?

स. ७६-देवगढ़ से चलकर साथी-समुदाय सहित श्री प्राणनाथजी कहाँ आये?

स. ७७-देवगढ़ से रामनगर पहुँचने के पहले बीच में जमात सहित श्री प्राणनाथजी को कितने स्थानों पर ठहरना पड़ा? क्या करते हुए आगे बढ़ रहे हैं?

स. ७८-देवगढ़ से रामनगर जाते समय श्रीजी स्वरूप किस पर सवार होकर चले?

स. ७९-उक्त उत्कृष्ट कोटि के घोड़े पर विराजमान श्रीजी स्वरूप के साथ चलता ब्रह्ममुनियों का लशकर कैसा लगता था?

स. ८०-ब्रह्ममुनियों का वेश कैसा है? ब्रह्ममुनि उदर पोषणार्थ क्या-क्या करते हुए चल रहे हैं?

ज. ८०- समस्त ब्रह्ममुनियों ने संन्यासी भेष धारण किया हुआ है और →

स. ८१-उक्त सभी सुन्दरसाथ सहित श्रीजी स्वरूप की वेश-भूषा, साज-सज्जा कैसी थी?

स. ८२-संन्यासी भेष की महिमा जान और समझकर किसने संन्यासी भेष धारण कर लिया था?

ज. ७५- देवगढ़ में रामटेकरी के राजा ने श्रीजी के संदेश पर विशेष ध्यान नहीं दिया। इसलिए वहाँ अन्य लोगों ने भी कुछ विचार नहीं किया।

ज. ७६- देवगढ़ से चलकर ब्रह्मात्माओं की जमात के साथ श्री प्राणनाथजी रामनगर आ पहुँचे।

ज. ७७- देवगढ़ से रामनगर जाते समय श्री प्राणनाथजी को जमात सहित अनेकों स्थानों पर रुकना पड़ा। कई पड़ाव आए और उन स्थानों पर रुक-रुककर आगे बढ़े तथा चर्चा-उपदेश के माध्यम से जन-जागरण करते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

ज. ७८- देवगढ़ से रामनगर जाते समय श्री प्राणनाथजी की सवारी के लिए सफेद रंग का उत्कृष्ट घोड़ा था। उसी पर सवार होकर श्रीजी स्वरूप आगे बढ़े।

ज. ७९- उत्कृष्ट कोटि के सफेद घोड़े पर सवार श्रीजी साहेबजी के साथ चलता ब्रह्ममुनियों का लशकर राजा के संग फौज की तरह सुशोभनीय लगता था।

→ उदर पोषणार्थ घर-घर से रोटी के टुकड़े माँगते चल रहे हैं। झोलियों में घर-घर से रोटियाँ माँगकर लाते हैं और महाप्रभु श्री प्राणनाथजी को अर्पित करके परस्पर प्रसाद बाँटते,ग्रहण करते चल रहे हैं।

ज. ८१- उक्त सभी सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी की वेश-भूषा, साज-सज्जा संन्यासियों की-सी थी। वैरागी भेष में वे सब प्रकार से सुशोभित लगते थे।

ज. ८२- अक्षरातीत धाम की ब्रह्माङ्गनाओं ने संन्यासी भेष की महिमा को पहचानकर, जान और समझकर स्वयं ही संन्यासी भेष धारण कर लिया था।

स. ८३-कौन लोग उस भेष की महत्ता को समझने की शक्ति से रहित हैं?

स. ८४-रामनगर आते समय श्रीजी स्वरूप कहाँ ठहरना चाहते थे और वहाँ क्यों नहीं ठहरे?

ज. ८४- महाप्रभु श्री प्राणनाथजी रामनगर आते समय गोंड़ों के गाँव में →

स. ८५-कौन श्रीजी स्वरूप को पहचान नहीं सके? अतः उन्होंने कैसा व्यवहार किया?

स. ८६-किसके साथ और किस लिए मोमिनों को संघर्ष करना पड़ा?

स. ८७-धर्म अभियान पथ पर चलते-चलते जमात सहित श्रीजी स्वरूप कहाँ आ पहुँचे?

स. ८८-रामनगर में जमात सहित श्रीजी स्वरूप किस जगह पर, किस नदी के किनारे अथवा किसके सामने ठहरे?

स. ८९-केतकी घाट में श्रीजी की भावभीनी चर्चा सुनकर सर्वप्रथम कौन धर्म में शामिल हुए?

स. ९०-उक्त भाई के पीछे-पीछे कौन-कौन निजानन्द सिद्धान्त में शामिल हुए?

स. ९१-अन्य कितने जन और कौन-कौन ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों की जमात में शामिल हुए?

ज. ८३- सांसारिक अंधमतिवाले लोग संन्यास भेष की महत्ता को समझने की शक्ति से रहित हैं। अतः वे इस भेष की महिमा को अथवा इस भेष को धारण करने की शक्ति को प्राप्त नहीं कर सकते।

→ ठहरना चाहते थे। किन्तु दज्जाल ने गोंड़ों के मन में बैठकर उपद्रव मचाया। अतः श्रीजी स्वरूप वहाँ नहीं ठहरे। वहाँ से सीधे रामनगर चल पड़े।

ज. ८५- गोंड़ों के गाँव में रहनेवाले गोंड़ जाति के लोग श्रीजी के दिव्य स्वरूप को पहचान नहीं सके। अतः उनके साथ उन्होंने अनुचित व्यवहार किया।

ज. ८६- गोंड़ जाति के लोगों की अज्ञानता के कारण मोमिनों को उनसे संघर्ष करना पड़ा।

ज. ८७- धर्म अभियान पथ पर चलते-चलते जमात सहित श्री प्राणनाथजी रामनगर आ पहुँचे।

ज. ८८- रामनगर में गणेश महन्त के मकान के सामने ही केतकी नदी के किनारे अस्तबल जैसा एक स्थान बनाया गया। उस अस्तबल में ही श्रीजी स्वरूप जमात सहित विराजमान हुए।

ज. ८९- रामनगर में केतकी घाट पर श्रीजी की भावभीनी चर्चा सुनकर सर्वप्रथम छत्तई भाई परिवार सहित सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुए।

ज. ९०- छत्तई भाई के पीछे-पीछे सुकई भाई और चूड़ामन भाई भी निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में प्रविष्ट हुए।

ज. ९१- अन्य सात जन अर्थात् कुंजा भाई, वीरजी भाई, रामरतन, गंगा और सन्ता बेटी, कौशल्याबाई तथा जातमल भाई ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों की जमात में शामिल हुए।

स. ९२- कौन-कौन श्रीजी के चरण में समर्पित हुए और कौन-कौन समाज में आकर मिले?

स. ९३- एचदे से कौन अपना सब कुछ परित्याग कर श्रीजी की छत्र-छाया में आ पहुँचे?

स. ९४- मकरन्ददास जातमाल भाई श्री प्राणनाथजी की जमात में कैसे शामिल हुए?

स. ९५- गोकुलदास जातमाल भाई ब्रह्मात्माओं की जमात में कैसे-किस प्रकार शामिल हुए?

स. ९६- श्रीजी के प्रति किन्हें और क्या उत्पन्न हुआ? वे क्या बखान करते हुए जमात में आ मिले?

स. ९७- जयन्तीदास जातमाल भाई को किसके प्रति, क्या हुआ? वे किसे समाज में ले आये?

स. ९८- निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में कौन प्रविष्ट हुए? कौन बाद में निजानन्द सिद्धान्त में अपना परिवार भी ले आई?

स. ९९- श्रीजी की चर्चा से प्रभावित होकर नानक पंथी कौन-कौन निजानन्द सिद्धान्त में सम्मिलित हुए?

स.१००- कौन श्रीजी के प्रति विश्वास उत्पन्न होने पर भी घर वापस लौट गये? वे कहाँ से आये थे?

ज. ९२- सूरतसिंह अपने तन, मन, धन सहित श्रीजी की शरण में समर्पित हुए। पुनः देवकी नन्दन भाई भी विश्वासपूर्वक साथी-समाज में आकर मिले। वे बड़े ध्यान से चर्चा श्रवण किया करते थे।

ज. ९३- एचदे से जगन्नाथ जातमाल भाई अपना सब कुछ छोड़कर श्रीजी की छत्र-छाया में आ पहुँचे।

ज. ९४- मकरन्ददास जातमाल अपने परिवार सहित ब्रह्ममुनियों की जमात में शामिल हुए।

ज. ९५- पुनः गोकुलदास जातमाल अपने परिवार को लेकर ब्रह्ममुनियों की जमात में प्रविष्ट हुए।

ज. ९६- श्री सुन्दरदास भाई के दिल में श्रीजी के प्रति निष्ठा उत्पन्न हुई, तो वे अपने विश्वास का बखान करते हुए जमात में आकर मिल गए।

ज. ९७- जयन्तीदास जातमाल भाई को श्रीजी के प्रति पूर्ण विश्वास हो गया। तब वे अपना परिवार भी सुन्दरसाथ जमात के बीच ले आए।

ज. ९८- हीरामन भाई और लड़ेतीबाई निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में प्रविष्ट हुए। बाद में चन्दाबाई निजानन्द सिद्धान्त में अपना परिवार भी ले आई। इसके पहले ही उन्हें श्रीजी स्वरूप के प्रति विश्वास हो आया था।

ज. ९९- श्रीजी की चर्चा से प्रभावित होकर नानक पंथी जैसे सुन्दरदास, ननियांबाई और लीलाबाई अत्यधिक सुख की आशा से निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में शामिल हो गए।

ज.१००- बुढ़ानपुर से आये हुए मूसेखां पठान को श्रीजी के प्रति विश्वास उत्पन्न हो गया, किन्तु जब वे घर वापस गए, तो फिर परिवार में ही रह गये।

स.१०१- श्रीजी के बाह्य-वैरागी भेष की पहचान किस-किस को हुई? वे चर्चा में कैसे आया करते थे?

स.१०२- किस भाई ने राह में श्रीजी की चर्चा सुनी? उसने श्रीजी के प्रति विश्वास लाकर क्या किया? वे कहाँ की-कौनसी चर्चा सुनते ही जाग उठे?

स.१०३- कान्हजी भाई कहाँ के थे और कहाँ आए थे? कौन-कौन मन्त्र और चर्चा से प्रभावित होकर धर्म पर समर्पित हो गये?

स.१०४- कौन-कौन भाग्यवान् साथी समाज में शामिल हुए, जिनका श्रीजी स्वरूप के प्रति पूर्ण विश्वास था?

स.१०५- किसे-किसे तारतम ज्ञान की चर्चा से, किन-किन विषयों का अन्तर स्पष्ट हो गया?

ज.१०५- श्रीजी के मुखारविंद से जब राजू भाई, भंडारिन, रायकुंवर →

स.१०६- अन्य कौन-कौन श्रीजी की अलौकिक चर्चा सुनकर निजानन्द धर्म पर समर्पित हुए?

स.१०७- कौन-कौन साथी जागृत होकर सुन्दरसाथ समाज में सम्मिलित हुये?

स.१०८- कौन-कौन भाई श्रीजी की चर्चा से परमधाम पहुँचानेवाली राह के साथी बने?

ज.१०१- श्री प्राणनाथजी स्वरूप के बाह्य-वैरागी भेष की पहचान रंचोबाई बढ़ई और जयंती काका को हुई। वे उनके दर्शनार्थ मन में विश्वास लेकर चर्चा में आया करते थे।

ज.१०२- मुरलीधर भाई ने श्री प्राणनाथजी की चर्चा राह में सुनी थी। वे उनके प्रति विश्वास लेकर आए और धर्म पर समर्पित हुए। वे अपनी परात्मा की चर्चा सुनते ही जाग उठे।

ज.१०३- कान्हजी भाई आहेड़ गाँव के निवासी थे। वे आहेड़ से एचदे चले गए थे। गोकुलदास और मकरन्द भाई तारतम मंत्र एवम् अलौकिक ज्ञानरूपी चर्चा सुनकर निजानन्द धर्म पर समर्पित हो गये।

ज.१०४- निजानन्द सिद्धान्त मार्ग में आनेवाले भाग्यवान् साथियों में कौशल्या, देमाबाई, मथुरीबाई, श्री राम, राजाराम और भागोबाई हैं। इनका श्रीजी स्वरूप के प्रति पूर्ण विश्वास था।

→ आदि ने तारतम ज्ञान की चर्चा सुनी, तब इन सबको माया और ब्रह्म तथा संसार और परमधाम आदि विषयों का अन्तर स्पष्ट हो गया।

ज.१०६- हिमौतीबाई, खेमाबाई, आशाबाई, शंभु भाई, मन्ना तथा रामकुंवर आदि श्रीजी की अलौकिक चर्चा सुनकर निजानन्द धर्म पर समर्पित हुए।

ज.१०७- श्री प्राणनाथजी की चर्चा श्रवण द्वारा जागृत होकर सुन्दरसाथ समाज में शामिल होनेवालों में जीवनदास, नवलदास, कल्याण भाई, महासिंह चौधरी और दौलत खाँ पठान आदि हैं।

ज.१०८- श्रीजी साहेबजी के मुखारविंद से निकली सुमधुर वाणी-अलौकिक चर्चा से प्रभावित होनेवालों में पूरन नाई, आशाराम, आशा लल्लू और परशुराम भाई हैं। ये लोग श्रीजी स्वरूप की →

→ चर्चा से प्रभावित होकर परमधाम पहुँचानेवाली राह के साथी →

स.१०९- कौन-कौन अपने परिवार सहित श्रीजी के दिव्य स्वरूप की पहचानकर निजानन्द सिद्धान्त में विश्वास के साथ आए?

स.११०- रघुनाथ भाई श्रीजी के चरणों में कैसे और क्यों आये?

स.१११- उक्त कथित सुन्दरसाथ कहाँ-किस पड़ाव में धर्म में सम्मिलित होने आये?

स.११२- किन लोगों ने यहाँ श्रीजी की चर्चा-कथा में आकर, कैसा सुख प्राप्त किया?

स.११३- बुढ़ानपुर से कौन आये और वे कहाँ आकर ब्रह्मात्माओं के समाज में शामिल हुए?

स.११४- नारायणदास सहित अन्य कहाँ से आए हुए लोग श्रीमन्निजानन्द धर्म में शामिल हुए?

स.११५- अन्य कितने जन और कौन-कौन आकर धर्म पर समर्पित हुए? उनके कैसे बन्धन टूट गए ?

ज.११५- अन्य छः जन जैसे-लच्छीदास, खेमकरण भाई, कन्नड़ भाई, →

स.११६- किनकी माताजी परब्रह्म परमात्मा के अनुपम स्वरूप की चर्चा सुनकर धर्म में शामिल हुईं?

→ बने।

ज.१०९- श्री प्राणनाथजी के दिव्य स्वरूप की पहचानकर उनके प्रति पूर्ण विश्वास कर निजानन्द सिद्धान्त में परिवार सहित आनेवालों में मुख्य हैं-शेख खिदर, अब्दुल रहमान और भिखारीदास।

ज.११०- श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त अन्तर्गत रघुनाथ भाई पूर्ण विश्वास के साथ तथा अपने परिवार के सभी कुटुम्बीजनों को लेकर श्रीजी के चरणों में समर्पित होने आए।

ज.१११- उक्त कथित सुन्दरसाथ रामनगर के पड़ाव में धर्म में सम्मिलित होने आये।

ज.११२- उक्त वर्णित लोगों ने अपने अंकुरित सम्बन्ध के अनुसार अपने भाग्य का सुख प्राप्त किया।

ज.११३- बुढ़ानपुर से वृन्दावन भाई आये। वे बुढ़ानपुर से रामनगर आये और ब्रह्मात्माओं के समाज में शामिल हो गये।

ज.११४- भाई नारायणदास सहित बराड़ से आये हुए लोग श्रीमन्निजानन्द धर्म-सिद्धान्त में शामिल हुए।

→ हरिकृष्ण, शुकदेव एवम् गिरधर भाई आकर श्री निजधाम के धर्म मार्ग पर समर्पित हुए। इन लोगों के सांसारिक सुख की इच्छाओं के बन्धन टूट गए।

ज.११६- गिरधर भाई की माताजी-खड़गोबाई और जगरूप भाई श्रीजी के मुख से परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के सुन्दर अनुपम स्वरूप की चर्चा सुनकर श्री निजानन्द धर्म पर समर्पित हो गए।

स.११७- कौन दो भाई रामनगर में आकर जमात में शामिल हुए? किन्होंने, किनके द्वारा आत्मीय सुख प्राप्त किये?

स.११८- वे कौन-कौन हैं, जो रामनगर में श्रीजी की चर्चा सुनकर आत्म-ज्ञान प्राप्त कर सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुये?

ज.११८- श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनकर आत्म-ज्ञान प्राप्त कर आत्म- →

स.११९- वे लोग कौन हैं, जो रामनगर में श्रीजी की चर्चा सुनकर अन्तर से ही जागरूक बने?

ज.११९- रामनगर केतकी घाट में श्री प्राणनाथजी की मधुर और रोचक →

स.१२०- महामति के सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा लेकर पवित्र मन से कौन धर्म में शामिल हुये?

ज.१२०- महामति श्री प्राणनाथजी के श्रीमन्निजानन्द सिद्धान्त के प्रति →

स.१२१- कौन यहाँ, किस काम से आई और आकर सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुई?

स.१२२- सिद्धपुर के वे दोनों कौन-कौन हैं, जो भक्ति-भाव से धर्म के प्रति आसक्त हुए?

स.१२३- किस भाई ने श्रीजी के भेष के प्रति मुग्ध होकर उन्हें अपने घर ले जाकर प्रेमपूर्वक जिमाया?

ज.११७- गंगाराम और शेख़ बदल भाई रामनगर में आकर पुनः निजानन्द धर्म समाज में शामिल हुए। इन्होंने श्री प्राणनाथजी की चर्चा श्रवण कर आत्मीय सुख प्राप्त किया।

→ ज्ञान में परिपक्व-दृढ़ हो जाने पर निम्नलिखित सुन्दरसाथ विशेष रूप से सुन्दरसाथ समुदाय के एक अंग बन गये। इन लोगों के नाम इस प्रकार हैं। जैसे-पतिराम मोदी, केशवदास, वल्लभदास और मनियाँबाई आदि।

→ वाणी सुनकर अन्तर से ही जागरूक बनी आत्माओं में गिरधर राय, बसन्त भाई, दयाल, हसन, बिहारी फ़राश और बिहारी रोशन आदि साथ हैं।

→ पवित्र मन से निष्ठा लेकर धर्म में आनेवालों में अग्रगण्य हैं - गिरधर दर्जी, सूरजमल, गोविन्द राय, लालमणि भाई और निर्मलदास आदि।

ज.१२१- पुनः खेमकर भाई की माताजी जातमाल भाई के काम से आई थीं। लेकिन वे यहाँ आकर सुन्दरसाथ समाज में शामिल हो गईं।

ज.१२२- सिद्धपुर के रेवादास और भगवानदास भाई आत्म-ज्ञान प्राप्त कर निजानन्द धर्म में शामिल हुये। ये दोनों भाई सिद्धपुर, पाटन से दामोदर भाई के साथ भक्ति-भावना से धर्म के प्रति आसक्त हुए।

ज.१२३- उदय तिवारी भाई के मन में स्वामी श्री प्राणनाथजी के संन्यासी भेष को देखकर श्रद्धा उत्पन्न हुई। उन्होंने श्रीजी को अपने घर ले जाकर प्रेमपूर्वक जिमाया।

स.१२४- श्रीजी की चर्चा सुनने के लिए कौन आते थे, परन्तु वे रामनगर में ही बस गये?

स.१२५- बीतककार यहाँ ब्रह्मनिष्ठ सुन्दरसाथ से क्या कह रहे हैं? स्पष्ट करो।

ज.१२५- बीतककार यहाँ ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों से कहते हैं, "यहाँ तो मात्र आप लोगों को रामनगर में जागृत हुई उन आत्माओं का परिचय →

❁ रामनगर की बीतक ❁

स. १ - सूरत सिंह ने सुजान शाह को किसके विषय में समाचार देकर सचेत किया?

स. २ - सुजान शाह के साथ कौन भाई, कहाँ और किस लिए आये?

स. ३ - कौन श्री प्राणनाथजी की चर्चा सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और घर जाकर क्या विचार करने लगे? पुनः श्रीजी से क्या प्रार्थना की?

ज. ३ - हरिसिंह महाप्रभु श्री प्राणनाथजी की ओजस्विनी चर्चा सुनकर →

स. ४ - किसकी प्रार्थना स्वीकार कर स्वामीजी ने प्रबन्ध करने का आदेश दिया?

ज.१२४- श्री प्राणनाथजी की चर्चा मात्र श्रवण के लिए चाँद खाँ आते थे। श्रीजी के प्रति उनके मन में निष्ठा उत्पन्न करने में कई प्रयास करने पड़े। तत्पश्चात् वे रामनगर में ही बस गये।

→ कराया गया, जो श्रीजी के मुखारविंद से तारतम की चर्चा सुनकर धर्म-सिद्धान्त में शामिल हुई। रामनगर की बीतक तो अब शुरू होगी।"

- (प्रकरण ५७, सवाल-जवाब नं. १२५, कुल सं. ३८९५+१२५ =४०२०)।

❋ रामनगर की बीतक ❋

ज. १ - सूरत सिंह ने सुजान शाह को श्री प्राणनाथजी के केतकी घाट पर आकर विराजमान होते ही श्री प्राणनाथजी के आगमन के विषय में समाचार देकर सचेत किया।

ज. २ - सुजान शाह की उक्त बातें सुनकर हरिसिंह भाई सुजान शाह के संग श्रीजी के दर्शनार्थ आये।

→ बड़े ही प्रसन्न हुए। पुनः घर वापस पहुँचकर उन्होंने स्वामीजी और साथियों को प्रीति-भोज के लिए निमंत्रित करने का विचार किया। उन्होंने स्वामीजी से प्रार्थना की, "आप मेरे घर आने की अनुकम्पा कीजिये। मैं आपकी सेवा करने की अभिलाषा रखता हूँ।"

ज. ४ - हरिसिंह भाई की उक्त प्रार्थना और उनके आग्रहपूर्ण निमंत्रण को स्वीकार करके श्रीजी ने उन्हें घर जाकर प्रबन्ध करने का आदेश दिया।

स. ५ - हरिसिंह की विनम्रता और भक्ति-भाव देखकर श्रीजी ने प्रेमपूर्वक उनसे क्या बातें की?

स. ६ - हरिसिंह ने दूसरे दिन श्री प्राणनाथजी को अपने घर बुलाकर कहाँ बैठाया?

स. ७ - साथ में आये हुए सुन्दरसाथ को हरिसिंह ने कहाँ बैठाया और वह स्वयं क्या करने लगा?

स. ८ - हरिसिंह भाई ने श्रीजी साहेबजी को कैसे बैठाया? पुनः सुन्दरसाथ को किस तरह बैठाया और किस मन से सेवा में लग गया?

स. ९ - सर्वप्रथम हरिसिंह ने क्या किया? तत्पश्चात् वह क्या करने में व्यस्त रहा? कौन वहाँ रसोईघर से भोजन सामग्री ला-लाकर परोस रहे थे?

स. १०-कैसी-कैसी सामग्रियाँ और अन्य कैसे स्वादिष्ट व्यंजन परोसे जा रहे थे?

स. ११-हरिसिंह ने श्री प्राणनाथजी को क्या (कितना) समझकर उनकी ऐसी सेवा की?

स. १२-हरिसिंह ने मात्र श्रीजी को ही आमंत्रित कर उनकी सेवा की या सुन्दरसाथ की भी?

ज. ५ - हरिसिंह का विनम्र भक्ति-भाव देखकर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने उनसे प्रेमपूर्वक बातें करते हुए कहा, "आप घर जाकर भोजन की व्यवस्था कीजिये। हम लोग आपके यहाँ अवश्य आयेंगे।"

ज. ६ - हरिसिंह ने दूसरे दिन श्रीजी स्वरूप को अपने घर बुलाया। पुनः श्रीजी स्वरूप का बड़ा आदर-सत्कार करते हुए उन्हें उच्चासन पर आसीन किया।

ज. ७ - श्रीजी स्वरूप के साथ आये हुए सभी सुन्दरसाथ को हरिसिंह ने चौकियों पर बैठाया और स्वयं धोती पहनकर प्रेमपूर्वक भोजन परोसने की सेवा में तत्पर हुआ।

ज. ८ - हरिसिंह भाई ने महाप्रभु श्रीजी साहेब को भलीभाँति उचित उच्चासन पर बैठाया। उनके सम्मुख दायें-बायें दो पंक्तियों में ब्रह्मात्माओं को बिठाया। पुनः अपना अहोभाग्य समझकर अतिमुदित मन से सेवा करने लगा।

ज. ९ - सर्वप्रथम हरिसिंह ने पत्तल परोसे। तत्पश्चात् वे स्वामीजी को पंखा से हवा करने में व्यस्त रहे। उसके साथी भलीभाँति विभिन्न प्रकार की भोजन-सामग्री रसोईघर से ला-लाकर परोसने लगे।

ज. १०- भोजन में मेवा-मिठाई, पकवान आदि एक के बाद एक सामग्रियाँ परोसी जा रही थी। पुनः अनेक प्रकार के अचार एवम् अन्य स्वादिष्ट व्यंजन भी परोसे गये।

ज. ११- हरिसिंह भाई ने श्रीजी साहेब की बाह्य वेश-भूषा देखकर उच्चातिउच्च कोटि का साधु-संत मानकर उनकी ऐसी सेवा की। वह श्रीजी स्वरूप की वास्तविक पहचान नहीं कर पाया ।

ज. १२- हरिसिंह ने मात्र श्री प्राणनाथजी की ही नहीं, अपितु समस्त सुन्दरसाथ जमात को आमंत्रित कर अच्छे प्रकार से उनकी भी सेवा की।

स. १३-हरिसिंह भाई ने प्रेम से भोजन कराने के बाद क्या सेवा की?

स. १४-भोजन आरोगाने और पान का बीड़ा अर्पित करने के पश्चात् हरिसिंह श्रीजी स्वरूप को कहाँ ले गया?

स. १५-हरिसिंह ने श्रीजी स्वरूप को अपनी अटारी में ले जाकर प्रेमपूर्वक आन्तरिक भाव से उनसे क्या प्रार्थना की?

ज. १५- हरिसिंह ने श्रीजी को अपनी अटारी पर बैठाकर उनसे बहुत ही →

स. १६-उसके आन्तरिक कष्ट निवारणार्थ की हुई प्रार्थना सुनकर श्रीजी ने क्या किया?

स. १७-आत्म-जागृति की बातें किस पर निर्भर करती हैं? किसके अभाव में जागृत बुद्धि नहीं आती?

स. १८-हरिसिंह भाई श्रीजी के साथ रहकर भी क्या नफा प्राप्त कर नहीं सके?

स. १९-श्रीजी से विदा लेकर जब हरिसिंह अपने कार्यालय में गया, तब उसके दुश्मन के ऊपर क्या कष्ट आ पड़ा?

ज. १९- श्रीजी से विदा लेकर जब हरिसिंह अपने कार्यालय-दरबार के →

स. २०-कुंवर किशोरी सिंह ने श्रीजी स्वरूप के रामनगर आगमन की बात सुनकर क्या किया?

ज. १३- उपरोक्त प्रकार से श्रीजी साहेब और समस्त सुन्दरसाथ को प्रेम से भोजन-प्रसाद कराने के बाद हरिसिंह भाई ने जमात सहित श्रीजी साहेबजी को पान का बीड़ा अर्पित किया।

ज. १४- भोजन आरोगाने और पान का बीड़ा सेवा में अर्पित करने के बाद हरिसिंह श्रीजी साहेबजी को एकान्त में अपनी अटारी पर ले गया।

→ प्रेमपूर्वक आन्तरिक भाव दिखाते हुए हाथ जोड़कर प्रार्थना की, "मैं आपका सेवक हूँ। मुझ पर बहुत बड़ा उपकार करके आपने मेरे घर तक आने का कष्ट किया। मैं संसार के कष्टों से अब तंग आ गया हूँ। आप ऐसी कृपा कीजिए, जिससे यह माया मेरे अधीन हो जाय।"

ज. १६- हरिसिंह की विनयपूर्वक आन्तरिक प्रार्थना सुनकर श्रीजी साहेब ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा, "आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। चिन्ता नहीं करना।"

ज. १७- आत्म-जागृति की बातें परमधाम के पूर्व अंकुरित सम्बन्ध पर निर्भर करती हैं। आत्म-जागृति के अभाव में जागृत बुद्धि नहीं आती।

ज. १८- हरिसिंह भाई के भाग्य में जितना आनन्द लिखा था, उन्होंने श्रीजी के साथ रहकर भी उतना ही आनन्द प्राप्त किया। वे आत्म-जागृति तथा जागृत बुद्धि जैसे गहन तत्त्वों को प्राप्त कर नहीं सके।

→ लिए चला और श्रीजी स्वरूप साथ सहित अपने डेरे में वापस आ गये, तब हरिसिंह के दुश्मन पड़ोसी के ऊपर ऐसी आपत्ति टूट पड़ी की वह अपना घर ही छोड़कर दूर चला गया।

ज. २०- भाई कुंवर किशोरी सिंह को जब पता चला कि श्रीजी साहेबजी का रामनगर में आगमन हुआ है, तब यह बात सुनते ही वह श्रीजी के दर्शनार्थ आ गया।

स. २१-श्रीजी स्वरूप को किस प्रकार और क्या पहचानकर किशोरी सिंह धर्म में दीक्षित हुआ?

ज. २१- कुंवर किशोरी सिंह ने जब श्रीजी के मुखारविंद से अखण्डानन्द →

स. २२-कुंवर किशोरी सिंह के महल में रहनेवालों ने श्रीजी के प्रति क्या भाव प्रकट किया?

स. २३-किस कारण से उन महल में रहनेवालों को श्रीजी की पूर्ण पहचान नहीं हो सकी?

ज. २३- उन महल में रहनेवालों को श्रीजी स्वरूप की पहचान न होने →

स. २४-कुंवर किशोरी सिंह ने श्रीजी को अपने घर ले जाकर क्या-क्या करने का दृढ़ निश्चय किया?

स. २५-उसके मन में कैसा विचार आया और किस तरह उसका परमात्मा के प्रति विश्वास बढ़ा?

ज. २५- कुंवर किशोरी सिंह ने प्रीति-भोज का नम्रतापूर्वक निमंत्रण स्वामीजी की सेवा में कहला भेजा। उसने मन में यह दृढ़ निश्चय →

स. २६ - कितने दिन पश्चात्, किशोरी सिंह सुन्दरसाथ सहित श्रीजी को अपने घर में पधराकर क्या कहने लगा?

ज. २६- कुछ दिनों के पश्चात् कुंवर किशोरी सिंह महामति श्री प्राणनाथजी →

स. २७-उसने जमात सहित श्रीजी स्वरूप को अपने घर ले जाकर उनकी किस प्रकार सेवा की? श्रीजी ने उसकी मनोकामना कैसे पूरी कर दी?

→ प्रदान करनेवाली चर्चा सुनी, तो उसकी समझ में आ गया कि ये महात्मा एक उच्च कोटि के सन्त हैं। अतः ऐसा जानकर वह श्रीजी से अत्यंत प्रभावित हुआ तथा सुन्दरसाथ समाज में दीक्षित हो गया।

ज. २२- कुंवर किशोरी सिंह के महल में रहनेवालों, उनके परिवार के अनेक सदस्यों ने भी श्री प्राणनाथजी के प्रति श्रद्धा-विश्वास प्रकट किया।

→ का कारण यह था कि वे सभी लोक तथा कुल मर्यादारूपी सांसारिक ऐश्वर्य के मोह-बन्धन में जकड़े हुए थे। वे आत्मीय दृष्टि प्राप्त नहीं कर सके थे अथवा श्रीजी से आत्म सम्बन्ध नहीं जोड़ पाये थे। श्रीजी की वास्तविक पहचान उन्हें नहीं हुई थी।

ज. २४- कुंवर किशोरी सिंह ने श्रीजी को अपने घर ले जाकर भोजन कराने का दृढ़तापूर्वक निश्चय किया।

→ किया, "हम महाप्रभु को अपने घर लाकर उनकी सेवा करेंगे।" मन में ऐसा विचार करते हुए वह श्रीजी के दर्शन करने गया। वहाँ बैठकर उसे चर्चा सुनने का अवसर मिला। दिव्य ज्ञान की अनोखी चर्चा सुनकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। अतः उसके मन में परमात्मा के प्रति विश्वास और बढ़ गया।

→ को ससम्मान अपने घर ले गया। समस्त सुन्दरसाथ भी श्रीजी स्वरूप के साथ गये। ऐसी शुभ घड़ी पाकर किशोरी सिंह बोल उठा, "आज का दिन धन्य है। मेरा अहोभाग्य है, जो आप मेरे घर पधारे।"

ज. २७- कुंवर किशोरी सिंह ने जमात सहित श्रीजी स्वरूप को अपने घर ले जाकर बड़ी पवित्रता से रसोई में भोजन-सामग्री तैयार करवाई। श्रीजी को उचित सम्मानित आसन पर आसीन किया। समस्त →

→ साथी श्रीजी को घेरकर भोजन करने बैठे। इस प्रकार श्रीजी →

स. २८-उसने व्यंजन आदि से भरा थाल लाकर कैसे श्रीजी स्वरूप के सामने रख दिया?

स. २९-अन्य सुन्दरसाथजी की भी किस प्रकार सेवा कर उसने अपनी इच्छा पूरी की?

स. ३०-उसने किस प्रकार के भाव प्रदर्शित कर अंकुर मुताबिक सुख प्राप्त किया?

स. ३१-किशोरी सिंह के घर में कौन आती थी? उसने श्रीजी स्वरूप के अन्दर किसके दर्शन प्राप्त किये? उसे किसकी पहचान होने लगी?

स. ३२ वह कैसे आती थी? पुनः श्रीजी स्वरूप के चरण में क्या अर्पित कर वापस जाती थी? उसे क्या मिल गया?

ज. ३२- वह प्रतिदिन कोई न कोई वस्तु लेकर ही श्री प्राणनाथजी के →

स. ३३-कबीर पंथवाले कौन और कैसे चर्चा सुनते थे? उन्होंने क्या किया और श्रीजी के चरणों में क्या प्रार्थना की?

ज. ३३- कबीर पंथ में दीक्षित आशाराम भाई नित्य प्रति प्रेम एवम् विश्वासपूर्वक चर्चा सुनने आया करते थे। वे निष्ठापूर्वक श्रीजी →

स. ३४-इस प्रकार रामनगर में जागनी का कार्यक्रम चल ही रहा था कि बीच में दज्जाल किस रूप में आ गया?

ज. ३४- उक्त प्रकार रामनगर में जागनी का कार्यक्रम जोरों से चलता →

→ स्वरूप ने किशोरी सिंह की मनोकामना पूरी कर दी।

ज. २८- कुंवर किशोरी सिंह ने विभिन्न प्रकार के मेवा-मिठाइयों, पकवानों एवम् अन्य नाना प्रकार के व्यंजनों से भरा थाल लाकर बड़े प्रेम और आदरपूर्वक श्रीजी स्वरूप के आगे रख दिया।

ज. २९- अन्य समस्त सुन्दरसाथजी को भी विभिन्न प्रकार की भोजन सामग्रियाँ परोसकर कुंवर किशोरी सिंह ने भली प्रकार से सबकी सेवा की और अपनी इच्छा पूरी की।

ज. ३०- कुंवर किशोरी सिंह ने अपने आन्तरिक प्रेम से भली प्रकार सेवा-भाव प्रदर्शित कर सर्वदा सेवा-कार्यों में संलग्न रहकर उसके अन्दर धाम का जितना अंकुर था, उसी के अनुसार सुख प्राप्त किया।

ज. ३१- कुंवर किशोरी सिंह के घर में एक दासी आती थी। उसने श्री प्राणनाथजी के दिव्य स्वरूप में परमात्मा के दर्शन किये। उसे अपनी आत्मा की कुछ-कुछ पहचान होने लगी।

→ दर्शन करने आती थी। लाई हुई सामग्री श्रीजी स्वरूप को अर्पित कर चरणों में प्रणाम कर वह लौट जाती थी। उसे अपने अखण्ड धाम की खुशबू मिल गई।

→ की चर्चा सुनते थे। मन में अत्यंत प्रसन्न होकर आशाराम भाई ने सुन्दरसाथ सहित महामति श्री प्राणनाथजी को प्रीति-भोज कराने का एक उत्सव मनाया और स्वामीजी से प्रार्थना की, "मैं सदैव आपके चरणों की छत्र-छाया में रहना चाहता हूँ। अतः आप मुझे सदैव इसी स्थिति में रहने का वरदान देने की कृपा कीजिये।"

→ देखकर दज्जाल मिरगी की बीमारी का रूप धारण करके जमात के बीच घुस गया और अपना ऐसा बल दिखाने लगा कि मानों आजूज-माजूज साक्षात् रूप में प्रकट हो गये हों।

स. ३५-उस दज्जाल का नाम क्या था? उसने अपना प्रभाव जमाकर क्या किया?

ज. ३५- उस दज्जाल का नाम था आजूज-माजूज। उसने अपना प्रभाव →

स. ३६-यहाँ कैसे सुन्दरसाथ धाम चले?

स. ३७-उदयपुर के रहनेवाले कौन भाई अपने परिवार सहित श्रीजी के चरणों में आये थे?

स. ३८-किसका छोटा पुत्र महामारी की चपेट में आकर धामधनी की शरण में पहुँचा?

स. ३९-अन्त में अपने सांसारिक सम्बन्ध के अनुसार पति की आत्मा के पास कौन पहुँची?

स. ४०-सूरत से जमात सहित श्रीजी के संग चले आनेवालों में से कौन-कौन साथ चले? वे कैसी आत्माओं में से थे?

स. ४१-उक्त जनों के साथ अन्य कौन भाई थे? उनका क्या हाल हुआ?

स. ४२-महामारी में किन भाई का चलना हुआ, जो ठट्ठा नगर के सर्वस्व त्यागी थे?

स. ४३-हमेशा साथ में रहनेवाले किनकी आत्मा जहाँ से आई थी, वहीं पहुँच गई?

→ जमाकर महामारी के दुष्प्रभाव द्वारा बड़ी संख्या में धाम के साथियों को खींच लिया। इस महामारी ने सुन्दरसाथ समुदाय से कइयों को छीन लिया।

ज. ३६- यहाँ ऐसे साथी धाम चले, जिन्होंने धर्म के लिए अपना तन,मन,धन श्रीजी के चरणों में सौंप दिया था।

ज. ३७- उदयपुर के रहनेवाले ईश्वरदास भाई अपने परिवार सहित श्रीजी के चरणों में आये थे। उन्होंने अपनी आत्मा श्रीजी के चरणों में सौंप दी थी। वे माया से संघर्ष करते हुए धामवासी हुए।

ज. ३८- ईश्वरदास भाई का छोटा पुत्र तूंगा महामारी की चपेट में आकर धराशायी हो गया और धामधनी की शरण में जा पहुँचा।

ज. ३९- गोवर्धन भाई की पत्नी रूकमा अपने पति के धाम चलने के पश्चात् कुछ समय तक सुन्दरसाथ समाज में रही। पुनः अन्त में सांसारिक सम्बन्ध के अनुसार अपने पति की आत्मा के पास जा पहुँची।

ज. ४०- सूरत से जमात सहित श्रीजी के संग चले आनेवालों में से कान्हजी और रामजी भाई धाम चले। ये श्रीजी के चरणों में आत्मदान करनेवाली आत्माओं में से थे।

ज. ४१- उक्त जनों के साथ छबीला नामक पुत्र भी था। वह भी महामारी की चपेट में आ गया था। किन्तु उस प्रकोप से वह बच गया।

ज. ४२- श्यामलदास भाई, जिनका नाम चिंतामणि था, वे ठट्ठा नगर से सर्वस्व त्यागकर साथी समुदाय सहित यहाँ तक आए थे। महामारी की चपेट में आकर इनकी आत्मा भी अपने धाम पहुँच गयी।

ज. ४३- सदैव श्रीजी के साथ-साथ रहनेवाले निरमलदास भाई भी यहाँ धाम चले। उनकी आत्मा जहाँ से आई थी, वहीं पहुँच गई।

स. ४४-कौन और कहाँ के भाई श्री प्राणनाथजी के साथ कैसे चले थे?

स. ४५-कौन भाई पाटन के थे, जो धाम के अंकुर के अनुसार सुख प्राप्त कर धाम चले?

ज. ४५- दामोदर भाई ने पाटन में अपनी आत्मा श्रीजी के चरणों में सौंपी →

स. ४६-कौन भाई कुछ दिनों तक सुन्दरसाथ के संग रहकर धामवासी हुए?

स. ४७-परब्रह्म श्री राजजी की इच्छा से कौन भाई धाम चले जो मायारूपी दज्जाल के दुश्मन थे?

स. ४८-सांसारिक कार्य-भार छोड़कर आई कौन सखी इस महामारी की चपेट में आकर परमधामवासी हुई?

स. ४९-कौन बाई बुढ़ानपुर से परिवार छोड़कर श्रीजी के साथ आयी थी और धाम चली?

स. ५०-कौन बाई श्रीजी स्वरूप के सत्संग का लाभ लेकर श्री राजजी की चरण-शरण में पहुँची?

स. ५१-कहाँ के, कौन भाई अपने भाग्यानुसार सुन्दरसाथ के बीच रहकर सुख लेकर धाम चले?

स. ५२-किसकी पत्नी धाम चली, जो दिल्ली से आयी थी और सदैव श्रीजी की आज्ञा में ही रहती थी?

ज. ४४- उक्त निरमलदास भाई सूरत से अपना सर्वस्व छोड़कर महामति श्री प्राणनाथजी के संग चले थे।

→ थी। वे धाम के अंकुर के अनुसार श्रीजी के सत्संग में रहे और सुख प्राप्त कर धाम चले। इनका श्रीजी के प्रति विश्वास कभी कम नहीं हुआ।

ज. ४६- मासूम फकीर कुछ दिनों तक सुन्दरसाथ समाज के संग-संग चलते रहे। वे भी रामनगर में धामवासी हुए। उनकी आत्मा जहाँ से आई थी, वहीं पहुँच गई।

ज. ४७- मलूकचन्द राठौर, जो राजपूत थे, उन्हें परब्रह्म श्री राजजी की इच्छा के आगे कोई संसार में रख नहीं सका। वे भी यहाँ धामवासी हुए। मायारूपी दज्जाल-दुश्मन का उन्होंने डटकर सामना किया।

ज. ४८- गुलजी भाई की धर्मपत्नी, जिनका नाम हमीबाई था, वे भी सांसारिक कार्य-भार छोड़कर श्रीजी की चरण-शरण में आ गई थी, वे भी इसी बीमारी की चपेट में आकर परमधामवासी हुईं।

ज. ४९- मथुराबाई बुढ़ानपुर से कुटुम्ब परिवार छोड़कर साथी समुदाय के साथ रामनगर तक आयी थीं और धाम चली ।

ज. ५०- मथुराबाई अपने अंकुर के अनुसार श्रीजी के सत्संग का लाभ लेकर परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के समीप आ पहुँची।

ज. ५१- बुढ़ानपुर से आनेवाले एक गरीब फकीर का पुत्र भी अपने भाग्यानुसार सुन्दरसाथ के बीच रहकर अखण्ड सुख प्राप्त कर धाम चला।

ज. ५२- बनारसी भाई की पत्नी लाड़कुंवरिबाई, जो दिल्ली से आयी थीं, वे सदैव श्री प्राणनाथजी की आज्ञा में ही रहती थीं और अपने धाम में पहुँचकर वहाँ के अखण्ड सुख में मग्न हुईं।

स. ५३-सदैव श्रीजी की सेवा में रहनेवाली कौन सखी भाग्यानुसार सुख लेकर धाम चली?

स. ५४-श्यामबाई कौन थीं? उन्होंने अपना नश्वर पञ्चभौतिक तन कहाँ छोड़ा?

स. ५५-कौन सखी धाम के अंकुर के अनुसार सुन्दरसाथ के बीच रहकर सुख प्राप्त कर धाम चली?

स. ५६-कौन बाई अपने भाग्यानुसार सुख प्राप्त कर मार्ग में ही धाम सिधार गयी?

स. ५७-सदानन्द और त्रिलोकदास कहाँ से आए थे? वे कितने समय साथ में रहकर अपनी परात्मा में उठे?

स. ५८-महामारी के रूप में प्रकट हुए दज्जाल ने क्या कर डाला?

स. ५९-इस महामारी का प्रकोप कब तक रहा? अन्त में श्रीजी स्वरूप ने किस प्रकार साथ की रक्षा की ?

ज. ५९- इस दज्जालरूपी महामारी का प्रकोप कुछ दिनों तक रहा। पुनः →

स. ६०-महामारी के प्रकोप को देखते हुए सुन्दरसाथ परस्पर क्या सोचने लगे?

ज. ६०- उक्त प्रकार जब सुन्दरसाथ एक साथी का अंतिम संस्कार कर वापस लौटते थे, तो दूसरा साथी तैयार हो जाता था। दूसरे का →

ज. ५३- नन्दराम की माता मानबाई सदैव श्रीजी की सेवा में रहती थीं। वे श्री प्राणनाथजी की सेवा में तत्पर रहकर अपने भाग्य के अनुसार अखण्ड सुख की अनुभूति कर श्री परमधाम चली।

ज. ५४- श्यामबाई लालबाई की सुपुत्री थीं। उन्होंने गढ़ा में अपने नश्वर शरीर का परित्याग किया।

ज. ५५- श्यामबाई ने अपने धाम के अंकुर के अनुसार सुन्दरसाथ के बीच रहकर सुख प्राप्त किया और उसी सुख का अनुभव करते हुये वे धाम चली गयीं।

ज. ५६- खेमदास की माताजी गोमाबाई मार्ग में ही धाम सिधार गयीं। अपने भाग्य के अनुसार वे साथी समुदाय में रहकर जहाँ से आई थीं, वहीं जा विराजीं।

ज. ५७- उदयपुर से आये हुए सदानन्द और त्रिलोकदास रामनगर तक सुन्दरसाथ के बीच रहे। कुछ दिनों तक श्रीजी की सेवा और सत्संग में रहकर उनकी आत्मा भी अपने ठिकाने जा पहुँची।

ज. ५८- महामारी के रूप में प्रकट हुए दज्जाल ने धाम के अनेकों साथियों को छीन लिया। सुन्दरसाथ एक साथी का अंतिम संस्कार कर लौटते, तो यहाँ दूसरा साथी धाम चल पड़ता।

→ परब्रह्म श्री राजजी की आज्ञा से वह शान्त हो गया। अन्त में श्रीजी ने मूल स्वरूप के चरणों में फरियाद की, तब श्री राजजी के हुकम से महामारी का प्रकोप निर्मूल हो गया।

→ अंतिम संस्कार कर लौटे नहीं कि तीसरा तैयार हो जाता था। इस प्रकार का कार्य क्रमशः दो-तीन दिनों तक चला, तो साथियों में यह डर फैल गया, "आज ये धाम चले। हम इन्हें उठाकर अंतिम संस्कार के लिए ले जा रहे हैं। न जाने कल हमें कौन उठाकर अंतिम संस्कार के लिए ले जाये!"

स. ६१-इस समय दिल्लीवाले बादशाह ने पुरदल खाँ को क्या आज्ञा दी?

ज. ६१- इस प्रकार की परिस्थिति के बीच ही अचानक बादशाह औरंगजेब →

स. ६२-दिल्लीवाले बादशाह की आज्ञा सुनते ही पुरदल खाँ ने किसे हुकम किया?

स. ६३-पुरदल खाँ के प्रतिनिधि के रूप में बादशाह का संदेश लेकर ललकारते हुए कौन आया?

स. ६४-अहदी शेख खिदर उस समय कहाँ से, किसे और क्या धमकी देते हुए आया?

स. ६५-शेख खिदर ने रामनगर के राजा से क्या कहा?

ज. ६५- अहदी शेख खिदर गढ़ा से ही रामनगर के राजा को ललकारते →

स. ६६-शेख खिदर ने बादशाह का कहना न मानने पर क्या करने के लिए कमर बाँधने को कहा?

स. ६७-उसने राजा को क्या करने पर "आप दोषी ठहराये जायेंगे"-ऐसा कहा?

स. ६८-शेख खिदर की बातें सुनकर रामनगर के राजा ने क्या किया?

ज. ६८- उक्त प्रकार से शेख खिदर की बातों को सुनकर और समझकर →

→ ने पुरदल खाँ को आज्ञा देकर कहा, "रामनगर में जो संन्यासी साधु रहते हैं, तुम जाकर उनकी जाँच-पड़ताल करो कि वे कौन हैं? कहाँ से आये हैं? क्या करते हैं और किस उद्देश्य को लेकर घूम रहे हैं?"

ज. ६२- बादशाह औरंगजेब की उक्त प्रकार की बातें सुनकर पुरदल खाँ ने साथियों की जाँच-पड़ताल करने के लिए शेख खिदर को आज्ञा देकर भेजा।

ज. ६३- पुरदल खाँ के बदले में अहदी-प्रतिनिधि के रूप में बादशाह का संदेश लेकर ललकारते हुए शेख खिदर आया ।

ज. ६४- अहदी शेख खिदर गढ़ा से ही पुकार कर रामनगर के राजा छत्रसाल को दिल्लीवाले की धमकी देते हुए रामनगर आया।

→ हुए कहते आया, "मैं संन्यासियों को लेने आया हूँ। आप उन्हें पकड़कर हमारे हवाले कर दीजिये। अन्यथा बादशाह ने आपके ऊपर चढ़ाई करने की आज्ञा दी है।"

ज. ६६- शेख खिदर ने बादशाह का कहना न मानने पर बादशाह औरंगजेब से लड़ाई करने के लिए कमर बाँधने को कहा।

ज. ६७- उसने राजा से कहा, "हम बादशाह की आज्ञा से आपके यहाँ आये हैं। यदि इस कार्य में आपने विलम्ब किया, तो आप दोषी ठहराये जायेंगे।"

→ राजा ने कोतवाल को यह कहकर भेजा, "आप जाकर स्वामी कृष्णदासजी से कहिये कि हमारी ऐसी दशा हो गयी है। आप तो हमारी विवशता से परिचित ही हैं। अतः केवल कुछ दिनों के लिए ही आप यहाँ से अन्यत्र चले जाइये।"

स. ६९-रामनगर के राजा का कोतवाल क्या संदेशा लेकर श्रीजी के पास आया?

ज. ६९- रामनगर के राजा के कोतवाल ने आकर श्रीजी से कहा, "आप →

स. ७०-कोतवाल का नम्रतापूर्ण संदेश सुनकर श्रीजी स्वरूप ने राजा को क्या संदेश भेजा?

ज. ७०- कोतवाल का नम्रतापूर्ण संदेश सुनकर स्वामी प्राणनाथजी ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया, "हम बादशाह से डरते नहीं हैं। हमें →

स. ७१-कोतवाल ने राजा के पास जाकर विनम्रतापूर्वक क्या कहा?

ज. ७१- श्री प्राणनाथजी का उक्त संदेशा लेकर कोतवाल राजा के पास →

स. ७२-कोतवाल की बात सुनकर राजा ने दूसरी बार श्रीजी को क्या-कैसा संदेश भेजा?

ज. ७२- श्री प्राणनाथजी की उक्त साहसपूर्ण बातें सुनकर राजा ने पुनः कोतवाल को भेजकर श्रीजी को कहलवाया, "हम दूसरी बार आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप मात्र कुछ ही दिनों के लिए अन्यत्र जाने की कृपा करें। हमें इस बात का भय है कि हम अपने राज्य में →

स. ७३-राजा की बातें सुनकर पुनः श्रीजी स्वरूप ने कोतवाल के साथ क्या संदेशा भेजा?

ज. ७३- राजा की उक्त बातें सुनकर श्रीजी स्वरूप ने कोतवाल के साथ यह संदेशा भेजा, "आप लोग तनिक भी चिन्ता न करें। औरंगजेब को हमारी नज़रों के सम्मुख आने दें। हम स्वयं ही उनसे निपट लेंगे। उन लोगों के दुःसाहस का हम पर तनिक भी प्रभाव नहीं →

→ कुछ दिनों के लिए अन्यत्र ठहर जाइये। पुनः भले ही यहाँ आ जाइयेगा। फिर जब तक चाहें, यहीं रहें। आप तो जानते ही हैं कि हम अभी बादशाह का दबाव सहन नहीं कर सकते। उनकी एक लाठी के निर्देश को भी हम टाल नहीं सकते।"

→ पकड़ने के लिए वे शीघ्र ही क्यों नहीं आ जाते? हम तो बादशाह के आने की ही राह देख रहे हैं। हम तो सोचते हैं कि वह किसी तरह हमें अपने पास बुला ले। आप राजा से जाकर कह दें कि आप लोग अपने घर में निश्चिंत होकर बैठे रहें। हमारा पक्ष लेकर हमारी सहायता भी न करें।"

→ पहुँचा और उसने विनम्रतापूर्वक राजा से कहा, "ये वैरागी तो कहते हैं कि उन्हें औरंगजेब द्वारा पकड़े जाने का किंचित् भी भय नहीं है। वे कहते हैं-बादशाह या उनके सेनापतियों को आने दीजिये। हम स्वयं ही उनसे निपट लेंगे। आप इस सम्बन्ध में हमारा पक्ष लेकर हमारी सहायता अथवा रक्षा न करें।"

→ आपकी रक्षा करने का धर्म निभा नहीं पायेंगे। बादशाह के लोग यदि हमारे राज्य में से आपको पकड़कर ले जायेंगे तो हमारी प्रतिष्ठा पर आघात लग जायेगा। हमारी लाज नहीं रह पायेगी। अतएव आप दस-बीस कोस की दूरी पर कहीं अन्यत्र छिप जायें। हम आपको निश्चय ही वापस बुला लेंगे।" राजा की आज्ञा से कोतवाल पुनः स्वामीजी के पास आया और उसने प्रार्थना करते हुए कहा, "राजा ने यह विनय अपने स्वार्थ हेतु किया है।"

→ पड़ सकता। ये अवज्ञाकारी लोग हमारी चर्चा को सुनकर, वाणी के रहस्यों को समझकर स्वयं ही नम्र बनकर द्रवित हो जायेंगे।" पुनः श्रीजी ने कोतवाल से कहा, "आप राजा साहेब से कहिये कि वे किसी प्रकार की शंका अथवा भय से अपने मन को उद्विग्न न करें। परब्रह्म परमात्मा की आज्ञा से हमें पकड़ने के लिए आनेवाले बादशाह या उसके सेवक स्वयं ही परास्त हो जायेंगे। यह कार्य सहज ही हो जायेगा।"

स. ७४-श्रीजी द्वारा भेजी हुई खबर सुनकर राजा आश्चर्यचकित क्यों हो उठा?

ज. ७४- कोतवाल जब महाप्रभु श्री प्राणनाथजी द्वारा भेजी हुई खबर लेकर →

स. ७५-तब पुनः तीसरी बार अपने भाई सुवंशराय को भेजकर राजा ने श्रीजी के पास क्या संदेशा कहलवाया?

ज. ७५- उक्त प्रकार से आश्चर्यवत् होकर राजा ने सुवंशराय को श्रीजी स्वरूप के पास पुनः भेजा और पुछवाया, "आप बादशाह के दबदबे से डरते क्यों नहीं हैं? जब वे लोग आपको पकड़कर बादशाह के पास ले जायेंगे, तो हम लोग क्या कर सकेंगे? जब →

स. ७६-सुवंशराय की बातें सुनने के पश्चात् श्रीजी ने उसे कैसे धैर्य बँधाया?

ज. ७६- सुवंशराय द्वारा राजा का उक्त संदेशा सुनने के पश्चात् महामति →

स. ७७-सुवंशराय ने वापस जाकर राजा को श्रीजी स्वरूप के विषय में क्या समझाया?

ज. ७७- राजा के भाई सुवंशराय ने लौटकर राजा को श्रीजी स्वरूप के विषय में समझाते हुए कहा, "आप व्यर्थ ही बार-बार उनके →

स. ७८-उक्त प्रकार की बातें हो ही रही थीं कि भागते हुए राजा के पास कौन आ पहुँचा?

स. ७९-आते ही रामनगर के राजा से भेंट कर शेख खिदर ने क्या कहा?

ज. ७९- आते ही रामनगर के राजा से भेंट कर शेख खिदर ने कहा, "हम एक पूर्वसूचित कार्य से यहाँ आए हैं। हम आपके राज्य में ठहरे साधुओं को पकड़ने के लिए आपके पास आए हैं। आप उन्हें →

→ राजा के पास आया, तब राजा खबर सुनकर आश्चर्यचकित हो उठा। उसे इस बात का आश्चर्य हुआ कि इन्हें सुलतान औरंगजेब के दुर्व्यवहार का कुछ भी भय नहीं लगता!

→ सेनापति हमारे सामने हमारे ही राज्य से आपको पकड़कर ले जायेंगे और हमें अपने कानों से अपनी बुराई और अपयश सुनना पड़ेगा, तब हमें असह्य दुःख होगा।" राजा का भाई सुवंशराय राजा का निर्देश सुनकर श्री प्राणनाथजी के पास आया उसने राजा द्वारा कही हुई सारी बातें श्रीजी को बतलायीं। जैसा राजा ने कहलाया था, वैसा ही उसने श्री प्राणनाथजी के सम्मुख स्पष्ट कर दिया।

→ श्री प्राणनाथजी ने उसे धैर्य बँधाते हुए कहा, "राजा साहेब और आप भयभीत न हों।" पुनः अपनी आत्मीय शक्ति-बल दिखाते हुए कहा, "हम बादशाह का संदेश लानेवालों से चर्चा करेंगे। वे लोग हमारा बाल भी बाँका न कर सकेंगे।"

→ पास संदेश भिजवा रहे हो। मार-पीट करने के सिवाय हमने उन्हें हर तरह के भय दिखाए। हमने अपना कर्तव्य पूरा कर दिया है। जहाँ तक हमें उन्हें कहना चाहिए था, हमनें सब कुछ कह दिया है। अब जैसा उनके मन में आयेगा, समय आने पर वे वैसा ही कर लेंगे।"

ज. ७८- उक्त प्रकार की बातें हो ही रही थीं कि दूसरे दिन ही शेख खिदर भागते हुए राजा के पास आ पहुँचा।

→ पकड़कर हमारे हवाले कर दीजिये। हम उन्हें बादशाह के पास ले जायेंगे। हमें ऐसी ही आज्ञा मिली है। यदि आप उन वैरागियों की रक्षा करेंगे, तो आप इस मुहिम को अपने राज्य पर आक्रमण समझ लें। आप या तो इन्हें पकड़कर हमारे हवाले कर दीजिये अथवा युद्ध के लिए कमर बाँध लीजिये।"

स. ८०-अहदी शेख खिदर की बातें सुनकर उस विषय में राजा ने उसे क्या जवाब दिया?

स. ८१-रामनगर के राजा ने बादशाह औरंगजेब के निर्देश के विषय में शेख खिदर से क्या कहा?

ज. ८१- रामनगर के राजा ने बादशाह औरंगजेब के निर्देश के विषय में →

स. ८२-उक्त प्रकार से रामनगर के राजा से बातचीत होने के पश्चात् शेख खिदर कहाँ गया?

स. ८३-अहदी शेख खिदर अपने डेरे में वापस आकर किससे सलाह-मशविरा करने लगा?

स. ८४-शेख खिदर ने साधु-जमात को पकड़ने के विषय में भिखारीदासजी से क्या कहा?

स. ८५-भिखारीदास ने अहदी शेख खिदर की बातें सुनकर क्या आज्ञा माँगी?

ज. ८५- भिखारीदास ने शेख खिदर से कहा, "आप पहले हमें वहाँ जाने →

स. ८६-उक्त बातें होने के पश्चात् भिखारीदास किस लिये श्रीजी के पास आये और श्री प्राणनाथजी को प्रणाम कर उन्होंने क्या कहा?

ज. ८६- शेख खिदर से विदा लेकर भिखारीदास स्वामी श्री प्राणनाथजी →

ज. ८०- अहदी शेख खिदर की बातें सुनकर राजा ने उससे कहा, "आपका हमसे तो कोई काम ही नहीं है। आप स्वयं जाकर उन वैरागियों को पकड़ लीजिये और उनके प्रति जैसा चाहे, वैसा कर लीजिये।"

→ शेख खिदर से कहा, "आप बादशाह का निर्देश लेकर हमारे पास आए हैं, सो हमने उनकी आज्ञा को शिरोधार्य किया है। हमारी ओर से आप जब चाहें, तब उन वैरागियों को पकड़कर ले जा सकते हैं।"

ज. ८२- उक्त प्रकार से रामनगर के राजा से बातचीत होने के पश्चात् शेख खिदर उस हवेली में लौट आया, जहाँ वह ठहरा था।

ज. ८३- अहदी शेख खिदर अपने डेरे में वापस आकर भिखारीदासजी से मिलकर उन साधुओं को पकड़ने के विषय में सलाह-मशविरा करने लगा।

ज. ८४- शेख खिदर ने साधु-जमात को पकड़ने के विषय में भिखारीदासजी से पूछा, "अब हमें उन्हें पकड़ने के लिए क्या करना चाहिए? उन्हें कैसे पकड़ा जाये?"

→ दें। हम उन सन्तों की पूरी जानकारी ले आयें, तभी उनका मन्तव्य हमें विदित हो सकेगा। उनका सामर्थ्य जान लेने के पश्चात् उन्हें पकड़ने में आसानी हो जायेगी।"

→ के पास आये तथा उनके चरणों में प्रणाम करके कहा, "हमारी मुहिम आप पर है। अब आपका क्या विचार है? रामनगर के राजा के पास आपके विरोध में बादशाह का संदेश आया है। अतः हम आपको पकड़कर बादशाह के पास ले जाने आए हैं।"

स. ८७-भिखारीदास की उक्त बातें सुनकर श्रीजी स्वरूप ने उनसे क्या कहा?

ज. ८७- उक्त प्रकार से भिखारीदास का स्पष्ट संदेश सुनकर श्री प्राणनाथजी →

स. ८८-उक्त प्रकार से जवाब देने के बाद श्रीजी ने भिखारीदास से क्या पहचान करने को कहा?

ज. ८८- उक्त प्रकार से भिखारीदास को जवाब देने के पश्चात् श्रीजी →

स. ८९-उक्त बातों के पश्चात् भिखारीदास के लिए श्रीजी साहेबजी ने कैसी चर्चा की?

ज. ८९- उक्त बातों के पश्चात् श्री प्राणनाथजी ने भिखारीदास के आगे →

स. ९०-तत्पश्चात् स्वामीजी ने भिखारीदास से क्या कहा?

स. ९१-श्रीजी साहेबजी की उक्त बातें सुनकर भिखारीदास ने क्या उत्तर दिया?

ज. ९१- श्रीजी द्वारा उपरोक्त प्रकार से कहने पर भिखारीदास ने उत्तर →

स. ९२-भिखारीदास ने श्रीमद्भागवत और कुरान शरीफ़ की रहस्यमय चर्चा कितने दिनों तक सुनी?

स. ९३-श्रीजी ने संसार में व्यापक विरोधी भावनाओं को नष्ट कर भिखारीदास को कैसे विश्वास दिला दिया?

ज. ९३- श्रीजी स्वरूप ने भिखारीदास के दिल-दिमाग में जमी हुई तथा संसार में व्यापक विरोधी भावनाओं को नष्ट कर एक ही धर्म →

→ ने जवाब दिया, "अरे भाई! यह तो आप बहुत ही अच्छा संदेश ले आए हैं। हम तो चाहते ही यही हैं कि किसी भी प्रकार औरंगजेब हमें याद करे और कोई हमें उनके पास पहुँचा दे।"

→ स्वरूप ने उनसे कहा, "अब आप हमारी अच्छी तरह से पहचान कर लीजिये। हमारी वास्तविकता की पहचान करने की कोशिश कीजिए। हम आपको चर्चा सुनाते हैं। आप हमारे पास बैठकर वास्तविक स्थिति से पूर्णरूपेण परिचित हो जाइये।"

→ संसार की उत्पत्ति से लेकर आज तक का सभी यथार्थ ज्ञान तथा कुरान और भागवत ग्रन्थों के प्रश्न, उनके ज्ञान के रहस्यों के साथ मिलाकर रख दिये।

ज. ९०- तत्पश्चात् स्वामी श्री प्राणनाथजी ने भिखारीदास से कहा, "यदि ये बातें आपकी समझ में आ जाती हैं, तो आप इन प्रश्नों का उत्तर दीजिये। अन्यथा हम बतायेंगे और आप ध्यान से श्रवण कीजिये।"

→ दिया, "आप ही हमें समझाने की कृपा करें। आपके दिव्य दर्शन पाकर आपके ज्ञान के प्रति हमें विश्वास हो आया है। हम अब आपके चरणों का सहारा कभी नहीं छोड़ेंगे।"

ज. ९२- भिखारीदास ने श्रीमद्भागवत और कुरान शरीफ़ की रहस्यमय चर्चा तीन दिन एवम् तीन रात तक श्रीजी स्वरूप द्वारा सुनी। श्रीजी स्वरूप ने सभी रहस्यमय प्रश्नों का स्पष्टीकरण कर दिया।

→ सिद्ध करके भिखारीदास को समझा दिया। उन्होंने भिखारीदास के मन में विद्यमान सन्देहरूपी शैतान को ज्ञान द्वारा भस्म कर दिया। इससे उसके मन में श्री प्राणनाथजी के प्रति पूर्ण विश्वास उत्पन्न हो गया।

स. ९४- भिखारीदास ने तीन दिन बाद शेख खिदर के पास जाकर क्या वास्तविकता बयान की?

ज. ९४- तत्पश्चात् भिखारीदास शेख खिदर के पास गये और उसे →

स. ९५- भिखारीदास की उक्त बातें सुनकर अहदी शेख खिदर ने उससे क्या पूछा?

ज. ९५- जब शेख खिदर ने भिखारीदास के मुख से उक्त प्रकार की →

स. ९६- कयामत के सातों निशान शेख खिदर को किसने स्पष्ट रूप से समझा दिये?

ज. ९६- भिखारीदास ने शेख खिदर के सामने कुरान शरीफ़ और →

स. ९७- सात निशान समझाने के बाद शेख खिदर को भिखारीदास ने अन्य क्या समझाया?

स. ९८- अन्य कौन-कौनसे निशान भिखारीदास ने शेख खिदर के आगे रख दिये?

ज. ९८- सात निशान के सहित अन्य बातें भी भिखारीदास ने शेख →

स. ९९- पश्चिम से उगनेवाला बिना रोशनी का सूर्य किसके अवतरण का बोध कराता है?

ज. ९९- पश्चिम से उगनेवाला बिना रोशनी का सूर्य शराअ के ज्ञान के →

स.१००- तारतम ज्ञान-इलम लुदंनी के द्वारा विभिन्न सम्प्रदायों में एकता कैसे स्थापित कर रहे हैं?

→ वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए बोले, "हमने तो आखरी जमाने के हादी, साहिबे आखिरूल-ज़मां के रूप में उनकी परख की है।"

→ बातें सुनी, तब उसने भिखारीदास से पूछा, "आप यह कैसी बातें कह रहे हैं? आपको उनके इस रूप की पहचान कैसे हुई? इस बात को आप मेरे सामने स्पष्ट रूप से प्रकट करें। हादी आखिरूल-ज़मां के प्रकट होने के लक्षण बताइये।"

→ श्रीमद्भागवत के प्रश्न रखे। फिर स्वयं ही उनका समाधान भी कर दिया। सातों निशानों को पूर्णरूपेण स्पष्ट कर कयामत के ज्ञान द्वारा उसके मन की संपूर्ण शंकाओं को दूर कर दिया और उसके हृदय के द्वार खोल दिये।

ज. ९७- सात निशान समझाने के बाद शेख खिदर को भिखारीदास ने दाभतुलअर्ज और दज्जाल के उपद्रव के संबंध में निम्न प्रकार से समझा दिया।

→ खिदर को बताई जैसे आजूज-माजूज के कालचक्र का अर्थ बताया और ईसा-रूह अल्लाह स्वरूप श्री देवचन्द्रजी के प्रकटीकरण एवम् उनके स्वरूप की पहचान भी करा दी।

→ प्रकट होने का, चार वसीयतनामों की बातों के जाहिर होने का तथा इमाम मेहदी स्वरूप श्रीजी के अवतरण का बोध कराता है। ऐसे अनेकों रहस्यों का स्पष्टीकरण करके भिखारीदास ने शेख खिदर को बोध करा दिया।

ज.१००- भिखारीदास ने शेख खिदर को यह भी बताया कि स्वामी श्री प्राणनाथजी ने विभिन्न सम्प्रदायों-सिद्धान्तों में एकता स्थापित करके एक धर्म स्थापित कर दिया है। उनके सिद्धान्त में परमात्मा →

→ की पहचान कर पाने का सरल और सीधा मार्ग प्रेम लक्षणा →

स.१०१- हकीकत और मारफत की वास्तविकता क्या है? उक्त बातें सुनकर शेख खिदर को क्या हुआ?

ज.१०१- जिस प्रकार श्री प्राणनाथजी ने भिखारीदास के आगे हकीकत और मारफत के रहस्य खोलकर उसे वास्तविकता समझा दी →

स.१०२- भिखारीदास की उक्त बातों का समर्थन किसने किया? फलस्वरूप क्या हुआ?

ज.१०२- उस समय शेख खिदर के पास भिखारीदास के साथ सैयद →

स.१०३- उक्त बातों के पश्चात् भिखारीदास ने अहदी शेख खिदर से क्या कहा?

ज.१०३- उक्त बातों के पश्चात् पुनः भिखारीदास ने शेख खिदर से कहा, →

स.१०४- भिखारीदास द्वारा उपरोक्त सलाह मिलते ही शेख खिदर ने क्या किया?

स.१०५- शेख खिदर ने सवारी तैयार कर श्रीजी के पास कौन-सी सूचना भेजी?

स.१०६- अहदी शेख खिदर श्री प्राणनाथजी के दर्शनार्थ किस तरह आया?

ज.१०६- अहदी शेख खिदर श्री प्राणनाथजी के पास एक तो अपनी सवारी के साथ, दूसरे अपने आने की पूर्व सूचना देकर आया। उसने स्पष्ट श्रद्धापूर्ण वचनों में श्रीजी को सूचना भेजी कि "मैं आपके दर्शनार्थ आ रहा हूँ" इस प्रकार शेख खिदर श्रीजी के →

→ भक्ति बताया गया है, जो परब्रह्म परमात्मा की पहचान करा देता है।

→ थी, भिखारीदास ने भी उसी प्रकार शेख खिदर के आगे हकीकत का यथार्थ ज्ञान और मारफत-परमात्मा की पूर्ण पहचान करानेवाले सभी रहस्य खोलकर उसे स्पष्टतः समझा दिये। तब शेख खिदर अपनी सुध-बुध खो बैठा और विचारों में मग्न हो गया।

→ अब्दुल रहमान और रघुनाथ भाई भी थे। उन दोनों ने भी भिखारीदास के कथन का समर्थन किया। तब शेख खिदर के अन्दर व्याप्त दज्जाल की आसुरी प्रवृत्ति का संघर्ष स्वतः ही समाप्त हो गया। शंका की कोई गुंजाइश ही नहीं रही।

→ "आप हमारे साथ वहीं चलिये। हमने आपसे जो कुछ भी कहा है, उन सभी बातों को आप प्रत्यक्ष देख लीजिए। चलिये! हम आपको उनके दर्शन करायें। आप भी जब उनके ज्ञान की वास्तविकता से परिचित हो जायेंगे, तब आप स्वतः ही उनके स्वरूप में पालनहार खुदा-परमात्मा का दर्शन पा लेंगे।"

ज.१०४- भिखारीदास द्वारा उपरोक्त सलाह मिलते ही शेख खिदर तुरन्त उठकर खड़ा हो गया।

ज.१०५- शेख खिदर ने सवारी तैयार कर श्रीजी के पास अपने आने की पूर्व सूचना भेज दी कि "हम आपके दर्शन करने आ रहे हैं।"

→ चरणों में पहुँच गया। शेख खिदर मात्र स्वयं ही नहीं, बल्कि अपने साथियों की पूरी फौज लेकर स्वामी श्री प्राणनाथजी के पास आया। पास आकर उसने स्वामी श्री प्राणनाथजी के चरणों में प्रणाम किया। दर्शन करके उसे ऐसा अनुभव हुआ कि मानों स्वामी श्री प्राणनाथजी के रूप में उसे अपने मूल घर के साथी पुनः मिल गये हों।

स.१०७- श्रीजी स्वरूप की अहदी शेख खिदर के साथ किन विषयों पर चर्चा होने लगी? चर्चा द्वारा श्रीजी स्वरूप में उसने क्या देखा?

स.१०८- यहाँ जब चर्चा की धूम मची हुई थी, उसी समय कौन और कहाँ से दज्जाल के रूप में उपस्थित हो गया?

ज.१०८- उक्त प्रकार से जब सारी जमात के बीच कयामत के विषयों →

स.१०९- वे क्या समझकर, क्या प्राप्त करने के लिए जोर-शोर से श्रीजी स्वरूप और जमात की निन्दा में जुट गये?

ज.१०९- बेदड़े के मुसलमानों ने समझा कि शेख खिदर फौज लेकर →

स.११०- उस समय श्री प्राणनाथजी के समीप आगे रेहल पर क्या पधराया हुआ था?

स.१११- कौन, किस तरह से, क्या कहकर विवाद करने लगा?

ज.१११- उक्त स्थिति देखकर बेदड़े के मुसलमानों का अगुवा रहमत →

स.११२- उक्त प्रकार के विवाद से जब शेख खिदर को क्रोध आया, तो उसने क्या हुकम कर दिया?

ज.११२- बेदड़े के मुसलमानों के उक्त विवाद को देखकर जब शेख →

स.११३- बेदड़े के मुसलमान अन्त में किस प्रकार उस सभा के बीच से वापस भाग गये?

ज.१०७- श्रीजी स्वरूप की अहदी शेख खिदर के साथ कयामत के प्रश्नों को लेकर चर्चा होने लगी। कयामत की व्याख्या और सनंध सुनकर शेख खिदर ने श्रीजी में हक के नूर, उनके तेज एवम् ज्योति को प्रकट देखा।

→ में चर्चा की धूम मची हुई थी, तब इसी समय बेदड़े के मुसलमान दज्जालरूप बनकर व्यर्थ में संकट उपस्थित करने लगे और बड़े जोर-शोर से श्रीजी की निन्दा करने लगे।

→ वैरागियों को पकड़ने के लिए आया है। इसलिए उन्हें भी शेख खिदर की सहायता करनी चाहिए। अतः साधुओं को पकड़वाकर वे इसलाम धर्म की सेवा का सवाब प्राप्त करने के लिए जोर-शोर से श्रीजी स्वरूप और जमात की निन्दा में जुट गये।

ज.११०- उस समय श्रीजी के समीप आगे रेहल पर कुरान शरीफ़ पधराया हुआ था।

→ खाँ तर्कवत् विवाद करते हुए कहने लगा, "कुरान को पढ़ने का अधिकार (रवा) हिन्दुओं को नहीं है। मुहम्मद साहेब की चर्चा आप क्यों करते हैं?"

→ खिदर को क्रोध आया, तब उसने क्रोध में हुकम कर दिया, "ऐसे मुरदार, मृतप्राय लोगों को धक्का देकर बेआबरू करके दूर भगा दिया जाय। सच्चाई की राह में ये उपद्रव मचाते हैं।"

ज.११३- जब उपस्थित साथियों ने बेदड़े के मुसलमानों को धिक्कारा और सभा से उठा दिया, तब वे मुसलमान, जिनके दिल में दज्जाल बैठा था, शर्मिन्दा होकर, मुँह काला करके नौ दो ग्यारह हो गये।

स.११४- शेख खिदर ने अपने सभी साथियों सहित क्या किया? श्रीजी के स्वरूप में किनकी पहचान कर शेख खिदर अपने डेरे (स्थान) पर वापस आया?

स.११५- दूसरे दिन शेख खिदर किससे मिलने, कहाँ गया? उससे मिलकर शेख खिदर ने क्या कहा?

ज.११५- दूसरे दिन शेख खिदर रामनगर के राजा के पास गया और उससे कहा, "हे राजा! आपको धिक्कार है। आप आज तक श्री प्राणनाथजी के सत्संग में नहीं गये? आपके राज्य में ऐसे →

स.११६- शेख खिदर की उक्त बातें सुनकर रामनगर के राजा ने क्या कहा?

ज.११६- शेख खिदर की उक्त बातें सुनकर रामनगर के राजा ने कहा, →

स.११७- पुनः राजा की बातें सुनकर शेख खिदर ने राजा से श्रीजी के विषय में क्या कहा?

ज.११७- पुनः राजा की उक्त बातें सुनकर शेख खिदर ने राजा से श्रीजी के विषय में कहा, "हमें तो उनके बारे में कुछ भी जानकारी नहीं थी। हम दिल्लीवाले बादशाह के भेजे हुए कर्मचारी हैं। उन्हें पकड़कर ले जाने का काम हमें सौंपा गया था। किंतु जब हमने →

स.११८- उक्त बातें सुनकर राजा के मित्रों और सेवकों ने राजा से क्या कहा?

ज.११८- उक्त बातें सुनकर राजा के मित्रों एवम् आस-पास स्थित सेवकों ने राजा से कहा, "राजा! इन वैरागी महाराज के पास कोई →

ज.११४- अहदी शेख खिदर अपने सभी साथियों सहित श्रीजी द्वारा प्रतिपादित हकीकी दीन इसलाम-निजानन्द धर्म-सिद्धान्त पर समर्पित हो गया। स्वामीजी के स्वरूप में इमाम मेहदी की पहचान कर शेख खिदर अपने डेरे (स्थान) पर वापस आया।

→ पहलवान अर्थात् ऐसे बलशाली सर्वशक्ति संपन्न साक्षात् परब्रह्म रहते हैं, किंतु आप उनके बल को नहीं जान पाये! अरे! आप आज तक उनके दर्शन करने भी नहीं गये? इस सम्बन्ध में मैं आपसे क्या कहूँ? यह तो स्पष्ट ही है कि आपको आज तक उनके स्वरूप की पहचान नहीं हो पायी!"

→ "अरे कुछ समय पहले तो आप ही उन्हें पकड़ने के लिए चिल्लाते हुए आए थे। अच्छा हुआ कि आपकी ही भावना परिवर्तित हो गई। आप ही उनकी ओर से सन्तुष्ट हो गये।"

→ हादी-सद्गुरु रूप में श्री मेहराज ठाकुर के दिव्य दर्शन किये, तो हमें यह निश्चय हो गया कि वे जो कुछ भी चर्चा करते हैं, वह अकाट्य सत्य है। अब हमारी सभी शंकाएँ दूर हो गई हैं। अब तो हम उन सद्गुरु स्वरूप श्री मेहराज ठाकुर के दास बन गये हैं। वे जो कुछ भी आज्ञा देंगे, हमें वही करना है। हम इमाम मेहदी के प्रकट होने का यह संदेश बादशाह तक भी पहुँचा देंगे।"

→ तांत्रिक गुटिका अथवा भस्म है, जो उनके शिष्य-मोमिनों के हाथ में रहती है। जो कोई भी उनके पास जाता है, उसके सिर पर वे वह बुरकी-भस्म डाल देते हैं, जिससे वह वहीं उन्हीं का हो जाता है। आप भी उनके सत्संग में सोच विचार करके जाना।"

स.११९- मित्रों और सेवकों की बातें सुनकर राजा ने क्या कहा?

ज.११९- मित्रों और सेवकों की उक्त बातें श्रवण करने के पश्चात् राजा →

स.१२०- दूसरे ही दिन रामनगर के राजा ने श्रीजी स्वरूप के पास क्या भेजा? उसने भोजन का प्रबन्ध कहाँ किया था? उसने किस प्रकार सुन्दरसाथ सहित श्रीजी का दर्शन किया?

स.१२१- रामनगर का राजा जमात के बीच आया, परन्तु श्रीजी स्वरूप के पास बैठा क्यों नहीं? वह किस लिए डर रहा था?

स.१२२- बीतककार ने यहाँ रामनगर के राजा के प्रति "बिना धाम के अंकुर के, वह कर भी क्या सकता था"- ऐसा क्यों कहा?

ज.१२२- बीतककार द्वारा रामनगर के राजा को *"बिना धाम के अंकुर का"* कहने का तात्पर्य यह है कि शेख खिदर द्वारा आकर श्रीजी की महिमा का बखान करने पर तो उसे अक्ल आनी चाहिए →

स.१२३- शेख खिदर ने इमाम मेहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी से आदेश माँगते हुए क्या कहा?

ज.१२३- शेख खिदर ने इमाम मेहदी स्वरूप श्री प्राणनाथजी से आदेश →

स.१२४- अहदी शेख खिदर की उक्त बातें सुनने के पश्चात् इमाम स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने उससे क्या कहा?

ज.१२४- अहदी शेख खिदर की उक्त बातें सुनने के पश्चात् इमाम स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने उससे कहा, "इस विषय में हम आपको क्या →

→ डरते हुए बोला, "मैं वहाँ जाऊँगा। परन्तु सत्संग में उन महात्मा के समीप नहीं बैठूँगा। दूर से ही उनके दर्शन करूँगा। यह दिखावा भी मुझे मात्र अहदी शेख खिदर के कहने पर ही करना है।"

ज.१२०- दूसरे ही दिन रामनगर के राजा ने श्रीजी स्वरूप के सेवार्थ प्रीति-भोज का निमंत्रण भेज दिया। सुन्दरसाथ सहित श्री प्राणनाथजी के भोजन का प्रबन्ध उसने बाग में किया था। बाग में आकर उसने दूर से ही सद्गुरु स्वरूप श्री प्राणनाथजी एवम् मोमिनों के दर्शन किये।

ज.१२१- रामनगर का राजा जमात के बीच आया। सद्गुरु श्री मेहराज स्वामी के सम्मुख आकर खड़ा रहा, परन्तु बैठा नहीं। मन ही मन में उसे यह भय कँपा रहा था कि कहीं वे उसे अपना न बना लें!

→ थी। मित्रों की अटकलों पर विश्वास करने और शेख खिदर की प्रत्यक्ष बातों पर अविश्वास प्रकट करने के कारण ही उसे, ऐसा कहा है। पुनः वह दूर से ही श्रीजी के दर्शन कर उसी स्थिति में वापस लौट गया। न तो अपने कानों से वह चर्चा सुन सका और न ही अपनी आत्मा एवम् स्वामीजी के दिव्य स्वरूप की पहचान ही कर पाया। अतः *"बिना धाम के अंकुर के, वह कर भी क्या सकता था"*- ऐसा कहा गया।

→ माँगते हुए कहा, "हे स्वामी! अब आप हमें जैसी आज्ञा दें, हम वैसा ही समाचार आपके सम्बन्ध में लिखकर बादशाह के पास भेज दें।"

→ आदेश दें? आपने हमारे सम्बन्ध में यहाँ जो कुछ भी देखा हो, वैसा ही आप अपनी बुद्धि के अनुसार सोच-समझकर लिख दें और पुरदल खाँ के पास पहुँचा दें। वह स्वयं ही बादशाह के पास हमारी जानकारी प्रेषित कर देगा। बादशाह में यदि परमधाम का मूल अंकुर होगा, तो वह अवश्य हमें पहचान लेगा।"

स.१२५- शेख खिदर श्रीजी के पास कितने दिन रहा? शेख खिदर ने क्या लिखकर बादशाह के पास भेज दिया?

ज.१२५- कई दिनों तक शेख खिदर साथी समुदाय के बीच श्रीजी के →

स.१२६- शेख खिदर के साथ आये लोगों में से कौन श्रीजी स्वरूप के पास रह गये और कैसे-कैसे लोग वापस लौट गये?

स.१२७- भिखारीदास शेख खिदर को विदा कर श्रीजी के चरणों में कैसे आया?

स.१२८- लोभ के वशीभूत होकर कौन, कहाँ से और किसका प्रतिनिधि बनकर आया?

स.१२९- गुलाम मुहम्मद पुरदल खाँ का क्या लगता था? उसने कड़े शब्दों में राजा से क्या कहा?

ज.१२९- गुलाम मुहम्मद पुरदल खाँ की जाति का और उसका विशेष →

स.१३०- उसके कड़े शब्दों को सुनकर रामनगर का राजा श्रीजी के प्रति क्या सोचने लगा?

ज.१३०- गुलाम मुहम्मद के कड़े शब्दों को सुनकर रामनगर का राजा भयभीत →

स.१३१- इस समय रामनगर के राजा को उसके कर्मचारियों ने कैसी और क्या सलाह दी?

→ संग रहा। उसने अपना कर्तव्य पूरा करते हुए श्रीजी के सम्बन्ध में यथार्थ ब्योरा लिखकर पुरदल खाँ द्वारा बादशाह के पास भेज दिया।

ज.१२६- शेख खिदर के साथी समुदाय में से वे लोग जिन्हें श्रीजी के प्रति दृढ़ विश्वास हो गया था, वे सब सुन्दरसाथ समुदाय के बीच ही रह गये और अन्य जिन्हें श्रीजी के प्रति दृढ़ विश्वास नहीं हुआ, वे वापस लौट गए।

ज.१२७- भिखारीदास शेख खिदर को विदा कर वापस श्रीजी के चरणों में लौट आये। वे अपने परिवार को भी साथी समुदाय के बीच ले आये और उन सबको श्री प्राणनाथजी के चरणों में सौंप दिया।

ज.१२८- लोभ के वशीभूत होकर गुलाम मुहम्मद पुनः बादशाह का प्रतिनिधि बनकर धमोनी से दौड़ते हुए श्रीजी के पास आया। लोभ के वशीभूत होकर उसने श्रीजी की बातें अनसुनी कर दी।

→ व्यक्ति था। उसने पुरदल खाँ की ओर से रामनगर के राजा से कड़े शब्दों में कहा, "आप उन वैरागियों को पकड़कर हमारे जिम्मे कर दीजिये।"

→ होकर सोचने लगा, "इन साधुओं पर बादशाह औरंगजेब का कड़ा अंकुश है। अतएव हम अपने नगर में ऐसे लोगों को क्यों रहने दें?"

ज.१३१- इस समय रामनगर के राजा के राजदरबार के कर्मचारियों ने वैरागियों की और बुराई तथा निन्दा करके राजा को और भी भटका दिया।

स.१३२- रामनगर के राजा ने अपने दूत के माध्यम से श्रीजी के पास क्या संदेशा भेजा?

ज.१३२- अतः भयभीत होकर रामनगर के राजा ने अपने एक दूत के →

स.१३३- राजा की भयभीत आँखों में श्रीजी ने क्या पढ़ लिया और तत्पश्चात् क्या किया?

ज.१३३- रामनगर के राजा की भयभीत आँखों में श्रीजी ने उसकी जहुर →

स.१३४- रामनगर से श्रीजी स्वरूप ने साथ सहित किस वि.सं. की, किस तिथि को प्रस्थान किया और वहाँ से कहाँ पहुँचे?

स.१३५- श्रीजी द्वारा रामनगर से प्रस्थान कर बाग में पहुँचते ही बादशाह के अहदी ने क्या किया?

ज.१३५- जब श्रीजी स्वरूप जमात सहित रामनगर से चलकर एक बाग →

स.१३६- अहदी के लोगों ने जब बाग में जमात को रोका, उसी समय वहाँ कौन आ पहुँचे?

स.१३७- बाग में मोमिन अहदी के लोगों के साथ कितने पहर तक जूझते रहे?

स.१३८- वे लोग क्या सुनकर शान्त हुए? उन्हें किसने और क्या सुनाया था?

स.१३९- वे लोग सूर्योदय से पहले ही लज्जित होकर क्या कहते हुये चले गये?

→ माध्यम से श्री प्राणनाथजी को संदेशा भेजा, "आप हमारे प्रदेश से कहीं अन्यत्र चले जाइये। हम व्यर्थ ही आपके कारण बादशाह के रोष को सहन नहीं कर सकते।"

→ भरी भावनाओं को पढ़ लिया। अतः वह स्थान उन्हें विष के समान अहितकर और अप्रिय लगने लगा। तत्पश्चात् उन्होंने वहाँ से प्रस्थान करने का निश्चय कर लिया।

ज.१३४- रामनगर के राजा द्वारा बारम्बार उक्त प्रकार की बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी ने वि. सं. १७३९ (ई.स.१६८२) में अगहन सुदी दसवीं तिथि के दिन रामनगर से प्रस्थान किया और चतुर्दशी तिथि के दिन वे सुन्दरसाथ समुदाय को लेकर गढ़ा चले आये।

→ में पहुँचे, तब बादशाह का अहदी-प्रतिनिधि दौड़ता हुआ वहाँ आया। वह स्वयं तो रामनगर चला गया। किन्तु उसने अपने पाँच लोगों को श्रीजी के पास भेज दिया।

ज.१३६- अहदी के उक्त पाँच लोगों ने जब बाग में पहुँचकर जमात को रोका, तब उसी समय वहाँ दीवान देवकरण भाई आ पहुँचे तथा उनके और श्रीजी के बीच महाराजा छत्रसाल की बातें होने लगीं।

ज.१३७- बाग में मोमिन अहदी की फौज के साथ चार पहर तक जूझते-लड़ते रहे।

ज.१३८- जब स्वामी श्री प्राणनाथजी ने उन्हें सनंधें सुनाईं और चर्चा की, तब वे शान्त हुए। श्री प्राणनाथजी ने उन लोगों को सनंध की वाणी द्वारा निःशंक बना दिया।

ज.१३९- उन लोगों ने परस्पर विचार किया, "धन्य है कि आज हम खुदा की मेहेर से बच पाए क्योंकि हमसे यदि कुछ अनर्थ हो →

→ जाता, तो हमें दोजख में भी जगह नहीं मिलती।" अतः ऐसा →

स.१४०- उन लोगों ने श्रीजी स्वरूप को क्या जानकर पछताते हुए "हमें मोक्ष के लिए कोई स्थान न मिलता।"-ऐसा कहा?

स.१४१- श्रीजी स्वरूप बाग से चलकर साथियों सहित कहाँ पहुँचे? वहाँ कौन था?

स.१४२- उसने अपने लोगों के बीच वैरागियों (श्रीजी और जमात) के विषय में निर्लज्जतापूर्ण बातें क्यों कही?

ज.१४२- उस हाकिम ने फकीर श्रीजी स्वरूप और वैरागियों को लूट →

स.१४३- वहाँ कौन बैठा था, जिसने इन लोगों की निर्लज्जतापूर्ण बातें सुन लीं?

ज.१४३- वहाँ पर गंगाराम बाजपेयी नाम का एक आदमी बैठा था। उसने →

स.१४४- निर्लज्जतापूर्ण बातें करनेवाले हाकिम राय को किसने और किस तरह रोका?

ज.१४४- निर्लज्जतापूर्ण बातें करनेवाले हाकिम राय को गंगाराम →

स.१४५- पुनः गंगाराम बाजपेयी ने उस हाकिम को भय दिखाते हुए क्या कहा?

ज.१४५- पुनः हाकिम को भय दिखाते हुए गंगाराम बाजपेयी ने उससे →

→ कहते हुए वे सूर्योदय से पहले ही लज्जित होकर चले गये।

ज.१४०- उन लोगों ने परस्पर विचार करके श्रीजी स्वरूप को खुदा का उत्तराधिकारी-दोस्त जानकर पछताते हुए "कहीं जाने-अनजाने हमसे कोई अनुचित व्यवहार हो जाता, तो हमारा बुरा हाल होता और हमें मोक्ष के लिए कोई स्थान न मिलता।"-ऐसा कहा।

ज.१४१- अब सद्गुरु स्वामी श्री प्राणनाथजी साथियों सहित बाग से चलकर गढ़ा पहुँच गये। वहाँ भगवन्त राय का पुत्र हाकिम रहता था।

→ लेने का निश्चय किया। अतः उसने अपने लोगों के बीच वैरागियों (श्रीजी और जमात) के विषय में निर्लज्जतापूर्ण विचार प्रकट किये।

→ हाकिम की उक्त निर्लज्जतापूर्ण बातें सुन लीं। वह पहले दो बार श्रीजी के दर्शन करने आ चुका था और उसने अपनी आत्मा का सम्बन्ध जान लिया था ।

→ बाजपेयी ने बलपूर्वक रोकते हुए कहा, "आप ऐसा बुरा कार्य क्यों करते हैं? साधुओं को लूटने पर आपकी कितनी बदनामी होगी, क्या इस विषय में आपने कभी सोचा है?"

→ कहा, "अरे! हाकिम साहेब!! आपको मालूम नहीं। उन वैरागियों को लूटना आसान नहीं है। वे अपनी सुरक्षा हेतु स्वयं मर जायेंगे अथवा तुम्हें मार डालेंगे। अतः भूलकर भी ऐसा अनुचित विचार कभी अपने मन में मत लाना और न ही कभी अपने मुँह से ऐसे अपशब्द ही निकालना।"

स.१४६- गढ़ा को श्रीजी की तरफ से फिटकार अथवा धिक्कार क्यों, किस कारण से मिली?

ज.१४६- उक्त प्रकार के वातावरण के कारण उसी दिन से गढ़ा को श्रीजी →

स.१४७- यहाँ बीतककार अपने धामस्थ सुन्दरसाथ को कहाँ का वृत्तान्त सामने रखा, ऐसा कह रहे हैं?

ज.१४७- अहो सुन्दरसाथजी! यहाँ बीतककार कहते हैं, "मैंने आपके →

❋ गढ़ा का वृत्तान्त ❋

स. १ - गढ़ा की मजल में पहुँचने पर बीतककार को कहाँ की, कौनसी बात याद आई?

स. २ - किसके दर्शन प्राप्त होते ही, किसे उनके दिव्य स्वरूप के प्रति पूर्ण विश्वास हो गया?

स. ३ - किसे सामने पाकर, किसके मन में, किसी भी प्रकार की शंका न रही?

स. ४ - किसने और किसके सदुपदेश सुनकर उनके स्वरूप में, किनका साक्षात्कार किया?

स. ५ - साक्षात्कार के बाद उसके मन में क्या-क्या विचार उत्पन्न होने लगे?

→ की तरफ से फिटकार अथवा धिक्कार मिली क्योंकि गढ़ा पहुँचते ही चारों ओर से अनर्थ ही अनर्थ का संदेश आने लगा, जिससे श्रीजी स्वरूप के दिल में गहरी चोट लगी। तब से गढ़ा को लानत हुई कि कयामत के दिन तक गढ़ा का उद्धार नहीं हो सकेगा। अतः वह प्रतिदिन नष्ट होता गया।

→ सम्मुख अभी गढ़ा का वृत्तान्त रखा है। अन्य शेष श्री राजजी की आज्ञा से कहेंगे।"

- (प्रकरण ५८, सवाल-जवाब नं. १४७, कुल सं.४०२०+१४७ =४१६७)।

❋ गढ़ा का वृत्तान्त ❋

ज. १ - गढ़ा की मजल में पहुँचने पर बीतककार को अचानक रामनगर की शेष बातें याद आ गयीं। वही अवशेष बातें अब वे कहने जा रहे हैं।

ज. २ - श्री प्राणनाथजी के दिव्य दर्शन पाकर सूरत सिंह को उनके दिव्य स्वरूप के प्रति दृढ़ विश्वास हो गया।

ज. ३ - धाम के धनी को समक्ष पाकर सूरत सिंह के मन में किसी भी प्रकार की शंका शेष न रही।

ज. ४ - श्री प्राणनाथजी के श्री मुख से श्री तारतम ज्ञान का सदुपदेश सुनकर सूरत सिंह भाई को उनके स्वरूप में पूर्णब्रह्म परमात्मा का साक्षात्कार हो गया।

ज. ५ - साक्षात्कार के बाद उसके मन में, "मैं अपनी इस बात को किसके सामने प्रकट करूँ? मेरी इन बातों पर कौन विश्वास करेगा?"- ऐसे विभिन्न विचार उत्पन्न होने लगे।

स. ६ - तब सूरत सिंह किसके पास पहुँचा और उससे क्या बोला?

ज. ६ - उक्त विचार करते-करते सूरत सिंह दीवान देवकरण के पास →

स. ७ - पुनः उसने देवकरण से कहाँ चलकर, किनके दर्शन करने को कहा?

स. ८ - सूरत सिंह देवकरण को कहाँ, किनके पास और किस लिए लेकर आया?

स. ९ - देवकरण भाई ने आकर क्या किया? उन्हें क्यों शंका नहीं हुई? उन्होंने क्या सिर चढ़ाया?

ज. ९ - दीवान देवकरण भाई ने आकर श्री प्राणनाथजी के चरणों में →

स. १०-श्रीजी स्वरूप की थोड़ी-सी चर्चा सुनते ही देवकरण भाई को क्या हुआ? वे क्या सोचने लगे?

ज. १०- श्रीजी स्वरूप के मुखारविंद से थोड़ी-सी चर्चा सुनकर देवकरण →

स. ११-बीतककार अब कहाँ का वर्णन करके सुनाने की बात कह रहे हैं?

ज. ११- यहाँ बीतककार कहते हैं, "अब मैं सेवा करनेवाले साथियों का →

स. १२-पतिराम भाई रामनगर में कौनसी सेवा उठाते थे?

स. १३-अनाज भण्डार की सेवा में पतिराम भाई के साथ कौन-कौन भाई थे?

→ पहुँचे। उन्होंने दीवान देवकरण से कहा, "मैंने एक बात सुनी है। उसे आपके सामने कहता हूँ। मैंने ब्रह्म और ब्रह्मात्माओं को अपनी आँखों से देखा है।"

ज. ७ - पुनः सूरत सिंह भाई ने दीवान देवकरण से कहा, "आप मेरे साथ चलिए। मैं आपको उनके दर्शन कराऊँगा। वे केतकी नदी के तट पर ठहरे हैं। निश्चित ही वे परमात्मा के अवतरित स्वरूप हैं।"

ज. ८- सूरत सिंह दीवान देवकरण भाई को केतकी घाट पर स्थित श्री प्राणनाथजी के दर्शनार्थ लेकर आया।

→ प्रणाम किया। ज्ञान के आधार पर पूर्ण विश्वास आने के कारण उनके मन में किसी प्रकार की शंका न रही। तब वे श्री प्राणनाथजी की प्रत्येक आज्ञा को शिरोधार्य करते गये।

→ भाई के मन की सभी शंकाएँ दूर हो गयीं। तब दीवान देवकरणने मन में विचार किया,"मैं महाराजा छत्रसाल से श्रीजी के प्रतिपादित धर्म की चर्चा करूँगा। वे अवश्य ही इनके निष्ठावान शिष्य बन जायेंगे।"

→ वर्णन करता हूँ। रामनगर में सुन्दरसाथ ने श्री प्राणनाथजी की अत्यधिक सेवा की। अतः उन सेवा-भावी जनों के पवित्र सेवा-कार्य को सुन्दरसाथ के सामने रखता हूँ।"

ज. १२- रामनगर में पतिराम भाई मोदीखाने-अनाज भण्डार की सेवा उठाते थे।

ज. १३- अनाज भण्डार की सेवा में पतिराम भाई के साथ केशवदास और जयन्तीदास भाई भी थे।

स. १४-उस समय पानी पिलाने की सेवा कौन करते थे?

स. १५-बाजार से सामग्री खरीदकर लाने की, पुनः भोजन की सेवा की देख-भाल कौन भाई करते थे?

स. १६-रसोई सेवा तथा भोजन की व्यवस्था में कौन-कौनसे भाई शामिल थे? अन्त में हाथ बँटाने की सेवा कौन करते थे?

स. १७-उक्त सभी सेवा-कार्यों में प्रमुख कौन थे? जंगल से लकड़ी लाने की सेवा किसकी थी?

स. १८-निर्मलदास भाई और मुकुन्ददास भाई विशेष रूप से कौनसी सेवा करते थे?

स. १९-श्रीजी द्वारा अवतरित सनंध वाणी राग-रागिनियों में कौन गाती थीं, उनके साथ अन्य कौन शामिल रहती थीं?

स. २०-वाणी गायन करनेवाली मंडलियाँ कितनी थीं और वे मंडलियाँ क्या किया करती थीं?

स. २१-गाने में कौन भाई निपुण थे? वे प्रतिदिन क्या करते थे?

स. २२-संध्या आरती कौन-कौन गाते थे? पुनः पखावज-ढोलक कौन बजाते थे? इन सब में मुखिया कौन थे?

ज. १४- उस समय सुन्दरसाथ समुदाय में पानी पिलाने की विशेष सेवा भी जयन्तीदास भाई करते थे।

ज. १५- बाजार से सामग्री खरीदकर लाने की सेवा गोकुलदास भाई करते थे। भोजन आदि पकाने की पूरी सेवा की देख-भाल करने की जिम्मेदारी गरीबदास भाई के हाथ में थी।

ज. १६- रसोई की सेवा तथा भोजन की व्यवस्था करने की सेवा खेमदास, गंगाराम, संतदास और गोवर्धन भाई किया करते थे। किन्तु अन्त में सूरजमल भाई भी रसोई सेवा में हाथ बँटाने लगे।

ज. १७- उक्त सभी सेवा-कार्यों में वृन्दावन भाई प्रमुख थे। ब्रह्मनिष्ठ बराड़ी के सुन्दरसाथ जंगल से लकड़ियाँ लाने की सेवा में विशेष रूप से संलग्न रहते थे।

ज. १८- निर्मलदासजी सदैव वाणी गायन में लगे रहते थे। उनके साथ मुकुन्ददास भाई विशेष रूप से शामिल रहते थे।

ज. १९- श्री प्राणनाथजी द्वारा अवतरित सनंध वाणी विशेष रूप में राग-रागिनियों सहित श्री बाईज्यूराजजी (तेजकुँवर) गाया करती थीं। उनके साथ गोदावरी, बुआबाई और हमोबाई भी शामिल रहती थीं।

ज. २०- उस समय वाणी गायन करनेवाली दो मंडलियाँ थीं, जो समय-समय पर श्री प्राणनाथजी के लिए वाणी गायन किया करती थीं।

ज. २१- वाणी गाने में निपुण भाई का नाम निर्मलदास है। वे प्रतिदिन अपने मधुर स्वर में वाणी गाकर श्रीजी को रिझाया करते थे।

ज. २२- संध्या समय की आरती गाने में श्री लालदासजी और श्री मुकुन्ददासजी शामिल रहते थे। उत्तमदास पखावज-ढोलक बजाते थे। गायन करनेवाले सारे सुन्दरसाथ में निर्मलदास भाई मुखिया रहते थे।

स. २३-आरती के कार्य में कौन सब के साथ सम्मिलित रहते थे? कौन सेवा का नया-नया आयोजन करते रहते थे?

स. २४-ताल कौन भाई बजाते थे? आरती गायन में कौन मग्न रहते थे? कल्याण भाई क्या करते थे?

स. २५-छबीलदास भाई बड़ी निपुणता के साथ क्या करते थे? सभी सुन्दरसाथ इस समय खड़े-खड़े क्या करते थे?

स. २६-कौशल्याबाई ने कितने उत्सव किए? उन्होंने श्रीजी की किस प्रकार सेवा की? पुनः श्रीजी ने क्या किया?

ज. २६- कौशल्याबाई ने अपने घर प्रीति-भोज के ग्यारह उत्सव किए, →

स. २७-उदई तिवारी ने कितने उत्सव किए? उनके भतीजे घासी ने क्या किया?

स. २८-रामजनी और भगवतीबाई की माता ने श्रीजी स्वरूप को अपने घर बुलाकर क्या किया?

स. २९-मकरन्द भाई ने प्रीति-भोज का आयोजन करके श्रीजी के चरणों में क्या किया?

ज. २९- मकरन्द भाई ने सुन्दरसाथ के लिए प्रीति-भोज का आयोजन →

स. ३०-बराड़ से कौन-कौन आये? उन्होंने किस भाव से उत्सव किया और साथ के सम्मुखीन हुये?

ज.३०- बराड़ से अमरा, दत्ता और दगड़ा भाई आये। इन साथियों ने भी →

ज. २३- आरती के सेवा-कार्य में बनमालीदास भाई सभी के साथ शामिल रहते थे। वे सेवा करने का नया-नया आयोजन करते रहते थे। नित्य नये ढंग से सेवा हो, वे इसी का विचार करते रहते थे।

ज. २४- खिमाईदास भाई ताल बजाते थे और कन्नड़ भाई मग्न होकर आरती गायन करते थे। कल्याण भाई आरती गायन के समय स्वर और ताल की कला का नियम बनाये रखते थे।

ज. २५- छबीलदास भाई बड़ी निपुणता से शंख बजाते थे। सभी सुन्दरसाथ सायंकाल आरती के समय नि:शंक भाव से खड़े-खड़े मग्न होकर आरती के आनन्द का अनुभव करते थे।

→ जिसमें श्रीजी स्वरूप को अपने घर बुलाकर उन्होंने यथोचित भली प्रकार से सेवा की। श्रीजी साहेब ने उनकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कर दीं।

ज. २७- उदई तिवारी ने अपने घर दो बार उत्सव आयोजित कर श्रीजी साहेबजी को पधराया। उनका एक भतीजा था-घासी, जिसने श्रीजी के उत्तम वैरागी भेष के कारण उन्हें अपना गुरु माना ।

ज. २८- रामजनी और भगवतीबाई की माता ने अपनत्व की भावना से स्वामीजी को अपने घर बुलाकर उत्सव किया।

→ करके उत्सव किया। उन्होंने अपना तन,मन,धन महाप्रभुजी के चरणों में समर्पित कर दिया। उनके चरणों में प्रणाम करके वे सदैव सेवा-कार्य हेतु खड़े रहे। उन्होंने अपने लिए कुछ भी शेष नहीं रखा।

→ मन में उमंग भरकर सुन्दरसाथ एवम् परब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथजी के लिए प्रीति-भोज का आयोजन कर उत्सव किया और सेवा में मग्न रहकर साथ के सम्मुखीन हुये।

स. ३१-जयन्ती भाई के देवी चाचा ने श्रीजी को घर में बुलवाकर क्या-क्या किया?

स. ३२-हीरामन बढ़ई ने किस-किसको घर में बुलाया और क्या-क्या किया?

स. ३३-कितने मंजिलों-पड़ावों पर रुकते हुए श्रीजी स्वरूप जमात सहित गढ़ा आये और वहाँ कितने दिन ठहरे?

स. ३४-गढ़े में आकर श्रीजी द्वारा पुनः साथियों को कहाँ संदेश पहुँचाने की आज्ञा हुई?

स. ३५-धरमाबाई कहाँ आकर चर्चा सुनकर सुन्दरसाथ में शामिल हुई?

स. ३६-गढ़ा में आकर कौन-कौन धर्म के निष्ठावान साथी बने?

ज. ३६- गढ़ा आकर श्रीजी की चर्चा सुनते ही धरमाबाई के मन में महाप्रभु श्री प्राणनाथजी के प्रति पूर्ण निष्ठा जागृत हो गई और कोई भी →

स. ३७-गढ़ा की मजल में उज्जैन से कौन-कौन साथ आकर सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुये?

स. ३८-उक्त सुन्दरसाथ के साथ-साथ अन्य कौन-कौन सुन्दरसाथ भी गढ़ा आये?

ज. ३८- उक्त सुन्दरसाथ के साथ-साथ अन्य फकीरा, बेनी बहन, →

ज. ३१- जयन्ती भाई के देवी चाचा ने श्रीजी स्वरूप को अपने घर में बुलवाया और प्रीति-भोज का उत्सव करके महामति श्री प्राणनाथजी की भली प्रकार सेवा की।

ज. ३२- हीरामन बढ़ई ने भी प्रीति-भोज एवम् उत्सव का आयोजन किया। उन्होंने श्रीजी स्वरूप के साथ-साथ सुन्दरसाथ को भी बुलाया। इनसे भी श्रीजी स्वरूप की अच्छी सेवा हुई।

ज. ३३- सात मंजिलों-पड़ावों पर रुकते हुए निष्कलंकबुद्ध अवतार महामति श्री प्राणनाथजी स्वामी सभी सुन्दरसाथ सहित गढ़ा आ पहुँचे। वहाँ श्रीजी जमात सहित एक मास तेरह दिन ठहरे।

ज. ३४- गढ़ा आकर श्री प्राणनाथजी द्वारा पुनः साथियों को बादशाह औरंगजेब के पास जाकर उसे इमामत-धर्म के नेतृत्व का संदेश पहुँचाने की आज्ञा हुई।

ज. ३५- धरमाबाई गढ़ा में आकर ब्रह्ममुनियों के समुदाय में शामिल हुईं।

→ शंका शेष न रही। उनके अलावा अनन्तराम भाई, घनश्याम, सदानन्द और उनके संग हरबाई भी गढ़ा में आकर धर्मनिष्ठ सुन्दरसाथ बने।

ज. ३७- गढ़ा की मजल में उज्जैन से गंगाराम, वासुकेशर, उदैतीबाई, खिमोतीबाई तथा दयालीबाई आकर सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुए। इनके साथ-साथ मोहन भाई और धनबाई भी आए।

→ करमेतीबाई, मानिकबाई, पूर बहू और लक्ष्मीबाई आदि सुन्दरसाथ भी श्रीजी के दिव्य स्वरूप की पहचान कर पूर्ण निष्ठा के साथ ब्रह्ममुनि समाज में शामिल हुए।

स. ३९-किस-किसने गढ़ा आकर श्रीजी के चरणों में अपनी आत्मा समर्पित कर दी?

स. ४०-अन्य किस-किसने गढ़ा पहुँचकर श्रीजी स्वरूप के चरणों का आश्रय लिया?

स. ४१-गढ़ा के निवासियों में से किस-किसने श्रीजी की शरण ग्रहण की?

स. ४२-इसी समय श्री प्राणनाथजी ने लालदासजी को कहाँ संदेश देने जाने की आज्ञा दी?

स. ४३-श्रीजी स्वरूप ने दिल्ली जाकर पुनः किसे कयामत का संदेश सुनाने को कहा?

ज. ४३- श्रीजी स्वरूप ने लालदासजी से पुनः दिल्ली जाकर बादशाह →

स. ४४-पूस वदी पाँचवीं तिथि के दिन बीरजू भाई ने आकर श्रीजी स्वरूप को क्या बात सुनाई?

स. ४५-उक्त बातें सुनकर श्री प्राणनाथजी को क्या हुआ और गढ़ा को क्या मिला?

ज. ४५- उक्त समाचार सुनकर श्रीजी को अत्यंत गहरा आघात लगा →

स. ४६-जब देवकरण भाई गढ़ा से मऊ जाने के लिए श्रीजी से विदा लेने आए, तब श्रीजी स्वरूप ने उनसे क्या पूछा?

ज. ४६- जब दीवान देवकरण भाई गढ़ा से मऊ की ओर प्रस्थान करने के →

ज. ३९- गोवर्धन भाई, मुकुन्द भट्ट, देवीदास, हरखोबाई आदि ने गढ़ा में आकर स्वामीजी के चरणों में अपनी आत्मा समर्पित कर दी ।

ज. ४०- अन्य साथ में बिन्दा, बिहारी, संतदास, दुर्जनसिंह वैश्य, खांडेराय, रूपसिंह, कीरतसिंह आदि ने गढ़ा पहुँचकर श्रीजी के चरणों का आश्रय लिया।

ज. ४१- गढ़ा के निवासियों में से दरसा, धरमोला, रतनबाई, कुशलसिंह, मधुकर, लालशाह भदेरिया और मयाराम वैद्य ने श्रीजी की शरण ग्रहण की।

ज. ४२- यहाँ श्रीजी स्वरूप ने पुनः लालदासजी को औरंगजेब के पास जाने की आज्ञा दी।

→ औरंगजेब को कयामत के समय अर्थात् जागनी का संदेश सुनाने और यह कहने को कहा, "हम लोग फिर आपके पास संदेश लेकर आये हैं।"

ज. ४४- पूस वदी पाँचवीं तिथि के दिन बीरजू भाई ने आकर महाप्रभु को यह समाचार दिया, "रामनगर के राजा ने केतकी घाट पर हमारे द्वारा बनाए हुए हवेली-स्थल (अस्तबल)को गिरवा दिया है।"

→ और उनके मुख से गढ़ा के लिये लानत निकल गयी कि जिस तरह से रामनगर के राजा ने हवेली (अस्तबल) को खोदकर नष्ट किया है, उसी प्रकार अब गढ़ा भी दैवी प्रकोप से नष्ट हो जाएगा और कोई उसे बचा नहीं सकेगा।

→ लिए श्रीजी से विदा लेने आए, तब स्वामी श्री प्राणनाथजी ने उनसे पूछा, "आप अपनी जन्मभूमि छोड़कर अन्य स्थान पर क्यों चले आए?"

स. ४७-श्रीजी द्वारा उक्त बात पूछे जाने पर देवकरण भाई ने श्रीजी स्वरूप को क्या जवाब दिया?

स. ४८-देवकरण भाई की उक्त बात सुनने के पश्चात् श्री प्राणनाथजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ४८- देवकरण भाई की उक्त बातें सुनने के पश्चात् श्री प्राणनाथजी →

स. ४९-पुनः अन्य राजाओं के विषय में श्री प्राणनाथजी ने देवकरण भाई से क्या कहा? पुनः महाराजा छत्रसाल के पास उनकी परात्मा के विषय में श्रीजी ने क्या संदेश भेज दिया?

स. ५०-श्री प्राणनाथजी ने दिल्ली संदेश पहुँचाने की आज्ञा किसे दी? आज्ञा मिलने पर उन्होंने क्या किया?

ज. ५०- श्री प्राणनाथजी ने लालदासजी को दिल्ली जाकर बादशाह को पुनः पैगाम पहुँचाने की आज्ञा दी। तब लालदासजी दुविधा में →

स. ५१-कुरान के फाल द्वारा क्या सूचना आयी? उसे उन्होंने किसे दिखाया?

स. ५२-उक्त सोलहवें सिपारे में किस-किस के विषय की बातें थीं?

स. ५३-मूसा कौन है? उसने खुदा से किस लिए प्रार्थना की थी?

ज. ५३- मूसा एक पैगम्बर हैं। वह स्वयं भी खुदाई राह पर चलता था तथा अन्य को भी उसी राह पर चलने का सदुपदेश देता था। →

ज. ४७- श्री प्राणनाथजी द्वारा उक्त प्रश्न पूछे जाने पर देवकरण भाई ने कहा, "हम एक बात पर रूठकर यहाँ चले आए थे। तभी से हम यहीं रहते हैं। वहाँ वापस नहीं जा सके।"

→ ने उनसे कहा, "आप इसी कार्य के लिए यहाँ आए थे। आप महाराजा श्री छत्रसाल के पास जाकर उन्हें हमारे यहाँ आने का समाचार सुना दीजिए।"

ज. ४९- पुनः अन्य राजाओं के विषय में श्री प्राणनाथजी ने देवकरण भाई से कहा, "हमने हिन्दुस्तान के सभी राजाओं को परख लिया है। किसी के अन्दर हमें परमधाम का अंकुर दिखाई नहीं दिया।" पुनः महाराजा छत्रसाल के पास उनकी परात्मा के विषय में श्रीजी ने यह संदेश भेजा, "हमने छत्रसाल में परमधाम की साकुण्डलबाई की आत्मा को परखा है। अब उनसे हमारी चर्चा होगी।"

→ पड़ गये। उन्होंने शेख इसलाम काज़ी के आगे, "मैं अब कभी तेरे पास पैगाम लेकर नहीं आऊँगा।"-ऐसी कसम खाई थी। यसर्थ उनकी जाने की इच्छा नहीं थी। लेकिन वे श्रीजी की आज्ञा कैसे ठुकराते? इस संकट में पड़ गये। तब उन्होंने जाकर कुरान शरीफ़ खोलकर उसका फाल देखा।

ज. ५१- कुरान की फाल देखने पर लालदासजी को सोलहवें सिपारे में मूसा और हारून का प्रसंग देखने को मिला। वह फाल लालदासजी ने श्रीजी को दिखाया।

ज. ५२- सोलहवें सिपारे में मूसा पैगम्बर की, फेरून बादशाह की और मूसा के भाई हारून-इन तीनों की बातें थीं।

→ बादशाह फेरून उसके मार्ग का बाधक था। उससे विजय प्राप्त करने के लिए मूसा पैगम्बर को अपने भाई हारून की जरूरत थी। भाई देने के लिए उसने खुदा से प्रार्थना की थी।

स. ५४-पैगम्बर मूसा ने खुदा से प्रार्थना द्वारा क्या कहा था और किस प्रकार प्रार्थना की थी?

ज. ५४- मूसा पैगम्बर खुदा से प्रार्थना कर कहता था, "मैं एक साधारण →

स. ५५-उक्त प्रकार से मूसा पैगम्बर द्वारा प्रार्थना करने पर खुदा ने क्या किया था?

स. ५६-कुरान की उक्त आयत द्वारा क्या समझा गया और किस इंतजार में रहना पड़ा?

ज. ५६- जब लालदासजी को कुरान में यह आयत मिली, तब उन्होंने →

स. ५७-दिल्ली संदेश पहुँचाने के लिए किस पर आज्ञा थी? उनके बदले वह संदेश पहुँचाने कौन गये?

ज. ५७- उक्त विचार करने पर लालदासजी का दिल्ली औरंगजेब के →

स. ५८-लालदासजी को राह में कौन मिली? उसने लालदासजी को क्या खबर सुनाई?

स. ५९-वह खबर श्री लालदासजी ने किसे सुनायी? तब श्रीजी ने क्या किया?

ज. ५९- उपरोक्त बातें लालदासजी ने आकर श्रीजी साहेबजी को सुनायी →

स. ६०-श्री प्राणनाथजी ने पुनः अगरिया से महाराजा छत्रसाल के पास किसे-किसे भेजा?

→ फकीर हूँ और वह बादशाह है। फिर मैं उसकी तुलना में कैसे ठहर सकता हूँ? यदि आप मुझे मेरा भाई दे दें, तो मैं अपने भले लोगों की जमात के साथ बादशाह से संघर्ष छेड़ सकता हूँ।"

ज. ५५- मूसा पैगम्बर की प्रार्थना सुनकर खुदा ने उसे उसका भाई हारून दे दिया और कहा, "अब फेरून बादशाह का किया कुछ भी न हो पाएगा और वह किसी निर्दोष का संहार नहीं कर पायेगा।"

→ यह प्रसंग लाकर श्रीजी को दिखाया और दोनों ने परस्पर विचार किया कि "हमें शीघ्र ही एक राजा मिलना चाहिए, जो अवश्य ही ब्रह्मनिष्ठ मोमिन होगा।"

→ पास संदेश लेकर जाना स्थगित हुआ। अतः लालदासजी के बदले उस कार्य के लिए स्वामीजी ने चरनदास और गरीबदास भाई को औरंगजेब के पास भेजा।

ज. ५८- एक दिन अचानक लालदासजी को राह में धरमाबाई मिलीं। उन्होंने बताया कि देवकरण भाई ने उनकी बात अर्थात् श्रीजी के आगमन की चर्चा महाराजा छत्रसाल से कर दी है।

→ कि "छत्रसालजी के सामने अब अपनी चर्चा होने लगी है।" यह बात सुनते ही श्रीजी ने संतदास और धरमदास को देवकरण भाई के पास भेजा और एक पत्र लिखकर देते हुए उनसे कहा, "आप यह विशेष संदेश महाराजा छत्रसाल से कहना।"

ज. ६०- पुनः महाप्रभु श्री प्राणनाथजी ने अगरिया से लालदास, उत्तमदास, जीवनदास और गोविन्ददास भाई को ब्रह्मसृष्टि साकुण्डलबाई के अवतार महाराजा छत्रसाल के पास भेजा।

स. ६१-बूड़ी बूड़ा गाँव में जो धाम की चार ब्रह्मात्माएँ मिलीं, वे कौन-कौन हैं?

स. ६२-किन भाई ने संसार को पहचानकर सुन्दरसाथ में नाम लिखा लिया? उन्होंने श्रीजी से क्या कहा?

ज. ६२- लखीराम भाई ने बाद में परना में आकर सुन्दरसाथ में अपना →

स. ६३-रामदास भाई ने सुन्दरसाथ सहित श्रीजी को घर में आमंत्रित कर क्या किया?

स. ६४-रामदास भाई ने श्रीजी के चरणों में समर्पित होते हुए उनसे क्या कहा?

स. ६५-गढ़े से सुन्दरसाथ जमात को साथ लेकर श्रीजी स्वरूप कहाँ पहुँचे?

स. ६६-अगरिया से पुनः ब्रह्मात्माओं के साथ श्रीजी स्वरूप कहाँ पहुँचे और कितना ठहरे?

स. ६७-बिलहरी में कौन-कौन सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुए?

स. ६८-बीतककार अब आगे सहर्ष सुन्दरसाथ से कहाँ के बीतक की चर्चा करने को कह रहे हैं?

ज. ६८- बीतककार अब आगे सहर्ष सुन्दरसाथ को सम्बोधित करते हुए →

ज. ६१- बूड़ी बूड़ा गाँव में कमलावती, रतनाबाई, राघवदास और रेवादास- ये चारों ब्रह्मात्माएँ मिलीं और निजानन्द धर्म में शामिल हुईं।

→ नाम लिखा लिया और श्रीजी स्वरूप से कहा, "मैं अब आपके साथ ही रहूँगा। मैंने इस संसार को पहचान लिया है। यह तो स्वप्न के समान नाशवान् है।"

ज. ६३- रामदास भाई ने सुन्दरसाथ सहित स्वामीजी को अपने घर आमंत्रित कर प्रेमपूर्वक प्रीति-भोज तथा उत्सव आदि किया और श्रीजी ने उन पर कृपा करके उन्हें संरक्षण में लिया।

ज. ६४- रामदास भाई ने श्रीजी के चरणों में समर्पित होते हुए कहा, "मैं अब आपका हो गया हूँ। इस संसार को मैंने स्वप्नवत्, महत्त्वहीन और निःसार समझ लिया है।"

ज. ६५- गढ़े से श्रीजी साहेबजी सुन्दरसाथ जमात को साथ लेकर अगरिया पहुँचे।

ज. ६६- अगरिया से पुनः ब्रह्मात्माओं को साथ लेकर श्रीजी स्वरूप बिलहरी आ पहुँचे। बिलहरी में श्रीजी स्वरूप जमात सहित ग्यारह दिन ठहरे।

ज. ६७- बिलहरी में संतावरी, दीपाबाई और गोकुलदास की माता सुन्दरसाथ जमात में शामिल हुईं। पूर्व जागृत सुन्दरसाथ भी यहाँ एकत्रित होने लगे।

→ कह रहे हैं, "हे धामस्थ सुन्दरसाथजी! अब तक मैंने आपके सम्मुख गढ़ा का वृत्तान्त रखा। अब इसके आगे मैं महामति श्री प्राणनाथजी की आज्ञा से पन्ना के प्रसंगों की चर्चा करूँगा।"

- (प्रकरण ५९, सवाल-जवाब नं. ६८,कुल सं. ४१६७+६८=४२३५)।

❀ मिलाप ❀

स. १ - रामनगर में श्री प्राणनाथजी की अलौकिक चर्चा सबसे पहले किसने सुनी?

स. २ - उस भाई ने किन्हें श्रीजी स्वरूप के दर्शन कराये? किन्हें दर्शन करते ही समझ में आ गया कि "ये तो ब्रह्म-परमात्मा का बोध देनेवाले स्वयं निष्कलंकबुद्ध स्वरूप हैं"?

स. ३ - श्रीजी स्वरूप जब सुन्दरसाथ को जागृत करते हुए रामनगर पहुँचे, तब वहाँ कितने समय तक ठहरे? रामनगर की मजल में छत्रसाल के वंशज कौन मिलने आये? उन्हें किस पर निष्ठा हुई?

स. ४- श्रीजी की चर्चा सुनते ही देवकरण भाई के मन में क्या हुआ और वे क्या सोचने लगे?

स. ५ - इनके ज्ञान-गौरव की बातें सुनते ही कौन अत्यन्त प्रसन्न होंगे, ऐसा देवकरण भाई सोचने लगे?

स. ६ - उक्त संदेशा लेकर कौन भाई, कहाँ से, कहाँ गये? वह संदेश किसे दिया?

स. ७ - उन्होंने महाराजा छत्रसाल को क्या-क्या समाचार सुनाया?

ज. ७ - दीवान देवकरण भाई ने मऊ में स्थित महाराजा छत्रसाल के पास जाकर श्री प्राणनाथजी के आने का सुसमाचार बताया और उनके →

❀ मिलाप ❀

ज. १ - रामनगर में महामति श्री प्राणनाथजी की उद्‌बोधिनी-अलौकिक चर्चा सर्वप्रथम सूरत सिंह भाई ने सुनी।

ज. २ - सूरत सिंह भाई ने दीवान देवकरण भाई को श्रीजी स्वरूप के दिव्य स्वरूप के दर्शन कराये। तब उन्हें दर्शन करते ही निश्चय हो गया कि "ये तो परब्रह्म परमात्मा का बोध देने के लिए स्वयं निष्कलंकबुद्ध स्वरूप प्रकट हुए हैं।"

ज. ३ - श्रीजी स्वरूप जब सुन्दरसाथ को जागृत करते हुए रामनगर पहुँचे, तब वहाँ जन-जागरण करते हुए दो वर्ष ठहरे। दीवान देवकरण भाई, जो छत्रसाल के वंशज थे, महाप्रभु का समाचार पाकर उनसे मिलने आए। उनके दिव्य स्वरूप के दर्शन पाकर देवकरण भाई को भी महाप्रभु पर पूर्ण निष्ठा हो गयी।

ज. ४- महाप्रभु श्री प्राणनाथजी का ज्ञान-गौरव देखकर दीवान देवकरण भाई के मन में उमंग उठी और वे सोचने लगे, "इनका समाचार छत्रसाल को दूँ।"

ज. ५ - इनके ज्ञान-गौरव की महिमा सुनकर महाराजा छत्रसाल अत्यधिक प्रसन्न होंगे, ऐसा देवकरण भाई सोचने लगे।

ज. ६ - उक्त महान् कार्य का बीड़ा उठाकर दीवान देवकरण भाई रामनगर से मऊ आये और महाराजा छत्रसाल को श्रीजी का संदेश दिया।

→ जन-जागरण अभियान एवम् मोक्षदायी ज्ञान का परिचय दिया। उन्होंने महाराजा छत्रसाल को यह भी बताया, "बादशाह औरंगजेब श्रीजी स्वरूप से वैर भाव रखता है। उससे इन्होंने धर्मयुद्ध छेड़ रखा है। स्वामीजी ने देश के सभी राजाओं को इस धर्मयुद्ध में सहयोग देने के लिए आह्वान किया है। कोई भी राजा औरंगजेब →

→ के विरुद्ध खड़े होने का सामर्थ्य न रख पाने के कारण आगे नहीं →

स. ८ - देवकरण भाई द्वारा उक्त सुन्दरसाथ समाचार सुनते ही साकुण्डलबाई की आत्मा को क्या हुआ?

स. ९ - देवकरण भाई ने उक्त प्रकार की बातें अन्य किसे सुनायी?

स. १०-देवकरण भाई की उक्त बातें सुनकर महाराजा छत्रसाल विचार कर ही रहे थे कि तभी कौन-कौन श्रीजी की ओर से उनके-साकुण्डलबाई के पास आ पहुँचे?

स. ११-आनेवालों में से श्रीमद्भागवत के श्लोक ललकारते हुए कौन आया? पुनः वाणी की चौपाइयाँ अलापते हुए कौन आया?

स. १२-किसकी चर्चा श्रवण करते ही साकुण्डलबाई को श्रीजी के चरणों में आत्मदान करने की भावना उत्पन्न हुई?

ज. १२- जब साकुण्डल सखी-छत्रसालजी ने लालदासजी के मुख से →

स. १३-तत्पश्चात् महाराजा छत्रसालजी ने श्रीजी स्वरूप को बुला लाने के लिए अगरिया किसे भेजा?

स. १४-महाराजा छत्रसालजी ने देवकरण भाई से श्रीजी के चरणों में अपनी तरफ से क्या कहने को कहा?

ज. १४- महाराजा छत्रसालजी ने देवकरण भाई से कहा, "आप श्री →

→ आया। अब आप उन्हें अपने यहाँ बुलवा लीजिये।"

ज. ८ - महाराजा छत्रसाल में धाम का अंकुर तो था ही! प्रियतम परमात्मा का संदेश पाकर साकुण्डलबाई के अन्दर जागृत बुद्धि आ गई।

ज. ९- दीवान देवकरण भाई ने श्रीजी के विषय की बातें बलदिवान को भी सुनायी।

ज. १०- दीवान देवकरण भाई की उक्त बातें सुनकर महाराजा छत्रसाल उस पर विचार कर ही रहे थे कि मन में साकुण्डलबाई को जगाने की बात सोचते हुए लालदासजी भी मऊ आ पहुँचे तथा मन में उमंग भरकर श्री प्राणनाथजी की वाणी की चौपाई अलापते हुए उत्तमदासजी भी वहाँ आ पहुँचे।

ज. ११- आनेवालों में से लालदासजी महाराज श्रीमद्भागवत के श्लोक ललकारते हुए और उत्तमदासजी श्रीजी के श्री मुख की वाणी की चौपाइयाँ अलापते हुए आए।

→ श्रीमद्भागवत के श्लोकों की चर्चा श्रवण की, तभी से उनके मन में स्वामी श्री प्राणनाथजी के चरणों में आत्मदान करने की भावना उत्पन्न हो गई।

ज. १३- तत्पश्चात् महाराजा छत्रसाल ने श्रीजी स्वरूप को अगरिया से मऊ बुला लाने के लिए दीवान देवकरण भाई को भेजा।

→ लालदास और उत्तमदासजी को भी अपने साथ ले जाइये। स्वामीजी के चरणों में हमारा प्रणाम कर कहना कि मैं स्वयं छत्रसाल आपको लेने आया हूँ।"

स. १५-मऊ से कौन-कौन महाराजा छत्रसालजी की खुशखबरी लेकर श्रीजी के पास अगरिया आए?

स. १६-उक्त जनों द्वारा मऊ से आकर महाराजा छत्रसालजी का संदेश देने पर श्रीजी को क्या हुआ?

स. १७-अब श्रीजी साहेब ब्रह्मात्माओं की जमात को लेकर अगरिया से प्रस्थान कर कहाँ आये?

स. १८-पन्ना-मध्य प्रदेश के किस स्थान पर जमात सहित श्रीजी की सवारी रुकी?

स. १९-अमराई घाट पर रुकते ही श्रीजी ने क्या विचार किया और क्या करने की ठानी?

ज. १९- उक्त प्रकार से आते-जाते अब श्रीजी स्वरूप की दृष्टि अमराई घाट पर पड़ी, तब श्रीजी ने उस स्थान पर श्रीमन्निजानन्द धर्म →

स. २०-श्री महामति स्वरूप अपनी परमहंस जमात के साथ गढ़े से कहाँ-कहाँ होते हुए परना (पन्ना) स्थित अमराई घाट में पहुँचे?

ज. २०- महामति श्री प्राणनाथजी अपनी परमहंस जमात लेकर गढ़े से →

स. २१-अमराई घाट में डेरा करते ही महामति स्वरूप के दिल में क्या अनुभव हुआ एवं उन्होंने चित्त में क्या निश्चित किया?

ज . १५-मऊ से प्रस्थान कर दीवान देवकरण, स्वामी लालदासजी और श्री उत्तमदासजी महाराजा छत्रसालजी की खुशखबरी लेकर श्रीजी के पास अगरिया आए।

ज. १६- उक्त जनों द्वारा मऊ से आकर महाराजा छत्रसालजी का संदेश देने पर, महाराजा छत्रसाल से भेंट का विवरण सुनकर श्रीजी स्वरूप अत्यन्त आनन्दित हुए।

ज. १७- अब श्रीजी साहेब ब्रह्मात्माओं की जमात को लेकर अगरिया से प्रस्थान कर पन्ना आये।

ज. १८- मध्य प्रदेश स्थित पन्ना आकर श्रीजी स्वरूप ने जमात सहित किलकिला नदी के तट पर स्थित अमराई घाट पर डेरा किया। अमराई घाट पर आकर श्रीजी की सवारी रुकी।

→ का झण्डा गाड़कर वहाँ धर्मपीठ स्थापित करने की ठानी और इसी ध्येय से उक्त स्थान को नजर में लिया।

चले अगरिए से, परन पहुंचे आए ।
डेरा किया अमराई में, ठौर झंडे की चित ल्याए।।

→ एक महीने तेरह दिन बाद बिलहरी पहुँचे। वहाँ जमात के साथ ग्यारह दिन रहे। पुनः बिलहरी से बूड़ी बूड़ा गाँव होते हुए अगरिया पहुँचे। तत्पश्चात् अगरिया से जमात के साथ महामति स्वरूप ने अमराई घाट पर पहुँचकर डेरा डाला क्योंकि उन्हें वहाँ स्वच्छ निर्मल पानी की सुविधा उपयुक्त लगी।

ज. २१- बीस साल के जागनी अभियान-धर्म पर्यटन में महामति श्री प्राणनाथजी दीव बंदर से सूरत, हरिद्वार, दिल्ली होते हुये उदयपुर, औरंगाबाद के बाद रामनगर आ पहुँचे तथा रामनगर से मध्य प्रदेश पन्ना स्थित अमराई घाट में डेरा किया। इस घाट में डेरा →

→ करते ही महामति स्वरूप के दिल में इस स्थान के प्रति अपनापन →

स. २२-अमराई घाट कौनसी तथा कैसी नदी का तटवर्ती स्थान है?

ज. २२- अमराई घाट किलकिला नदी का तटवर्ती स्थान है। इस किलकिला नदी का पानी इतना ज़हरीला अथवा विषभरा था →

स. २३-परमहंस जमात और परमहंस जमात के सिरदार किलकिला नदी के तट पर उतरे, अतः वे सिरदार कौन हैं?

स. २४-किस जमात को देखने पर चारों ओर से गौड़ जाति के लोग दौड़कर आ गये तथा क्यों?

ज. २४- त्यागी-वीतरागी, परमहंस, अतीम फकीर की जमात को देखकर →

स. २५-"या नदी को जल न पीजियो"-यह वाक्य किसने, किससे और क्यों कहा?

ज. २५- *"या नदी को जल न पीजियो"* -यह वाक्य गौड़ जाति के लोगों ने परमहंस जमात से कहा क्योंकि वे जानते थे कि यह पानी →

स. २६-उक्त बातें सुनते ही परमहंस जमात ने गौड़ जाति के लोगों के सामने क्या किया?

ज. २६- जब गौड़ जाति के लोगों ने किलकिला नदी के ज़हरीले पानी के विषय में परमहंस जमात को बताया, तब तुरंत ही जमात के लोगों ने गौड़ जाति के लोगों के सामने ही उस नदी से एक कमण्डल भरकर पानी निकाला और एक थाली में उस कमण्डल के पानी →

→ उमड़ आया और उन्होंने अपने दिमाग में यहीं अपना धर्मझण्डा स्थापित करने की ठान ली।

→ कि इस प्राणघातक पानी के प्रयोग से पक्षी तथा इंसान कोई भी नहीं बच पाते थे। इतना ही नहीं, इस नदी के ज़हरीले पानी की भाप मात्र से भी आसमान में उड़ते हुए पक्षी मरकर नीचे गिर जाया करते थे।

ज. २३- परमहंस जमात-ब्रह्मसृष्टि और इन परमहंस जमात के सिरदार महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप हैं, जो सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर ब्रह्म से भी परे स्थित अक्षरातीत धाम के हैं।

→ चारों ओर से गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि चरानेवाले गौड़ जाति के लोग ऊपर पहाड़ से उतरकर नीचे आ गये क्योंकि उन्हें लगा कि ये संतों की जमात नदी के पानी की सुविधा को देखकर यहाँ उतरी है। किन्तु वे नहीं जानते कि यह पानी पीकर वे मर जायेंगे।

→ ज़हरीला है। इसे पीते ही पशु-पक्षी तो क्या, आदमी भी मर जाते हैं। वे लोग जानते थे कि यह जमात पानी की ही सुविधा देखकर यहाँ उतरी है। यही समझकर वे लोग जमात के लोगों की जान बचाने हेतु सूचना देने आये थे।

→ से परमहंस के सिरदार श्री प्राणनाथजी के चरण धोए। तत्पश्चात् उस थाली के चरणामृत को उस नदी में डाल दिया और परमहंस जमात के सभी लोग उस नदी में प्रवेश कर गए। गौड़ जाति के लोगों के सामने ही जमात के सभी लोगों ने अँजुली द्वारा पेट भरकर उस नदी का पानी पीया और जलक्रीड़ा के साथ उस नदी के पानी में स्नान भी किया।

स. २७-"यह तो श्री कृष्ण महाराज"-ऐसा किसने, किसके लिए और क्यों कहा?

ज. २७- *"यह तो श्री कृष्ण महाराज"* - ऐसा गौड़ जाति के लोगों ने परमहंस जमात से ज़हरीले पानी के अमृत में परिणत हो जाने के पश्चात् श्री प्राणनाथजी स्वरूप के विषय में कहा क्योंकि उन्हें →

स. २८-जब श्री प्राणनाथजी ने किलकिला नदी के तट पर डेरा डालकर मऊ में श्री छत्रसाल महाराज को अपने आ पहुँचने की खबर भेजी, तब श्री छत्रसाल महाराज की ओर से क्या जवाब आया?

ज. २८- जब देवकरण भाई ने परमहंस जमात के साथ महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी को किलकिला नदी के तट पर पधराया, तब →

स. २९-महाराजा छत्रसाल का संदेशा आने के पश्चात् महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने क्या किया?

ज. २९- महाराजा छत्रसाल की ओर से आग्रहपूर्ण सूचना आने के पश्चात् →

स. ३०-महामति श्री प्राणनाथजी द्वारा मऊ पहुँचने की खबर देने पर महाराजा छत्रसाल ने खबर सुनकर क्या किया?

ज. ३०- जब महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने मऊ स्थित तिदुनी दरवाजे में पहुँचकर महाराजा छत्रसाल को अपने आ पहुँचने की खबर दी, तब उसी दिन, रात को महाराजा छत्रसाल ने गुप्त रूप में →

स. ३१-महाराजा छत्रसाल ने भेष बदल-बदलकर दो बार महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप के दर्शन किये। अतः उन्होंने किन दो वेशों में महामति स्वरूप के दर्शन किये?

→ लगने लगा कि ये तो द्वापरयुग के श्री कृष्ण महाराज हैं। वहाँ द्वापर में भी इन्होंने ही कालिय नाग को नाथा था और उसके फन पर नृत्य किया था। इन्होंने ही वहाँ कालिय नाग का दहन करके उसके कालकूट विष द्वारा सबकी रक्षा की थी। अभी वही श्री कृष्ण भगवान भेष बदलकर हमारी रक्षा करने तथा सबको सुख पहुँचाने आये हैं।

→ मऊ में श्री छत्रसाल महाराज को संदेशा भेजा गया कि अपनी परमहंस जमात सहित महामति स्वरूप किलकिला नदी के तट पर स्थित अमराई घाट पर आकर डेरा डाल चुके हैं और आपके इंतजार में हैं। यह बात सुनते ही श्री छत्रसाल महाराज ने आग्रह सहित प्रार्थना की, "मेरा आना संभव नहीं है। अतः यदि आप स्वयं ही पचास-साठ मर्दों के साथ मऊ आ जायें, तो मेरी मनोकामना पूर्ण हो जाएगी।"

→ महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी पचास-साठ मर्द आदमियों को साथ लेकर अमराई घाट से जयध्वनि के साथ निकल पड़े तथा तिदुनी दरवाजे में पहुँचकर पुनः महाराजा छत्रसाल को अपने आ पहुँचने की खबर भेजी।

→ गुप्त वेश धारण कर छिप-छिपकर महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप की चर्चा सुनी। इस बार उन्होंने आँखों से नहीं, कानों से श्री प्राणनाथजी स्वरूप के दर्शन किये अर्थात् चर्चा-कथा द्वारा भलीभाँति अविकल्प रूपेण निश्चित कर लिया कि ये वही स्वरूप हैं, जिनका इंतजार मैं बारह साल से कर रहा हूँ।

ज. ३१- महाराजा छत्रसाल ने पहली बार तो तिदुनी दरवाजे पर गुप्त भेष में आकर चर्चा के समय चर्चा द्वारा आँखों से नहीं, बल्कि कानों से महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप के दर्शन किये और दूसरे दिन संदेशा भिजवाकर शिकारी के भेष में महामति स्वरूप के दर्शन करने गये।

स. ३२-दूसरी बार महामति स्वरूप के दर्शन करने आते समय महाराजा छत्रसाल कौनसे भेष में थे तथा जब वे दर्शन करने पहुँचे, उस समय महामति स्वरूप क्या कर रहे थे?

स. ३३-श्री महामति स्वरूप के सामने पहुँचकर महाराजा छत्रसाल किस प्रकार खड़े रहे और हाथ जोड़कर क्या कहा? उसके जवाब में श्री प्राणनाथजी ने उन्हें क्या कहकर सम्बोधित किया?

ज.३३- महाराजा छत्रसाल जब दूसरी बार महामति स्वरूप के दर्शन करने →

स. ३४-जब महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल से "बाबा बैठो इत आए" कहा, तब महाराजा छत्रसाल कहाँ आकर बैठे?

स. ३५-जब महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल से दूसरी बार आगे आने के लिए कहा, तब वे कहाँ आकर बैठे?

स. ३६-पुनः महामति स्वरूप द्वारा तीसरी बार आगे आने के लिए कहने पर महाराजा छत्रसाल ने क्या किया?

ज. ३६- जब महाराजा छत्रसाल महामति स्वरूप के कहने पर बिछौने की →

स. ३७-जब महाराजा छत्रसाल महामति स्वरूप के पास आकर बैठ गए, तब महामति स्वरूप ने उनसे क्या कहा?

ज. ३७-जब महाराजा छत्रसाल महामति स्वरूप के सामने आकर बैठ गए, →

ज. ३२- दूसरी बार महामति स्वरूप के दर्शन करने आते समय महाराजा छत्रसाल शिकारी के भेष में थे तथा जब वे महामति स्वरूप के दर्शन करने पहुँचे, उस समय महामति स्वरूप परमहंस जमात के बीच चर्चा कर रहे थे।

→ पहुँचे, तब महामति स्वरूप के सामने वे एक अनजान-से तथा असमंजस में पड़े हुए अर्थात् *"किंकर्तव्यविमूढ़"* की स्थिति में हाथ जोड़े खड़े रहे। उनके मुख से केवल *"बाबा जू राम राम"* इतना ही निकला। इसके जवाब में महामति स्वरूप ने भी *"बाबा बैठो इत आए"* अर्थात् "अरे बाबा! इधर पास में आकर बैठिए" इतना ही कहा।

ज. ३४- जब महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल से *"बाबा बैठो इत आए"* कहा, तब महाराजा छत्रसाल फर्श पर बिछे हुए बिछौने के किनार पर आकर बैठ गए।

ज. ३५- जब महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल से दूसरी बार कहा, "वहाँ नहीं बाबा! और आगे आ जाओ !!" तब महाराजा छत्रसाल वहाँ से उठकर बिछौने के बीच में आकर बैठ गए।

→ किनार से उठकर बीच में आकर बैठ गए, तब पुनः महामति स्वरूप ने उनसे तीसरी बार कहा, "अरे बाबा! यहाँ मेरे पास आकर बैठ जाओ।" तब महामति स्वरूप द्वारा तीसरी बार कहने पर महाराजा छत्रसाल महामति स्वरूप के सामने आकर बैठ गए।

→ तब महामति स्वरूप ने उनसे कहा, *"अब कहाँ जाओगे भागे"* अर्थात् "अब आप मेरे फन्द में पड़ गये हैं। अब आप भागकर कहाँ जायेंगे?"

स. ३८-महामति स्वरूप की बात सुनते ही जवाब में महाराजा छत्रसाल ने क्या कहा?

ज. ३८- श्री महामति स्वरूप की उक्त बातों के प्रत्युत्तर में महाराजा →

स. ३९-"तिनकी छाप के रुपैया"-यह कथन किसने और किससे कहा? वे मोहर किसके छाप के थे तथा उन मोहरों के जवाब में महामति स्वरूप ने क्या किया?

ज. ३९- *"तिनकी छाप के रुपैया"*-यह कथन महाराजा छत्रसाल ने वे →

स. ४०-बारह साल से कौन, किसके चाकर थे तथा इस बात की क्या साक्षी मिली?

ज. ४०- जब महाराजा छत्रसाल ने महामति स्वरूप द्वारा दिए हुए मोहरों →

स. ४१-महाराजा छत्रसाल ने अपने राजमहल में जाकर महामति स्वरूप से हुए मिलाप के समय की सारी हकीकत किससे कही?

स. ४२-अपने राजमहल के अन्दर अर्थात् अन्तःपुर में जाकर महाराजा छत्रसाल ने किससे तथा क्या कहा?

ज. ४२- अपने राजमहल के अन्तःपुर में जाकर महाराजा छत्रसाल ने अपनी रानी देव कुंअरि से महामति स्वरूप द्वारा हुए मिलाप विषय →

स. ४३-मऊ के राजदरबार में महाराजा छत्रसाल की कौनसी रानी रहती थीं?

स. ४४-महाराजा छत्रसाल की आज्ञा पाते ही रानी देव कुंअरि किस रूप में महामति स्वरूप के दर्शन करने गईं?

→ छत्रसाल ने कहा, "मुझ पर फन्दा डालना असंभव है। चौदह लोक में ऐसा कोई नहीं है, जो मुझ पर फन्दा डाल सके। यह कार्य तो मात्र बुद्धजी द्वारा ही हो सकता है क्योंकि मैं बारह साल से उनका चाकर हूँ।"

→ मोहर दिखाते हुए कहा था, जो उन्हें १२ साल पहले एक व्यक्ति दे गया था। वे मोहर बुद्धजी की छाप के थे। उन मोहरों के जवाब में महामति स्वरूप ने तुरन्त वैसे ही छापवाले एक मुट्ठीभर मोहर अपनी गादी के नीचे से निकाले और महाराजा छत्रसाल के हाथ में दे दिये। महाराजा छत्रसाल दोनों मोहरों की छाप मिलाने लगे।

→ के साथ अपने मोहरों की छाप का मिलान करके देखा, तो उन्हें निश्चित हो गया कि वे १२ साल से इन्हीं स्वरूप के चाकर थे। अब उन्हें अन्य किसी साक्षी की जरूरत ही नहीं पड़ी। वे मुट्ठीभर मोहर ही साक्षीरूप सिद्ध हुए।

ज. ४१- अपने राजमहल में जाकर महाराजा छत्रसाल ने महामति स्वरूप से हुए मिलाप के समय की सारी हकीकत अपने काका बलदिवान सहित अन्य राजकुँवरों से कही।

→ की सारी बातें कही तथा यह भी बताया कि अक्षरातीत धाम से पूर्णब्रह्म अवतरित हुए हैं, जिनका इंतजार मैं बारह साल से करते आया था। जिन्हें-जिन्हें उनके दर्शन करने की इच्छा हो, वे जाकर दर्शन कर सकते हैं।

ज. ४३- मऊ के राजदरबार में महाराजा छत्रसाल की देव कुंअरि रानी रहती थीं।

ज. ४४- महाराजा छत्रसालजी की आज्ञा पाते ही रानी देव कुंअरि ने सर्वप्रथम ब्राह्मणियों के समुदाय में वेश बदलकर महामति स्वरूप →

→ के दर्शन किये । दूसरी बार उन्होंने सूचना देकर अपनी सेविकाओं →

स. ४५-महामति स्वरूप के दर्शन करने में तीसरी बारी किसकी आई और उन्होंने कैसे दर्शन किये?

स. ४६-उस समय कौन मऊ पर चढ़ाई करने की ताक में इंतजार कर रहा था?

स. ४७-जब युद्ध के लिए निकलने से पहले अपनी असवारी तैयार कर महाराजा छत्रसाल महामति स्वरूप के पास आये, तब महामति स्वरूप ने उनसे क्या कहा और क्या किया?

ज. ४७- जब महाराजा छत्रसाल शेर अफगन से युद्ध करने के लिए सेना →

स. ४८-श्री प्राणनाथजी स्वरूप के मुख से निकली उक्त बातें सुनकर लशकर के सिपाही क्या कहने लगे?

ज. ४८- उक्त प्रकार महामति स्वरूप के मुख से महाराजा छत्रसाल को →

स. ४९-युद्ध में विजय प्राप्त कर महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी के पास वापस लौटने पर महाराजा छत्रसाल के लशकर के सिपाही क्या कहने लगे?

ज. ४९- औरंगजेब ने भेजे हुए शेर अफगनके सैनिकों को भगाकर युद्ध में →

स. ५०-युद्ध में विजय प्राप्त कर महामति स्वरूप के पास वापस लौटने पर छत्रसाल महाराज ने क्या देखा और वह देखकर वे क्या कहने लगे?

→ सहित विधिपूर्वक जाकर महामति स्वरूप के दर्शन किये।

ज. ४५- महामति स्वरूप के दर्शन करने में तीसरी बारी महाराजा छत्रसाल के सेन्याध्यक्ष और काका बलदिवान की आई। उन्होंने सैनिकों की भीड़ के साथ महामति स्वरूप के दर्शन किये।

ज. ४६- उस समय शेर अफगन मऊ पर चढ़ाई कर अपने कब्जे में ले लेने की ताक में भारी सेना सहित इंतजार कर रहा था।

→ तैयार कर आशीर्वाद लेने महामति स्वरूप के पास आए, तब उन्हें आशीर्वाद देते हुए महामति स्वरूप ने उनसे कहा, "आज तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी।" इतना कहकर महाराजा छत्रसाल के सिर पर हाथ रखते हुए एक रूमाल बाँधकर आशीर्वाद के रूप में एक छोटी-सी तलवार भी उन्हें दी।

→ आशीर्वाद देते हुए निकले वचन सुनकर लशकर के सिपाही कहने लगे, "यदि आज की लड़ाई जीतकर हम वापस लौटे, तो हम भी इन्हें अक्षरातीत स्वरूप मानेंगे।" इस प्रकार कहते हुए युद्ध के लिए प्रस्थान करने लगे।

→ विजय प्राप्त कर वापस लौटकर आने पर महाराजा छत्रसाल के लशकर के सिपाही कहने लगे, "आज के इस युद्ध में परब्रह्म स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी की दया बिना विजय पाना, तो असंभव ही था। इस असंभव को संभव में परिणत करने की ताकत तो अक्षरातीत स्वरूप में ही हो सकती है।"

ज. ५०- युद्ध में विजय हासिल कर जब महाराजा छत्रसाल सैनिकों सहित वापस लौटकर महामति स्वरूप के पास आए, तब वहाँ उन्होंने *"विराट पट"* देखा। विराट पट दर्शन द्वारा ज्ञान प्राप्त करते ही "यहाँ आने से पहले हम कहाँ थे? अभी कहाँ हैं और क्या कर →

रहे हैं तथा संसार में हम क्यों आये हैं?'' इन सभी प्रश्नों का जवाब उन्हें अपने-आप खुलस्त होते गया और महाराजा छत्रसाल

स. ५१-श्री महामति स्वरूप जब मऊ से पन्ना अपने डेरे अमराई घाट पर आये, तो क्या देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य लगा?

ज. ५१- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप जब मऊ से अमराई घाट किलकिला नदी के तट पर स्थित अपने डेरे में लौटे, तब मँझली

स. ५२-महाराजा छत्रसाल के आते ही महामति स्वरूप ने उनसे किसके विषय में बातें की?

ज. ५२- महाराजा छत्रसाल जब मऊ में व्यवस्था मिलाकर अमराई घाट पर स्थित महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप के पास आए तब महामति स्वरूप ने उनके आगे मँझली रानी का सेवा-भाव खुलस्त

स. ५३-महाराजा छत्रसाल किलकिला नदी के किनारे स्थित अमराई घाट पर कब-किस समय आए? उस समय उनके साथ अन्य कोई भी थे या वे अकेले आए थे? यदि अन्य भी थे, तो कौन-कौन?

ज. ५३- महाराजा छत्रसाल जिस समय मऊ में राज्य व्यवस्था आदि मिलाकर श्री प्राणनाथजी स्वरूप के पास आए, वह दोपहर के भोजन-प्रसाद का समय था। उस समय महाराजा छत्रसाल अकेले नहीं थे। उनके साथ सेना के अन्य चार जन भी थे। उन्हें दूर

स. ५४-''कनातें ठाढ़ी करीं''-इस कथन का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट करो।

ज. ५४-*''कनातें ठाढ़ी करीं''*-इस कथन का तात्पर्य है कि उस समय

➞ कहने लगे, "अब मैं इस छोटे-से राज्य में नहीं रहना चाहता। अब तो मुझे परमधाम के २५ पक्षरूपी बड़े राज्य में जाना है।"

➞ रानी ने बड़े हाव-भाव से उनकी सेवा की। उनके सेवा-भाव को देखकर महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी आश्चर्यचकित रह गए और सोचने लगे, "मैंने महाराजा छत्रसाल को क्या जागृत किया! उससे तो कई गुना हाल बाईज्यू महारानी के समझाने पर मँझली रानी में आया है।"

➞ कर दिया और कहा, "देखो छत्रसाल! मैं तुममें उतना सेवा-भाव उत्पन्न नहीं कर सका, जितना यहाँ थोड़े समय में बाईज्यू महारानी द्वारा समझ प्राप्त करके मँझली रानीमें उत्पन्न हुआ। उनका सेवा-भाव, प्रेममयी सेवा देखकर तो मैं दंग ही रह गया। उनकी सेवा देखकर ऐसा लगा, न जाने वर्षों पहले ही उनकी जागनी हो चुकी हो, जिसका प्रतिफल उनमें उत्पन्न वह प्रेम-भाव था।"

➞ खड़ा करके जब महाराजा छत्रसाल श्रीजी के पास आए, उस वक्त श्रीजी को आरोगाने हेतु चादरें लगाकर ओट बनाई जा रही थी। महाराजा छत्रसाल श्रीजी को भोजन कराने के लिए वहीं विराजमान हो गए। महामति स्वरूप के भोजन कर लेने के बाद महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसालजी को प्रसाद के रूप में दी हुई थाली में ही महाराजा छत्रसाल सहित उनकी सेना के उन चार लोगों ने भी उसी थाली में एक साथ प्रसाद लिया, जो महाराजा छत्रसालजी के साथ आए थे। उन चार जनों में हिम्मत सिंह, पर्वत सिंह, शाहरूप और नारायणदास थे।

➞ सुन्दरसाथजी श्रीजी को भोजन-प्रसाद आरोगाने के लिए चादरों द्वारा कनातें खड़ी कर आड़ बनाया करते थे। यह एक तरह का पर्दा होता है, जिसके सहारे श्रीजी किसी के बिना देखे एकांत में भोजन किया करते थे।

स. ५५-"आगे धरी श्री राज" अर्थात् क्या, किसने और किसके आगे रखा?

ज. ५५- *"आगे धरी श्री राज"* अर्थात् बाईज्यूराजजी (श्री तेजकुँवरी) →

स. ५६-इस वक्त कलियुगरूपी दज्जाल क्यों काँप उठा?

ज. ५६- महाराजा छत्रसाल के साथ आये चार जनों ने जब महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी को साक्षात् पूर्णब्रह्म स्वरूप मानकर →

स. ५७-"इन दोऊ से चले न मेरा जोर"-ऐसा कौन कह रहा है और किन दोनों के प्रति?

स. ५८-किसी-किसी के दिल में बैठकर कलियुग ने महाभारत रचने की कोशिश की। अतः वे कौन हैं, जिनके दिलों पर कलियुग विराजमान हुआ और उन्हें क्या नहीं जँचा?

ज. ५८- किसी-किसी के अर्थात् महाराजा छत्रसाल के राजमहल में ही स्थित सैनिकों के अग्रगण्य तथा महाराजा छत्रसाल के काका बलदिवान के दिल पर बैठकर शंका-उपशंकारूपी दज्जाल उथल- →

स. ५९-"ना भए राज तरफ दिलगीर" अर्थात् कोई भी महाराजा छत्रसाल को महामति श्री प्राणनाथजी से विमुख नहीं कर सके। अतः कौन?

ज. ५९- *"ना भए राज तरफ दिलगीर"* अर्थात् सैनिकों के प्रमुख →

स. ६०-महामति श्री प्राणनाथजी मध्य प्रदेश स्थित श्री पन्ना धाम कब पहुँचे? उनके द्वारा प्रारंभ जागनी अभियान कितने समय तक का था और कहाँ से लेकर, कहाँ तक का था?

→ महामति स्वरूप को आरोगाने के लिए भोजन की थाली लेकर आईं तथा महामति श्री प्राणनाथजी ने आरोगने के पश्चात् प्रसाद की थाली महाराजा छत्रसाल के आगे रख दी।

→ उनकी थाली में प्रसाद लिया, तब यह देखकर कुप्रवृत्तिवाले शंकालुओं के दिल में बैठे दज्जाल काँपने लगे और सोचने लगे कि अब यदि ये भी परब्रह्म स्वरूप के साथ मिल गये, तो हे राम! हमारा क्या होगा? अरे! अब तो हमारा काल पास आ गया है!!

ज. ५७- *"इन दीऊ से चले न मेरा जोर"*- ऐसा कलियुगी भावनाओं से ग्रस्त कुनीयत के पुजारी महामति स्वरूप और महाराजा छत्रसाल के प्रति कह रहे हैं।

→ पुथल मचाकर महाभारत रचने का प्रयास करने लगा, जिसके कारण वे सोचने लगे, "इन्होंने प्रसाद के नाम पर ही सही, परंतु वीतरागी बाबा का जूठन क्यों खाया? यह बात मेरी तो समझ के बाहर ही है। हम तो बुन्देला खानदान के पुरुषार्थी तथा जन्मजात क्षत्रिय हैं।" अतः महाराजा छत्रसाल के काका बलदिवान को भी ब्रह्माजी की ही तरह प्रसाद के नाम पर लिया हुआ जूठन नहीं जँचा।

→ बलदिवान ने महाराजा छत्रसाल को दिलगीर अर्थात् दुःखी करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। महाभारत रचने की कइयों कोशिशें कीं। परन्तु उनके एक भी प्रयत्न कामयाब नहीं हो सके। महाराजा छत्रसाल के हृदय में महामति स्वरूप के प्रति स्थित श्रद्धा-विश्वास पर जरा-सी भी आँच नहीं आने पाई क्योंकि उन्हें महामति स्वरूप पर अविकल्प श्रद्धा-विश्वास था।

ज. ६०- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप जब मध्य प्रदेश स्थित श्री पन्ना धाम, किलकिला नदी के तट पर पहुँचे, तब वि. सं. १७४० लगा ही था। उनके द्वारा प्रारंभ जागनी अभियान वि. सं. १७२० से १७४० अर्थात् पूरे २० साल का था और दीव बंदर से लेकर →

→ लाठी, उट्ठा, मसकत, अबासी, सूरत, हरिद्वार, दिल्ली होते हुए राजस्थान में उदयपुर, मंदसोर, औरंगाबाद, रामनगर अंत में पन्ना →

स. ६१-"काहू करी ना करसी"-क्या, किसने अथवा यह कथन किसके बारे में कहा गया है?

ज. ६१- *"काहू करी ना करसी"* अर्थात् जब से सृष्टि उत्पन्न हुई, तब से लेकर वि. सं. १७४० तक जिस-जिस ने जिस-जिस की सेवा की और आज तक करते आये, उन सभी के सेवा-भाव के विषय →

स. ६२-"तैसा ही लिखा तिन" अर्थात् क्या, किसमें, किस-किस के विषय में तथा कब से लिखा गया है?

ज. ६२- *"तैसा ही लिखा तिन"* अर्थात् सृष्टि के आद्य से लेकर अब तक →

स. ६३-चौपड़ा की हवेली में किसने, किसे, कब और किस तरह पधराया?

ज. ६३- महाराजा छत्रसाल जब राज्य व्यवस्था मिलाकर मऊ से अमराई घाट आ पहुँचे, तब उन्होंने महामति श्री प्राणनाथजी को अमराई →

स. ६४-सुखपाल को अपनी हवेली के द्वार के आगे रखकर महाराजा छत्रसाल क्या करने लगे?

ज. ६४- सुखपाल को अपनी हवेली के द्वार के आगे रखकर महाराजा →

स. ६५-हवेली के अन्दर स्थित महल के अन्दर से अचानक कौन बाहर आया और उन्होंने क्या किया?

ज. ६५- हवेली के अन्दर स्थित महल के अन्दर से अचानक मँझली रानी →

स. ६६-वह देखकर उस समय महाराजा छत्रसाल ने मँझली रानी से क्या कहा और क्या किया?

→ तक का था। यहीं पर महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने धर्मझण्डा गाड़कर अंतिम धर्मपीठ की स्थापना की थी।

→ में शास्त्रों में तरह-तरह से लिखा हुआ है। परन्तु यहाँ महाराजा छत्रसाल ने महामति श्री प्राणनाथजी को साक्षात् अक्षरातीत स्वरूप मानकर उनकी जैसी सेवा की, वैसी सेवा न भूतकाल में किसी ने की होगी और न भविष्य में कोई कर पाएगा। अतः उक्त कथन इसी सेवा के विषय में करनेवाले के भाव को प्रकट करने के लिए कहा गया है।

→ जिन-जिन भक्तों ने अथवा शिष्यों ने अपने-अपने इष्ट अथवा गुरु की जैसी-जिस भाव से सेवा की, उसका एक-एक वर्णन विभिन्न शास्त्र-पुराणों में होते आया है।

→ घाट से *"राजगुरु"* की भाँति फौजी सैनिकों तथा बाजे-गाजे के साथ सुखपाल में बिठाया। फिर सुखपाल को एक ओर से कंधे पर स्वयं महाराजा छत्रसाल ने उठाया, तो दूसरी ओर से उनके भतीजे देवकरण एवं अन्य राजकुँवरों ने। इस प्रकार सुखपाल को चौपड़ा की हवेली के मूल दरवाजे के आगे लाकर रखा गया।

→ छत्रसाल हवेली के अन्दर चले गये और अन्दर जाकर क्या करूँ-क्या करूँ? इस तरह सोचते-विचारते यहाँ-वहाँ चक्कर मारने लगे।

→ महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी के आगमन की सूचना पाते ही दौड़कर आईं और अपनी पहनी हुई साड़ी को सुखपाल से लेकर सिंहासन तक पाँवड़े के रूप में बिछा दिया।

ज. ६६- मँझली रानी को पहनी हुई साड़ी का पाँवड़ा बिछाया देखकर महाराजा छत्रसाल सचेत हो उठे और मँझली रानी से कहने →

लगे, "अरे! तुम मुझसे आगे कैसे बढ़ रही हो?" इतना कहकर उन्होंने मँझली रानी की साड़ी उठाकर एक कोने में फेंक दी और →

स. ६७-आध्यात्मिक और भौतिक-इन दोनों सम्बन्धों में से जीत किसकी हुई?

ज. ६७- महामति स्वरूप की नजर के आगे ही धार्मिक श्रद्धायुक्त मँझली रानी के भाव को उनका भौतिक सम्बन्ध दबा रहा था। यह देखकर तुरन्त ही महामति स्वरूप ने मँझली रानी की श्रद्धा की रक्षा हेतु →

स. ६८-"कही धन धन दिन है आज"-ऐसा महाराजा छत्रसाल ने कब कहा?

ज. ६८- जब महाराजा छत्रसाल महामति स्वरूप को सुखपाल में से उठाकर →

स. ६९-उक्त कथन कहने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल ने क्या किया?

ज. ६९- उक्त कथन कहने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल ने महामति श्री प्राणनाथजी के चरणों में अपनी आत्मा को समर्पित करते हुए →

स. ७०-"कही तुम साक्षात अक्षरातीत हो"-यह वाक्य महाराजा छत्रसाल ने किस वक्त कहा?

स. ७१-आरती न्योछावर करने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल ने समाज में क्या आह्वान कर दिया? यह आह्वान किस जमात के लिए था?

ज. ७१- आरती न्योछावर करने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल ने अपनी आत्मा की निश्चयता प्रकट करते हुए समाज के बीच यह आह्वान →

→ अपनी पहनी हुई पगड़ी को खोलकर उसे पाँवड़े के रूप में बिछाने लगे।

→ महाराजा छत्रसाल द्वारा बिछाई हुई पगड़ी को छोटा कर दिया। अतः सुखपाल से लेकर पाँवड़े के रूप में बिछाई हुई पगड़ी सिंहासन तक पहुँचते-पहुँचते पाँच हाथ छोटी पड़ गयी। उस जगह पुनः मँझली रानी की वही साड़ी बिछाई गई। अतः श्री प्राणनाथजी स्वरूप को सिंहासन पर तो मँझली रानी की साड़ी ने ही पहुँचाया अर्थात् पहले उत्पन्न आध्यात्मिक श्रद्धा की विजय हुई।

→ अपनी चौपड़ा हवेली में पाँवड़ा बिछाते हुए ले गए और सिंहासन पर पधराया, तब उन्होंने अपना सर्वस्व आरती के रूप में श्री प्राणनाथजी के चरणों में न्योछावर करते हुए कहा, "आज का दिन मेरे लिए धन्य-धन्य है।"

→ कहा, "मेरी आत्मा ही टीका है, यही पाँवड़ा है और यही आरती में चढ़ाई जानेवाली न्योछावर भी है तथा आपश्री मेरे प्राणों के नाथ अर्थात् *"प्राणनाथ"* स्वरूप हैं। आपश्री के चरणों में छत्ता बार-बार समर्पित होता है।" इतना कहने के पश्चात् उन्होंने श्री बाईज्यूराज को भी सिंहासन पर पधराया और युगलजोड़ी की स्नेहपूर्वक आरती की।

ज. ७०- *"कही तुम साक्षात अक्षरातीत ही"*-यह वाक्य महाराजा छत्रसाल ने महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी को सिंहासन पर बैठाकर आरती न्योछावर करने के पश्चात् कहा।

→ कर दिया, "साक्षात् अक्षरातीत स्वरूप श्री ठकुरानीजी सहित जमात लेकर मेरे घर पधारे हैं और मैंने अविकल्परूप से उनके वास्तविकता की पहचान कर ली है। इन स्वरूप को धनी के अलावा अन्य नजर से देखनेवाले अकाट्यरूपेण मातवर (ब्रह्मात्मा) जमात के नहीं होंगे।"-यह आह्वान ब्रह्मात्माओं-मातवर जमात के लिए था।

स. ७२-मातवर जमात के बीच आह्वान करने के पश्चात् अपने धनी के समक्ष महाराजा छत्रसाल ने क्या कहा?

ज. ७२- मातवर जमात के बीच आह्वान करने के पश्चात् अपने धनी के समक्ष महाराजा छत्रसाल ने कहा, "हे मेरे धनी! अब मेरे पास →

स. ७३-महाराजा छत्रसाल की उक्त बातें सुनकर श्री राजजी ने उनसे क्या कहा?

ज. ७३- उक्त भावनायुक्त महाराजा छत्रसाल की बातें सुनकर महामति →

स. ७४-त्रिकालदर्शी सन्त-महात्माओं द्वारा की गई भविष्यवाणियों के विषय में लोगों में क्या और कैसी शंकाएँ थीं?

ज. ७४- महाराजा छत्रसाल और महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी के →

स. ७५-सर्वप्रथम दाता किसे कहा गया है तथा वे क्या देते हैं? उसके बाद किसकी बारी आती है?

ज. ७५- सर्वप्रथम दाता शिष्य और शिष्या को कहा गया है। वे अपने →

स. ७६-त्रिकालदर्शी विभिन्न सन्तों में से बीतककार श्री लालदासजी यहाँ किसकी भविष्यवाणी को साक्षी के रूप में रख रहे हैं? उस भविष्यवाणी में क्या कहा गया है तथा किस-किस के विषय में कहा गया है?

ज. ७६- त्रिकालदर्शी विभिन्न सन्तों में से बीतककार श्री लालदासजी →

स. ७७-"विजयाभिनन्दबुद्धजी का जाहिर होना"-इस कथन का अर्थ सरलतापूर्वक समझाइये।

→ कुछ नहीं रहा। मैंने अपना सिर तक आपके चरणों में समर्पित कर दिया है। मेरे पास अब अपना आपा अर्थात् अपनी आत्मा भी नहीं रह गयी। अब आप जैसा उचित समझें, उसी तरह अपनी अंगना को अपनाइए।"-इस प्रकार महाराजा छत्रसाल ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की।

→ स्वरूप-श्री राजजी बोले, "देखो छत्रसाल! मैंने हिन्दू राजाओं को ही नहीं बल्कि मुसलिम बादशाहों को भी टटोलकर देखा है। परन्तु ब्रह्मसृष्टि के अंकुरयुक्त अथवा लक्षणयुक्त आत्मा मैं केवल आपको ही देख रहा हूँ।"

→ मिलाप के विषय में त्रिकालदर्शी महापुरुषों एवं साधु-सन्तों ने कहा भी है एवं अपने-अपने ग्रन्थों में गाया भी है। अतः उनके द्वारा गायी हुई भविष्यवाणियों के विषय में जनता में "ऐसे गुरु और शिष्य कहाँ होंगे? कैसे होंगे? आदि..... आदि...." ऐसी विभिन्न शंका-उपशंकाएँ थीं।

→ विश्वस्त गुरु को अपना सर्वेसर्वा अर्थात् शीश तक समर्पित कर देते हैं। इस प्रकार जब शिष्य और शिष्या सर्वभावेन समर्पित हो जाते हैं, तब उनके विश्वस्त गुरु भी उन्हें उसी प्रकार अपना लेते हैं। उसके बाद गुरु जैसा चाहें, उन्हें वैसा बना सकते हैं।

→ यहाँ सन्त शिरोमणि गुरु नानक की भविष्यवाणी को साक्षी के रूप में रख रहे हैं। उस भविष्यवाणी में सन्त शिरोमणि गुरु नानकजी महामति स्वरूप तथा महाराजा छत्रसाल के मिलन विषयक साक्षियाँ छोड़ गये हैं, जिसमें उन्होंने कहा है कि -

"बीतेगा उनतालीसा दगेगा चालीसा,
तब कोई होसी मरद मरद का चेला।
नानक गुरु दिखावे सांई, सच सच दी वेला।।"

ज. ७७- संसार के बीच स्थित विभिन्न मत-मतान्तरों के अंतर्गत झूठे-नाशवंत इष्टों द्वारा अपनी आत्माओं को पकड़ाई गई काल्पनिक →

→ ज्ञान की मान्यताओं को अक्षरातीत के ब्रह्मज्ञान द्वारा परास्त कर अनन्त आत्माओं के अभिनन्दनरूपी एक परब्रह्म-परमात्मा →

स. ७८-महामति श्री प्राणनाथजी ने अपने हाथ में थाल लेकर क्या किया?

स. ७९-महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी ने महाराजा छत्रसाल को कौनसी उपाधि से विभूषित किया?

स. ८०-"करी आरती प्रान"-यहाँ किसकी आरती हुई?

ज. ८०- *"करी आरती प्रान" अर्थात् यहाँ महाराजा छत्रसाल ने अपने* →

स. ८१-महाराजा छत्रसालजी ने अपनी निष्ठा का प्रमाण किस प्रकार दिया?

स. ८२-किसकी कृपा से महाराजा छत्रसाल हिन्दू धर्म के छत्ररूप बने?

स. ८३-महाराजा छत्रसाल की परात्मा का नाम क्या है? उनके आत्मा की प्रत्यक्ष परख किसने की थी?

स. ८४-"छत्रसाल महाराज आगे चलकर हिन्दू धर्म-समाज के बीच छत्रीवत् सिद्ध होंगे"-यह भविष्यवाणी किसने की थी?

ज. ८४- *"परमधाम की साकुण्डल सखी अर्थात् बुन्देला केशरी महाराजा* →

→ और उनके ब्रह्मधामरूपी लक्ष्य का प्रत्यक्ष जाहिर होना ही विजयाभिनन्द बुद्धजी का जाहिर होना है।

ज. ७८- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने अपने हाथ में थाल लेकर महाराजा छत्रसाल के माथे पर तिलक लगा दिया।

ज. ७९- छत्रसाल स्वयं राजा तो थे ही, परंतु महामति स्वरूप ने उनके ललाट पर तिलक लगाकर उन्हें *"महाराजा"* की उपाधि से विभूषित किया और सिंहासन पर विराजमान होने की आज्ञा दी।

→ प्राण प्रियतम महामति स्वरूप की आरती की। तत्पश्चात् महामति स्वरूप की आज्ञा शिरोधार्य कर महाराजा की उपाधियुक्त महाराजा छत्रसाल राजसिंहासन पर बैठ गए।

ज. ८१- राजतिलक होने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल ने अपने प्राणस्वरूप, प्राण प्रियतम महामति श्री प्राणनाथजी की आरती की तथा महामति स्वरूप सहित समस्त प्रजा को प्रणाम करके अपनी निष्ठा का प्रमाण दिया।

ज. ८२- अक्षरातीत पूर्णब्रह्म-इमाम मेहदी-महामति स्वरूप की कृपा के फलस्वरूप ही महाराजा छत्रसाल हिन्दू धर्म के छत्ररूप अथवा रक्षक बने।

ज. ८३- महाराजा छत्रसाल की परात्मा का नाम साकुण्डल है, जिसकी परख स्वयं रूह अल्लाह श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने अक्षरातीत मूल मिलावे में प्रत्यक्ष देखकर की थी।

→ *छत्रसाल आगे चलकर हिन्दू समाज के बीच हिन्दू धर्मरक्षक अर्थात् छत्रीवत् सिद्ध होंगे"*-यह भविष्यवाणी कुछ समय पूर्व ही स्वयं सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी ने की थी। अतः उन्होंने जैसा कहा था, वैसा ही यहाँ हुआ।

स. ८५-बुन्देला केशरी महाराजा छत्रसाल के अंदर कहाँ के, कैसे तथा किसके गुणयुक्त लक्षण झलकने लगे?

ज. ८५- बुन्देला केशरी महाराजा छत्रसाल के अंदर अक्षरातीत मूल मिलावे →

स. ८६-"आरोगावने श्री राज को" अर्थात् यहाँ श्री राजजी महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी को आरोगाते समय कौनसा भोग गाया गया? इस वक्त भोग की थाली सजाकर लानेवाली सखी की परात्मा का नाम क्या है?

स. ८७-इस वक्त बुन्देला केशरी महाराजा छत्रसाल की दाईं आँख फड़की, ऐसा क्यों नहीं कहा गया?

ज. ८७- इस वक्त बुन्देला केशरी महाराजा छत्रसाल की दाईं आँख →

स. ८८-महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप के सुखपाल को कौन-कौन उठाकर तथा कहाँ से, कहाँ तक ले गये?

स. ८९-महामति स्वरूप को कहाँ पधराकर महाराजा छत्रसाल अत्यंत प्रेम से उनका सिंगार करने लगे? पुनः यहाँ पर दोनों स्वरूपों का सिंगार किया गया या मात्र महामति स्वरूप का?

ज. ८९- महामति स्वरूप को महाराजा छत्रसाल ने महल के अन्दर स्थित →

स. ९०-किन-किन नामवाले आभूषणों द्वारा महाराजा छत्रसाल और मँझली रानी ने महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी एवम् बाईज्यूराज महारानी का सिंगार किया?

ज. ९०- महामति स्वरूप का सिंगार महाराजा छत्रसाल ने सुवर्ण कंठी द्वारा →

→ में खेल देखने बैठी साकुण्डल सखी के गुणयुक्त लक्षण झलकने लगे क्योंकि वाणी में स्पष्ट ही कहा है, *"कींगो कस्तूरीय जो, कांई न लभे बास।"*

ज. ८६- *"आरोगावने श्री राज को"* अर्थात् यहाँ श्री राजजी महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी को आरोगाते समय *"बाई आँख मेरी बेर बेर फरके"* यह भोग गाया गया। इस वक्त भोग की थाली सजाकर लानेवाली सखी की परात्मा का नाम है *"संजोय सखी"*।

→ फड़की, ऐसा इसलिए नहीं कहा गया क्योंकि यह बाईं आँख प्रतापी बुन्देला महाराजा छत्रसाल की नहीं, बल्कि परमधाम की साकुण्डल सखी की फड़की थी।

ज. ८८- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप को सिंहासन पर से उठाकर सुखपाल में बिठाकर मँझली रानी तथा महाराजा छत्रसाल राजमहल के अन्तःपुर में ले गए।

→ अन्तःपुर अर्थात् जहाँ सोना, चाँदी, हीरा, मोती आदि सम्पदा रखी जाती है, वहाँ पधराया और पधराकर वस्त्राभूषणादि से उनका सिंगार करने लगे। यहाँ मात्र महामति स्वरूप का ही नहीं, अपितु दोनों स्वरूपों का सिंगार हुआ। महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप का सिंगार महाराजा छत्रसाल ने और तेजकुँवरी अर्थात् बाईज्यू महारानी का सिंगार मँझली रानी ने विभिन्न प्रकार के वस्त्राभूषणों द्वारा किया।

→ किया, जिसमें नीचे रत्नजड़ित झूमती हुई दुगदुगी सुशोभित थी। पुनः उस दुगदुगी में भी हीरा, माणिक आदि रत्न जड़े हुए थे। तत्पश्चात् प्रेमविभोर होकर महाराजा छत्रसाल ने उन्हें *"पहुँची"* नामक आभूषण भी पहनाया। बाईज्यूराज महारानी का सिंगार भी मँझली रानी ने अत्यन्त सुन्दर-सुन्दर विभिन्न आभूषणों से किया।

स. ९७-"अन्दर के साथ ने भी विभिन्न प्रकार के आभूषणों द्वारा दोनों स्वरूपों का सिंगार किया।" अतः अन्दर के साथ कौन-कौन हैं?

स. ९८-महाराजा छत्रसाल के राजमहल में देखा-देखी तथा बनावटी विश्वास जतानेवाले कौन थे?

स. ९३-आज तक किसने, किससे और कौनसी बात छिपाकर रखी थी?

स. ९४-एक दिन जब महाराजा छत्रसाल बंगलाजी में पहुँचे, तब उस समय चार जनों के साथ महामति स्वरूप और लालदासजी कहाँ बैठकर, क्या कर रहे थे?

ज. ९४- एक दिन जब महाराजा छत्रसाल बंगलाजी में पहुँचे, तब उस समय चार जनों के साथ महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी और →

स. ९५-बंगलाजी में चल रही एकान्त बैठक को देखकर महाराजा छत्रसाल क्या विचार करने लगे?

ज. ९५- बंगलाजी में चल रही एकान्त बैठक को देखकर महाराजा छत्रसाल →

स. ९६-महाराजा छत्रसाल ने दूर से ही इशारे से लालदासजी से क्या पूछा?

ज. ९६- महाराजा छत्रसाल ने सोचा कि बिना पूछे एकदम उस बैठक में →

स.९७- महाराजा छत्रसाल के उक्त प्रश्न के जवाब में लालदासजी ने क्या कहा?

ज. ९१- "*अन्दर के साथ*" कहने का तात्पर्य है राजदरबार के अन्दर के अन्य राजकुँवर आदि सदस्य। इन्होंने भी भाँति-भाँति के आभूषणों द्वारा दोनों स्वरूपों का सिंगार किया।

ज. ९२- महाराजा छत्रसाल के राजमहल में महाराजा छत्रसाल की देखा-देखी तथा बनावटी विश्वास जतानेवालों में उनके काका बलदिवान थे, जो उन्हीं की सेना के अग्रगण्य सेनाधीश कहलाते थे।

ज. ९३- आज तक महामति श्री प्राणनाथजी ने महाराजा छत्रसाल से यह बात छिपाकर रखी थी कि मुसलमानों के धर्मग्रन्थ कुरान शरीफ़ में भी अपने घर श्री परमधाम, पचीस पक्ष की बातें हैं।

→ लालदासजी बंगलाजी के एक कोने में एकान्त जगह पर बैठकर कुरान ग्रंथ विषय की चर्चा-परिचर्चा कर रहे थे। इनमें से लालदासजी कुरान ग्रंथ का कोई प्रसंग पढ़ रहे थे, महामतिजी उसका अर्थ करके समझा रहे थे तथा अन्य चार जन वहाँ महामतिजी की चर्चा सुनने में निमग्न थे।

→ सोचने लगे, "आज तक मैंने इनके बीच इस प्रकार की एकान्त बैठक कभी नहीं देखी थी।" दूर खड़े-खड़े ही विचार करते रहे, "ऐसे में मेरा जाना ठीक होगा या नहीं?" इस तरह वे दुविधा में पड़ गए।

→ चले जाना ठीक नहीं होगा। अतः उन्होंने दूर से ही इशारे से लालदासजी को बुलाया और पूछा, "क्या इस एकान्त बैठक में मैं शामिल हो सकता हूँ अथवा नहीं?"

ज. ९७- महाराजा छत्रसाल के उक्त प्रश्न के जवाब में लालदासजी ने कहा, "मैं हजूर (श्रीजी) से पूछे बिना हाँ या ना नहीं कह सकता।" →

→ तब महाराजा छत्रसाल ने पूछकर बताने के लिए कहा। तत्पश्चात् लालदासजी ने महामतिजी के पास आकर कहा, →

स. ९८- महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल को अपने पास बुलाकर अपने द्वारा छिपाई हुई कौनसी बात उनके आगे खुलस्त कर दी?

ज. ९८- महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल को अपने पास बुलाकर →

स. ९९- कुरान ग्रंथ की हकीकत समझाते हुए महामति स्वरूप ने श्री देवचन्द्रजी के, अपने और स्वयं महाराजा छत्रसाल के बारे में महाराजा छत्रसाल को क्या समझाया?

ज. ९९- कुरान ग्रंथ की हकीकत समझाते हुए महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल से कहा, "सुनो! मुसलमानों के धर्मग्रन्थ →

स.१००- कुरान ग्रंथ में तीनों-श्री देवचन्द्रजी, श्री प्राणनाथजी तथा महाराजा छत्रसाल के विषय में क्या-क्या हकीकत लिखी है?

ज.१००- श्री राजजी-खुदा के श्री मुख से हजरत मुहम्मद साहेब ने ९० हजार हरफ (वचन) सुने। उन ९० हजार हरफों में से ३० हजार हरफों के प्रचार-प्रसार का अधिकार खुदा ने मुहम्मद साहेब को दिया। ये ३० हजार हरफ ही सद्ग्रन्थ कुरान शरीफ़ में लिखवाए →

स.१०१- महामति स्वरूप के श्री मुख से कुरान विषयक बातें सुनते ही महाराजा छत्रसाल को क्या हुआ और वे क्या कहने लगे?

→ "छत्रसाल महाराज पूछ रहे हैं कि क्या वे इस एकान्त बैठक में आ सकते हैं?" तब श्रीजी ने आज्ञा दी, "हाँ! उन्हें बुला लाइये!!"

→ कहा, "मैंने एक बात आज तक तुमसे छिपाकर रखी थी। सोचा था, समय आने पर बता दूँगा। आज मैं तुम्हें बता रहा हूँ। सुनो! मुसलमानों के पक्ष में अवतरित धर्मग्रन्थ कुरान वास्तव में उनके लिए नहीं है। वह तो हमारे लिए है। यही बात आज तक मैंने तुमसे छिपाकर रखी थी।"

→ कुरान में लिखी सारी बातें हमारे धाम की हैं। इतना ही नहीं, कुरान में श्री देवचन्द्रजी के, मेरे और तुम्हारे नाम सहित हमारी एक-एक हकीकत भी लिखी हुई है। यह ग्रन्थ हमारे धनी ने हमारे लिए ही साक्षीरूप में भेजा है। इसमें हमारे धाम की सारी बातें होने के कारण यह ग्रन्थ हमारे लिए धनी द्वारा खेल में भेजी हुई चिट्ठी है। अतः हमारी चिट्ठी तो हम ही समझ सकते हैं। वे लोग उसे पढ़ते तो हैं, परंतु समझ नहीं पाते।"

→ गए हैं। उन ३० हजार हरफों में भविष्य वचनों सहित सद्गुरु स्वरूप श्री देवचन्द्रजी का नाम रूह अल्लाह, श्री प्राणनाथजी का नाम इमाम मेहदी और महाराजा छत्रसालजी का नाम हारून कहकर लिखा है। औरंगजेब को फेरून नाम से संबोधित किया गया है। श्री प्राणनाथजी के लिए मूसा पैगम्बर नाम भी दिया गया है और कहा है-जब हारून और मूसा पैगम्बर मिलेंगे, तब फेरून बादशाह परास्त होगा। उसे मूसा और हारून के आगे नतमस्तक होना ही पड़ेगा। इस तरह कुरान ग्रंथ में तीनों के नाम सहित तीनों की सारी हकीकत भी लिखी हुई है।

ज.१०१- सद्ग्रन्थ कुरान में जागनी लीला विषय में लिखी उक्त रहस्यमयी बातें महामति स्वरूप के श्री मुख से सुनते ही महाराजा छत्रसाल के अंदर अत्यधिक आवेश (जोश) उत्पन्न →

→ हुआ और उन्होंने तुरंत ही निश्चय कर लिया कि अब इन →

स.१०२- "अपने घर परमधाम की बातें हम कैसे छिपा सकते हैं?"-ऐसा कौन कह रहा है?

ज.१०२- *"अपने घर परमधाम की बातें हम कैसे छिपा सकते हैं ?"* →

स.१०३- "आपकी आज्ञा हो, तो मैं उसे अपनी तलवार के बल पर आपके चरणों में ले आऊँ।"-ऐसा कौन, किनसे तथा किसके विषय में कह रहे हैं?

ज.१०३- *"आपकी आज्ञा हो, तो मैं उसे अपनी तलवार के बल पर* →

स.१०४- महाराजा छत्रसाल की कौनसी बात सुनकर महामति स्वरूप अत्यंत प्रसन्न हुए?

ज.१०४- महाराजा छत्रसाल ने महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी से कहा, "अब मैं परब्रह्म सद्गुरु, आप स्वरूप एवं ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों के सिवाय अन्य किसी को कुछ नहीं समझता। मेरी एक बात →

स.१०५- अत्यंत प्रसन्न होकर महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल के प्रति क्या व्यवहार किया?

ज.१०५- महाराजा छत्रसाल के मुख से उक्त प्रकार की श्रद्धा और उत्साहपूर्ण बातें सुनकर महामति स्वरूप उनके प्रति अत्यंत →

स.१०६- महाराजा छत्रसाल के राजदरबार के किसी सदस्य को महामति स्वरूप की परीक्षा लेने की क्यों सूझी तथा वह व्यक्ति कौन था?

ज.१०६- महाराजा छत्रसाल के राजदरबार में स्थित एक प्रमुख व्यक्ति →

→ रहस्यमयी महत्त्वपूर्ण बातों द्वारा हम संसार में शोर मचा देंगे।

→ अर्थात् महाराजा छत्रसाल जोश में आकर उक्त कथन महामति स्वरूप से कह रहे हैं, "उस ग्रन्थ में हमारे घर की जो बातें हैं, उन्हें हमारे सिवाय अन्य कौन अपनायेगा और जाहिर करेगा? मुसलमान लोग अब हमारा क्या बिगाड़ सकेंगे?"

→ *आपके चरणों में ले आऊँ।* आपके सेवक छत्रसाल ने अब दिल्लीवाले बादशाह के साथ संघर्ष करने के लिए कमर बाँध ली है।"-ऐसा महाराजा छत्रसाल महामति श्री प्राणनाथजी से दिल्लीवाले बादशाह औरंगजेब के प्रति कह रहे हैं।

→ और भी सुन लीजिए कि अब कुरान में वर्णित हमारी बातों पर विश्वास कर जो भी आपके चरणों में आयेगा, यह छत्रसाल उस पर अपना तन, मन, धन न्योछावर कर देगा।" महाराजा छत्रसाल के मुख से इस प्रकार की विश्वासपूर्ण बातें सुनकर महामति स्वरूप अधिकाधिक खुश हुये।

→ प्रसन्न हुए और उनके अंदर की अक्षरातीत के *"सत्य धर्म-हकीकी दीन"* को सर्वत्र फैलाने की भावना को देखकर *"श्री कयामतनामा"* ग्रंथ की वाणी को उनकी छाप प्रदान करते हुए उन्हें धर्म की जिम्मेदारी सौंप दी।

→ अर्थात् उनके काका बलदिवान के दिल में महाराजा छत्रसाल द्वारा महामति स्वरूप के प्रति किया हुआ हर व्यवहार खटकता था क्योंकि महाराजा छत्रसाल के चलन-व्यवहार, मान्यता आदि तक उनकी नजर अथवा समझ पहुँच ही नहीं पाती थी। वे सोचते थे, "ये लोग हिन्दू होकर भी कुरान तथा मुसलमानों →

→ के प्रति इतने पागल क्यों हैं? कुरान और हदीसे लेकर सीखना तथा सिखाना एवम् उसके अंदर की कथा-चर्चा करना और इमाम मेहदी का दावा लेना! ये बातें बड़ी अटपटी-सी लगती →

स.१०७- महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल को किसने बुलाया तथा क्यों?

ज.१०७- महाराजा छत्रसाल के काका बलदिवान के हृदय में महामति स्वरूप के प्रति महाराजा छत्रसाल की मान्यताओं पर उत्पन्न विभिन्न शंका-उपशंकाएँ द्वंद्व मचाने लगीं। वे सोचने लगे कि →

स.१०८- कुरान के अन्दर की विभिन्न बातों में से महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल से एक प्रश्न का जवाब माँगा गया, वह प्रश्न कौनसा था?

ज.१०८- महोबा के धुरन्धर विद्वान काज़ी अब्दुल रसूल से कुरान के →

स.१०९- महोबा का काज़ी अब्दुल रसूल क्या उस प्रश्न का जवाब दे पाया?

ज.१०९- उक्त प्रश्न का उत्तर देते हुए महोबा के विद्वान काज़ी अब्दुल रसूल ने बताया कि "कुरान के मुताबिक सृष्टि पाँच प्रकार की है।" तब लालदास महाराजने उनसे पूछा, "अच्छा! मियाँ →

स.११०- "एकै जवाब दीजियो"-ऐसा किसने, किससे कहा?

स.१११- उक्त बातें सुनकर महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल ने क्या कहा?

ज.१११- उक्त बातें सुनकर महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल ने बलदिवान से कहा, "कुरान और हदीसों की बातों के विषय में क्या आप →

→ हैं!! ये तो असम्भव को सम्भव-सा बताते हैं। अतः मैं निश्चित ही पहले इनकी परीक्षा लूँगा और तभी इनकी बातों का समर्थन करूँगा।"

→ "महाराजा छत्रसाल तो इन्हें साक्षात् अक्षरातीत पूर्णब्रह्म स्वरूप मानते हैं, मुसलमानों के धर्मग्रन्थों द्वारा इन्हें आखर जमाने का ख्राविंद ठहराते हैं। अतः ये कैसी बातें हैं?" अपनी इन शंकाओं का समाधान करने के लिए महाराजा छत्रसाल के काका बलदिवान ने ही महोबा के प्रसिद्ध एवं विद्वान काज़ी अब्दुल रसूल को आमंत्रित किया था।

→ अन्दर के विभिन्न विषयों में से सृष्टि-रचना विषयक एक प्रश्न लालदासजी द्वारा पूछा गया। वह प्रश्न यह था, "सद्ग्रन्थ कुरान के मुताबिक सृष्टि कितने प्रकार की है, कौन-कौनसी तथा यह बात कुरान में कहाँ-किस सिपारे में लिखी हुई है?"

→ साहेब!! आपके द्वारा कही पाँच प्रकार की सृष्टियों में से आप किस सृष्टि में हैं? इन बातों का जवाब विचारपूर्वक दीजिए क्योंकि इन सब बातों का जवाब हमें आप जैसे विद्वान निश्चित कर नहीं बताएँगे, तो कौन बताएगा?" जब उक्त प्रश्न का स्पष्ट जवाब देने उन्हें नहीं आया, तब वे दुविधाजन्य बातें करने लगे।

ज.११०- *"एकै जवाब दीजियो"*-ऐसा बलदिवान ने महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल से कहा।

→ मुझे उमी (अनपढ़) समझते हैं? कुरान और हदीसे पढ़ते-पढ़ते मेरे बाल सफेद हो चुके हैं और दिल पाक बन गया है। मैं कुरान और हदीसों में लिखी बातों के सिवाय यदि अन्य बातें करूँ, तो मैं अपने-आप को हार गया, दम नहीं ले सका, ऐसा मानूँगा। मेरे पास पढ़कर ही तो सभी विद्वान काज़ी, मुल्ला बने हैं।"

स.११२- "तिस वास्ते तुमसे डरत हैं "-यह वाक्य किसने, किससे और क्यों कहा?

ज.११२- *"तिस वास्ते तुमसे डरत हैं"*-यह वाक्य बलदिवान ने महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल से कहा क्योंकि विद्वान काज़ी अब्दुल →

स.११३- कुरान में दुनिया की पैदाइश कितने प्रकार की बताई गई है और कौन-कौनसी? यह किसने, किससे पूछा?

ज.११३- कुरान, हदीसों में दुनिया की पैदाइश पाँच प्रकार की बताई गई है। जैसे १) एक सृष्टि *"कुंन"* हो जा कहने से हुई। २) →

स.११४- दुनिया की पैदाइश के विषय में कुरान में कहाँ-किस जगह पर अथवा कौनसे सिपारे में लिखा हुआ है? पुनः क्या उक्त बात काज़ी अब्दुल रसूल कुरान में से निकालकर बता सका?

स.११५- काज़ी अब्दुल रसूल के सामने पाँच प्रकार की पैदाइश की हकीकत किसने रखी?

स.११६- जवाब न आने पर जब काज़ी अब्दुल रसूल दुविधाजन्य बातें कहने लगे, तब उन्हें किसने सचेत (सावधान) किया?

ज.११६- जब पाँच प्रकार की पैदाइश में से आप किसमें हैं, यह प्रश्न →

स.११७- काज़ी अब्दुल रसूल को उसके द्वारा कही पूर्व बातें याद दिलाते हुए बलदिवान ने क्या कहा?

→ रसूल के अनुसार उसके पास पढ़कर ही सभी विद्वान काज़ी, मुल्ला बने थे। अतः यदि विचार-विवेक किए बिना जवाब देने पर विद्वान काज़ी अब्दुल रसूल हार जाते, तो सारे मुसलमान विद्वान, काज़ी, मुल्ला हार जाते।

→ दूसरी सृष्टि खुदा के एक हाथ से हुई। ३) तीसरी सृष्टि खुदा के दूसरे हाथ से हुई। ४) चौथी सृष्टि स्वयं खुदा मूल (इप्तदाए) से उठाकर ले आये। और ५) पाँचवीं सृष्टि खिलकत से आई है। यह लालदासजी ने काज़ी अब्दुल रसूल से खुलस्त करते हुए कहा।

ज.११४- दुनिया की पैदाइश के विषय में कुरान में *"तिलकल रसूल"* नामक तीसरे सिपारे में लिखा हुआ है। किंतु यह बात विद्वान काज़ी कुरान खोलकर नहीं बता सका। अतः लालदासजी ने कुरान खोलकर उसे दिखा दिया।

ज.११५- काज़ी अब्दुल रसूल के सामने पाँच प्रकार की पैदाइश लालदास महाराज ने रख दी। तत्पश्चात् उनसे पूछा गया कि "उक्त पाँच प्रकार की पैदाइशों में से आप किसमें हैं?"

→ पूछने पर काज़ी अब्दुल रसूल की अक्ल गुम हो गई और वे दुविधाजन्य बातें करने लगे, तब उनकी गति-विधि देखकर बलदिवान ने उन्हें सचेत करते हुए कहा, "अरे मियाँ! पहले आप क्या कह रहे थे और अभी क्या कहने लगे? आप स्पष्टरूप से यह कह दीजिए कि मैं इस पैदाइश में से हूँ।"

ज.११७- काज़ी अब्दुल रसूल को उसके द्वारा कही पूर्व बातें याद दिलाते हुए बलदिवान ने कहा, "अरे मियाँ साहेब! आप तो मुसलिम समाज के काज़ी, मुल्लाओं में अग्रगण्य कुरान, हदीसों के →

→ जानकार-विद्वान हैं। कुरान, हदीसों के अन्दर लिखी बातों के विषय में स्वयं आप ही कहा करते थे कि 'कुरान और हदीसों में लिखी बातों को छोड़कर मैं अन्य कुछ बोलूँ, तो मैं आपके →

स.११८- कौनसा प्रश्न पूछने पर काज़ी अब्दुल रसूल ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली और किनके चरणों में सेजदा करने लगा?

ज.११८- महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल को जब "पाँच प्रकार की पैदाइश →

स.११९- जब महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल ने अपनी हार स्वीकार कर ली, तब बलदिवान ने पुनः उनसे क्या कहा?

स.१२०- बलदिवान की उक्त बातें सुनकर काज़ी अब्दुल रसूल ने क्या कहा?

ज.१२०- बलदिवान की उक्त बातें सुनकर काज़ी अब्दुल रसूल ने उत्तर →

स.१२१- कुरान पक्ष के विद्वान काज़ी अब्दुल रसूल द्वारा श्रीजी को आखर जमाने का खाविंद कबूल करने पर काका बलदिवान को क्या हुआ?

स.१२२- तत्पश्चात् बलदिवान क्या विचार करने लगे तथा क्या प्रबन्ध करने लगे?

ज.१२२- तत्पश्चात् बलदिवान विचार करने लगे, "कुरान पक्ष के विद्वान काज़ी-मुल्लाओं के अग्रगण्य अब्दुल रसूल ने तो कुरान (मुसहाफ) सिर पर लेकर कबूल कर लिया, परन्तु क्या हमारे →

→ आगे दम नहीं मार सका। मैं हार गया, ऐसा मानूँगा।' तो अभी आप कुरान, हदीसों के बाहर की दुविधाजन्य बातें क्यों करने लगे? पहले कहे वचन भूल गये क्या?"

→ में से आप किस में से हैं?"-यह प्रश्न पूछा गया और वे जवाब नहीं दे सके, तब उन्होंने अपनी हार स्वीकार कर ली और महामति स्वरूप के चरणों में नतमस्तक हो गये तथा उन्हें आखर जमाने का खाविंद कबूल कर उनके चरणों में सेजदा करने लगे।

ज.११९- जब महोबा के काज़ी अब्दुल रसूल ने अपनी हार स्वीकार कर ली, तब बलदिवान ने पुनः उनसे कहा, "अरे मियाँ! आपने अभी-अभी जो कबूल किया, वही बात आप पाक ग्रंथ कुरान शरीफ़ को सिर पर लेकर कहिये।"

→ दिया, "कुरान (मुसहाफ) हमारे सिर पर है। सौगंद लेकर मैं यह बात कबूल करता हूँ। अगर मैंने इस विषय झूठ बोला हो, तो यह कुरान मुझे मार डाले।"

ज.१२१- कुरान पक्ष के धुरन्धर सर्वाग्रगण्य विद्वान काज़ी अब्दुल रसूल द्वारा कुरान, हदीसों की साक्षियों सहित महामति स्वरूप को आखर जमाने का खाविंद इमाम मेहदी कबूल करने पर काका बलदिवान की आधी शंकाएँ निर्मूल हो गयीं।

→ वेद, शास्त्र अथवा पुराणों के विद्वान भी इन्हें बुद्ध-कल्कि अवतार के रूप में अंगीकार करेंगे? अतः अब मुझे हिंदू धर्मशास्त्रों के विद्वानों को एकत्रित कर देखना है कि वे इन स्वरूप को बुद्ध-कल्कि अवतार कबूल करते हैं या नहीं।" अतः इस विचार से बलदिवान ने विद्वान पण्डितों को इकट्ठा करने का प्रबन्ध किया।

स.१२३- सुन्दर बल्लभ बद्री- ये तीनों एक ही नाम हैं या अलग-अलग?

ज.१२३- नहीं, सुन्दर बल्लभ बद्री-ये तीनों एक ही नाम नहीं हैं। ये दो →

स.१२४- सुन्दर बल्लभ और बद्री-इन पण्डितों को किसने आमंत्रित किया था और क्यों?

ज.१२४- सुन्दर बल्लभ और बद्री-इन पण्डितों को आमंत्रित करने का →

स.१२५- दोनों में अग्रगण्य पण्डित बद्री को बुलाकर महाराजा छत्रसाल ने उनसे किस ग्रन्थ की बातें पूछीं?

स.१२६- श्रीमद्भागवत के विषय में महाराजा छत्रसाल ने पण्डित बद्री से क्या सवाल किया?

ज.१२६- श्रीमद्भागवत ग्रन्थ में से महाराजा छत्रसाल द्वारा पण्डित बद्री को पूछा गया सवाल श्री कृष्ण विषय का था। अतः उन्होंने →

स.१२७- महाराजा छत्रसाल के उक्त प्रश्न के जवाब में पण्डित बद्री ने क्या जवाब दिया, जिसे सुनकर महाराजा छत्रसाल अति प्रसन्न हुए?

ज.१२७- पण्डित बद्रीदास ने महाराजा छत्रसाल द्वारा पूछे गए उक्त प्रश्नों को ध्यान से श्रवण किया। तत्पश्चात् स्पष्ट ही कह दिया, →

स.१२८- उस दिन महाराजा छत्रसाल अपने विश्वस्त विद्वान पण्डित बद्री के साथ कब तक चर्चा में रसमग्न रहे?

स.१२९- विद्वान पण्डित बद्री सतवस्तु का समर्थन करके अपने घर वापस कब लौटे?

→ जनों के नाम हैं। एक का नाम सुन्दर बल्लभ, तो दूसरे का नाम बद्री है। इस प्रकार ये तीनों न अलग-अलग तीन नाम हैं और न एक ही नाम हैं।

→ कार्य काका बलदिवान का था क्योंकि वे वेद, शास्त्र द्वारा इस बात का निर्णय कराना चाहते थे कि क्या श्री महामति स्वरूप ही अट्ठाईसवें कलियुग के आनेवाले बुद्ध-कल्कि अवतार हैं?

ज.१२५- दोनों में अग्रगण्य पण्डित बद्री को बुलाकर महाराजा छत्रसाल ने उनसे श्रीमद्भागवत ग्रन्थ के प्रश्न पूछे।

→ पूछा था, "पण्डितजी! कंस के कारागृह में देवकी के गर्भ में आये आठवें पुत्र श्री कृष्ण को तो *"पूर्ण ब्रह्म कहा ही नहीं"*, तो नन्द के घर के श्री कृष्ण को *"पूर्ण ब्रह्म सनातनम्"* क्यों कहा गया? इसके पीछे क्या रहस्य छिपा है?"

→ "श्री कृष्ण लीला के इन रहस्यों को स्वयं भगवान के अतिरिक्त अन्य कोई प्रकट नहीं कर सकता। इन प्रश्नों को खोलनेवाले निश्चय ही स्वयं भगवान ही होंगे।" इस प्रकार पण्डित बद्री द्वारा सत्य बातों का छल-कपट किये बिना समर्थन करने के कारण महाराजा छत्रसाल पण्डित बद्री पर अत्यंत प्रसन्न हुए।

ज.१२८- उस दिन महाराजा छत्रसाल अपने विश्वस्त विद्वान पण्डित बद्री के साथ श्रीमद्भागवत की श्री कृष्ण लीला विषयक कथा-चर्चा में मध्यरात तक रसमग्न रहे।

ज.१२९- विद्वान पण्डित बद्री महाराजा छत्रसाल के साथ श्री कृष्ण चर्चा में रसमग्न होकर सतवस्तु का समर्थन करके रात को १२ बजे के बाद अपने घर वापस लौटे।

स.१३०- "कैसी तुम चरचा करी"-यह प्रश्न किसने, किससे और कब पूछा?

स.१३१- "क्यों ना गए तुम मर"-ऐसा किसने, किससे और क्यों कहा?

ज.१३१- *"क्यों ना गए तुम मर"*-ऐसा बद्री के घर में रात में एकत्रित हुए पण्डित लोगों ने विद्वान बद्री से कहा क्योंकि उसके घर पर एकत्रित पण्डितों ने जब उससे पूछा, *"कैसी तुम चरचा करी"*? तब विद्वान पण्डित बद्री ने कहा, "मैंने उनके सामने सत्य →

स.१३२- "अब मारो उलटाए के"-यह कथन किस-किसने, किससे कहा? सुन्दर बल्लभ और बद्री दोनों ने मिलकर रातभर क्या सलाह-मशविरा किया?

ज.१३२- *"अब मारो उलटाए के"*-यह कथन सत का समर्थन करके लौटे पण्डित बद्री से उसके घर में एकत्रित हुए पण्डितों ने मिलकर कहा। रातभर सुन्दर बल्लभ सहित समस्त पण्डित सलाह-मशविरा करते रहे। तत्पश्चात् बद्री को सलाह देते हुए कहने →

स.१३३- विद्वान पण्डित बद्री पुनः दरबार में कब आया तथा दरबार में आकर उसने किसे खबरदार किया?

ज.१३३- विद्वान पण्डित बद्री पुनः दूसरे दिन प्रातःकाल में राजदरबार में आया और उसने बलदिवान के आगे अपने आने का उद्देश्य रखते हुए कहा, "वास्तव में तो मैं आज शास्त्रार्थ करने आया →

स.१३४- "रात की बात गई किस ठौर"-ऐसा किसने, किससे और कब कहा?

ज.१३०- *"कैसी तुम चरचा करी"*-यह प्रश्न बद्री के घर में एकत्रित पण्डितों ने जब विद्वान पण्डित बद्री मध्यरात के बाद अपने घर वापस लौटे, तब पूछा।

→ बातों का समर्थन किया और ख्वाब सदृश झूठे प्रपञ्चों को उड़ा दिया।" यह बात सुनते ही सभी विद्वान पण्डित कहने लगे, "सत्य का समर्थन करने से पहले ही तू मर क्यों नहीं गया? तू क्या आज तक ख्वाब के सहारे जी रहा था? तेरा घर क्या ख्वाब से नहीं भरा है? तू तो आज ख्वाब को उड़ाकर आ गया, परंतु कल से हमारा और हमारे वंशजों का क्या होगा?"

→ लगे, "कल जाकर तुम अपनी बातें पुनः स्थापित करना। राजदरबार में कल सुबह जाकर कहना वास्तव में तो मैं आज शास्त्रार्थ करने आया हूँ। कल तो आप लोगों की जानकारी लेने के लिए मैंने वे बातें कही थीं।" ऐसा कहते हुए सभी पण्डितों ने बद्री को पुनः बात रखने के लिए उकसाया और कहा, "हम सब भी तुझे पीछे से मदद देंगे।" इस प्रकार सलाह-मशविरा करके सभी पण्डितों ने मिलकर अन्धाधुन्ध प्रश्न बना दिये।

→ हूँ। कल तो आप लोग कितने पानी में हैं, यह बात जानने के लिए ही मैंने वे बातें कही थीं। आपके द्वारा पूछे गए भागवत के सभी प्रश्नों का जवाब मुझे आता है।" जब पण्डित बद्री ने बलदिवान को अपने आने के विषय में इस तरह खबरदार किया, तब बलदिवान ने ये बातें महाराजा छत्रसाल से कही।

ज.१३४- *"रात की बात गई किस ठौर"*-यह वाक्य महाराजा छत्रसाल ने पण्डित बद्री से तब कहा, जब बलदिवान ने पण्डित बद्रीदास को महाराजा छत्रसाल के आगे उपस्थित कर उसके आने का उद्देश्य बता दिया।

स.१३५- "ऐसे प्रस्न भागवत के, हमतो सब जानत"-ऐसा कौन, किससे कह रहा है?

स.१३६- बद्री की झूठी बातें सुनकर बुन्देला महाराजा छत्रसाल को क्या हुआ और उन्होंने बुन्देला समाज के बीच में क्या आह्वान कर दिया?

ज.१३६- विद्वान पण्डित बद्री की झूठी छल-कपटपूर्ण बातें सुनते ही बुन्देला महाराजा छत्रसाल अत्यंत नाराज हुए। वे समझ गए →

स.१३७- "सुन्दर बल्लभ बद्री, भले मिले कलि माहिं।
चौदह विद्या निपुन हैं, पर एकौ जानत नाहिं।।"
उक्त चौपाई किसने, किसके लिए तथा कब कही?

ज.१३७- पण्डित बद्रीदास की बिगड़ी नीयत ने महाराजा छत्रसाल को बड़ी चोट पहुँचायी क्योंकि उनके अपने ही विश्वस्त विद्वान इस प्रकार सत को उलटाकर असत् की स्थापना करने पर →

स.१३८- समाज के बीच सत को उलटाने की कुनीयत लेकर आनेवाले बद्री के विषय में महाराजा छत्रसाल द्वारा आह्वान करने के पश्चात् बलदिवान की किसके साथ चर्चा हुई? उस चर्चा में बद्री ने पश्चाताप करते हुए क्या कहा?

ज.१३८- आत्मा के द्वारा सत्य वस्तु का समर्थन करने के बाद पुनः उन्हीं बातों को उलटाकर असत् को स्थापित करने की नीयत रखना, तो भयंकर अपराध है। ऐसा भयंकर अपराध करने की नीयत लेकर आये पण्डित बद्री के प्रति भरी सभा में आह्वान करने के बाद महाराजा छत्रसाल ने उसे पूर्व प्राप्त उपाधि से रहित कर →

ज.१३५- *"ऐसे प्रस्न भागवत के, हम तो सब जानत"*-ऐसा पण्डित बद्री महाराजा छत्रसाल से कह रहे हैं।

→ कि यह पण्डित बद्री एक बार आत्मा से कबूल की हुई सत्य बातों को उलटाने की नीयत लेकर छल-कपट करने आया है। अतः वे बहुत दुःखी हुए। तत्पश्चात् उन्होंने अपने बुन्देला समाज के बीच आह्वान कर दिया, "आज से इस धूर्त बद्री का कोई आदर-भाव न करें। कोई भी बुन्देला आज से इसके हाथ से सिर पर पट्टी न बँधवाए। आज से बुन्देलों की जाति में कोई भी इसके सत्कार के लिए उठकर खड़ा न हो।"

→ तुल गये थे। अतः पूरी सभा के बीच उनके झूठे इरादे का खुलासा करते हुए महाराजा छत्रसाल ने कह दिया, "अरे!

सुन्दर बल्लभ बद्री, भले मिले कलि माहिं।
चौदह विद्या निपुन हैं, पर एकौ जानत नाहिं।।

जिससे उपस्थित सभासद भी पहचान पायें कि सत्य बात को असत् साबित करने का नतीजा क्या होता है।

→ दिया। तत्पश्चात् पण्डित बद्री की बलदिवान सहित अन्य विद्वान मोमिनों के साथ जोर-शोर से चर्चा हुई। बलदिवान के आगे पश्चाताप करते हुए पण्डित बद्री बोलने लगा, "मैंने तो पहले दिन ही सत्य वस्तु का समर्थन किया था। किंतु उस दिन जब मैं लौटकर घर गया, तब सभी पण्डितों ने मिलकर मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी और मुझे ख्वाब के लिए सत्य बातों को उलटाकर अपने पक्ष की झूठी बातों को स्थापित करने के लिए उकसाया और मजबूर किया। अतः मेरी यह दशा हुई। सबके बीच मेरी बेइज्जती हुई और बुन्देला समाज द्वारा पूर्व-प्राप्त उपाधि भी मैं खो बैठा।" इस तरह पण्डित बद्री अत्यंत दुःखी हुआ। परन्तु अब करे क्या?

स.१३९- आत्मा द्वारा समर्थन की हुई सत्य बातों को पेटार्थ उलटाने की कोशिश करनेवाले विद्वानों की क्या दशा हुई?

ज.१३९- अपनी आत्मा ने दी हुई साक्षीयुक्त सत्य बातों की तुलना में →

स.१४०- राजदरबार के सभी कुँवर-ठाकुरों के मन में किस विषय को लेकर गलत अवधारणा बन गई थी?

ज.१४०- महाराजा छत्रसाल के राजदरबार के सभी कुँवर-ठाकुरों के मन →

स.१४१- महाराजा छत्रसाल के सिवाय, राजघराने के अन्य सदस्यों के मन में महामति स्वरूप सहित जमात के आर्थिक व्यय के प्रबन्ध के विषय में क्या धारणा थी?

ज.१४१- महाराजा छत्रसाल के सिवाय, राजघराने के अन्य सभी सदस्यों के मन में अविकल्प रूप से यही धारणा थी कि किसी चमत्कारिक →

स.१४२- महाराजा छत्रसाल के दिमाग में उक्त बात कितने साल तक नहीं आई?

स.१४३- इतना समय बीत जाने के पश्चात् भी महाराजा छत्रसाल के दिमाग में उक्त बात किसके कहने पर आई?

स.१४४- उक्त अवधारणा विषयक बात महामति स्वरूप के आगे रखने पर महामति स्वरूप द्वारा दिए गए जवाब को सुनते ही महाराजा छत्रसाल की क्या दशा हुई?

ज.१४४- कुँवर-ठाकुरों द्वारा सुझाई हुई अवधारणा महाराजा छत्रसाल →

→ अन्य कोई बातें नहीं आ सकती। इसलिए आत्म-साक्षी की बातों को उलटाने की कोशिश करनेवाले पेटार्थू विद्वानों को एक ईंट के लिए महल गिराना पड़ा। बुन्देला समाज द्वारा प्राप्त कुलगुरु की पदवी से हाथ धोना पड़ा और समाज के बीच से बदनाम होकर नगर से विदा होना पड़ा।

→ में इस बात को लेकर गलत अवधारणा बन गई थी कि महामति स्वरूप सहित सुन्दरसाथ जमात के आर्थिक व्यय की व्यवस्था किसी रसायन विद्या द्वारा हो रही है।

→ रसायन विद्या के बिना इतने बड़े जमात का खर्चा-पानी कैसे चल सकता है? क्योंकि कई दिन अथवा कई महीने ही नहीं, अपितु तीन साल व्यतीत होने आए हैं। हमारी आँखों के सामने ही जमात के ऊपर इतना खर्च हो रहा है। पुनः हमारी तरफ से तो एक कौड़ी की भी मदद नहीं पहुँच रही है, तो यह खर्च कैसे चल रहा है? अतः जरूर यह रसायन का चमत्कार ही है।

ज.१४२- महामति स्वरूप के जमात का खर्चा-पानी कहाँ से आ रहा है, और कैसे चल रहा है, यह बात महाराजा छत्रसाल के दिमाग में तीन साल बाद आई।

ज.१४३- इतने साल बीत जाने के पश्चात् भी महाराजा छत्रसाल के दिमाग में उक्त बात राजदरबार के कुँवर-ठाकुरों द्वारा आई।

→ के दिमाग में आते ही उन्होंने विचार-विवेक किया और मन में ठान ली कि आज मैं अवश्य ही इन बातों का निदान करके आऊँगा। इस प्रकार निर्णय लेकर वे दूसरे ही दिन सुबह के समय महामति स्वरूप के दर्शन करने आ गए। आकर प्रणाम करने के पश्चात् तुरंत ही पूछा, "हे धनी! आपका और आपके →

→ जमात का सारा खर्चा-पानी आज तक कैसे चलते आया है? हम सबके मन में ऐसा दृढ़ विश्वास है कि अवश्य ही यह खर्च किसी चमत्कारिक रसायन के माध्यम से चल रहा है। अब मैं आपके पास इस बात का निर्णय करने आया हूँ। कृपया आप →

स.१४५- अपनी उक्त अवधारणा विषयक जवाब सुनने पर महाराजा छत्रसाल ने क्या अनुभव किया?

ज.१४५- महामति स्वरूप के मुख से अपनी अवधारणा विषयक उक्त →

स.१४६- "जब ही गए दो पहर"-अतः दोपहर के समय किसका समय हुआ? पुनः उस दिन दोपहर के बाद क्या-क्या हुआ?

ज.१४६- *"जब ही गए दो पहर"* अर्थात् जब महाराजा छत्रसाल महामति स्वरूप के दर्शन और उनसे वार्तालाप करके राजमहल लौटे तथा लौटकर सीधे कोपभवन में जाकर सो गए, तब कुछ समय →

स.१४७- "नहीं कहने की बात" - यह कथन किसने, किससे, कहाँ और कब कहा?

ज.१४७- *"नहीं कहने की बात"* -यह कथन महाराजा छत्रसाल ने काका →

स.१४८- "हम पर गजब की रही न हद" - ऐसा किसने, किससे, कहाँ और कब कहा?

ज.१४८- *"हम पर गजब की रही न हद"*- ऐसा महाराजा छत्रसाल ने काका श्री बलदिवान से कहा क्योंकि महाराजा छत्रसाल को →

स.१४९- कोपभवन में बैठे महाराजा छत्रसाल की समस्या को सुनने के पश्चात् काका बलदिवान ने उन्हें क्या सलाह दी?

→ मुझे बता दीजिए कि यह सारा व्यय कहाँ से और कैसे आ रहा है?" तब महाराजा छत्रसाल के उक्त प्रश्न के जवाब में महामति स्वरूप ने उन्हें बता दिया कि-यह सारा खर्च मेरता के एक भाई उठा रहे हैं, जिनका नाम है -"*राजाराम भाई*"।

→ जवाब सुनने के पश्चात् बुन्देला केशरी महाराजा को जो दुःख और दर्द हुआ, वह तो वे ही अनुभव कर सके। तत्पश्चात् महामति स्वरूप से कुछ कहे बिना ही वे सीधे राजमहल लौट गए और एकान्त कक्ष-"*कोपभवन*" में जाकर सो गए।

→ बाद दोपहर के भोजन का समय हुआ। मँझली रानी की तो हिम्मत ही नहीं पड़ी कि वे जाकर उन्हें कोपभवन से बाहर निकाल सकें। तब उन्होंने तुरन्त काका बलदिवान को इस बात की सूचना दी। खबर सुनते ही काका बलदिवान तुरंत राजमहल में पहुँच गए और कोपभवन का दरवाजा खुलवाकर अन्दर प्रवेश किया। अन्दर बैठे महाराजा छत्रसाल से उन्होंने पूछा,"क्या हुआ? क्या बात है?"

→ श्री बलदिवान से कोपभवन में तब कहा, जब काका श्री दरवाजा खुलवाकर कोपभवन में प्रवेश हुए तथा उनसे कोपभवन में आने का कारण पूछा।

→ इस बात का बड़ा दुःख लगा था कि अपने घर में आये मेहमान को मेरता के सुन्दरसाथ खिला रहे हैं! इससे बड़ी गजब की दूसरी कौनसी बात हो सकती है! वह भी तीन साल बाद मेरे दिमाग में यह बात आई! अतः मैं तो अब तक साथ में शामिल नहीं हो सका हूँ!

ज.१४९- कोपभवन में बैठे महाराजा छत्रसाल की समस्या सुनने के पश्चात् काका बलदिवान ने महाराजा छत्रसाल से कहा, "अरे! यह बात तो बहुत ही मामूली है। ऐसी बातों पर इतना दिलगीर-

→

→ दु:खी होना बुन्देला क्षत्रियों को शोभा नहीं देता। हम क्षत्रिय हैं और हमारा धर्म है, युद्ध करना। अपने पुरुषार्थ द्वारा हम औरंगजेब का कोई एक इलाका जीत लेंगे तथा उस जीते हुए →

स.१५०- महाराजा छत्रसाल तथा काका बलदिवान ने कोपभवन में क्या निर्णय लिया? उसके बाद महाराजा छत्रसाल कहाँ गये और उन्होंने क्या किया?

ज.१५०- काका बलदिवान तथा महाराजा छत्रसाल ने मिलकर कोपभवन में यह निर्णय लिया कि युद्ध में अपने पुरुषार्थ द्वारा हम मुसलमान राजा औरंगजेब के क्षेत्र का राज्य जीतकर उस राज्य का राज्यकर अपने जमात की सेवा में लगायेंगे। यह निर्णय लेकर दोनों ने अपने बहीखाते में लिख लिया और उस पर सही-छाप लगा दी। तत्पश्चात् कोपभवन से बाहर निकलकर →

स.१५१- "मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत"-यह बात कब हुई?

ज.१५१- *"मोमिन लिखे मोमिन को, कहो तो आवें इत"*-यह बात जब →

स.१५२- कोपभवन में जमात की सेवार्थ आमदनी का रास्ता करने का सही-छाप आदि करके महाराजा छत्रसाल ने महामति स्वरूप के आगे आकर क्या अर्ज की?

ज.१५२- कोपभवन में जमात की सेवार्थ आमदनी का रास्ता निकालने के लिए सही-छाप आदि करके कोपभवन से बाहर आकर →

स.१५३- दूसरी बार "एक पंथ दो काज" इस ध्येय से महाराजा छत्रसाल ने महामति स्वरूप के चरणों में क्या करने की प्रार्थना की?

→ इलाके का राज्यकर हम अपनी इस जमात की सेवा में लगायेंगे। बस! हो गई तुम्हारी समस्या हल!! अब उठो और चलकर खाना खा लो!!!"

→ महाराजा छत्रसाल सीधे सुन्दरसाथ की जमात में गये और वहाँ किसी के पास से मेरता के राजाराम भाई का पता लेकर घर लौट आए। घर में बैठकर उन्होंने राजाराम भाई को चिट्ठी लिखी, जिसमें लिखा था, "राजारामजी, प्रणाम! आज तक महामति श्री प्राणनाथजी और उनके जमात-सुन्दरसाथजी की जो सेवा आप करते आए हैं, वह सेवा अब आज से आप बन्द कर दीजिए क्योंकि मैं-छत्रसाल वह सारी सेवा अपने सिर पर ले रहा हूँ। अब उपरान्त आप एक पैसा भी नहीं भेजना।" उक्त बातें लिखकर चिट्ठी रवाना कर दी। उसके बाद ही उन्होंने खाना खाया।

→ महाराजा छत्रसाल द्वारा लिखी हुई चिट्ठी मेरता स्थित राजाराम भाई के पास पहुँची, तब उक्त चिट्ठी के जवाब में राजाराम भाई ने जो चिट्ठी लिखी थी, उस समय हुई।

→ महाराजा छत्रसाल ने मेरता के भाई *"राजाराम"* को चिट्ठी लिखी। उसके बाद महामति स्वरूप के आगे हाथ जोड़कर अर्ज की, "मैं अब तक साथ में शामिल नहीं हो सका हूँ। अतः कृपा कर जमात की उन सारी सेवाओं की जिम्मेदारियाँ मुझे सौंप दीजिए, जो आज तक मेरता के भाई राजाराम करते आए हैं।"

ज.१५३- दूसरी बार *"एक पंथ दो काज"* इस ध्येय से अपनी इच्छा प्रकट करते हुए महाराजा छत्रसाल ने महामति स्वरूप के चरणों में विनती की, "हे धनी! आपश्री हाथी पर सवार हो जाइये। आपके पीछे-पीछे धर्मयुद्ध की तैयारी के साथ विद्वान-पण्डितों, →

→ साधु-संतों की जमात सवारी सहित चलेगी। दूसरी ओर मैं सैनिकों के साथ तलवार से युद्ध के लिए तैनात रहूँगा। कोई भी आए, सर्वप्रथम वेद, शास्त्र, कुरान, हदीसों द्वारा शास्त्रार्थ होगा। →

स.१५४- महाराजा छत्रसाल की प्रार्थना स्वीकार कर महामति स्वरूप किस वि. सं. में हाथी के ऊपर सवार होकर जुलूस के साथ निकल पड़े?

स.१५५- सर्वप्रथम सवारी के साथ महाराजा छत्रसाल किन-किन क्षेत्रों के राज्यों को अपने में मिलाते हुए आगे चले?

स.१५६- कालपी नदी के समीप स्थित किस जगह पर महाराजा छत्रसाल ने मुसलिम काज़ी-मुल्लाओं को एकत्रित किया?

स.१५७- किस जगह पर सभी काज़ियों-मुल्लाओं ने कुरान,हदीसों द्वारा शास्त्रार्थ में परास्त होकर महाराजा छत्रसाल को महजरनामा (प्रमाण-पत्र) दिया?

ज.१५७- महाराजा छत्रसाल असवारी पर सवार होकर जब कालपी नदी के किनारे-किनारे राठ, खड़ोत होते हुए जलालपुर पहुँचे, तब वहाँ उन्हें सुनने में आया कि यहाँ मुसलिम समाज के धार्मिक विद्वानों का एक केन्द्र है, जहाँ भारत भर के मुसलमानों के मुल्ला, काज़ी अथवा कुरान, हदीसों के आरिफ-फाज़िल लोग →

स.१५८- उस महजरनामे में, जो दिल्ली के सुलतान औरंगजेब के पास भेजा गया, कुरान, हदीसों की पराकाष्ठा में पहुँचे हुए विद्वान काज़ियों ने क्या कबूल कर लिखा था?

→ तत्पश्चात् मैं कर्मयुद्ध द्वारा औरंगजेब के इलाकों में स्थित उसके झण्डे को उखाड़कर अपना झण्डा प्रतिस्थापित करूँगा। उन्हीं इलाकों के राज्यकर मैं सुन्दरसाथ की सेवा में लगाऊँगा।"

ज.१५४- महाराजा छत्रसाल की प्रार्थना अंगीकार कर महामति स्वरूप वि. सं. १७४३ में हाथी पर सवार होकर जुलूस के साथ निकल पड़े।

ज.१५५- सर्वप्रथम सवारी के साथ महाराजा छत्रसाल किलकिला नदी के किनारे के राठ, खड़ोत, जलालपुर आदि राज्यों को अपने राज्य की सीमा में मिलाते हुए आगे चले।

ज.१५६- कालपी नदी के समीप स्थित जलालपुर शहर में महाराजा छत्रसाल ने मुसलिम समाज के विद्वान काज़ियों, मुल्लाओं और सैयद आदि को एक स्थान पर एकत्रित किया।

→ रहते हैं। तब महाराजा छत्रसाल ने उन सभी मुसलिम विद्वानों को एक स्थान पर आमंत्रित कर शास्त्रार्थ कराया। शास्त्रार्थ में परास्त होकर सभी काज़ियों ने कुरान, हदीसों द्वारा महामति स्वरूप को आखर जमाने का खाविंद कबूल किया और कुरान, हदीसों के प्रमाणों द्वारा प्रमाणित "*आखर जमाने के खाविंद, इमाम मेहदी*" स्वरूप को कबूल करने की बातें कुरान सिर पर लेकर स्वीकार कीं। जलालपुर के मुसलिम विद्वानों द्वारा प्रमाणित यह महजरनामा महाराजा छत्रसाल को जलालपुर में दिया गया, जिसे तत्पश्चात् विद्वानों की सही-छाप सहित दिल्ली के सुलतान के पास भेज दिया गया।

ज.१५८- उस महजरनामे में, जो दिल्ली के सुलतान औरंगजेब के पास लिखकर भेजा गया था, "महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप ने इमाम की पहचान करानेवाले सातों निशानों को खोलकर स्वयं को इमाम स्वरूप साबित किया है। अतः कुरान, हदीसों →

→ में कही आप्त भविष्यवाणियों के अनुसार ये स्वरूप आखर जमाने के ख़ाविंद हैं। हमारे पैगम्बर मुहम्मद स्वरूप से ख़ुदा ने कयामत के समय में आने का जो वादा किया था, उस वादेनुसार यही स्वरूप ख़ुदा हैं, ख़ुदा आ गए हैं। इस विषय में शंका →

स.१५९- "सुनके सिर नीचा किया" अर्थात् किसने और क्यों सिर नीचा किया?

ज.१५९- *"सुनके सिर नीचा किया"* अर्थात् दिल्ली के सम्राट बादशाह औरंगजेब ने *"महजरनामे"* में लिखी बातें सुनकर सिर नीचा कर लिया क्योंकि उसे यह बात समझ में आ गयी थी कि →

स.१६०- किसके दोनों कानों पर मोहर लगी है? पुनः ऐसा क्यों कहा गया?

ज.१६०- बादशाह औरंगजेब के दरबार के अग्रगण्य पाँचों काज़ियों सहित →

स.१६१- "अहमद" शब्द का क्या अर्थ है अथवा "अहमद" स्वरूप किन्हें कहा गया है?

ज.१६१- *"अहमद"* शब्द का अर्थ है-अहं ब्रह्मास्मि अर्थात् मैं ब्रह्म स्वरूप हूँ। *"महंमद आया ईसे मिने, तब अहंमद हुआ स्याम"* अर्थात् →

स.१६२- आजूज, माजूज कैसे जाहिर हुए? आजूज, माजूज को याफिस के बेटे कहा, कैसे?

ज.१६२- आजूज, माजूज को पहचान लेना ही आजूज-माजूज का जाहिर होना है। आजूज, माजूज कोई जानवर नहीं हैं। इन दोनों में →

स.१६३- कहा जाता है "असराफील ने कुरान गाया" अतः असराफील कौन है? उसके द्वारा गाया गया कुरान कौनसा ग्रन्थ है?

→ करनेवाला बहत्तर नारी फिरके में कहलाएगा। ये सभी बातें हम सब *"कुरान शरीफ़"* सिर पर रखकर कह रहे हैं। यदि इस बात में हमने कोई छल-कपट की हो, तो यह कुरान शरीफ़ हमें मारे। यह हमारे रूह से खाई हुई सौगंद है।"

→ "बुन्देला सम्राट छत्रसाल के पास इमाम मेहदी की शक्ति है। अब उन्हें चौदह लोकों में कोई भी हरा नहीं सकेगा। यही शक्ति पहले मेरे पास आई थी और मैंने उसे ठुकरा दी थी। उन्होंने तो पैगाम भेजा था, परंतु मैंने अपने कर्मचारियों की बातों में फँसकर उन्हें गँवा दिया।"

→ स्वयं बादशाह औरंगजेब के दोनों कानों पर मोहर लगी है। ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि मोहर होने के कारण ही उन्होंने मोमिनों की बात सुने बिना ही इमाम के पैगाम को ठुकरा दिया। वे दावा तो लेते थे, मोमिन होने का! परंतु क्या साबित हुए?

→ जब मुहम्मद के कलमा और ईसा (सद्गुरु स्वरूप) के तारतम- दोनों का मिलान हुआ, तब वे मिले हुए स्वरूप ही *"अहमद"* कहलाए। अतः महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप को ही मेरता की मजल से आगे *"अहमद"* की पदवी प्राप्त हुई।

→ से एक दिन है और एक रात। दिन और रात के बीच में ही इंसान मरते हैं। इसी को *"आजूज, माजूज का इंसान को खाना"* कहा है। आजूज, माजूज के उत्पत्तिकर्ता भगवान विष्णु हैं। कुरान में महाविष्णु का नाम याफिस बताया है। इसलिए आजूज, माजूज को याफिस के बेटे कहा है।

ज.१६३- असराफील अक्षर की जागृत बुद्धि का अवतार है। असराफील अर्थात् अक्षर की जागृत बुद्धि ने कुरान गाया है। यहाँ कुरान का बातुनी अर्थ हमारे स्वरूप साहेब की १८५७८ चौपाइयाँ →

→ हैं। असराफील द्वारा गाया गया कुरान यही है। जैसे - →

स.१६४- हकीकत और मारफत की मजल किसने और किसके आगे खोली?

ज.१६४- हकीकत और मारफत की मजल हक स्वरूप मोमिनों के आगे खोलेंगे, ऐसी भविष्यवाणी मुहम्मद साहेब ने की थी। उस →

स.१६५- पन्ना से सवार होकर महामति स्वरूप महाराजा छत्रसाल की सेना सहित कहाँ पहुँचे?

स.१६६- जुलूस सहित सेउड़े गाँव पहुँचते ही कौन आकर महामति स्वरूप के चरणों में लगा?

ज.१६६- वि.सं. १७४३ में दोनों-धर्मयुद्ध और कर्मयुद्ध करते-करते जब महामति स्वरूप सहित बुन्देला केशरी महाराजा छत्रसाल का जुलूस सेउड़े गाँव पहुँचा, तब चित्रकूट के राजा बसन्त सुरखी →

स. १६७-बसन्त सुरखी कौन थे? उन्होंने आप को अलग क्यों रखा तथा महामति स्वरूप को किस रूप में कबूल किया था?

ज.१६७- बसन्त सुरखी चित्रकूट के हिन्दू राजा थे। वे महाराजा छत्रसाल →

स.१६८- महाराजा छत्रसाल के सेवा-धर्म में विघ्न कैसे पड़ गया?

ज.१६८- चित्रकूट के राजा बसन्त सुरखी महामति स्वरूप को चित्रकूट स्थित अपने महल में पधराकर उनकी सेवा करना चाहते थे। →

→ तो असराफिलें आखर, कुरान को गाया ।
ऐसा बडा काम तो किया, जो आखर को आया ।।
- (श्री मारफत सागर, प्र. १४/चौ.१)।

→ भविष्यवाणी के अनुसार यहाँ हक स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी हैं और उन्होंने हकीकत एवम् मारफत की मजल मोमिनों-द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं और ईश्वरी आत्माओं के आगे खोली।

ज.१६५- पन्ना से सवार होकर महामति स्वरूप बुन्देला केशरी महाराजा छत्रसाल की सेना सहित राठ, खड़ोत, जलालपुर होते हुए सेउड़े पहुँचे।

→ वहाँ दौड़कर आये और श्री प्राणनाथजी के चरणों में लगे । तत्पश्चात् हाथ जोड़कर उन्होंने विनयपूर्वक महामति स्वरूप से विनती की, "आप मेरे घर पधारिए।" राजा बसन्त सुरखी महाराजा छत्रसाल के दोस्त थे। अतः महाराजा छत्रसाल उन्हें ना नहीं कह सके।

→ के अच्छे दोस्त भी थे। उन्होंने महामति स्वरूप को एक साल तक अपने राजमहल में पधराकर उनकी अच्छी सेवा की। परन्तु महामति स्वरूप को पहचानकर वे अपनी आत्मा उनके चरणों में नहीं सौंप सके। मायावी त्रिताप के चक्कर में ही फँसकर बैठे रहे। उन्होंने श्रीजी स्वरूप की ऊपर की पहचान की थी।

→ अच्छे दोस्त होने के कारण महाराजा छत्रसाल उन्हें ना भी नहीं कर सके और न वे महामति स्वरूप को बसन्त सुरखी के साथ चित्रकूट भेजना ही चाहते थे क्योंकि अभी-अभी उन्हें राजाराम भाई द्वारा महामति स्वरूप और उनके जमात की सेवा करने →

→ का मौका प्राप्त हुआ था और महामति स्वरूप के चित्रकूट →

स.१६९- अपनी सेवा क्रमशः रखने के लिए महाराजा छत्रसाल ने क्या किया?

ज.१६९- अपने दोस्त बसन्त सुरखी को मना न कर सकने के कारण →

स.१७०- कुरान के अन्दर के सम्पूर्ण रहस्यों को कहाँ खोला गया और किसके नाम से?

ज.१७०- कुरान शरीफ़ ग्रन्थ के अन्दर स्थित गूढ़ातिगूढ़ रहस्यों को →

स.१७१- महामति स्वरूप श्री राजजी ने कहाँ होते हुए, किसे और कौनसी खबर देने का विचार किया और क्यों?

ज.१७१- हकी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी ने चित्रकूट में जब श्री राजजी के जोश द्वारा उतरे कयामतनामा में महाराजा छत्रसाल के नाम की छाप देखी, तो वे तुरंत समझ गये कि श्री राजजी ने कुरान पक्ष की वाणी द्वारा मुसलिम समाज में अपने धर्म- →

स.१७२- ओरछा के राजा ने ऐसा क्या किया था, जिसके कारण उसकी अकालिक मौत हो गई?

ज.१७२- ओरछा के हिन्दू राजा ने महाराजा छत्रसाल के राज्यान्तर्गत →

स.१७३- मिट्टू पीरजादे ने दुर्भावनाग्रस्त होकर किसके ऊपर चढ़ाई की?

ज .१७३- महामति श्री प्राणनाथजी चित्रकूट से पन्ना आ रहे थे। महामति श्री प्राणनाथजी की जमात के प्रति बूरी नजर रखकर उन्हें लूट →

→ चले जाने पर उसमें विघ्न पड़ जाता । किंतु अंततः आज्ञा देनी ही पड़ी।

→ महाराजा छत्रसाल ने राजमहल में स्थित अपने सभी कुँवर-ठाकुरों को धनी श्री महामति स्वरूप की सेवार्थ चित्रकूट भेज दिया, जिससे उनकी सेवा में विघ्न पड़े बिना वह सेवा क्रमशः चलती रहे।

→ महामति स्वरूप ने चित्रकूट के राजा बसन्त सुरखी के राजमहल में वि. सं. १७४३ में कयामतनामा ग्रन्थ में बुन्देला केशरी महाराजा छत्रसाल के नाम से खोला। इसलिए उस ग्रन्थ के हर प्रकरण के अंत में महाराजा छत्रसाल के नाम की छाप है।

→ सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी महाराजा छत्रसाल को दी है। अतः महामति स्वरूप ने महाराजा छत्रसाल पर श्री राजजी द्वारा हुई इस मेहेरबानी का संदेशा जल्द से जल्द महाराजा छत्रसाल तक पहुँचाने का विचार किया क्योंकि उन्हें लगा कि यह संदेशा पाकर महाराजा छत्रसाल अत्यंत खुश हो जाएँगे और इस कार्य के प्रति उनकी हिम्मत और बढ़ जाएगी।

→ स्थित खटोला ग्राम को अपने राज्य में मिलाने की नापाक हरकत की थी। महाराजा छत्रसाल के प्रति की गई ऐसी हरकत के कारण महामति स्वरूप द्वारा उसे धिक्कार मिली और धिक्कार मिलते ही काल ने उसे संसार से उठा लिया।

→ लेने की नीयत से मिट्टू पीरजादे नामक राजा ५,००० सैनिकों सहित चढ़ाई करने के लिए आ गया । किंतु अक्ल गुम हो जाने के कारण वह चमारों के घर की शादी की बारात को महामति स्वरूप की जमात समझकर उन्हीं से भिड़ गया। रातभर चमारों की मार खाकर सबेरा होते ही वह अपनी फौज सहित भाग खड़ा हुआ ।

स.१७४- कलियुगी भावना से लिप्त लोगों ने किसे परास्त करने की नीयत के कारण कयामत के समय कज़ा की सजा प्राप्त की? ये बातें कहाँ के मजल की हैं?

ज.१७४- जब से महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी पन्ना नरेश महाराजा छत्रसाल के राज्य में झण्डा स्थापित कर विराजमान हुए, तब से महाराजा छत्रसाल के नाम, यश, कीर्ति अथवा बोलबाले के प्रति ईर्ष्या अथवा कुनीयत लेकर जो भी राजा अथवा →

❀ पद्मावती लीला-सुकराना ❀

स. १ - पुरदल खाँ ने महामति स्वरूप को कब और कहाँ चिट्ठी लिखी थी?

ज. १ - महामति स्वरूप जब रामनगर से गढ़ा होते हुए पन्ना आकर →

स. २ - चिट्ठी लिखने के पीछे पुरदल खाँ का क्या उद्देश्य था अथवा चिट्ठी में उसने क्या पूछा था?

ज. २ - पुरदल खाँ ने महामति स्वरूप से उस चिट्ठी में पूछा था, "आप →

स. ३ - पुरदल खाँ के पत्र के जवाब में महामति स्वरूप ने क्या लिखकर भेजा?

ज. ३ - पुरदल खाँ के पत्र के जवाब में महामति स्वरूप ने लिखा था, "आपने किस ग्रंथ के आधार पर कयामत का समय बहुत दूर निश्चित किया है? मुझे उस ग्रंथ का नाम बताइए क्योंकि यह →

स. ४ - पुरदल खाँ को धिक्कारते हुए महामति स्वरूप ने क्या कहा?

→ बादशाह महाराजा छत्रसाल के ऊपर चढ़ाई करने आये, उनकी बुरी से बुरी दशा हुई। कलियुगी भावनाग्रस्त होकर महाराजा छत्रसाल पर चढ़ाई करने आने के कारण बीचों-बीच ही उन्हें हुकम ने पटक दिया। कयामत के बख्त के कज़ा की सजा उन्हें मिलती गयी। जो-जो, जैसी-जैसी नीयत लेकर आगे बढ़े, उन्हें उनकी नीयत के अनुसार फल प्राप्त होते गया।

- (प्रकरण ६०, सवाल-जवाब नं. १७४, कुल सं. ४२३५+१७४ =४४०९)।

❀ पद्मावती लीला-सुकराना ❀

→ विराजमान हुए, तब पुरदल खाँ ने रामनगर के राजा के पास जाकर राजा को महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी के खिलाफ भड़काया और वहीं से महामति स्वरूप को पन्ना में चिट्ठी भी लिखी थी।

→ किस ग्रन्थ के आधार पर अभी कयामत की घोषणा कर रहे हैं? क्योंकि कयामत का समय तो अभी बहुत दूर है।" अतः उक्त चिट्ठी लिखने के पीछे उसका उद्देश्य यह था कि उसे उस वक्त कयामत स्वीकार नहीं थी।

→ सवाल कुरान शरीफ़ के अन्दर का है। कुरान में कहा है कि कयामत का दौर आ गया है, चल रहा है । पुनः कुरान शरीफ़ में स्थित सात निशान कयामत के वक्त खुलेंगे, ऐसा कहा गया था। अतः वे सात निशान खुल गये हैं और जो मोमिन आत्माएँ थीं, उन्होंने इस बात को समझ लिया है।"

ज. ४ - पुरदल खाँ को धिक्कारते हुए महामति स्वरूप ने उससे कहा, "पुरदल खाँ जी! आपको तो धन्य-धन्य कहना चाहिए क्योंकि →

→ आप तो कुरान के अन्दर की बातों को भी नहीं समझ पाए। कोई बात नहीं किन्तु आपके द्वारा भेजे हुए अहदी, जो रामनगर में →

स. ५ - "बिना वाउ उड़े ज्यों तूल"-यह जवाब किसने, किसे दिया?

ज. ५ - *"बिना वाउ उड़े ज्यों तूल"* अर्थात् "अब आप हवा बिना ही →

स. ६ - महाराजा छत्रसाल पर लड़तपुर में आक्रमण किसने किया अथवा लड़तपुर में फौज लेकर महाराजा छत्रसाल से लड़ने कौन आया और उसकी क्या दशा हुई?

स. ७ - किसके मात्र बाईस सैनिकों ने तीन हजार सिपाहियों को परास्त कर दिया और कहाँ?

स. ८ - सूबेदार सफजंग कौन थे तथा महाराजा छत्रसाल के साथ हुए संघर्ष में उनकी क्या दशा हुई?

स. ९ - कुरान के अनुसार जिस तरह मूसा पैगम्बर की दुआ से फेरून राजा के सैनिक नील नदी में डूबकर नष्ट हो गए थे, उसी तरह यह बात यहाँ किस तरह घटी? स्पष्ट रूप से खुलस्त करो।

ज. ९ - जिस प्रकार मूसा पैगम्बर और फेरून बादशाह के बीच चल रहे युद्ध के दौरान खुदा की ओर से मूसा पैगम्बर को उसका दोस्त →

स. १०-बादशाह औरंगजेब ने अपने भतीजे रणमस्त खाँ को किस लिए भेजा था?

→ आए थे, उन्होंने कयामत की बातें मात्र समझी ही नहीं, अपितु वे महामति स्वरूप को *"आखर जमाने के खाविंद"* कबूल करके भी गये। अब भी आपकी आँखें नहीं खुलीं?"

→ उड़नेवाले तूल की तरह समाज के बीच उड़ेंगे। आप समाज के बीच इतने हलके साबित होंगे कि हादी, खुदा और मोमिनों के बीच तूल सदृश नजर आऐंगे।" यह जवाब महामति स्वरूप ने पुरदल खाँ को दिया।

ज. ६ - महाराजा छत्रसाल ने जब लड़तपुर पर आक्रमण किया, तब पुरदल खाँ अपनी भारी फौज लेकर महाराजा छत्रसाल से लड़ने आया। रास्ते में ही महाराजा छत्रसाल से उसकी मुठभेड़ शुरू हो गई। उसकी फौज पलटकर आपस में ही लड़कर नष्ट-ध्वस्त हो गयी। पुरदल खाँ ख्वार होकर भाग खड़ा हुआ।

ज. ७ - लड़तपुर में महाराजा छत्रसाल और पुरदल खाँ के बीच हुई लड़ाई में महाराजा छत्रसाल के मात्र बाईस सैनिकों ने पुरदल खाँ के तीन हजार सिपाहियों को परास्त कर दिया।

ज. ८ - सफजंग नामक व्यक्ति पुरदल खाँ का सूबेदार था। उसने जब महाराजा छत्रसाल के साथ संघर्ष छेड़ा, तो उसका नामोनिशान तक नहीं रहा।

→ मिला और खुदा की रहमत से बादशाह फेरून की फौज नील नामक नदी में डूबकर मर गयी, उसी प्रकार यहाँ महामति स्वरूप मूसा पैगम्बर के स्थान पर हैं। फेरून बादशाह के स्थान पर सुलतान औरंगजेब और हारून राजा हैं महाराजा छत्रसाल। महामति स्वरूप की आशीर्वादरूपी दुआ से जो कोई भी महाराजा छत्रसाल के प्रति कुनीयत लेकर कुचेष्टा करने आता था, वह मोहसागररूपी नील नदी में डूबकर मर जाता था।

ज. १०- जगह-जगह पर स्थित अपने नाम के झण्डों को उखाड़कर बुन्देला महाराजा छत्रसाल अपने नाम का झण्डा स्थापित कर रहे हैं, यह →

→ बात सुनते ही बुन्देला छत्रसाल का नामोनिशान खत्म कर देने →

स. ११-रणमस्त खाँ को भेजने के पश्चात् बादशाह औरंगजेब ने तुरन्त ही एक पत्र लिखकर रणमस्त खाँ को वापस क्यों बुलवा दिया?

ज. ११- बादशाह औरंगजेब की आज्ञा शिरोधार्य कर उसका भतीजा रणमस्त खाँ अपनी भारी फौज लेकर सात मजल लंबा रास्ता पार कर महाराजा छत्रसाल से भिड़ने पहुँच ही रहा था कि उसी →

स. १२-ओरछा के लोगों को अपने-आप को सुरक्षित रखना कठिन क्यों हो गया?

ज. १२- ओरछा के वेदवक्ता विद्वान पण्डित ईर्ष्यापूर्ण नीयत लेकर श्री →

स. १३-कहा है कि "दौवा के पण्डितों को बहुत कष्ट भोगना पड़ा।" अतः ऐसा क्यों कहा गया?

ज. १३- *"दौवा के पण्डितों को बहुत कष्ट भोगना पड़ा"*- ऐसा इसलिए कहा गया क्योंकि दौवा के विद्वान पण्डितों ने ईर्ष्या भरी नीयत →

स. १४-राणा प्रताप सिंह अपने पड़ोसी राजाओं के साथ आपसी संघर्ष में ही क्यों नष्ट हो गए?

ज. १४- हिन्दू राजा राणा प्रताप सिंह ने भी महाराजा छत्रसाल के प्रति →

स. १५-आसुरी प्रवृत्तिवालों के विषय में कुरान में कयामत के समय क्या होने को कहा है?

ज. १५- अवज्ञाकारी दुष्ट, आसुरी प्रवृत्तिवाले जहाँ-जहाँ जैसा व्यवहार →

→ की आज्ञा देकर सुलतान औरंगजेब ने अपने भतीजे रणमस्त खाँ को भेज दिया।

→ वक्त जलालपुर के विद्वान काज़ियों द्वारा लिखा हुआ *"महजरनामा"* पढ़कर औरंगजेब को पूर्ण विश्वास हो गया कि "हो न हो इमाम मेहदी की शक्ति तो बुन्देला महाराजा छत्रसाल को प्राप्त हो चुकी है। अब बुन्देला महाराजा छत्रसाल को चौदह लोकों में कोई भी परास्त नहीं कर सकेगा। मेरे शहर-गाँव आदि तो चले ही गए। अब मेरा भतीजा रणमस्त खाँ भी न चला जाय।" यह समझ आते ही उसने चिट्ठी लिखकर अपने भतीजे रणमस्त खाँ को वापस बुला लिया।

→ प्राणनाथजी से संघर्ष करने आए थे। अतः महाराजा छत्रसाल ने ओरछा पर चढ़ाई कर दी। सम्पूर्ण राज्य युद्ध के कारण अस्त-व्यस्त हो गया। इसलिए वहाँ के लोगों को अपने-आप को भी सुरक्षित रखना मुश्किल हो गया।

→ लेकर महामति श्री प्राणनाथजी और महाराजा छत्रसाल से संघर्ष की ठानी थी, जिस कारण उन्हें बड़ा कष्ट भोगना पड़ा। तत्पश्चात् जब-जब उन्होंने कलियुगरूपी दज्जाल से प्रेरित होकर श्रीजी और महाराजा छत्रसाल का विरोध किया, तब-तब कोई न कोई विघ्न उनके सिर पर आ खड़ा हुआ।

→ बुरी नीयत लेकर उनका अनर्थ सोचा था। अतः वे अपने पड़ोसी राजाओं के साथ आपसी संघर्ष में नष्ट हो गए। यही चिन्ह हैं-कयामत के वक्त फजर होने के। इस प्रकार कुरान में लिखे प्रमाण सब कोई अपना-अपना नतीजा देखते-भोगते चले।

→ करेंगे, उन्हें वहाँ-वहाँ अपनी-अपनी करनी का दण्ड मिलते जायेगा, ऐसा पहले ही कुरान में कहा गया था। वह भविष्यवाणी यहाँ सिद्ध हो गयी। जिस किसी ने भी जैसा-जैसा दुर्व्यवहार करने का मात्र संकल्प तक किया, उन्हें उसी समय परमात्मा की कृपा से मार खानी पड़ी और वे ध्वंस-विध्वंस होते चले गए।

स. १६-लैल तुल कद्र की रात्रि में भी परब्रह्म श्री राजजी ने मोमिनों को आनन्दमय सबेरे के समान सुख और आनन्द दिया, किस प्रकार?

ज. १६- अक्षरातीत ब्रह्म परमात्मा श्री राजजी अपनी सम्बन्धी ब्रह्मात्माओं →

स. १७-ब्रह्मात्माएँ जहाँ भी हों, अपनी-अपनी जगह पर बैठकर क्या करती हैं?

स. १८-संसार के दयनीय जीवों का मार्गदर्शन करने की जिम्मेदारी परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने किसे सौंपी है?

ज. १८- मोमिन आत्माओं को अक्षरातीत श्री राजजी ने तारतम के माध्यम →

स. १९-ब्रह्मात्माओं के रक्षार्थ चौकी कौन-कौन देते हैं?

ज. १९- ब्रह्मात्माओं के रक्षार्थ फरिश्ता अर्थात् ईश्वरी सृष्टियाँ पहरेदारी →

स. २०-ब्रह्मात्माओं के लिए श्री राजजी ने कैसा दाना प्रदान किया है?

ज. २०- अपनी अंगभूता ब्रह्मात्माओं-ब्रह्मसृष्टियों के लिए तो श्री राजजी →

स. २१-परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के प्रभुत्व की साक्षी देनेवाले कौन हैं?

ज. २१- अपने धामधनी सम्बन्धी ज्ञान सुनते ही पूर्ण विश्वास लेकर →

स. २२-जागनी के ब्रह्माण्ड में ब्रह्मात्माओं के दिल को कौन निर्मल-पवित्र रखता है?

ज. २२- जागनी के ब्रह्माण्ड में अक्षरातीत धामधनी श्री राजजी का आवेश →

→ को सदैव अपनी छत्र-छाया में ही रखा करते हैं। इन धामस्थ आत्माओं को लैल तुल कद्र की रात्रि के पश्चात् जागनी के फजर अर्थात् श्रीमद्तारतम द्वारा आत्मीय ज्ञानरूपी अरुणोदय का परमानन्द प्राप्त हुआ।

ज. १७- ब्रह्मात्माएँ जहाँ भी हों, अपनी-अपनी जगह पर बैठकर अपने धनी श्री राजजी की चर्चा-कथा करती रहती हैं।

→ से अपनी पूर्ण पहचान दी है। इन्हीं मोमिन-आत्माओं के हाथ में संसार के दयनीय जीवों का मार्गदर्शन करने एवं अक्षर-अक्षरातीत का संदेशा देने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है।

→ करती हैं, जिससे दुःख, कष्ट, तकलीफ आदि इन्हें छू तक न सकें। अन्य जो देवी-देवता इन ब्रह्मात्माओं की पहचान कर लेते हैं, वे भी इनकी रक्षा करते हैं।

→ ने इन्द्रिय निग्रह करने की शक्ति सहित अपने ब्रह्मज्ञान अर्थात् तारतम ज्ञान के समझरूपी दाने का प्रबन्ध पहले से ही कर रखा था। मुहम्मद साहेब के समक्ष ही श्री राजजी ने कहा था कि मारफती ज्ञान मैं स्वयं अपनी आत्माओं के बीच खोलूँगा।

→ दौड़नेवाली जमात को ही कुरान में सुन्नत जमात कहा गया है। यही जमात वेद, कतेब, कुरान, पुराण आदि सद्ग्रन्थों की साक्षियों द्वारा परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के वास्तविक प्रभुत्व को संसार में जाहिर करेंगी।

→ अर्थात् जबराईल शक्ति ब्रह्मात्माओं के दिल को निर्मल-पवित्र बनाए रखता है। पुनः यही जोश कयामत के दिन होनेवाले न्याय के समय इन ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों की सिफ़ारिश एवं अनुशंसा सबसे पहले करेगा।

स. २३-कयामत के समय खुलस्त होनेवाले सात निशान कौन-कौनसे हैं तथा उन्हें खुलस्त करनेवाले स्वरूप कौन हैं?

ज. २३- कयामत के समय स्पष्टरूपेण खुलस्त होनेवाले सात निशान नीचे लिखे प्रमाण हैं, जिन्हें स्वयं इमाम मेहदी ही कयामत के →

स. २४-सारे विश्व के विरोध को ज्ञान द्वारा मिटाकर सारे विश्व को एक इष्ट परमात्मा के मनन-चिंतन में लगानेवाले स्वरूप कौन होंगे?

ज. २४- महामति श्री प्राणनाथजी ने अपने तारतम ज्ञान के माध्यम से हिन्दू को हिन्दू की ही तरह और मुसलमान को मुसलमान की ही →

स. २५-अर्श से खेल में कौन-कौनसी रूहें उतरी हैं? पुनः अक्षरातीत की वाणी अपने सिर पर लेकर कौन सुनेंगी?

ज. २५- अर्श और अर्श अजीम अर्थात् अक्षर और अक्षरातीत धाम से →

स. २६-आखर में जो खाविंद स्वरूप सभी को अखण्ड बहिश्त देंगे, वे खाविंद स्वरूप कौन हैं? पुनः यह भविष्य किसने कहा है और इस बात की साक्षी कहाँ देखने को मिलती है?

ज. २६- आखर जमाने में जो खाविंद स्वरूप सभी को अखण्ड बहिश्त देंगे, वे खाविंद यहाँ इमाम स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी हैं। →

स. २७-"त्रिगुन रोते-रोते पीछे फिरेंगे"-ऐसा क्यों कहा है अथवा वे क्यों रोयेंगे? कारण स्पष्ट करो।

ज. २७- *"त्रिगुन रोते-रोते पीछे फिरेंगे"*-ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि ब्रह्मधाम की उन ब्रह्मात्माओं की महिमा का वर्णन वेद, पुराण, →

→ समय खोलकर उसके द्वारा अपना परिचय देंगे, ऐसी भविष्यवाणी कही थी। जैसे-१) दज्जाल का जाहिर होना २) दाभा नामक जानवर का प्रकट होना ३) आजूज-माजूज का दुनिया को खाना ४) पश्चिम से सूर्य उगना ५) असराफील का स्वर फूँकना ६) हजरत ईसा का प्रकट होना और ७) इमाम का जाहिर होना।

→ तरह समझाकर *"सोई खुदा सोई ब्रह्म"* मतानुसार सबके बीच का विरोधाभास मिटाकर एकेश्वरवाद की स्थापना की और आखर के वक्त में एकेश्वरवाद पर चलनेवाले समाज के स्थापित होने की भविष्यवाणी को सार्थक बना दिया। अब तारतम मंत्र ज्ञानाधार सभी अक्षर-अक्षरातीत को भजने और मनन करने लगे।

→ इस खेल में ईश्वरी और ब्रह्मसृष्टियाँ उतरी हैं। अक्षरातीत की ये ब्रह्मात्माएँ ही अक्षरातीत की वाणी को अपने सिर पर लेकर चलेंगी और सुनेंगी।

→ इन्होंने वेद-कतेब में कहे भविष्य वचनों को सार्थक कर उसी प्रमाण आम-जीव सृष्टि को बेहद में आठ प्रकार के बहिश्त (मुक्तिस्थान) दिये। ईश्वरी सृष्टियों को उनका अक्षर धाम प्राप्त करा दिया और ब्रह्मसृष्टियों के हृदय में अक्षरातीत धाम दृढ़ करा दिया। ये स्वरूप सृष्टि में जाहिर होकर ऐसे कार्य करेंगे, ऐसा भविष्य मुहम्मद ने स्पष्टरूपेण कुरान में कहा था। इस बात की साक्षी कुरान में और अन्य सभी ग्रन्थों में देखने को मिलती है।

→ उपनिषद् आदि समस्त सद्ग्रन्थों में मिलता है, जिनके चरण-रज प्राप्त करने के लिए त्रिदेवा मारे-मारे फिरते हैं, तब भी उनका नसीब नहीं खुलता। वे उन ब्रह्मात्माओं की प्रशंसा सुनने की हिम्मत तक नहीं जुटा पाये हैं। इसलिए वे उनके नाम, यश, कीर्ति, महिमा आदि को देख-सुनकर रोते-रोते स्वर्ग, वैकुण्ठ में लौट जायेंगे, ऐसा कहा है।

स. २८-बीतककार श्री लालदासजी महाराज धामस्थ आत्माओं से पूछ रहे हैं, "हे ब्रह्मात्माओं! अतः धामस्थ आत्माओं! हमारे धनी ने हमारे लिए क्या किया और वे धाम में हमारी किस विषय में प्रशंसा करेंगे?"

ज. २८- हमारे धनी ने तो सारी सृष्टि की अस्तित्त्वहीन मायावी जीवात्माओं की गति-मुक्ति की जिम्मेदारी हमारे हाथ में प्रदान →

❋ अष्ट पहर मंगलाचरण ❋

स. १ - श्री परमधाम में खेल देखने के पूर्व खेल विषयक बातें सर्वप्रथम किसके दिल में आई?

ज. १ - श्री परमधाम अक्षरातीत दिव्य धाम की तीसरी भोम में आज के दिन सवेरे सर्वप्रथम श्री राजजी ने अपने दिल में लिया, "मैं अपनी इन आत्माओं को खेल दिखाऊँ।" तत्पश्चात् दैनिक →

स. २ - खेल दिखाने के विषय में श्री राजजी ने क्या-क्या और क्यों किया?

ज. २ - खेल दिखाने के विषय में श्री राजजी ने सर्वप्रथम अक्षर पुरुष का सखियों को और सखियों का अक्षर पुरुष को दर्शन करा दिया। तत्पश्चात् उस दूसरे पुरुष के दर्शन कर हम सखियों के →

स. ३ - प्रेम-संवाद, इश्क-रब्द के पश्चात् हम द्वादश सहस्त्र सखियाँ कहाँ आईं?

ज. ३ - प्रेम-संवाद, इश्क-रब्द के पश्चात् हम द्वादश सहस्त्र सखियाँ →

➞ कर हमारी मेहेर के तले रखकर उन्हें अष्ट प्रकार के मुक्तिस्थानों में अखण्ड करवा दिया और जीवात्माओं के आगे हमें इष्ट के रूप में रख दिया। अतः हमारे द्वारा *"सेवानी सेवा दाखुं सार"* विषयक हुए परमार्थी कार्यों तथा इन कार्यों द्वारा धामधनी की महिमा और प्रभुत्व के प्रचार-प्रसार विषयक कार्यों के विषय में अक्षरातीत धामधनी श्री राजजी-हमारे धनी हमारी प्रशंसा करेंगे।
- (प्रकरण ६१, सवाल-जवाब नं. २८,कुल सं.४४०९+२८=४४३७)।

❋ अष्ट पहर मंगलाचरण ❋

➞ अक्षरातीत हक श्री राजजी के दर्शन के लिए आनेवाले नूर (अक्षर ब्रह्म) के दिल में यह इच्छा उत्पन्न हुई, "अक्षरातीत के अर्श के अन्दर कैसी लीला होती होगी?" उसके पश्चात् तुरन्त हादी (श्यामाजी) और द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं के दिल में यह इच्छा उत्पन्न हुई, "यह दूसरा पुरुष क्या करता है?"

➞ दिल में उस पुरुष के विषय में जानने की प्रबल इच्छा प्रकट कर दी। हमारे ही मुख से उसके नाम, ठाम और काम को जानने की इच्छा प्रकट करा दी। पुनः स्वयं इन प्रश्नों के उत्तर हमें ऐसे ढंग से देते गए कि उस दूसरे पुरुष के बारे में हर बात जानने की उत्सुकता हममें बढ़ने लगी। अन्त में हम स्वयं ही असत्, जड़, दुःखमय नाटक देखने की रटना लगाने लगे क्योंकि श्री राजजी हमें हमारे मुख से मँगवाकर ही खेल दिखाना चाहते थे।

➞ नीचे प्रथम भोम में उतर आईं। वहाँ श्री राजजी ने हमें गोल हवेली-मूल मिलावे में पंक्तिबद्ध बैठा दिया और हम सखियाँ जाकर बैठ गईं।

स. ४ - "लेकर बड़ा सवाब"-ऐसा कौन और किसके विषय में सोचते हुए कह रहे हैं?

ज. ४ - *"लेकर बड़ा सवाब"* -उक्त कथन श्री राजजी ने यह सोचते →

स. ५ - जब श्री राजजी ने हमें खेल दिखाने की ठानी, तब उन्होंने क्या किया?

स. ६ - श्री राजजी ने हम द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं को प्रथम और दूसरी बार कहाँ-कहाँ तथा कैसे खेल में उतारा?

ज. ६ - श्री राजजी अक्षरातीत प्रियतम ने हम द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं को सर्वप्रथम बयालीस पुरा विस्तारवाले ब्रजमण्डल में उतारा। हम सब वहाँ हिन्दू धर्म, स्त्री जाति, वैश्य वर्ण तथा एक ही जगह ब्रजमण्डल में ब्रजवधू के रूप में उतरे। तत्पश्चात् ११ वर्ष ५२ →

स. ७ - "जो तीसरा तकरार लैल"-अतः कैसे और किस प्रकार यह लैल का तीसरा तकरार है?

स. ८ - श्री राजजी ने दूसरी बार हम ब्रह्मात्माओं को खेल में उतारने के लिए नारायणी सृष्टि के अन्तर्गत किस स्थान को चुना?

स. ९- श्री राजजी ने द्वादश सहस्त्र सखियों के मिलावे के लिए मुख्य केंद्र किस स्थान को बनाया?

स. १०-यहाँ किन स्वरूप की सिफ़त गायी गई है, जिसे शब्दातीत कहा गया है?

→ हुए हमसे कहा था, "अरे! देखें तो सही !! ये रूहें-ब्रह्मात्माएँ ब्रज, रास और जागनी-तीनों प्रकार की लीलाओं का अनुभव कर किस तरह प्रेमातुर होकर मुझसे मिलने एवं खेल की बातें मुझे सुनाने के लिए दौड़ते-दौड़ते आती हैं।"

ज. ५ - जब श्री राजजी ने हमें असत्, जड़, दुःखमय खेल दिखाने की मन में ठानी, तब उन्होंने युक्तिपूर्वक हममें प्रबल इच्छा पैदाकर *"प्रेम-संवाद"* करवाया और न भूलने के विषय में वचनबद्ध बना दिया।

→ दिन के बाद ५२ वें दिन की संध्या में वंशी की नाद में दौड़कर हम सखियाँ महारास के ब्रह्माण्ड में पहुँच गईं। ब्रज और रास लीला पूरी करके हम सब पुनः अक्षरातीत धाम में लौट गये। पुनः दूसरी बार इस तीसरे कालमाया के जागनी के ब्रह्माण्ड में तो आये, परन्तु पहले की तरह नहीं। इस बार तो हम हिन्दू-मुसलिम दोनों जातियों में, तीनों लिंगों में, चारों वर्णों में और भारतवर्ष के अलावा अन्य देश-विदेश में भी उतरे।

ज. ७ - *"जो तीसरा तकरार लैल"*-अतः लैल मतलब रात्रि। एक ब्रह्मरात्रि के तीन टुकड़े हुए। उनमें से प्रथम टुकड़ा ब्रज, दूसरा टुकड़ा रास और तीसरा टुकड़ा यह जागनी का ब्रह्माण्ड है।

ज. ८- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी ने अपनी अंगभूता ब्रह्मांगनाओं के लिए तीसरे ब्रह्माण्ड में दूसरी बार मुख्य स्थान नारायणी सृष्टि के स्थूल-चौदह लोकों में से मृत्युलोक, मृत्युलोक के सात द्वीप में जम्बू द्वीप पुनः जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में से भरतखण्ड को चुना।

ज. ९ - अक्षरातीत परमधाम की द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं के मिलावे के लिए श्री राजजी ने इस तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में भरतखण्ड के भी मध्य प्रदेश के पन्ना शहर को केंद्र रूप में चुना।

ज. १०- श्री राजजी के पाँचों स्वरूपों में से जागनी के ब्रह्माण्ड के तीन स्वरूप मुख्य हैं। पुनः इन तीनों स्वरूपों-बसरी, मलकी और हकी में से भी हकी स्वरूप की सिफ़त अक्षरातीत ब्रह्म स्वरूप की ही तरह शब्दातीत कहकर गायी गई है।

स. ११-"हर पल इसी तन से अनगिनत सुख लिये"-अतः कहाँ, किसने और कैसे?

ज. ११- ब्रह्मात्माओं ने हर पल, क्षण-क्षण इसी तन द्वारा जागनी के ब्रह्माण्ड →

स. १२-ग्यारह सौ वर्ष पूर्व किसने, किसकी और किस विषय की सिफ़त लिखी थी?

ज. १२- उन अक्षरातीत ब्रह्म स्वरूप की एक क्षण अथवा एक पल में की सेवा द्वारा जो सुख प्राप्त होता है। उस सुख की सिफ़त अथवा →

स. १३-"ए सिफत सब ऊपर" अतः किसकी सिफ़त सब ऊपर है, ऐसा कहा गया है? क्यों?

ज. १३- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप की जो जैसी सेवा मोमिनों-ब्रह्मात्माओं ने की, उनके द्वारा की गई इस सेवा की सिफ़त के →

स. १४-किसकी सिफ़त अखण्ड-बका श्री परमधाम में होनेवाली है, जिसका वर्णन "हद की जिह्वा द्वारा कैसे कहूँ?"-ऐसा कहा गया है?

स. १५-"ये सब श्री राजजी की आज्ञा से हुआ है"-ऐसा कहा है। अतः क्या हुआ?

ज. १५- *"ये सब श्री राजजी की आज्ञा से हुआ है"* अर्थात् ब्रह्मात्माओं →

स. १६-किन ब्रह्मात्माओं की महिमा लोक-परलोक में गायी जाती है?

ज. १६- जो ब्रह्मात्माएँ यहाँ संसार में रहते हुए ही विश्वासपूर्वक परमधाम →

→ में अनगिनत अपार सुख प्राप्त किए और वह भी हकी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी की सेवा करके। इस सेवा का लाभ विशेषकर ब्रह्मात्माओं ने पन्ना धाम में ब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथजी की अष्ट पहर की सेवा द्वारा उठाया।

→ वर्णन करने में यह जबान तो असमर्थ है। ग्यारह सौ वर्ष पूर्व ही मुहम्मद साहेब ने कुरान शरीफ़ ग्रन्थ में बह्मात्माओं की सेवा के विषय में लिख दिया था कि धाम की रूहें आखर जमाने के खाविंद अर्थात् अपने धनी की जो सेवा करेंगी, उस सेवा की सिफ़त तो शब्दातीत,अपार,अनगिनत है।

→ विषय में कहा गया है, *"ए सिफत सब ऊपर"* क्योंकि जिनकी सेवा की जा रही है, वे स्वरूप तथा जो सेवा कर रहे हैं, वे स्वरूप- दोनों सर्वोत्तम अर्थात् सबसे ऊपर के धाम में रहनेवाले हैं। इन ब्रह्मात्माओं का चलन-व्यवहार, रहन-सहन, भाव-भक्ति, श्रद्धा-प्रेम आदि भी सबसे ऊपर है।

ज. १४- इन ब्रह्मात्माओं ने हकी स्वरूप श्री राजजी की जो सेवा की, उस सेवा की सिफ़त अखण्ड ब्रह्मधाम के मूल मिलावे की बैठक में होगी। इसी सेवा की सिफ़त के विषय में कहा गया कि *"इस सेवा की सिफ़त मैं हद की जिह्वा द्वारा कैसे कहूँ?"*

→ द्वारा हुई सभी सेवाएँ और इन सेवाओं की सिफ़त आदि यावत् बातें श्री राजजी की आज्ञा से ही हुई हैं। इस विषय में तू-तू, मैं-मैं करना व्यर्थ है। इस संसार में न ही मैं और न ही आप अथवा कोई भी कुछ नहीं कर सकता।

→ में बैठी परात्मा का ध्यान करती हैं, वे ही परमधाम में प्रविष्ट भी हो सकती हैं। पुनः इन्हीं ब्रह्मात्माओं की महिमा का गान लोक-परलोक में गाया जाता है। पुनः उन ब्रह्मात्माओं की सभी कामनाएँ भी पूर्ण हो जाती हैं।

स. १७-"विजयाभिनन्द बुद्धजी का शाका" कब से प्रारंभ हुआ?

स. १८-श्री श्यामाजी अवतार तथा हुकम के स्वरूप मुहम्मद एवं श्री प्राणनाथजी के स्वरूप में साकुण्डल सखी कब से शामिल हुई?

ज. १८- महामति श्री प्राणनाथजी के स्वरूप में श्री श्यामाजी अवतार →

स. १९-तीन स्वरूप कौन-कौन हैं, जो अलग-अलग कार्यकर एक ही साथ, एक ही समय में श्री परमधाम पहुँचे हैं?

ज. १९- तीन स्वरूप-बसरी, मलकी और हकी स्वरूप हैं। इनमें से पहले स्वरूप बसरी अर्थात् अरब के मुहम्मद साहेब, जिन्होंने ४० साल की उम्र में अर्श-श्री परमधाम में पहुँचकर कलमा लाए और शरीअत का मार्ग चलाया। दूसरे स्वरूप मलकी अर्थात् श्यामाजी अवतार श्री सद्गुरु स्वरूप हैं, जिन्होंने ४० साल में ही पूर्णस्वरूप के →

स. २०-किसने और कितने साल की अवस्था में मूल मिलावे में पहुँचकर नब्बे हजार हरफ सुने?

ज. २०- हुकम के स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब (तृतीय श्याम स्वरूप) ४० →

स. २१-जागनी के ब्रह्माण्ड की तीन सूरतायें किसके हुकम की हैं? द्वादश सहस्त्र आत्माओं के लिए भविष्य किसने कहा था?

ज. २१- जागनी के ब्रह्माण्ड की तीन सूरताएँ श्री राजजी के हुकम की हैं। अरब के बसरा नगर में प्रकट होनेवाली बसरी सूरता मुहम्मद →

स. २२-ब्रह्मसृष्टियों के दूसरी बार खेल में आने से कितने साल पहले बसरी स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब अरबस्तान में आये?

ज. १७- *"विजयाभिनन्द बुद्धजी का शाका"* वि. सं. १७३५ से अथवा ई. स. १६७८ या हिजरी सन् १०९० से प्रारंभ हुआ।

→ सद्गुरु एवं हुकम के स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब शामिल हैं। महामति स्वरूप ही इमाम मेहदी स्वरूप में प्रकट होकर सभी को कयामत अर्थात् रूहों की जागृति के लिए आमंत्रित, आह्वान कर रहे हैं। उनकी जागनी की घोषणा सुनकर पन्ना (मऊ) में वि. सं. १७४० में महाराजा छत्रसाल की परात्मा अर्थात् साकुण्डल सखी भी शामिल हो गई।

→ दर्शन प्राप्त कर उनसे ब्रह्मतारक तारतम महामंत्र प्राप्त किया और जगत् को हकीकत का ज्ञान दिया। तीसरे स्वरूप हकी स्वरूप अर्थात् महामति श्री प्राणनाथजी हैं, जिन्होंने ४० साल की उम्र में अपने धनी को अपने हृदय धाम में बिठाकर तारतम के तारतम की वर्षा की और धनी द्वारा प्रदत्त तारतम कुंजी द्वारा वेद-कतेब, कुरान-पुराण के गोप्य रहस्यों को खोलकर मारफती ज्ञान द्वारा तीनों सृष्टि की आत्माओं को बहिश्त की और अपने-अपने अर्श की पहचान करा दी।

→ वर्ष की उम्र में नासूत से मलकूत, जबरूत होते हुए लाहूत के अंदर स्थित हाहूत में पहुँचकर जुल्फेकार माशूक से मिले और अपने माशूक (हक-ब्रह्म) के श्री मुख से नब्बे हजार हरफ सुने।

→ साहेब ने अपने ग्रंथ कुरान में द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं के खेल में पुनः आने का और उनके ही लिए स्वयं खुदा (ब्रह्म-श्री राजजी) के खेल में अवतरित होकर उन्हें मारफती हरफ द्वारा प्रबोध करने के विषय में भविष्य कहा था।

ज. २२- ब्रह्मसृष्टियों के दूसरी बार खेल में आने के ९९० वर्ष और ९ महीने पूर्व मुहम्मद साहेब अरबस्तान से लौट गए थे, जिसका →

→ प्रमाण निम्नलिखित चौपाई है। जैसे-

साल नव सै नब्बे मास नौ, हुये रसूल को जब ।
रूह अल्लाह मिसल गाजियों, सैयां उतरे तब ।।

- (श्री लालदास कृत बीतक, प्र.२/चौ.१५)।

→

स. २३-मलकी सूरत कौन है तथा वह कब, किस समय और कहाँ आयी?

ज. २३- मलकी सूरत अर्थात् श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु *"द्वै परार्धे*

→

स. २४-हकी स्वरूप कौनसी सूरत है? हकी स्वरूप ने किन दो स्वरूपों का वारसदार होकर क्या प्रकट किया?

स. २५-संपूर्ण सृष्टि अथवा खेल की जीवात्माओं के गति-मुक्ति का दायित्व किसके सिर पर है?

स. २६-किन तीनों के कौल, फैल और हाल की कोई मिसाल ही नहीं है, ऐसा कहा है?

ज. २६- बसरी स्वरूप-हुकम के स्वरूप मुहम्मद साहेब, मलकी स्वरूप श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु और हकी स्वरूप श्री प्राणनाथजी हैं। इन तीनों की करनी और रहनी (कौल और फैल) द्वारा ही

→

स. २७-उक्त तीनों स्वरूपों के तीन प्रकार के नूरमय प्रकाश कौन-कौनसे है?

ज. २७- उक्त तीनों स्वरूपों में से बसरी स्वरूप के पास शरीअत का नूरमय प्रकाश ही है। अतः उन्होंने दुनिया को वही दिया। मलकी

→

→ अतः ब्रह्मसृष्टियों के दूसरी बार खेल में आने से ९९० वर्ष ९ महीने + ६३ साल पूर्व मुहम्मद साहेब अरब में आए थे।

→ *अष्टाविंशति कलौयुगे"* के वि. सं. १६३८ (ई. स. १५८१) में मारवाड़ देश उमरकोट गाँव में प्रकट हुये। वे स्वरूप वि. सं. १६३८ के आसोज माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि के दिन अवतरित हुए थे।

ज. २४- हकी स्वरूप तीसरी सूरत है। हकी स्वरूप ने बसरी और मलकी- इन दोनों स्वरूपों के वारसदार होकर लक्ष्य और तारतम कुंजी को प्रकट किया।

ज. २५- *"सोई खुदा सोई ब्रह्म"* स्वरूप श्री राजजी ने अस्तित्त्वहीन सारे मायावी जीवात्माओं को अस्तित्त्वयुक्त बनाकर उन्हें गति-मुक्ति प्रदान करने की जिम्मेदारी ब्रह्मात्माओं के सिर पर दी है।

→ ब्रह्मात्माओं की जागनी कही है। पुनः सारे संसार के जीवों को मुक्ति प्रदान करने का पूरा दायित्व भी इन्हीं स्वरूपों पर है। इन तीनों स्वरूपों के समान न कोई हुये और न होंगे। इसलिए इन तीनों के कौल, फैल और हाल की कोई मिसाल ही नहीं है, ऐसा कहा है।

→ स्वरूप के पास हकीकत का ही नूरमय प्रकाश है। अतः उन्होंने भी ३१३ ब्रह्मात्माओं को वही दिया। हकी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी में विशेषकर मारफती नूरमय प्रकाश है। अतः उन्होंने तीनों सृष्टियों की उस मारफती नूरमय प्रकाश द्वारा कयामत (आत्म-जागनी) कर उन्हें उनके स्थान में पहुँचा दिया।

स. २८-किन स्वरूप के अंदर श्री परमधाम की दो शक्तियाँ आई थीं और कौन-कौनसी?

स. २९-किन स्वरूप को श्री राजजी ने अपने आत्मा की उपाधि दी?

स. ३०-श्री राजजी की यावत् सामर्थ्यता, मुक्ति और नीति किस स्वरूप में है?

स. ३१-जीव सृष्टियों का उत्पत्ति स्थान कहाँ है? वे चौथे आसमान अर्थात् अक्षरातीत धाम में क्यों नहीं चढ़ सकते?

ज. ३१- मायावी जीव सृष्टियों का उत्पत्ति स्थान नींद अर्थात् पाँचवीं क्षर समष्टि है। ये तो तीसरे आसमान तक भी नहीं जा सकते, →

स. ३२-"तीन वजह की पैदाइस"-इस कथन का क्या तात्पर्य है और यह बात किस ग्रन्थ में है?

ज ३३- नासूत में तीन प्रकार की पैदाइश बताई है, अतः कौन -कौनसी तथा इन तीनों पैदाइशों का मूल कहाँ है?

ज. ३३- नासूत में जो तीन प्रकार की पैदाइश बताई हैं, उनमें से एक है →

स. ३४-मूल वाहेदत में कौन है, जिनका फैल उनके धामधनी के अनुकूल बताया गया है?

स. ३५-जबरूती गिरोह किसे कहा गया है तथा उनका सम्बन्ध किसके साथ है?

ज. २८- बसरी स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब के अंदर श्री परमधाम की दो शक्तियाँ आई थीं। एक श्री राजजी का हुकम और दूसरा जोश।

ज. २९- मलकी स्वरूप पर श्री राजजी ने अपनी रूह फूँकी और उन्हें ही अपने आत्मा की उपाधि दी।

ज. ३०- अक्षरातीत अद्वैत पूर्णब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की यावत् सामर्थ्यता, मुक्ति और नीति मात्र तीसरे अर्थात् हकी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी में ही है।

→ इन्हें तीसरे आसमान में भी ब्रह्मसृष्टि द्वारा नया अंकुर करके पहुँचाया गया है, तो चौथे आसमान की तो बात ही क्या करना? क्योंकि चौथे आसमान में तो वहाँ की सुरतावाली आत्माएँ ही चढ़ सकती हैं।

ज. ३२- *"तीन वजह की पैदाइस"*-इस कथन का तात्पर्य है तीन प्रकार की उत्पत्ति। जैसे ब्रह्मसृष्टि, ईश्वरी सृष्टि और जीव सृष्टि। ये बातें पश्चिम के सद्ग्रन्थ कुरान शरीफ़ में लिखी हुई हैं।

→ अक्षरातीत ब्रह्मधाम की ब्रह्मसृष्टियाँ, दूसरी हैं अक्षर धाम की ईश्वरी आत्माएँ और तीसरी हैं क्षर ब्रह्माण्ड की नश्वर स्वप्नरूपी मायावी जगत् की जीव सृष्टियाँ।

ज. ३४- मूल वाहेदत अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्मधाम है। यहाँ रहनेवाली आत्माओं को ब्रह्मात्मा अथवा मोमिन भी कहते हैं। इनके फैल और हाल भी इनके धाम और धनी के अनुकूल बताए गए हैं।

ज. ३५- जबरूती गिरोह ईश्वरी सृष्टि को कहा है, जो कूटस्थ अक्षर पुरुष सम्बन्धी हैं अर्थात् उनका सम्बन्ध कूटस्थ अविनाशी अक्षर ब्रह्म से है।

स. ३६-किस सृष्टि को "मुसाफ" में नकल की नकल कहा गया है? कैसे-सिद्ध करो?

ज. ३६- जीव सृष्टि जो *"कुंन"* कहने से उत्पन्न हुई हैं, उन्हीं को सद्ग्रन्थ →

स. ३७-"हुकम के अमल में" कहने का क्या तात्पर्य है? हुकम के स्वरूप का बसरा में अवतरित होने का क्या कारण था क्योंकि उस समय मोमिन आत्माएँ तो खेल में थीं ही नहीं?

ज. ३७- *"हुकम के अमल में"* कहने का तात्पर्य है हुकम के स्वरूप अर्थात् →

स. ३८-शरीअत (कर्मकाण्ड) के तीस हजार हरफ किस ग्रंथ में जाहिर हुए? पुनः हकीकत और मारफत की मजल के विषय में उस ग्रंथ में क्या भविष्य कहा गया?

ज. ३८- शरीअत (कर्मकाण्ड) के तीस हजार हरफ अरब देश में जाहिर हुए। मुहम्मद साहेब ने अरब में आकर ४० साल की अवस्था में नूर तजल्लाह में पहुँचकर खुदा के श्री मुख से नब्बे हजार हरफ →

स. ३९-हुकम के स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब नासूत से कहाँ-कहाँ होते हुए नूर मकान पहुँचे?

ज. ३९- हुकम के स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब नासूत अर्थात् मृत्युलोक से →

स. ४०-रफ-रफ का तख्त किसे कहा है, जिसमें बैठकर हुकम के स्वरूप हक के हजूर पहुँचे?

ज. ४०- रफ-रफ का तख्त प्रेमरूपी सुखपाल को कहते हैं। हुकम के →

➞ *"मुसाफ"* अर्थात् कुरान शरीफ़ में नकल की नकल कहा गया है क्योंकि असल-अक्षरातीत धाम की ब्रह्मात्माएँ हैं। उनकी नकल-ईश्वरी सृष्टि हैं और इन ईश्वरी आत्माओं की भी नकल हैं-जीव सृष्टियाँ।

➞ तृतीय श्याम स्वरूप मुहम्मद का समय। उनके जमाने में अरब के बसरा नगर में अक्षरातीत ब्रह्मात्माएँ-मोमिन आत्माएँ तो थीं ही नहीं। किन्तु दूसरी बार वे ब्रह्मात्माएँ पुनः खेल में आनेवाली हैं। अतः इन रूहों को अर्श अजीम-अक्षरातीत ब्रह्मधाम की साक्षी देकर जागृत करने के लिए एवम् धाम की साक्षियाँ कुरान में रखने के लिए ही तृतीय श्याम स्वरूप बसरा में अवतरित हुए थे।

➞ सुने, जिनमें से शरीअत अर्थात् कर्मकाण्ड के तीस हजार हरफों द्वारा शराअ (कर्मकाण्ड) का मार्ग चला, जिस पर अभी मुसलिम समाज चल रहा है। हकीकत के तीस हजार हरफ मुहम्मद साहेब ने कुरान में लिखकर छोड़े तथा मारफती वचनों के रहस्य आखर के वक्त स्वयं खुदा आकर खोलेंगे तथा इन्हीं हकीकत और मारफत के वचनों द्वारा खुदा अर्श की रूहों की जागनी करेंगे, ऐसा भविष्य हकीकत और मारफत की मजल के विषय में मुहम्मद साहेब ने कुरान में लिखा था।

➞ जबराईल को घोड़ा बनाकर अर्थात् जबराईल पर सवार होकर मलकूत अर्थात् वैकुण्ठ पहुँचे। पुनः वहाँ से जबरूत-बेहद और जबरूत से नूर मकान पहुँच गए।

➞ स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब इस प्रेमरूपी सुखपाल पर जोए अर्थात् श्री यमुनाजी के पूर्व किनार से बैठकर सीधे लाहूत (परमधाम) के अंदर स्थित हाहूत अर्थात् मूल मिलावे में हक के हजूर पहुँच गए और हक-श्री राजजी से मिले।

स. ४१-धनी का मिलावा किसने और कहाँ पहुँचने के बाद देखा?

ज. ४१- प्रियतम धनी श्री राजजी का मिलावा हुकम के स्वरूप-तृतीय →

स. ४२-मारफती क्षेत्र कौनसा है और तृतीय श्याम स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब ने मारफती दर्जे की साक्षी के रूप में क्या-क्या देखा?

ज. ४२- जोए अर्थात् श्री यमुनाजी के पूर्व-हकीकत के क्षेत्र के उस पार- →

स. ४३-लैल तुल कद्र के दो तकरार कौन-कौनसे हैं, जिनमें रूहें और फरिश्ते उतरे? पुनः रूहें और फरिश्ते कौन-कौन हैं?

स. ४४-हुकम के स्वरूप ने रूहों और फरिश्तों के विषय में कोई भविष्यवाणी की या नहीं? यदि की, तो क्या?

ज. ४४- हुकम के स्वरूप, तृतीय श्याम स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब ने रूहों और फरिश्तों अर्थात् ब्रह्म और ईश्वरी आत्माओं के विषय में भी भविष्य कहा था कि जो रूहें व्रज और रास लीला में थीं, वे ही →

स. ४५-आगम की बातों के विषय में तृतीय श्याम स्वरूप श्री मुहम्मद ने क्या-क्या कहा था?

ज. ४५- आगम की बातों के विषय में तृतीय श्याम स्वरूप श्री मुहम्मद ने कहा था, "मेरे अर्श लौट जाने के बाद मेरी जमात ७३ फिरकों में विभक्त हो जायगी, जिनमें से मात्र एक फिरका नाज़ी होगा, शेष बहत्तर फिरके नारी होंगे। अन्त में कयामत के समय जब →

→ श्याम स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब ने लाहूत अर्थात् अक्षरातीत रंगमहल के अंदर स्थित हाहूत अर्थात् मूल मिलावे में पहुँचने के बाद देखा।

→ पश्चिम के क्षेत्र को मारफती क्षेत्र कहा जाता है। बसरी अर्थात् तृतीय श्याम स्वरूप ने जबराईल को छोड़कर रफ-रफ के तख्त पर सवार होकर लाहूत के अंदर स्थित हाहूत में जाते समय मार्ग में मारफती दर्जे की साक्षी के रूप में जमुना जरी, सातों बाग, कौल कोसर तथा बाग के अन्दर स्थित जानवरों एवं अर्श अजीम आदि पक्षों को देखा।

ज. ४३- लैल तुल कद्र के दो तकरार हूद तूफान और नूह तूफान हैं, जिसे ब्रज और रास लीला कहते हैं। रूहें ब्रह्मात्मओं को तथा फरिश्ते ईश्वरी आत्माओं को कहते हैं, जो उक्त दोनों तकरारों में अर्श से खेल देखने उतरी हैं।

→ पुनः खेल में आयेंगी। उन्हें हकीकत और मारफती ज्ञान का सदुपदेश देने के लिए स्वयं खुदा आयेंगे और स्वयं खुदा इमाम मेहदी का रूप लेकर उन आत्माओं के लिए हकीकत और मारफत के गुह्य भेद खोलेंगे। इन्हीं रूहों के हाथ में खुदा ने आम जनता को गति-मुक्ति देने की जिम्मेदारी सौंपी है।

→ अर्श की रूहें और फरिश्ते इमाम के पैगाम द्वारा कयामत की बातें लेकर आयेंगे, तब इन ७२ नारी फिरकों के लोग उन रूहों और फरिश्तों को दुःख-कष्ट पहुँचाकर बहुत सतायेंगे। किंतु तब भी ये रूहें और फरिश्ते इमाम का संदेशा उन तक पहुँचाकर अपना वादा पूरा करके ही छोड़ेंगे। ये रूहें और फरिश्ते इमाम के पैगाम का प्रचार-प्रसार करने में अपने जान की बाजी लगाकर धर्म पालन करने के लिए न्यौछावर होने में कमी नहीं करेंगे।"

स. ४६-किसकी सेवा और बंदगी को उत्तमातिउत्तम कहा है? उनके द्वारा की गई सेवा और बंदगी कहाँ अथवा किस तक पहुँचती है?

ज. ४६- संसार के बीच में रूहों और फरिश्तों में से भी रूहों अर्थात् अर्श के ब्रह्मात्माओं की सेवा और बंदगी को उत्तमातिउत्तम कहा गया है। →

स. ४७-सुन्नत (जितेन्द्रिय) जमात किसे कहा है? उनके दर्शन करनेवालों के विषय में क्या कहा है?

ज. ४७- सुन्नत (जितेन्द्रिय) जमात नूर परे नूर तजल्लाह अथवा अक्षर →

स. ४८-दर्शन करनेवालों की सिफ़त इस हद की जिह्वा द्वारा नहीं बन पाती, तो दर्शन देनेवालों की सिफ़त के विषय में क्या मान्यता है, स्पष्ट करो?

ज. ४८- दर्शन देनेवाली ब्रह्मात्माएँ ब्रह्म का अभिन्न अंग होने के कारण →

स. ४९-दर्शन देनेवाले जमात की सिफ़त इस संसार के बीच किस-किस ने गायी है और क्या-क्या आस रखी है?

ज. ४९- आर्य पक्ष में देखें, तो इन दर्शन देनेवाली आत्माओं की सिफ़त वेदों से लेकर वेदान्त और श्रीमद्भागवत तक के सभी ग्रन्थों में कही है। उधर अनार्य पक्ष में देखें, तो मुसलमानों के मूल धर्मग्रंथ →

स. ५०-कौन सुन्नत जमात अर्थात् अक्षरातीत ब्रह्मधाम की ब्रह्मात्माओं को अपने इष्ट के रूप में चित्त में धारण करके उनकी सेवा करते हैं?

ज. ५०- उक्त जवाब में वर्णित समस्त देवी-देवताओं सहित संसार के अन्दर →

→ उन रूहों की लीलाओं, उनके धाम और उनके सम्बन्ध आदि को भी अन्य सृष्टियों की तुलना में सर्वभावेन उत्तम माना गया है। उनके द्वारा की गई सेवा अर्श मूल मिलावे में स्थित खुदा के पास पहुँचती है। खुदा की नजर में उत्तम साबित होनेवाली सेवा, भाव, भक्ति वे मोमिन रूहें-ब्रह्मात्माएँ ही कर सकती हैं। उनके जैसी सेवा, भाव, भक्ति संपूर्ण सृष्टि में अन्य कोई कर ही नहीं सकता।

→ परे अक्षरातीत धाम की ब्रह्मात्माओं को कहा है। इन आत्माओं के दर्शन करनेवाले भी अत्यंत बड़भागी कहलाते हैं। परब्रह्म परमात्मा के साथ रहनेवाली इन ब्रह्मात्माओं के साथ रहने और उनसे बातें करनेवालों की भी सिफ़त इस नश्वर जिह्वा द्वारा नहीं हो पाती, तो इन ब्रह्मात्माओं की तो बात ही क्या?

→ उनका महत्त्व भी ब्रह्म के समान ही है। सद्ग्रन्थ कुरान घोषणा करता है कि *"खुदा और बंदे में, जरा नहीं तफावत"*, तो वेद चिल्ला-चिल्ला कर कहता है कि *"ब्रह्मसृष्टि कही वेद ने, ब्रह्म जैसी तदोगत"* अर्थात् जिस प्रकार प्रेम और ब्रह्म एक हैं, उसी प्रकार ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि भी एक ही हैं।

→ कुरान शरीफ़ से लेकर चौदहों हदीसों में उनकी बड़ी-बड़ाई, गुणगान और बखान मिलता है। पुनः सृष्टि के बड़े-बड़ों में देखा जाय, तो क्षर पुरुष के क्षेत्र के शुक, व्यास सहित इन्द्रादि देवों से लेकर त्रिदेवा, नारायण, महाविष्णु से भी परे कूटस्थ अक्षर तक के क्षेत्र के देवी-देवता इन आत्माओं के दर्शन-पर्शन के लिए तड़पते हैं और उनके चरणों की आस रखते हैं।

→ आत्मा और परमात्मा में आस्था रखनेवाली सभी आस्तिक जीवात्माएँ भी इन ब्रह्मात्माओं को अपने इष्ट के रूप में चित्त में धारण करके प्रेमपूर्वक श्रद्धा, भाव और भक्ति से इनकी आराधना करती हैं।

स. ५१-"कुछ कहने की जगह ही नहीं रही"-ऐसा किसके विषय में कहा गया है? पुनः अब किसकी सिफ़त शेष रही?

ज. ५१- सुन्नत जमात अथवा ब्रह्मसृष्टियों के सेवा-भाव, श्रद्धा, विश्वास, →

स. ५२-किसके एक पल में इस संसार जैसे असंख्य ब्रह्माण्ड त्रिगुण सहित लय हो जाते हैं और उनका स्थान कहाँ है?

स. ५३-कूटस्थ अक्षर ब्रह्म कैसे सामर्थ्यशाली हैं और वे किसके दर्शन की कामना करते हैं?

ज. ५३- उक्त वर्णित कूटस्थ अक्षर ब्रह्म ऐसे सामर्थ्यशाली हैं कि उनके पलक झपकते ही क्षर पुरुष की नारायणी सृष्टि के अन्तर्गत →

स. ५४-ब्रह्मात्माओं की सिफ़त का वर्णन किन-किन धर्मों के सद्ग्रन्थों में और कहाँ मिलता है?

ज. ५४- ब्रह्मात्माओं के महत्त्व की सिफ़त का वर्णन दोनों धर्मों-हिन्दू →

स. ५५-किसकी सिफ़त के फर्दाए रोज कयामत में जाहिर होने के विषय में भविष्य कहा है?

ज. ५५- रूहों और फरिश्तों अथवा ब्रह्म और ईश्वरी आत्माओं की →

स. ५६-परम दिव्य ज्योतिर्मय श्री राजजी की आज्ञा और तेज के स्वरूप कौन हैं, जो दैनिक अपने इष्ट स्वरूप नूर जमाल के दर्शन के लिए जाते हैं? यह बात कहाँ मिलती है?

→ प्रेम और परमार्थता के महत्त्व को जानने एवं माननेवालों के विषय में *"कुछ भी कहने की जगह ही नहीं रही"* - ऐसा कहा गया है। अब धाम की बातों और वहाँ की लीला के महत्त्व की सिफ़त शेष रही, जिसकी बात तो अलग ही है।

ज. ५२- सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर ब्रह्म के एक पल में इस संसार जैसे असंख्य चौदह लोकरूपी ब्रह्माण्ड त्रिगुण सहित उत्पन्न होकर लय हो जाते हैं। उक्त सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर ब्रह्म का स्थान हद-नारायणी सृष्टि से परे स्थित अविनाशी बेहद स्थान से भी परे है।

→ आनेवाली सृष्टि की पाँच महान् विभूतियाँ भी जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शिव, नारायण और महाविष्णु भी नष्ट हो जाते हैं। ऐसे सामर्थ्यशाली अविनाशी अक्षर ब्रह्म भी दैनिक अक्षरातीत धाम के इन मोमिन-ब्रह्मात्माओं के दर्शन के लिए जाते हैं। वह भी नसीब में नहीं था। धनी की मेहेर से आज के दिन नसीब खुला, तो दर्शन प्राप्त हुए।

→ और मुसलिम के सद्ग्रन्थों जैसे वेद, पुराण, उपनिषद्, कतेब आदि में मिलता है। उक्त वर्णन श्रीमद्भागवत के एकादश स्कन्ध में भी है। विशेषकर अत्यधिक रूपेण यह वर्णन माहेश्वर तंत्र सहित शिव पुराण, सदाशिव और पुराण संहिता सहित कुरान के चौदहों हदीसों आदि ग्रन्थों में मिलता है।

→ सिफ़त,उनका मान-सम्मान तथा नाम और यश फर्दाए रोज कयामत के दिन जाहिर होगा, ऐसा भविष्य तृतीय श्याम स्वरूप ने कुरान में लिखा है।

ज. ५६- परमातिपरम, दिव्यातिदिव्य ज्योतिर्मय स्वरूप श्री राजजी की आज्ञा (हुकम)और तेज के स्वरूप हैं-कूटस्थ अक्षर ब्रह्म, जो नित्य प्रति सुबह नौ बजे अपने इष्ट अक्षरातीत नूर जमाल के दर्शनार्थ परमधाम में आते हैं और दर्शन कर अपने धाम में लौट जाते हैं। ये बातें पुराण संहिता, सदाशिव संहिता तथा माहेश्वर तन्त्र में मिलती हैं।

स. ५७-ऐसे असंख्य चौदह लोक कहाँ बनते और मिटते हैं? पुनः वह स्थान कहाँ है, जिनकी सीमा में यह जबराईल प्रवेश तक नहीं कर सका?

ज. ५७- *"हद के पार बेहद है, बेहद पार अक्षर"* अतः अक्षर धाम में रहनेवाले अक्षर ब्रह्म कूटस्थ-अविनाशी हैं। ये अक्षर ब्रह्म ही →

स. ५८-हक के अत्यंत महबूब अर्थात् अत्यंत लाड़ले स्वरूप कौन हैं, जो रसूल बनकर संसार में आये थे और क्यों?

ज. ५८- *"अक्षरात्परतः परः"* अर्थात् अक्षरातीत ब्रह्मधाम में रहनेवाले →

स. ५९-रब की रब्बानी जमात किसे कहा है, जिनके दाने (इश्क मुराही) का प्रबन्ध स्वयं खुदा ने ही कर दिया, जिनकी स्वयं खुदा भूरी-भूरी प्रशंसा करते हैं?

ज. ५९- रब (परमात्मा) की रब्बानी जमात वे द्वादश सहस्त्र मोमिन-ब्रह्मसृष्टियाँ हैं, जिनके आत्मीय खुराकरूपी दाने अर्थात् तारतम →

स. ६०-जो रूहें सदा अपने धनी की सेवा-बंदगी के लिए धनी के नजदीक ही रहती हैं और जिन्हें खुदा का दोस्त कहा गया है, वे कौन हैं?

स. ६१-किन आत्माओं की बीतक (जीवन-लीला) संसार की समस्त आत्माओं को आनन्द प्रदान करनेवाली सिद्ध होगी?

ज. ६१- नूर परे नूर तजल्लाह में रहनेवाली मोमिन रूहों-ब्रह्मात्माओं द्वारा →

➞ वास्तव में सृष्टिकर्ता हैं। असंख्य चौदह लोकरूपी ब्रह्माण्ड इनके पलक झपकने मात्र से उनके मन अर्थात् सत्स्वरूप के महाकारण में बनते और मिटते हैं। अक्षर धाम से परे अक्षरातीत हक-परमात्मा श्री राजजी का अक्षरातीत धाम-पचीस पक्ष का क्षेत्र है। अक्षर धाम और परमधाम के मध्य में श्री यमुनाजी प्रवहमान् हैं। अतः जबराईल-अक्षर का जोश श्री यमुनाजी पार कर ब्रह्मधाम की सीमा तक भी नहीं पहुँच सका।

➞ हक-खुदा के प्रशंसनीय हजरत मुहम्मद साहेब अर्थात् तृतीय श्याम स्वरूप अधिकाधिक महबूब, प्रिय और लाड़ले हैं। ये स्वरूप ही इस कलिकाल में सर्वप्रथम अक्षरातीत की साक्षियाँ लेकर रसूल के रूप में आये थे। वे साक्षियाँ उन्होंने कुरान ग्रन्थ में रखी हैं।

➞ ज्ञानरूपी मारफती हरफ के प्रेमरूपी शराब की सुराही का प्रबन्ध स्वयं खुदा ने उनके खेल में उतरने से हजार साल पूर्व ही कर दिया था, जिसके विषय में उन्होंने मुहम्मद साहेब से कहा था, *"तीस हजार मारफती हरफ मैं स्वयं आकर खोलूँगा।"* इन्हीं रूहों की भूरी-भूरी प्रशंसा स्वयं खुदा भी करते हैं क्योंकि ये अमूल्य आत्माएँ हैं।

ज. ६०- जो मोमिन रूहें सदैव परब्रह्म स्वरूप इमाम मेहदी की सेवा-बंदगी के लिए उनके हजूर में ही रहती हैं, जिन्हें स्वयं खुदा ने अपना दोस्त कहा है, वे रूहें खुदा की अभिन्न अंगरूपा हैं। इन रूहों को स्वयं खुदा ने माशूक कहा है और स्वयं खुदा इनके आशिक हैं।

➞ ब्रज, रास और जागनी के ब्रह्माण्ड में की हुई लीला अथवा बीतक की महक संसार में जन्म-जन्मान्तर से जलते हुए जीवों के त्रिताप को मिटाकर उन्हें अखण्ड आनन्ददायी सुख प्रदान करनेवाली सिद्ध होगी।

स. ६२-परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के हुकम द्वारा मायावी जीवात्माएँ मोमिनों को याद करें, इस उद्देश्य से क्या किया गया है?

ज. ६२- ब्रज, रास और जागनी के ब्रह्माण्ड में अक्षरातीत ब्रह्मधाम में →

स. ६३-ब्रह्मात्माओं के जीवन-लीला की महक से संसार में क्या होगा?

ज. ६३- अद्वैत ब्रह्म-ख्वुदा सम्बन्धी ब्रह्मात्माओं के लीलाओं की मधुर →

स. ६४-मलकूत (वैकुण्ठ) किसका सिंहासन है? उनके राज्य में किसके मालिक का नाम और लीला जाहिर हुए?

ज. ६४- मलकूत (वैकुण्ठ) अजाजील अर्थात् भगवान विष्णु का सिंहासन →

स. ६५-काला कलियुगरूपी दज्जाल क्या है? उसे निर्मूल करने की शर्त (समय का वादा) किसने और कहाँ की थी? फलस्वरूप ब्रह्मात्माएँ अत्यंत प्रसन्न क्यों हुई?

ज. ६५- चार चाँदरूपी विकारयुक्त नीयत रखनेवाले इंसान ही काले कलियुगरूपी दज्जाल हैं अथवा दुराचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार और अनाचार-ये चार चाँदरूपी विकार जिसकी जिंदगी में लगे →

स. ६६-किस विषय में संसार के बीच बड़ा भारी शोर मच गया? पुनः यह शोर सुनकर चारों ओर से लोग भागे-भागे क्यों आने लगे?

ज. ६६- हरिद्वार में धर्मविजय के दौरान एक अद्वैत परब्रह्म-अक्षरातीत के →

→ रहनेवाली ब्रह्मात्माओं-मोमिन रूहों द्वारा की गई ब्रह्मलीला के मनन-चिन्तन द्वारा मायावी जीव ब्रह्मात्माओं की सिफ़त-बड़ी-बड़ाई और महत्त्व को याद कर सकें, इसलिए उक्त तीनों ब्रह्माण्डों में ब्रह्मलीला रची गयी।

→ सुगन्ध द्वारा विश्व के जीवों के त्रितापरूपी विकार दूर हो जायेंगे। उन आत्माओं द्वारा की गई लीला के शब्द कान में पड़ते ही समस्त मायावी जीवात्माएँ बिना परिश्रम किये ही एकेश्वरवादी बन जायेंगी और एक ही परमात्मा की भक्ति में तल्लीन हो जायेंगी।

→ है। अजाजील फरिश्ते-विष्णु भगवान के राज्य में नूर तजल्लाह में रहनेवाले नूर जलाल-अक्षर ब्रह्म के मालिक नूर जमाल-अक्षरातीत ब्रह्म और ब्रह्मात्माओं का नाम और लीला जाहिर हुए।

→ हैं, वे ही हैं काले कलियुगरूपी दज्जाल। उस कलियुगरूपी काले दज्जाल के निर्मूल होने की शर्त अरबवाले हजरत मुहम्मद साहेब ने 9000 वर्ष पूर्व ही की थी। कही हुई शर्त के अनुसार ही हमारे धनी धाम की सारी बातें लेकर खेल में आये। इस बात का ज्ञान ब्रह्मात्माओं को मारफती ज्ञान द्वारा हुआ। धाम, धामधनी और अपने परिचय से अवगत होकर जागनी के ब्रह्माण्ड की महिमा समझ जाने पर ब्रह्मात्माएँ अत्यधिक आनन्दित हुईं।

→ प्रकट होने की खबर से सारी सृष्टि में बड़ा भारी शोर मच गया। ब्रह्म-परमात्मा स्वरूप के दर्शन के लिए लोग भागते-भागते आने लगे। महामति-इमाम मेहदी स्वरूप ने उनके लिए हकीकत की साक्षी के साथ मारफत के द्वार भी खोल दिए। तब सभी लोगों ने उन्हीं स्वरूप में पूर्णब्रह्म परमात्मा के दर्शन किए।

स. ६७-एक अद्वैत परब्रह्म परमात्मा के प्रकट होने की खबर सुनकर दौड़कर आनेवालों के आगे क्या खोलकर रख दिया गया?

ज. ६७- एक अद्वैत परब्रह्म परमात्मा स्वरूप के दर्शन के लिए दौड़ते-दौड़ते आनेवाले लोगों में से जो हिन्दू थे, उनके लिए महामति →

स. ६८-संदेशवाहक रसूल के पास सर्वप्रथम कौन आये और उन्होंने रसूल के कलेवर (शरीर) के अंदर किसके दर्शन किये?

ज. ६८- एकेश्वरवाद-परमात्मा का संदेश देनेवाले रसूल स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी के पास अक्षरातीत-नूर तजल्लाह की ब्रह्मात्माएँ- →

स. ६९-सर्वप्रथम आनेवाली जमात के पीछे-पीछे आनेवाली दूसरी सफ़ (कतार) कौनसी है? दूसरी सफ़ ने संदेशवाहक रसूल में किसके दर्शन किए?

ज. ६९- सर्वप्रथम आनेवाली जमात के पीछे-पीछे आनेवाली दूसरी सफ़ →

स. ७०-"हैयाती का जो आब"-इस कथन का क्या तात्पर्य है? यह आब किस-किस को पिलाया गया?

ज. ७०- *"हैयाती का जो आब"*-इस कथन का तात्पर्य है अखण्ड में →

स. ७१-तीसरी सफ़ (कतार) कौनसी है और वह किसके पीछे-पीछे आई है?

स. ७२-"खालिक" शब्द का अर्थ क्या है? "खालिक" कौन हैं और उन्होंने तीनों जमात को क्या-क्या प्राप्त करवा दिया?

→ स्वरूप ने वेद, पुराण आदि सद्ग्रन्थों की साक्षी द्वारा अक्षर और अक्षरातीत के दरवाजे खोल दिये । जो मुसलिम थे, उनके लिए कुरान और हदीसों के प्रमाणों द्वारा नूर और नूर तजल्लाह के द्वार खोल दिए तथा इन दोनों जमातों से भिन्न जो वेदान्त पक्ष के लोग थे, उन्हें वेदान्तादि शास्त्रों के माध्यम से एक अद्वैत ब्रह्म कबूल करवा दिया गया।

→ मोमिन आत्माएँ आईं। अक्षरातीत सम्बन्धी आत्माओं ने महामति श्री प्राणनाथजी के कलेवर (शरीर) में ही *"देखे धनी निरधार"* अपने धामधनी स्वरूप के दर्शन किए और जो नूर तजल्लाह सम्बन्धी आत्माएँ थीं, उन्होंने उन्हीं स्वरूप में हाहूत के जुल्फेकार खुदा स्वरूप के दर्शन किए।

→ (कतार) मलायकी सृष्टि अर्थात् *"रखोपे रूहों कारन"* याने ब्रह्मात्माओं की रक्षार्थ आई हुई ईश्वरी आत्माओं को कहा है। इन अक्षर ब्रह्म-नूर खुदा सम्बन्धी आत्माओं ने उन्हीं स्वरूप में अक्षर ब्रह्म के दर्शन किए, तो नूर अर्श सम्बन्धी आत्माओं ने उन्हीं स्वरूप में जबरूत के सम्राट नूर-खुदा के दर्शन किए।

→ पहुँचानेवाला तारतम ज्ञान। यह अद्वैत प्रेमरूपी जल अक्षरातीत परब्रह्म श्री राजजी ने ब्रह्म और ईश्वरी आत्माओं को तो पिलाया ही, अपितु मायावी जीवों को भी पिलाकर उन्हें भी बहिश्तों में अखण्ड कर दिया।

ज. ७१- तीसरी सफ़ (कतार) है-स्वप्निक मायावी जीवों की, जिन्हें उभय पक्ष के सद्ग्रन्थों में अस्तित्त्वहीन कहा है। ये सफ़ दूसरी सफ़-ईश्वरी आत्माओं के पीछे-पीछे आई है।

ज. ७२- *"खालिक"* शब्द का अर्थ है मालिक। यहाँ सभी के खालिक महामति श्री प्राणनाथजी हैं। उन्होंने तीनों जमात में से सर्वप्रथम जमात-ब्रह्मात्माओं को उनका अक्षरातीत धाम और धामधनी →

→ श्री कृष्णजी अथवा प्राणनाथ प्राप्त करा दिया। दूसरी जमात-ईश्वरी आत्माओं को उनके मूल परात्मा स्वरूप अक्षर ब्रह्म और →

स. ७३-अन्त में तीनों प्रकार की सृष्टियों ने क्या जाना-जानेंगे? कौन-कौनसी सृष्टि कहाँ-कहाँ गयी-जायेंगी तथा अक्षर ब्रह्म का क्या हुआ-होगा?

ज. ७३- अन्त में तीनों प्रकार की सृष्टियों ने अपने-अपने सम्बन्धी सहित →

स. ७४- किसने और कब स्वप्न को याद किया तथा याद करने पर उन्हें क्या-क्या याद आया?

ज. ७४- अक्षर ब्रह्म जब स्वप्न से जाग उठेंगे, तब वे ब्रह्मरात्रि में देखे हुए स्वप्न को याद करेंगे और याद करने पर उन्हें क्रमशः तीनों ब्रह्माण्ड →

स. ७५-"करके याद जो किस्त"- अतः कौन और किसके नसीब को याद करेंगे?

ज. ७५- *"करके याद जो किस्त"*-अर्थात् जब अक्षर ब्रह्म जाग उठेंगे, तब वे स्वप्निक संसार के स्वप्निक नाटक को याद करेंगे। याद करने पर उन्हें क्रमशः तीनों ब्रह्माण्डों में की हुई उन ब्रह्मलीलाओं का स्मरण हो जाएगा, जिन्हें क्रमशः बाल, यौवन और वृद्धावस्था की लीला कहकर पुकारा है। व्रज की लीला बाल लीला है, तो रास के ब्रह्माण्ड में की हुई लीला ब्रह्म के यौवनावस्था की यौवन लीला →

स. ७६-ब्रह्मात्माएँ अंत में कहाँ पहुँची और इस बार वहाँ पहुँचकर वे अत्यंत प्रसन्न क्यों नजर आईं?

ज. ७६- ब्रह्मात्माएँ तो लोक-परलोक की अमूल्य आत्माएँ हैं। उन्हीं के लिए अक्षरातीत अद्वैत परब्रह्म महामति श्री प्राणनाथजी ने →

→ धाम-अक्षर धाम प्राप्त करा दिया तथा तीसरी जमात-जीव आत्माओं के लिए बेहद में आठ प्रकार के मुक्तिस्थानों-बहिश्तों के द्वार खोल दिए।

→ अपनी-अपनी पातशाही अर्थात् अपने-अपने दर्जे को भी जान लिया-जान लेंगे। ब्रह्मसृष्टियाँ और ईश्वरी सृष्टियाँ क्रमशः अक्षरातीत धाम और अक्षर धाम में गयीं-जायेगी। जीव सृष्टियों ने बेहद में आठ प्रकार के मुक्तिस्थान प्राप्त किए-करेगी। अन्त में अक्षर ब्रह्म की नींद उड़ गई-उड़ेगी, वे जाग उठे-उठेंगे और तीनों ब्रह्माण्डों की ब्रह्मलीलाओं को याद कर बड़े खुश होंगे।

→ की ब्रह्मलीलाएँ याद आएँगी। जैसेः- पहली-घोर नीद्रावस्थावाली ब्रज लीला, दूसरी आधी नींद और आधी जागृत अवस्थावाली रास लीला तथा तीसरी पूर्ण जागृत अवस्था में लिये हुए तारतम ज्ञान द्वारा सम्पूर्ण लोक-परलोक का यथावत् ज्ञान प्राप्त करने की जागनी लीला। उक्त लीलाओं को पूर्णरूपेण जानना ही जागृत अवस्था की जागनी लीला है।

→ है। पुनः इस जागनी के ब्रह्माण्ड में अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म द्वारा की हुई लीला को वृद्धावस्था की लीला कहा है। उक्त तीनों प्रकार की लीलाओं का क्रमशः स्मरण करते-करते अक्षर ब्रह्म धन्य-धन्य हो जाएँगे और अपने आपको अत्यंत भाग्यशाली समझते हुए अपने नसीब की सराहना करने लगेंगे। इसी प्रकार तीनों सृष्टियाँ अपने-अपने नसीब के मुताबिक अक्षरातीत धाम, अक्षर धाम और आठ प्रकार के मुक्तिस्थानों के सुखों में पूर्णात्पूर्ण का अनुभव कर सच्चिदानन्दमय आनन्द में ओत-प्रोत हो जायेंगी।

→ सृष्टिकर्ता कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को यह सृष्टिरूपी खेल रचने के लिए प्रेरित किया था। अतः अक्षरातीत धाम की ये अमूल्य, उत्तमातिउत्तम आत्माएँ अंत में जिस मूल ब्रह्मधाम से खेल देखने आई थीं, वहीं पहुँच गईं। वे जो मनोरथ लेकर अपना अखण्ड धाम छोड़कर खेल में आई थीं, वे सम्पूर्ण मनोरथ भी पूर्ण हो →

जाएँगे। इन्हीं मनोरथों के आधार पर खेल में आई इन ब्रह्मात्माओं ने जागनी के ब्रह्माण्ड में अपनी और अपने धनी की पातशाही की अच्छी तरह से पहचान की-करके व आत्म-जागृति कर वे अपने मूल घर लौट गयीं-जायेगी। ये ब्रह्मात्माएँ एक बार पहले →

स. ७७-यह मंगलाचरण किसका मंगलाचरण है? इसे मंगलाचरण क्यों कहा गया है?

ज. ७७- जिस प्रकार इस संसार में वि.सं. १७३५ में हरिद्वार के कुम्भ मेले में अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी की *"भई नई रे नवों खण्डों आरती"* नामक नई आरती हुई थी, उसी प्रकार वि. सं. १७४० में मध्य प्रदेश स्थित पन्ना धाम में पहुँचने पर ब्रह्म स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी की इसी धरती पर एक नई सेवा की शुरूआत के लिए यहाँ यह मंगलाचरण →

स. ७८-महामतिजी ने किसे और क्यों अपनी बीतक देखने को कहा है?

ज. ७८- यह कथन महामति स्वरूप धाम की उन आत्माओं के लिए कह रहे हैं, जो महामति स्वरूप के कार्यकाल में नहीं मिल पायीं। उनके कार्यकाल के दौरान जो आत्माएँ मिलीं, उन्होंने तो अपने धनी, धाम और परात्म स्वरूप को निश्चित कर लिया और वर्तमान में ही अपने धनी की सेवा कर अपने जीवन को कृतकृत्य कर धाम चलीं। उनके पदचिन्हों पर चलकर आनेवाली आत्माओं को सचेत →

स. ७९-"दोनों श्रवणों से सुनने के लिए कहा"-अतः ये दोनों श्रवण किस-किसके हैं और ऐसा क्यों कहा?

ज. ७९- *"दोनों श्रवणों से सुनने के लिए कहा"*-अतः एक श्रवण पञ्चभौतिक शरीर के श्रवण के लिए कहा है और दूसरा श्रवण अन्तर-आत्मा के श्रवण के लिए कहा है। ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि हम सब सर्वप्रथम कोई भी ज्ञान पञ्चभौतिक शरीर के श्रवणों द्वारा सुनते हैं →

→ भी खेल में आई थीं और अपने घर लौट गयी थीं। परन्तु इस वक्त घर लौटते समय वे अत्यंत प्रसन्न दिखाई दीं अथवा देंगी क्योंकि इस बार उन्होंने स्वयं अपने धनी और धाम के विषय के ज्ञान को प्राप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी अथवा छोड़ेंगी।

→ रखा गया है। इस सेवा के प्रतिफल एक साधारण जीव भी जन्म-मरण के चक्कर से हमेशा के लिए छुटकारा पा सकता है। शास्त्रों में कहा है- *"सेवाभावो परमः गहनो योगीनामप्यगम्यः"* अर्थात् निराकार ब्रह्म को साधना सरल है, परंतु *"सेवा-भाव"* को समझना मात्र कठिन ही नहीं असंभव भी है। इसी सेवा के माध्यम से सच्चिदानन्द लक्ष्यवाले अखण्ड सुखस्थानों में मुक्ति प्राप्त हो सकती है। इस सेवा का लक्ष्य श्री अक्षरातीत धाम है क्योंकि यह सेवा अक्षरातीत ब्रह्म की हो रही है।

→ करने के लिए महामति श्री प्राणनाथजी उनसे कह रहे हैं, "हे ब्रह्मात्माओं! धाम की पूर्वज आत्माओं ने इस धरती पर आकर क्या-क्या किया और कैसे-कैसे अपनी-अपनी आत्मा को जगाकर धन्य-धन्य होकर धाम चलीं? यह देखकर जागनी के ब्रह्माण्ड में अपनी मूल इच्छा पूरी कर आप सब भी अपने धाम में लौट सको, इसीलिए मैं यह *"बीतक साहेब"* और *"स्वरूप साहेब"* आप लोगों के लिए छोड़कर जा रहा हूँ क्योंकि ये आपकी अपनी ही बीतक है, जो आपके अपने ही धनी आपके लिए लेकर आए हैं।"

→ और उस पर विचार-विवेक करते हैं। किंतु हम शरीर के श्रवणों द्वारा सुनकर, विचार-विवेक करने के पश्चात् जब उसी ज्ञान को अन्तर-आत्मा के श्रवणों से सुनकर उस पर विचार-विवेक करेंगे, तभी वह ज्ञान आत्मा तक पहुँचेगा। इसीलिए तो कहा है, *"रूह की आँखों देखिये, रूह के कानों सुनिये।"*

- (प्रकरण ६२, सवाल जवाब नं. ७९, कुल सं.४४३७+७९=४५१६)।

❋ अष्ट पहर की सेवा शुरू ❋
❋ प्रथम पहर ❋

स. १ - सुन्दर स्वरूप की सेज कैसी है? उसकी शोभा का वर्णन करो।

स. २ - वह सेज बुनावदार है या लकड़े की पाटयुक्त है?

स. ३ - पलंग पर क्या-क्या बिछाया हुआ है? इस सेज की शोभा का मर्म जाननेवाले कौन हैं?

ज. ३ - उस पलंग पर नरम तलाई अर्थात् गद्दी बिछाई हुई है। उस पर →

स. ४ - पलंग के चारों पायों में क्या बाँधा है और वह कैसा है?

ज. ४ - पलंग के चारों पायों में सेज बंध से बाँधा हुआ है, जिनके ऊपर →

स. ५ - महामति स्वरूप की यहाँ कैसी-किस प्रमाण की सेवा होती है?

ज. ५ - महामति स्वरूप श्री प्राणनाथजी अर्थात् श्री राजजी की यहाँ पन्ना →

स. ६ - पर्दे में क्या चमक रहा है? प्रेमदास और द्वारकादास क्या करते हैं?

ज. ६ - पर्दे में लगी झालरें अधिकाधिक चमचमा रही हैं। सेज की शोभा- →

स. ७ - यह सेवा इनके पहले किस-किसने की थी?

❋ अष्ट पहर सेवा शुरू ❋

❋ प्रथम पहर ❋

ज. १ - सुन्दर, सनकूल, सकोमल स्वरूप की सेज्या अत्यंत सुन्दर एवं मनमोहित कर देनेवाली है। उस सेज की शोभा-सुन्दरता का वर्णन इस नश्वर जिह्वा द्वारा करना असंभव है।

ज. २ - वह सेज लकड़े या लोहे की पट्टीयुक्त नहीं है। वह सेज तो पाँच रंग की पतली पट्टी से बुनी हुई है।

→ पतली नरम रेशमी चादर बिछी हुई है। सिरहाने की ओर गाल मसूरिया अर्थात् मात्र गाल के आकार का तकिया अत्यन्त शोभायमान है। इस सेज की शोभा-सुन्दरता का मर्म परमहंस ब्रह्मसृष्टि-धामस्थ सुन्दरसाथ ही जानते हैं।

→ किनार में रेशम के फुँदने लटक रहे हैं । उन्हें देखने से लगता है मानों पाँचों रंगों की झाँई सूर्यकिरणों के समान चमकती हुई दिखाई दे रही हो।

→ में ऋतु के अनुसार सेवा होती है। चादर और रजाई आदि की सेवा अच्छी प्रकार से ऋतु के अनुकूल की जाती है। सेज के चारों पायों में लाल रंग के चमकते हुए चार डाँड़े लगे हुए हैं। सेज के ऊपर मध्य में छत्र और चन्द्रवा अत्यंत सुन्दररूपेण शोभायमान है।

→ सुन्दरता के लिए प्रयोग में आनेवाली सामग्रियों का तो पार ही नहीं है। धाम की आत्माएँ प्रेमदास और द्वारकादास अंगना भाव से बड़ी सावधानीपूर्वक और बड़े उमंग के साथ धनी श्री प्राणनाथजी की सेज बिछाने की सेवा किया करते हैं।

ज. ७ - स्वामी श्री प्राणनाथजी का पलंग उठाने और बिछाने की सेवा इनके पहले नारायण भाई और हरनन्दन भाई ने की। कुछ दिनों तक यह सेवा नाथा जोशी ने भी की थी।

स. ८ - किनके बाद यही सेवा मथुरा और गंगादास भाई ने की?

स. ९ - सेवा करनेवाले साथ महामति स्वरूप के प्रति कौनसा भाव लेकर सेवा करते हैं?

स. १०-वे चार जन कौन हैं, जो प्रियतम परमात्मा की अर्धांग भाव से सेवा करते हैं?

स. ११-सभी प्रकार की सेवा में जो भाई सदैव तत्पर रहते हैं, उनका नाम क्या है?

स. १२-छबीलदास भाई को किसने और क्या समझकर सेवा प्रदान की है?

ज. १२- छबीलदास भाई श्रीजी को पानी पिलाने की सेवा करते हैं। यह →

स. १३-प्रतिदिन प्रातः कौन और कितने बजे धनी को जल पिलाने की सेवा करते हैं?

स. १४-जल से भरा लोटा श्रीजी की सेवा में प्रस्तुत कौन करते हैं और कब?

स. १५-रोज प्रातः काल श्री प्राणनाथजी के चरण दबाने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

ज. ८ - नारायण भाई और हरनन्दन भाई के बाद पलंग उठाने और बिछाने की सेवा मथुरा और गंगादास भाई ने ध्यान लगाकर की। इस सेवा में उनके साथ परमानन्द भाई भी सम्मिलित हैं।

ज. ९ - सेवा करनेवाले सुन्दरसाथ महामति स्वरूप को साक्षात् धामधनी पूर्णब्रह्म परमात्मा स्वरूप मानकर सेवा करते हैं।

ज. १०- महामति स्वरूप प्रियतम परमात्मा की अर्धांग भाव से सेवा करनेवालों में मथुरा भाई, गंगादास भाई, परमानन्द भाई और श्यामजी भाई हैं।

ज. ११- धामधनी श्रीजी स्वरूप के पास रहकर सदैव उनकी सेवा में तत्पर रहनेवाले भाई का नाम है-मानिक भाई। ये भाई अत्यंत स्नेहपूर्वक सभी प्रकार की सेवा में सबसे आगे रहते हैं।

→ सेवा उनके पहले जमुनाबाई करती थीं। बाद में उन्होंने अपने बेटे छबीलदास को इस सेवा का हकदार एवम् उत्तराधिकारी समझकर वह सेवा उन्हें सौंप दी।

ज. १३- प्रतिदिन प्रातः सवा पाँच बजे स्वामी श्री प्राणनाथजी को जल पिलाने की सेवा छबीलदास भाई करते हैं क्योंकि प्रातः सवा पाँच बजे धनी पलंग से उठकर बैठते हैं।

ज. १४- प्रतिदिन दो घड़ी रात्रि अवशेष रहने पर अथवा सुबह सवा पाँच बजे जल से भरा लोटा श्रीजी साहेब की सेवा में प्रस्तुत करने की सेवा पूरबाई करती हैं।

ज. १५- प्रतिदिन प्रातःकाल के समय श्री प्राणनाथजी के चरण दबाने की सेवा अगरदास और गुलजी भाई करते हैं। उनके साथ कभी-कभी मावजी भाई भी इस सेवा में शामिल रहते हैं।

स. १६-धामधनी के चरण दबाने की सेवा में वे कौन-कौन हैं, जो बहुत रात बाकी रहने पर भी आकर सेवा करते हैं?

ज. १६- प्रातःकाल के समय में धामधनी के चरण दबाने की सेवा में →

स. १७-श्री राजजी कितने बजे पलंग से उठते हैं?

स. १८-अँगीठी में अँगारे भरकर लाने की सेवा कौन करते हैं? कब और क्यों?

स. १९-सुबह रतनबाई आकर श्री राजजी की कौनसी सेवा करती हैं?

स. २०-"तीजी भोम की जो पडसाल, ठौर बडे दरवाजे विसाल"- यह कब गाया जाता है? गाने की सेवा में कौन-कौन शामिल हैं?

स. २१-कौनसी सेवा करके सुन्दरसाथ श्री राजजी को रिझाते हैं?

ज. २१- गाने की सेवा करनेवाले उक्त सुन्दरसाथ प्रतिदिन प्रातः समय →

स. २२-वस्त्र पहनाने की सेवा सर्वप्रथम किसने की, बाद में यह सेवा कौन-कौन करते गये?

स. २३-शीत ऋतु के दौरान कौन और कब-कब अँगीठी में अँगारे भरकर लाने की सेवा करते हैं? पुनः उस अँगारे से भरी हुई अँगीठी द्वारा क्या किया जाता है?

→ रामबाई तत्पर रहती हैं। यह सेवा कुछ दिनों तक खेमदास भाई ने भी की। वे रात्रि के पिछले पहर शेष रहते ही आ जाते हैं और धामधनी के चरण दबाने लगते हैं।

ज. १७- धामधनी श्री राजजी प्रातः अरुणोदय के समय अर्थात् छः बजे पलंग से उठते हैं।

ज. १८- सर्दी के मौसम में प्रातःकाल में दैनिक श्रीजी साहेबजी के हाथ-पाँव गर्म रखने के लिए अँगीठी में अँगारे भरकर ले आने की सेवा बिहारीदास भाई करते हैं। यही उनकी मुख्य सेवा है।

ज. १९- प्रातःकाल श्रीजी साहेबजी के पलंग से उठते ही रतनबाई आ जाती हैं और गर्म जल में रूमाल भिगोकर श्रीजी को देती हैं। श्रीजी साहेबजी उस गर्म रूमाल से अपने नेत्र पोंछते हैं।

ज. २०- *"तीजी भोम की जो पडसाल, ठौर बडे दरवाजे बिसाल"*-यह जब सुबह श्रीजी पलंग पर उठकर बैठते हैं, तब गाया जाता है। इस वक्त गाने की सेवा में ताराबाई, धनजी भाई, कन्नड़ भाई और गंगाराम भाई रहते हैं।

→ में वाणी गाने के लिए उपस्थित रहते हैं। अन्य सुन्दरसाथ गानेवाले साथ के साथ, स्वर में स्वर मिलाकर अपने धामधनी को रिझाया एवं खुश किया करते हैं।

ज. २२- अपने धामधनी श्री प्राणनाथजी को वस्त्र पहनाने की सेवा सर्वप्रथम प्रेमदास भाई ने की। तत्पश्चात् यही सेवा रामचन्द्र तथा नन्दराम भाई ने भी की। अन्त में यह सेवा वल्लभदासजी ने की।

ज. २३- शीत ऋतु के दौरान प्रतिदिन बिहारीदासजी प्रातःकाल और सायंकाल श्री प्राणनाथजी के पहनने के वस्त्रों को गर्म करने के लिए अँगीठी में अँगारे भरकर लाने की सेवा किया करते हैं।

→

→ उनके द्वारा गर्म किए हुए वस्त्र स्वामीजी अपने शरीर पर धारण →

स. २४-चरना क्या है? इसे धनी कहाँ पहनते हैं और कब? पुनः इसके पश्चात् धनी क्या पहनते हैं?

स. २५-चरणों में मोजे पहनाने की सेवा कौन करते हैं? उनके पश्चात् वह सेवा किसने की?

स. २६-श्री राजजी-महामति श्री प्राणनाथजी बूटेदार कुरती कब पहनते हैं?

स. २७-श्रीजी साहेबजी को वस्त्र पहनाते और सिंगार करते समय कौन-कौनसी सेवा, कौन-कौन करते हैं?

ज. २७- श्रीजी साहेबजी का सिंगार करते वक्त प्रेमदास भाई उन्हें वस्त्र →

स. २८-इस वक्त लालबाई कौनसी सेवा करती हैं? उनके साथ इस सेवा में कौन शामिल होते हैं और कब?

स. २९-इस वक्त जब महाराजा छत्रसाल आ पहुँचते हैं, तो वे कौनसी सेवा करते हैं?

स. ३०-सेतखान क्या है? वह कहाँ बना है और धनी श्री महामति स्वरूप वहाँ क्यों जाते हैं?

ज. ३०- सेतखान पैखाने को अथवा उस स्थान को कहा जाता है, जहाँ →

स. ३१-सेतखान की सेवा में कौन-कौन शामिल हैं?

→ किया करते हैं।

ज. २४- चरना, एक रेशमी वस्त्र की पट्टी को कहा जाता है। स्वामीजी सर्वप्रथम इसे सिर पर बाँधने के पश्चात् ही उसके ऊपर गोटा और कनढपी पहनते हैं।

ज. २५- महामति स्वरूप को चरणों में मोजे पहनाने की सेवा पहले प्रेमदास भाई ने प्रेमपूर्वक की। तत्पश्चात् यही सेवा बड़ी रुचि लेकर वल्लभदासजी करने लगे।

ज. २६- श्री राजजी-महामति श्री प्राणनाथजी बेल-बूटेदार कुरती अपने मन मुताबिक कभी-कभी पहनते हैं। कभी-कभी वे इसके साथ पहाड़ी सफेद रंग का कम्बल भी धारण करते हैं।

→ पहनाते हैं। उनके साथ-साथ वस्त्र पहनाने की सेवा में नन्दराम भाई सम्मिलित रहते हैं। पुनः श्रीजी के कुरती की कस बाँधने की सेवा तो स्वामी श्री लालदासजी की है।

ज. २८- लालबाई इस समय लालदासजी के साथ कुरती की कस बाँधने की सेवा में शामिल रहती हैं। उनके साथ इस सेवा में मकरन्ददास तब शामिल होते हैं, जब लालदासजी वहाँ उपस्थित नहीं रहते हैं।

ज. २९- इस वक्त जब महाराजा छत्रसाल आ पहुँचते हैं, तो वे श्रीजी साहेबजी की कुरती की कस बाँधने की सेवा में लालदासजी को सहयोग देने लगते हैं।

→ शौच, नित्यकर्म आदि कार्य किये जाते हैं। यह सेतखान घनश्याम भाई के घर में बना है। वहाँ धनी श्री महामति शौच आदि नित्यक्रिया के लिए जाया करते हैं।

ज. ३१- सेतखान की सेवा में घनश्याम और हरवंश भाई शामिल हैं।

स. ३२-हरवंश भाई का घर किसके घर के पास में है? हरवंश भाई ने अपने घर में श्रीजी की सेवार्थ क्या व्यवस्था कर रखी है?

स. ३३-धनी श्री प्राणनाथजी को पनही पहनाने और सँभालकर रखने की सेवा किस-किसने की?

ज. ३३- सर्वप्रथम धनी श्री प्राणनाथजी को पनही (खड़ाऊँ) पहनाने की →

स. ३४-श्री महामति स्वरूप ने रीझकर पनही की सेवा किसे दी? वह सेवा कौन करते हैं?

ज. ३४- वल्लभदास भाई की सेवा से रीझकर परब्रह्म स्वरूप महामति →

स. ३५-महामति श्री प्राणनाथजी के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. ३६-लोटे में जल भरकर लाने की सेवा कौन करते हैं? वे कब तक इस सेवा में तत्पर रहते हैं?

स. ३७-श्रीजी के हाथ पोंछने की और मुखवास के लिए लवंग, इलायची आदि हाजिर करने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. ३८-हरवंश भाई और देवकीबाई का घर कहाँ है और वे दोनों कौनसी सेवा करते हैं?

ज. ३२- हरवंश भाई का घर घनश्याम भाई के घर के पास में ही है। उन्होंने अपने घर में श्रीजी की सेवार्थ सेतखान की व्यवस्था कर रखी है।

→ और जरूरत न होने पर सँभालकर रखने की सेवा नारायणदास ने की थी। यह सेवा कुछ दिनों तक मोहन भाई द्वारा भी हुई। मोहन भाई के पश्चात् यही सेवा खिमाई भाई ने की।

→ श्री प्राणनाथजी ने पनही पहनाने की सेवा वल्लभदास भाई को दे दी। कुछ दिनों तक इस सेवा में खिमाई भाई भी शामिल रहे। परन्तु उनके उपरान्त पनही पहनाने की सेवा पुनः वल्लभदासजी के ही पास आ गई।

ज. ३५- महामति श्री प्राणनाथजी के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा बकाई और किसनी ने की।

ज. ३६- महामति श्री प्राणनाथजी के लिए लोटे में जल भरकर लाने की सेवा करनेवाले भाई का नाम है शिवराम भाई। ये भाई दोनों समय-सुबह और शाम इस सेवा में तत्पर रहते हैं।

ज. ३७- श्रीजी के हाथ पोंछने के लिए रूमाल तथा मुखवास के लिए लवंग, इलायची आदि मसाले के डब्बों को श्रीजी की सेवा में हाजिर करने की सेवा बारी-बारी से लालबाई और दयालीबाई करती हैं।

ज. ३८- हरवंश भाई और देवकीबाई का घर एक पलास के वृक्ष के नीचे है। ये दोनों प्रातःकाल श्रीजी के साथ आनेवाले सुन्दरसाथ के लिए गर्म जल भरकर रखने की सेवा करते हैं।

स. ३९-शीत ऋतु में हरवंश भाई और देवकीबाई साथियों के लिए कौनसी सेवा करते हैं?

ज. ३९- शीत ऋतु में हरवंश भाई और देवकीबाई समस्त साथ के लिए →

स. ४०-गुल मुहम्मद और दौलत खाँ भाई ने कुछ दिनों तक कौनसी सेवा की ?

स. ४१-सूरजमुखी क्या है और क्यों लिया जाता है? सूरजमुखी लेकर चलने की सेवा कौन करते हैं?

ज. ४१- सूरजमुखी एक तरह का पंखा है, जिसे सूर्य की किरणों को रोकने →

स. ४२-अमोलाबाई और प्रभावतीबाई कौनसी सेवा करती हैं और कब तक?

स. ४३-श्री प्राणनाथजी जब चलते हैं, तो उनकी दोनों ओर कौन-कौन रहते हैं और वे क्या करते हैं?

स. ४४-चलते समय महामति स्वरूप के सिर पर छत्र लगाने की सेवा किसकी है?

स. ४५-हरवंश भाई के घर से लौटते समय महामति स्वरूप के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा कौन करते हैं ?

स. ४६-हिम्मत भाई किससे माँगकर, कौनसी सेवा करते हैं?

→ बड़े-बड़े मटके भरकर गर्म जल की व्यवस्था कर देते हैं। इतना ही नहीं ये दोनों सभी सुन्दरसाथ के लिए गर्म जल, झारी और दातौन भी पहले से ही लाकर रख देते हैं।

ज. ४०- शीत ऋतु के समय में सुन्दरसाथ के लिए बड़े-बड़े घड़ों में गर्म जल भरकर व्यवस्थित रखने की सेवा कुछ दिनों तक गुल मुहम्मद और दौलत खाँ भाई ने भी की।

→ के लिए प्रयोग में लिया जाता है। हरवंश भाई के घर जाते और आते समय सूर्य की किरणें धनी के मुख पर न पड़ें, इसलिए सूरजमुखी का प्रयोग किया जाता है। सूरजमुखी लेकर श्रीजी के पीछे-पीछे चलने की सेवा बदले भाई करते हैं।

ज. ४२- श्रीजी के ऊपर प्रातःकाल चँवर डुलाने की सेवा अमोलाबाई और प्रभावतीबाई करती हैं। ये दोनों तब तक चँवर डुलाती रहती हैं, जब तक कि केशवदास भाई नहीं आ जाते।

ज. ४३- श्री प्राणनाथजी जब चलते हैं, तो उनकी दोनों ओर केशवदास और शंकर हजूरी हाथ में चँवर लेकर डुलाते हुए चलते हैं।

ज. ४४- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप के चलते समय उनके सिर पर छत्र लेकर पीछे-पीछे चलने की सेवा वल्लभदास भाई की है।

ज. ४५- हरवंश भाई के घर से वापस लौटते समय महामति स्वरूप के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा धनबाई और घनश्याम भाई करते हैं।

ज. ४६- हिम्मत भाई ने हिम्मत करके लालबाई से पाँवड़ा बिछाने का सेवा-कार्य माँग लिया और वे स्वयं नित्य प्रति यह सेवा करने लगे।

स. ४७-श्रीजी स्वरूप के हाथ पकड़कर उन्हें कुर्सी या पलंग पर बैठाने की सेवा कौन करते हैं और क्यों?

स. ४८-श्रीजी के चरण धुलाने के पश्चात् कौनसी सेवा की जाती है?

ज. ४८- श्रीजी स्वरूप को कुर्सी या पलंग पर बैठाकर उनके चरण धुलाने →

स. ४९-श्री राजजी स्नान करने के बाद पुनः क्या करते हैं?

स. ५०-धनी श्री प्राणनाथजी चितवनि के दौरान सुन्दरसाथ को किस बात का अनुभव कराते हैं?

स.५१-चितवनि से निवृत्त होने के पश्चात् धनी क्या करते हैं?

स. ५२-धनी जब कभी-कभी अनिश्चित काल दाँत साफ करने के लिए पलंग पर बैठते हैं, तब उस समय वहाँ सेवा में कौन-कौन रहते हैं?

स. ५३-उस समय महामति स्वरूप के लिए दातौन लेकर आने की सेवा कौन करते हैं और वे कैसा दातौन लाते हैं?

स. ५४-सर्दी के मौसम में प्रतिदिन गर्म और ठण्डा जल मिलाकर व्यवस्थित करने की सेवा कौन करते हैं?

स. ५५-चिलमची कौन लेकर बैठते हैं? हाथ धुलाने के पश्चात् चरणामृत बाँटने की सेवा कौन करते हैं?

ज. ४७- श्रीजी स्वरूप के हाथ पकड़कर उन्हें कुर्सी या पलंग पर बैठाने की सेवा धनबाई और रामकुँवर भाई करते हैं क्योंकि अब चरण धोने का वक्त हुआ है।

→ के पश्चात् तख्त से नीचे उतरकर श्री धनीजी अपने वस्त्र उतारते हैं। तत्पश्चात् उन्हें चन्दन की चौकी पर बैठाकर सुगन्धित तेल और अतर आदि से उनके शरीर की मालिश की जाती है।

ज. ४९- श्री राजजी-महामति श्री प्राणनाथजी स्नान करने के बाद सुगन्धित चन्दन का तिलक अपने मस्तक पर लगाते हैं।

ज. ५०- धनी श्री प्राणनाथजी चितवनि द्वारा समस्त सुन्दरसाथ को परमधाम का अनुभव कराते हैं।

ज. ५१- चितवनि से निवृत्त होकर महामति स्वरूप दोनों चरण पलंग पर रखकर कुछ समय के लिए लेट जाते हैं।

ज. ५२- धनी जब कभी-कभी दन्तधावन के लिए पलंग पर बैठते हैं, तब उस समय दन्तधावन की सामग्रियाँ तथा रूमालादि लेकर नारायणदास और केशवदास भाई-ये दोनों जन सेवा में तत्पर रहते हैं।

ज. ५३- उस समय महामति स्वरूप के लिए सोने से मढ़ा हुआ दातौन लेकर छबीलदास भाई बड़ी सावधानी से सेवा में हाजिर रहते हैं।

ज. ५४- सर्दी के मौसम में प्रतिदिन गर्म और ठण्डा जल मिलाकर व्यवस्थित करने की सेवा करनेवाले भाई का नाम है-छबीलदास भाई ।

ज. ५५- चिलमची हाथ में लेकर नन्दराम भाई बैठते हैं। श्रीजी स्वरूप के हाथ धुलाकर चरणामृत बाँटने की सेवा शंकर भाई करते हैं।

स. ५६-नूर मुहम्मद श्री राजजी के लिए कौनसी सेवा करते हैं, जिसे बाद में उन्होंने गुल मुहम्मद को दे दी?

स. ५७-रूपाबाई से रीझकर श्री राजजी ने उन्हें कौनसी सेवा प्रदान की?

स. ५८-छबीलदास और पाँखड़ी भाई-दोनों मिलकर विभिन्न सेवाओं में से कौनसी सेवा द्वारा धनी को प्रसन्न करते हैं?

स. ५९-इस वक्त मुकुन्ददासजी उपस्थित होकर एकाग्रचित्त द्वारा कौनसी सेवा करते हैं? उनके बाद कनढपी की सेवा कौन करती हैं?

स. ६०-मुकुन्ददासजी किसके ऊपर बाँधने के लिए, पहले से ही अपने पास क्या तैयार रखते हैं?

स. ६१-श्री प्राणनाथजी को पाग बँधवाते समय कौनसा अथवा कहाँ का प्रकरण गाया जाता है?

स. ६२-मुकुन्ददासजी के साथ पगड़ी बाँधने की सेवा में कौन सम्मिलित रहते हैं और वे क्या करते हैं?

स. ६३-पगड़ी बाँधते समय श्रीजी साहेबजी को दर्पण दिखाने की सेवा कौन करते हैं?

ज. ५६- श्रीजी स्वरूप के मुख शुद्धि के लिए सुगन्धित मसाला (फुलमा) तैयार करने तथा डब्बे में भरकर लाने की सेवा नूर मुहम्मद करते हैं। यह सेवा बाद में उन्होंने गुल मुहम्मद को दे दी।

ज. ५७- रूपाबाई से रीझकर श्री राजजी ने उन्हें हरड़े पीसने और समय-समय पर जरूरत के अनुसार खिलाने की सेवा प्रदान की। रूपाबाई प्रतिदिन उसी सेवा में संलग्न रहती हैं।

ज. ५८- श्री प्राणनाथजी स्वरूप को दिन-रात विभिन्न सेवाओं द्वारा प्रसन्न रखते हुए छबीलदास भाई और पाँखड़ी भाई उनके लिए अमल कहवा (काढ़ा) लाने की सेवा भी करते हैं तथा तरह-तरह की रुचिकर बातों द्वारा धनी को प्रसन्न किया करते हैं।

ज. ५९- इस वक्त मुकुन्ददासजी उपस्थित होकर बड़ी चतुराई से एकाग्रचित्त होकर श्रीजी साहेबजी के सिर पर पगड़ी बाँधने अथवा बँधवाने की सेवा करते हैं। उस पगड़ी पर कनढपी बाँधने की सेवा गोदावरी बाई करती हैं।

ज. ६०- मुकुन्ददासजी तुर्रा के ऊपर बाँधने के लिए पहले से ही पंखों की कलँगी बनाकर अपने पास तैयार रखते हैं। कलँगी के ऊपर लटकता हुआ तुर्रा विशेष शोभा से शोभायमान दिखाई देता है।

ज. ६१- महामति श्री प्राणनाथजी को पाग बँधवाते समय श्री सागर ग्रन्थ में स्थित *"सिर पाग बांधी चतुराईसों, हकें पेच हाथ में ले"* -यह प्रकरण गाया जाता है।

ज. ६२- पगड़ी बाँधते समय मुकुन्ददासजी के साथ दूसरे मुकुन्ददास भाई भी सम्मिलित रहते हैं। वे मुकुन्ददासजी को मदद करने के लिए पगड़ी का एक छोर पकड़कर खड़े रहते हैं।

ज. ६३- पगड़ी बाँधते समय श्रीजी साहेबजी के सन्मुख अगरदास भाई हाथ में दर्पण लेकर बड़ी सावधानी से दर्पण दिखाने की सेवा करते हैं।

स. ६४-अगरदास भाई के साथ दर्पण की सेवा में अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

स. ६५-नित्य प्रति जब पेंच मिलाकर श्रीजी की पगड़ी बाँधने की सेवा की जाती है, तब उस समय दर्पण लाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ६६-श्री प्राणनाथजी के लिए तिलक लाने और रखने की सेवा कौन करते हैं? उनके बाद वह सेवा किसने की?

स. ६७-पगड़ी में किस स्थान पर अत्यधिक प्रकाशयुक्त हीरे विद्यमान हैं? किस स्थान से प्रकाश की किरणें उठती हुई दिखाई देती हैं?

स. ६८-ऊका भाई कलँगी लेकर कब आते हैं और उनकी कौनसी सेवा विशेष रहती है?

ज. ६८- महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप जब पगड़ी बाँधकर सिंहासन →

स. ६९-फूलों की टोकरी भरकर श्री प्राणनाथजी के पास लाने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. ७०-ललिताबाई कौन हैं अथवा किसकी लड़की हैं? उनकी सेवा क्या है?

ज. ७०- ललिताबाई मेरता के सुन्दरसाथ राजाराम भाई की लड़की हैं, →

स. ७१-मयाराम भाई की सेवा झोली रखने की है। अतः वह झोली कैसी है और उसमें क्या-क्या वस्तुएँ रखी जाती हैं?

ज. ६४- अगरदास भाई के साथ दर्पण की सेवा में सीताराम, गुल मुहम्मद और बंशीदास भाई भी सम्मिलित रहते हैं।

ज. ६५- नित्य प्रति जब पेंच मिलाकर श्रीजी की पगड़ी बाँधने की सेवा की जाती है, तब उस समय विशेषरूप से अगरदास भाई मन लगाकर दर्पण लेकर हाजिर हो जाते हैं।

ज. ६६- श्री प्राणनाथजी स्वरूप के लिए तिलक लाने और रखने की सेवा कुछ दिनों तक उद्धवदास भाई ने की । उनके बाद वही सेवा छबीलदास भाई करने लगे।

ज. ६७- महामति स्वरूप द्वारा पहनी हुई पगड़ी की किनार में लटकती चन्द्रिका के नीचे के कोर में जड़े हुए हीरे अत्यधिक प्रकाशयुक्त विद्यमान हैं। पाग के चारों ओर लटकती हुई मोतियों की लड़ियों से प्रकाश की किरणें उठती हुई दिखाई देती हैं।

→ पर विराजमान होते हैं, तब ऊका भाई कलँगी लेकर आते हैं। यह कलँगी वे स्वयं अपने हाथों से प्रेमपूर्वक तैयार करते हैं। यही सेवा उनकी मनपसंद और विशेष सेवा है।

ज. ६९- धरमाबाई और रामदास भाई फूल मालाएँ बनाते हैं और उन्हें टोकरी में भरकर श्रीजी स्वरूप के पास लाने की सेवा करते हैं।

→ जो कुब्जा (कुबड़ी) है। उनके ऊपर श्री राजजी की बड़ी मेहेर है। जब-जब और जहाँ-जहाँ श्री राजजी स्वरूप बैठते अथवा उठते हैं, तब-तब और वहाँ-वहाँ *"खम्मा-खम्मा"* का जयघोष करना ही ललिताबाई की सेवा है।

ज. ७१- मयाराम भाई की झोली विभिन्न रंगों के वस्त्रों के टुकड़ों से बनी हुई है, जिसमें वे संन्यास वेश की सम्पूर्ण सामग्रियाँ जैसे मालाएँ, चिप्पी, चन्दन की छोटी-बड़ी मालाएँ, धागा, कोकड़ी और →

→ नारियल के पात्र में छोटी-बड़ी सुइयों सहित अजवायन, सोंठ, →

स. ७२-मयाराम भाई उक्त झोली द्वारा किस प्रकार श्रीजी की सेवा करते हैं?

स. ७३-श्रीजी साहेबजी को जब अन्य किन्हीं भी चीजों की जरूरत पड़ती है, तो वे किसे याद करते हैं?

स. ७४-इस वक्त महाराजा छत्रसाल आकर कौनसी सेवा करते हैं?

स. ७५-श्री बाईज्यूराज इस समय मन में अत्यंत प्रसन्नता लेकर किस सेवार्थ श्रीजी साहेबजी के पास आती हैं? उनके साथ अन्य कौन-कौन आते हैं?

स. ७६-श्रीजी के सिंगार के भूषण लाने की सेवा कौन करता है और श्रीजी को वे भूषण पहनाने की सेवा कौन करता है?

स. ७७-श्रीजी साहेबजी के सिंगार में किन-किन नामवाले आभूषण हैं और वे कैसे हैं?

ज. ७७- श्रीजी साहेबजी के सिंगार में मोतियों की दो मालाएँ, सोने की जंजीरें, नगों से जड़ा हुआ दुगदुगी का हार आदि सुशोभ्य हैं। →

स. ७८-श्री बाईज्यूराज अपने मंदिर (कोठी) से कब आती हैं और वापस कब जाती हैं?

→ पीपर आदि भी रखते हैं। झोली के साथ में मयाराम भाई गोदड़ी भी रखते हैं।

ज. ७२- मयाराम भाई श्री राजजी की आज्ञा पाते ही उक्त झोली में से इच्छित वस्तु निकालकर श्री राजजी के आगे समर्पित कर देते हैं।

ज. ७३- श्रीजी साहेबजी को जब अन्य किन्हीं भी चीजों की जरूरत पड़ती है, तो वे तुरंत मयाराम भाई को याद करते हैं।

ज. ७४- इस वक्त जब महाराजा छत्रसाल आ पहुँचते, तो वे श्रीजी स्वरूप को आभूषण पहनाने की सेवा करने लगते हैं। अपने हाथों से उतारकर बदल-बदलकर धनी को पहनाते हैं।

ज. ७५- श्री बाईज्यूराज इस समय मन में अत्यंत प्रसन्नता लेकर श्रीजी के सिंगार के लिए आभूषण लेकर आती हैं। उनके साथ गोदावरीबाई और रुकमनीबाई भी आती हैं।

ज. ७६- श्रीजी साहेबजी के सिंगार के आभूषण चाँदी की थाली में भरकर रूमाल से ढँककर लाने की सेवा श्री बाईज्यूराज की है। परन्तु उन आभूषणों द्वारा श्रीजी का सिंगार करने की सेवा ब्रह्ममुनियोंके सिरदार महाराजा छत्रसाल करते हैं।

→ इसके साथ वे सोने की दोहरी जंजीर, चंपकली तथा नवसर-नौ लड़ों का हार और सबके ऊपर तीन लड़ों की कंठी भी धारण करते हैं। हाथों की अंगुलियों में रत्नजड़ित सुवर्ण की अँगुठियाँ हैं। तीन लड़ों के हार के ऊपर कंठी अत्यधिक शोभायमान है।

ज. ७८- श्रीजी साहेबजी के सिंगार के समय से पहले ही श्री बाईज्यूराज आभूषणादि लेकर आती हैं। आभूषणादि पहनाकर श्री बाईज्यूराज अपने मंदिर (कोठी) वापस लौट जाती हैं।

स. ७९-श्री आईजी बालभोग लेकर कब आती हैं? उसी समय रतनबाई क्या लेकर आती हैं?

स. ८०-श्रीजी साहेबजी जब बालभोग आरोगते हैं, तब अन्य सुन्दरसाथ क्या करते हैं?

स. ८१-बालभोग आरोगते समय कटोरा भरकर जल देने की सेवा कौन करते हैं?

स. ८२-इस समय आशबाई श्री राजजी से क्या अर्ज करती हैं?

स. ८३-रत्नजड़ित खड़ाऊँ लेकर आने की सेवा कौन करते हैं और कब?

स. ८४-मानिक के घर जाते समय श्रीजी के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. ८५-पलंग से उठते समय श्रीजी को सहारा देने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. ८६-पाँवड़े पर चलते समय हाथ पकड़ने की सेवा में कौन-कौन शामिल हैं?

स. ८७-इस वक्त यदि महाराजा छत्रसालजी वहाँ पहुँच जाते हैं, तो वे कौनसी सेवा करते हैं?

ज. ७९- सिंगार के पश्चात् श्री आईजी श्रीजी को बालभोग आरोगाने आती हैं। उसी समय रतनबाई मूँग लेकर पहुँच जाती हैं।

ज. ८०- श्रीजी साहेबजी के बालभोग आरोगने के समय में अन्य अनेकों सुन्दरसाथ भी अपने-अपने घर से अच्छी स्वादिष्ट वस्तुएँ लेकर आते हैं। श्रीजी प्रेमपूर्वक विविध व्यंजन ग्रहण करते हैं।

ज. ८१- बालभोग आरोगते समय बीच में प्रेमानन्द में विभोर छबीलदास भाई कटोरा भरकर जल देने की सेवा करते हैं।

ज. ८२- इस वक्त आशबाई उपस्थित होकर अपने धनी से अर्ज करती हैं, "हे मेरे धामधनी ! अब आप मानिक के घर पधारने की कृपा करें।"

ज. ८३- जब श्री राजजी का कहीं चलने का समय होता है, तब तुरंत वल्लभदास रत्नजड़ित खड़ाऊँ का जोड़ा आगे लाकर रखने की सेवा करते हैं।

ज. ८४- मानिक भाई के घर पधारते समय श्रीजी के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा लालबाई करती हैं। उनके साथ-साथ किसनी भी इस सेवा में प्रेम से हाथ बँटाती हैं।

ज. ८५- पलंग से उठते समय श्रीजी को एक ओर धनबाई और दूसरी ओर लालदासजी हाथ पकड़कर सहारा देते हैं।

ज. ८६- पाँवड़े पर चलते समय श्रीजी एक ओर से गंगादास भाई का हाथ पकड़ते हैं, तो दूसरी ओर से लालदासजी उन्हें सहारा देते हैं।

ज. ८७- इस वक्त यदि महाराजा छत्रसालजी वहाँ पहुँच जाते हैं, तो वे श्रीजी के हाथ पकड़कर उन्हें उठाने की सेवा करने लगते हैं।

स. ८८-लालदासजी के बदले कभी-कभी श्रीजी के हाथ पकड़कर चलने की सेवा कौन करती हैं?

स. ८९-चलते समय रास्ते के बीच राह रोककर श्रीजी को हँसाने की सेवा करनेवाली कौन है? इनकी किस सेवा द्वारा धनी अत्यन्त आनन्दित होते हैं?

स. ९०-लटकती-मटकती अर्थात् मनमोहित कर देनेवाली चाल से चलते समय श्रीजी के साथ अन्य कौन-कौन चलते हैं? उनमें से प्रमुख भाई का नाम क्या है?

स. ९१-मानिक भाई इस समय अपने घर में क्या तैयारी करके रखते हैं?

स. ९२-श्रीजी साहेबजी को सम्मान सहित अपने घर में विराजमान कराने की सेवा का लाभ दैनिक कौन लेता है?

स. ९३-मानिक भाई के घर से लगकर किसका घर है, जहाँ पधारकर श्रीजी साहेबजी सुन्दरसाथ की इच्छा पूरी करते हैं?

स. ९४-जिस-जिस स्थान पर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी पहुँचते हैं, वहाँ पहुँचकर जयघोष लगाने की सेवा कौन करते हैं?

ज. ९४- बड़ा मूलचन्द मोदी हमेशा श्रीजी के साथ-साथ चलते हैं और →

स. ९५-कौन श्रीजी के हाथ पकड़कर उन्हें उठाने और बैठाने की सेवा में सदैव तत्पर रहती हैं?

ज. ८८- लालदासजी के बदले कभी-कभी श्रीजी के हाथ पकड़कर चलने की विशेष सेवा लालबाई भी करती हैं।

ज. ८९- चलते समय रास्ते के बीच आड़ी खड़ी होकर श्रीजी को हँसाने की सेवा करनेवाली हैं-लालबाई। लालबाई की इसी सेवा से श्रीजी अत्यन्त आनन्दित होते हैं।

ज. ९०- लटकती-मटकती अर्थात् मनमोहित कर देनेवाली चाल से चलते समय श्रीजी के साथ वाणी गान करनेवाले सुन्दरसाथ भी चलते हैं। साथ चलनेवालों में शंकरदास प्रमुख हैं।

ज. ९१- मानिक भाई इस समय श्रीजी साहेबजी के आगमन की तैयारी में अपने घर में गादी बिछौने, गादी के ऊपर चन्द्रवा लगाने और तकिया आदि रखने की तैयारी करके रखते हैं।

ज. ९२- श्रीजी साहेबजी को सम्मान सहित अपने घर में विराजमान कराने की सेवा का लाभ दैनिक सुआबाई लिया करती हैं।

ज. ९३- मानिक भाई के घर से लगकर गंगादास भाई का घर है। श्रीजी साहेबजी गंगादास भाई के घर में पधारकर भी सुन्दरसाथ की इच्छापूर्ति करते हैं।

→ जिस-जिस स्थान पर महाप्रभु श्री प्राणनाथजी पहुँचते हैं, वहाँ-वहाँ वे *"धाम धनी की जय"* -इस तरह का जयघोष लगाते चलते हैं।

ज. ९५- गौरबाई श्रीजी के हाथ पकड़कर उन्हें उठाने और बैठाने की सेवा में सदैव तत्पर रहती हैं।

स. ९६- सर्वप्रथम चँवर डुलाने की सेवा करनेवाले भाइयों में कौन-कौन शामिल हैं?

स. ९७- मानिक भाई के घर से वापस लौटते समय श्रीजी स्वरूप के लिए चँवर डुलाने की सेवा में कौन-कौन शामिल हैं?

स. ९८- दूसरी ओर चँवर हाथ में लेकर श्रीजी के साथ कौन चलते हैं? यह रत्नों और नगों से जड़ा हुआ चँवर किसके हाथ में रहता है?

स. ९९- वल्लभदास भाई के साथ अन्य कौन-कौन रहते हैं, जो अपनी सेवा बड़े ध्यान से करते हैं?

स.१००- पूर्ण विश्वास के साथ मेहनत से सेवा करनेवाले भाई कौन हैं?

स.१०१- महामति स्वरूप मानिक भाई के घर से वापस लौटते समय कैसी चाल चलकर आते हैं?

स.१०२- मुरलीधर भाई इस समय सदैव क्यों उपस्थित रहते हैं? बड़े मनोयोग से चर्चा सुननेवाले भाई कौन हैं?

स.१०३- स्वामी श्री प्राणनाथजी जब मानिक भाई के घर से वापस लौटते हैं, तब कितना समय होता है?

स.१०४- श्रीजी साहेबजी किस समय पलंग पर स्थित गादी में विराजमान होते हैं और क्यों?

ज. ९६- श्री प्राणनाथजी स्वरूप के दोनों तरफ चँवर डुलाने की सेवा सर्वप्रथम नन्दरामजी और केशवदासजी करते हैं।

ज. ९७- मानिक भाई के घर से वापस लौटते समय हाथ में चँवर लेकर डुलाने की सेवा गंगाराम भाई और केशवदास भाई करते हैं।

ज. ९८- दूसरी ओर शंकरदास भाई चँवर हाथ में लेकर श्रीजी साहेबजी के साथ चलते हैं। यह रत्नों और नगों से जड़ा हुआ चँवर वल्लभदास भाई के हाथ में रहता है।

ज. ९९- खुशालदास और बख्तावर भाई सदैव वल्लभदास भाई के साथ सेवा में उपस्थित रहते हैं। ये दोनों भाई अपनी सेवा मन लगाकर बड़े ध्यान से करते हैं।

ज.१००- वल्लभदास भाई के साथ मुहम्मद खाँ रहते हैं। वे बहुत ही मेहनत से तथा प्रेमपूर्वक एवं श्रीजी के प्रति दृढ़ निष्ठा और विश्वास लेकर सेवा किया करते हैं।

ज.१०१- श्री महामति स्वरूप मानिक भाई के घर से वापस लौटते समय मन को मोहित कर देनेवाली लटकती-मटकती चाल चलकर आते हैं और आकर पलंग पर विराजमान होते हैं।

ज.१०२- मुरलीधर भाई इस समय सदैव चर्चा सुनने के लिए उपस्थित रहते हैं। बड़े मनोयोग से चर्चा सुननेवाले भाई यही हैं।

ज.१०३- स्वामी श्री प्राणनाथजी जब मानिक भाई के घर से वापस लौटते हैं, तब सुबह के ठीक नौ बजते हैं।

ज.१०४- श्रीजी साहेबजी पलंग पर स्थित गादी में पहर दिन चढ़ते ठीक नौ बजे विराजमान होते हैं क्योंकि निश्चितरूपेण अब चर्चा का समय हुआ है।

स.१०५- सुबह की चर्चा-कथा का निश्चित समय कौनसा है? सुबह कितने बजे से, कितने बजे तक चर्चा होती है?

❀ दूसरा पहर ❀

स. १ - दूसरा पहर कहाँ से, कहाँ तक का है? ऐसे नश्वर संसार में इस प्रकार की लीला का अनुभव करना किसकी दया का प्रतिफल है?

स. २ - पलंग के पास दोनों ओर कौन-कौन बैठते हैं? ये दोनों श्रीजी स्वरूप को कैसे रिझाते हैं?

स. ३ - स्वामी श्री प्राणनाथजी चर्चा के समय कहाँ की, कौन-सी लीला का अनुभव कराते हैं?

स. ४ - ब्रह्मनिष्ठ मोमिन इस नश्वर शरीर द्वारा ही कहाँ के सुखों का अनुभव करते हैं?

स. ५ - धामधनी श्री प्राणनाथजी इस वक्त बड़े प्रेम से किसे बुलवाते हैं और क्यों?

ज. ५ - धामधनी महामति श्री प्राणनाथजी इस वक्त बड़े प्रेम से कहते →

स. ६ - काका बड़े प्रेम से किस सेवा द्वारा श्रीजी साहेबजी को रिझाते हैं?

ज.१०५- प्रतिदिन सुबह के समय चर्चा-कथा का निश्चित समय ठीक नौ बजे है। सुबह ठीक नौ बजे से लेकर सवा ग्यारह बजे तक चर्चा होती है।

-(प्रकरण ६३, सवाल-जवाब नं. १०५, कुल सं.४५१६+१०५ =४६२१)।

❋ दूसरा पहर ❋

ज. १ - दूसरा पहर प्रातः नौ बजे से दिन के बारह बजे तक है। सेवा विषय की लीला का अनुभव परब्रह्म अक्षरातीत धनी की कृपा-दया के प्रतिफल से ही इस धरती पर अवतरित हुआ है।

ज. २ - पलंग के पास एक ओर श्री लालदासजी और दूसरी ओर श्री केशवदासजी बैठते हैं। ये दोनों जन श्रीजी स्वरूप को प्रतिदिन कुरान और हदीसे पढ़कर रिझाया करते हैं।

ज. ३ - धामधनी महामति श्री प्राणनाथजी चर्चा के दौरान श्री परमधाम के पचीस पक्ष के अखण्ड लीला का अनुभव कराते हैं।

ज. ४ - श्री अक्षरातीत धाम की ब्रह्मनिष्ठ आत्माएँ इस नश्वर-क्षणभंगुर शरीर द्वारा ही अद्वैत धाम के सुखों का अनुभव चर्चा के माध्यम से करती हैं।

→ हैं, "अरे! जलदी से जलदी काका को बुलाओ!!" क्योंकि यह समय चर्चा का समय है और चर्चा के पूर्व दोनों ओर रेहलें रखकर उन पर पुस्तकें पधराने तथा अन्य व्यवस्था मिलाने की सेवा काका की ही है।

ज. ६ - चर्चा की सम्पूर्ण सामग्रियों के साथ-साथ पुस्तकों को एक बड़े सन्दूक में पुस्तकालय की भाँति व्यवस्थित रखना ही काका की सेवा है। इसी सेवा द्वारा वे श्रीजी साहेबजी को रिझाते हैं।

स. ७ - काका अपनी थैली में अन्य सामग्रियों के अलावा और क्या रखते हैं? श्रीजी की आज्ञा पाते ही वे कौनसी सेवा करते हैं?

स. ८ - ठीक समय में जंगोटा उपस्थित करने की सेवा कौन भाई करते हैं, जिससे श्री राजजी प्रसन्न होकर वह जंगोटा ले लेते हैं?

स. ९ - पंजा क्या है और कैसा है तथा कब प्रयोग में लाया जाता था? पंजे की सेवा किसकी है?

ज. ९ - जहाँ हाथ नहीं पहुँच सकता, वहाँ खुजलाने के लिए श्रीजी →

स. १०-हुसैन साहेब कौन थे? उनकी रचना "हुसैनी तफसीर" लेकर कौन आते हैं और क्या करते हैं?

स. ११-दुंदराय भाई की मुख्यातिमुख्य सेवा कौनसी है? वे सिर पर लिया हुआ कौनसा उत्तरदायित्व बड़े मन से पूरा करते हैं?

ज. ११- सदैव धामधनी श्रीजी साहेबजी के समीप बैठना ही दुंदराय भाई →

स. १२-गोविन्द राय और टेकचन्द भाई कभी-कभी किसकी बीतक पढ़कर सुनाते हैं? कुरान में "गाजी मिसल" नाम से किसे पुकारा गया है?

ज. १२- गोविन्द राय और टेकचन्द भाई कभी-कभी सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी →

ज. ७ - काका अपनी थैली में विभिन्न सामग्रियों सहित कुछ रुपये-पैसे भी रखते हैं। श्रीजी को जब किसी को देने के लिए पैसों की जरूरत पड़ती, तो वे तुरंत काका को याद करते। आज्ञा पाते ही काका तुरंत उचित राशि निकालकर श्रीजी को दे देते हैं।

ज. ८ - प्रतिदिन चर्चा के समय जंगोटा उपस्थित करने की सेवा बाघजी भाई करते हैं। उनकी इस सेवा द्वारा प्रसन्न होकर श्रीजी साहेबजी बैठते समय सहारा लेने के लिए जंगोटा ले लेते हैं।

→ साहेबजी पंजे का प्रयोग करते हैं। यह पंजा अत्यंत आनन्ददायी, सुन्दर और शोभायुक्त है। इसका प्रयोग चर्चा के समय श्रीजी साहेबजी पीठ खुजलाने के लिए किया करते हैं। पंजे की सेवा बनमालीदास भाई की है।

ज. १०- हुसैन साहेब मुहम्मद के जमात में स्थित अली के बेटे थे। चर्चा के समय उनके द्वारा रचित *"हुसैनी तफसीर"* लेकर दुंदराय भाई आते हैं और श्रीजी साहेब को तफसीर के हरफ पढ़कर सुनाते हैं।

→ की मुख्यातिमुख्य सेवा है। ये भाई कयामत (जागनी) के संदेश को सुन्दर अक्षरों में पत्र में लिपिबद्ध करके यथास्थान भेजने के कार्य को अपने सिर पर आया दायित्व समझकर बड़े मन से पूरा करते हैं।

→ और उनके द्वारा जागृत हुई ३१३ धर्मवीर आत्माओं की बीतक पढ़कर सुनाते हैं। कुरान में इन्हीं दोनों को *"गाजी मिसल"* कहा है। अतः गाजी-श्री देवचन्द्रजी हैं और मिसल-उनकी १२००० ब्रह्मात्माओं की जमात है।

स. १३-बद्रीदासजी ने कितने समय तक वाका लिखा? इनकी प्रमुख सेवा कौनसी है?

स. १४-पोहोकर-पुष्कर भाई किसे सेवा-कार्य में सहयोग देते हैं?

स. १५-देवीदास भाई किस सेवा द्वारा धनी श्रीजी साहेबजी को रिझाते हैं?

स. १६-वाणी लिखने के लिए सदा तत्पर रहनेवाले भाई कौन-कौन हैं? उनके नाम लिखो।

ज. १६- हमेशा पास में बैठकर वाणी लिखने के लिए तत्पर रहनेवाले →

स. १७-उक्त सुन्दरसाथ वाणी तो लिखते हैं, परंतु कौनसी वाणी? भागवत की, हदीसों की या कुरान की? स्पष्ट करो।

स. १८-हीरामन भाई कैसी वाणी उतारने में दिलचस्पी रखते हैं?

स. १९-चर्चा के समय श्रीजी साहेबजी के समीप बैठनेवाले क्या करते हैं? वे लोग श्रीजी के अत्यंत समीप क्यों बैठा करते हैं?

स. २०-मोहना भाई कौनसी सेवा करते हैं? पुनः भवनदास चर्चा में कैसे बैठते हैं तथा उनके साथ उसी तरह कौनसे भाई ध्यानपूर्वक चर्चा सुनते हैं?

ज. २०- मोहना भाई श्रीजी के पास बैठकर बड़े प्रेम से अवतरित वाणी →

ज. १३- चर्चा में श्री बद्रीदास भाई भी बैठते हैं। इन्होंने एक वर्ष तक वाका लिखा । श्रीजी स्वरूप द्वारा देखी हुई एवं वर्णित घटनाएँ लिखना ही इनकी प्रमुख सेवा है।

ज. १४- पोद्दोकर-पुष्कर भाई श्री बद्रीदास भाई के साथ रहकर उन्हें सेवा-कार्य में सहयोग देते हैं।

ज. १५- श्री देवीदास भाई श्रीजी साहेबजी के श्री मुख से अवतरित वाणी को लिखते हैं और वही वाणी सुनाकर वे श्रीजी साहेबजी को रिझाने की सेवा करते हैं।

→ भाइयों में मथुरा भाई, तिमर भाई, परशुराम भाई, पदमियाँ भाई, बीरिया भाई, सूरत सिंह भाई और मकनिया भाई हैं। ये सभी भाई अवतरित वाणी को विधिवत् ढंग से लिपिबद्ध करने की सेवा करते हैं।

ज. १७- उक्त सुन्दरसाथ न भागवत, न कुरान, न हदीसों अथवा पुराणों की वाणी लिखते हैं, वे तो चर्चा के दौरान श्रीजी स्वरूप के श्री मुख से अवतरित वाणी लिखते हैं।

ज. १८- हीरामन भाई तो केवल सारगर्भित वाणी को ही प्रेमपूर्वक उतारने में दिलचस्पी रखते हैं।

ज. १९- चर्चा के समय श्रीजी साहेबजी के समीप बैठनेवाले सुन्दरसाथ श्रीजी के श्री मुख से अवतरित वाणी लिखते हैं। श्रीजी के श्री मुख से निकले शब्द स्पष्टतः सुन सकें, इसीलिए वे लोग श्रीजी के अत्यंत समीप बैठा करते हैं।

→ लिखते हैं और अपने धनी को प्रेमपूर्वक सुनाते हैं। उनके साथ भवनदास भाई भी एक आसन में अडिग होकर चंचल मन को काबू में करके चर्चा श्रवण करते हैं। इनके पीछे-पीछे गिरधर भाई भी ध्यान देकर चर्चा सुनने में पीछे नहीं हटते ।

स. २१-"भाग्यशाली बड़भागी आत्माओं के लिए भविष्य में यह वाणी काम आयेगी"-ऐसा समझकर श्रीजी की चर्चा में बैठकर अवतरित वाणी लिखने की सेवा करनेवाले दूरदर्शी भाई कौन हैं?

स. २२-कैसी चर्चा सुनने के लिए गोविन्दजी मिश्र धामधनी के समीप बैठते हैं?

ज. २२- श्री धामधनी चर्चा के दौरान प्रसंग आने पर विभिन्न शास्त्रों →

स. २३-प्रतिदिन चर्चा श्रवण में उपस्थित होकर चर्चा श्रवण द्वारा अन्य लोगों को भी लाभ पहुँचानेवाले व्यक्ति कौन हैं तथा वे किस तरह अन्य सुन्दरसाथ को लाभ पहुँचाते हैं?

स. २४-महामति श्री धामधनी कैसी वाणी द्वारा चर्चा करते हैं? पुनः सुन्दरसाथ की आत्मतृप्ति के लिए वे क्या करते हैं?

स. २५-अपने धनी की चर्चा में अडिग एकटक नयन मिलाकर निहारते हुए ध्यान से चर्चा सुननेवाली सुहागिन आत्मा कौन है?

स. २६-किसके ज्ञान के सागर में आनन्द की अनेक लहरें और तरंगें उठा करती हैं?

स. २७-महाराजा छत्रसाल कौनसी चर्चा सुनकर रीझ जाते हैं और उनका मन आनन्दविभोर हो उठता है?

ज. २१- *"भाग्यशाली बड़भागी आत्माओं के लिए भविष्य में यह वाणी काम आयेगी"* -ऐसा समझकर श्रीजी की चर्चा में बैठकर श्रीजी के श्री मुख से अवतरित वाणी को लिखकर रखनेवाले भाई का नाम है-हरिदासजी।

→ जैसे भागवत, गीता आदि की रहस्यपूर्ण बातों का स्पष्टीकरण करके समझाया करते हैं। अतः ऐसी ही गहन चर्चा को ध्यान देकर श्रवण करने के लिए गोविन्दजी मिश्र धामधनी के समीप बैठते हैं।

ज. २३- प्रतिदिन चर्चा के ठीक समय पर चर्चा श्रवण में आकर विराजमान होनेवाली प्रमुख आत्मा का नाम है-महाराजा छत्रसाल। जब वे आकर ध्यान देकर चर्चा श्रवण करने लगते हैं, तब उस वक्त चर्चा-मण्डान का वातावरण ही बदल जाता है। इस तरह महाराजा छत्रसाल अन्य को भी चर्चा श्रवण विषय में लाभ पहुँचाते हैं।

ज. २४- महामति श्री प्राणनाथजी अत्यन्त मीठी-मधुर वाणी में चर्चा सुनाकर सुन्दरसाथ का मन मोहित कर लेते हैं और अपने धाम सम्बन्धी साथ को वेद, कुरान, पुरान, हदीसों एवं कतेबादि की साक्षियों के माध्यम से आत्मतृप्ति करा देते हैं।

ज. २५- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म स्वरूप महामतिजी के सम्मुख बैठकर मुरलीधर भाई वक्ता के नयनों से नयन मिलाकर निहारते हुए बड़े ध्यानपूर्वक चर्चा सुनते हैं। अतः ध्यानपूर्वक अडिग होकर चर्चा सुननेवाली सुहागिन आत्मा का नाम मुरलीधर है।

ज. २६- श्रीजी स्वरूप की चर्चा के दौरान उनके मन में छिपा ज्ञान का सागर लहरा उठता है। उस सागर में आनन्द की अनेकों लहरें एवं तरंगें उठा करती हैं।

ज. २७- श्रीजी साहेब के श्री मुख से तारतम वाणी की चर्चा के दौरान कई प्रकार से श्री परमधाम पचीस पक्ष के अखण्ड आनन्द की →

→ लहरें उठा करती हैं। यही चर्चा सुनकर महाराजा छत्रसाल बहुत →

स. २८-कैसी चर्चा सुनकर सभी सुन्दरसाथ अत्यधिक आनन्दमग्न हो जाते हैं?

ज. २८- श्रीजी स्वरूप जब कभी चर्चा में विभिन्न शास्त्रों, पुराणों तथा →

स. २९-गोप्य रहस्यवाली सार तत्त्व की बातों को धामधनी कैसे समझाते हैं?

ज. २९- महामति स्वरूप गोप्य एवम् सूक्ष्म-सार तत्त्व की बातें कई प्रकार →

स. ३०-धामधनी सुन्दरसाथ के लिए कहाँ के, किन विषयों का स्पष्टीकरण करने के लिए बीच-बीच में कई गवाहियाँ प्रस्तुत करते हैं?

स. ३१-चर्चा के दौरान महामति स्वरूप किस-किस के आधार पर विभिन्न मतों में एकत्व प्रतिपादित करते हैं?

ज. ३१- श्री महामति स्वरूप वेद, कतेब, कुरान, पुराण के मूलभूत सिद्धान्तों →

स. ३२-क्या महामति स्वरूप की तरह कुरान और पुराण का ऐसा समन्वय किसी ने आज तक किया है?

स. ३३-श्रीजी स्वरूप सुन्दरसाथ जमात में प्रेम और विश्वास उत्पन्न कराने के लिए क्या करते हैं?

स. ३४-किन-किन भाइयों को चर्चा श्रवण के सिवाय अन्य कोई काम नहीं है और वे किस प्रकार चर्चा सुनते हैं?

→ रीझ उठते हैं और उनका मन आनन्दविभोर हो उठता है।

→ उपनिषद् की साक्षियाँ देते अथवा श्रीमद्भागवत के चालीस प्रश्नों को खुलस्त करके समझाते, तब ऐसी बोधदायक चर्चा श्रवण कर सभी सुन्दरसाथ अत्यधिक आनन्दमग्न हो जाते हैं।

→ की साक्षियाँ दे-देकर समझाते हैं। श्रीजी साहेबजी चौदह लोक से परे शून्य, निराकार के आगे कूटस्थ अक्षर धाम तक का अकथ्य वर्णन चर्चा में सुनाते हैं।

ज. ३०- धामधनी श्रीजी साहेबजी प्रसंगानुसार चर्चा-कथा के बीच-बीच में कई साक्षियाँ भी समझाया करते हैं। उसमें भी बेहद, अक्षर-अक्षरातीत जैसे गहन विषयों के स्पष्टीकरण के लिए कई महापुरुषों की साक्षियाँ देते हैं।

→ का सन्तुलनात्मक विवेचन करके विभिन्न मतों में एकत्व प्रतिपादित करके साथ को संबोधित किया करते हैं। जैसे- *"सोई खुदा सोई ब्रह्म"* अर्थात् दोनों का सार एक ही तत्त्व है।

ज. ३२- श्री महामति स्वरूप की तरह सृष्टि में आज तक कुरान और पुराण, वेद और कतेब का समन्वयात्मक सार तत्त्व किसी ने स्थापित नहीं किया है।

ज. ३३- महामति श्री प्राणनाथजी सुन्दरसाथ में प्रेम और विश्वास उत्पन्न कराने के लिए उनका हाथ थामकर उन्हें आश्वस्त करते हुए स्नेहपूर्वक समझाते हैं।

ज. ३४- ब्रजनैन भाई और चंचलदास भाई को अडिग रहकर चुपचाप मौन रहकर चर्चा श्रवण करने के सिवाय अन्य कोई काम नहीं है।

स. ३५-किसके चर्चा द्वारा उत्पन्न सुख की तुलना अन्य किसी आनन्द द्वारा नहीं की जा सकती?

ज. ३५- धामधनी श्री प्राणनाथजी जब अपनी मीठी आनन्दपूर्ण वाणी में →

स. ३६-प्रेमपूर्वक वचन कहकर मधुर वाणी में सुन्दरसाथ को कौन और कहाँ के अथवा किसके सिंगार वर्णन के अनुभव का सुख प्रदान करते हैं?

स. ३७-धामधनी श्री प्राणनाथजी के अलावा श्री अद्वैत परमधाम के ज्ञान द्वारा सुख देनेवाला क्या अन्य कोई है? यदि है, तो कौन? पुनः यह ज्ञान लेनेवाले भी कौन हैं?

ज. ३७- परब्रह्म स्वरूप धामधनी श्री प्राणनाथजी के अतिरिक्त श्री अद्वैत →

स. ३८-कौनसे और कहाँ के ज्ञान को ग्रहण करने का सामर्थ्य जीवात्माओं में नहीं है?

स. ३९-लैल तुल कद्र की रात्रि के तीसरे खण्ड में भूली-भटकी आत्माओं को किसने जागृत किया?

स. ४०-धामधनी श्री प्राणनाथजी सुहागिन आत्माओं को तारतम की चर्चा के माध्यम से कहाँ के सुख का अनुभव कराते हैं?

स. ४१-श्रीजी स्वरूप चर्चा में धाम की आत्माओं को संबोधित करते हुए क्या कहते हैं और कैसे समझाते हैं?

ज. ४१- श्रीजी साहेबजी ब्रह्मात्माओं को चर्चा द्वारा संबोधित करते हुए →

→ बड़े सुन्दर और उपयुक्त शब्दों का उच्चारण करते हैं, तब ऐसी चर्चा द्वारा प्राप्त होनेवाले सुखों की तुलना अन्य किसी भी आनन्द द्वारा नहीं की जा सकती।

ज. ३६- द्वादश सहस्त्र सखियों के धामधनी अपनी स्नेहपूर्ण मधुर वाणी द्वारा अपनी सखियों-सुन्दरसाथ को श्री अक्षरातीत मूल मिलावे में स्थित युगलस्वरूप श्री राजश्यामाजी के सिंगार वर्णन के अनुभव का अमूल्य सुख प्रदान करते हैं।

→ परमधाम के ज्ञान का सुख देनेवाला अन्य कोई नहीं है। जो दे रहे हैं, वे भी हमारे धाम के धनी ही हैं और धामधनी के श्री मुख से अवतरित धाम का बोधार्थ सुनने और ग्रहण करनेवाली भी धाम की ब्रह्मात्माएँ ही हैं।

ज. ३८- श्री परमधाम की अद्वैत वाणी पचीस पक्ष के ज्ञान को सुनने का सामर्थ्य संसार की मायावी जीवात्माओं में नहीं है। ग्रहण करने की बात तो असंभव ही है।

ज. ३९- लैल तुल कद्र की रात्रि के तीसरे खण्ड-जागनी के ब्रह्माण्ड में भूली-भटकी ब्रह्मात्माओं को श्रीजी साहेब महामति श्री प्राणनाथजी ने युक्तिपूर्वक जागृत किया।

ज. ४०- धामधनी श्री प्राणनाथजी भूली-भटकी धामस्थ सुहागिन आत्माओं को तारतम ज्ञान के माध्यम से श्री परमधाम के पचीस पक्षों के सुखों का अनुभव कराते हैं।

→ कहते हैं, "आप सब इस मायावी झूठे खेल के जीव नहीं हैं। आप तो अपने अक्षरातीत धाम से खेल देखने आयी हो। अतः आप सब परमधाम की अपनी परात्मा स्वरूप का ध्यान (स्मरण) करो। ब्रजमण्डल और रासमण्डल में लीला करनेवाली सुरताएँ आप सबमें ही विराजमान हैं।"

स. ४२-तीसरा ब्रह्माण्ड कैसा है और क्यों रचा गया है?

ज. ४२ यह तीसरा ब्रह्माण्ड तदोगत पहले के मूल ब्रज के ब्रह्माण्ड-सा ही है। ब्रज का ब्रह्माण्ड भी कालमाया का था और यह ब्रह्माण्ड भी →

स.४३- धनी कहते हैं कि "ब्रह्मात्माओं को जागृत करने के लिए मेरे तीन स्वरूप आये हैं।" अतः वे तीन स्वरूप कहाँ-कहाँ आये हैं और कौन-कौन हैं?

ज. ४३- धनी कहते हैं, "हे मेरी धामस्थ अंगनाओं! इस जागनी के ब्रह्माण्ड में माया का खेल दिखाकर, मूल की इच्छा को पूर्ण कर, आप सबको जागृत कर धाम लौटाने हेतु ही मेरे तीन स्वरूप खेल में आए हैं। पहले स्वरूप अरब देश के बसरा शहर में आये, जो कि मुहम्मद नाम से प्रसिद्ध हैं। दूसरे स्वरूप, जो मलकी स्वरूप →

स. ४४-प्रथम स्वरूप कौन हैं? वे कहाँ आये, कब आए और क्या लेकर आए?

ज. ४४- प्रथम स्वरूप मुहम्मद हैं। वे दूसरे स्वरूप के आने के हजार साल →

स. ४५-दूसरे स्वरूप कौन हैं? वे कहाँ आये, कब आये और क्यों आये?

ज. ४५- दूसरे स्वरूप मलकी स्वरूप हैं। वे वि. सं. १६३८ में मारवाड़ →

स. ४६-तीसरे स्वरूप कौन हैं? वे स्वरूप क्यों आये और उन्होंने क्या किया?

ज. ४६- तीसरे स्वरूप हकी स्वरूप हैं। वे सृष्टि के कलंक को निर्मूल करने हेतु ही इस धरातल पर अवतरित हुए हैं। उन्होंने खेल में →

→ कालमाया की सामग्रियों से ही भरा हुआ है। ब्रज और रास में जिन सखियों की खेल देखने की चाहना (इच्छा) पूरी नहीं हुई, उनकी वही अधूरी इच्छा पूरी करने के लिए यह तीसरा ब्रह्माण्ड रचा गया है।

→ कहलाते हैं, वे मारवाड़ देश के उमरकोट गाँव में आये। तारतमरूपी माल उतारने के कारण उनका नाम मलकी पड़ा। तीसरे स्वरूप हैं, हकी स्वरूप। जागनी के ब्रह्माण्ड में हक स्वरूप का कार्य करने के कारण ही वे हकी स्वरूप कहलाये । हकी स्वरूप ने *"सोई खुदा सोई ब्रह्म"* सिद्धान्त द्वारा सृष्टि में कुरान और पुराण, वेद और कतेब के बीच समन्वयात्मक सम्बन्ध स्थापित किए तथा रूह एवम् आत्मा को बेहद की बहिश्तों में कायम कर दिया।"

→ पहले अरबस्तान में आये। खुदा से साक्षात्कार प्राप्त कर उन्होंने कलमा उतारा और शरीअत के मार्ग द्वारा मुसलिम धर्म प्रकाशित किया।

→ देश के उमरकोट गाँव में अवतरित हुए। उन्होंने ४० साल की उम्र में ब्रह्मतारक तारतम महामंत्र उतारा। वे इस नश्वर ब्रह्माण्ड में ब्रह्मात्माओं को जागृत कर धाम ले जाने हेतु आए हैं।

→ आकर *"ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति इति श्रुति"* वाक्य को सिद्ध करते हुए पुराण और कुरान पक्ष के *"सोई खुदा सोई ब्रह्म"* विषयों के बीच समन्वयात्मक सम्बन्ध स्थापित किए। साथ ही आप्त पुरुषों के भविष्यानुसार जड़-चेतन को मुक्ति प्रदान कर बेहद में अखण्ड कर दिया।

स. ४७-रब (परमात्मा) के जो पाँच दिन कहे हैं, वे पाँचों दिन कौन-कौनसे हैं?

ज. ४७- रब (परमात्मा) के जो पाँच दिन कहे हैं, उनमें से पहला दिन है- →

स. ४८-"अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार"-ऐसा धनी ने कब कहा?

ज. ४८- आप्तपुरुषों के भविष्यानुसार जब छट्ठे दिन की अर्श जाहिर करने की लीला पूरी हुई, तब से महामति स्वरूप कहने लगे, *"अब हम धाम चलत हैं, तुम हूजो सबे हुसियार"* अर्थात् "अब मेरा →

स. ४९-हमारे हिन्दू धर्म के आत्म-जागरण के वक्त में और मुसलिम धर्म के कयामत के वक्त में क्या अन्तर है? ये रहस्यमयी बातें कौन समझेंगे?

ज. ४९- हिन्दू शास्त्रों जैसे वेद, पुराण, उपनिषदों में वर्णित आत्म-जागृति विषयक आह्वान तथा मुसलिम धर्मग्रन्थ कुरान, हदीसों में वर्णित →

स. ५०-कयामत के वक्त इमाम द्वारा कयामत के सात निशान खुलने का वादा किसने और कब किया था?

स. ५१-चार वसीयतनामे कब-कब आये? किसके पास और कहाँ से आये?

ज. ५१- चार वसीयतनामों में से प्रथम वसीयतनामा रूह अल्लाह द्वारा दूसरा जामा पहनने पर अर्थात् वि. सं. १७१२ (ई. स. १६५५) में आया। दूसरा वसीयतनामा रूह अल्लाह का दूसरा जामा धारण करनेवाले महामति श्री प्राणनाथजी के मेरता पहुँचने और कलमा एवम् तारतम के समन्वयात्मक एकीकरण होने पर अर्थात् ईसा और मुहम्मद का मिलान होते ही जब महामति स्वरूप →

→ ब्रज की लीला। दूसरा दिन है-महारास लीला। तीसरा दिन है-अरब में तृतीय श्याम स्वरूप द्वारा साक्षियाँ रखने की लीला। चौथा दिन है-सद्गुरु स्वरूप की लीला और पाँचवाँ दिन है-दीव बंदर से लेकर पन्ना तक की जागनी लीला।

→ कार्य पूरा हुआ। यसर्थ अब मैं धाम जा रहा हूँ। मेरी सुरता धाम की ओर उन्मुख हो रही है। अतः जो आत्माएँ संसार में रहेंगी, वे सावधान होकर रहना और जिन्हें साथ चलना हो, वे तैयार हो जाएँ।" इस तरह महामति स्वरूप दो-तीन साल पूर्व से ही कहने लगे थे।

→ कयामत के वक्त कब्र से मुर्दों के उठने जैसे आह्वानों में रत्तीभर भी अन्तर नहीं है। अन्तर मात्र नासमझरूपी अज्ञानता के कारण है। ये बातें तो वे आत्माएँ अथवा रूहें ही समझेंगी, जिनके लिए ब्रह्म-खुदा ने खेल रचा है। शास्त्र, कुरान और पुराण के अवतरण की बातें भी वे ब्रह्मात्माएँ-मोमिन रूहें ही समझेंगी।

ज. ५०- कयामत के वक्त इमाम स्वरूप द्वारा कुरान के सात निशान खुलने का वादा अरब के मुहम्मद साहेब ने ही कुरान में किया था और यह भविष्य उन्होंने ग्यारह सौ साल पूर्व ही कह दिया था।

→ "*अहमद*" पद द्वारा विभूषित हुए, तब अर्थात् वि. सं. १७३१ (ई. स. १६७४) में आया। तीसरा वसीयतनामा हरिद्वार में कुम्भ के मेले के दौरान महामति श्री प्राणनाथजी द्वारा शास्त्रार्थ में विजय प्राप्त कर "*विजियाभिनन्द बुद्ध निष्कलंकावतार*" का धर्मझण्डा स्थापित करते अर्थात् वि. सं. १७३५ (ई. स. १६७८) में आया तथा चौथा वसीयतनामा तब आया, जब वि. सं. १७४३ (ई. स. १६८६) में महाराजा छत्रसाल श्री प्राणनाथजी को हस्ती पर सवार करके धर्म पर्यटन करते-करते जलालपुर पहुँचे और वहाँ के मुल्ला-काज़ियों को परास्त कर उन्हें महामति श्री प्राणनाथजी →

→ ही *"आखर जमाने के खाविंद इमाम मेहदी स्वरूप हैं"*-यह कबूल करवाया तथा उनके द्वारा कबूल की गई उन तमाम बातों को एक महजरनामे में दर्जकर वह महजरनामा दिल्ली के बादशाह →

स. ५२-उक्त चारों वसीयतनामों में क्या-क्या संदेश थे? क्रमशः लिखो।

ज. ५२- प्रथम वसीयतनामे के आने का अर्थ है-मुसलिम समाज के फकीरों की फकीरी दैवत-दैवी शक्ति अर्थात् सफकत का चला जाना। इस बात की सूचना देने के लिए पहला वसीयतनामा हिंद के खलीफ़ा औरंगजेब के पास आया क्योंकि रूह अल्लाह ने जब (वि. सं. १७१२) से दूसरा जामा (सफेद गुदड़ी) धारण किया, तभी से मुसलिम फकीरों की शक्ति निकम्मी हो गई। दूसरे वसीयतनामे के आने का अर्थ है मुसलिम संप्रदाय के बीच से *"नूरी झण्डे"* अर्थात् कुरान का जाना। वि. सं. १७३१ में जब रूह अल्लाह का दूसरा जामा धारण करनेवाले महामति स्वरूप →

स. ५३-संसार के सभी लोगों ने श्री प्राणनाथजी के जीवनकाल में कौन-कौनसे तीन निशान स्पष्टरूपेण देखे?

ज. ५३- संसार के सभी लोगों ने श्री प्राणनाथजी के जीवनकाल में कयामत →

स. ५४-"कुरान में लिखी इमाम और मोमिनों के साथ हुई दज्जाल की लड़ाई संसार के लोगों ने प्रत्यक्षरूप में देखी।" अतः कैसे?

ज. ५४- सद्ग्रन्थ कुरान में लिखी हुई बातें अकाट्य हैं। धर्मविरोधी दज्जाल इमाम स्वरूप श्री प्राणनाथजी और रूह अल्लाह स्वरूप →

स. ५५-"ईसा-रूह अल्लाह दज्जाल की सेना के साथ बहुत समय तक लड़े।" अतः कैसे तथा कब से, कब तक?

→ औरंगजेब के पास भेजा। ये चारों वसीयतनामे दिल्ली के बादशाह औरंगजेब के पास मुसलिम धर्म के माननीय तथा सर्वश्रेष्ठ स्थान मक्का से आये।

→ मेरता पहुँचे और वहाँ कलमा एवम् तारतम का मिलान होने पर अहमद खिताब प्राप्त हुआ, तब वे स्वरूप दोनों समाज की जिम्मेदारी अपने कन्धे पर लेकर दिल्ली को निशाना रखकर एक ही लक्ष्ययुक्त तारतम और कलमा के *"नूरी झण्डे"* के साथ आगे बढ़े। तीसरे वसीयतनामे के आने का अर्थ है बरकत अर्थात् मुसलिम धर्म की आम जनता के अन्दर से धर्म के प्रति पहले जैसे श्रद्धा-विश्वास का नष्ट हो जाना अर्थात् न कुरान की बातों पर श्रद्धा-विश्वास रहना, न फकीरों या मौलवियों के वचनों पर पहले जैसा डर रहना। चौथे वसीयतनामे के आने का अर्थ है, मुसलिम समाज जिस *"नूरी झण्डे"* पर खड़ा है उन सारी दैवतों-सफकत, बरकत, कुरान और ईमान का चले जाना और इसलाम धर्म का खाली रह जाना।

→ के सात निशानों में से तीन निशान स्पष्टरूप से अपनी आँखों से देखे। जैसे - १) आजूज और माजूज का इंसान को खाना २) पश्चिम में सूर्य का उगना और ३) दाभा नामक जानवर का ईसा और इमाम के साथ लड़ना।

→ श्री देवचन्द्रजी के साथ कलियुग से प्रभावित बुद्धि लेकर धर्मविरुद्ध लड़े। ये दज्जाल इमाम स्वरूप तथा मोमिनों के साथ वि. सं. १६३८ से लेकर १७५१ तक लड़े। इसमें विशेष लड़ाई दिल्ली के शराअ के शैतान काज़ियों और मोमिनों के बीच हुई। इन शराअ के शैतानों ने दज्जाल स्वरूप होकर इमाम के पैगाम को ठुकराया और मोमिनों को कैद कर प्रताड़ित किया।

ज. ५५- ईसा-रूह अल्लाह सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी पाँच साल की उम्र से ही मायावी बुद्धिवाले दज्जालों से लड़ते आए। जामनगर में →

→ ब्रह्मतत्त्व की प्राप्ति के लिए उन्होंने दज्जालों से विशेष लड़ाई →

स. ५६-श्रीजी स्वरूप के अंदर स्थित पंचशक्तियों में से कुरान के रहस्यों को सबके सामने प्रकट करने का कार्य करनेवाली शक्ति कौनसी है?

स. ५७-असराफील के स्वर (सूर) फूँकने का क्या परिणाम हुआ?

ज. ५७- असराफील (अक्षर की जागृत बुद्धि) के स्वर (सूर) फूँकने से तारतम का तारतम प्रकट हुआ। उस स्वर की ध्वनि से नश्वर →

स. ५८-श्रीजी स्वरूप ने रात-दिन बंगलाजी में उक्त प्रकार कितने साल तक सदुपदेश दिया? पुनः उनके ज्ञान-बोध को किस समुदाय ने समझकर ग्रहण किया?

ज. ५८- उक्त प्रकार से अक्षरातीत खुदा-ब्रह्म स्वरूप श्रीजी साहेबजी →

स. ५९-अर्श-श्री परमधाम की सम्पदा क्या है? पुनः ऐसा कहा है कि "वह सम्पदा भाग्यवान् आत्माएँ ही प्राप्त कर सकती हैं।" अतः भाग्यवान् आत्माएँ किन्हें कहा है?

ज. ५९- अर्श-अक्षरातीत श्री परमधाम की सम्पदा श्री अक्षरातीत →

स. ६०-किनकी चर्चा के दौरान न बोलने की इच्छा और न ताकत ही होती है? किनके प्रेम और विश्वास को नष्ट करने के लिए, सदैव कौन तैयार रहते हैं?

ज. ६०- महामति स्वरूप धामधनी श्री प्राणनाथजी की चर्चा-कथा के →

→ की। इस प्रकार ईसा-रूह अल्लाह वि. सं. १६३८ से लेकर वि. सं. १७५१ तक कलिकालरूपी दज्जालों से लड़ते रहे।

ज. ५६- श्रीजी साहेब के हृदयस्थ पंचशक्तियों में से मात्र कुरान, हदीसों के ही नहीं, अपितु वेद, पुराण आदि धार्मिक सद्ग्रन्थों के गोप्यातिगोप्य रहस्यों को खोलकर सबके सामने रखने का कार्य बुद्धजी अर्थात् अक्षर की जागृत बुद्धि-असराफील का है।

→ ब्रह्माण्ड के नश्वर ब्रह्म, परमात्मा, ईश्वर आदि सब उड़ गए अथवा झूठे साबित हुए और सत् अर्थात् अक्षर और अक्षरातीत अथवा नूर और नूर तजल्लाह जाहिर हुए।

→ दोनों पक्षों की आत्माओं को ग्यारह वर्ष तक समन्वयात्मक उपदेश देते रहे और तत्पश्चात् उन्होंने श्री परमधाम की ओर प्रस्थान किया। पुनः उक्त ज्ञान धामस्थ आत्माओं ने ही सोलह आना ग्रहण किया।

→ राजश्यामाजी सहित श्री परमधाम पचीस पक्ष हैं। इसके वारिसदार धाम से खेल देखने आई भाग्यवान् बड़भागी ब्रह्मात्माएँ ही हो सकती हैं क्योंकि वे ही इस सम्पदा की सम्बन्धी हैं। पुनः *"बिना सम्बन्ध न पाइये, कोटिन करे आचार"*।

→ दौरान न किसी को बोलने की इच्छा होती, न कोई हिम्मत ही कर पाते हैं। ब्रह्म और ब्रह्मात्माओं की प्रेममयी चर्चा-कथा अथवा वार्तालाप को तथा उनके श्रद्धा, प्रेम और विश्वास को नष्ट करने के लिए मायावी विकारग्रस्त दज्जालरूपी इंसान सदैव तत्पर रहते हैं।

स. ६१-इस वक्त धामधनी श्रीजी स्वरूप ने आज्ञा दी। अतः किसे और किस लिए? पुनः आगे का कार्यक्रम क्या है?

ज. ६१- इस वक्त धामधनी श्रीजी स्वरूप ने स्नान करने की व्यवस्था →

❁ राजभोग ❁

स. १ - श्री प्राणनाथजी "राजभोग" आरोगने से पहले और चर्चा बंद होने के पश्चात् क्या करते हैं?

स. २ - दोपहर का समय होने में जब दो घड़ी अवशेष रहती है अर्थात् जब सवा ग्यारह बजते हैं, तब कौन और किस लिए अर्ज करते हैं?

स. ३ - किसने और किसे थाल लाने की आज्ञा दी, जिस पर प्रसन्न होकर श्री बाईजी को थाल ले आने का समाचार दिया गया?

स. ४ - भोजन के लिए अर्ज करने के लिए हनुमन्तबाई से पहले कौन-कौन आये? उनके नाम लिखो।

स. ५ - चर्चारस में मग्न श्रीजी, स्नान की सेवा का इंतजार करनेवालों से क्या कहते हैं?

ज. ५ - चर्चा-कथा के रस में मग्न धामधनी श्रीजी स्वरूप, स्नान कराने →

→ करनेवालों को तैयारी करने की आज्ञा दी। एक ओर थालभोग की तैयारी होने लगी, तो दूसरी ओर स्नान कराने की । स्नान के पश्चात् राजभोग आरोगने-आरोगाने का कार्यक्रम है।
- (प्रकरण ६४, सवाल-जवाब नं. ६१, कुल सं. ४६२१+६१=४६८२)।

❋ राजभोग ❋

ज. १ - महामति श्री प्राणनाथजी *"राजभोग"* आरोगने से पहले और चर्चा-कथा समाप्ति के पश्चात् तेल मर्दन करके स्नान करते हैं। उनके सेवक-सेविकाएँ उन्हें झीलना-स्नान कराते हैं।

ज. २ - सवा ग्यारह बजे स्नान और भोजन कराने की सेवा करनेवाले साथ अर्ज करते हैं, "हे धनी! अब चर्चा बन्द कीजिए। राजभोग का समय हुआ है।"

ज. ३ - सवा ग्यारह बजे इशारे से अर्ज करनेवाली हनुमन्तबाई को श्रीजी साहेबजी ने थाल लाने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर प्रसन्न होकर हनुमन्तबाई ने श्री बाईज्यूराज को थाल ले आने का समाचार दिया।

ज. ४ - श्री प्राणनाथजी स्वरूप से चर्चा-कथा बंद करके भोजन करने की अर्ज करने के लिए सर्वप्रथम कमलावतीबाई आईं। तत्पश्चात् लाड़बाई और तीसरी बार हनुमन्तबाई आईं।

→ की सेवा का इंतजार करनेवालों से कहते हैं, "अरे! आप पहले स्नान की सामग्रियाँ जैसे धोती, पोती-अँगोछा, तेल आदि तो तैयार कीजिए। स्नान की पूर्ण व्यवस्था करने के बाद ही मुझे चर्चा से उठाइये।"

स. ६ - "तबलों मोकों चरचा से, काहे करत हो भंग"-ऐसा कौन, किससे कहते हैं? उक्त कथन के जवाब में सेवा के लिए उपस्थित सुन्दरसाथ क्या कहते हैं?

स. ७ - चर्चा-कथा करते समय कान में चुपके से कुछ कहनेवाले भाई कौन हैं?

स. ८ - "अरज खास गिरोह की" । अतः खास अथवा शिरोमणि सखी कौन है?

ज. ८ - *"अरज खास गिरोह की"* अर्थात् सुन्दरसाथ में अग्रगण्य →

स. ९ - चर्चा से उठकर श्रीजी स्वरूप चौकी पर विराजमान क्यों होते हैं?

स. १०-चौकी पर बैठते ही चारों ओर से ब्रह्मात्माएँ धामधनी स्वरूप श्री प्राणनाथजी को क्यों घेर लेती हैं?

स. ११-गोदावरीबाई और गंगाराम भाई कटोरी भरकर क्या लाते हैं और क्यों?

स. १२-श्रीजी साहेबजी के शरीर की तेल से मालिश करने की सेवा में कौन-कौन शामिल हैं?

ज. १२- श्रीजी साहेबजी के शरीर की तेल से मालिश करने की सेवा में →

स. १३-तेल की प्रसादी सुन्दरसाथ में बाँटने की सेवा कौन करते हैं?

ज. ६ - *"तबलों मोकों चरचा से, काहे करत हो भंग"*-ऐसा श्रीजी स्वरूप अर्ज करने की सेवा करनेवालों से कहते हैं। उक्त कथन के जवाब में सेवा में उपस्थित साथ कहते हैं, "श्री तेजकुँवरी बाईजी ने आग्रहपूर्वक प्रार्थना की है।"

ज. ७ - चर्चा-कथा करते समय श्रीजी साहेबजी के कान में चुपके से कुछ कहनेवाले जयन्तीदास भाई हैं।

→ शिरोमणि सखी श्री अमलावती-श्री बाईज्यूराजजी हैं। उनके द्वारा की हुई अर्ज जयन्तीदास भाई पुनः दोहराकर श्रीजी के कान में स्पष्ट कर देते हैं।

ज. ९ - चर्चा से उठकर श्रीजी स्वरूप सीधे स्नान के स्थान पर जाकर स्नान हेतु चौकी पर विराजमान होते हैं।

ज. १०- चौकी पर विराजमान होते ही श्री धामधनी स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी को झीलना-स्नान कराने की सेवा के लिए चारों ओर से ब्रह्मात्माएँ घेर लेती हैं।

ज. ११- गोदावरीबाई और गंगाराम भाई कटोरी में तेल लेकर आते हैं और उससे श्रीजी के शरीर की मालिश करते हैं।

→ शामिल हैं-अगरदासजी, गुलजी भाई और बंशी भाई। इनके साथ-साथ सीताराम भाई भी इस सेवा में तत्पर रहने के लिए सम्मिलित रहते हैं।

ज. १३- श्रीजी स्वरूप के शरीर पर तेल मर्दन करने के बाद तेल की प्रसादी सुन्दरसाथ में वितरण करने की सेवा गंगाराम भाई करते हैं।

स. १४-इस वक्त लालदासजी क्या-क्या लेकर आते हैं? पुनः मानिकबाई इस समय क्या सेवा करती हैं?

स. १५-गंगाराम भाई और भगवान भाई इस समय कौनसी सेवा करते हैं?

स. १६-सेवा करते समय किनके मन में तनिक भी अभिमान नहीं रहता है?

स. १७-इस वक्त कन्नड़ भाई और गंगाराम भाई क्या गाते हैं? पुनः दूसरी ओर ताराबाई क्या करती हैं?

ज. १७- कन्नड़ भाई और गंगाराम भाई धनी को झीलना-स्नान कराते →

स. १८-स्नान के समय मानबाई क्या, किसके लिए और क्यों लेकर आती हैं?

स. १९-मानबाई चौकी लाने की सेवा करती हैं, तो रतनबाई कौनसी सेवा करती हैं?

स. २०-निश्चित समय पर चन्दन की खड़ाऊँ लेकर उपस्थित होनेवाले और पाटली पर चादर बिछाने की सेवा करनेवाले कौन-कौन हैं?

स. २१-श्रीजी साहेबजी के स्नान के समय चन्द्रवा लगाने की सेवा किसकी है?

स. २२-श्रीजी साहेबजी को प्रेमपूर्वक स्नान कौन कराते हैं? इनके साथ अन्य कौन हैं?

ज. २२- धामधनी श्री प्राणनाथजी को मानिक भाई प्रेमपूर्वक स्नान कराते →

ज. १४- इस वक्त श्री लालदासजी महाराज धोती-पोती, अँगोछा और पीताम्बर लेकर आते हैं। मानिकबाई इस समय स्नान के लिए उपयुक्त गर्म जल लाने की सेवा करती हैं।

ज. १५- गंगाराम भाई और भगवान भाई गर्म जल में मिलाने के लिए ठंडा जल लाने की सेवा करते हैं।

ज. १६- श्री धामधनी को झीलना-स्नान कराते समय भगवान भाई और गंगाराम भाई के मन में तनिक भी अभिमान नहीं रहता है।

→ वक्त रास लीला के पश्चात् गायी हुई झीलना रामत *"अनी हां रे झीलण रंग सोहामणां रे"* का गान करते हैं। पुनः दूसरी ओर ताराबाई बैठकर उसे दोहराने की सेवा करती हैं।

ज. १८- मानबाई स्नान के समय श्रीजी के बैठने के लिए चौकी लाने की सेवा करती हैं।

ज. १९- मानबाई द्वारा लाई हुई चौकी पर बैठकर आगे चरण रखने के लिए रतनबाई एक पाटली अर्थात् एक छोटी चौकी प्रेमभरे दिल से लाकर रखती हैं।

ज. २०- रामबाई समय-समय पर श्री धामधनीजी के लिए चन्दन की खड़ाऊँ लेकर उपस्थित होती हैं, तो पाटली पर पाँवड़े के रूप में चादर बिछाने की सेवा में रतनबाई हाजिर होती हैं।

ज. २१- श्रीजी साहेब श्री प्राणनाथजी स्वरूप के स्नान करते समय ऊपर चन्द्रवा लगाने की सेवा रतनबाई करती हैं।

→ हैं। झीलना-स्नान के समय मानिक भाई के साथ श्री लालदासजी भी इस सेवा में रहते हैं और बड़े उमंग के साथ लोटे से पानी उड़ेलते और डालते हुए धामधनी स्वरूप को स्नान कराते हैं।

स. २३-लच्छीदास भाई और वृन्दावन भाई क्या सेवा करते हैं? लालबाई आनन्दविभोर होकर क्या देती हैं?

स. २४-इस वक्त यदि महाराजा छत्रसाल आ पहुँचते हैं, तो वे क्या करने लगते हैं?

स. २५-लालबाई क्या लेकर आती हैं? स्नान के पश्चात् श्रीजी का शरीर कौन पोंछते हैं? इस सेवा में अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

स. २६-किन्हें स्नान कराते समय ब्रह्मात्माएँ झीलना की रामत गाते हैं? पुनः इस समय श्री राजजी राजाराम भाई की पुत्री ललिता के साथ क्या मसखरी करते हैं?

ज. २६- धामधनी श्री प्राणनाथजी को झीलना-स्नान कराने के लिए सभी ब्रह्मात्माएँ उन्हें घेरकर खड़ी हो जाती हैं और *"अनी हां रे* →

स. २७-किस वक्त ब्रह्मात्माएँ आपस में आनन्दमयी हाँसी-विनोद करती हैं?

स. २८-झीलना-स्नान के जल में लोट-पोट होनेवाले भाई कौन हैं और कैसे हैं?

ज. २८- धामधनी श्रीजी साहेबजी जिस स्थान पर झीलना-स्नान करते →

स. २९-ब्रह्मसृष्टियों की विशेषता को अंकित करते हुए कुरान ग्रन्थ में क्या कहा है?

ज. २३- लच्छीदास भाई और वृन्दावन भाई स्नान के बाद श्रीजी स्वरूप के शरीर पोंछने की सेवा करते हैं। इस समय लालबाई आनन्दविभोर होकर श्रीजी साहेबजी को रूमाल देती हैं।

ज. २४- इस वक्त यदि महाराजा छत्रसाल आ पहुँचते हैं, तो वे तुरन्त श्रीजी साहेबजी के शरीर पोंछने की सेवा करने लगते हैं और हाथ पकड़कर उन्हें उठाने में सहयोग करते हैं।

ज. २५- लालबाई इस वक्त रूमाल लेकर हाजिर होती हैं और इस रूमाल से श्री बाईज्यूराज श्रीजी साहेब के शरीर पोंछने की सेवा करती हैं। इस सेवा में प्रेमदास भाई भी बड़े प्रेमभरे दिल से शामिल हो जाते हैं।

→ *झीलण रंग सोहामणां रे"* नामक रामत गाते हुए उन्हें झीलना-स्नान कराने लगती हैं। झीलना-स्नान करते समय बीच-बीच में श्री राजजी लोटे में जल भरकर ललिता सखी पर डाल देते हैं और उनके सारे वस्त्र भिगो देते हैं। इस प्रसंग द्वारा सबमें बड़ी हँसी और कलोल हो उठता है।

ज. २७- झीलना-स्नान के समय ब्रह्मात्माएँ परस्पर आनन्दमयी क्रीड़ाओं द्वारा हाँसी-विनोद करती हैं और धामधनी श्रीजी साहेब मधुर वचनों द्वारा सबसे बातें करते हैं।

→ हैं, वहाँ धामधनी द्वारा स्नान किए हुए बहते जल में शोभादास भाई लोट-पोट होकर आनन्द लेते हैं। वे साधु भेष में पवित्र मन से जमात के बीच रहते हैं ।

ज. २९- ब्रह्मात्माएँ-मोमिन ब्रह्म-खुदा की अभिन्न दोस्त हैं। उन्हें सद्ग्रन्थ कुरान शरीफ़ में अपने गुण, अंग, इन्द्रियों के विकारों का दुश्मन बताया गया है अर्थात् वे अपने गुण, अंग, इन्द्रियों के अनुकूल →

→ न बनकर उन्हें माया के मुख्र से बचाकर धनी के चरण प्राप्त →

स. ३०-इस समय केशवदासजी और लालदासजी क्या करते हैं?

स. ३१-स्नान के पश्चात् लालदासजी और प्रेमदास भाई क्या करते हैं? पुनः श्रीजी को कम्बल-थुरमा ओढ़ाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ३२-इस समय वल्लभदास भाई क्या लाकर श्रीजी के चरणों के समीप रख देते हैं? तदुपरान्त श्रीजी किनके बिछाए हुए पाँवड़े पर चलते हैं?

स. ३३-किसके द्वारा बिछाए हुए रेशमी पाँवड़े पर चलकर, श्री राजजी कहाँ विराजते हैं?

स. ३४-तीसरा पाँवड़ा किसने बिछाया, जिस पर श्रीजी मन मोहित कर देनेवाली चाल से चलते हैं? उस समय श्रीजी को घेरकर चलनेवाली सखियाँ क्या करती हैं?

स. ३५-समस्त सुन्दरसाथ के लिए प्रतिदिन दोना-पत्तल बनाने की सेवा कौन करते हैं तथा उनके साथ उस सेवा में अन्य कौन शामिल हैं?

स. ३६-श्रीजी को आरोगाने के लिए थाल लेकर कौन आती हैं? थाल लेकर आनेवाली सखी के ऊपर चन्द्रवा पकड़कर कितनी सखियाँ चलती हैं?

→ करानेवाले मार्ग की ओर मोड़ लेते हैं। यही इन ब्रह्मात्माओं-मोमिनों की विशेषता है।

ज. ३०- इस समय श्री केशवदासजी वाणी लाकर उसका पारायण करते हैं और श्री लालदासजी कुरान में से वाणी के उन्हीं प्रसंगों से संबंधित आयतों को ढूँढ़कर श्रीजी को सुनाते हैं।

ज. ३१- स्नान करने के बाद लालदासजी और प्रेमदास भाई धनी को पीताम्बर पहनाते हैं और महाराजा छत्रसाल एक विशेष थुरमा अर्थात् एक दोहरी पहाड़ी कम्बल श्रीजी स्वरूप को ओढ़ाते हैं।

ज. ३२- इस समय श्री वल्लभदास भाई रत्नों से जड़ा हुआ पनही (खड़ाऊँ) का जोड़ा लाकर श्रीजी के चरणों के समीप रख देते हैं। तदुपरान्त रतनबाई द्वारा बिछाए हुए पाँवड़े पर श्री प्राणनाथजी हर्ष-उमंग से चलते हैं।

ज. ३३- दीपाबाई द्वारा बिछाए हुए रेशमी पाँवड़े पर चलकर श्री प्राणनाथजी आरोगने के लिए रसोई के स्थान पर विराजते हैं।

ज. ३४- तीसरा पाँवड़ा बकाई ने बिछाया। उस पर श्रीजी मनमोहनी चाल से चलते हैं। उन्हें घेरकर चलनेवाली सखियाँ सुमधुर स्वर में वाणी गायन करती हैं।

ज. ३५- समस्त सुन्दरसाथ के लिए प्रतिदिन भोजन के लिए दोना-पत्तल तैयार करने की सेवा खेमदासजी करते हैं। उनके साथ इस सेवा में सीताराम भाई भी शामिल रहते हैं।

ज. ३६- श्रीजी साहेबजी को आरोगाने के लिए भोजन की थाली लेकर श्री बाईज्यूराज आती हैं। उनके साथ चार सखियाँ थाल के ऊपर चन्द्रवा पकड़कर चलती हैं।

स. ३७-चाँदी की बड़ी थाली को रूमाल से अच्छी तरह पोंछने की सेवा करनेवाली कौन है? तत्पश्चात् वह थाली कौन लेती हैं?

स. ३८-चाँदी की उस थाली में कितनी कटोरियाँ हैं और वे किन-किन धातुओं की बनी हुई हैं?

स. ३९-धामधनी श्रीजी साहेबजी के लिए "राजभोग" की थाली कौन सजाता है? इस समय श्री बाईज्यूराज अन्य सखियों को किस लिए सावधान रहने की सलाह देती हैं?

स. ४०-श्री बाईज्यूराज कब, कितने बजे श्री राजजी को आरोगाने के लिए थाल लेकर आती हैं? उस सेवा में अन्य कौन-कौन उनके साथ चलती हैं?

स. ४१-श्री बाईज्यूराज के आगे-आगे पाँवड़ा बिछाने की सेवा कौन करती है? पुनः बिहारीदास भाई उस वक्त कौन-सी सेवा करते हैं?

स. ४२-रेशमी गादी और चौकी बिछाने तथा गादी पर तकिये रखने की सेवा कौन करते हैं?

स. ४३-श्री राजजी उस गादी पर कब बैठते हैं? श्रीजी को सम्मानपूर्वक हाथ पकड़कर बैठानेवालों में दोनों ओर कौन-कौन हैं?

ज. ३७- चाँदी की बड़ी थाली को आशबाई सर्वप्रथम प्रेमपूर्वक अच्छी तरह सँवारकर स्वच्छ रूमाल से पोंछती हैं। तत्पश्चात् उस थाली को श्री बाईज्यूराज अपने हाथ में ले लेती हैं।

ज. ३८- चाँदी की उस थाल में किनार में फिरती दस कटोरियाँ हैं, जो सोने और चाँदी नामक धातु से बनी हुई हैं।

ज. ३९- श्री बाईज्यूराज धामधनी श्रीजी साहेबजी के "*राजभोग*" की थाली को दस कटोरियों सहित प्रेमपूर्वक सजाती हैं। उन कटोरियों में शाक-तरकारियाँ आदि अन्य विभिन्न पकवान व्यवस्थित करती हैं। तत्पश्चात् वे अन्य सखियों को जरूरत की चीजें लाने के लिए सावधानी बरतने की सलाह देती हैं।

ज. ४०- श्री बाईज्यूराज श्रीजी स्वरूप को "*राजभोग*" आरोगाने के लिए दोपहर को सवा ग्यारह बजे थाल लेकर आती हैं। श्री बाईज्यूराजजी को घेरकर इस समय तुलसी, राधा और रुकमनी नामक अन्य सखियाँ भी उनके साथ चलती हैं।

ज. ४१- "*राजभोग*" की थाल लेकर चलते समय श्री बाईज्यूराजजी के आगे-आगे पाँवड़ा बिछाने की सेवा करनाबाई करती हैं। इस वक्त सिंहासन के सामने गादी बिछाने की सेवा बिहारीदास भाई करते हैं।

ज. ४२- सिंहासन के सामने चौकी रखने, रेशमी गादी बिछाने और उस गादी के दोनों ओर दो तकिये रखने की सेवा बिहारीदास भाई करते हैं।

ज. ४३- श्री प्राणनाथजी उस गादी पर भोजन आरोगने के समय बैठते हैं। बैठते समय उन्हें सहारा देकर सम्मानपूर्वक बैठाने की सेवा के लिए एक ओर लालबाई हैं, तो दूसरी ओर धनबाई हैं।

स. ४४-इस वक्त जब श्रीजी स्वरूप गादी पर विराजते हैं, तब ललिताबाई क्या कहती हैं? उनकी मुख्य सेवा क्या है?

ज. ४४- यहाँ इस वक्त जब धामधनी स्वरूप गादी पर बैठते हैं, तो →

स. ४५-कौन श्री प्राणनाथजी स्वरूप के सामने बैठकर वाणी गाते हैं? उनके साथ वाणी गाने में अन्य कौन-कौन सम्मिलित रहते हैं?

स. ४६-इस समय स्वाभिमानपूर्वक चौकी रखने की और उस पर झालर लगा रूमाल बिछाने की सेवा कौन करती हैं?

स. ४७-उक्त चौकी पर थाल रखकर आरोगाने की सेवा कौन करती हैं? श्रीजी को आरोगाने के लिए विशेषकर कौन-कौन बैठते हैं?

स. ४८-इस वक्त हाथ में चिलमची लेकर सेवा में कौन तत्पर रहते हैं? श्रीजी के हाथ धुलाने की सेवा कौन करती हैं? पुनः रूमाल लेकर श्रीजी के हाथ पोंछने की सेवा कौन करती हैं?

स. ४९-श्री बाईज्यूराजजी श्रीजी को आरोगाने के लिए क्या अकेली आती हैं? इस वक्त शंकरदास भाई क्यों उपस्थित रहते हैं?

स. ५०-सखियों की टोली में सिरदार कौन हैं ? श्रीजी को आरोगाते समय वे सुन्दरसाथ द्वारा सेवा प्राप्ति के इंतजार में किस तरह तत्पर रहते हैं?

ज. ५०- जयन्ती काका सब सखियों की टोली में सिरदार हैं। यसर्थ वे →

→ ललिताबाई *"खम्मा-खम्मा"* का जयघोष लगाती हैं। श्री राजजी के बैठते और उठते समय *"खम्मा-खम्मा"* जयघोष लगाना ही ललिताबाई की मुख्य सेवा है।

ज. ४५- श्री प्राणनाथजी के सामने श्री मुकुन्ददासजी वाणी गाते हैं। उनके साथ वाणी गाने में कन्नड़ भाई, परमानन्द भाई, बिंदा भाई और गंगाराम भाई शामिल हैं।

ज. ४६- इस समय बड़े स्वाभिमानपूर्वक मानबाई चौकी रखकर उस चौकी पर झालर लगा हुआ रूमाल बिछाया करती हैं।

ज. ४७- उपरोक्त चौकी पर थाल रखकर श्रीजी स्वरूप को आरोगाने के लिए श्री बाईज्यूराजजी उनके पास ही बैठती हैं। श्रीजी के सम्मुख आईजी बैठती हैं।

ज. ४८- इस समय मानिक भाई हाथ में चिलमची लेकर सेवा में तत्पर रहते हैं। उस चिलमची द्वारा श्री बाईज्यूराजजी श्रीजी के हाथ धुलाती हैं। पुनः हाथ पोंछने के लिए लालबाई रूमाल लेकर आती हैं और धामधनी के हाथ पोंछ देती हैं।

ज. ४९- श्री बाईज्यूराजजी श्रीजी को राजभोग आरोगाने के लिए अकेली नहीं आती हैं। वे तो अपनी सखी समूह के साथ धनी को आरोगाने के लिए थाल लेकर आती हैं। इस वक्त शंकरदास भाई सेवा के इंतजार में उपस्थित रहते हैं।

→ आगे-आगे रहते हैं। आरोगाने के समय उन्हें सुन्दरसाथ की सेवा का जो भी बाह्य सेवा-कार्य मिल जाता है, उसे वे बड़ी सावधानी से पूरा करते हैं। इस प्रकार वे सदैव सेवा प्राप्ति के इंतजार में ही रहते हैं।

स. ५१-कौन भाई रात-दिन रसोई के कार्यों में मस्त रहते हैं, जो बाद में लौटकर अपनी न्यात-बिरादरी, अपने घर-परिवार में सम्मिलित हो गये?

स. ५२-आरोगते समय श्रीजी साहेबजी के सिर पर ज़री-बूटे की कढ़ाईवाला रूमाल बाँधने की सेवा कौन करता है? उस समय श्रीजी कैसी बातें करते हैं?

स. ५३-आरोगते समय ज़री-बूटीयुक्त कढ़ाईवाला बड़ा रूमाल श्रीजी को ओढ़ाने की सेवा किसकी है?

स. ५४-गुलाब जल में भिगोकर श्रीजी को रूमाल देने की सेवा किसकी है? वे अन्य कौनसी सेवा करती है?

स. ५५-कौन-कौन सखी अपनी-अपनी बारी में थाल लेकर आती हैं?

स. ५६-श्री बाईज्यूराज किस समय सदैव श्रीजी के समीप ही विराजमान रहती हैं? आरोगते समय श्रीजी किससे अपनी रुचिपूर्ण वस्तुएँ माँगते हैं?

स. ५७-श्री बाईज्यूराज श्रीजी की वांछित वस्तुएँ किस तरह परोसती हैं? भोजन करते समय श्रीजी बीच-बीच में क्या करते हैं?

ज. ५७- श्रीजी के इच्छानुकूल वस्तुएँ मँगाकर श्री बाईज्यूराज बड़े प्रेम से →

ज. ५१- सूरजमन भाई रात-दिन रसोई के कार्यों में ही डटे रहते हैं। इस प्रकार इन्होंने धाम के सुन्दरसाथ की कुछ समय तक सेवा की। कुछ दिनों के पश्चात् वे पुनः अपनी न्यात-बिरादरी, अपने घर-परिवार के पास वापस लौटकर उन्हीं में सम्मिलित हो गये।

ज. ५२- आरोगते समय धामधनी श्रीजी साहेब के सिर पर ज़री-बूटे की कढ़ाईवाला रूमाल बाँधने की सेवा मानिकबाई करती हैं। उस समय धामधनी श्रीजी उनसे मधुर वाणी में सारगर्भित बातें करते हैं।

ज. ५३- आरोगते समय धामधनी श्रीजी को ज़री-बूटीयुक्त कढ़ाईवाला बड़ा रूमाल ओढ़ाने की सेवा लालबाई अर्थात् लालदासजी की धर्मपत्नी की है।

ज. ५४- गुलाब जल में रूमाल भिगोकर मुग्ध मन से श्रीजी को देने की सेवा मथुरीबाई की है। श्रीजी के मस्तक पर तिलक के बीच छोटी बिन्दी करने की सेवा भी इन्हीं की है।

ज. ५५- हिमोतीबाई और मथुरीबाई ये दोनों अपनी-अपनी बारी में थाल लेकर आती हैं।

ज. ५६- जब धामधनी भोजन आरोगने के लिए बैठते हैं, तब श्री बाईज्यूराज सदैव उनके समीप विराजमान रहती हैं तथा उनके रुचिपूर्वक वांछित वस्तुएँ मँगाकर उन्हें प्रेमपूर्वक आरोगाती हैं और श्रीजी भी अपनी रुचि मुताबिक वस्तुएँ श्री बाईजी से माँगते हैं।

→ उनकी थाली में परोसती हैं। श्रीजी भी शाक-तरकारी, विभिन्न प्रकार के अचारादि वस्तुएँ इच्छानुकूल बड़े प्रेम से स्वीकारते हैं। पुनः भोजन करते समय बीच-बीच में तरह-तरह की बातों द्वारा श्रीजी सभी को आनन्दित भी करते हैं।

स. ५८-भोजन करते समय दोनों ओर बैठकर श्रीजी द्वारा बोली हुई चौपाई तुरन्त लिखनेवाले भाई कौन-कौन हैं?

ज. ५८- श्रीजी को भोजन आरोगाते समय श्रीजी के एक ओर श्री →

स. ५९-आरोगते समय कौन भाई उपस्थित होकर हदीसों के ज्ञान की साक्षियाँ याद करके श्रीजी को सुनाते हैं?

स. ६०-आरोगते समय श्रीजी द्वारा जो प्रसाद सखियों में वितरित होता है, उस प्रसाद का स्वाद कौन लेते हैं?

स. ६१-इस समय अपनी-अपनी भावनानुसार श्रीजी को आरोगाने के लिए अपने-अपने घरों से भोजन-सामग्री लानेवालों में अग्रगण्य कौन-कौन हैं? वे क्या लेकर आती हैं?

स. ६२-इस समय बंगलाजी में कौन-कौन आती हैं और कौनसी सेवा करती हैं?

स. ६३-इस वक्त बिहारीदास और वल्लभदास भाई कौनसी सेवा करते हैं?

स. ६४ धरमाबाई अपना धर्म कैसे पालन करती हैं? इनके द्वारा बनाई हुई रोटी श्री राजजी बड़े चाव से ग्रहण क्यों करते हैं? इनमें क्या खूबी है?

ज. ६४- श्री प्राणनाथजी को आरोगाते समय अपना कर्तव्य पालन करने →

→ लालदासजी बैठते हैं, तो दूसरी ओर श्री केशवदासजी। भोजन आरोगते समय श्रीजी जो चौपाइयाँ बोलते हैं, उन्हें ये दोनों भाई लिखते जाते हैं।

ज. ५९- जब श्री धामधनी स्वरूप श्रीजी भोजन आरोगने बैठते हैं, तब श्री गोकुलदास भाई भी उपस्थित रहते हैं तथा वे हदीसों के ज्ञान की साक्षियाँ स्मरण कर श्रीजी को सुनाते हैं।

ज. ६०- आरोगते समय श्रीजी जो प्रसाद सुन्दरसाथ में वितरित करते हैं, सखियों द्वारा लिए हुए उस प्रसाद का स्वाद राजाराम भाई को मिलता है।

ज. ६१- इस वक्त अन्य सुन्दरसाथ भी भावुक होकर अपने-अपने घरों से धामधनी श्री राजजी के लिए कुछ न कुछ बनाकर लाते हैं। इनमें से अग्रगण्य रतनबाई और पूरबाई श्रीजी के लिए मूँग लेकर आती हैं।

ज. ६२- इस समय बड़े प्रेम से श्री बंगलाजी में प्रेमबाई, पुनः सीताबाई और सुआबाई आती हैं और अपने हाथों से रूमाल लेकर थाल के ऊपर हिलाने की सेवा करती हैं।

ज. ६३- बिहारीदास भाई भी इस समय उक्त सखियों के साथ हाथ में रूमाल लेकर हिलाने की सेवा करते हैं। श्री वल्लभदास भाई तो इस वक्त गादी के पीछे छत्र लिए खड़े रहते हैं।

→ की भावना से धरमाबाई प्रतिदिन बड़े प्रेम से नरम-नरम रोटी लेकर आती हैं। पवित्र-कोमल दिल से बनाई हुई उनकी रोटी श्रीजी बड़े चाव से ग्रहण करते हैं क्योंकि उनकी रोटी नरम में नरम है। नरम में नरम रोटी बनाने की कला ही इनके हाथों की विशेषता है।

स. ६५-श्रीजी के दाईं-बाईं ओर कौन-कौन रहती हैं और क्यों रहती हैं?

ज. ६५- खड़गोबाई और हनुमन्तबाई भण्डारिन आरोगते समय श्रीजी →

स. ६६-इस समय बंगलाजी में कहीं भी खाली जगह क्यों नहीं दिखाई देती?

स. ६७-इस वक्त जल और पीकदान की सेवा के इंतजार में कौन-कौन उपस्थित रहते हैं?

ज. ६७- आरोगते समय जब बीच में श्रीजी को जल की जरूरत पड़ती है, →

स. ६८-गादी के दोनों ओर दो पीकदान लेकर श्रीजी के समीप में ही कौन खड़े रहते हैं?

स. ६९-शंकरदास भाई और राघवदास भाई कौनसी सेवा में सम्मिलित रहते हैं?

स. ७०-कौन-कौन भाई पीकदान लेकर खड़े-खड़े चँवर भी डुलाते हैं?

स. ७१-कौनसी सेवा द्वारा केशवदासजी और लालदासजी श्रीजी को रिझाते हैं?

स. ७२-चिप्पी में चने लेकर आनेवाले भाई कौन हैं? श्रीजी उनके भूने हुए चने कैसे ग्रहण करते हैं?

→ साहेबजी की दाईं-बाईं ओर बैठती हैं और श्रीजी को किस वस्तु की जरूरत पड़ेगी, इसी बात के इंतजार में रहती हैं। जरूरत पड़ने पर वांछित वस्तुएँ भाग-भागकर ले आती हैं।

ज. ६६- इस समय श्रीजी को आरोगाने के लिए सभी सुन्दरसाथ बंगलाजी में एकत्रित होते हैं। बंगलाजी इस तरह भर जाता है कि एक भी जगह खाली नहीं दिखाई देती।

→ तब छबीलदास भाई स्वच्छ जल लेकर श्रीजी को अर्पण करने के लिए तत्पर रहते हैं। पुनः कुल्ला करवाने के लिए पीकदान लेकर विशेष सेवक वल्लभदास भाई इंतजार में खड़े रहते हैं।

ज. ६८- महामति स्वरूप की गादी के दोनों ओर एक-एक पीकदान रहता है। उनमें से एक पीकदान लेकर शंकरदास भाई और दूसरा पीकदान लेकर संतदास भाई अत्यंत समीप में खड़े रहते हैं।

ज. ६९- शंकरदास भाई और राघवदास भाई तम्बोल बाँटने की सेवा में सम्मिलित रहते हैं।

ज. ७०- शंकरदास और मुरलीधर-ये दोनों भाई चँवर डुलाने की सेवा करने के साथ-साथ पीकदान लेकर श्रीजी की सेवा में हाजिर रहने की सेवा भी करते हैं।

ज. ७१- श्रीजी स्वरूप के मुखारविंद से अवतरित चौपाइयों को लिखने की सेवा करके लालदासजी और केशवदासजी श्री प्राणनाथजी स्वरूप को रिझाते हैं।

ज. ७२- आरोगते समय श्रीजी साहेबजी के लिए चिप्पी में भूने हुए चने लेकर प्रेमपूर्वक मयाराम भाई आते हैं। उनके द्वारा प्रेमपूर्वक लाए हुए चने श्रीजी चुटकी से लेकर आरोगते हैं।

स. ७३-श्री बाईज्यूराज इस समय क्या-क्या लाती हैं और प्रेमपूर्वक श्रीजी को अर्पण करती हैं?

स. ७४-श्रीजी के थाल का प्रसाद सबमें बाँटने की सेवा कौन करती हैं?

स. ७५-श्रीजी साहेबजी ने किसे अपना प्रसाद साथ में वितरण करने की सेवा स्वयं प्रदान की है?

ज. ७५- श्रीजी साहेबजी ने समस्त सुहागिनों में अपने थाल का प्रसाद →

स. ७६-क्या पाकर धाम की ब्रह्मनिष्ठ दुलहिन आत्माएँ लाभान्वित होती हैं?

स. ७७-आरोग लेने के पश्चात् श्रीजी को रूमाल लाकर देने की सेवा विशेषकर कौन करती हैं?

स. ७८-आरोग लेने के पश्चात् श्रीजी को प्रसन्नचित्त मन से रूमाल देने के लिए कभी-कभी कौन तत्पर रहती हैं?

स. ७९-श्रीजी को सुपारी लाकर देने की सेवा कौन-कौन भाई करते हैं?

स. ८०-सुपारी की सेवा करनेवाले उक्त दो भाइयों से भी आगे होकर इसी सेवा को प्रस्तुत करनेवाले भाई कौन हैं?

स. ८१-पान का बीड़ा लेकर आने की सेवा अभी कौन करते हैं? उनके पहले यह सेवा कौन करता था?

ज. ७३- इस समय श्री बाईज्यूराज दूध, दही और श्रीखण्ड बनाकर लाती हैं और प्रेमपूर्वक श्रीजी को अर्पण करती हैं।

ज. ७४- श्रीजी के थाल का प्रसाद सबमें बाँटने की सेवा लालबाई करती हैं।

→ बाँटने की सेवा स्वयं लालबाई को प्रदान की है। यसर्थ यह सेवा लालबाई ध्यानपूर्वक करती हैं। कोई भी प्रसाद से वंचित न रह जाय, इस बात के प्रति बड़ा सतर्क होकर लालबाई अपनी सेवा निभाती हैं।

स. ७६- अपने धाम के धनी श्रीजी साहेब का प्रसाद पाकर धाम की बह्मनिष्ठ सुहागिन आत्माओं सहित सभी लोग लाभान्वित होते हैं।

ज. ७७- श्रीजी के आरोग लेने के बाद रूमाल लाकर आगे रखने की सेवा विशेषकर रामबाई की ही रहती है।

ज. ७८- इस वक्त सेवा के लिए हरबाई भी हाथ में रूमाल लेकर प्रसन्नचित्त होकर तत्पर रहती हैं और उचित समय पर रूमाल अर्पण करती हैं।

ज. ७९- सुपारी लाकर श्रीजी साहेबजी की सेवा में प्रस्तुत करनेवाले एक तो गीगा भाई हैं और दूसरे मानिक भाई हैं।

ज. ८०- उक्त दोनों भाइयों से भी आगे होकर श्रीजी को सुपारी अर्पित करने की सेवा में स्याने होकर तत्पर रहनेवाले भाई का नाम है- छबीलदास भाई।

ज. ८१- श्रीजी के लिए पान का बीड़ा लेकर सेवा में उपस्थित रहनेवाले भाई का नाम है - प्रहलाद भाई । इनके पहले यही सेवा कल्याण भाई करते थे।

स. ८२-श्रीजी साहेबजी की सेवा में पान का बीड़ा अर्पण करने की सेवा कौन करते हैं और उनके साथ अन्य कौन शामिल हैं?

स. ८३-पान का बीड़ा तैयार करने की सेवा करनेवाली सेविका कौन हैं? पुनः पान के पत्ते पोंछकर उसमें कत्था-चूना के साथ अन्य क्या-क्या डालते हैं और यह सेवा कौन करता है?

स. ८४-मुकुन्ददास भाई अपने पास क्या रखते हैं, जिसे वे समय पर श्रीजी को अर्पित करते हैं?

स. ८५-महामति श्री प्राणनाथजी को श्री बाईज्यूराज क्या अर्पित करती हैं और उसके साथ क्या लगाकर देती हैं?

स. ८६-कौन महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप को तम्बोल के साथ पान का बीड़ा अर्पण करते हैं? "कोई नहीं सेवा इन तोल"-ऐसा कौन, किससे कहते हैं?

स. ८७-अन्य साथियों के आग्रह करने पर किसने और कौनसी सेवा छोड़ दी?

स. ८८-बेनीदास भाई ने कुछ दिनों तक क्या रखने की सेवा की?

स. ८९ महामति स्वरूप बहुत आनन्दित होकर क्या ग्रहण करते हैं?

ज. ८२- पान का बीड़ा अर्पण करने की सेवा में प्रहलाद भाई के साथ सम्मिलित रहनेवाले भाई का नाम है-सम्पत भाई ।

ज. ८३- पान का बीड़ा तैयार करने की सेवा करनेवाली सेविका हैं - स्वयं श्री बाईज्यूराज। वे ही पान के पत्तों को पोंछकर स्वच्छ करती हैं और उसमें कत्था, चूना, लवंग, जावित्री और जायफल आदि मसाला डालकर युक्तिपूर्वक भलीभाँति बीड़ा तैयार करती हैं।

ज. ८४- मुकुन्ददास भाई हमेशा अपने पास कपूरदानी रखते हैं और जरूरत पड़ते ही श्रीजी साहेबजी को उसमें से कपूर निकालकर अर्पण करते हैं।

ज. ८५- श्री बाईज्यूराज महामति श्री प्राणनाथजी को उनकी इच्छा के अनुकूल रुचता पान का बीड़ा बनाकर अर्पण करती हैं। उस पान के बीड़ा के साथ वे लवंग और इलायची भी लगाकर देती हैं।

ज. ८६- महाराजा छत्रसाल अपने हाथों से श्रीजी को तम्बोल सहित पान का बीड़ा अर्पण करते हैं। उनकी इस सेवा द्वारा प्रसन्न होकर धामधनी श्री प्राणनाथजी कहते हैं, *"कोई नहीं सेवा इन तोल"*।

ज. ८७- अन्य साथियों के आग्रह करने पर गिरधर मोनी ने अपनी पान की सेवा छोड़ दी। यह सेवा वे पहले सबसे आगे होकर करते थे।

ज. ८८- बेनीदास भाई ने कुछ दिनों तक कस्तूरी रखने की सेवा की। श्रीजी साहेबजी को जरूरत पड़ते ही वे बड़े प्रेम से उन्हें कस्तूरी अर्पित करते हैं।

ज. ८९ महामति स्वरूप बहुत आनन्दित होकर पान का बीड़ा ग्रहण करते हैं।

स. ९०-मानिक भाई के घर जाते समय श्रीजी को कैसे ले जाया जाता है? पुनः श्रीजी के हाथ पकड़कर उठाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ९१-गंगादास भाई क्या हाजिर करते हैं? श्रीजी कब अनूठी चाल से चलकर आनन्ददायक बातें करते हैं?

ज. ९१- गंगादास भाई सोने-चाँदी से मढ़ा हुआ आसा (एक प्रकार का →

स. ९२-इस वक्त महाराजा छत्रसाल आकर क्या करते हैं? पुनः श्रीजी दूसरा हाथ किस ओर बढ़ा देते हैं?

स. ९३-मानिक भाई के घर से लौटते समय श्रीजी स्वरूप के हाथ पकड़ने की सेवा कौन करते हैं? इस समय इनके साथ अन्य कौन शामिल हैं?

स. ९४-सेज बिछाने की सेवा कौन करते हैं और उनके साथ इस सेवा में दूसरे छोर पर कौन हैं? पुनः सेज सँवारने की सेवा कौन करते हैं?

स. ९५ श्रीजी के पलंग के चारों ओर पाँवड़े क्यों बिछाए जाते हैं? श्री राजजी कैसी चाल से चलकर पलंग पर आते हैं? सुन्दरसाथ यहाँ श्रीजी को कौन स्वरूप मानकर सेवा कर रहे हैं?

स. ९६-श्रीजी स्वरूप के साथ चलते समय सुन्दरसाथ कैसे चलते हैं? वे इस वक्त क्या गाते हुए चलते हैं? इस प्रकार की सेवा का लाभ कौन ले सकता है?

ज. ९६- कहीं भी हो, श्रीजी स्वरूप के साथ चलते समय सुन्दरसाथ उन्हें →

ज. ९०- मानिक भाई के घर जाते समय श्रीजी को पाँवड़ा बिछाकर ले जाया जाता है। श्रीजी के हाथ पकड़कर उठाने की सेवा लच्छीदास भाई करते हैं।

→ डंडा) श्री प्राणनाथजी की सेवा में प्रस्तुत करते हैं। इस वक्त श्रीजी स्वरूप हिलते-डोलते मनमोहक चाल से चलते हुए सबमें आनन्ददायी खुशियाली भर देते हैं।

ज. ९२- इस वक्त जब महाराजा छत्रसाल आ पहुँचते, तो वे चलते समय श्रीजी का हाथ थामने की सेवा करते हैं। पुनः श्रीजी स्वरूप अपना दूसरा हाथ लालदासजी की ओर बढ़ा देते हैं।

ज. ९३- मानिक भाई के घर से लौटते समय श्रीजी स्वरूप के हाथ पकड़ने की सेवा लालदासजी और प्रेमदास भाई करते हैं। इस सेवा में उनके साथ मकरन्ददास भाई भी शामिल हैं।

ज. ९४- अच्छी तरह से बड़े प्रेम से सेज बिछाने की सेवा द्वारिकादास भाई करते हैं। इस सेवा में उनके साथ दूसरे छोर पर प्रेमदास भाई संलग्न हैं। सेज सँवारने की सेवा अन्य प्रमुख सुन्दरसाथ भी करते हैं।

ज. ९५- श्रीजी के पलंग के चारों ओर परिक्रमा के लिए पाँवड़े बिछाए जाते हैं। श्री राजजी आश्चर्यचकित कर देनेवाली चाल से चलकर पलंग पर विराजमान होते हैं। यहाँ सुन्दरसाथ श्री प्राणनाथजी को अक्षरातीत श्री कृष्ण-श्री राजजी स्वरूप मानकर सेवा कर रहे हैं।

→ चारों ओर से घेरकर चलते हैं। घेरकर चलनेवाले सुन्दरसाथ इस समय श्रीजी स्वरूप के श्री मुख द्वारा अवतरित वाणी का गायन करते हुए चलते हैं। इस प्रकार की सेवा का लाभ वे ही ले सकते हैं, जिन-जिन पर कृपा करके श्री राजजी ने हाथ थामकर सहारा दिया है।

स. ९७- अपने प्रियतम श्री राजजी को सखियाँ कैसे रिझाती हैं? श्री राजजी उन्हें कैसे आनन्दित करते हुए चलते हैं?

स.९८- "इस सुख की तुलना में अन्य कोई सुख नहीं आ सकता"-ऐसा कहा है। अतः कौनसे सुख की चर्चा की जा रही है?

ज. ९८- परमधाम की सखियाँ परमधाम की मधुर वाणी गाकर अपने →

स. ९९- गानेवाले साथी किन-किन लीलाओं से संबंधित वाणी गाते हैं? क्या उन्होंने गाने के संबंध में कोई नियम बाँधा हुआ है?

स.१००- विशेषकर कहाँ की, कौनसी लीला से संबंधित वाणी का गान करनेवालों के प्रति प्रसन्न होकर श्री राजजी उन्हें और प्रोत्साहित करते हैं तथा स्नेह की बरसात करते हैं?

स.१०१- श्री बाईज्यूराज (तेजकुँवरी) गादी-तकिये आदि आगे रखने के लिए कब आती हैं?

स.१०२- धाम के धनी श्री प्राणनाथजी अपने सुन्दरसाथ को कैसे-किस तरह सुख देकर आनन्दित किया करते हैं?

स.१०३- कौनसे सुख का वर्णन करना, इस जिह्वा के लिए सर्वथा असंभव है?

ज.१०३- जागनी के ब्रह्माण्ड में श्री परमधाम के अखण्ड सुख के समान →

ज. ९७- अपने प्राणवल्लभ प्रियतम धनी श्री राजजी को सखियाँ परमधाम की मधुर वाणी गाकर रिझाती हैं। पुनः श्री राजजी भी उन्हें मधुर वचनों द्वारा आनन्दित करते हुए चलते हैं।

→ धनी को रिझाती हैं। पुनः धामधनी भी अपनी अंगनाओं को मधुर वचनों द्वारा आनन्दित करते हैं। अतः इसी सुख की चर्चा करते हुए कहा गया है कि *"इस सुख की तुलना में अन्य कोई सुख नहीं आ सकता।"*

ज. ९९- गानेवाले साथी प्रेमपूर्वक कभी रास लीला से संबंधित वाणी गाते हैं,तो कभी ब्रज लीला के प्रसंगों से संबंधित वाणी का गायन करते हैं। उन्होंने गाने के संबंध में कोई नियम बाँधा हुआ नहीं है।

ज.१००- विशेषकर जब गानेवाले सुन्दरसाथ श्री परमधाम की लीलाओं से संबंधित वाणी का गान करते हैं, तब उन पर अत्यंत प्रसन्न होकर स्नेह की वर्षा द्वारा श्री राजजी उन्हें और प्रोत्साहित करते हैं।

ज.१०१- श्री बाईज्यूराज (तेजकुँवरी) गादी-तकिये आदि आगे रखने के लिए तब आती हैं, जब श्री प्राणनाथजी राजभोग आरोगकर पलंग पर विराजमान होते हैं।

ज.१०२- धाम के धनी पूर्णब्रह्म स्वरूप श्री प्राणनाथजी अपने धामस्थ सुन्दरसाथ को अनेक प्रकार से स्नेह दिखाकर, पुनः बड़ी मीठी मधुर वाणी में उनसे बातें करके आनन्दित किया करते हैं।

→ जो सुख ब्रह्मात्माएँ अभी प्राप्त कर रही हैं, उस सुख का रहस्य तो धामस्थ ब्रह्मात्माएँ ही जान सकती हैं। अतः इस सुख का वर्णन करना इस जिह्वा के लिए सर्वथा असंभव है।

स.१०४- धामधनी श्री प्राणनाथजी की दिव्य प्रकाशमयी शय्या (सेज) कैसी प्रतीत होती है?

स.१०५- धामधनी श्रीजी स्वरूप के आस-पास और उन्हें घेरकर बैठी हुई ब्रह्मात्माएँ इस समय क्या करती हैं?

ज.१०५- धामधनी श्रीजी स्वरूप के आस-पास बैठी हुई ब्रह्मात्माएँ →

स.१०६- श्रीजी की अर्धांगिनी श्री बाईज्यूराज श्रीजी के चरण स्पर्श कर कब अपने स्थान पर लौट जाती हैं?

स.१०७- "ए बात बड़ी बुजरक"- ऐसा किस बात के लिए कहा गया है, स्पष्ट करो?

ज.१०७- *"यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है"*-ऐसा जागनी के ब्रह्माण्ड के लिए →

❋ तीसरा पहर ❋

स. १ - तीसरा पहर कहाँ से, कहाँ तक है?

स. २ - इस पहर में श्रीजी को अँगोछा लेकर पहनाने की सेवा में कौन उपस्थित रहते हैं?

स. ३ - नन्दराम भाई श्री राजजी के पीछे क्या लिये खड़े रहते हैं?

स. ४ - तीसरे पहर के सेवा के साथी कब उपस्थित होते हैं? श्रीजी पलंग पर लेटे-लेटे उन्हें किन सुखों की अनुभूति कराते हैं?

ज.१०४- धाम के धनी महामति श्री प्राणनाथजी की दिव्यातिदिव्य प्रकाशमयी शय्या (सेज) अत्यधिक प्यारी, लाल रंग की प्रतीत होती है।

→ अत्यन्त प्रेम से श्रीजी स्वरूप की सेवा करती हैं और उन्हें घेरकर बैठी सखियाँ बारम्बार उनके चरणों में प्रणाम करके वापस लौट जाती हैं।

ज.१०६- श्रीजी की अर्धांगिनी श्री बाईज्यूराज, जब धामधनी श्रीजी स्वरूप मनमोहिनी चाल से चलकर पलंग पर विराजमान होते हैं, तब उनके चरण स्पर्श कर अपने स्थान पर लौट जाती हैं।

→ कहा गया है क्योंकि जागनी के ब्रह्माण्ड की बातें अधिकाधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

- (प्रकरण ६५, सवाल-जवाब नं. १०७,कुल सं. ४६८२+१०७ =४७८९)।

❀ तीसरा पहर ❀

ज. १ - तीसरा पहर दोपहर के बारह बजे से लेकर तीन बजे तक है।

ज. २ - इस पहर में श्रीजी साहेबजी को अँगोछा लेकर पहनाने के लिए प्रेमभरे दिल से प्रेमदासजी आते हैं।

ज. ३ - नन्दराम भाई श्री राजजी के पीछे थैली में गोटा और कनढपी लिए खड़े रहते हैं।

ज. ४ - तीसरे पहर के सेवा के साथी सेवा में तब उपस्थित होते हैं, जब प्रियतम धनी श्री प्राणनाथजी पलंग पर लेट जाते हैं। इस वक्त श्रीजी सुमधुर वाणी में ब्रह्मात्माओं को श्री परमधाम के नित्य शाश्वत सुखों की अनुभूति कराते हैं।

स. ५ - श्रीजी साहेबजी के अंग सहलाने की सेवा किसकी है? इस वक्त कौनसे सुन्दरसाथ प्रणाम कर वापस चले गए और कौनसे सुन्दरसाथ श्रीजी के पास उपस्थित रहे?

स. ६ - कौनसी सखी इस समय श्रीजी साहेब के आगे आकर सिर देती है? इस समय श्रीजी उन्हें किस तरह आनन्दित करते हैं?

स. ७ - राधाबाई की सेवा क्या है? वे इस वक्त यहाँ उपस्थित होकर क्या करती हैं?

स. ८ - कौन दोनों भाई श्रीजी के चरण दबाने की सेवा में निमग्न रहते हैं?

स. ९ - इस समय परमधाम वर्णन की ब्रह्मवाणी सुनाने की सेवा कौन करते हैं?

स. १०-तम्बूरा लेकर वाणी गायन करने की सेवा किसकी है? श्रीजी किन लीलाओं का वर्णन बड़े चाव से श्रवण करते हैं?

ज. १०- तम्बूरा लेकर सुमधुर स्वर में वाणी गायन करने की सेवा जगन्नाथ →

स. ११- गजपत भाई इस समय क्या करते हैं? पुनः वाणी सुनाते समय बीच-बीच में उनकी क्या सेवा रहती है?

स. १२-श्री राजजी जब विश्राम करते हैं, तब उनकी सेवा में सुन्दरसाथ कहाँ की लीला का गान करते हैं?

ज. ५ - धामधनी श्रीजी साहेबजी के अंग सहलाने की सेवा इस समय बीरोबाई करती हैं। यह सेवा नित्य प्रति वे ही करती हैं। इस वक्त दूसरे पहर में उपस्थित साथ श्रीजी के चरणों में प्रणाम कर वापस चले गए और तीसरे पहर की सेवा के साथी श्रीजी के पास उपस्थित रहे।

ज. ६- इस समय श्रीजी साहेब के आगे आकर अपना सिर सामने देनेवाली सखी का नाम है-जीजीबाई। इस समय वे अवश्य उपस्थित होती हैं और श्रीजी इनके सिर पर धीरे से प्रेम की चपत लगाकर इन्हें आनन्दित कर देते हैं।

ज. ७ - राधाबाई की सेवा है-इस वक्त उपस्थित होकर श्रीजी साहेबजी के समीप बैठकर उनके सिर को खुजलाना, जिससे उन्हें जल्दी नींद आ जाए।

ज. ८ - गुलजी भाई और अगरदास भाई हमेशा श्रीजी के चरण दबाने की सेवा में निमग्न रहते हैं।

ज. ९ - मयाराम भाई इस वक्त उपस्थित होकर धाम वर्णन की ब्रह्मवाणी सुनाने की सेवा करते हैं। इनकी इस सेवा द्वारा प्रसन्न होकर श्रीजी इनकी मनोकामना को पूर्ण कर देते हैं।

→ भाई की है। श्रीजी शयन करते समय परमधाम की लीलाओं के वृत्तान्त से संबंधित उस वाणी को बड़े चाव से श्रवण करते हैं, जिन्हें गानेवाले सुन्दरसाथ तम्बूरे पर गाते हैं।

ज. ११- गजपत भाई इस समय अपने गंभीर स्वर में विभिन्न वाणियाँ सुनाते हैं। पुनः वाणी सुनाते समय बीच-बीच में सन्तों की विभिन्न साखियाँ प्रस्तुत करना भी उनकी सेवा रहती है।

ज. १२- श्री राजजी जब विश्राम करते हैं, तब सभी धामस्थ ब्रह्मात्माएँ परमधाम की अखण्ड लीला का गायन करती हैं।

स. १३-श्रीजी के चरणों में तन, मन, धन समर्पित करनेवाले भाई कौन हैं?

स. १४-कौन और कैसे श्रीजी के मन को प्रसन्न करती हैं, जिसमें श्रीजी उन्हें शाबाशी देकर उनकी सराहना करते हैं?

स. १५-श्रीजी के सेवा में पहुँचकर नन्दू भाई क्या करते हैं?

स. १६-नन्दू भाई तम्बूरा कब तक बजाते हैं?

स. १७-शेख बदल भाई अपने साथियों को लेकर बंगलाजी में कब आते हैं और क्यों?

स. १८-शेख बदल भाई की मण्डली में स्वर अलापनेवाले कितने हैं और कौन-कौन?

स. १९-शेख बदल भाई की मण्डली में ऐसे कौन-कौन हैं, जो वाणी गाकर धनी को रिझाते हैं?

स. २०-इस मण्डली के साथी कैसे-किस तरह गाते हैं, जिससे उनकी वाणी को सुनकर आत्मा को सुख मिलता है और मन प्रसन्न हो उठता है?

स. २१- किस पहर में श्री परमधाम का आनन्द प्राप्त करने का सुअवसर मिलता है और क्यों?

ज. २१- यह दिन का तीसरा पहर है। इसी पहर में श्री परमधाम का आनन्द →

ज. १३- श्रीजी के चरणों में तन,मन,धन समर्पित करनेवाले भाई का नाम है-गजपत भाई।

ज. १४- चन्द्रावलीबाई पंजाबी भाषा में संतवाणी गाकर श्रीजी के मन को प्रसन्न करती हैं। उनके द्वारा हृदयविदारक वाणी सुनकर श्रीजी उन्हें शाबाशी देकर उनकी सराहना करते हैं।

ज. १५- श्रीजी साहेबजी की सेवा में पहुँचकर नन्दू भाई प्रतिदिन सेज सेवा के समय दोनों बार वाणी गाकर सुनाते हैं।

ज. १६- नन्दू भाई तम्बूरा तब तक बजाते रहते हैं, जब तक बारी में गानेवाली मण्डली के लोग नहीं आ जाते।

ज. १७- शेख बदल भाई अपने साथियों सहित बंगलाजी में अपने समय पर बारी गाने के लिए उपस्थित होते हैं।

ज. १८- शेख बदल भाई की मण्डली में अग्रगण्य होकर स्वर अलापनेवाले दो भाई हैं, जिनका नाम था शम्भू भाई और सन्तदास भाई।

ज. १९- शेख बदल भाई की मण्डली में से बख्तावर भाई, अमृत भाई, कुण्डली भाई और सम्पत भाई बड़े प्रेम से वाणी गाकर अपने धनी को रिझाते हैं।

ज. २०- इस मण्डली के साथी अपने प्रियतम श्री राजजी की वाणी सुमधुर और लहरी स्वर में अत्यंत प्रेमविभोर और आनन्दित होकर गाते हैं, जिसे सुनते ही आत्मा को सुख मिलता है और मन प्रसन्न हो उठता है।

→ प्राप्त करने का सुअवसर मिलता है क्योंकि इसी पहर में श्रीजी परमधाम का आनन्द प्रदान करनेवाली वाणी बड़े प्रेम और चाव से सुनते हैं।

स. २२-किस सम्बन्ध को समझनेवाले यहाँ वाणी सुनने आते हैं? पुनः श्रीजी स्वरूप किन्हें अत्यंत प्यार करते हैं?

ज. २२- जिन-जिन्होंने श्रीजी स्वरूप को परमधाम-मूल मिलावे के स्वरूप →

स. २३-गाने में बारीवालों की कुल कितनी मण्डलियाँ हैं, जो चौबीस घण्टों में बारी-बारी से गाती हैं?

स. २४-"बारीवाली मण्डली" कहने का क्या तात्पर्य है अथवा इनका क्या परिचय है?

ज. २४- आठ-दस जनों की टोली को मण्डली कहते हैं। उनमें से जिनके स्वर अच्छे होते हैं तथा जिनमें गवाने की ताकत होती है, वे अग्रगण्य →

स. २५-चौबीस घण्टों में बारी-बारी से चौदह मण्डलियाँ अखण्ड धुन की तरह जो वाणी गाते हैं, वह कौनसी वाणी है?

ज. २५- चौबीस घण्टों में बारी-बारी से चौदह मण्डलियाँ अखण्ड धुन की →

स. २६-इस वाणी को कुरान में क्या कहा है? क्या यह वाणी इसके पहले किसी ने सुनी थी? यदि सुनी थी, तो कब, किसने, कहाँ और किसके द्वारा?

ज. २६- अक्षरातीत ब्रह्मधाम से अवतरित इस ब्रह्मतारक तारतम वाणी →

स. २७-मुहम्मद साहेब खुदा से सुने हुए नब्बे हजार हरफों में से कौनसे तीस हजार हरफ कुरान ग्रन्थ में नहीं उतार पाए और क्यों?

ज. २७- मुहम्मद साहेब जब चालीस साल की उम्र में नूर परे नूर तजल्लाह में पहुँचे, तो वहाँ उन्होंने खुदा के श्री मुख से नब्बे हजार हरफ सुने। →

→ के रूप में पहचानकर आत्मा से कबूल किया, वेही सुन्दरसाथ यहाँ वाणी सुनने आते हैं। पुनः धामधनी श्रीजी साहेब इन्हें ही अत्यंत प्यार भी करते हैं।

ज. २३- गाने में बारीवालों की कुल चौदह मण्डलियाँ हैं, जो रात-दिन चौबीस घण्टों में बारी-बारी से आकर ब्रह्मवाणी गाते अथवा गवाते हैं।

→ होकर गवाते हैं। टोली के अन्य सदस्य उनके पीछे दोहराने की सेवा करते हैं। इस प्रकार चौबीस घण्टों में कुल चौदह बारी फिरती है। अपनी-अपनी बारी में समय पर उपस्थित होकर प्रत्येक टोली अपनी जमात के साथ वाणी गाती और गवाती है।

→ तरह जो वाणी गाते हैं, वह श्री अक्षरातीत ब्रह्मधाम की ब्रह्मवाणी है, जिसे स्वयं श्री अक्षरातीत ब्रह्म ने यहाँ-इस धरातल पर महामति श्री प्राणनाथजी के स्वरूप में प्रकट होकर श्री मुख द्वारा अवतरित किया है।

→ को कुरान में *"रब्बानी कलाम"* कहा है, जो यहाँ पन्ना में अखण्डरूप से अष्ट पहर में गायन हो रही है। यह वाणी इसके पहले श्री सद्गुरु स्वरूप के खेल में आने से हजार साल पूर्व अरब के मुहम्मद स्वरूप ने श्री परमधाम-मूल मिलावे में पहुँचकर श्री अक्षरातीत ब्रह्म-खुदा के श्री मुख से सुनी थी।

→ इनमें से शरीअत के तीस हजार हरफ खुदा ने उनके सिर पर दिए। पुनः तीस हजार हरफ कुरान में लिखे गए। शेष तीस हजार हरफों को स्वयं खुदा ने आकर खोलने का वादा किया। अतः वे नहीं उतारे गए। उन तीस हजार हरफों को मारफती ज्ञान कहा जाता है। इन्हीं तीस हजार हरफों का गान अखण्ड धुन के रूप में पन्ना के बंगलाजी मंदिर में अष्ट पहर में बारी-बारी से हो रहा है।

स. २८-उक्त ब्रह्मवाणी खुदा ने दो बार अपने श्री मुख से प्रकट की। अतः कहाँ-कहाँ?

ज. २८- उक्त ब्रह्मवाणी को दो बार में से पहली बार ब्रह्म स्वरूप श्री राजजी-खुदा ने १००० साल पहले मुहम्मद के आगे नब्बे हजार →

स. २९-किस वाणी के गान से हक-परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीत स्वरूप के दर्शन होते हैं?

ज. २९- ब्रह्मतारक तारतम मंत्र का आधार तारतम के तारतम रूप जो →

स. ३०-"ए सिफत महम्मद की" कहा। अतः यहाँ कौन से मुहम्मद की तथा कौनसी सिफ़त की चर्चा हो रही है तथा कैसे?

ज. ३०- हक स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी द्वारा अवतरित ब्रह्मवाणी →

स. ३१-आठों पहर में से प्रातः काल और दोपहर में सुन्दरसाथ मन से चित्त देकर वाणी गाते हैं और श्रीजी को रिझाते हैं, ऐसा क्यों कहा है?

ज. ३१- रात-दिन के आठों पहर में क्रमशः चौदह बारी फिरती है, जिनमें →

स. ३२-श्री परमधाम की चितवनि करने का समय कौनसा है? चितवनि के समय कौनसी मण्डली चितवनि में शामिल नहीं होती है और क्यों?

ज. ३२- श्री परमधाम की चितवनि करने का समय चार घड़ी दिन शेष →

स. ३३-कौनसी मण्डली, कब-किस समय की चर्चा-कथा में शामिल नहीं हो पाती?

→ हरफ के रूप में रखा था और दूसरी बार जागनी के ब्रह्माण्ड में आखर जमाने के खाविंद के रूप में आकर महामति श्री प्राणनाथजी द्वारा वि. सं. १७१५ से वि. सं. १७४८ तक उतारा। महामति श्री प्राणनाथजी ही ब्रह्म स्वरूप अर्थात् खुदा हैं।

→ १८७५७ चौपाई युक्त ब्रह्मतारक तारतम वाणी है, उसी के द्वारा *"अक्षरात्परतः परः"* ब्रह्म स्वरूप के दर्शन होते हैं और अक्षरातीत अद्वैत परमधाम की सारी लीलाएँ दिल-दिमाग में बैठ जाती हैं।

→ गान से अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी के दर्शन होते हैं। उक्त सिफ़त आखरी मुहम्मद महामति श्री प्राणनाथजी की महिमा और श्रेष्ठता की सिफ़त है क्योंकि इन स्वरूप ने सृष्टि के दुविधाजन्य भावों को निर्मूल करके सृष्टि की समस्त आत्माओं को बहिश्त में अखण्ड (कायम) कर दिया।

→ से मात्र सुबह-प्रातः काल के ब्राह्ममुहूर्त के समय शांत और मधुर वातावरण में तथा दोपहर को राजभोग के बाद पौढ़ने के समय में श्रीजी साहेबजी शांत मन से चित्त देकर गानेवालों की वाणी सुनते हैं, जिससे गानेवालों में लगन और रस और बढ़ जाता है। अतः वे और एकाग्रचित्त होकर लगन से धनी को रिझाने के लिए जोश में गाने लगते हैं।

→ रहते अर्थात् शाम के साढ़े चार बजे का है। इस चितवनि करते समय एक मण्डली गाने में रहती है। अतः वह मण्डली चितवनि में शामिल नहीं हो पाती है। शेष सभी मण्डलियाँ चितवनि में शामिल रहती हैं।

ज. ३३- सायंकाल जब मोमिन रूहें-ब्रह्मात्माएँ चर्चा करती हैं, तब बारी गानेवाली मण्डली गाने में रहने के कारण चर्चा-कथा में उपस्थित नहीं हो पाती ।

स. ३४-श्रीजी साहेबजी के शयन का समय कौनसा है? उस समय बारी गानेवाली मण्डली कबसे गाने बैठती है और उस मण्डली में कौन-कौन हैं?

ज. ३४- श्रीजी साहेबजी के शयन का समय रात्रि के बारह बजे से अर्थात्

स. ३५-दूसरी मण्डली में गाने और गवानेवालों में कौन-कौन शामिल हैं?

स. ३६-तीसरी मण्डली की प्रमुख कौन हैं? उनके साथ गानेवालों में अन्य कौन-कौन हैं?

स. ३७-लच्छोबाई के साथ असाई और मनाबाई की मण्डली किस बारी में गाती है?

स. ३८-पाँचवीं मण्डली में गानेवालों में कौन प्रमुख हैं? उनके साथ अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

स. ३९-पाँचवीं मण्डली की बारी में कौनसी सखी निष्ठापूर्वक गाती है?

स. ४०-कौनसी सखी सब मण्डली की बारी में पहुँचकर सबको सहयोग पहुँचाती है, जिनके मधुर गायन द्वारा श्रीजी स्वरूप बड़े प्रसन्न हो उठते हैं?

स. ४१-छठवीं बारी किसकी है? इस बारी में अग्रगण्य सखी कौन है तथा उनके साथ अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

स. ४२-करमेतीबाई की बारी कितने नम्बर में आती है? उनके साथ अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

→ तीसरे पहर से है उस समय बारी गानेवाली मण्डली रात्रि के बारह बजे से गाने बैठती है। रात्रि की बारी में गानेवाली यह मण्डली बदले भाई के नेतृत्व में गाती है। इसमें शंभू भाई प्रमुख गायक हैं। गानेवालों में अन्य थानू भाई, सन्तदास भाई, बख्तावर भाई, अमृत भाई और कुण्डली भाई शामिल हैं।

ज. ३५- दूसरी मण्डली में गाने और गवानेवालों में मनाबाई, रतनीबाई, असाईबाई,भागोबाई, धनबाई आदि हैं।

ज. ३६- तीसरी मण्डली की प्रमुख गायिका दयालीबाई हैं। उनके साथ गानेवालों में अन्य खिमोतीबाई, दमोतीबाई और जसियाबाई आदि हैं।

ज. ३७- लच्छोबाई के साथ असाई और मनाबाई की मण्डली चौथी बारी में गाती है।

ज. ३८- पाँचवीं मण्डली में गानेवालों में प्रेमबाई प्रमुख हैं। उनके साथ जड़ूराबाई, गौरीबाई, खेमबाई, गुलोबाई आदि शामिल हैं।

ज. ३९- पाँचवीं मण्डली की बारी में गुलोबाई निष्ठापूर्वक गाती हैं।

ज. ४०- प्रत्येक मण्डली की बारी में पहुँचकर सबको सहयोग पहुँचानेवाली सखी का नाम है-चंद्रावली सखी। गाते समय इनका गायन सुनकर श्रीजी बड़े प्रसन्न हो उठते हैं।

ज. ४१- छठवीं बारी जीजीबाई की है। इस बारी में अगरीबाई अग्रगण्य हैं तथा इनके साथ बड़ी जीजी और मथुरीबाई आदि शामिल हैं।

ज. ४२- करमेतीबाई की मण्डली की बारी सातवें नम्बर में आती है। उनके साथ हरखोबाई, गौरबाई, लालोबाई, रत्तोबाई तथा लड़ेतीबाई आदि शामिल हैं।

स. ४३-ललिता सखी की बारी कौनसी मण्डली में आती है? पुनः किनके गायन से रीझकर श्रीजी बड़ी प्रसन्नता दिखाते हैं?

स. ४४-आठवीं मण्डली में प्रमुख कौन हैं? उस मण्डली में अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

स. ४५-जसाबाई की मण्डली की बारी कौनसे नम्बर पर आती है और उनके साथ कौन-कौन गाते हैं?

स. ४६-भागीरथीबाई के हिस्से में कौनसी बारी है? उनके साथ गाने में अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

ज. ४६- भागीरथीबाई के हिस्से में दसवीं बारी आती है। इस मण्डली में →

स. ४७-ग्यारहवीं बारी किसकी है? इस मण्डली में प्रमुख कौन हैं तथा इनके साथ अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

ज. ४७- ग्यारहवीं बारी भानीबाई की है। इस मण्डली में हिमोतीबाई और →

स. ४८-किस टोली में वे सखियाँ हैं, जो अल्लाह कलाम गायन करती हैं, जिन पर प्रसन्न होकर श्रीजी उन्हें बैठने का स्थान दिलाकर सम्मानित करते हैं?

स. ४९-बारहवीं बारी किसकी है? श्रीजी ने रीझकर यह मण्डली किसे सौंप दी?

स. ५०-कितने नम्बर पर गुलोबाई की बारी है? इनके साथ गाने में अन्य कौन-कौन शामिल हैं, जो श्रीजी को बड़ा सुखी करते हैं?

ज. ४३- ललिता सखी की बारी सातवीं मण्डली में आती है। इनके साथ लच्छोबाई, सुआबाई, संतोबाई, द्रोपदीबाई, केशरबाई और लक्ष्मीबाई आदि गाते हैं। इनके गायन से रीझकर श्रीजी बड़ी प्रसन्नता दिखाते हैं।

ज. ४४- आठवीं मण्डली में हरकुंवरबाई प्रमुख हैं। इनकी बारी में पांखड़ीबाई, सूजाबाई और कासीबाई बड़ी सावधानी से वाणी गाते हैं।

ज. ४५- जसाबाई की मण्डली की बारी नौवीं बारी में आती है। इनके साथ भागोबाई, चंगाईबाई, वीरीबाई और किसनीबाई शामिल हैं।

→ मोहन दे भाई प्रमुख गायक हैं। उनके साथ लड़ेतीबाई, लच्छोबाई, सुआबाई, जयन्ती पटेल, सन्ताबाई, लालीबाई और लालोबाई आदि शामिल हैं।

→ गोमाबाई प्रमुख गायिका हैं। रामबाई भी वाणी गाने में अग्रगण्य हैं। इस मण्डली में अन्य खरगोबाई, खिमोतीबाई आदि शामिल हैं। श्रीजी आकर अन्य गानेवालों से इन सब की तुलना करते हुए प्रशंसा करते हैं।

ज. ४८- ग्यारहवीं मण्डली में ऐसी सखियाँ हैं, जो कुरान के अल्लाह कलाम का गायन करती हैं। इन पर अत्यंत रीझकर श्रीजी स्वरूप इन्हें बैठने का स्थान दिलाकर सम्मानित करते हैं।

ज. ४९- बारहवीं बारी खेमाबाई की है। इस बारी में साहोबाई, हंसोबाई और जादीबाई शामिल हैं। इस मण्डली में करमाबाई भी गाने के लिए आती हैं। श्रीजी ने रीझकर यह मण्डली इन्हें सौंप दी।

ज. ५०- गुलोबाई की बारी तेरहवें नम्बर पर आती है। इनके साथ गाने में जानबाई, मानवतीबाई, देवन्तीबाई, मनियाबाई और गौरबाई आदि शामिल हैं, जो अपने मधुर गायन द्वारा श्रीजी को सुख प्रदान करती हैं।

स. ५१-शिवराम भाई किस मण्डली में हैं, जो प्रमुखरूप से गाने आते हैं और जो सायंकालीन मण्डली में भी गाने के लिए पहुँचते हैं?

स. ५२-चौदहवीं बारी किसकी है? यह मण्डली कौन-कौनसे पहर में वाणी गाती है?

ज. ५२- चौदहवीं बारी बनमालीदास भाई के मण्डली की है। यह मण्डली →

स. ५३-ऐसी अखण्ड वाणी की अखण्ड धुन सुनते हुए भी कौन-कैसे लोग कुछ भी आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते हैं?

ज. ५३- बंगलाजी में अनेकों दर्शनार्थी आते हैं, किन्तु उनमें से कितनों →

स. ५४-कैसे लोगों को आसुरी प्रवृत्तिवाला कहा गया है?

ज. ५४- जो लोग दज्जाल के अधीन रहते हैं, उन्हें कलियुगी वृत्तियाँ अपनी →

स. ५५-कैसे लोगों में ब्रह्मयज्ञ के स्थल पर आकर भी एक शब्द भी सुनकर ग्रहण करने की शक्ति नहीं रहती है?

ज. ५५- मायावी गुणयुक्त संसारी लोग ब्रह्मयज्ञ के स्थल पर पहुँचकर किसी की संगत से यदि परमात्मा की चर्चा अपने कानों से सुन →

स. ५६-ब्रह्मज्ञान की चर्चा ये मायावी गुणयुक्त संसारी लोग कदाच अपने कानों से सुन भी लें, तब भी उनमें उसकी समझ नहीं आती, इसका क्या कारण है?

ज. ५६- परमात्मा के ब्रह्मज्ञान की चर्चा कदाच ये मायावी गुणयुक्त संसारी →

स. ५७-ब्रह्मज्ञान की चर्चा अथवा ब्रह्मवाणी कैसे लोग सुनते अथवा गाते हैं?

ज. ५१- शिवराम भाई दिन के दूसरे पहर में गानेवाली मण्डली में शामिल हैं। वे इस टोली में गाने में प्रमुख हैं। ये ही भाई सायंकालीन बारी में भी गाने के लिए पहुँच जाते हैं।

→ सायंकालीन चौथे पहर में तथा प्रातःकालीन दूसरे पहर में वाणी गायन करती है। इनकी बारी में सन्ताबाई, प्रेमबाई, जीजलीबाई तथा सूरत से आनेवाली रामबाई साथ देते हैं।

→ के तन और मन-दोनों के श्रवण माया की अज्ञानता से मढ़े हुए होने के कारण वे भ्रमित अवस्था में भटकते रहते हैं। ऐसे लोग इस वाणी का ज्ञान ग्रहण तो क्या, इस वाणी द्वारा प्राप्त होनेवाले आनन्द का अनुभव भी नहीं कर पाते हैं।

→ ओर आकृष्ट कर लेती हैं तथा संसार की माया देखने और उसी में लिप्त रहने के लिए प्रेरित करने लगती हैं। कलियुगी गुणग्रस्त ऐसे ही लोगों को आसुरी प्रवृत्तिवाला कहा गया है।

→ भी लें, तब भी विवेकहीन-दिल के अन्धे होने के कारण वे उस चर्चा श्रवण द्वारा प्राप्त होनेवाले आनन्द की अनुभूति नहीं कर पाते और न उनमें चर्चा द्वारा प्राप्त ज्ञान को ग्रहण करने की शक्ति ही रहती है।

→ लोग अपने कानों से सुन भी लें, परन्तु जब तक उनके पूर्व जन्म के अशुभ कृतकर्मों के विकार क्षीण नहीं हो जाते, तब तक उनमें उसकी समझ नहीं आयेगी क्योंकि ब्रह्मज्ञान के लिए पात्र होना अत्यंत जरूरी है।

ज. ५७- ब्रह्मज्ञान की चर्चा अथवा ब्रह्मवाणी ब्रह्म सम्बन्धी आत्माएँ-ब्रह्मसृष्टि अथवा ब्रह्मज्ञान की वारिसदार आत्माएँ ही सुनकर विचार-विवेक कर सकती हैं अथवा गा सकती हैं।

स. ५८-किनके लिए अक्षरातीत परमात्मा ने हजरत मुहम्मद साहेब को भेजा है?

स. ५९-कुरान ग्रन्थ में कैसे लोगों को आँख के अन्धे और कान के बहरे कहा है? क्यों?

ज. ५९- कुरान ग्रन्थ में सत ब्रह्म-खुदा सम्बन्धी बातों के ज्ञान के विरोधियों →

स. ६०-ब्रह्मसृष्टियों की महिमा और सिफारिश किसमें भरी पड़ी है?

स. ६१-कुरान ग्रन्थ के ब्रह्मज्ञान को पूर्ण विश्वास के साथ सिर पर लेकर ग्रहण किसने किया?

ज. ६१- कुरान ग्रन्थ में अवतरित खुदा के अर्श विषयक ब्रह्मज्ञान को पूर्ण →

स. ६२-कौन-कौनसी पाँच दिव्य वस्तुएँ ब्रह्मात्माओं के लिए ही धाम से खेल में अवतरित हुई हैं?

ज. ६२- ब्रह्मधाम से मात्र ब्रह्मात्माओं के लिए अवतरित पाँच दिव्य वस्तुएँ निम्नलिखित हैं। जैसे - १) श्री राजजी का जोश-आवेश, जिसे जबराईल कहते हैं। २) प्रियतम परमात्मा का नूर-अलौकिक तेजयुक्त समस्त तारतम ज्ञान। ३) असराफील-अक्षर की जागृत →

स. ६३-तीसरी शक्ति किसे कहा है? इस शक्ति ने संसार में आकर कौनसे कार्य किये?

ज. ६३- अक्षर की जागृत बुद्धि (असराफील) को तीसरी शक्ति कहा है, जिसके सूर फूँकने से अठारह हजार ब्रह्मवाणी की वर्षा हुई। इस →

ज. ५८- अक्षरातीत ब्रह्म सम्बन्धी ब्रह्मात्माओं के लिए ही परब्रह्म परमात्मा-श्री राजजी ने हजरत मुहम्मद साहेब को खेल में धाम की साक्षियाँ रखने हेतु भेजा है।

→ और मायावी नफस (इन्द्रियों) के दज्जालरूपी गुलामों को आँखों के अन्धे और कान के बहरे कहा है क्योंकि ये दज्जाल देखने की वस्तुओं को नहीं देखते और सुनने की बातों को नहीं सुनते।

ज. ६०- ब्रह्मसृष्टियों-मोमिनों की सिफ़त-महिमा और सिफारिश कुरान, हदीसों और वेद, उपनिषद् आदि सद्ग्रन्थों में भरी पड़ी है।

→ विश्वास के साथ उस अर्श की रूहों-ब्रह्मात्माओं ने ही अपना समझकर सिर पर लेकर ग्रहण किया क्योंकि इन ब्रह्मात्माओं का सम्बन्ध धाम से, धाम के धनी से और धनी की लीलाओं से है।

→ बुद्धि, जो अक्षर धाम से खेल में अवतरित हुई है। ४) श्री राजजी की आज्ञा (हुकम), जो धाम से श्री राजजी का आदेश पूरा करने हेतु खेल में आई। पुनः इसी स्वरूप ने भविष्य कहकर कुरान में लिख दिया और ५) दुलहिन की आत्मा अर्थात् तीनों ही स्वरूपों ने श्यामाजी का गुण प्रधान कार्य करने के लिए जागनी के ब्रह्माण्ड में अपने धनी के जोश के साथ कार्य-कारणवश ब्रह्मात्माओं की इच्छा पूरी करने के लिए खेल में अवतरित होकर कार्य किया।

→ ब्रह्मवाणी की आवाज से बड़े-बड़े पर्वत टूटकर गिर पड़े। क्षर पुरुष की नारायणी सृष्टि के अन्तर्गत जो बड़े-बड़े पंचदेव अक्षर और अक्षरातीत ब्रह्म की जगह में पूजे जाते थे, वे सब उक्त असराफील के सूर फूँकने से प्रकट हुए ज्ञान के आगे चकनाचूर होकर अब्रह्म साबित हुए।

स. ६४-असराफील कुबड़ी पीठ करके दम साधे किसकी आज्ञा के इंतजार में तत्पर खड़ा है?

स. ६५-चौथी वस्तु क्या है तथा उसके संसार में आने का मुख्य उद्देश्य क्या है? पुनः उसने कौन-कौनसे तीन स्वरूप धारण किए?

ज. ६५- चौथी वस्तु हक श्री राजजी का हुकम (आज्ञा) है, जिसके संसार →

स. ६६-पाँचवीं वस्तु क्या है? पाँचों वस्तुओं ने कहाँ एकत्रित होकर कार्य किया?

ज. ६६- पाँचवीं वस्तु है-अपने प्रियतम परमात्मा के प्रति विश्वास (तारतम- →

स. ६७-अक्षरातीत ब्रह्म की कृपा किस पर है? पुनः किसकी महिमा कहाँ लिखी हुई है? पुनः अपने प्रति पूर्ण विश्वास किसने और किसको प्रदान किया?

ज. ६७- अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की कृपा ब्रह्मात्माओं →

स. ६८-परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने विभिन्न शास्त्रादि सद्ग्रन्थों में किसकी पहचान लिखवायी है?

ज. ६८- परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने विभिन्न सद्ग्रन्थों जैसे वेद, कतेब, →

स. ६९-किनकी चर्चा सुनने से मायावी प्रभावयुक्त द्वैत भाव नष्ट हो जाता है?

स. ७०-वेदों, उपनिषदों, कुरान और हदीसों में जो महिमा लिखी है, वह किसकी महिमा है?

ज. ६४- असराफील-अक्षर की जागृत बुद्धि परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी की आज्ञा के इंतजार में कुबड़ी पीठ करके दम साधे तत्पर खड़ा है।

→ में आने का मुख्य उद्देश्य परब्रह्म परमात्मा का आदेश पूरा करना है। श्री राजजी के आज्ञा के स्वरूप ने हमेशा ब्रह्मसृष्टियों की सुरक्षा की है। इस स्वरूप ने बसरी, मलकी और हकी-ये तीन स्वरूप धारण करके कार्य किया।

→ नूर)। इन पाँच दिव्य वस्तुओं को लेकर ब्रह्मात्माएँ संसार में प्रकट हुईं। इन पाँचों वस्तुओं ने एक ही स्वरूप श्री प्राणनाथजी में एकत्रित होकर कार्य किया।

→ पर है। इन ब्रह्मात्माओं की महिमा आप्तपुरुषों ने आप्तग्रन्थों जैसे वेद, पुराण, कुरान, हदीसों आदि में भरपूर लिखी है। संसार में आकर भूली हुई इन आत्माओं को प्रियतम परमात्मा श्री राजजी ने अपने प्रति पूर्ण विश्वास प्रदान किया।

→ कुरान, पुराण, उपनिषद् आदि में इन ब्रह्मसृष्टियों की पहचान लिखवाई है। ब्रह्म, ब्रह्मधाम और अपने परात्मा की पूर्णरूपेण पहचान कराने हेतु ही श्री राजजी ने विभिन्न सद्ग्रन्थों की रचना करवाई है।

ज. ६९- धामस्थ बारह हजार ब्रह्मात्माओं के विषय की अद्वैत ज्ञान की चर्चा सुनने से मायावी प्रभावयुक्त द्वैत भाव नष्ट हो जाता है।

ज. ७०- वेदों, उपनिषदों, कुरान, हदीसों आदि में धाम के ब्रह्मात्माओं-मोमिन रूहों की महिमा लिखी है।

स. ७१-हकीकत और मारफत ज्ञान समझने में समर्थशाली कौन हैं? पुनः आत्मा और परमात्मा की वास्तविक पहचान सबके आगे किसने रख दी?

स. ७२-सृष्टि के शुरू से जो वाणी प्रकट हुई है अथवा भविष्यवाणी के रूप में उतरी है, वे सब किसके लिए आई है?

ज. ७२- सृष्टि के शुरू से वेदों, शास्त्रों, पुराणों आदि धर्मग्रन्थों में →

स. ७३-कयामत अर्थात् वास्तव में आत्मा-जागरण की बातें किसके लिए हैं और क्यों?

ज. ७३- कयामत अर्थात् वास्तव में आत्म-जाग्रत करना ये बातें इन →

स. ७४-"कब्र से मुर्दे उठने" का क्या तात्पर्य है? यह आह्वान किसके लिए किया गया है?

ज. ७४- पञ्चभौतिक शरीर में कुम्भकर्णवत् जन्म-जन्मान्तर से अन्धकाररूपी मोहमाया में नींदग्रस्त जीवात्मा को उसके संसार →

स. ७५-इसलाम धर्म अथवा सनातन धर्म वास्तव में कौनसा धर्म है और किसके लिए है?

ज. ७५- इसलाम धर्म ही वास्तव में सनातन धर्म है। सृष्टि के शुरू से →

स. ७६-इस ब्रह्मवाणी-ब्रह्मलीला से किस-किस को लाभ हुआ और कैसे?

ज. ७६- इस ब्रह्मवाणी-ब्रह्मलीला से ब्रह्म, ईश्वरी और जीव-तीनों ही दर्जे की आत्माओं को लाभ हुआ। ब्रह्म और ईश्वरी आत्माओं को, जो अपने त्रिकाल सम्बन्धी अक्षरातीत ब्रह्म और अक्षर की धनियाणी होते हुए भी जीवात्मा सदृश होकर दूध और मिश्री →

ज. ७१- हकीकत और मारफत ज्ञान परमात्मा का यथार्थ ज्ञान है। अतः यह ज्ञान परमात्मा की सम्बन्धी आत्माएँ-ब्रह्मात्माएँ ही समझकर ग्रहण कर सकती हैं। परमात्मा की वास्तविक पहचान इन ब्रह्मसृष्टियों ने ही सबके आगे प्रकट कर दी।

→ भविष्यवाणी के रूप में जो संदेश उतरा है, वह सब ब्रह्मात्माओं के लिए उतरा है क्योंकि ये सभी ग्रन्थ ब्रह्ममुनियों के प्रकट होने की साक्षी देते हैं।

→ ब्रह्मात्माओं के लिए ही लिखी हैं। इन ब्रह्मात्माओं के लिए धामधनी और अपनी-अपनी परात्मा के विषय में पूर्णरूपेण जाग्रत होना अत्यंत ही आवश्यक है।

→ में आने से पहले की पूर्वस्मृति कराकर वास्तविक धाम सम्बन्धी धनी और अपने परात्मा का ज्ञान कराना ही जागृत करना है। पंचभौतिक शरीररूपी कब्र से जीवात्मा का जागृत होना ही मुर्दे का उठना है। *"कब्र से मुर्दे उठने"* का आह्वान ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के लिए किया गया है।

→ चलते आये धर्म को सनातन धर्म कहते हैं। सृष्टि सनातन से भी पूर्व जो परलोक का सनातन धर्म है, उसे *"सृष्टि पूर्व सनातन धर्म"* कहते हैं। यह शुद्ध साकार ब्रह्म से सम्बन्धी धर्म है। इसे निरन्तर पालन करने के लिए कहा गया है।

→ सदृश मिली हुई थीं, अपने विस्मृत धनी, धाम और परात्मा की पहचान प्राप्त हुई अर्थात् उन्हें तो अपने धनी और धाम से शाश्वत सम्बन्धरूपी धन प्राप्त हुआ। पुनः मायावी, अस्तित्त्वहीन, झूठी जीवात्माओं का तो दर्जा ही बदल गया। वे तो अस्तित्त्वपूर्ण होकर सत् में परिवर्तित हो गई तथा उन्होंने आठ प्रकार के अविनाशी मुक्तिस्थानों में अखण्ड मुक्ति प्राप्त की।

स. ७७-यह चर्चा ध्यानपूर्वक सुनने और मनन करने से क्या फायदा होता है?

ज. ७७- तारतम सम्बन्धी ब्रह्मलीलामय चर्चा सुनने और सुनकर मनन करने से इस पञ्चभौतिक शरीर में होते हुए भी परलोक की →

❋ चौथा पहर ❋

स. १ -चौथा पहर कहाँ से, कहाँ तक है? इस पहर की शुरूआत कैसे होती है?

स. २ - इस पहर में सर्वप्रथम कौन भाई, कौनसी सेवा हाजिर कर उपस्थित हुए हैं?

स. ३ - छबीलदास भाई द्वारा लाए गए स्वच्छ जल से श्रीजी साहेब क्या करते हैं?

स. ४ - इस वक्त श्रीजी के पास पीकदान लेकर कौन खड़े हैं?

स. ५ - सन्तदास भाई इस समय किनके साथ कौनसी सेवा में शामिल हैं?

स. ६ - भागते हुए आकर सेवा में हाजिर होनेवाले भाई कौन हैं?

स. ७ - श्री प्राणनाथजी इस वक्त किन सुन्दरसाथ को घर जाने की अनुमति प्रदान करते हैं?

→ आत्मानुभूति होती है। एक अद्वैत ब्रह्म-परमात्मा और उनकी लीला का प्रत्यक्ष दर्शन होता है। अपने आपकी जानकारी होती है कि "मैं कौन हूँ? मैं संसार में कहाँ से और क्यों आई हूँ?" उक्त यावत् विषय-वस्तुओं की जानकारी इसी शरीर में होते हुए प्राप्त होती है।

- (प्रकरण ६६, सवाल-जवाब नं. ७७, कुल सं. ४७८९+७७=४८६६)।

❀ चौथा पहर ❀

ज. १ - चौथा पहर सायं तीन बजे से लेकर छः बजे तक है। इस पहर में तीसरे पहर की सेवावाले साथी विदा लेकर लौट जाते हैं और चौथे पहर की सेवा के साथी सेवा में उपस्थित हो जाते हैं।

ज. २ - इस पहर में सर्वप्रथम छबीलदास भाई श्रीजी के लिए लोटा भरकर निर्मल जल हाथ में लिए खड़े हैं।

ज. ३ - छबीलदास भाई द्वारा लाए गए स्वच्छ जल से श्रीजी साहेब मुख से कुल्ला करके पीकदान में डालते हैं।

ज. ४ - इस वक्त श्रीजी के पास पीकदान लेकर शंकरदास भाई खड़े हैं।

ज. ५ - सन्तदास भाई इस समय यथार्थ रूप से शंकरदास भाई के साथ पीकदान सम्मुख रखने की सेवा में शामिल हैं।

ज. ६ - भागते हुए आकर सेवा में हाजिर होनेवाले भाई मानिक भाई हैं।

ज. ७ - श्री प्राणनाथजी इस वक्त तीसरे पहर में तल्लीन होकर सेवा करनेवाले सुन्दरसाथ को घर जाने की अनुमति प्रदान करते हैं।

स. ८ - इस समय शंकरदास भाई यहाँ कौनसी सेवा करते हैं?

स. ९ - केशवदास भाई कहाँ बैठे रहते हैं और उनके हाथ में कैसी चँवर होती है?

स. १०-कौन-कौन साथ निर्गुण भेष में हैं, जिनके मन में माया का लेश मात्र तक नहीं है?

स. ११- कोई भी सेवा हो, उसे भाग-भागकर करनेवाले भाई कौन हैं?

स. १२-लालदासजी महाराज, मकरन्ददास भाई और प्रेमदास भाई कौनसी सेवा में रहते हैं?

ज. १२- लालदासजी महाराज हमेशा श्रीजी के पास रहते तथा मकरन्ददास →

स. १३-श्री प्राणनाथजी के सिर पर जरी-गोटायुक्त पट्टी बाँधने की सेवा कौन करते हैं?

स. १४-मुकुन्ददासजी यहाँ इस समय आकर कौनसी सेवा करते हैं?

स. १५-श्रीजी साहेबजी को दुता नामक आभूषण पहनाने की सेवा किसकी है?

स. १६-श्रीजी साहेबजी के कमर में जो पटुका बाँधा जाता है, वह कैसा है?

ज. ८ - इस समय शंकरदास भाई श्रीजी साहेबजी के पास खड़े होकर प्रेम से चँवर डुलाने की सेवा करते हैं।

ज. ९ - केशवदास भाई इस समय श्रीजी के समीप बैठे रहते हैं और उनके हाथ में सोने से जड़ित मूठेदार चँवर होती है, जिसे वे स्नेहपूर्वक धीरे-धीरे डुलाते रहते हैं।

ज. १०- वल्लभदास भाई और गंगादास भाई निर्गुण भेष में हैं। इनके मन में किंचित् मात्र भी माया का लेश नहीं है।

ज. ११- बिहारीदास भाई सदा सेवा में उपस्थित रहते हैं। अतः कोई भी सेवा हो, उसे वे भाग-भागकर करने के लिए सदा तत्पर रहते हैं। यही उनकी सर्वश्रेष्ठ सेवा रही।

→ भाई श्रीजी को नीमा पहनाने की सेवा में उनको सहयोग देते हैं। प्रेमदास भाई श्रीजी को नीमा-राजसी कुरता पहनाते तथा दोनों हाथों से कुरते की कस-तनियां बाँधते हैं।

ज. १३- धामधनी श्री प्राणनाथजी के सिर पर जरी-गोटायुक्त पट्टी बाँधने की सेवा नन्दराम भाई करते हैं।

ज. १४- मुकुन्ददासजी यहाँ इस समय उपस्थित होकर उक्त जरी-गोटायुक्त पट्टी के ऊपर गोसपेच-वस्त्र की जरी की पट्टी मुकुट के आकार में सजा देते हैं।

ज. १५- धामधनी श्रीजी साहेबजी को दुता नामक स्वर्णाभूषण पहनाने की सेवा नन्दराम भाई की है। उनके संग रामचन्द्र भाई भी शामिल हैं।

ज. १६- श्रीजी साहेबजी की कमर में जो पटुका बाँधा जाता है, उसके किनार में जरीयुक्त बेल-बूटियाँ अत्यंत शोभायमान प्रतीत होती है।

स. १७-बिहारीदास भाई इस समय कौनसी सेवा करते हैं, जो सेवा पहले कुछ दिनों तक बन्देफरास भाई ने की थी?

स. १८-मेघा भाई और सुकाली किस सेवा में और किसके साथ शामिल होते हैं?

स. १९-यही सेवा भाई गोविन्ददास की जगह पर अन्य किसने की थी?

स. २०-श्रीजी के लिए चन्दन का तख्त बनवाने की सेवा किसने की है? वह तख्त किसके जिम्मे रहता है?

स. २१-धनजी भाई बनमालीदास भाई के साथ कौनसी सेवा में शामिल हैं ?

स. २२-उक्त दोनों भाई अन्य कौन-कौनसी सेवा करते हैं ?

स. २३-विश्राम करके उठने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी किसी-किसी दिन किसके घर जाते हैं? उस समय पाँवड़ा बिछाने की सेवा कौन करते हैं?

स. २४-उस समय दूसरा पाँवड़ा बिछाने की सेवा कौन करते हैं?

स. २५-मानिकबाई इस वक्त कौनसी सेवा करती हैं?

ज. १७- बिहारीदास भाई इस समय मखमली तकिया लाकर श्रीजी की सेवा में उपस्थित करने की सेवा करते हैं। यह सेवा इसके पहले कुछ दिनों तक बन्देफरास भाई ने उनके साथ मिलकर की थी।

ज. १८- मेघा भाई और सुकाली तकिया रखने की सेवा में बिहारीदास भाई के साथ शामिल होते हैं।

ज. १९- भाई गोविन्ददास की जगह पर यही सेवा बिसम्भर भाई ने भी की थी।

ज. २०- श्रीजी के लिए चन्दन का तख्त बनवाने की सेवा बनमालीदास भाई ने की है। वह तख्त बिहारीदास भाई के जिम्मे रहता है। वे ही उस पर गादी-तकिया आदि बिछाकर-सजाकर रखते हैं।

ज. २१- धनजी भाई बनमालीदास भाई के साथ वाणी गायन की सेवा में शामिल हैं।

ज. २२- उक्त दोनों भाई तख्त, कुरसी लगाने तथा सेज-सेवा बड़े उमंग से करते हैं।

ज. २३- विश्राम करके सेज पर से उठने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी कभी-कभी घनश्याम भाई के घर जाते हैं। घनश्याम भाई के घर जाते समय श्रीजी के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा में लालबाई हाजिर रहती हैं।

ज. २४- उस समय एक पाँवड़ा बिछाने की सेवा लालबाई ने की, तो दूसरा पाँवड़ा बिछाने की सेवा किसनीबाई करती हैं।

ज. २५- मानिकबाई इस वक्त चन्द्रवा में फुँदने-फुन्दरे लगाने की सेवा तल्लीन होकर करती हैं।

स. २६-चन्द्रवा सजाने की सेवा में अन्य कौन शामिल हैं? किस सेवा के विषय में कहा है -"इस सेवा के तुल्य अन्य कोई सेवा नहीं है"?

स. २७-श्रीजी साहेबजी के हाथ पकड़कर प्रेम और सम्मानपूर्वक ले आने की सेवा कौन करते हैं?

स. २८-कहाँ से लौटते समय श्रीजी साहेबजी अपने हाथ, किस भाई की ओर बढ़ाते हैं?

स. २९-श्री प्राणनाथजी स्वरूप के हाथ पकड़कर प्रेमपूर्वक बंगलाजी में पहुँचाने की सेवा कौन भाई करते हैं?

स. ३०-प्रेमदास भाई के कंधे पर क्या-क्या रहता है और उसके अंदर क्या रहता है?

स. ३१-महामति श्री प्राणनाथजी झूमती हुई मनमोहक चाल से चलकर आने के पश्चात् कहाँ बैठते हैं?

स. ३२-इस समय गादी बिछाने की सेवा कौन भाई करते हैं?

स. ३३-गादी के दोनों ओर दो तकिये लगाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ३४-तत्पश्चात् पाँवड़े पर चलते हुए सीढ़ियाँ चढ़कर श्रीजी स्वरूप कहाँ जाकर विराजमान होते हैं?

स. ३५-इस वक्त छबीलदास भाई किस सेवा के लिए जल लेकर आते हैं? पुनः श्रीजी के चरण धोने की सेवा किसकी है?

ज. २६- चन्द्रवा सजाने की सेवा में गंगादास और शोभादास भाई भी शामिल हैं। इस चन्द्रवा लगाने की विशेष सेवा के विषय में कहा है- *"इस सेवा के तुल्य अन्य कोई सेवा नहीं है।"*

ज. २७- श्रीजी साहेबजी के हाथ पकड़कर प्रेम और सम्मानपूर्वक ले आने की सेवा लच्छीदास भाई करते हैं।

ज. २८- घनश्याम भाई के घर से लौटते समय श्रीजी साहेबजी अपना हाथ लालदासजी की ओर बढ़ाते हैं।

ज. २९- श्री प्राणनाथजी स्वरूप के हाथ पकड़कर प्रेमपूर्वक बंगलाजी में पहुँचाने की सेवा लालदासजी करते हैं।

ज. ३०- प्रेमदास भाई के कंधे पर एक छोटी हजामत की पेटी और एक संदूकची रहती है। उस पेटी के अंदर दाढ़ी और बाल आदि बनाने की सामग्रियाँ रहती हैं।

ज. ३१- महामति श्री प्राणनाथजी झूमती हुई मनमोहक चाल में चलकर आने के पश्चात् गादी पर विराजमान होते हैं।

ज. ३२- इस समय गादी बिछाने की सेवा बिहारीदास भाई करते हैं। वे सिंहासन में भरकर सुन्दर गादी बिछा देते हैं।

ज. ३३- गादी के दोनों ओर सहारे के लिए दो तकिये लगाने की सेवा बिहारीदास भाई करते हैं।

ज. ३४- तत्पश्चात् पाँवड़े पर चलते हुए सीढ़ियाँ चढ़कर श्रीजी स्वरूप बंगलाजी में पहुँच जाते हैं और वहाँ कुरसी पर विराजमान होते हैं।

ज. ३५- इस वक्त छबीलदास भाई श्रीजी के चरण प्रक्षालन-धोने के लिए स्वच्छ जल लेकर आते हैं। इस वक्त चरण धोने की सेवा मुकुन्ददासजी की है।

स. ३६-एक चरण तो मुकुन्ददासजी ने धोया। पुनःश्रीजी का दूसरा चरण धोने की सेवा कौन करते हैं? चरण धोने और पोंछने की सेवा में कौन-कौन शामिल हैं?

स. ३७-श्रीजी की पिंडुरियाँ दबाने की सेवा कौन भाई करते हैं? उनके साथ अन्य कौन शामिल हैं?

ज. ३७- धामधनी श्रीजी साहेबजी की पिंडुरियाँ दबाने की सेवा श्री →

स. ३८-इस वक्त यहाँ चिलमची लेकर कौन बैठते हैं? पुनः प्रसादरूपी जल बाँटने की सेवा कौन करते हैं?

स. ३९-इस वक्त श्रीजी साहेबजी के हाथ धुलाने की सेवा कौन करते हैं? पुनः प्रेमदास भाई इस समय कौनसी सेवा करते हैं?

स. ४०-कहवा क्या है? कहवा की सेवा कौन भाई करते हैं?

स. ४१-श्रीजी के लिए फोफल सुपारी लाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ४२-अपने त्रिकाल सम्बन्धी धनी श्री प्राणनाथजी को घेरकर इस समय कौन-कौनसी अंगनाएँ सेवा के इंतजार में उपस्थित रहती हैं?

ज. ४२- अपने त्रिकाल सम्बन्धी धनी श्री प्राणनाथजी को चारों ओर से →

ज. ३६- श्रीजी का दूसरा चरण धोने की सेवा प्रेमदास भाई की है। चरण धोने और पोंछने की सेवा में अन्य केशवदास भाई और नारायणदास भाई भी शामिल हैं।

→ बनमालीदास भाई करते हैं। उनके साथ इस सेवा में श्री लालदासजी भी शामिल हैं। उनके मन में इस सेवा की आस बनी रहती है।

ज. ३८- इस वक्त यहाँ नन्दराम भाई चिलमची लेकर कुरसी के तले ही तैयार बैठते हैं। परन्तु प्रसादरूपी जल सुन्दरसाथ में बाँटने की सेवा तो शंकरदास भाई करते हैं।

ज. ३९- इस वक्त श्रीजी साहेबजी के हाथ धुलाने की सेवा छबीलदास भाई करते हैं। वे स्वच्छ जल द्वारा श्रीजी के हाथ धुलवाते हैं। पुनः प्रेमदास भाई हाथ में रूमाल लेकर श्रीजी के हाथ पोंछने की सेवा करते हैं।

ज. ४०- कहवा वनस्पति से बना एक प्रकार का काढ़ा है, जिसे पीने से शरीर की सुस्ती दूर हो जाती है। इस समय कहवा की सेवा छबीलदास भाई करते हैं।

ज. ४१- श्रीजी स्वरूप के लिए फोफल सुपारी लाने की सेवा मानिक भाई करते हैं।

→ घेरकर इस समय अम्बोबाई, गौरीबाई, मानवन्तीबाई और गोदावरीबाई दावे के साथ गर्वपूर्वक उपस्थित रहती हैं। दुर्गीबाई, ललिता, सुआबाई, खिमाई, सामबाई, लच्छोबाई, मनगमताबाई, मातेनबाई और जहूरबाई आदि भी धनी की कुरसी के आस-पास सेवा के इंतजार में बैठी रहती हैं।

स. ४३-इस वक्त वाणी गायन करने में कौन-कौन शामिल रहते हैं? पुनः दूसरी ओर वाणी की चर्चा करने के लिए कौन-कौन उपस्थित रहते हैं?

स. ४४-सिंहासन पर विराजमान कराते समय श्रीजी साहेबजी को हाथ पकड़कर सहारा देने की सेवा कौन करते हैं?

स. ४५-ओका भाई कलँगी लेकर श्रीजी की सेवा में कब प्रस्तुत करते हैं?

स. ४६- बंगलाजी में होनेवाली अनेक प्रकार की लीलाओं द्वारा धामस्थ आत्माओं को धामधनी कैसी-कैसी लीलाओं का अनुभव कराते हैं?

स. ४७-छत्र हाथ में लेकर तख्त के पीछे खड़े रहने की सेवा कौन करते हैं?

स. ४८-धामधनी श्रीजी साहेब को कुरसी के ऊपर से ससम्मान हाथ पकड़कर उठाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ४९-तख्त के पायों में फुन्दरे-गोफने बाँधने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. ५०-तख्त के गोफने बाँधने की सेवा कौन करते हैं?

स. ५१-कौन सखी श्रीजी की सभी प्रकार की सेवा में शामिल रहती हैं?

ज. ४३- इस वक्त वाणी गायन करने में शंकर भाई और मथुरा भाई शामिल रहते हैं। एक ओर यहाँ वाणी गायन होता है, तो दूसरी ओर गंगादास भाई और बिहारीदास भाई वाणी की चर्चा करने हेतु उपस्थित रहते हैं।

ज. ४४- सिंहासन पर विराजमान कराते समय श्रीजी साहेबजी को हाथ पकड़कर सहारा देने की सेवा काशी भाई करते हैं।

ज. ४५- जब धामधनी श्री प्राणनाथजी तख्त पर बिछी गादी पर विराजमान होते हैं, तब ओका भाई कलँगी लेकर श्रीजी की सेवा में प्रस्तुत करते हैं।

ज. ४६- बंगलाजी में होनेवाली अनेक प्रकार की लीलाओं द्वारा धामधनी अपनी धामस्थ अंगनाओं को पचीस पक्ष के विहार की लीलाओं का अनुभव कराते हैं। सुन्दरसाथ के प्राणों के नाथ अपने परब्रह्म स्वरूप की पहचान कराकर उन्हें अवर्णनीय सुख प्रदान करते हैं।

ज. ४७- छत्र हाथ में लेकर श्री धामधनी के तख्त के पीछे खड़े रहने की सेवा वल्लभदास भाई करते हैं।

ज. ४८- अपने धामधनी श्रीजी साहेब को कुरसी के ऊपर से ससम्मान हाथ पकड़कर उठाने की सेवा लालदासजी करते हैं।

ज. ४९- तख्त के चार पायों में से एक पाये में फुन्दरे-गोफने बाँधने की सेवा मानिक भाई करते हैं। दो फुन्दरे लालबाई बाँधती हैं और एक फुन्दर घनश्याम भाई बाँधते हैं।

ज. ५०- तख्त के गोफने बाँधने की सेवा में सुदामापुर से आई फूलबाई के साथ मानिकदास शामिल रहते हैं।

ज. ५१- फूलबाई सखी श्रीजी की सभी प्रकार की सेवा में शामिल रहती हैं।

स. ५२-बुधसेन भाई अपने पास क्या रखते हैं?

स. ५३-आवश्यक सामग्रियाँ लाने-ले जाने अथवा समय पर श्रीजी के आगे उपस्थित करने की भागदौड़ में कौन तत्पर रहते हैं?

स. ५४-वाणी लिखनेवालों को इस समय स्याही बनाकर देने की सेवा कौन करते हैं?

स. ५५-कुंजा-पात्र में स्याही भरकर "जो इच्छुक हों, आकर स्याही ले जाएँ"-इस तरह पुकार लगाने की सेवा करनेवाले भाई कौन हैं?

स. ५६-जब धामधनी श्रीजी तख्त पर विराजमान होते हैं, तब उनके दायें-बायें चँवर डुलाने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. ५७-शाम के साढ़े चार बजे श्रीजी साहेबजी सुन्दरसाथ सहित क्या करते हैं?

ज. ५७- शाम के साढ़े चार बजे श्रीजी साहेबजी और सुन्दरसाथ परस्पर →

स. ५८-श्रीजी साहेबजी दैनिक कहाँ बैठकर चर्चा करते हैं और सुन्दरसाथजी कहाँ बैठकर चर्चा सुनते हैं?

स. ५९-ब्रह्म स्वरूप श्रीजी ब्रह्मात्माओं के हाथ किस प्रकार थामते हैं?

ज. ५२- बुधसेन भाई श्रीजी के तख्त के सजावट की सोने-चाँदी की सम्पूर्ण सामग्रियाँ अपने पास रखते हैं।

ज. ५३- आवश्यक सामग्रियाँ लाने-ले जाने अथवा समय पर श्रीजी के आगे उपस्थित करने की भागदौड़ में बुधसेन भाई तत्पर रहते हैं।

ज.५४- वाणी लिखनेवालों को इस समय स्याही बनाकर देने की सेवा बुधसेन भाई करते हैं।

ज. ५५- कुंजा-पात्र में स्याही भरकर *"जो इच्छुक हों, आकर स्याही ले जाएँ"* - इस तरह पुकार लगाने की सेवा करनेवाले भाई हैं - बुधसेन भाई।

ज. ५६- जब श्रीजी साहेब कुरसी से उठकर मनमोहक चाल से चलकर आते हैं और तख्त पर बैठते हैं, तब उनके दायें-बायें चँवर डुलाने की सेवा केशवदास और शंकर भाई करते हैं।

→ श्री परमधाम प्रस्थान की चर्चा करते हैं। उनके मन में यह भाव रहता है कि हम सब शाम के साढ़े चार बजे धाम और धनी को छोड़कर खेल देखने आये हैं। अतः यही समय मूल स्थान-श्री मूल मिलावे का ध्यान-चितवन करने का शुभ मुहूर्त है।

ज. ५८- श्रीजी साहेबजी दैनिक श्री बंगलाजी में तख्त के ऊपर बैठकर चर्चा करते हैं और समस्त सुन्दरसाथ श्रीजी के तख्त के दोनों ओर भरकर बैठ जाते हैं तथा एकाग्रचित्त होकर चर्चा सुनते हैं।

ज. ५९- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म स्वरूप धामधनी श्री प्राणनाथजी ब्रह्मात्मा स्वरूप सुन्दरसाथजी को श्री परमधाम पहुँचाने के लिए ब्रह्मवाणी की महिमावत् चर्चा सुनाकर उनका दिलरूपी हाथ थामते हैं।

स. ६०-महाराजा छत्रसाल अपने धामधनी स्वरूप श्रीजी साहेबजी की सेवा कैसे-किस प्रकार करते हैं?

ज. ६०- महाराजा छत्रसाल अपने धामधनी स्वरूप श्रीजी साहेबजी की →

स. ६१-साकुण्डल सखी श्रीजी स्वरूप को कौन स्वरूप मानकर सेवा कर रही हैं?

स. ६२-महाराजा छत्रसाल को "अमीरुल मोमिन" अर्थात् ब्रह्मसृष्टियों के सिरदार की शोभा क्यों मिली?

ज. ६२- महाराजा छत्रसाल *"यथा नाम तथा गुणः"* के अनुकूल ही →

स. ६३-शाम के साढ़े चार बजते ही गोकुलदास भाई क्या अर्ज करते हैं?

ज. ६३- शाम के साढ़े चार बजे का समय अर्श-श्री परमधाम की चितवनि का समय है। अतः इस शुभ मुहूर्त में खेल के बीच एक साधारण-से व्यक्ति की तरह दिल खोलकर गोकुलदास भाई श्रीजी के →

स. ६४-"हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं"-ऐसा कौन, किससे कहते हैं?

स. ६५-धामधनी श्री प्राणनाथजी गोकुलदास भाई के आत्मीय भाव को सुनकर क्या करते हैं?

स. ६६-स्वामी श्री प्राणनाथजी ने धामस्थ आत्माओं की विनयपूर्ण प्रार्थना को सुनने के पश्चात् उन्हें इस खेल में ही क्या अनुभव करा दिया?

➞ सेवा के समस्त कार्यों में सम्मिलित रहते हैं। वे अत्यधिक पवित्र मन से अपने प्रियतम श्री प्राणनाथजी की एकरस होकर सेवा करते हैं।

ज. ६१- साकुण्डल सखी श्रीजी स्वरूप को साक्षात् अक्षरातीत के अपने धनी मानकर सेवा कर रही हैं।

➞ लौकिक गुणों का परित्याग कर अन्तर आत्मा के भाव प्रकट करते हुए तन,मन,धन से सेवा करते हैं। उनके अंदर अतीम फकीर-परमहंसयुक्त गुण गुह्यरूप में निहित हैं। इसी कारण से उन्हें *"अमीरुल मोमिन"* अर्थात् ब्रह्मसृष्टियों के सिरदार की शोभा मिली।

➞ आगे अर्ज करते हैं कि "हे धनी! अब तो हमें खेल से धाम में उठा लीजिए। अब हमारी किसी भी प्रकार की चाहना शेष नहीं रही। सारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं। अब हमारा खेल में जरा-सा भी मन नहीं लगता। अतः हम पर दया करके शीघ्रातिशीघ्र हमें इस मायावी खेल से उबारने की कृपा कीजिए।"

ज. ६४- *"हमारी मनोकामनाएँ पूर्ण हो चुकी हैं"*-ऐसा श्री गोकुलदास भाई धामधनी श्री प्राणनाथजी के आगे खड़े होकर हाथ जोड़कर कहते हैं।

ज. ६५- धामधनी श्री प्राणनाथजी गोकुलदास भाई के इन प्रिय और भावभरे वचनों को सुनकर ब्रह्मनिष्ठ मोमिन गोकुलदास भाई की प्रार्थना को पूर्णरूपेण स्वीकार कर लेते हैं।

ज. ६६- धामधनी स्वामी श्री प्राणनाथजी ने धामस्थ आत्माओं की विनयपूर्ण प्रार्थना को सुनने के पश्चात् संसार की लीला में रहते हुए ही परमधाम की लीला-सुख का अनुभव प्रदान कर दोनों (खेल और धाम) स्थानों में धन्य-धन्य बना दिया।

स. ६७-ढाल, तलवार आदि रखने की विशेष सेवा पहले किस-किसने की और वर्तमान में कौन कर रहे हैं?

स. ६८-ढाल, तलवार, अस्त्र-शस्त्र आदि रखने की सेवा क्रमशः किन-किनके द्वारा होते-होते भाई बुधसेन के पास आई?

ज. ६८- ढाल, तलवार, अस्त्र-शस्त्र आदि रखने की सेवा गिरधर भाई के बाद लालदासजी करने लगे। फिर कुछ समय तक यह सेवा →

स. ६९-सूरत सिंह भाई और घनश्याम भाई अपने कृपानिधान धामधनी की कौन-कौनसी सेवा करते हैं?

स. ७०-किसके हाथों से श्री बाईज्यूराज धामधनी के आभूषण भिजवाती हैं?

स. ७१-धामधनी के आभूषण ले आने की सेवा कौन भाई करते हैं और कब-कब?

स. ७२-चाँदी की रकाबी में क्या होता है? वह ले आने की सेवा कौन करते हैं? पुनः श्रीजी को आभूषण पहनाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ७३-महाराजा छत्रसाल अपने धामधनी श्री प्राणनाथजी को कौन-कौनसे आभूषण पहनाते हैं?

ज. ७३- महाराजा छत्रसाल अपने धामधनी श्री प्राणनाथजी को मोतियों →

स. ७४-श्रीजी स्वरूप द्वारा धारण किए हुए विभिन्न आभूषणों में से विशेषकर किन आभूषणों में मानिक आदि नग अत्यंत चमकते हुए दिखाई देते हैं?

ज. ६७- ढाल, तलवार आदि रखने की विशेष सेवा पहले मुरलीधर भाई ने की। तत्पश्चात् कुछ दिनों तक यह सेवा भिखारीदास भाई ने की तथा अभी वर्तमान में यही सेवा गिरधर भाई उठा रहे हैं।

→ सन्तराम भाई ने की। कभी-कभी यह सेवा दूसरे भिखारीदास भाई ने की। अंत में यही सेवा बुधसेन भाई ने की। इस प्रकार लालदासजी से सन्तराम भाई, सन्तराम भाई से भिखारीदास भाई और फिर भिखारीदास भाई द्वारा अंत में यह सेवा भाई बुधसेन के पास पहुँची।

ज. ६९- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म कृपानिधान श्री राजजी के लिए सूरत सिंह भाई अपने पास तीर-कमान और तरकश रखने की सेवा करते हैं, तो घनश्याम भाई बरछी रखने की सेवा करते हैं।

ज. ७०- श्री बाईज्यूराज श्रीजी साहेबजी के लिए सिंगार के आभूषण मकरन्द भाई के हाथों से भिजवा देती हैं।

ज. ७१- धामधनी के आभूषण ले आने की सेवा मकरन्द भाई दैनिक नियमपूर्वक करते हैं।

ज. ७२- चाँदी की रकाबी में श्रीजी के सिंगार के आभूषण होते हैं, जिन्हें ले आने की सेवा मकरन्द भाई करते हैं। पुनः वे आभूषण श्रीजी साहेबजी को पहनाने की सेवा महाराजा छत्रसालजी करते हैं।

→ की दो मालायें, स्वर्ण का हार, सोने की दो जंजीरें, नगों से जड़ित दो दुगदुगी आदि विभिन्न आभूषण पहनाते हैं, जिनमें मानिक आदि नग चमकते दिखाई पड़ते हैं।

ज. ७४- श्रीजी स्वरूप द्वारा धारण किये हुए उपरोक्त आभूषणों में से नगों से जड़ित दोनों दुगदुगी में जड़े हुए मानिक आदि नग अन्य आभूषणों से भी अधिकाधिक चमकते हुए दिखाई देते हैं।

स. ७५-किन-किन हारों के नगों की ज्योति चमकते हुए झिलमिलाती हैं?

स. ७६-श्रीजी के कण्ठ में कौनसी कण्ठी बड़ी भली मालूम पड़ती है?

स. ७७ श्रीजी द्वारा धारण की हुई किस कण्ठी के ऊपर मानिक नग, तो नीचे मोती देदीप्यमान हैं?

स. ७८-पाग के ऊपर चारों ओर चंद्रिका किस तरह शोभायमान है?

स. ७९-उक्त कमल सदृश चंद्रिका के नीचे किनार में कौन-कौनसे नग अपनी सुन्दर चमक बिखेरते हैं?

स. ८०-महाराजा छत्रसालजी की विशेष सेवा कौनसी है?

ज. ८०- महाराजा छत्रसालजी श्रीजी साहेबजी को पहुँची आदि आभूषण →

स. ८१-श्रीजी स्वरूप के हाथों की अंगुलियों में अँगूठियाँ पहनाने की सेवा कौन और कैसे करते हैं?

ज. ८१- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्म स्वरूप श्रीजी के हाथों की अंगुलियों में →

स. ८२-यहाँ इस पहर के अंत में बीतककार लालदासजी महाराज सुन्दरसाथ से क्या कह रहे हैं?

ज. ८२- यहाँ इस पहर के अंत में बीतककार श्री लालदासजी महाराज धामस्थ सुन्दरसाथ से कहते हैं,“ हे ब्रह्मनिष्ठ मोमिनों! ये चौथे →

ज. ७५- चन्द्रहार और चम्पकली नामक हार के नगों की ज्योति अपरम्पाररूपेण चमकते हुए झिलमिलाती हैं।

ज. ७६- श्रीजी साहेबजी के सुन्दर कण्ठ में सोने की कण्ठी बड़ी भली मालूम पड़ती है।

ज. ७७- श्रीजी द्वारा धारण की हुई मोतियों से बनी कण्ठी के ऊपर मानिक नग, तो नीचे मोती देदीप्यमान हैं।

ज. ७८- श्री धनीजी द्वारा सिर पर धारण की हुई पाग के ऊपर चारों ओर चंद्रिका लटकती हुई कमल के समान शोभायमान है।

ज. ७९- उक्त कमल सदृश चंद्रिका के नीचे किनार में लटकते हुए मोती और हीरे अपनी सुन्दर चमक बिखेरते हैं।

→ पहनाते हैं, जिसमें जड़े हुए हीरा, मानिक आदि नगों की ज्योत झलझलाकार करती हैं। श्रीजी को यह आभूषण पहनाने की सेवा ही महाराजा छत्रसाल की विशेष सेवा है।

→ अनेकों अँगूठियाँ पहनाने की सेवा महाराजा छत्रसालजी करते हैं। पुनः वे श्रीजी के हाथों की अंगुलियों के माप के अनुसार स्वेच्छानुकूल छोटी-बड़ी अँगूठियाँ पहनाते हैं।

→ पहर की बीतक है। आगे पाँचवें पहर का वर्णन होगा, उसे आप सब प्रेमपूर्वक तन और मन से श्रवण कर लीजिए।"

- (प्रकरण ६७, सवाल-जवाब नं. ८२, कुल सं.४८६६+८२=४९४८)।

❀ पाँचवाँ पहर ❀

स. १ - पाँचवाँ पहर कहाँ से, कहाँ तक है? इस पहर में क्या करने की तैयारी की जा रही है?

स. २ - इस समय लच्छोबाई सामने आकर अपने धामधनी से क्या पूछती हैं?

स. ३ - लच्छोबाई द्वारा पूछे गए प्रश्न के जवाब में श्री राजजी क्या कहते हैं?

स. ४ - श्रीजी के लिए तख्त पर गादी बिछाने की सेवा किसकी है? वे तख्त पर क्या-क्या बिछाते अथवा रखते हैं?

ज. ४ - श्रीजी के लिए तख्त पर गादी बिछाने की सेवा श्री बिहारीदासजी →

स. ५ - इस समय तख्त से लगकर गादी बिछाने की सेवा कौन और कैसे करते हैं?

स. ६ - दीपक जलाने की सेवा कौन-कौन करते हैं? वे श्रीजी को किस प्रकार रिझाते हैं?

स. ७ - कौन इस समय सुखपाल-पालकी में विराजमान होकर अपने मंदिर से बंगलाजी में आती हैं?

स. ८ - कौन सखी मीठी बातें करते हुये श्रीजी से भोजन के लिए विनय करती हैं?

❀ पाँचवाँ पहर ❀

ज. १ - पाँचवाँ पहर सायं छः बजे से रात्रि के नौ बजे तक है। इस समय श्री परमधाम की दिव्य चर्चा के लिए श्रीजी साहेबजी को सिंहासन पर आसीन कराने की तैयारी की जा रही है।

ज. २ - इस समय लच्छोबाई सामने आकर अपने धामधनी श्रीजी साहेबजी से विनयपूर्वक पूछती हैं, "हे धामधनी! आज आप हम लोगों को पचीस पक्षों में से किस स्थान पर ले चलेंगे?"

ज. ३ - लच्छोबाई द्वारा पूछे गए उक्त प्रश्न के जवाब में श्री राजजी कहते हैं, "आज पाट घाट में पधारने की बारी है। आज हम पाट घाट की सैर का अनुभव करायेंगे।"

→ की है। वे तख्त पर गद्दा, पिछौरा और सुई से सीया हुआ ओढ़ने-बिछाने का एक वस्त्र रखते हैं। गादी पर विशेषरूप से मखमल के तकिये रखने की सेवा भी बड़े प्रेम से करते हैं।

ज. ५ - इस समय यहाँ तख्त से लगकर गादी बिछाने की सेवा श्री बिहारीदासजी करते हैं। वे चारों किनारों से खींचकर भली प्रकार से आसन बिछाने की सेवा करते हैं।

ज. ६ - सायंकाल में दीपक जलाने की सेवा मानिकबाई और करमेतीबाई तन्मय होकर करती हैं। ये दोनों उचित समय पर अपनी-अपनी सेवा द्वारा अपने धनी को रिझाती हैं।

ज. ७ - इस शुभ मुहूर्त में अपने मंदिर से सुखपाल-पालकी में विराजमान होकर श्रीजी साहेबजी की अर्धांग श्री बाईज्यूराज बंगलाजी में उपस्थित होती हैं।

ज. ८ - श्रीजी साहेबजी की अर्धांग श्री बाईज्यू अपने प्रियतम श्री प्राणनाथजी से मीठी-मीठी बातें करते हुए भोजन के लिए विनय करती हैं।

स. ९ - इस वक्त श्रीजी साहेबजी को आरोगाने के लिए कौन-कौन सखी थाल लेकर आती हैं?

स. १०-स्वामी श्री प्राणनाथजी को आरोगाने के लिए इस समय उनके समीप कौन-कौन बैठते हैं?

स. ११-इस समय श्रीजी साहेबजी के हाथ धुलाने की सेवा कौन करती हैं?

स. १२- श्रीजी के हाथ पोंछने के लिए महाराजा छत्रसाल रूमाल किसे देते हैं?

स. १३-पुनः महाराजा छत्रसालजी एक रूमाल अपने मुख पर बाँधकर क्यों रखते हैं?

स. १४-श्रीजी को आरोगाने के लिए राजभोग की तरह कौन-कौनसी विभिन्न सामग्रियाँ उपस्थित की जाती हैं? पुनः श्रीजी साहेबजी इस वक्त कैसे आरोगते हैं?

स. १५-अन्य कौन भाई मुँह पर आड़ा रूमाल बाँधकर श्रीजी को आरोगाने की सेवा में संलग्न रहते हैं?

स. १६-श्रीजी साहेबजी के सम्मुख थाल लाकर रखने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल किस ध्येय से इस समय श्रीजी के समीप ही बैठते हैं? पुनः श्रीजी इस समय किनसे रीझकर मीठी बातें करते हैं ?

स. १७-इस वक्त सुन्दरसाथ किस तरह-क्या करके श्री धनीजी को रिझाते हैं?

ज. ९ - इस वक्त श्रीजी साहेबजी को आरोगाने के लिए मथुरीबाई और हिमोतीबाई भोजन का थाल लेकर आती हैं।

ज. १०- स्वामी श्री प्राणनाथजी को आरोगाने के लिए इस समय उनके समीप महाराजा छत्रसाल और श्री बाईज्यूराजजी विराजते हैं।

ज. ११- इस समय श्रीजी साहेबजी के हाथ धुलाने के सेवा मानिकबाई प्रेमपूर्वक प्रसन्नता के साथ करती हैं।

ज. १२- हाथ धुलाने के पश्चात् श्रीजी के हाथ पोंछने के लिए महाराजा छत्रसाल मानिकबाई को रूमाल देते हैं।

ज. १३- अपने प्राणवल्लभ प्रियतम श्रीजी को आरोगाने की सेवा के लिए महाराजा छत्रसालजी एक रूमाल अपने मुख पर बाँधकर रखते हैं।

ज. १४- श्रीजी को आरोगाने के लिए इस समय राजभोग की तरह विभिन्न भोज्य-सामग्रियाँ जैसे शाक-भाजी, तरकारियाँ आदि उपस्थित की जाती हैं। श्रीजी साहेबजी बड़े प्रेम से आरोगते हैं।

ज. १५- दूसरे भाई बिहारीदासजी भी मुँह पर आड़ा रूमाल बाँधकर श्रीजी को आरोगाने की सेवा में संलग्न रहते हैं।

ज. १६- श्रीजी साहेबजी के सम्मुख थाल लाकर रखने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल श्रीजी साहेबजी को प्रेमपूर्वक आरोगाने के ध्येय से श्रीजी के समीप ही बैठते हैं। इस समय श्रीजी साहेबजी रीझकर मधुर वाणी में महाराजा छत्रसालजी से बातें करते जाते हैं।

ज. १७- इस वक्त सुन्दरसाथजी मधुर वाणी में श्रीजी के गुणगान करके श्रीजी को रिझाते हैं।

स. १८-श्रीजी साहेबजी इस समय किनके प्रति प्रसन्न होकर कौल का प्रसाद प्रदान करते हैं?

स. १९-श्रीजी साहेबजी को आरोगाते समय कौन उनसे मीठी-मीठी बातें करती हैं, जिससे प्रसन्न होकर श्रीजी उनसे कहते हैं, "उतरकर नीचे इस तख्त पर आकर बैठो"?

स. २०-इस समय सोने के सुन्दर कटोरे में श्रीजी को आरोगाने के लिए जल भरकर कौन लाते हैं?

स. २१-भोजन के वक्त श्रीजी को आरोगाने के लिए कौन अपने घर से विविध भोजन सामग्रियाँ, मसाले, मेवे-मिठाई आदि स्वादिष्ट पकवान ले आते हैं? श्रीजी इन सामग्रियों को कैसे ग्रहण करते हैं?

स. २२-धामधनी श्रीजी साहेबजी के आरोग लेने के पश्चात् महाराजा छत्रसालजी क्या करते हैं?

स. २३-श्रीजी साहेबजी के लिए इस समय मानिकबाई क्या लेकर आती हैं?

स. २४-मानिकबाई द्वारा लाया हुआ औषधियुक्त कहवा धामधनी को कौन अर्पित करते हैं?

स. २५-इस समय श्रीजी को आरोगाने के लिए कल्याणबाई क्या लेकर आती हैं?

स. २६-इस समय श्री बाईज्यूराज कौनसी सेवा करती हैं, जो उन्होंने बाद में कल्याणबाई को दे दी?

ज. १८- श्रीजी साहेबजी इस समय गुणगान करनेवालों से प्रसन्न होकर उन्हें कौल का प्रसाद प्रदान करते हैं।

ज. १९- श्रीजी साहेबजी को आरोगाते समय श्री बाईज्यूराज उनसे मीठी-मीठी बातें करती हैं, जिससे श्रीजी उनकी मीठी-मधुर बातें सुनकर उनसे कहते हैं कि *"उतरकर नीचे इस तख्त पर आकर बैठो।"*

ज. २०- इस समय सोने के सुन्दर कटोरे में श्रीजी को आरोगाने के लिए जल भरकर लाने की सेवा छबीलदास भाई करते हैं।

ज. २१- भोजन के वक्त श्रीजी साहेबजी को आरोगाने के लिए छबीलदास भाई अपने घर से विविध भोजन सामग्रियाँ, मसाले, मेवे-मिठाई आदि स्वादिष्ट पकवान ले आते हैं। श्रीजी इन सामग्रियों को बड़े प्यार से अर्थात् चाव के साथ ग्रहण करते हैं।

ज. २२- धामधनी श्रीजी साहेबजी के आरोग लेने के पश्चात् महाराजा छत्रसाल मन में प्रसन्न होकर बड़े उमंग के साथ श्रीजी को चुल्लू कराते हैं।

ज. २३- श्रीजी साहेबजी के लिए इस समय मानिकबाई विभिन्न औषधियों से निर्मित कहवा-स्वास्थ्यप्रद काढ़ा लेकर आती हैं।

ज. २४- मानिकबाई द्वारा लाया हुआ औषधियुक्त कहवा पात्र में भरकर धामधनी को अर्पित करने की सेवा गंगादास भाई करते हैं।

ज. २५- इस समय श्रीजी को आरोगाने के लिए कल्याणबाई फूल सुपारी पान के बीड़े में डालकर ले आती हैं।

ज. २६- इस समय श्री बाईज्यूराज फूल सुपारी पान के बीड़ा में डालकर वह बीड़ा धामधनी को आरोगाने की सेवा करती हैं। यह सेवा बाद में उन्होंने अपनी सेविका जानकर कल्याणबाई को दे दी।

स. २७-पान का बीड़ा सँवारने की सेवा किसकी है? इस समय महाराजा छत्रसाल क्या लेकर आते हैं? पुनः सुपारी देने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

स. २८-इस समय धामधनी श्रीजी साहेबजी के सिंगार के लिए एक के बाद एक कैसी कलँगी आती हैं?

स. २९-इस समय आनेवाले प्रत्येक सुन्दरसाथ अपने नाम की घोषणा करते हुए श्रीजी को प्रणाम क्यों करते जाते हैं?

स. ३०-कलँगी लेकर आने की सेवा कौन-कौन करते हैं? श्रीजी उनकी सेवा ग्रहण कर क्या करते हैं?

स. ३१-महाराजा छत्रसाल स्वयं अपने हाथों से क्या बनाकर लाते हैं? पुनः श्रीजी उनके द्वारा लायी हुई सेवा को कैसे धारण करते हैं तथा उसकी छवि कैसी दिखाई पड़ती है?

स. ३२-इस समय श्री मुकुन्ददासजी कैसी कलँगी लेकर उपस्थित होते हैं?

स. ३३-इस समय महाराजा छत्रसालजी के अन्तःपुर से श्रीजी की सेवा में क्या आता है?

स. ३४-श्रीजी साहेब के सिंगार के लिए मनोनुकूल सुन्दर आभूषण कौन प्रस्तुत करते हैं?

स. ३५-आईजी श्रीजी साहेब की सेवा में चँवर कब डुलातीं हैं?

ज. २७- पान का बीड़ा सँवारने का सेवा-कार्य श्री तेजबाई करती हैं। इस समय महाराजा छत्रसाल अपना पानका बीड़ा लेकर आते हैं। इस पान में सुपारी आदि देने की सेवा में मानिक भाई, छबीलदास भाई और मझली महारानी सम्मिलित होते हैं।

ज. २८- इस समय धामधनी श्रीजी साहेबजी के सिंगार के लिए एक के बाद एक बढ़िया से बढ़िया कलँगी और फूलहार आते हैं।

ज. २९- इस समय आनेवाले प्रत्येक सुन्दरसाथ अपने नाम की घोषणा करते हुए श्रीजी को प्रणाम करते जाते हैं, जिससे कि यह ज्ञात हो कि यह सेवा किनकी ओर से है।

ज. ३०- कलँगी लेकर आने की सेवा शंभू भाई, ओका भाई और जसिया भाई करते हैं। श्रीजी साहेब इनकी सेवा को स्वीकार करते हुए अपना हाथ उनकी कलँगी पर रख देते हैं।

ज. ३१- महाराजा छत्रसाल इस समय स्वयं अपने हाथों से कलँगी बनाकर लाते हैं, जिसे धामधनी श्रीजी अपने हाथों से सिर पर एक ओर कुछ लटकती-झुकी हुई-सी बाँध लेते हैं। श्रीजी द्वारा धारण की हुई इस झुकी हुई कलँगी की छवि भली-सी दिखाई देती है।

ज. ३२- मुकुन्ददासजी इस समय तुर्रा और पंखों से बनी हुई कलँगी लेकर उपस्थित होते हैं।

ज. ३३- इस समय महाराजा छत्रसालजी के अन्तःपुर से नियमितरूप से श्रीजी की सेवा में कलँगी और हार आते हैं।

ज. ३४- इस अवसर पर श्रीजी साहेबजी के सिंगार के लिए स्वयं महाराजा छत्रसालजी अपने मनोनुकूल सुन्दर आभूषण प्रस्तुत करते हैं।

ज. ३५- धामधनी स्वरूप श्रीजी जब सिंहासन पर विराजमान होते हैं, तब उस समय आईजी उनकी सेवा में चँवर डुलातीं हैं।

स. ३६-दोनों हाथों से एक साथ चँवर डुलाकर सेवा-धर्म का पालन कौन करते हैं? उनके साथ चँवर डुलाने में अन्य कौन-कौन शामिल रहते हैं?

स. ३७-इसी समय कभी-कभी लालदासजी और केशवदासजी पीठ पीछे से श्रीजी के आगे क्या अर्ज करते हैं?

स. ३८-चितवनि की बारीवाले सुन्दरसाथ इस समय क्या करते हैं?

स. ३९-बंगलाजी में एक पहर रात्रि तक समस्त सुन्दरसाथ मिलकर क्या करते हैं?

स. ४०-इस समय मनाबाई श्रीजी के आगे क्या विनती करती हैं और क्यों?

ज. ४०- इस समय मनाबाई श्रीजी के आगे युगलस्वरूप श्री राजश्यामाजी →

स. ४१-मनाबाई द्वारा उक्त प्रकार से विनम्रतापूर्वक इच्छा प्रकट करने पर श्रीजी साहेब क्या करते हैं?

ज. ४१- मनाबाई द्वारा उक्त प्रकार से विनम्रतापूर्वक इच्छा प्रकट करने पर धामधनी स्वरूप श्रीजी साहेब उनकी अर्ज स्वीकार करते हुए उन्हें सिंगार वर्णन सुनाते हुए कहते हैं, "ए मना! श्री श्यामाजी →

स. ४२-आज के दिन किस जुत्थ-पत्नी की नृत्य की बारी है? उनके द्वारा निरत के समय धारण किए हुए वस्त्रों का वर्णन धनी किन्हें सुना रहे हैं?

ज. ४२- आज के दिन नवरंगबाई के जुत्थ की नृत्य की बारी है। धामधनी →

ज. ३६- अपने दोनों हाथों से एक साथ चँवर डुलाकर सेवा-धर्म का पालन महाराजा छत्रसाल करते हैं। उनके साथ इस समय शेख बदल भाई और लाल खाँ भाई भी प्रेम से भली प्रकार चँवर डुलाते हैं।

ज. ३७- इसी समय कभी-कभी लालदासजी और केशवदासजी श्रीजी के पीठ पीछे आकर विनम्रतापूर्वक यह अर्ज करते हैं, "हे धनी! हमारी इच्छा है कि हम अभी कुरान और हदीसे पढ़ें!"

ज. ३८- चितवनि की बारीवाले सुन्दरसाथ इस समय धामधनी श्रीजी साहेबजी को भोग लाकर अर्पण करते हैं।

ज. ३९- बंगलाजी में समस्त सुन्दरसाथ मिलकर एक पहर रात्रि तक *"संध्या को अवसर"* का गायन करते हैं।

→ के वस्त्राभूषण-सिंगार की चर्चा सुनाने की विनती करती हैं क्योंकि चितवनि के वक्त सिंगार वर्णन सुनने में वे उपस्थित नहीं थी।

→ महारानी की सेंदुरिया रंग की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की चोली, नीले-लाहि (धूप-छाँव) रंग की चरनियां है। पुनः श्री राजजी महाराज सेंदुरिया रंग की पगड़ी, सफेद रंग जड़ाव का जामा, आसमानी रंग की पिछौरी, नीले-पीले बीच के रंग का पटुका और केसरिया रंग की इजार (सुथनी) पहने हुए हैं। इस मूल बागे का एकाग्रचित्त से चितवन करो।"

→ स्वरूप श्रीजी साहेब नवरंगबाई द्वारा निरत के दौरान धारण किये हुए वस्त्रों का वर्णन मनाबाई को सुनाते हुए कहते हैं, "नवरंगबाई ने निरत के समय श्याम-काले रंग की जड़ित साड़ी, आम्रवर्ण की पीली चोली, पाँच पट्टियों से बनी चरनियां पहनी है। उनकी इजार (सुथनी) नीले रंग की है।"

स. ४३-अन्य सखियों (ब्रह्मात्माओं) का सिंगार कैसा है?

स. ४४-सुन्दरसाथ-ब्रह्मात्माओं को चर्चा में कौनसा प्रसंग बड़ा रुचकर लगता है? धामधनी दिन में चर्चा में कितनी बार सिंगार वर्णन सुनाते हैं?

स. ४५-चौदह लोक ब्रह्माण्ड में समस्त संसार के जीवों के पूजनीय ईश (इष्ट) कितने हैं और कौन-कौनसे?

स. ४६-चौदह लोक ब्रह्माण्ड के जीवों द्वारा पूजनीय उक्त इष्टों को वेद और कतेब में क्या कहते हैं? पुनः वे तीनों इष्ट कहाँ के हैं?

ज. ४६- चौदह लोक ब्रह्माण्ड के उक्त पूजनीय इष्टों को नारायणी जीव →

स. ४७-उक्त फरिश्तों-त्रिदेवों के मूल देव अथवा फरिश्ते कौन हैं, जिनका ये ध्यान धरते हैं?

ज. ४७- उक्त फरिश्तों-त्रिदेवों के मूल देव अथवा फरिश्ते अविनाशी अक्षर →

स. ४८-परन्तु श्रीजी स्वरूप यहाँ पन्ना में जिन स्वरूप का वर्णन कर सुनाते हैं, वे स्वरूप कौन हैं?

ज. ४८- यहाँ पन्ना धाम में श्रीजी साहेबजी जिन स्वरूप का रात-दिन →

स. ४९-उक्त सिंगार वर्णन करके सुन्दरसाथ को सुनानेवाले स्वरूप कौन हैं? पुनः सुननेवाले साथ कौन अथवा कहाँ के हैं?

ज. ४३- अन्य सखियों (ब्रह्मात्माओं) का सिंगार श्री श्यामाजी के जैसा है।

ज. ४४- सुन्दरसाथ-ब्रह्मात्माओं को चर्चा में मूल मिलावे का "*वस्त्र सिंगार वर्णन*" बड़ा रुचकर लगता है। धामधनी श्रीजी साहेबजी दिन में दो बार अर्थात् एक बार प्रातः और एक बार सायंकाल चर्चा में सिंगार वर्णन सुनाते हैं।

ज. ४५- चौदह लोक ब्रह्माण्ड में समस्त संसार के जीवों के पूजनीय ईश (इष्ट) मुख्यतः तीन हैं। जैसे-सतलोक स्थायी ब्रह्मा, विष्णु और महेश।

→ वेदों में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तथा कतेब (कुरान) में मेकाईल, अजाजील और अजराईल नाम से जानते और मानते हैं। ये तीनों सतलोक (वैकुण्ठ) अथवा कुरान की भाषा में मलकूत में रहते हैं।

→ ब्रह्म हैं, जिनका वे अन्धाधुन्ध कूटस्थ, अविनाशी नाम से ध्यान धरते हैं, नमन करते हैं। इनका मूल स्थान अक्षर धाम है, जिसे कुरान-कतेब में जबरूत कहते हैं।

→ वर्णन करके सुनाते हैं, वे स्वरूप तो कूटस्थ अविनाशी अक्षर ब्रह्म (नूर) से भी परे अक्षरातीत (नूर तजल्लाह) धाम के अन्दर स्थित लाहूत, पुनः लाहूत के भी अन्दर स्थित हाहूत (मूल मिलावे) में विराजमान श्री राजश्यामाजी स्वरूप हैं।

ज. ४९- उक्त सिंगार वर्णन करके सुन्दरसाथ को सुनानेवाले स्वरूप अक्षरातीत अखण्ड परमधाम के अद्वैत परमात्मा-ब्रह्मात्माओं के धनी हैं तथा सुननेवाले सुन्दरसाथ भी उसी अक्षरातीत ब्रह्मधाम की ब्रह्मात्माएँ ही हैं। ये अक्षरातीत ब्रह्मधाम, जो "*अक्षरात्परतः* →

→ *परः''* है, में रहनेवाले उत्तम पुरुष सम्बन्धी ब्रह्मात्माएँ मात्र ही →

स. ५०-मात्र मोमिन रूहें-ब्रह्मात्माएँ ही ब्रह्मधाम की चर्चा सुन सकती हैं, अन्य नहीं! ऐसा क्यों?

ज. ५०- उक्त ब्रह्मलीला विषयक ब्रह्म-चर्चा पूर्ण निष्ठा से मात्र धाम की →

स. ५१-अन्य जीवात्माएँ किसी को खुश करने हेतु चर्चा में आ भी जाएँ, परंतु उनका मन चर्चारस में डूब नहीं सकता, ऐसा क्यों?

ज. ५१- अन्य जीवात्माएँ माता-पिता के कहने पर अथवा दोस्तों की खुशी →

स. ५२-क्या मात्र परमधाम के अंकुर पर ही निर्भर करता है?

ज. ५२- श्री परमधाम का वर्णन, धनी (ब्रह्म), धाम (ब्रह्मधाम) और ब्रह्मलीला सम्बन्धी ज्ञान-तत्त्व की वास्तविक समझ प्राप्त कर →

स. ५३-बिना सम्बन्ध किसी के मन में क्या नहीं जम पाता और क्यों?

ज. ५३- परमधाम के परात्मा रहित अंकुरहीन असम्बन्धी आत्माओं के →

स. ५४-''विवेकहीन अंधों'' की संज्ञा किसने और किन्हें दी है? क्यों?

ज. ५४- असम्बन्धी अथवा मायावी जीवात्माओं को ब्रह्मज्ञान की समझ →

स. ५५-श्रीजी स्वरूप द्वारा कुरान-पुराण, वेद-कतेब का रहस्य खोलकर सामने रख देने पर किसकी भविष्यवाणी सिद्ध हुई?

→ अपनापन धारण कर सोलह आना चर्चा का रसपान कर रही हैं।

→ ब्रह्मात्माएँ ही सुन सकती हैं, अन्य नहीं क्योंकि मात्र ब्रह्मात्माओं के आत्म-श्रवणों में ही सच्ची श्रवण-शक्ति है। उनमें ब्रह्मधाम और ब्रह्मलीला के प्रति पूर्ण श्रद्धा और विश्वास होने के कारण मात्र वे ही इस चर्चा को चाव के साथ अपनापन लेकर सुन सकते हैं।

→ के लिए चर्चा में आ भी जाएँ, परन्तु उनमें सुनने की जिज्ञासा नहीं होती। अतः वे चर्चा को कैसे सुनेंगे और समझ सकेंगे? संतों की वाणी में कहे प्रमाण *"ऊँघे कां उठ जाय"* अर्थात् कदाच चर्चा में बैठ भी गए, तो या तो नींद पूरी करेंगे, अन्यथा उठकर चले ही जायेंगे, क्योंकि यह चर्चा असम्बन्धियों को प्राप्त ही नहीं होती, तो रसमग्न होना तो दूर की बात है।

→ पाना मात्र परमधाम के अंकुर पर ही निर्भर करता है। परमधाम के अंकुर से रहित जीवात्माएँ तो उस ज्ञान को प्राप्त करने की जिज्ञासा तक प्राप्त नहीं कर सकती हैं।

→ मन में सम्बन्ध के बिना धाम का ब्रह्मज्ञान नहीं जम पाता क्योंकि उनकी पूर्ण दृष्टि माया की ओर होने के कारण वे ब्रह्म और ब्रह्मज्ञान की तरफ बिलकुल ही अन्धे होते हैं।

→ के विषय में अंधों और बहरों की संज्ञा विभिन्न सद्ग्रन्थों-धर्मशास्त्रों ने दी है क्योंकि उन असम्बन्धी मायावी जीवात्माओं में विचार-विवेक नहीं होता। अतः वे ब्रह्मज्ञान के विषय-वस्तुओं की समझ प्राप्त नहीं कर पाते।

ज. ५५- श्रीजी स्वरूप द्वारा कुरान-पुराण, वेद-कतेब के गुह्यार्थ खोलकर सबके सामने रख देने पर सृष्टि के आप्तपुरुषों, भविष्यवक्ताओं के भविष्य-वचन सिद्ध हुए। विशेष कर तृतीय श्याम स्वरूप मुहम्मद साहेब के भविष्य-वचन सिद्ध हुए।

स. ५६-संसारी जीव किस समय भी अपनी जीविका के विषय में लिप्त रहे?

ज. ५६- जिस समय सारे संसार की मानवात्माओं को अपनी आत्मा का →

स. ५७-किस समय चारों ओर से आकर समस्त सुन्दरसाथ बंगलाजी में उपस्थित होते हैं?

ज. ५७- संध्या आरती के समय में चारों ओर से आ-आकर समस्त →

स. ५८-इस समय बिहारीदास भाई उपस्थित होकर कौनसी सेवा करते हैं?

स. ५९-बंगलाजी में संध्या आरती नित्य प्रति कैसे होती है? उस समय सुन्दरसाथ किस सुख का अनुभव करते हैं?

ज. ५९- बंगलाजी में संध्या आरती अत्यधिक प्रेम, प्रीत और आनन्द से →

स. ६०-झाँझ, मृदंग, ताल आदि वाद्ययंत्र सँभालकर रखने की सेवा कौन भाई करते हैं?

स. ६१-ब्रह्मनिष्ठ मोमिन आत्माएँ कैसे-किस सेवा द्वारा प्रशंसा एवं महिमा की पात्र बनीं?

स. ६२-दगड़ा भाई उक्त वाद्ययंत्र आदि सामग्रियाँ किस समय हाजिर करते हैं और कब सँभालकर रख देते हैं?

ज. ६२- दगड़ा भाई उक्त वाद्ययंत्र आदि सामग्रियाँ आरती आदि के समय →

स. ६३-संध्या आरती के वक्त भाखरिया भाई की सेवा क्या है?

→ उद्धार करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था, उस समय उन्होंने आत्मा को महत्त्व न देकर संसार-शरीर को महत्त्व दिया और इन्द्रियजन्य विषय सुखों को प्रधानता देकर विषय रस में ही निमग्न रहे तथा इस प्रकार इन्होंने अपनी आत्मा का घात कर लिया।

→ सुन्दरसाथ बंगलाजी में उपस्थित होते हैं। आरती के वक्त की अवर्णनीय छवि एवं अनुभव होनेवाले आनन्द के सम्बन्ध में रचनाकार कहते हैं कि "यह वर्णन करना तो शक्ति से परे की बात है।"

ज. ५८- इस समय बिहारीदास भाई उपस्थित होकर श्रीजी साहेबजी के सिंहासन पर श्री बाईज्यूराज और श्रीजी साहेबजी के लिए एक साथ ही गादी-तकिये बिछाने की सेवा प्रेमपूर्वक करते हैं।

→ होती है। समस्त साथ श्री परमधाम के प्रेमानन्द के सुख में विभोर होकर गाते और नाचते हैं। इस समय समस्त सुन्दरसाथ अपने आत्म-सम्बन्धी युगलस्वरूप की आरती उतारते हुए धाम के अपरिमित सुख का अनुभव करते हैं।

ज. ६०- झाँझ, मृदंग, ताल आदि वाद्ययंत्र थैली में भरकर सँभालकर रखने की सेवा दगड़ा भाई करते हैं।

ज. ६१- आरती एवम् सेवा के रूप में अपनी आत्मा समर्पित करके ब्रह्मनिष्ठ मोमिन आत्माएँ प्रशंसा एवं महिमा की पात्र बनीं।

→ जब-जब जरूरत पड़ती है, तब-तब हाजिर करते हैं और सबको बाँट देते हैं। पुनः कार्यक्रम पूरा होते ही सभी सामग्रियाँ जमा करके सँभालकर रख देते हैं।

ज. ६३- संध्या आरती के वक्त भाखरिया भाई आनन्दविभोर होकर नृत्य करते हैं।

स. ६४-संध्या आरती के समय दोनों ओर चँवर डुलाने की सेवा कौन करते हैं?

ज. ६४- संध्या आरती के समय दोनों ओर चँवर डुलाने की सेवा →

स. ६५-चँवर डुलाने की सेवा में किन-किन के नाम उल्लेखनीय हैं? क्यों?

ज. ६५- चँवर डुलाने की सेवा कुछ दिनों तक हरनन्दन भाई ने भी की। →

स. ६६-संध्या आरती के समय मुकुन्ददासजी कौनसी सेवा करते हैं?

स. ६७-नित्य प्रति संध्या आरती के समय अलौकिक आनन्द प्राप्त करने अथवा आरती गायन में आनन्द लेनेवाले साथ कौन-कौन हैं?

स. ६८-उत्तमदास भाई की आरती के समय में मुख्य सेवा कौनसी है?

स. ६९-उत्तमदास भाई के साथ-साथ झाँझ और ताल बजानेवाली सखियाँ कितनी हैं?

स. ७०-गायन में निपुण परमानन्द भाई संध्या आरती के समय सबसे आगे खड़े होकर क्या करते हैं?

स. ७१-परमानन्द भाई के गायन द्वारा क्या-क्या स्पष्ट होता है?

➞ सुन्दरसाथजी बारी-बारी से करते हैं। यह सेवा पहले लालबाई ने की। पुनः कुछ समय तक गोविन्ददास भाई ने भी की। उनके बाद यह सेवा कुछ दिनों तक शिवराम भाई ने भी की।

➞ इस सेवा में शेख बदल भाई और लाल खाँ भाई के नाम उल्लेखनीय हैं क्योंकि उक्त दोनों भाइयों को इस सेवा में अन्य साथ से ज्यादा ईमान (विश्वास) था।

ज. ६६- संध्या आरती के समय स्वयं गाने और सुन्दरसाथजी से गवाने की सेवा ही मुकुन्ददासजी की प्रमुख सेवा है।

ज. ६७- नित्य प्रति संध्या आरती के समय बंगलाजी में अलौकिक आनन्द प्राप्त करने अथवा आरती गायन में आनन्द लेनेवालों में बिन्दा भाई, कन्नड़ भाई, गंगाराम भाई, अगरदास भाई, बद्रीदास भाई आदि हैं।

ज. ६८- आरती के समय उत्तमदास भाई कभी-कभी आरती गायन करने की सेवा करते हैं। किन्तु उनकी मुख्य सेवा है- *"मृदंग बजाना"*।

ज. ६९- उत्तमदास भाई के साथ-साथ परमधाम की अनेकों सखियाँ झाँझ और ताल बजाने की सेवा करती हैं।

ज. ७०- गायन में निपुण परमानन्द भाई संध्या आरती के समय गानेवालों में सबसे आगे अग्रगण्य होकर खड़े रहते हैं तथा आरती के भाव तथा रहस्य को गाकर स्पष्टतः प्रकट कर देते हैं।

ज. ७१- परमानन्द भाई के गायन द्वारा आरती के भाव और रहस्य तो स्पष्ट होते ही हैं। पुनः उनमें जितना सामर्थ्य है, उतना ही विश्वास भी स्पष्ट हो जाता है।

स. ७२-इस वक्त बंगलाजी मंदिर के दायें-बायें, हर ओर भरकर सुन्दरसाथजी क्यों खड़े रहते हैं?

स. ७३-संध्या आरती के समय की धुन सुनकर कैसे लोग भयभीत हो उठते हैं?

स. ७४-ये कलियुगी प्रवृत्तियुक्त दज्जाल ब्रह्मात्माओं के प्रति क्या सोचते हैं?

स. ७५-श्री तेजकुँवरबाईजी के चरणों के नीचे गादी बिछाने की सेवा किनकी है?

स. ७६-आरती करते समय श्री बाईज्यू कहाँ खड़ी होकर आरती करतीं हैं?

स. ७७-आरती के समय आगे चादर बिछाने की सेवा कौन करते हैं? श्री बाईज्यूराज यहाँ क्या करतीं हैं?

स. ७८-इस समय श्री बाईज्यूराजजी के पीछे आरती करनेवाली समस्त ब्रह्मात्माएँ क्या करतीं हैं?

स. ७९-आरती करने से पूर्व श्री बाईज्यू क्या करतीं हैं?

स. ८०-राघवदास भाई श्रीजी साहेबजी की कौनसी सेवा करते हैं और कैसे?

स. ८१-बंगलाजी में आकर श्री बाईज्यूराज आनन्दपूर्वक क्या करतीं हैं?

ज. ७२- इस वक्त बंगलाजी मंदिर के दायें-बायें, चारों ओर से भरकर सुन्दरसाथजी आरती के समय का आनन्द लेने के लिए खड़े रहते हैं।

ज. ७३- संध्या आरती के समय की धुन सुनकर कलियुगी प्रवृत्तियुक्त दज्जालों की सेना भयभीत हो उठती है।

ज. ७४- ये कलियुगी प्रवृत्तियुक्त दज्जाल ब्रह्मात्माओं के प्रति ऐसा सोचते हैं, "ये ब्रह्मधाम की ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मात्माएँ हमारे अस्तित्त्व और प्रभाव को नष्ट-भ्रष्ट कर देंगी। ये तो हमारे लिए कालरूप हैं।"

ज. ७५- श्रीजी साहेबजी की अर्धांग श्री तेजकुँवरबाईजी के चरणों के नीचे गादी बिछाने की सेवा मेघा भाई की है।

ज. ७६- आरती करते समय श्री बाईज्यू उक्त मेघा भाई द्वारा बिछाई हुई गादी पर खड़ी होकर आरती करतीं हैं।

ज. ७७- आरती के समय आगे चादर बिछाने की सेवा हीरामन भाई करते हैं। श्री बाईज्यूराज आरती के पूर्व चावल द्वारा श्रीजी को बधावनी करतीं हैं।

ज. ७८- इस समय श्री बाईज्यूराजजी के पीछे आरती करनेवाली समस्त ब्रह्मात्माएँ भी चावल लेकर श्रीजी को बधावनी करतीं हैं।

ज. ७९- आरती करने से पूर्व श्री बाईज्यू धामधनी श्रीजी साहेबजी के मस्तक पर तिलक करके चावल लगातीं हैं।

ज. ८०- राघवदास भाई श्रीजी साहेबजी के सिर पर रूमाल रखने की सेवा करते हैं। यह सेवा वे बड़े प्रेम से और श्रद्धा-विश्वास के साथ करते हैं।

ज. ८१- श्रीजी साहेबजी की अर्धांग श्री बाईज्यूराज बंगलाजी में आकर आनन्दपूर्वक अपने प्रियतम परमात्मा स्वरूप श्री प्राणनाथजी की आरती उतारतीं हैं।

स. ८२-श्री बाईज्यूराजजी के आरती की यावत् सामग्रियाँ लेकर आने की सेवा कौन करतीं हैं?

स. ८३-पाँच खण्डों की चाँदी की आरती में कितने दीपकों की ज्योत जगमग करती है?

स. ८४-पूर्ण विश्वास लिए सर्वप्रथम श्रीजी साहेबजी की आरती कौन करतीं हैं?

ज. ८४- श्रीजी साहेबजी की अर्धांग श्री बाईज्यूराज पूर्ण श्रद्धा-विश्वास →

स. ८५-कुछ दिनों तक "कंचन थाल चहुँ दिस दिवला, दीपक ज्योति प्रकासी"-यह आरती अच्छे प्रकार से गाने की सेवा किनके द्वारा हुई?

स. ८६-श्री बाईज्यू के पीछे खड़े हाकर कौन सखी आरती करतीं हैं?

स. ८७-मातेनबाई और भानीबाई इस समय कौनसी सेवा करतीं हैं?

स. ८८-श्रीजी साहेबजी की आरती उतारने हेतु अन्य कैसी सखियाँ दीपकों से भरी थाली हाथ में लेकर आतीं है?

स. ८९-संध्या आरती के समय सुन्दरसाथजी कहाँ का लक्ष्य और भाव हृदय में लेकर आरती गाते और उतारते हैं?

ज. ८९- संध्या आरती के समय सुन्दरसाथजी श्रीजी साहेबजी और श्री →

स. ९०-प्रियतम श्रीजी की अर्धांग श्री बाईज्यूराज किस तरह आरती उतारतीं हैं?

ज. ८२- श्री बाईज्यूराजजी के आरती की यावत् सामग्रियाँ लेकर आने की सेवा रुकमनीबाई करतीं हैं।

ज. ८३- पाँच खण्डों की चाँदी की आरती में चारों ओर कुल बत्तीस दीपकों की ज्योत उज्ज्वलता लिए जगमग करती है।

→ लेकर सर्वप्रथम प्रेमभरे दिल से श्रीजी की आरती उतारतीं हैं। तत्पश्चात् श्री बाईज्यू को भी तख्त पर बैठाकर समस्त सुन्दरसाथ श्री युगलजोड़ी की आरती उतारते हैं।

ज. ८५- कुछ दिनों तक *"कंचन थाल चहुँ दिस दिवला, दीपक ज्योति प्रकासी"* यह आरती समय पर उपस्थित होकर अच्छे प्रकार से गाने की सेवा लच्छोबाई ने की।

ज. ८६- श्री बाईज्यू के पीछे खड़े होकर अम्बोबाई आरती करतीं हैं।

ज. ८७- मातेनबाई इस समय एक किनारे आरती की सेवा करतीं हैं, तो दूसरी ओर भानीबाई आरती गाने की सेवा करतीं हैं।

ज. ८८- श्रीजी साहेबजी की आरती उतारने हेतु अन्य अनेकों कुँवरी-किशोरियाँ दीपकों से भरी थाली हाथ में लेकर आतीं हैं।

→ बाईज्यूराजजी के प्रति अक्षरातीत मूल मिलावे का लक्ष्य रखकर श्री राजश्यामाजी की भावना से प्रत्यक्ष में आरती गाते और उतारते तथा नाचते-बजाते हैं।

ज. ९०- प्रियतम श्री प्राणनाथजी की अर्धांग श्री बाईज्यूराज-अमलावती अत्यन्त आनन्द एवम् उमंग भरे मन से हर्ष-उल्लास के साथ अपने प्राण प्रियतम धनी की आरती उतारतीं हैं।

स. ९१-यहाँ के युगलस्वरूप कौन हैं और धाम के युगलस्वरूप कौन हैं? पुनः दोनों में क्या अन्तर है?

ज. ९१- यहाँ के युगलस्वरूप इन्द्रावती और अमलावती माध्यम श्री मेहराज और तेजकुँवरी हैं। श्री परमधाम के युगलस्वरूप श्री →

स. ९२-किनका सिंगार युक्त स्वरूप कल्याणकारी और आनन्ददायी है?

ज. ९२- युगलस्वरूप श्री राजश्यामाजी मूल मिलावे में सिंहासन पर →

स. ९३-किनके दर्शन द्वारा समस्त साथ की आत्मा मुग्ध हो गई?

स. ९४-सुन्दर स्वरूप की आरती के समय कौन नृत्य करतीं हैं तथा क्या-क्या कराते हुए जय-जयकार कर रहीं हैं?

ज. ९४- धाम के सुन्दर सनकूल सकोमल स्वरूप श्रीजी साहेबजी की →

स. ९५-समस्त सखियाँ इस समय क्या करतीं हैं?

स. ९६-पीउ की प्यारी कौन हैं? वे प्रियतम के चरणों में क्या अर्पण करके, क्या करना चाहतीं हैं?

स. ९७-आरती के उपरान्त आरती की थाल श्रीजी के सम्मुख करने की सेवा कौन करतीं हैं?

स. ९८-कौन अपने हाथ बढ़ाकर आरती की थाल में पान का बीड़ा रख देते हैं?

→ राजजी और श्री ठकुरानीजी हैं। दोनों में यह अन्तर है कि यहाँ श्री परमधाम के श्री राजजी और श्री श्यामाजी अर्थात् श्री युगलस्वरूप इन्द्रावती आत्मा में हैं। श्री बाईज्यूराज में केवल अमलावती सखी हैं।

→ विराजमान हैं। यहाँ प्रत्यक्ष रूप में देखा जाय, तो यही युगलस्वरूप श्री इन्द्रावती के हृदयधाम में विराजमान हैं। उस भावना से जो कोई यदि यहाँ प्रत्यक्ष द्वारा ही समझ प्राप्त कर सकें, तो उनके लिए यहाँ के स्वरूप ही उनके आत्मार्थ कल्याणकारी और आनन्ददायी होंगे।

ज. ९३- बंगलाजी में विराजमान रसिक शिरोमणि प्रत्यक्ष युगलस्वरूप के मंगल-दर्शन द्वारा समस्त साथ की आत्मा मुग्ध हो गई।

→ आरती के समय यहाँ बंगलाजी में ब्रह्मात्माएँ नृत्य करतीं हैं। नृत्य के साथ-साथ मन में अपार उमंग लिए मधुर कण्ठ से राग अलापतीं हैं, तो ताल, मृदंग, झाँझ आदि यन्त्र बजाते हुए सर्व सखियाँ आनन्द उन्मत्त होकर जय-जयकार कर रहीं हैं।

ज. ९५- समस्त सखियाँ इस समय मोती, कपूर आदि न्योछावर कर रहीं हैं।

ज. ९६- पीउ की प्यारी सौभाग्यवती आत्मा अमलावती हैं। वे श्री जियावर श्याम के रूप में विराजमान श्री प्राणनाथजी के चरणों में अपने तन, मन, धन सहित आत्मा समर्पित कर प्रणाम करना चाहतीं हैं।

ज. ९७- आरती के उपरान्त आरती की थाल श्रीजी के सम्मुख करने की सेवा रुकमनीबाई करतीं हैं।

ज. ९८- परब्रह्म स्वरूप धामधनी श्री प्राणनाथजी अपने हाथ बढ़ाकर आरती की थाल में पान का बीड़ा रखकर आरती देनेवाली सखी पर दया का भाव प्रकट करते हैं।

स. ९९- आरती करनेवाली अन्य ब्रह्मात्माओं की थाल में पान का बीड़ा रखने की विशेष सेवा कौन-कौन करते हैं?

स.१००- उक्त प्रकार प्रतिदिन श्री बंगलाजी मंदिर में क्या होता रहा?

स.१०१- अन्य अनेकों सुन्दरसाथजी क्या करके, क्या सुनकर अखण्ड मुक्ति पा सकते हैं?

स.१०२- आरती के बाद सूरजमन भाई क्या करने और कहाँ आते हैं? पुनः किनके नाम-जाप करने से कष्टकारक परिस्थितियाँ स्वतः ही दूर हो जाती हैं?

ज.१०२- आरती के पश्चात् सूरजमन भाई कीर्तन और धुन गाने के →

स.१०३- वेद, पुराण, शास्त्रों द्वारा श्रीजी साहेबजी कहाँ के, कौनसे स्वरूप हैं?

स.१०४- पुनः कतेब पक्ष की साक्षियों अथवा प्रमाणों द्वारा श्रीजी साहेबजी कौनसे स्वरूप अथवा किस नाम से विभूषित हैं?

स.१०५- उभय पक्षों में कहे भविष्य प्रमाणों के अनुकूल ये स्वरूप क्यों प्रकट हुए हैं?

ज.१०५- उभय पक्षों जैसे-कुरान-पुराण, वेद-कतेब आदि सद्ग्रन्थों में भविष्यवक्ताओं ने कहा था कि अट्ठाईसवें कलियुग में बुद्ध-कल्कि अथवा रूह अल्लाह-इमाम मेहदी स्वरूप आयेंगे। →

ज. ९९- आरती करनेवाली अन्य ब्रह्मात्माओं की थाल में पान का बीड़ा रखने की विशेष सेवा एक तो कल्याण भाई और दूसरे प्रहलाद भाई बड़े प्रेमपूर्वक करते हैं। यही इनकी विशेष सेवा है।

ज.१००- उक्त प्रकार प्रतिदिन श्री बंगलाजी मंदिर में अक्षरातीत ब्रह्मधाम के-से आनन्द की वर्षा होती रही।

ज.१०१- ब्रह्मात्मा और ईश्वरी आत्माओं के सिवाय अन्य अनेकों सुन्दरसाथजी दर्शन करने आते और ब्रह्मज्ञान की चर्चा सुनकर संध्या आरती का दर्शन-पर्शन करके अखण्ड मुक्ति प्राप्त करते हैं।

→ लिए बंगलाजी में आते हैं तथा वाणी गाकर उसका स्पष्ट अर्थ करके समझाते भी जाते हैं। अतः यहाँ प्रत्यक्ष स्वरूप श्री धाम के धनी श्री प्राणनाथजी का नाम-जाप करने से कष्टकारक परिस्थितियाँ स्वतः ही दूर हो जाती हैं।

ज.१०३- वेद, पुराण, शास्त्रों द्वारा श्रीजी साहेबजी अक्षरातीत धाम के अद्वैत परात्पर पूर्णब्रह्म स्वरूप हैं।

ज.१०४- पुनः कतेब पक्ष की साक्षियों अथवा प्रमाणों द्वारा श्रीजी साहेबजी नूर परे नूर तजल्लाह के खुदा हैं, जिन जुल्फेकार खुदा ने मुहम्मद साहेब को नब्बे हजार हरफ सुनाए थे। ये स्वरूप ही आखर जमाने के खाविन्द स्वरूप हैं।

→ परात्पर ब्रह्म स्वरूप खुदा आकर सारी सृष्टि के जड़-चेतन को अखण्ड मुक्ति प्राप्त करा देंगे। असत्, जड़, दुख सम्बन्धी मायावी जीवात्माओं को भी सत्, चिद् और आनन्द में अखण्ड कर देंगे। अतः इसी कार्य को सम्पन्न करने हेतु ये स्वरूप प्रकट हुए हैं।

स.१०६- सूरजमन भाई किन विषयों की वाणी गायन करने में प्रमुख हैं? पुनः इनके साथ अन्य कौन-कौन शामिल हैं?

ज.१०६- श्रीजी साहेबजी-श्री प्राणनाथजी ही अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा हैं। ये स्वरूप ही मुहम्मद साहेब, मेहदी-श्री कृष्ण तथा →

स.१०७- इस समय बंगलाजी में अन्य क्या-क्या होता है तथा कैसी-कैसी आवाजों-स्वरों की ध्वनि-प्रतिध्वनि गुँजायमान होती है?

स.१०८- उक्त प्रकार के कार्यक्रम बंगलाजी में कब से, कब तक चलते हैं?

स.१०९- पाँचवें पहर की सेवा में सिंहासन पर युगलजोड़ी के रूप में कौन-कौन शोभायमान होते हैं? ये युगलजोड़ी कहाँ की, कौनसी युगलजोड़ी की प्रतीक रूप है?

ज.१०९- पाँचवें पहर की सेवा में सिंहासन पर श्री प्राणनाथजी के साथ →

स.११०- उक्त युगलस्वरूप सृष्टि की सर्वात्माओं को कहाँ का, कैसा आनन्द प्रदान करते हैं?

ज.११०- उक्त युगलस्वरूप स्वप्निक हृद सृष्टि की मायावी जीवात्माओं →

स.१११- बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ सुन्दरसाथ को संबोधित करते हुए कौनसे समय की सूचना दे रहे हैं? उस समय में क्या होनेवाला है?

→ ईसा रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी स्वरूप हैं। ये स्वरूप ही यावत् जीवों की मनोकामना पूर्ण करनेवाले स्वरूप हैं। इस तरह इन विषयों से सम्बन्धित भावों को प्रकट करनेवाली वाणी गायन करने में सूरजमन भाई प्रमुख हैं। उनके साथ अन्य कई सुन्दरसाथ भी गाने के लिए आते हैं।

ज.१०७- संध्या आरती के समय बंगलाजी में कई प्रकार की आनन्द-क्रीड़ाएँ होतीं हैं। गायन करनेवालों तथा जयघोष करनेवालों की मधुर ध्वनि-प्रतिध्वनि पूरे बंगलाजी में गुँजायमान होती है। इस प्रकार बंगलाजी मंदिर विभिन्न स्वरों से गूँज उठता है।

ज.१०८- उक्त प्रकार के कार्यक्रम बंगलाजी में संध्या के छः बजे से लेकर रात के नौ बजे तक चलते हैं।

→ बाईज्यूराज परब्रह्म स्वरूप श्री राजजी और श्री श्यामाजी के साक्षात् स्वरूप में शोभायमान होते हैं। यह युगलजोड़ी साक्षात् अक्षरातीत मूल मिलावे के श्री राजश्यामाजी के युगलजोड़ी की प्रतीक है।

→ को बेहद के सच्चिदानन्दमय अखण्डानन्द प्रदान करते हैं तथा ब्रह्म और ईश्वरी आत्माओं को अक्षरातीत और अक्षरधाम के सुख में पहुँचाते हैं।

ज.१११- बीतककार स्वामी श्री लालदासजी महाराज यहाँ सुन्दरसाथ को संबोधित करते हुए कह रहे हैं कि अब आगे रात्रि की चर्चा-कथा होगी। अतः अब श्री मुख की चर्चा सुनिए।

स.११२- बीतककार किसके मुखारविन्द की चर्चा ध्यानपूर्वक श्रवण करने की अर्ज करते हुए स्वयं कहाँ और क्यों बैठ गए?

❁ छट्ठा पहर ❁

स. १ - छट्ठा पहर कहाँ से, कहाँ तक है?

स. २ - इस पहर में श्री बंगलाजी में दैनिक क्या कार्यक्रम होता है?

स. ३ - इस चर्चा-कथा के मण्डान में वक्ता कौन हैं और श्रोता कौन हैं?

ज. ३ - श्री बंगलाजी में छट्ठे पहर में जो दैनिक ब्रह्मज्ञान की चर्चा →

स. ४ - श्री बंगलाजी में समस्त सुन्दरसाथ चर्चा श्रवण के लिए किस तरह बैठते हैं?

स. ५ - इस समय कौनसी वाणी पढ़ी जाती है तथा यह वाणी पढ़ने की सेवा कौन करते हैं?

स. ६ - इस समय श्री लालदासजी क्या लेकर बैठते हैं? पुनः गोकुलदास भाई श्रीजी स्वरूप को क्या पढ़कर सुनाते और प्रसन्न करते हैं?

स. ७ - इस समय उत्साह-उमंग के साथ किस आनन्द की वर्षा होती है?

ज.११२- बीतककार श्री लालदासजी श्रीजी के मुखारविन्द की चर्चा ध्यानपूर्वक श्रवण करने की अर्ज करते हुए स्वयं तख्त के सम्मुख सबके आगे चित्त देकर चर्चा श्रवण करने बैठ गए।

- (प्रकरण ६८, सवाल-जवाब नं. ११२, कुल सं.४९४८+११२ =५०६०)।

❋ छट्ठा पहर ❋

ज. १ - रात्रि के नौ बजे से बारह बजे तक के समय को छट्ठा पहर गिना जाता है।

ज. २ - इस पहर में श्री बंगलाजी में परब्रह्म परमात्मा श्रीजी स्वरूप के मुखारविन्द से दैनिक अद्वैत ब्रह्मज्ञान की चर्चा होती है।

→ होती है, उस मण्डान में वक्ता अक्षरातीत के अद्वैत ब्रह्म स्वरूप महामति श्री प्राणनाथजी हैं और इस चर्चा श्रवण के श्रोता उसी अद्वैत ब्रह्मधाम की ब्रह्मात्माएँ हैं।

ज. ४ - श्री बंगलाजी में समस्त सुन्दरसाथ चर्चा श्रवण के लिए श्रीजी के सम्मुख पास में ही बैठते हैं।

ज. ५ - इस समय श्रीजी-धनी के श्री मुख से प्रकट हुई वाणी पढ़ी जाती है तथा यह वाणी पढ़ने की सेवा केशवदासजी करते हैं।

ज. ६ - इस वक्त चर्चा में श्री लालदासजी महाराज कुरान-हदीसे लेकर बैठते हैं। पुनः गोकुलदास भाई श्रीजी स्वरूप को वाणी पढ़कर सुनाते और प्रसन्न करते हैं।

ज. ७ - इस समय उत्साह-उमंग के साथ ब्रह्मज्ञान की चर्चा द्वारा अद्वैत ब्रह्म के अखण्डानन्द की वर्षा होती है।

स. ८ - किसकी और कैसी चर्चा द्वारा सुननेवालों के अन्दर के माया विस्तृत द्वैत भाव नष्ट हो जाते हैं?

स. ९ - श्रीजी साहेबजी के सम्मुख कौन भाई और कैसे बैठते हैं?

स. १०-मुरलीधर भाई श्री प्राण प्रियतम के तेजस्वी मुखारविन्द को कैसे देखते हैं और उनके श्री मुख से निकले वचनों को कैसे ग्रहण करते हैं?

स. ११-इस समय यहाँ चर्चा श्रवण के लिए महाराजा छत्रसालजी के साथ कौन-कौन बैठे हैं, जिनके हाथ धनी ने पकड़े हैं?

स. १२-उक्त जनों के पीछे चर्चा श्रवण के लिए कौन-कौन बैठे हैं, जो चर्चा श्रवण कर कहते हैं कि "कैसा सुन्दर अनुपम स्वरूप है"?

स. १३-किशोरी भाई किनके साथ चर्चा श्रवण करने बैठते हैं? पुनः चर्चा श्रवण के पश्चात् वे क्या करते हैं?

स. १४-इस समय कौन-कौन भाई विशेषकर चर्चा श्रवणार्थ ही यहाँ आते हैं?

ज. १५-किनकी ओर से दैनिक दो बार लवंगें और रसोई के खर्च में एक रुपया भी आता है?

स. १६-कौन भाई चर्चा में उपस्थित होकर चुपके-से प्रणाम कर ध्यान से बैठकर चर्चा श्रवण करते हैं?

ज. ८ - अक्षरातीत ब्रह्मधाम के अद्वैत ब्रह्म स्वरूप श्रीजी साहेबजी के श्री मुख से मधुर वाणी में निकली चर्चा द्वारा सुननेवालों के अन्दर के माया विस्तृत द्वैत भाव नष्ट हो जाते हैं।

ज. ९ - धामधनी श्रीजी साहेबजी के सम्मुख मुरलीधर भाई एकाग्रचित्त होकर चर्चा श्रवण करने बैठते हैं।

ज. १०- मुरलीधर भाई श्री प्राण प्रियतम के तेजस्वी-ओजपूर्ण मुखारविन्द को बिना पलक झपकाए एकटक देखते रहते हैं और उनके मुख से निकले वचनों को बड़े ध्यान से श्रवण कर ग्रहण करते हैं।

ज. ११- यहाँ चर्चा-मण्डान में चर्चा श्रवण के लिए एक तरफ महाराजा छत्रसालजी के साथ देवकरण भाई आगे बैठे हैं। उनके पीछे दुर्गभान भाई बैठे हैं, जिनके हाथ धनी ने पकड़े हैं।

ज. १२- उक्त जनों के पीछे चर्चा श्रवण के लिए चन्द्रहंस भाई और शाहरूप भाई बैठे हैं। ये दोनों भाई चर्चा एवम् वर्णन आदि ध्यानपूर्वक सुनते हुए आपस में कहते हैं, *"अरे! कैसा सुन्दर अनुपम स्वरूप है!"*

ज. १३- किशोरी भाई श्री देवकरण भाई के साथ आकर चर्चा श्रवण करने बैठते हैं और चर्चा श्रवण के पश्चात् वे नित्य प्रति श्री बंगलाजी में झाड़ू लगाकर सफाई करने की सेवा करते हैं।

ज. १४- इस समय यहाँ अमानराय, पर्वतसिंह, नारायणदास, शक्तिसिंह और जगतसिंह आदि भाई विशेषकर चर्चा श्रवणार्थ ही आते हैं।

ज. १५- श्री दुर्गभान भाई की ओर से दैनिक दो बार लवंगें और रसोई के खर्च में एक रुपया भी आता है।

ज. १६- तुलाराम भाई जब चर्चा के लिए उपस्थित होते हैं, तब श्रीजी साहेबजी के दर्शन करने के पश्चात् प्रणाम करके चुपके-से बैठकर ध्यानपूर्वक चर्चा श्रवण करते हैं।

स. १७-चर्चा सुनने के लिए विशेषकर बंगलाजी में कौन-कौन आते हैं?

स. १८-अन्य अनेकों श्रोताओं में से कौन-कौन इस पहर में चर्चा सुनने के लिए श्री बंगलाजी में उपस्थित होते हैं?

ज. १८- उपरोक्त श्रोताओं के सिवाय अन्य श्रोताओं में से सूरत सिंह, →

स. १९-अन्य श्रोताओं में से नियमितरूप से आकर ध्यानपूर्वक चर्चा श्रवण करनेवाले कौन-कौन हैं?

स. २०-ऐसे कौन-कौन भाई हैं, जिन्हें चर्चा श्रवण द्वारा इतना अधिक सुख और आनन्द प्राप्त होता है कि वे खड़े-खड़े ही चर्चा श्रवण में निमग्न रहते हैं?

स. २१-छट्ठे पहर की चर्चा सुने बिना जिन्हें चैन ही नहीं पड़ता, ऐसे श्रोताओं में किन-किन के नाम हैं? क्रमशः बताइए।

ज. २१- छट्ठे पहर की चर्चा सुने बिना जिन्हें चैन ही नहीं पड़ता, ऐसे श्रोताओं में टेकचन्द, दुन्दराय, पुष्करदास, गोविन्ददास, केशवदास मोदी, →

स. २२-कौन भाई ब्रह्मवाणी में कुरान की चर्चा को दूर खड़े रहकर ध्यानपूर्वक सुनते हैं?

स. २३-कौन-कौन भाई चर्चा के समय विशेषरूपसे श्रीजी साहेबजी के समीप बैठकर चर्चा श्रवण करते हैं?

ज. २३- बनमालीदास मामा, धनजी भाई, लालमन, शंकरदास, →

ज. १७- बंगलाजी में चर्चा-कथा सुनने के लिए विशेषकर प्रेमजी भाई, पीताम्बर भाई, मुकुन्ददास भाई, गोकुलदास भाई, केशवदास भाई और जयन्तीदास भाई आते हैं।

→ मकरन्ददास, मोहनदास, गिरधर भाई, भगवानदास, शिवराम भाई, सदानन्द भाई और गिरधर भाई इस पहर में चर्चा का रस लेने श्री बंगलाजी में उपस्थित होते हैं।

ज. १९- अन्य श्रोताओं में से नियमितरूप से आकर ध्यानपूर्वक चर्चा श्रवण करनेवालों में शेख बदल भाई, लाल खाँ, मिहीन खाँ पठान और अव्वल खाँ आदि सुन्दरसाथ हैं।

ज. २०- नूर मुहम्मद, चंचलदास, दयाराम, गुलजी और नाथा आदि भाइयों को चर्चा श्रवण द्वारा इतना अधिक सुख और आनन्द प्राप्त होता है कि वे खड़े-खड़े ही चर्चा श्रवण में निमग्न रहते हैं।

→ दूसरे मुरलीधर, मावजी भाई, मोहनदास, मूलजी मामा, जयन्ती काका, गंगादास, घनश्याम, नाहना भाई, छतई भाई, सुखदेव, सन्तदास, निरंजन भाई, नरसिंहदास, मक्के भाई, शाहमन, सिंघा भाई, घासी भाई, ब्रजभूखन, घना भाई, वीरजी मोदी, लच्छी शुक्ल, मिड़ई भाई, बिहारी फराश और बिहारी झड़ूला आदि के नाम हैं। ये नित्य प्रति छट्टे पहर की चर्चा में उपस्थित रहते हैं।

ज. २२- भगवानदास भाई ब्रह्मवाणी में कुरान की चर्चा को दूर खड़े रहकर ध्यान से प्रेमपूर्वक सुनते हैं।

→ नारायणदास, मथुरादास, काशी भाई, वल्लभदास, सन्तदास और परसादी भाई आदि साथ चर्चा के समय विशेषरूप से महामतिजी के समीप बैठकर चर्चा श्रवण करते हैं।

स. २४-चर्चा श्रवण करनेवाले श्रोताओं में से किन-किन को मात्र चर्चा में ही सुख एवम् आराम मिलता है?

ज. २४- चर्चा श्रवण करनेवाले श्रोताओं में से असऊ भाई, अगरदास, लच्छीदास, बिन्दा भाई, गोवर्धन, भिखारीदास, मयाराम, →

स. २५-चर्चा सुननेवाले श्रोताओं की कितनी श्रेणियाँ हैं? श्रोतागण किस-किस प्रकार से आकर चर्चा-कथा सुनते हुए आगे बढ़ते हैं?

स. २६-मूल में भिन्न-भिन्न तीन प्रकार से चर्चा श्रवण के लिए आनेवाले श्रोताओं का महामति श्री प्राणनाथजी ने किस आधार पर वर्गीकरण किया है? ये श्रोता सत्ताईस प्रकार (कोटि) की सीढ़ियाँ कैसे पार करते हैं?

ज. २६- मूल में भिन्न-भिन्न तीन प्रकार जैसे परवाह, मर्याद और पुष्ट से →

स. २७-किसे सत्, रज और तम-इन तीन गुणों से गुणा करने पर इक्यासी पक्ष हो जाते हैं? इक्यासीवें पक्ष की मजल क्या है?

स. २८-इक्यासीवें पक्ष में पहुँचने के पश्चात् क्या विशेषता है अथवा बयासीवें पक्ष की ओर बढ़ने का आधार क्या है?

स. २९-बयासीवें पक्ष में कौन और कैसे पहुँचे हैं?

ज. २९- बयासीवें पक्ष में श्री वल्लभाचार्यजी पहुँचे हैं। उन्होंने इक्यासीवें पक्ष के पश्चात् *"एक ब्रह्म"* के रूप में श्री कृष्ण को निश्चित →

→ बेनीदास, शोभादास, गजपत भाई, गरीबदास, देवीदास, थानू भाई, बदले भाई, शंकरदास रसोइया, श्यामजी, चम्पत भाई, सुखचेन, खड़गदेव, मुरलीधर आदि भाइयों को मात्र चर्चा में ही सुख एवम् आराम मिलता है।

ज. २५- चर्चा-कथा सुननेवाले श्रोताओं की तीन श्रेणियाँ हैं। जैसे-पुष्ट, मर्याद और परवाह। कुछ श्रोता परवाह में आकर कथा श्रवण करते हैं, तो दूसरे मर्याद में चलकर आते हैं और चर्चा श्रवण करते हैं। तीसरे पुष्ट में आकर चर्चा श्रवण का आनन्द उठाते हैं।

→ चर्चा श्रवण के लिए आनेवाले श्रोताओं का महामति श्री प्राणनाथजी ने सत्, रज और तम-इन तीन गुणों के आधार पर वर्गीकरण किया है। परवाह, मर्याद और पुष्ट में आनेवाले ये श्रोता श्रवण, मनन और आचरण द्वारा (परवाह, मर्याद और पुष्ट-इन तीनों को श्रवण, मनन और आचरण से अलग-अलग गुणा करने पर) सत्ताईस प्रकार (कोटि) की सीढ़ियाँ पार करते हैं।

ज. २७- उक्त सत्ताईस को सत्, रज और तम-इन तीन गुणों से गुणा करने पर इक्यासी पक्ष (सीढ़ी) हो जाते हैं। इक्यासीवें पक्ष की मजल है-सतलोक (वैकुण्ठ)।

ज. २८- इक्यासीवें पक्ष में पहुँचने के पश्चात् अवतार, तीर्थंकर, पैगम्बर आदि को छोड़कर *"एक ब्रह्म"* नाम निश्चित कर उस ब्रह्म की *"ब्रह्मलीला"* के आधार पर बयासीवें पक्ष की ओर बढ़ेंगे।

→ कर उन श्री कृष्ण की ब्रह्मलीला अर्थात् ब्रज और रास लीला का मनन किया और विचार-विवेकपूर्वक समझ लेने के पश्चात् वे उसी ब्रह्मलीला के आधार पर अखण्ड गोलोक धाम तक पहुँचे हैं।

स. ३०-तिरासीवाँ पक्ष किसका है? पुनः इस लक्ष्यरूप स्थान में मृत्युलोक से पहुँचनेवालों में कौन-कौन हैं?

स. ३१-इन सबके ऊपर स्थित पचीस पक्ष किनके लिए हैं? वहाँ कौन पहुँचेंगे और किसके आधार पर?

ज. ३१- इन सबके ऊपर स्थित लोक-परलोक के मूर्धन्य राजधानीरूपी →

स. ३२-अकथनीय पक्षों का वर्णन किसने और क्यों किया?

ज. ३२- अकथनीय, शब्दातीत ब्रह्मधाम और ब्रह्मलीला के बेशुमार वर्णन →

स. ३३-पचीस पक्षों में भी मुख्यातिमुख्य पक्ष कौन-कौनसे हैं?

ज. ३३- पचीस पक्षों में मुख्यातिमुख्य तीन पक्ष हैं, जिन्हें वाणी में कहा है, *"अरस हौज जोए, रूहें पेहेचान यासों होए"* अर्थात् जोए- →

स. ३४-उक्त पक्षों के आगे क्या-क्या है? इशारे से सूचित करो।

ज. ३४- उक्त तीन पक्षों के आगे कुञ्जवन, माणिक पहाड़, पुखराज पर्वत, →

स. ३५-किन पक्षों के दर्शन विशेष मनन और चिन्तन द्वारा करने के लिए कहा गया है?

ज. ३५- उक्त तीन पक्षों में से दस भोम की शोभा लिए श्री रंगमहल →

स. ३६-श्री रंगमहल से लेकर श्री रंगमहल के दक्षिण में स्थित माणिक पहाड़ तक बीच में क्या-क्या है?

ज. ३०- तिरासीवाँ पक्ष ईश्वरी आत्माओं का लक्ष्यरूप स्थान है, जो मृत्युलोक से अपना धाम निश्चित करके यहाँ पहुँचेंगी। इस लक्ष्यरूप स्थान में मृत्युलोक से पञ्चवासनाएँ भी पहुँची हैं।

→ पचीस पक्ष ब्रह्मात्माओं के लिए हैं। ये ब्रह्मात्माएँ खेल में आने से पूर्व इन्हीं पचीस पक्षों में विहार करतीं थीं। अतः ये ब्रह्मात्माएँ ही यहाँ अनन्य परा दशधा प्रेम लक्षणा भक्ति मार्गरूपी साधन पक्ष के तारतम मंत्र के आधार पर पहुँचेंगी।

→ को अद्वैत अक्षरातीत धाम के *"एकमेवाऽद्वितीयं ब्रह्म"*-परब्रह्म परमात्मा श्री राजजी ने उसी ब्रह्मधाम की ब्रह्मात्माओं को खेल से वापस ले जाने के लिए ही शुमार में बाँधकर इशारे से किया है।

→ श्री यमुनाजी, अरस-श्री रंगमहल और हौज कौसर ताल-इन तीन मुख्य पक्षों में ही धामस्थ द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माओं की पहचान छिपी हुई है।

→ वन की नहर,पश्चिम की चौगान, बड़ोवन, मधुवन और महावन, पुनः आठ सागर तथा आठ सागरों के बीच-बीच में अष्ट प्रकार की क्षितियाँ हैं।

→ शोभायमान है, जिसके आगे सात घाट तथा श्री यमुनाजी के दोनों पुल सुशोभित हैं। अतः इन्हीं स्थानों के दर्शन विशेष मनन एवम् चिन्तन के आधार पर करने को कहा गया है।

ज. ३६- श्री रंगमहल से लेकर श्री रंगमहल के दक्षिण में हौज कौसर ताल, चौबीस हाँस का महल है। तत्पश्चात् जवेर की नहर चहुँदिस फिरी है, जिसके बत्तीस पहल हैं। उसके बाद माणिक पहाड़ आता है।

स. ३७-श्री यमुनाजी कहाँ से प्रकट हुई हैं तथा किस-किस दिशा की ओर कितने-कितने होते हुए हौज कौसर ताल में जा मिली?

ज. ३७- श्री यमुनाजी पुखराज की तरहटी में खजाने के ताल में जो पाँच पेड़ हैं, उनमें से पूर्व के पेड़ से प्रकट होकर पूर्व की ओर चली हैं। तत्पश्चात् खजाने के ताल से करीब दो लाख पन्द्रह हजार दो सौ कोस पूर्व जाकर तरहटी से बाहर आई । पुनः मूलकुण्ड से →

स. ३८-उक्त पक्षों को चारों ओर से घेरकर क्या फिरा है?

स. ३९-चार हार हवेलियाँ रंगमहल से कितनी दूरी पर स्थित हैं और कहाँ हैं?

स. ४०-इन सबको चारों ओर से आवृत कर बाहर क्या-क्या है?

ज. ४०- उपरोक्त वर्णित पक्षों को चारों ओर से आवृत कर बाहर से बड़ी रांग (दुर्ग-किला) फिरी है। उसके अन्दर बीच के हिस्से में आठ →

स. ४१-इस बड़ी रांग ने विशेषकर किन दो धामों को चारों ओर से घेर रखा है? पुनः यह दिखने में कैसी मालूम होती है?

ज. ४१- इस बड़ी रांग ने विशेषकर अक्षर धाम और परमधाम-इन दो धामों →

स. ४२-श्री रंगमहल की उत्तर दिशा में क्या है और कितनी दूरी पर है?

→ एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस ढँपी यमुनाजी के रूप में आगे बढ़ी। उसके उपरान्त एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस खुली यमुनाजी के नाम से आगे गई। मूल से लेकर यहाँ तक कुल साढ़े चार लाख कोस पूर्व जाने के पश्चात् श्री यमुनाजी मरोड़ खाई। तत्पश्चात् श्री यमुनाजी उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर नौ लाख कोस तक गई और दक्षिण से पश्चिम दिशा की ओर मुड़ गई। तदुपरान्त साढ़े चार लाख कोस पश्चिम जाकर हौज कौसर तालाब में समा गई।

ज. ३८- उक्त पक्षों जैसे श्री रंगमहल, श्री यमुनाजी, हौज कौसर ताल, पुखराज पर्वत, कुंज-निकुंज वन, पश्चिम की चौगान आदि को बाहर से घेरकर जवेरों की नहरें और महलातें फिरीं हैं।

ज. ३९- चार हार हवेलियाँ (छोटी रांग) रंगमहल से साढ़े तीन करोड़ योजन की दूरी पर चारों ओर से फिरी हुई हैं। इसकी फिरती बत्तीस हाँसें (पहल) हैं।

→ सागर और आठ क्षितियाँ फिरी हुई हैं। आठ दिशाओं में आठ सागर हैं, तो प्रत्येक दो सागर के बीच एक क्षिति है। इस प्रकार क्रमशः एक सागर और एक क्षिति, एक सागर और एक क्षिति करते-करते आठ सागर और आठ क्षितियाँ फिरी हुई हैं।

→ (पहाड़ों) को चारों ओर से घेर रखा है। इस बड़ी रांग को बेहद की जमीन से देखा जाय, तो यह बड़ी ऊँची परखाल (दिवाल) जैसी मालूम होती है। यह पचीस पक्ष के दुर्ग (किले) के रूप में स्थित है।

ज. ४२- श्री रंगमहल की उत्तर दिशा में पुखराज नामक पर्वत है, जो श्री रंगमहल की उत्तर दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर स्थित है।

स. ४३-श्रीजी स्वरूप माया में उलझे सुन्दरसाथ का ध्यान श्री परमधाम की ओर कैसे केन्द्रित करते हैं?

ज. ४३- श्रीजी स्वरूप चर्चा में रांग के आठ सागरों, विशाल अस्सी →

स. ४४-उत्तर दिशा में स्थित पुखराज पहाड़ के पूर्व पेड़ से पूर्व की ओर प्रवाहित हुई श्री यमुनाजी तरहटी-तरहटी होकर कितने कोस तक गई? पुनः कितने कोस तक ढँपी यमुनाजी के रूप में और कितने कोस तक खुली यमुनाजी के रूप में गई?

स. ४५-जहाँ से श्री यमुनाजी का उद्गम हुआ, वहाँ से कितने कोस पूर्व जाकर श्री यमुनाजी दक्षिण की ओर मरोड़ खाई?

स. ४६-श्री यमुनाजी के उत्तर से दक्षिण मरोड़ तक कितनी दूरी है?

स. ४७-इन दोनों मरोड़ों के बीच में क्या-क्या आता है?

ज. ४७- इन दोनों मरोड़ों के बीच में श्री यमुनाजी के दोनों-पूर्व और पश्चिम →

स. ४८-श्री यमुनाजी के पूर्व और पश्चिम इन दोनों किनारों में कितनी-कितनी देहुरियाँ हैं? पुनः एक देहुरी से दूसरी देहुरी की दूरी कितनी है?

स. ४९-ये देहुरियाँ वास्तव में कौनसी जमीन पर स्थित हैं?

→ सन्धियों की इमारतों, उत्तर दिशा में स्थित पुखराज पर्वत और दक्षिण दिशा में स्थित माणिक पहाड़, श्री यमुनाजी के उद्गम स्थान आदि का वर्णन करके मायावी खेल में आई धामस्थ ब्रह्मात्माओं-सुन्दरसाथजी का ध्यान श्री परमधाम की ओर केन्द्रित करते हैं।

ज. ४४- श्री रंगमहल के उत्तर दिशा में स्थित पुखराज पहाड़ के मध्य-खजाने के ताल में पाँच पेड़ों में से पूर्व के पेड़ से पूर्व की ओर प्रवाहित नहररूपी यमुनाजी तरहटी-तरहटी होकर दो लाख पन्द्रह हजार दो सौ कोस तक गई। तदुपरान्त एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस तक ढँपी यमुनाजी के रूप में और एक लाख सत्रह हजार चार सौ कोस तक खुली यमुनाजी के रूप में गई।

ज. ४५- जहाँ से श्री यमुनाजी का उद्गम हुआ, वहाँ से साढ़े चार लाख कोस पूर्व जाकर श्री यमुनाजी दक्षिण की ओर मरोड़ खाई (मुड़ गई)।

ज. ४६- श्री यमुनाजी के उत्तर मरोड़ से दक्षिण मरोड़ तक नौ लाख कोस की दूरी है।

→ की पाल, पाल पर मरोड़ के हिंडोलों की देहुरियाँ, एक महल एक चबूतरा, पुल महल, पाट घाट, पुल पुनः एक महल एक चबूतरा और पाल पर मरोड़ के हिंडोलों की देहुरियाँ आते हैं।

ज. ४८- श्री यमुनाजी के दोनों पाल के पूर्व और पश्चिम-इन दोनों किनारों में नब्बे-नब्बे देहुरियाँ लम्बी पंक्तिबद्ध हैं। पुनः एक देहुरी से दूसरी देहुरी की दूरी तिरासी मंदिर है।

ज. ४९- वास्तव में नब्बे देहुरियों की एक पंक्ति श्री यमुनाजी के पाल के पूर्व किनार में शोभायमान है, तो दूसरी पंक्ति पश्चिमी किनारे-पाल की जमीन पर शोभायमान है।

स. ५०-छट्ठे पहर में प्रतिदिन मात्र कौनसे भूमिका की चर्चा होती है?

स. ५१-कहाँ की और कौनसी (कैसी) चर्चा सुनने से मायावी द्वैत भाव का प्रभाव नष्ट हो जाता है?

स. ५२-कौनसे तीन स्वरूप अद्वैत स्वरूप कहलाते हैं?

स. ५३-कहाँ के और कौन-कौनसे स्वरूप एकात्म स्वरूप हैं, जिन्हें श्री राजजी का अंग कहा जाता है?

स. ५४-श्री राजजी के अद्वैत पाँच स्वरूप कौन-कौन हैं?

ज. ५४- श्री परमधाम अक्षरातीत प्रेममयी अद्वैत भूमिका में श्री राजजी के →

स. ५५-वे ब्रह्म कौन हैं और कहाँ रहते हैं, जिनके देखने मात्र से एक क्षण में त्रिदेवा सहित करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न और लय हो जाते हैं?

स. ५६-ऐसे सामर्थ्यशाली कूटस्थ अक्षर ब्रह्म भी नित्य प्रति किनके दर्शन करने जाते हैं? क्या वे उनसे बातचीत भी करते हैं या मात्र दर्शन करके लौट जाते हैं?

ज. ५६- ऐसे सामर्थ्यशाली कूटस्थ अक्षर ब्रह्म भी नित्य प्रति अपने आत्म →

स. ५७-श्री राजजी ने कैसे और क्यों प्रेममयी अद्वैत भूमिका में प्रेम-संवाद को कारण बनाकर अपनी अंगनाओं को खेल दिखाया है?

ज. ५०- छट्ठे पहर में प्रतिदिन मात्र अद्वैत प्रेममय भूमिका अर्थात् पचीस पक्ष के अन्तर्गत की चर्चा सप्रमाण होती है।

ज. ५१- अक्षरातीत ब्रह्मधाम की ब्रह्मलीला की चर्चा सुनने पर मायावी द्वैत भाव का प्रभाव नष्ट हो जाता है।

ज. ५२- अक्षरातीत श्री परमधाम के श्री राजश्यामाजी और द्वादश सहस्त्र सखियाँ एक अद्वैत स्वरूप कहलाते हैं।

ज. ५३- श्री पचीस पक्ष के अंदर स्थित अक्षर धाम में रहनेवाले अक्षर ब्रह्म और उनकी अर्धांगिनी श्री लक्ष्मीजी-ये दोनों एकात्म स्वरूप हैं। इन्हें श्री राजजी का अंग कहा जाता है।

→ अद्वैत पाँच स्वरूप निम्नलिखित हैं। जैसे-श्री राजजी, श्री श्यामाजी, द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माएँ, अक्षर ब्रह्म और उनकी अर्धांग लक्ष्मीजी।

ज. ५५- कूटस्थ अक्षर ब्रह्म के देखने मात्र से एक क्षण में त्रिदेवा सहित करोड़ों ब्रह्माण्ड उत्पन्न और लय हो जाते हैं। कूटस्थ अक्षर ब्रह्म अक्षर धाम में ही रहते हैं।

→ स्वरूप अक्षरातीत श्री राजजी के दर्शन करने जाते हैं। किंतु वे न तो उनसे कुछ बातचीत करते हैं और न उनके नजदीक ही जाते हैं। वे नित्य प्रति मात्र गद्गद हृदय से प्रेमभरे दर्शन के पश्चात् अपने स्थान पर वापस लौट जाते हैं।

ज. ५७- श्री राजजी ने अपनी अंगनाओं के अन्दर की शेष कमी को पूर्ण करने के लिए प्रेम-संवाद को खेल में आने का कारण बनाया है। परंतु कैसे? तो आज के दिन सुबह श्री राजजी ने अक्षर ब्रह्म को श्री श्यामाजी सहित सखियों के और श्री श्यामाजी सहित सखियों →

→ को अक्षर पुरुष के दर्शन करा दिये। तत्पश्चात् परस्पर एक-दूसरे के विषय में जानने की इच्छा बढ़ चली, जिसके प्रतिफल प्रेम-संवाद हुआ। सखियों ने बार-बार, तीन बार खेल देखने की →

स. ५८-द्वादश सहस्त्र सखियाँ झूठा, मायावी, असत्, जड़, दुःखरूपी नाटक कहाँ बैठकर और कैसे देख रही हैं?

ज. ५८- द्वादश सहस्त्र सखियाँ झूठा, मायावी प्रपञ्चरूपी असत्,जड़, →

स. ५९-श्री राजजी ने सखियों के विषय में मन में क्या विचार किया और क्यों?

ज. ५९- हम सखियों के विषय में धामधनी श्री राजजी ने मन में यह विचार किया, "यह मेरी अंगनाएँ अव्वल दर्जे की प्रेमी हैं। इनके →

स. ६०-श्री राजजी ने प्रेम-संवाद के दौरान सखियों के मन में उत्साह-उमंग बढ़ाकर खेल देखने की इच्छा कैसे उत्पन्न करा दी?

ज. ६०- श्री राजजी ने सर्वप्रथम अक्षर और सखियों को परस्पर दर्शन करा दिये। पुनः "अक्षर ब्रह्म कौन है, कहाँ रहता है तथा ये →

स. ६१-जब सखियों ने खेल देखने की जिद पकड़ ली, तब श्री राजजी ने उन्हें सावधान करते हुए खेल में जाकर विशेषरूप से क्या-क्या भूल जाने का डर दिखाया?

ज. ६१- जब अनेकों बार मना करने पर भी सखियाँ अपनी जिद पर →

स. ६२-श्री राजजी द्वारा कही हुई तीन बातें खेल में जाकर न भूलने के विषय में सखियाँ परस्पर क्या सलाह-मशविरा करने लगीं?

→ माँग की और श्री राजजी ने भी बार-बार खेल दिखाने के विषय में मना किया। अन्त में सखियों ने अपनी जिद द्वारा श्री राजजी को खेल दिखाने पर मजबूर कर दिया।

→ दुःखयुक्त नाटक अपने निजधाम के अंदर स्थित गोल हवेली-मूल मिलावे में बैठे-बैठे स्वप्न में होकर मृत्युलोक में आकर देख रही हैं।

→ प्रेम में तनिक भी कमी नहीं है, परन्तु ज्ञान के विषय में तो ये *"नरी वा कुंजरी वा"* हैं। अतः इनकी कमी तो मेरी (पूर्णात्पूर्ण स्वरूप की) ही कमी है। अब जब तक मैं इन्हें अपने समान प्रेमी और ज्ञानी न बनाऊँ, तब तक मैं इन्हें अपनी अर्धांग कैसे मानूँ और पूर्णात्पूर्ण कैसे कहलाऊँ?"

→ सखियाँ कौन हैं और श्री राजजी के साथ कैसी लीलाएँ अथवा कैसा व्यवहार करती होंगी?"-ऐसी-ऐसी विभिन्न शंकातुर इच्छाएँ उत्पन्न कराकर दोनों के मन में एक-दूसरे को जानने के विषय में उत्साह-उमंग उत्पन्न करा दिया। अब आपस में मानों होड़ सी लग गई कि "हम अक्षर का असत्, जड़, दुःखरूपी नया नाटक देखकर ही रहेंगे और अक्षरातीत रंगमहल में सखियाँ श्री राजजी के साथ कैसी लीला करती होंगी, यह जानकर ही रहूँगा!"

→ अड़ी रहीं, टस से मस तक नहीं हुईं, तब श्री राजजी ने उन्हें सावधान करते हुए कहा, "हे धामस्थ सखियों! मैं आप सबको पहले ही बता देता हूँ कि आप सब खेल में जाकर ये तीन बातें अवश्य ही भूलोगी और भूलोगी! जैसे एक-अपने आप को, दूसरा-इस धामको और तीसरा-मुझे भी भूल जाओगे!"

ज. ६२- श्री राजजी ने जब उक्त तीन बातें भूलने के विषय में सखियों को सावधान किया, तब सखियाँ आपस में एक-दूसरे को सचेत रहने की सलाह देने लगीं और स्वयं भी सचेत रहने के प्रति →

→ सजग हो गईं तथा एक-दूसरे से सलाह-मशविरा करने लगीं कि →

स. ६३-श्री राजजी द्वारा इस तरह स्वयं सखियों के मुख से खेल मँगाकर उन्हें खेल दिखाने के पीछे ठोस प्रयोजन क्या है?

ज. ६३- श्री राजजी द्वारा इस तरह स्वयं सखियों के मुख से खेल मँगाकर खेल दिखाने के पीछे बहुत से गोप्य कारण हैं किंतु ठोस प्रयोजन →

स. ६४-श्री राजजी की प्रेरणा से अक्षर ब्रह्म को क्या देखने अथवा जानने की इच्छा हुई?

ज. ६४- श्री राजजी की प्रेरणा से ही अक्षर ब्रह्म ने आज सुबह श्री राजजी के दर्शन करते समय श्री राजजी के साथ-साथ श्री श्यामाजी →

स. ६५-श्री राजजी की प्रेरणा के फलस्वरूप कूटस्थ अक्षर ब्रह्म क्या इच्छा करने लगे?

स. ६६-अपनी द्वादश सहस्त्र अंगनाओं और कूटस्थ अक्षर ब्रह्म की भिन्न-भिन्न इच्छाएँ पूर्ण करने के लिए अक्षर ब्रह्म पर श्री राजजी ने क्या आज्ञा की?

ज. ६६- अपनी द्वादश सहस्त्र अंगनाओं और कूटस्थ अक्षर ब्रह्म की भिन्न- →

स. ६७-अक्षर ब्रह्म का असत्, जड़, दुःखरूपी नाटक देखने के विषय में सखियों ने कहाँ बैठकर आपस में राय-बात की और तत्पश्चात् श्री राजजी के पास आईं?

ज. ६७- आज के दिन अक्षर ब्रह्म का दर्शन करने और उनके असत्, →

→ "यदि मैं भूलूँ, तो तुम मुझे सचेत करना और यदि तुम भूलोगी तो मैं तुम्हें सावधान करूँगी।"

→ यह था कि असत् का ज्ञान लिए बिना सखियाँ सत्, चित्, आनन्दमयी लीला नहीं समझ सकतीं थीं और खेल माँगे बिना सखियाँ असत्, जड़ और दुःख का अनुभव नहीं कर सकतीं थीं। अतः अपनी अंगनाओं को असत्, जड़ और दुःख का अनुभव कराकर श्री राजजी उन्हें ज्ञान और प्रेम-दोनों से पूरी तरह पूर्णात्पूर्ण बनाना चाहते थे।

→ सहित द्वादश सहस्त्र सखियों को भी देखा और देखते ही उनके मन में यह इच्छा उत्पन्न हुई, "इन सखियों के साथ अन्तःपुर में मूल स्वरूप कैसी लीला करते होंगे? यदि यह रहस्य जानने को मिले, तो!"

ज. ६५- श्री राजजी की प्रेरणा के फलस्वरूप कूटस्थ अक्षर ब्रह्म अक्षरातीत स्वरूप श्री राजजी के अंतःपुर में उनके और सखियों के बीच होनेवाली लीला के अनुभव की इच्छा करने लगे।

→ भिन्न इच्छाओं को पूर्ण करने हेतु श्री राजजी ने अक्षर ब्रह्म को स्वप्निक मायावी सृष्टि की रचना करने की आज्ञा दी। तब अक्षर ब्रह्म ने स्वयं स्वप्न में क्षर पुरुष-आदिनारायण होकर "*एकोऽहं बहुस्याम्*" रूपी सृष्टि का विस्तार किया।

→ जड़, दुःखरूपी नये नाटक के विषय में जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् दोपहर बारह बजे श्री राजश्यामाजी को नीले-पीले मंदिर में पौढ़ाकर समस्त सखियाँ श्री यमुनाजी के तट पर एकत्रित हुईं तथा आपस में राय-बात करके श्री राजश्यामाजी के पास तीसरी भोम के नीले-पीले मंदिर में आ गईं।

स. ६८-श्री राजजी ने खेल में आने के विषय में सखियों को कितनी बार रोका और श्री राजजी के रोकने पर भी सखियाँ क्यों नहीं मानीं?

ज. ६८- श्री राजजी ने सखियों को असत्, जड़, दुःखरूपी स्वप्निक खेल →

स. ६९-सखियों को मायावी खेल दिखाने के लिए श्री राजजी ने सर्वप्रथम कहाँ उतारा?

ज. ६९- सखियों को अक्षर का असत्, जड़, दुःखरूपी स्वप्निक नाटक →

स. ७०-सखियों को खेल में उतारने से पहले श्री राजजी ने अक्षर ब्रह्म को क्या प्रेरणा की?

स. ७१-श्री राजजी की प्रेरणा से अक्षर ब्रह्म ने सृष्टि का विस्तार कैसे किया?

ज. ७१- श्री राजजी की प्रेरणा से अक्षर ब्रह्म के मन ने स्वप्निक ब्रह्माण्ड →

स. ७२-अपनी अभिन्न अंग-ब्रह्मात्माओं को श्री राजजी ने खेल का अनुभव कहाँ और कैसे कराया?

ज. ७२- अपनी अभिन्न अंग-ब्रह्मात्माओं को श्री राजजी ने व्रज और →

स. ७३-रास की चिन्मय-प्रकाशमयी रात्रि कितनी लम्बी थी तथा वह रात्रि कहाँ-किस ब्रह्माण्ड में उत्पन्न की गई थी?

ज. ७३- योगमाया के ब्रह्माण्ड की चिन्मय भूमिका में जिस चिन्मय →

→ में जाने के विषय में तीन-तीन बार रोका। किंतु सखियों को तो खेल देखने की धुन लगी थी। अतः इस धुन के सिर पर सवार होने के कारण श्री राजजी ने समझाते हुए कहे हुए वचनों के प्रति उन्हें विश्वास ही नहीं आया। इसीलिए श्री राजजी के रोकने पर भी वे नहीं मानीं।

→ दिखाने के लिए श्री राजजी ने सर्वप्रथम उन्हें नारायणी सृष्टि के स्थूल-चौदह लोक में स्थित मृत्युलोक, मृत्युलोक के सात द्वीपों में से जम्बू द्वीप, जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में से भरतखण्ड में, पुनः भरतखण्ड के भी ब्रजमण्डल में उतारा।

ज. ७०- सखियों को खेल में उतारने से पहले श्री राजजी ने अक्षर ब्रह्म को खेल रचने की प्रेरणा की।

→ में नारायण का तन धारण किया। नारायण के मन-शेषशायी द्वारा त्रिदेवा उत्पन्न हुए। त्रिदेवा द्वारा थिर-चर आदि की उत्पत्ति हुई तथा कुल चौरासी लाख योनियाँ तैयार हुईं।

→ रास लीला के पश्चात् जागनी के ब्रह्माण्ड में उतारकर बेशक इलम-तारतम ज्ञान के आधार पर सब कुछ अवगत कराया तथा अक्षरातीत के तीसरी भोम में उनके अन्दर उत्पन्न हुईं सम्पूर्ण इच्छाएँ पूरी कर दी।

→ प्रकाशमयी रात्रि में महारास लीला का अनुभव कराया गया, उसमें मृत्युलोक की रात्रि, स्वर्ग की रात्रि, सतलोक स्थायी ब्रह्माजी की रात्रि और आदिनारायण की रात्रि-इन चारों रात्रियों का समावेश था। यह लम्बी रात्रि का ब्रह्माण्ड केवल की स्वामिनी के मन अंतःकरण में उत्पन्न किया गया था।

स. ७४-इस बार भी सखियों की स्वप्निक खेल देखने की मनोइच्छा शेष रह गई। अतः कहाँ, किन सखियों की और कैसी मनोइच्छा?

ज. ७४- योगमाया के ब्रह्माण्ड में महारास लीला-क्रीड़ा स्थल में भी तामसी →

स. ७५-किस कार्य-कारणवश सखियों को दूसरी बार खेल में आना पड़ा और श्री राजजी को तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना करनी पड़ी?

ज. ७५- द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माएँ ब्रज और रास के ब्रह्माण्ड में असत्, जड़ और दुःखरूपी खेल का अनुभव कर श्री मूल मिलावे में पहुँचीं। →

स. ७६-ब्रह्मात्माओं की खैर के लिए कुरान में कहाँ, किसने और क्या लिखा है?

ज. ७६- ब्रह्मात्माओं की खैर के लिए कुरान की *"इन्ना इन्जुलना"* नामक →

स. ७७-कौन स्वरूप अरब में रसूल बनकर आए थे और क्यों?

ज. ७७- अरब में रसूल बनकर धाम की साक्षियाँ रखने हेतु आनेवाले स्वरूप ही ब्रज-रास रमानेवाले स्वरूप हैं। धाम की आत्माएँ →

स. ७८-रसूल स्वरूप ने कहाँ और कौन-कौनसे तीन स्वरूप धारण किये और क्यों?

ज. ७८- रसूल स्वरूप ने तीन स्वरूप धारण किए, जिनमें से अरब के बसरा प्रांत में आकर उन्होंने बसरी स्वरूप धारण किया। पुनः दूसरी बार मारवाड़ देश में उमरकोट गाँव में आकर मलकी स्वरूप →

→ सखियों की तीसरी भोम में उत्पन्न हुई असत्, जड़, दुःखरूपी नाटक देखने की मनोइच्छा शेष रह गई। वे महारास लीला में श्री राजजी के अंतर्ध्यान के समय के वियोग में भी माँगे हुए दुःख का अनुभव नहीं कर सकीं। बल्कि वे तो स्वातसी और राजसी सखियों को धैर्य बँधाने और उनके दुःख निवारण करने में सहायक बनीं। अतः वे स्वयं दुःख का अनुभव कैसे कर सकतीं थीं?

→ किंतु उन्हें दूसरी बार पुनः धाम छोड़कर खेल में आना पड़ा। इसका मूल कारण था-तामसी सखियों की अधूरी चाहना। पुनः आद-अनाद का भविष्य भी शेष था। अतः श्री राजजी ने तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड की रचना कर समस्त सखियों को दुबारा खेल में उतारा और तीसरी भोम में जो-जो बातें उन्होंने कबूल नहीं की थीं, उन्हें कबूल करवाया तथा उन्हीं के हाथों में जीवों को मुक्ति प्रदान करने की जिम्मेदारी सौंप दी।

→ सूरत (प्रकरण) में तृतीय श्याम स्वरूप श्री मुहम्मद साहेब ने भविष्यवाणी के रूप में हजार साल पूर्व ही लिख दिया है कि "उत्तमातिउत्तम ब्रह्मधाम की ब्रह्मात्माओं के प्रति अद्वैत ब्रह्म श्री राजजी-खुदा की मेहेरबानी (खैर) उतरेगी।"

→ दूसरी बार हिन्दू और मुसलिम-दोनों जातियों में आनेवाली हैं। यसर्थ मुसलिम जाति में भी धाम की साक्षियाँ रखने हेतु ही उक्त स्वरूप अरब में रसूल बनकर आए थे।

→ धारण किया और तारतमरूपी माल उतारा। तत्पश्चात् *"पूरन ब्रह्म प्रगट भए, प्रेम सहित लै ज्ञान"* अर्थात् पूर्णब्रह्म स्वरूप ने जामनगर स्थित मेड़ी मंदिर में हकी स्वरूप में प्रकट होकर सबको हद ब्रह्माण्ड के चक्कर से छुड़ाया और सबको अक्षर, अक्षरातीत धाम के अखण्ड सच्चिदानन्दमय सुख में पहुँचाया।

स. ७९-खेल की रचना और "फर्दाए रोज कयामत" का आह्वान किसके लिए है?

ज. ७९- खेल की रचना ब्रह्मात्माओं-मोमिनों की चाहना पूर्ण करने के लिए ही की गई है। पुनः दूसरी बार तीसरे ब्रह्माण्ड में अरबस्तान →

स. ८०-"हम ब्रह्मात्माओं के लिए श्री परमधाम से पाँच दिव्य शक्तियाँ खेल में उतरीं हैं।" अतः वे पाँच दिव्य शक्तियाँ कौन-कौनसी हैं?

ज. ८०- हम ब्रह्मात्माओं के लिए श्री परमधाम से जो पाँच शक्तियाँ खेल →

स. ८१-खेल में आकर द्वादश सहस्त्र सखियों के दिल में मायावी विकार प्रवेश न कर सकें। इस विषय में श्री राजजी ने क्या किया?

ज. ८१- खेल में जा रही अपनी अंगनाओं के हृदयरूपी दिल में मायावी →

स. ८२-असराफील-अक्षर की जागृत बुद्धि पूरी तैयारी के साथ अपनी संपूर्ण सेना लिए कहाँ आकर बैठ गई? उसने किस विषय का बिगुल बजाया (स्वर फूँका) तथा किन-किन पक्षों के गूढ़ रहस्यों का स्पष्टरूप से गायन किया?

ज. ८२- असराफील-अक्षर की जागृत बुद्धि पूरी तैयारी के साथ अपनी →

स. ८३-रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी ने किस कार्य-कारणवश दो तन धारण किए और किसके लिए?

ज. ८३- रूह अल्लाह-श्री श्यामाजी ने *"हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट* →

→ के बसरा शहर में रसूल स्वरूप ने आकर *"फर्दाए रोज कयामत"* अर्थात् कल आत्म-जागृति का समय आएगा, ऐसा भविष्य कहा। यह भविष्यवाणी भी ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के लिए ही हुई क्योंकि ये बातें वे ही समझ सकते हैं।

→ में उतरीं हैं, वे निम्नलिखित हैं। जैसे-जबराईल (श्री राजजी का जोश), असराफील (अक्षर की जागृत बुद्धि),हुकम (आदेश), आत्मा (श्यामा)और नूर (तारतम)। उक्त पाँच शक्तियों ने महामति स्वरूप में एकत्रित होकर अवशेष कार्यों को पूरा किया, जो ब्रह्मात्माओं-मोमिनों के लिए थे।

→ इल्लत (विकार) प्रवेश न कर सकें इसलिए श्री राजजी ने सभी ब्रह्मात्माओं के दिलरूपी अन्तःकरण में अपना जोश (जबराईल) देकर भेजा है, जिससे उनका मन मायारहित रह सके और वे धाम का ज्ञान समझ सकें।

→ संपूर्ण सेना लिए श्री प्राणनाथजी के हृदयधाम में आकर बैठ गई और उसने श्री इन्द्रावती के हृदय धाम में श्री राजजी अथवा तारतम अवतार द्वारा तारतम प्राप्त किया। उसने आत्मा-परमात्मा विषयक ब्रह्मज्ञान का बिगुल बजाया (स्वर फूँका) तथा हिन्दू पक्ष के वेद, शास्त्रों के गुह्यार्थों और कुरान, हदीसों के अन्दर के गोप्यातिगोप्य रहस्यों का स्पष्टरूप से गायन कर सबके सामने रख दिया ।

→ *लेने घर धाम"* अपने इन वचनों को चरितार्थ करने हेतु ही दो तन (दो जामे) धारण किए। यह कार्य उन्होंने ब्रह्मात्माओं को जागृत कर धाम ले जाने के लिए ही किया है।

स. ८४-मायावी संसार में डूबती हुई धाम की ब्रह्मात्माओं की बाँह पकड़कर उन्हें संसार सागर से कौन निकाल रहा है?

स. ८५-ब्रह्मात्माओं की सिफारिश करने के लिए कौन, क्या लेकर आये?

स. ८६-किस वाणी के पठन-पाठन द्वारा परब्रह्म-परमात्मा श्री राजजी के दर्शन भी हो जाते हैं?

स. ८७-श्री राजजी कौनसी वाणी की चर्चा करते हैं? पुनः किन आत्माओं द्वारा उस वाणी पर विचार-विवेक करने पर उनके ही मन-बुद्धि द्वारा उसका ध्यान और मनन होता है तथा क्यों?

ज. ८७- श्री राजजी-श्रीजी साहेबजी अथवा महामति श्री प्राणनाथजी अहर्निश श्री तारतम वाणी के मारफती वचनों की चर्चा बंगलाजी →

स. ८८-धामधनी श्री कृष्णजी (श्याम) के सात अद्वैत स्वरूप कौन-कौनसे हैं?

ज. ८८- अक्षरातीत धामधनी श्री कृष्णजी (श्याम) के सात अद्वैत स्वरूप →

स. ८९-अच्छा! सुन्दरसाथजी !! स्वरूप और सिंगार में अन्तर है या नहीं? यदि है, तो क्या? पुनः क्या स्वरूप की गिनती सिंगार में की जा सकती है अथवा स्वरूप में सिंगार किया जाता है?

ज. ८४- मायावी संसार में डूबती हुई अक्षरातीत धाम से खेल देखने आई ब्रह्मात्माओं की बाँह पकड़कर रूह अल्लाह स्वरूप के दूसरा जामा महामति श्री प्राणनाथजी, श्री इन्द्रावती के माध्यम से निकाल रहे हैं।

ज. ८५- खेल के बीच में ब्रह्मात्माओं की सिफारिश करने के लिए श्री श्यामाजी ब्रह्मज्ञान से ओत-प्रोत ब्रह्मवाणी- *"श्री तारतम महामंत्र-नूर कुंजी"* लेकर आये।

ज. ८६- तारतम सम्बन्धी वाणी में स्थित मारफती हरफों के पठन-पाठन, मनन-चिन्तन द्वारा परब्रह्म-परमात्मा श्री राजश्यामाजी अथवा हक-हकजात के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते हैं।

→ में करते हैं, पुनः जो-जो आत्माएँ धामधनी और वाणी सम्बन्धी हैं, उनके द्वारा ही उस वाणी पर विचार-विवेक करने पर उनके ही मन-बुद्धि द्वारा उसका ध्यान और मनन होता है। वे एक श्वास मात्र भी अन्यत्र कहीं खर्च नहीं करतीं, वृथा नहीं गँवाती क्योंकि वे उस धाम और वाणी की सम्बन्धी आत्माएँ हैं तथा आठों जाम उसी में विचरण करतीं हैं। अतः उन्हें ही उस चर्चा की लज्जत भी आती है।

→ निम्नलिखित हैं। जैसे-श्री परमधाम के पाँच स्वरूप श्री राजजी, श्री श्यामाजी, द्वादश सहस्त्र सखियाँ, कूटस्थ अक्षर तथा लक्ष्मीजी और दो स्वरूप महारास के ब्रह्माण्ड के-श्री कृष्ण और श्री राधा।

ज. ८९- स्वरूप और सिंगार में बड़ा भारी अन्तर है। स्वरूप की गिनती सिंगार में नहीं की जा सकती क्योंकि स्वरूप के ऊपर सिंगार किया जाता है। स्वरूप बिना के सिंगार का कोई अस्तित्त्व नहीं होता।

स. १०-रात-दिन श्री बंगलाजी में उक्त प्रकार के गूढ़ रहस्यों का खुलासा कर विवेचनवत् चर्चा द्वारा कौन सुन्दरसाथजी को समझाते हैं?

स. ११-श्री राजजी सुन्दरसाथजी-श्री धामस्थ ब्रह्मात्माओं को पचीस पक्षों में से विशेषकर पुखराज पर्वत की परिक्रमा कैसे कराते हैं?

स. १२-अद्वैत भूमिका-श्री परमधाम में सखियाँ श्री राजजी के साथ किस लीला में मगन रहतीं हैं?

स. १३-श्री राजश्यामाजी के साथ द्वादश सहस्त्र सखियाँ धाम के आगे किस स्थान पर जाकर आनन्दमयी क्रीड़ाएँ करतीं हैं?

स. १४-श्री राजश्यामाजी सहित सखियाँ आनन्ददायी क्रीड़ाएँ करने के लिए दोनों पुलों और कुंज-निकुंज वनों में किस-किस दिन पधारते हैं?

ज. १४- युगलस्वरूप श्री राजश्यामाजी अपनी अभिन्न अंग द्वादश सहस्त्र →

स. १५-दक्षिण मरोड़ से श्री यमुनाजी कितनी दूरी पर, किस दिशा में जाकर, किसमें समाविष्ट हो जाती हैं?

स. १६-चर्चा-कथा में श्री राजजी प्रेमपूर्वक किस पक्ष का अनुभव कराते हैं? पुनः किस पक्ष के चारों दिशाओं में चार घाट हैं?

ज. ९०- रात-दिन श्री बंगलाजी में उक्त प्रकार के गूढ़ रहस्यों का खुलासा करते हुए विभिन्न प्रकार के शास्त्रों जैसे-कुरान, पुराण, वेद, कतेब आदि के प्रमाणों सहित विवेचनवत् चर्चा द्वारा स्पष्टरूप से महामति श्री प्राणनाथजी सुन्दरसाथजी को समझाते हैं।

ज. ९१- श्री राजजी सुन्दरसाथजी-श्री धामस्थ ब्रह्मात्माओं को पचीस पक्ष की सैर मध्ये विशेषकर पुखराज पर्वत की परिक्रमा ध्यान-चिन्तन द्वारा कराते हैं।

ज. ९२- अद्वैत भूमिका-श्री अक्षरातीत परमधाम में रहनेवाली सखियाँ अद्वैत प्रेमस्वरूप प्रियतम के साथ अहर्निश आनन्दमयी विहार-लीला में मग्न रहतीं हैं।

ज. ९३- श्री राजश्यामाजी के साथ द्वादश सहस्त्र सखियाँ श्री धाम-रंगमहल के आगे स्थित सातों घाटों में पधारतीं हैं और वहाँ प्रियतम-प्रियतमा की युगलजोड़ी के साथ विभिन्न प्रकार की आनन्दमयी क्रीड़ाएँ करतीं हैं।

→ ब्रह्मात्माओं को साथ लेकर लीला-क्रीड़ा हेतु आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की एकम तिथि के दिन सात घाट सहित पाट घाट पर पधारते हैं। दूज तिथि के दिन दोनों पुलों पर क्रीड़ा करते हैं तथा तृतीय तिथि के दिन कुंज-निकुंज वनों में पधारते हैं।

ज. ९५- दक्षिण मरोड़ से सीधे साढ़े चार लाख कोस पश्चिम दिशा में जाकर श्री यमुनाजी *"मदीयं सरः"* अर्थात् हौज कौसर ताल में समाविष्ट हो जाती हैं।

ज. ९६- श्री बंगलाजी में चर्चा-कथा करते समय महामति श्री प्राणनाथजी पचीस पक्ष में से श्री रंगमहल के दक्षिण दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर स्थित अति सुहावने हौज कौसर ताल के सुखों →

→ का अनुभव कराते हैं। इसी तालाब के चारों दिशाओं में चार →

स. ९७- मात्र एक ही हीरे से बना हुआ महल कहाँ है, जिसे द्वीप की संज्ञा दी गई है? क्यों?

ज. ९७- मात्र एक ही हीरे से बना हुआ सुन्दरातिसुन्दर महल हौज कौसर →

स. ९८- हीरे से बने किस महल को बाहर से वृक्षों की सात हारों ने घेर रखा है?

स. ९९- हौज कौसर ताल और माणिक पहाड़ के बीच में क्या है, जहाँ श्री राजजी सखियों के साथ आनन्दमयी लीलाएँ करते हैं?

ज. ९९- हौज कौसर ताल और माणिक पहाड़ के बीच में चौबीस हाँस →

स.१००- किस महल की चाँदनी से चौबीस-चौबीस की संख्या में झरने उछलते, गिरते, सीधे चलते और फिरते भी हैं?

ज.१००- चौबीस हाँस के महल की चाँदनी से चौबीस-चौबीस फुहारे उछलते हैं । वे फुहारे किनार के गुर्ज के कुण्ड से होते हुए नीचे उतरते हैं। चाँदनी से चौबीस झरने छः भोम नीचे जमीन के →

स.१०१- धामधनी श्री प्राणनाथजी किस पर्वत का वर्णन विस्तृतरूप में करके सुनाते हैं?

स.१०२- किस पहाड़ में दो पर्वतों के बीच हिंडोले लटके हुए हैं?

ज.१०२- माणिक पहाड़ के बीच में जो गोलावृत जलस्तंभ का चबूतरा है, उसके किनार में बारह हजार हिंडोले लटके हुए हैं। इन →

→ अलग-अलग नामवाले घाट हैं।

→ ताल के मध्य में स्थित है, जिसे टापू महल कहते हैं। इसे द्वीप की संज्ञा भी दी गई है क्योंकि उसे बाहर से छः लाख कोस चौड़े तालाब ने घेर रखा है।

ज. ९८- हीरे से बने हौज कौसर ताल नामक महल के उभय पालों को बड़ेवन के पाँच हार वृक्षों ने घेर रखा है, वनदिश की रौस सहित सात हार वृक्षों ने घेर रखा है।

→ का महल है, जिसकी पाँच भोम छट्टी चाँदनी है। इसकी चाँदनी पर पचीस फुहारे उठते हैं, जिनमें से चौबीस फुहारे तो चाँदनी के किनारे स्थित गुर्ज के कुण्डों में गिरते हैं। यह जगह अत्यंत मनोहर है। यहीं पर श्री राजजी सखियों के साथ आनन्दमयी लीलाएँ करते हैं।

→ कुण्ड में गिरते हैं। पुनः इन फुहारों का पानी नहरों के रूप में फिरते चौबीस और सीधे चौबीस अर्थात् चौबीस-चौबीस कुण्डों की चौबीस हारों अथवा कुल पाँच सौ छिहत्तर कुण्डों में फिरता है और तत्पश्चात् दक्षिण दिशा में जाकर जवेर की नहर में मिल जाता है।

ज.१०१- धामधनी श्रीजी साहेबजी पन्ना स्थित श्री बंगलाजी में माणिक पहाड़ का वर्णन विस्तृतरूप में करके वहाँ के प्रत्यक्ष अनुभव का सुख सुन्दरसाथजी को कराते हैं।

→ हिंडोलों की दोनों ओर पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण में माणिक पहाड़ की हवेलियाँ हैं। माणिक पहाड़ की हवेलियाँ गोलावृत फिरने के कारण मध्य के चबूतरे की दोनों ओर पहाड़ की हवेलियाँ पड़ती हैं।

स.१०३- उक्त हिंडोलों में झूलनेवालों की संख्या कितनी-कितनी है?

ज.१०३- उक्त बड़े-बड़े हिंडोलों में झूलनेवाली आत्माओं की संख्या द्वादश सहस्त्र है, परन्तु वहाँ की लीला सबसे न्यारी है। बारह हजार सखियों सहित श्री युगलस्वरूप के उस चबूतरे पर प्रवेश →

स.१०४- माणिक पहाड़ के चबूतरे के कितने खण्ड हैं? किन-किन खण्डों में क्या-क्या और कितनी-कितनी संख्या में हैं?

ज.१०४- माणिक पहाड़ के चबूतरे के मुख्य तीन खण्ड हैं, जिनमें से बाहरी किनार में माणिक पहाड़ की हवेलियाँ चारों ओर गोलावृत फिरी हैं। उसमें चौदह करोड़ चालीस लाख हवेलियाँ हैं। उसके →

स.१०५- माणिक पहाड़ से दक्षिण की ओर जाता हुआ जल कैसा दिखाई देता है?

ज.१०५- दक्षिण दिशा में माणिक पहाड़ के चारों ओर से क्रमशः भोम- →

स.१०६- महानद के दोनों किनारों पर क्या फिरी है और उसमें क्या लगे हैं?

ज.१०६- महानद के दोनों किनारों पर स्थित पाल पर देहुरियों की कतारें →

स.१०७- कहाँ की, कौनसी चर्चा सुनकर पारखी सुन्दरसाथ महानद के हिंडोलों में झूलते समय प्राप्त होनेवाले आनन्दानुभव सुनकर आनन्दित होते हैं?

ज.१०७- पन्ना स्थित श्री बंगलाजी में धामधनी श्रीजी साहेबजी के श्री →

→ होते ही श्री युगलस्वरूप सहित द्वादश सहस्त्र सखियों की एक जमात, ऐसी द्वादश सहस्त्र जमात एक-एक हिंडोले में एक साथ झूलते हैं। पुनः लीला-क्रीड़ा पूरी करके चबूतरे से बाहर निकलते ही बारह हजार जमात एक जमात में परिवर्तित हो जाती है। इस प्रकार वहाँ इच्छानुकूल जमात बनाकर लीला-क्रीड़ाएँ करते हैं।

→ अन्दर बीच के चबूतरे तक की चौड़ाई में छोटे-बड़े फिरते बगीचों के बीच भोम भर ऊँचे चबूतरे पर बारह हजार माणिक महलों की एक पंक्ति फिरी है। पुनः बीच के तीसरे खण्ड के चबूतरे पर मध्य में जलस्तंभ है। इस जलस्तंभ के चारों ओर एक फिरता बगीचा है, जिसका नाम है - *"नानाश्चर्यानन्दजन्य पुष्पवाटिका।"*

→ भोम उतरता हुआ स्वच्छ जल अत्यंत मनमोहक, दूध सदृश शुभ्र एवम् सुगन्धित गुणयुक्त विशेषता से पूर्ण दृष्टिगोचर होता है, जो महानद के रूप में चारों ओर फिरा हुआ है।

→ महानद के साथ-साथ फिरी हैं। उन देहुरियों के नीचे स्थित थंभों की मेहराबों में हिंडोले लगे हैं, जिन पर सखियाँ झूला करतीं हैं।

→ मुख से अक्षरातीत अद्वैत परमधाम-पचीस पक्ष की चर्चा में महानद में हीरे की बड़ी पाल-पड़साल में लगे हिंडोलों पर झूलते समय प्राप्त होनेवाले आनन्दानुभवों द्वारा निपुण-पारखी सुन्दरसाथ अत्यंत आनन्दित होते हैं।

स.१०८- "वृक्षों में बने विशाल महलों, हवेलियों एवम् मंदिरों में श्री राजजी सखियों के साथ लीला-क्रीड़ा करते हैं।" यह वर्णन कहाँ का है?

स.१०९- "इन सबको घेरकर बड़ी रांग है।" अतः बड़ी रांग ने किस-किसको घेरा है?

ज.१०९- बड़ी रांग ने अक्षर धाम, परमधाम, माणिक और पुखराज पर्वत, कुंज-निकुंज वन,जमुनाजी, पश्चिम की चौगान, बड़ावन, →

स.११०- "किन्तु वह तो शब्दातीत है"-यह कथन कहाँ की, कौनसी शोभा के लिए कहा गया है ? स्पष्ट करो।

ज.११०- बड़ी रांग की ऊँची-ऊँची हवेलियों की शोभा-सुन्दरता वट वृक्ष के आगे मात्र वट बीज सदृश है क्योंकि वह भूमिका परलोक →

स.१११- बड़ी रांग के सागर और क्षिति किस क्रम से आठों दिशाओं में फिरे हुए हैं?

ज.१११- बड़ी रांग के बीचों-बीच आठ दिशाओं में आठ सागर लहरा रहे →

स.११२- ब्रह्मात्माओं की रंगमय लीला-क्रीड़ा का स्थान कहाँ है?

ज.११२- उक्त आठ सागर और आठ क्षितियाँ (भूखण्ड) क्रमशः →

स.११३- कहाँ-किस जगह के वर्णन को मर्मभेदी तथा सामर्थ्यातीत कहा है?

ज.१०८- वन की नहर के बड़े-बड़े एवम् विशाल वृक्षों में बने हुए महलों, हवेलियों एवम् मंदिरों में श्री राजश्यामाजी सखियों के साथ आनन्दमयी लीला-क्रीड़ाएँ करते हैं। यह वर्णन वन की नहर के बृहद् वृक्षों के साठ हजार भोम ऊँचे वृक्षों का है।

→ चौबीस हाँस के महल, हौज कौसर ताल, जवेर की नहर, वन की नहर और चार द्वार हवेली-छोटी रांग को बाहर से आवृत किया है। इस बड़ी रांग ने पचीस पक्षों में से नौ पक्षों को घेर रखा है।

→ की राजधानी पचीस पक्ष के अंतर्गत होने के कारण, वहाँ की यावत् सामग्रियाँ शब्द और विषयों से परे हैं। अतः प्रश्न में कथित कथन बड़ी रांग की ऊँची-ऊँची हवेलियों के लिए कहा गया है।

→ हैं। उन आठों सागरों के बीच-बीच में क्रमशः सागर-क्षिति, सागर-क्षिति होते हुए आठ सागरों के बीच-बीच में आठ क्षितियाँ फिरी हुई हैं।

→ आवृताकार में फिरे हुए हैं। यही स्थान तो द्वादश सहस्र सखियों का रंगमय लीला-क्रीड़ा स्थल है, जो अधिकाधिक प्रेमवर्धक तथा आनन्दजन्य है।

ज.११३- अपने पचीस पक्ष परमधाम में स्थित बड़ी रांग के बीच-बीच में आये टापू महलों का मर्मभेदी वर्णन करने का सामर्थ्य शब्दों में नहीं है। यसर्थ इन्हें मर्मभेदी तथा सामर्थ्यातीत कहा है।

स.११४- महामति स्वरूप श्री राजजी किसके माध्यम से सुन्दरसाथ के हाथ पकड़कर श्री परमधाम में बैठाते हैं?

ज.११४- महामति स्वरूप श्री राजजी कई प्रकार के वचनों द्वारा श्री →

स.११५- आठों पहर मध्ये किस पहर में चर्चा सुनते-सुनते कभी-कभी डेढ़ पहर और निकल जाता है?

ज.११५- श्री परमधाम की चर्चा-कथा श्रवण करनेवाले श्रोताओं का दिन भले ही मायावी व्यवहार में व्यतीत होता हो, परंतु "रात →

स.११६- श्रीजी के शयन के पलंग पर गादी बिछाने और तकिया आदि लगाने की सेवा कौन करते हैं? उनके साथ अन्य कौन शामिल रहते हैं?

स.११७- इसके उपरान्त कौनसा पहर आया और इस पहर का समय कहाँ से, कहाँ तक है? इस पहर की मुख्य सेवा कौनसी है?

❋ सातवाँ पहर ❋

स. १ - सातवाँ पहर रात में आता है या दिन में? सातवाँ पहर कहाँ से, कहाँ तक है?

स. २ - इस पहर में अपने धामधनी को शयन कराने की सेवा के लिए कौन-कौन प्रमुखरूप में उपस्थित रहते हैं?

➞ परमधाम के पचीस पक्ष की चर्चा के माध्यम से ब्रह्मात्माओं को जागृत, प्रबुद्ध एवं जानकार करते हैं। चर्चा-कथा के माध्यम से उनका दिल-दिमागरूपी हाथ पकड़कर उन्हें धाम की ओर फिरा देते हैं और मूल मिलावे में स्थिर कर देते हैं।

➞ *तो अपनी ही है न!"* इस प्रकार का भाव लेकर छट्ठे पहर में चर्चा सुनने आनेवाले श्रोताओं के लिए रात्रि का दूसरा पहर अर्थात् नौ बजे से बारह बजे तक का समय तो चर्चा के लिए है ही, किंतु कभी-कभी तो रात्रि के तीसरे पहर का आधा समय भी निकल जाता है अर्थात् डेढ़ बज जाते हैं।

ज.११६- श्री राजजी स्वरूप श्रीजी साहेबजी को शयन कराने के लिए पलंग उठाकर लाने, उस पर गादी बिछाने तथा तकिया लगाने की सेवा बिहारीदास भाई करते हैं। उनके साथ इस सेवा में नाथा भाई सहित अन्य भाई भी शामिल हैं।

ज.११७- इसके उपरान्त सातवाँ पहर शुरू हुआ। सातवें पहर का समय है-रात्रि के बारह बजे से तीन बजे तक । इस पहर की मुख्य सेवा थी -*"श्री राजजी को पौढ़ाने की"*। अतः सेवा-भावी सुन्दरसाथ श्रीजी को शयन कराने की सेवा में जुट जाते हैं।

- (प्रकरण ६९, सवाल-जवाब नं.११७, कुल सं.५०६०+११७ =५१७७)।

❀ सातवाँ पहर ❀

ज. १ - सातवाँ पहर दिन में नहीं, रात में आता है। सातवाँ पहर रात्रि के बारह बजे से लेकर तीन बजे तक है।

ज. २ - इस पहर में अपने धामधनी स्वरूप श्रीजी को शयन कराने की सेवा में प्रमुखरूप से नारायणदास, द्वारकादास, परमानन्द आदि भाई प्रमुखरूप में उपस्थित रहते हैं।

स. ३ - किस पलंग के बिछौनों की शोभा अवर्णनीय है? इस वक्त यहाँ दो पलंग किन-किनके बिछाते हैं?

ज. ३ - अक्षरातीत धामधनी स्वरूप श्री प्राणनाथजी के शयनार्थ जो पलंग है, उस पलंग के बिछौनों की शोभा अवर्णनीय है। यहाँ →

स. ४ - श्रीजी साहेबजी के शयन करने के पलंग के चारों पाये दिखने में कैसे लगते हैं?

स. ५ - पलंग के पायों के रंग से उत्पन्न ज्योति को इन आँखों से देखने से कैसा लगता है?

ज. ५ - श्रीजी साहेबजी के शयनार्थ बिछे पलंग के पायों के रंगों से उत्पन्न →

स. ६ - पाँच रंगों से विभूषित बेल-बूटेदार निवाड़ (पलंग की पाटी) कैसी बुनी हुई है?

स. ७ - उस पचरंगी पलंग पर क्या-क्या बिछाया गया है?

स. ८ - सेज-बंध कैसे हैं और कहाँ बाँधे गये हैं? क्यों?

स. ९ - पलंग के नीचे क्या और कैसे झलकता हुआ दिखाई पड़ता है?

स. १०-पलंग पर क्या-क्या रखा जाता है? सेज पर लगे छत्र की शोभा कैसी है?

स. ११-छत्री के किनारे कैसी झालर लगी हुई है? समस्त शोभाओं से परिपूर्ण इस सेज की शोभा कैसी है?

→ इस वक्त दो पलंग बिछाए जाते हैं, जिनमें से एक पलंग धामधनी श्रीजी स्वरूप के लिए होता है और दूसरा पलंग श्री बाईज्यूराज के नाम का होता है, जो खाली रहता है। इन दोनों पलंगों की शोभा अकथनीय है।

ज. ४ - श्रीजी साहेबजी के शयन करने के पलंग के चारों पाये विभिन्न चमचमाते रंगों से परिपूर्ण अत्यंत मनमोहक तथा प्रिय लगते हैं।

→ ज्योति भले ही इस संसार की है, परन्तु उन्हें इन आँखों से देखते ही *"चौदह लोक से मथुरा न्यारी"* की तरह आत्मा में अलग एक प्रकार की आत्मशक्ति प्राप्त होती है।

ज. ६ - पाँच रंगों से विभूषित बेल-बूटेदार निवाड़ (पलंग की पाटी) अत्यन्त सुकोमल और सुखदायी बुनी हुई है।

ज. ७ - उस पचरंगी पलंग पर पतली गादी (तलाई) सुशोभित है। गद्दे के ऊपर सुन्दर चादर बिछायी गई है।

ज. ८ - सेज-बंध अत्यंत सुन्दर हैं और पलंग पर बिछी चादर में सिलवटें न पड़ें, इसलिए पलंग के चारों पायों में भली प्रकार बाँधे गये हैं।

ज. ९ - सुन्दरातिसुन्दर पलंग के नीचे पचरंगी निवाड़ के लिए प्रयोग में लाई गई पाँच रंग की रेशमी पट्टियों का प्रतिबिम्ब सुन्दररूपेण झलकता हुआ दिखाई देता है।

ज. १०- सुन्दर पलंग पर सिरहाने-तकिये, गाल मसूरिये आदि रखे गये हैं। उस सेज पर लगे छत्र के चारों पाये ऐसे लगते हैं कि मानों वे प्रकाश से ही निर्मित क्यों न हों!

ज. ११- छत्री के किनारे चारों ओर ज्योतिर्मय चमकती और लटकती हुई झालर अत्यंत सुन्दर शोभायुक्त शोभायमान है। समस्त →

→ शोभाओं से परिपूर्ण इस सेज की शोभा अकथनीय अथवा →

स. १२-सेज किनके द्वारा और किस प्रकार सँवारी गयी है? उस सेज पर कौन और क्यों हाथ फिराते हैं?

ज. १२- अपने प्राण प्रियतम के शयन की सेज कोमल दिलवाली सुहागन →

स. १३-श्रीजी साहेबजी सुन्दरसाथ को श्री परमधाम की चर्चा कब-कब सुनाते हैं?

स. १४-इस वक्त धामधनी श्रीजी साहेबजी के आगे आकर कौन भाई, किस विषय की अर्ज करते हैं?

स. १५-वल्लभदास भाई धनी से अर्ज करते हुए क्या कहते हैं?

स. १६-वल्लभदास भाई अन्त में श्रीजी से क्या कराने की कृपा करने की याद दिलाते हैं?

स. १७-पुनः गंगादास भाई आकर श्रीजी साहेबजी से क्या प्रार्थना करते हैं?

स. १८-इस समय सुन्दरसाथ श्रीजी साहेबजी को कहाँ पधारने की कृपा करने की प्रार्थना करते हैं?

स. १९-धामधनी का मन इस वक्त किसमें लगा रहता है? वे सुन्दरसाथ को इस समय क्या अनुभूति कराते हैं?

→ अवर्णनीय है।

→ ब्रह्मात्माएँ बड़े प्रेम से सँवारती हैं। पुनः उस पर तनिक-सा भी तिनका न रहने पाये, इस भाव से विशंभर भाई उस सेज पर हाथ फिराते हैं।

ज. १३- धामस्थ सुन्दरसाथ जो खेल में आये हैं, उन्हें श्रीजी साहेबजी श्री परमधाम की चर्चा आठों पहर अथवा चौंसठ घड़ी अथवा हर क्षण सुनाते हैं।

ज. १४- इस वक्त धामधनी श्रीजी साहेबजी के आगे आकर वल्लभदास भाई उनसे आराम करने के लिए आग्रहपूर्ण अर्ज करते हैं।

ज. १५- वल्लभदास भाई धनी से अर्ज करते हुए कहते हैं, "हे प्राणवल्लभ स्वामीजी! अब विश्राम करने का समय हो गया है।"

ज. १६- वल्लभदास भाई अन्त में श्रीजी को याद दिलाते हुए कहते हैं, ""हे धनी! अब आप शीघ्र ही श्री मूल मिलावे-श्री राजश्यामाजी की चितवनि कराने की कृपा कीजिये।"

ज. १७- पुनः गंगादास भाई आकर इस समय श्रीजी साहेबजी से प्रार्थना करते हैं, ""हे धनी! अब आपके विश्राम करने का समय हो गया है।"

ज. १८- इस समय सुन्दरसाथ श्रीजी साहेबजी को विश्राम करने के लिए सेज पर पधारने की कृपा करने की प्रार्थना करते हैं।

ज. १९- धामधनी का मन इस वक्त चर्चा में लगा हुआ रहता है। वे चर्चा के माध्यम से धाम के सुन्दरसाथ को श्री परमधाम के आनन्द की अनुभूति कराते हैं।

स. २०-समस्त सुन्दरसाथ इस समय कैसे चर्चा श्रवण करते हैं?

स. २१-चर्चा करते-करते यदि कोई श्रोता बीच में कुछ प्रश्न पूछ लेते हैं, तो उस प्रश्न का जवाब धामधनी श्रीजी साहेबजी कैसे देते हैं?

स. २२-इस समय लालदासजी क्या लेकर आते हैं? श्रीजी इस समय किस कार्य में मग्न रहते हैं? दूसरी ओर अन्य सुन्दरसाथ श्रीजी से किस विषय में विनती करते हैं?

स. २३-बार-बार विनय करने पर भी जब चर्चा नहीं रुकती, तब पुनः कौन आकर पुनः प्रार्थना करते हैं?

स. २४-उक्त विनय किसने, किससे और क्यों किया? पुनः वह विनय श्रीजी तक पहुँचाकर अपना कर्तव्य पूरा करने की सेवा कौन करते हैं?

स. २५-इस वक्त गोकुलदास भाई क्या लेकर आते हैं और उसे पढ़कर श्रीजी को सुनाने की सेवा कौन करते हैं?

स. २६-सातवें पहर में कौन श्रीजी को घेरकर खड़े रहते हैं और वे श्रीजी से प्रार्थना करते हुए क्या कहते हैं?

ज. २६- सातवें पहर में सातवें पहर के सेवा के साथी आकर चारों ओर से →

स. २७-इस समय कौन सेवा की प्रतीक्षा में खड़े हैं? पुनः चर्चारस में कौन और कैसे मग्न हैं?

ज. २७- इस समय सातवें पहर की सेवा के साथी शयन कराने की सेवा →

ज. २०- समस्त सुन्दरसाथ इस समय प्रेम से मन लगाकर चर्चा श्रवण करते हैं। यही तो धामस्थ सुन्दरसाथ के समूह की निशानी है।

ज. २१- चर्चा करते-करते यदि कोई श्रोता बीच में कुछ प्रश्न पूछ लेते, तो उस प्रश्न का उत्तर श्रीजी इस तरह स्पष्टतः खुलासा करके उस श्रोता को प्रेम से समझा देते हैं कि वह श्रोता उस प्रश्न की विषय-वस्तु को गहनता से पकड़ लेते हैं।

ज. २२- इस समय श्री लालदासजी कुरान ग्रन्थ में से विभिन्न आयतें ढूँढ़कर लाते हैं। श्रीजी स्वरूप इस वक्त उन आयतों को सुनने में मग्न रहते हैं। दूसरी ओर अन्य सुन्दरसाथ श्रीजी से विश्राम करने के लिए बार-बार विनती करते हैं।

ज. २३- बार-बार विनय करने पर भी जब चर्चा नहीं रुकती, तब जयन्तीदास भाई बीच में आकर पुनः प्रार्थना करते हैं।

ज. २४- उक्त विनय श्री बाईज्यूराज ने श्रीजी साहेबजी से किया, क्योंकि रात बहुत बीत चुकी है। श्री बाईज्यूराज का यह विनय श्रीजी तक पहुँचाकर अपना कर्तव्य पूरा करने की सेवा जयन्तीदास भाई करते हैं।

ज. २५- इस वक्त गोकुलदास भाई हदीसे लेकर आते हैं और उन्हें पढ़कर श्रीजी को सुनाने की सेवा केशवदासजी करते हैं।

→ श्रीजी को घेरकर खड़े हो जाते हैं और विश्राम के लिए श्रीजी से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, "हे प्रियतम! अब बहुत समय हो चुका है। आप विश्राम करने की ओर भी ध्यान दीजिए।"

→ की प्रतीक्षा में खड़े हैं और श्रीजी साहेब से कहते हैं, "हे धनी! आप स्वयं ही विलम्ब कर रहे हैं।" दूसरी ओर अखण्डानन्द प्रदान करनेवाली चर्चारस में समस्त श्रोतागण मूक होकर, मन लगाकर मग्न रहते हैं।

स. २८-उक्त प्रकार बारम्बार विनय करने पर भी समय कहाँ पहुँच चुका? सुन्दरसाथ बारम्बार क्या विनय दोहराते हैं तथा श्रीजी उन्हें जवाब देते हुए क्या कहते हैं?

स. २९-इस समय चर्चा में कौन उपस्थित होते हैं? सुन्दरसाथ इस समय किस तरह चर्चारस में निमग्न हो जाते हैं?

ज. २९- इस समय चर्चा श्रवण के लिए महाराजा छत्रसालजी उपस्थित →

स. ३०-इस समय चर्चा श्रवण के लिए बैठीं श्री बाईज्यू सांकेतिक भाषा में सुन्दरसाथ से श्रीजी से किस कार्य के लिए विनय करने का आग्रह करतीं हैं?

स. ३१-सुन्दरसाथजी की भावना परखकर महामति स्वरूप किस कार्य के लिए तैयार होने लगते हैं?

स. ३२-उठने के पूर्व अन्त में श्रीजी साहेबजी कहाँ के, किस दिव्य स्वरूप का सिंगार वर्णन करके सुनाने लगते हैं?

स. ३३-श्रीजी साहेबजी सुन्दरसाथजी से शयन करते अन्त समय में सुरता कहाँ, किसमें और किस तरह लगाने का आग्रह करते हैं?

ज. ३३- श्रीजी साहेबजी सुन्दरसाथजी से आग्रह करते हुए कहते हैं, "हे →

स. ३४-श्रीजी साहेबजी किस तरह स्वरूप वर्णन कर सुन्दरसाथ से हार्दिक प्रेम करते हैं?

ज. २८- उक्त प्रकार बारम्बार विनय करते-करते आधी रात के भी आगे दो-चार घड़ी और व्यतीत हो चुकी। सुन्दरसाथ इस समय बारम्बार श्रीजी से विश्राम करने का विनय दोहराते हैं और श्रीजी उन्हें मीठे शब्दों में कहते हैं, "विश्वास करो, अब तो उठ ही रहे हैं!"

→ होते हैं। महाराजा छत्रसालजी की उपस्थिति में सुन्दरसाथ अन्य समय की चर्चा की तरह चल-विचल नहीं होते हैं। वे सब महाराजा छत्रसाल की तरह चर्चा में अपनी सुधि भूलकर चर्चारस में निमग्न हो जाते हैं।

ज. ३०- इस समय चर्चा श्रवण के लिए बैठीं श्री बाईज्यू सांकेतिक भाषा में सुन्दरसाथ से श्रीजी से विश्राम करने के लिए विनय करने का आग्रह करती हैं और कहती हैं, "आप सब अब भी किताब हाथ से क्यों नहीं छोड़ रहे हो?"

ज. ३१- सुन्दरसाथजी (श्रोतागण) की भावना परखकर श्रीजी साहेबजी शयन के लिए उठने को तैयार होने लगे।

ज. ३२- उठने के पूर्व अन्त में श्रीजी साहेबजी श्री परमधाम मूल मिलावे के धनी श्री राजश्यामाजी के दिव्य स्वरूप के सिंगार का वर्णन करके सुन्दरसाथजी को सुनाने लगते हैं।

→ सुन्दरसाथजी! आप सब शयन के वक्त अपना ध्यान परमधाम की पाँचवीं भोम में स्थित श्री राजश्यामाजी के शयन कक्ष-रंग परवाली मंदिर में एकाग्र करो। इस तन को भूलकर अपने स्वरूप श्री श्यामाजी का स्मरण करते हुए पाँचवीं भोम में श्री राजजी के साथ शयन करो। "

ज. ३४- श्रीजी साहेबजी बड़े प्रेम से श्री राजश्यामाजी के स्वरूप का वर्णन करके सुन्दरसाथजी से हार्दिक प्रेम करते हैं।

स. ३५-इस वक्त किनकी और कौनसी सेवा पूरी हुई? वे भाई संध्या से लेकर अब तक कौनसी सेवा कर रहे हैं और कैसे?

स. ३६-श्रीजी चर्चा के आसन से उठकर कहाँ जाते हैं और क्यों?

स. ३७-श्रीजी साहेबजी के हाथ पकड़कर सहारा देकर आसन से उठाने की सेवा इस समय कौन करते हैं?

स. ३८-इस समय श्रीजी का दायाँ और बायाँ हाथ पकड़कर सम्मानपूर्वक उठाने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

ज. ३८- इस समय श्रीजी का दायाँ हाथ पकड़कर उन्हें सम्मानपूर्वक उठाने →

स. ३९-इस समय श्रीजी के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा कौन करते हैं?

स. ४०-उक्त पाँवड़े पर श्रीजी साहेबजी कैसी चाल से चलते हैं?

स. ४१-मकरन्ददास भाई श्री प्राणनाथजी को कहाँ तक पहुँचा देते हैं?

स. ४२-मानिक भाई के घर में श्रीजी को सम्मानपूर्वक बैठाने की सेवा कौन करती हैं और मानिक भाई किसके प्रति और क्या दावा लेते हैं?

स. ४३-धामधनी श्री प्राणनाथजी किस लिए हमारा चित्त माया से हटाकर धाम की ओर एकाग्र करते हैं?

ज. ३५- इस वक्त वल्लभदास भाई की परमधाम लीला-वृत गायन करने की सेवा पूरी हुई। वे संध्या से लेकर आधी रात तक परमधाम लीला-वृत गायन करने की सेवा सहज और कोमल मन से कर रहे हैं।

ज. ३६- चर्चा से निवृत्त होने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी उठकर मानिक भाई के घर देह क्रिया, लघुशंका आदि के लिए जाते हैं।

ज. ३७- श्रीजी साहेबजी के हाथ पकड़कर सहारा देकर आसन से उठाने की सेवा इस समय गंगादास भाई करते हैं।

→ की सेवा लालदासजी करते हैं, तो दूसरी ओर बायाँ हाथ पकड़कर लच्छीदास भाई उन्हें उठाते हैं। लच्छीदास भाई की अनुपस्थिति में वही सेवा मकरन्ददास भाई प्रसन्नतापूर्वक करते हैं और आनन्दित होते हैं।

ज. ३९- इस समय श्रीजी के लिए पाँवड़ा बिछाने की सेवा हिम्मत भाई बड़े प्रेम से करते हैं।

ज. ४०- हिम्मत भाई द्वारा बिछाए पाँवड़े पर श्रीजी साहेबजी मीठी बातें करते हुए मनमोहिनी चाल से चलते हैं।

ज. ४१- मकरन्ददास भाई श्री प्राणनाथजी को मानिक भाई के घर तक पहुँचा देते हैं।

ज. ४२- मानिक भाई के घर में श्रीजी स्वरूप को सम्मानपूर्वक आसन पर बैठाने की सेवा गौरबाई करती हैं। यहाँ मानिक भाई श्रीजी से वार्तालाप करते हुए यह दावा लेते हैं, "हम स्वामी श्री प्राणनाथजी की अर्धांग हैं।"

ज. ४३- हम सब धामधनी की अर्धांग आत्माएँ हैं, इसलिए वे हमारा चित्त माया से हटाकर धाम की ओर श्री चरणों में एकाग्र करते हैं।

स. ४४-दिनभर में सुन्दरसाथ में आपस में हुए वाद-विवाद का न्याय श्रीजी कहाँ, किस वक्त चुकाते हैं?

ज. ४४- दिनभर में सुन्दरसाथ में कहीं आपस में हुए वाद-विवाद का न्याय →

स. ४५-मानिक भाई के घर न्याय चुकाने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी कहाँ और किस लिए जाते हैं?

स. ४६-जब श्री प्राणनाथजी अपने पलंग पर आकर विराजमान होते हैं, तब कौनसे सुन्दरसाथ श्रीजी को प्रणाम कर, किस लिए और कहाँ जाते हैं?

ज. ४६- जब श्री प्राणनाथजी शयन के लिए अपनी सेज पर आकर →

स. ४७-इस समय कटोरी में तेल लेकर कौन श्रीजी के पास उपस्थित हुईं?

स. ४८-श्रीजी के सिर की चोटी खोलकर सिर में तेल लगाने की सेवा करनेवाली बाई कौन हैं? तेल मालिश करने की सेवा करते हुए वे श्रीजी से क्या कहतीं हैं?

स. ४९-कौन इस समय घर के वृत्तान्त सहित दिनभर की बातें श्रीजी को सुनातीं हैं? पुनः श्रीजी किन बातों को विशेषकर ध्यान देकर सुनते हैं?

स. ५०-सर्दी के दिनों में श्रीजी के लिए अँगीठी में अँगारे भरकर ले आने की सेवा कौन करते हैं और उन अँगारों से वे क्या करते हैं?

→ श्रीजी चर्चा से निवृत्त होकर मानिक भाई के घर पहुँचते हैं तथा दोनों को बुलवाकर विषय-वस्तु सुनने के पश्चात् निर्णय करके न्याय चुका देते हैं।

ज. ४५- मानिक भाई के घर से कार्य सम्पन्न करने के पश्चात् श्रीजी साहेबजी विश्राम के लिए श्री बंगलाजी लौट आते हैं।

→ विराजमान होते हैं, तब वे समस्त सुन्दरसाथ धनीजी के चरणों में लगकर प्रणाम करके शयन के लिए अपने-अपने बिछौने पर चले जाते हैं, जो डेढ़ पहर रात्रि तक एकाग्रचित्त होकर चर्चा में निमग्न होकर बैठे थे।

ज. ४७- इस समय कटोरी में तेल लेकर प्रतिदिन की तरह गोदावरीबाई श्रीजी के पास उपस्थित हुईं।

ज. ४८- श्रीजी के सिर की चोटी खोलकर सिर में तेल लगाने की सेवा करनेवाली बाई का नाम है - गोदावरीबाई। वे तेल मालिश करते हुए श्रीजी से कहतीं हैं, "हे स्वामी! आपने हमें अच्छा खेल दिखाया।"

ज. ४९- इस समय श्री बाईज्यूराज घर के वृत्तान्त सहित दिनभर की बातें श्रीजी को सुनातीं हैं। श्रीजी घर की विशेष बातों को बड़े ध्यान से सुनते हैं।

ज. ५०- सर्दी के दिनों में श्रीजी के लिए अँगीठी में अँगारे भरकर ले आने की सेवा बिहारीदासजी करते हैं। उन अँगारों को थाल में डालकर मानिक भाई श्रीजी के सेज के ऊपर फिरा देते हैं।

स. ५१-सेज को भली प्रकार से गर्म करने की सेवा किसकी है? अँगीठी के अँगारों द्वारा क्या-क्या गर्म करते हैं? शयन के वक्त श्रीजी को कौन और क्या पहना देते हैं?

स. ५२-इस समय कौन-कौन विदा लेकर अपने-अपने घर लौट जाते हैं?

स. ५३-किन्हें श्री परमधाम की चर्चा सुनकर पूर्ण संतोष प्राप्त होता है और उनके दुःख-संताप दूर हो जाते हैं?

स. ५४-जब श्रीजी विश्राम के लिए पलंग पर लेटे और सुन्दरसाथजी श्रीजी को प्रणाम कर विदा लेते हुए अपने घर लौटने लगे, तब कितना समय हुआ?

स. ५५-इस समय कौनसे समय की वाणी गानेवाली टोली अपनी बारी गाने की सेवा में उपस्थित होने लगी?

स. ५६-कौन भाई इस समय मधुर स्वर में राग अलापते हुए वाणी गाने लगे?

स. ५७-किसके साथी स्वर मिलाकर वाणी गायन करने में मदद करते हैं? पुनः इस समय वाणी गायन की ध्वनि बड़ी भली क्यों लगती है?

स. ५८-किसकी बारी में गाई गई सुमधुर वाणी को महामतिजी ध्यानपूर्वक सुनते हैं?

ज. ५१- धामधनी की सुख-शय्या को भली प्रकार से गर्म करने की सेवा मानिक भाई करते हैं। अँगीठी के अँगारों द्वारा रजाई और चादर को भी भली प्रकार से गर्म किया जाता है। शयन के वक्त सेवा के साथी श्रीजी को कनढपी, गोटा आदि भी गर्म करके पहना देते हैं।

ज. ५२- इस समय मुरलीधर भाई सहित अन्य भी कई साथी प्रणाम कर विदा लेते हैं और अपने-अपने घर लौट जाते हैं।

ज. ५३- धामधनी की सम्बन्धी धामस्थ आत्माओं को श्री परमधाम की चर्चा सुनकर पूर्ण संतोष होता है और उनके त्रितापरूपी दुःख-संताप दूर हो जाते हैं।

ज. ५४- जब श्रीजी विश्राम के लिए सुख-शय्या पर लेटते हुए सर्व सुन्दरसाथजी को प्रणाम कहकर विदा लेने लगे तथा सुन्दरसाथजी भी श्रीजी को प्रणाम कर विदा लेते हुए अपने घर लौटने लगे, तब अढ़ाई पहर रात्रि हो गई अर्थात् रात के डेढ़ बज गये।

ज. ५५- चौबीस घण्टों में गानेवालों की जो चौदह बारी फिरती है, उनमें से रात्रि के डेढ़ बजे के समय में वाणी गायन करनेवाली टोली अपनी बारी गाने की सेवा में उपस्थित होने लगी।

ज. ५६- शेख बदल भाई इस समय मधुरातिमधुर स्वर में राग अलापते हुए वाणी गाने लगे।

ज. ५७- बदले भाई के साथी स्वर मिलाकर उन्हें वाणी गायन करने में सहयोग करते हैं। इस समय सर्वत्र सन्नाटा छा जाने और सुनसान हो जाने के कारण वाणी गायन की ध्वनि बड़ी भली लगती है।

ज. ५८- बदले भाई की बारी में संगीत मण्डली द्वारा गाई हुई मधुर वाणी महामति श्रीजी साहेबजी सोते-सोते मुदित (आनन्दित) मन से ध्यानपूर्वक सुनते हैं।

स. ५९-सातवें पहर के सेवा के साथी उपस्थित होकर क्या करने लगे?

स. ६०-इस समय श्रीजी साहेबजी के पलंग के समीप कौन-कौन बैठते हैं? यह टोली इस समय अपनी किस सेवा द्वारा श्रीजी साहेबजी को सुख प्रदान करती है?

स. ६१-इस समय अन्य सुन्दरसाथ किस लिए श्री बंगलाजी में आकर बैठते हैं?

स. ६२-मानिकबाई श्री बाईज्यूराज की सेज के लिए क्या बिछा देती हैं?

स. ६३-श्री बाईज्यूराज की सेज इस समय कहाँ बिछाई जाती है?

स. ६४-अन्य सुन्दरसाथ इस वक्त क्या करते हैं? पुनः वे इस वक्त शान्तिपूर्वक कार्य क्यों करते हैं?

ज. ६४- अन्य सुन्दरसाथ इस वक्त श्रीजी के पलंग को घेरकर अपने- →

स. ६५-इस समय बहुत से साथी बंगलाजी में ही क्यों रह जाते हैं? यहाँ कौन-कौन भाई चर्चा की आस में बैठे रहते हैं?

ज. ६५- इस समय बहुत से साथी चर्चा सुनने की आस से बंगलाजी में →

स. ६६-इस समय बंगलाजी के किस स्थान पर सुन्दरसाथजी एकत्रित हो जाते हैं?

स. ६७-इसी तरह दैनिक कौन-कौन इस पहर में कुरान-हदीसों की चर्चा करते हैं?

ज. ५९- सातवें पहर के सेवा के साथी अपनी सेवा में उपस्थित होकर अपना-अपना सेवा-कार्य सँभालने लगे।

ज. ६०- इस समय श्रीजी साहेबजी के पलंग के समीप हंसे भाई, केशवदास भाई, दौलत खाँ और साहमन भाई बैठते हैं। यह टोली इस समय बंगलाजी में वाणी गायन द्वारा अपने धनी श्री महामति को सुख प्रदान करती है।

ज. ६१- इस समय अन्य सुन्दरसाथ यहाँ बारी गानेवालों द्वारा गाई जानेवाली मधुर वाणी सुनने के लिए श्री बंगलाजी में आकर बैठते हैं।

ज. ६२- मानिकबाई श्री प्राणनाथजी के पलंग के पास ही श्री बाईज्यूराज की सेज के लिए तलाई-गादी बिछा देती हैं।

ज. ६३- इस समय श्री बाईज्यूराज की सेज श्रीजी की सेज के साथ-साथ सिरहाने की ओर बिछाई जाती है।

→ अपने बिछौने बिछा देते हैं। पुनः श्रीजी की नींद न बिगड़ जाए, इस ध्येय से सुन्दरसाथ चुपचाप शान्तिपूर्वक रहते हैं। किसी के मुख से एक शब्द भी नहीं निकलता।

→ ही रह जाते हैं। कोई बैठे-बैठे चर्चा सुनते हैं, तो कोई सोने के लिए यहीं आ जाते हैं। इस समय जयन्तीदास और मुरलीधर भाई चर्चा करने की आस से यहाँ बैठे रहते हैं।

ज. ६६- इस समय सुन्दरसाथ बंगलाजी में काका की कोठरी के सामने एकत्रित हो जाते हैं।

ज. ६७- इसी तरह प्रतिदिन इस पहर में केशवदासजी और लालदासजी कुरान और हदीसे पढ़कर चर्चा करते हैं।

स. ६८-इस समय चर्चा सुनने के लिए श्रोता के रूप में यहाँ कौन-कौन बैठते हैं?

स. ६९-इस समय यहाँ किस प्रकार की चर्चा होती है, जिसके कारण श्रोताओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली जाती है?

स. ७०-पलंग पर विराजमान श्रीजी साहेबजी क्या जानने के लिए उत्सुक रहते हैं?

स. ७१-सुन्दरसाथजी को चर्चा श्रवण करानेवालों में किन-किन का नाम आता है?

स. ७२-इस समय चर्चा श्रवण करनेवाले श्रोताओं की संख्या कितनी है? पुनः कहाँ से बढ़ते-बढ़ते, यह संख्या कहाँ पहुँच जाती है?

स. ७३-श्रोताओं की जमात इस समय बंगलाजी में किस जगह पर बैठी हुई है?

स. ७४-कैसे-कैसे साथी इस समय चर्चा सुनने आते हैं?

ज. ७४- इस समय सभी प्रकार के श्रोता चर्चा श्रवण के लिए आते हैं। →

स. ७५-इस समय किस वाणी की चर्चा होती है? यह चर्चा पहले कौन करते हैं?

ज. ६८- इस समय चर्चा सुनने के लिए श्रोता के रूप में यहाँ गोकुलदास भाई, बूलचन्द मोदी और सदानन्द भाई सहित अन्य अनेक महिलाएँ भी बैठतीं हैं।

ज. ६९- इस समय यहाँ कभी वाणी पर चर्चा होती है, तो कभी अन्य साक्षी ग्रन्थों पर। इस तरह यहाँ तरह-तरह की चर्चा चला करती है, जिसके कारण श्रोताओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली जाती है।

ज. ७०- पलंग पर विराजमान श्रीजी साहेबजी इस समय यह जानने के लिए उत्सुक रहते हैं कि इस समय कौन-कौन सुन्दरसाथ चर्चा में मग्न होकर बैठे हैं।

ज. ७१- सुन्दरसाथजी को चर्चा श्रवण करानेवालों में शंकरदास भाई, बुधसेन भाई और वल्लभदास भाई आदि का नाम आता है।

ज. ७२- इस पहर में चर्चा श्रवणार्थ बैठे श्रोताओं की संख्या कभी दस, कभी बीस, कभी तीस से बढ़ते-बढ़ते एक समय अस्सी तक भी पहुँच जाती है। उक्त प्रकार बढ़ते-बढ़ते अन्त में तो यह संख्या प्रतिदिन सौ अथवा इससे भी अधिक होने लगी।

ज. ७३- श्रोताओं की जमात इस समय बंगलाजी के दाईं ओर परिक्रमा की जगह में भरकर बैठी हुई है।

→ जैसे कोई-कोई नियमित रूप से आते हैं, तो कोई-कोई कभी आते और कभी नहीं भी आते हैं। अर्थात् आनेवालों में परवाहवाले, मर्यादवाले और पुष्टवाले हैं, तो निष्ठा लेकर सुननेवाले भी हैं।

ज. ७५- इस समय उस वाणी की चर्चा होती है, जो एक बार पहले श्रीजी के मुख से सुनी हो। यह चर्चा पहले श्रीजी स्वरूप करते हैं। उसके बाद चर्चा-की-चर्चा होती है।

स. ७६-सुन्दरसाथ के जमात में से किन पर रीझकर श्रीजी उन्हें फूलहार भेंट करते हैं?

ज. ७६- इस वक्त चर्चा सुनने बैठे सुन्दरसाथ के जमात में से चर्चा श्रवण करने और करानेवालों से रीझकर श्रीजी साहेबजी कभी उन्हें →

स. ७७-मुरलीधर भाई श्रीजी द्वारा भेंट-वस्तु प्राप्त करके क्या करते हैं?

स. ७८-पुनः मुरलीधर भाई श्रीजी द्वारा प्राप्त भेंट-वस्तु क्या समझकर श्रोताओं में बाँट देते हैं?

ज. ७८- पुनः श्रीजी द्वारा प्राप्त प्रसादीरूप भेंट-वस्तु मुरलीधर भाई चर्चा →

स. ७९-इस समय की चर्चा में वक्ता के रूप में कौन-कौन उपस्थित हैं?

स. ८०-उक्त वक्ता सुन्दरसाथ श्रोताओं को किस समय की चर्चा सुनाने की उत्कट अभिलाषा लिये रहते हैं?

स. ८१-इस समय श्री सुन्दरसाथजी के मन में किस विषय की उमंग बनी रहती है?

स. ८२-श्रीजी साहेबजी किन साथियों की कैसी विध (विधि) को सुनकर प्रसन्न होते हैं?

स. ८३-इस वक्त श्री बंगलाजी में कइयों प्रकार की अर्थात् कैसी चर्चा होती है?

→ फूलहार भेंट करते हैं, तो कभी उनके लिए उपहार के रूप में कलँगी भेज देते हैं। विशेषकर चर्चा सुनानेवालों को प्रसादीरूप में फूलहार अथवा कलँगी देकर उनका उत्साह-उमंग और बढ़ा देते हैं।

ज. ७७- मुरलीधर भाई श्रीजी द्वारा भेंट-वस्तु प्राप्त करके श्रीजी साहेबजी के चरणों में बारम्बार प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

→ सुनने के लिए उपस्थित श्रोताओं में यह सोचकर बाँट देते हैं कि यदि ये श्रोतागण सुनने नहीं बैठते, तो मैं थोड़े ही सुना पाता। इसलिए इस प्रसादी के असली हकदार तो ये श्रोतागण ही हैं।

ज. ७९- इस समय की चर्चा में वक्ता-कथाकार के रूप में मुरलीधर भाई, गोकुलदास, केशवदास, दौलत खाँ और कभी-कभी श्री लालदासजी चर्चा का रस प्रदान करने के लिए उपस्थित हैं।

ज. ८०- उक्त वक्ता सुन्दरसाथ श्रोताओं को इस समय अर्थात् सातवें पहर में होनेवाली चर्चा को सुनाने की उत्कट अभिलाषा लिये रहते हैं।

ज. ८१- इस समय श्री सुन्दरसाथजी के मन में अपने धनी श्री प्राणनाथजी से वार्तालाप करने का उमंग हर्षोल्लास बना रहता है।

ज. ८२- श्रीजी साहेबजी चर्चा करनेवाले साथियों के ज्ञान ग्रहण करने, समझने और समझाने की विध (विधि) को सुनकर बड़े प्रसन्न होते हैं।

ज. ८३- इस वक्त श्री बंगलाजी में कइयों प्रकार की अर्थात् आनन्ददायी एवम् विवेकपूर्ण चर्चा होती हैं।

स. ८४-किनकी नश्वर जिह्वा, पुनः किन सुखों का वर्णन करने में असमर्थ है? क्यों?

ज. ८४- श्री बंगलाजी में होनेवाली उक्त प्रकार की विभिन्न आनन्ददायी →

स. ८५-बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ ब्रह्मनिष्ठ मोमिन आत्माओं को संबोधित करते हुए किस चर्चा की महिमा को ध्यान से श्रवण करने के लिए आग्रह करते हैं?

❋ आठवाँ पहर ❋

स. १ - आठवाँ पहर कहाँ से, कहाँ तक है? यह दिन का है या रात का?

स. २ - इस समय श्रीजी साहेबजी कहाँ पर होते हैं और क्या कर रहे होते हैं?

स. ३ - इस वक्त बंगलाजी में गाई जानेवाली ब्रह्मवाणी की ध्वनि कैसी सुनने में आती है?

स. ४- बारी गानेवाले यह अद्वैत ब्रह्मवाणी कैसे स्वर में गाते हैं?

स. ५ - किस वाणी की महिमा को अपार कहा गया है?

→ और विवेकपूर्ण चर्चाओं के माध्यम से प्राप्त होनेवाले शब्दातीत सुखों का वर्णन करने में बीतककार श्री लालदासजी की जिह्वा असमर्थ है क्योंकि वे सुख तो शब्दातीत तथा अकथ्य हैं।

ज. ८५- बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ ब्रह्मनिष्ठ मोमिन आत्माओं को संबोधित करते हुए कहते हैं, "हे ब्रह्मनिष्ठ मोमिन अब इसके उपरान्त आठवें पहर की सेवा का वर्णन होगा। उस सेवा विषय की विशेष चर्चा की महिमा को आप सब ध्यानपूर्वक सुनिये।"

- (प्रकरण ७०, सवाल-जवाब नं. ८५, कुल सं.५१७७+८५ =५२६२)।

❋ आठवाँ पहर ❋

ज. १ - आठवाँ पहर रात्रि के तीन बजे से प्रातः छः बजे तक का है। यह रात्रि का चौथा पहर है।

ज. २ - इस समय श्रीजी साहेबजी श्री बंगलाजी में होते हैं और सुख-शय्या पर विश्राम कर रहे होते हैं। इस वक्त चारों ओर शान्त वातावरण है।

ज. ३ - इस वक्त शान्त वातावरण में श्री बंगलाजी में गाई जानेवाली ब्रह्मवाणी की मधुर ध्वनि अत्यधिक मीठे और उच्च स्वर में गूँजती हुई सुनने में आती है।

ज. ४ - बारी गानेवाले अपनी-अपनी बारी में यह अद्वैत ब्रह्मवाणी मीठे-मधुर स्वर एवम् सुरीली तान में गाते हैं।

ज. ५ - परात्पर ब्रह्मधाम के धामधनी श्रीजी साहेबजी की ब्रह्मवाणी की महिमा को अपार-अगम्य कहा गया है।

स. ६ - यह वाणी कैसे जीवों को भी, किस तरह अविनाशी बना सकती है?

स. ७ - इस अद्वैत ब्रह्मवाणी की शक्ति-सामर्थ्य का अनुभव अथवा पहचान करने की क्षमता किसमें है और किसमें नहीं है?

स. ८ - क्या यह वाणी आज तक ब्रह्माण्ड में कोई सुन पाया था? क्या आज तक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म और ब्रह्मधाम की पहचान करानेवाली कोई ब्रह्मवाणी हुई थी?

ज. ८ - नहीं..... नहीं..... नहीं ! आज तक इस सृष्टि अथवा →

स. ९ - इस वाणी के तेज को सहन करने का सामर्थ्य चौदह लोक ब्रह्माण्ड के अन्दर सर्वस्व पद प्राप्त करनेवाले किन-किन योद्धाओं में भी नहीं है?

स. १०-कहाँ का अखण्ड आनन्ददायी वाणीरूपी सागर बंगलाजी में दैनिक हिलोरे लिया करता है?

स. ११-इस ब्रह्मवाणी की ओर कौनसी अथवा कैसी जीवात्माएँ ध्यान नहीं देतीं?

स. १२-इस आत्मीय अद्वैत वाणीरूपी रस का पान कौन करते हैं और किसे इसकी पहचान तक नहीं हो पाती?

ज. १२- अक्षरातीत अखण्ड ब्रह्मधाम से आई हुई ब्रह्मनिष्ठ ब्रह्मात्माएँ ही इस आत्मीय अद्वैत वाणीरूपी रस को कोने में बैठे-बैठे निरन्तर पीती रहतीं हैं। उन्हें इस वाणी द्वारा जो आनन्द और चैन मिलता →

ज. ६ - यह अद्वैत ब्रह्मवाणी अस्तित्त्वहीन मायावी जीवों को भी अस्तित्त्वयुक्त बनाकर अखण्ड में अविनाशी बना सकती है।

ज. ७ - इस अद्वैत ब्रह्मवाणी की शक्ति-सामर्थ्य का अनुभव अथवा पहचान करने की क्षमता ब्रह्मधाम की ब्रह्मात्माओं में ही है। उनके अलावा अन्य किसी में भी नहीं है।

→ ब्रह्माण्ड में कोई भी यह ब्रह्मवाणी नहीं सुन पाया था । जब सृष्टि के बड़े पञ्चवासनाओं को भी यह ब्रह्मवाणी सुनने नहीं मिली, तो अन्य की तो बात ही क्या करना? पुनः इस अद्वैत ब्रह्मवाणी-बेशक इलम के अलावा आज तक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म और ब्रह्मधाम की पहचान करानेवाली कोई ब्रह्मवाणी नहीं हुई।

ज. ९ - इस अद्वैत ब्रह्म की ब्रह्मवाणी के तेज को सहन करने का सामर्थ्य चौदह लोक ब्रह्माण्ड के अन्दर संसार के स्वामी सर्वस्व पद प्राप्त करनेवाले योद्धाओं जैसे-त्रिदेवा-ब्रह्मा, विष्णु, महेश में भी नहीं है, तो चौदह लोक ब्रह्माण्ड के इन बड़कों के अलावा किसका नाम लें?

ज. १०- श्री अक्षरातीत अखण्ड ब्रह्मधाम का आनन्ददायी ब्रह्मवाणीरूपी सागर रात-दिन बंगलाजी में अखण्डरूप से हिलोरे लिया करता है।

ज. ११- इस अखण्ड अद्वैत वाणी की गर्जना की ओर अनधिकारी मायावी जीवात्माएँ ध्यान नहीं देतीं क्योंकि उनका मन निरन्तर उनसे सम्बन्धित नाचीज वस्तुओं पर ही लगा रहता है।

→ है, उसे वे ही जानते हैं। परलोक से खेल में आई दोनों-ब्रह्मात्माओं और ईश्वरी आत्माओं की जमात के अलावा अन्य मायावी नश्वर जीव इसे पहचान भी नहीं पाते। कदाच उनके कानों तक यह वाणी पहुँच भी गई, तो भी उन्हें इस रसामृत का स्वाद आने के बदले नींद आती है और वे उस चर्चा-कथा से उठकर चले जाते हैं।

स. १३-इस ब्रह्मवाणी का ज्ञान लेने पर क्या लाभ होता है और न लेने पर कैसी हानि होती है?

ज. १३- इस ब्रह्मतारक तारतम वाणी का ज्ञान लेने पर जीवात्माएँ भी पवित्रातिपवित्र बनकर अखण्ड अविनाशी सुख की अधिकारी →

स. १४-यह अखण्ड वाणी ऐसे संसार के बीच में लाने की कृपा किसने और किसके लिए की?

ज. १४- अक्षरातीत अद्वैत ब्रह्मधाम से ब्रह्मतारक महामंत्ररूपी वाणी इस →

स. १५-किस सामर्थ्यवान् स्वामीजी के प्रताप से संसार में तारतम वाणी का अवतरण हुआ?

स. १६-ब्रह्मतारक तारतम वाणी के रहस्य की महिमा का ज्ञान जिसे हुआ, वे क्या करेंगे?

ज. १६- जिन-जिन आत्माओं को इस ब्रह्मतारक तारतम वाणी के रहस्य →

स. १७-किन आत्माओं का एक क्षण भी वाणी सुने बिना निरर्थक नहीं जायेगा?

स. १८-जिन्हें इस वाणी का नशा चढ़ गया, उन्हें अन्य वाणी कैसी लगती है?

ज. १८- जिन विचार-विवेकशील आत्माओं को इस वाणी का नशा चढ़ →

स. १९-कैसी आत्माएँ एक-दूसरे के समीप बैठकर ध्यान से वाणी श्रवण करतीं हैं?

→ बन जाती हैं। हमेशा के लिये आवागमन का उलटा चक्कर छूट जाता है। पुनः यह वाणी लिये बिना कोई भी मायावी खेल के जन्म-मरण के चक्करस्वरूपी दुःख से कभी छुटकारा नहीं पा सकता। बारम्बार जन्म-मरणरूपी चक्कर में पड़कर त्रितापरूपी दारुण दुःख उठाते-भोगते ही रहना पड़ता है।

→ नश्वर संसार के बीच में लाने की कृपा श्री श्यामाजी अवतार अथवा बुद्ध अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी ने अक्षरातीत धामस्थ ब्रह्मात्माओं के ऊपर की है। यह मेहेर विशेषकर इन ब्रह्मात्माओं के लिए ही हुई है।

ज. १५- सामर्थ्यवान् स्वामी निजानन्द श्री देवचन्द्रजी के प्रताप से संसार में तारतम वाणी का अवतरण हुआ।

→ की महिमा की जानकारी हो जाएगी, वे एक क्षण-एक पल भी यह वाणी श्रवण किये बिना निरर्थक नहीं जाने देंगी। वह ज्ञानी ब्रह्मवाणी के पठन, श्रवण, मनन द्वारा ब्रह्मानन्द के सागर में स्नान करता रहता है। उसे फिर और कुछ प्रिय नहीं लगता।

ज. १७- जिन ज्ञानी और समझदार आत्माओं ने अन्य वाणी और तारतम वाणी के बीच की भिन्नता की जानकारी प्राप्त कर ली, वे अपने जीवन का एक क्षण भी श्रवण, मनन बिना निरर्थक नहीं जाने देंगे।

→ गया, वे ज्ञानी समझदार राजहंसरूपी आत्माएँ ब्रह्मधाम के पचीस पक्षरूपी मानसरोवर में घूमती-फिरती रहेंगी। उनके लिए अन्य वाणी तो कौवे के तीर्थ सदृश साबित होगी।

ज. १९- पचीस पक्षरूपी मानसरोवर मे घूमने-फिरनेवाली ब्रह्मात्माएँ एक-दूसरे के समीप बैठकर ध्यान से वाणी श्रवण करतीं हैं।

स. २०-जो आत्माएँ रात-दिन वाणी श्रवण करतीं हैं, उन्हें वाणी के माध्यम से क्या पहचान होने लगती है?

स. २१-अक्षरातीत ब्रह्मधाम की आत्माओं को इस वाणी के द्वारा किसके अस्तित्त्व एवं सत्ता के प्रति दृढ़ विश्वास होने लगता है?

स. २२-यह तारतम वाणी कहाँ की है और समस्त आत्माओं को कहाँ बैठा देती है?

ज. २२- यह तारतम वाणी हद, बेहद अर्थात् अक्षर परे अक्षरातीत ब्रह्मधाम →

स. २३-यह वाणी सुनने मात्र से सुननेवालों को क्या प्राप्त होता है?

स. २४-संसार के बीच में रहते हुए भी इस वाणी के प्रताप से हमारी दृष्टि कहाँ पहुँच जाती है?

स. २५-यह ब्रह्मवाणी किसकी रसना है? यह वाणी किसके प्रेमरस का पान कराती है?

स. २६-ब्रह्मानन्द और ब्रह्मसृष्टि के बीच की बातों को किस वाणी से जाना जाता है?

स. २७-जो ज्ञान कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है, वह ज्ञान यहाँ सर्वात्माओं को किस वाणी द्वारा हुआ?

ज. २०- जो आत्माएँ रात-दिन वाणी श्रवण करतीं हैं, उन्हें वाणी के माध्यम से अपने आत्मा की पहचान होने लगती है।

ज. २१- अक्षरातीत ब्रह्मधाम की आत्माओं को इस वाणी के द्वारा एक अद्वैत परमात्मा के अस्तित्त्व एवं सत्ता के प्रति दृढ़ विश्वास होने लगता है।

→ की है। यह तारतम वाणी जीवात्माओं को बेहद के मुक्तिस्थान में, ईश्वरी आत्माओं को अक्षर धाम में और ब्रह्मात्माओं को अक्षरातीत धाम के अंदर स्थित मूल मिलावे में बैठा देती है।

ज. २३- यह ब्रह्मतारक तारतम महामंत्राधार ब्रह्मवाणी सुनने मात्र से सुननेवालों को सत्, अखण्ड-अविनाशी सुख प्राप्त होता है और उनकी सभी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती हैं।

ज. २४- संसार में नश्वर पञ्चभौतिक शरीर में होते हुए भी इस वाणी के प्रताप से बातुनी (दिव्य) दृष्टि द्वारा हमारा ध्यान अक्षरातीत श्री परमधाम के चारों ओर ऊपर, तले, माहें, बाहर घूमने-फिरने लगता है।

ज. २५- यह ब्रह्मतारक तारतम वाणी श्री श्यामाजी की रसना (जबान) है। यह वाणी हर तरह से ब्रह्मात्माओं-धनी की अंगनाओं को परब्रह्म परमात्मा अर्थात् अपने माशूक के प्रेमामृत का पान कराती है।

ज. २६- ब्रह्मानन्द और ब्रह्मसृष्टि के बीच की अन्तरंग बातों को तारतम के तारतमरूप वाणी द्वारा आत्मा में अविकल्परूप से जाना जाता है।

ज. २७- ब्रह्मधाम के अंदर की जिन गोप्यातिगोप्य बातों का कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को भी ज्ञान नहीं है, वे गूढ़ातिगूढ़, रहस्यमय बातें इस तारतम वाणी के माध्यम से यहाँ तीनों सृष्टियों को पूरी तरह से ज्ञात हुई।

स. २८-"जो अक्षर को सुध नहीं" वह त्रिदेवा को कैसे हो? परंतु वह सुध यहाँ जीवों को किसके प्रताप से प्राप्त हुई?

ज. २८- आशिक और माशूक के बीच की जिन गोप्यातिगोप्य बातों की →

स. २९-इस तारतम वाणी के प्रताप से स्वप्निक जीवों की अस्तित्त्वहीन दृष्टि कहाँ-से-कहाँ पहुँच गई और क्या करने लगी?

स. ३०-स्वप्नद्रष्टा की नींद टूटते ही अपना अस्तित्त्व और संसार की सुध खो बैठनेवाली जीवात्माओं ने इस वाणी द्वारा क्या प्राप्त कर लिया?

स. ३१-ऐसी जीवात्माएँ इस वाणी के प्रताप से क्या-क्या देखने लगीं?

स. ३२-अक्षर ब्रह्म का नूरी फरिश्ता कौन है, जो यमुनाजी पार नहीं कर सका?

स. ३३-इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से श्री यमुनाजी को उलंघकर सात घाट तक कौन पहुँच सके?

ज. ३३- जहाँ-जिस यमुनाजी को पार कर अक्षर ब्रह्म का नूरी फरिश्ता →

स. ३४-इस वाणी के आधार पर मायावी जीव भी क्या-क्या उलंघकर कहाँ पहुँच गये?

→ सुध कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को भी नहीं है, वह त्रिदेवा को कैसे हो परंतु उन गूढ़ातिगूढ़ रहस्यमय बातों की सुध यहाँ अस्तित्त्वहीन मायावी जीवों को श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरुजी के प्रताप अथवा दया से हुई।

ज. २९- श्री श्यामाजी अवतार सद्गुरु श्री देवचन्द्रजी की दया के फलस्वरूप इस वाणी के प्रताप से स्वप्निक अस्तित्त्वहीन जीवों की दृष्टि भी नश्वर संसार के इस क्षणभंगुर शरीर द्वारा अक्षर-अक्षरातीत धाम में पहुँचकर पचीस पक्ष के थंभ, गली आदि गिनने लगी।

ज. ३०- स्वप्नद्रष्टा अक्षर ब्रह्म की नींद टूटते ही अपना अस्तित्त्व और संसार की सुध खोकर उड़ जानेवाली जीवात्माओं ने भी इस वाणी के प्रताप से सच्चिदानन्दमय गुणयुक्त मुक्तिस्थानों (बहिश्तों) में अमरत्व प्राप्त कर लिया।

ज. ३१- तारतम वाणी के प्रताप से नाशवन्त नश्वर जीवों की दृष्टि भी श्री परमधाम में पहुँचकर अक्षर-अक्षरातीत धाम के दर्शन करने लगीं और वहाँ के एक-एक पदार्थों की जानकारी लेने लगीं।

ज. ३२- अक्षर ब्रह्म का नूरी फरिश्ता जबराईल है, जो यमुनाजी भी पार कर आगे नहीं जा सका। यह फरिश्ता मुसलिम धर्म के जानकारों में बड़े में बड़ा फरिश्ता है।

→ जबराईल आगे नहीं जा सका, वहाँ इमाम मेहदी श्री प्राणनाथजी की कृपा से वे मायावी जीव, जिन्हें अस्तित्त्वहीन कहा जाता है, श्री यमुनाजी पार कर सात घाट सहित पचीस पक्ष का मनन करने लगे।

ज. ३४- इस वाणी के आधार पर अथवा इसके माध्यम से ब्रह्म-ईश्वरी की तो बात ही क्या, जीवसृष्टि भी हद, बेहद, अक्षर धाम, श्री यमुनाजी, सात घाट को उलंघकर अक्षरातीत धाम के प्रत्येक भोम के थंभ और गलियों का मनन करने लगे।

स. ३५-महामति की रसना अर्थात् तारतम के तारतम वाणी को सुनते ही कहाँ के और किनके दर्शन होते हैं?

ज. ३५- महामति की रसना से प्रकट तारतम के तारतम वाणी को सुनते →

स. ३६-उक्त वाणी के प्रताप से किनकी आत्मा परात्मा में पहुँच जाती है? पुनः किनके अंदर की अज्ञान की रात्रि मिट जाती है?

ज. ३६- उक्त वाणी के प्रताप से ब्रह्मात्माओं को उनकी परात्मा के प्रत्यक्ष →

स. ३७-इस वाणी को सुनकर समझ लेने से आत्मा इसी संसार के बीच ही क्या बन जाती है?

स. ३८-मायावी जीवात्माएँ भी इस वाणी के प्रताप से यहीं बैठे-बैठे क्या-क्या देखने लगीं?

ज. ३८- मायावी अस्तित्त्वहीन जीवात्माएँ भी इस वाणी के प्रताप से इस संसार में बैठे-बैठे ही हद का क्षेत्र उलंघकर बेहद के चतुष्पाद →

स. ३९-इस वाणी के प्रताप से मायावी जीवात्माओं के लिए कहाँ के द्वार खुल जाते हैं और वे अन्य जीवात्माओं के लिए भी क्या कर सकतीं हैं?

ज. ३९- इस वाणी के प्रताप से मायावी जीवात्माओं के लिए आठ प्रकार →

स. ४०-तारतम वाणी को सुनने से किस-किस के प्रति कोई संदेह नहीं रह जाता?

ज. ४०- तारतम वाणी सुनने से ब्रह्म और ब्रह्मधाम के प्रति, आत्मा और →

→ ही परमधाम के पचीस पक्षों के दर्शन होने लगते हैं। जिन आत्माओं में धनी की वाणी के प्रति पूर्ण श्रद्धा-विश्वास तथा प्रेम है, उन्हें सब कुछ प्रत्यक्ष हो जाता है।

→ दर्शन-पर्शन हो जाते हैं। ईश्वरी आत्माओं को भी अपने स्वरूप तथा धाम के दर्शन हो जाते हैं। मायावी जीवों के अंदर की अज्ञान की रात्रि मिट जाती है और उन्हें भी आठ प्रकार के मुक्तिस्थानों (बहिश्तों) के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाते हैं कि हमें इस मुक्तिस्थान (बहिश्त) में मुक्ति प्राप्त हुई है।

ज. ३७- इस तारतम वाणी को सुनकर समझ लेने से आत्मा इसी संसार के बीच होते हुए ही आवागमन को उलंघकर बेहद के सच्चिदानन्दमय सुख की अधिकारी-पात्र बन जाती है।

→ विभूतियों सहित अखण्ड ब्रज और रास का दर्शन करने लगेंगी और अक्षर परे अक्षरातीत की उन बातों की जानकारी भी रखने लगेंगी, जिनकी जानकारी कूटस्थ अक्षर ब्रह्म को जागृत में भी नहीं है।

→ के सच्चिदानन्दमय मुक्तिस्थानों के द्वार खुल जाते हैं और वे अविकल्परूपेण अपनी आत्मा में चौकस (दृढ़) कर लेते हैं तथा वे अन्य जीवात्माओं को भी अक्षर और अक्षरातीत धाम के दर्शन करा देते हैं।

→ परमात्मा के प्रति, माया और ब्रह्म के प्रति, हद और बेहद के प्रति तथा नाशवन्त और अविनाशी क्षेत्र के प्रति कोई संदेह अथवा शंका-उपशंकाएँ नहीं रह जातीं।

स. ४१-इस वाणी की छत्र-छाया के तले संसार में रहते हुए भी कैसे रह सकते हैं?

ज. ४१- इस वाणी की छत्र-छाया शीतल और सुखदायी है। अतः इस →

स. ४२-आज तक किन्हें और कौनसे ज्ञान की प्राप्ति नहीं हुई थी, जिसकी प्राप्ति उन्हें इस वाणी के प्रताप से हुई?

ज. ४२- आज तक क्षर पुरुष-आदिनारायण की सृष्टि में त्रिदेवों को भी सृष्टि की शुरूआत से ब्रह्मतारक तारतम ज्ञान की प्राप्ति नहीं →

स. ४३-इस दिव्य वाणी-ज्ञान को प्राप्त करने के सर्वप्रथम अधिकारी कौन हुये?

ज. ४३- दिव्य ब्रह्मधाम की इस दिव्य वाणी-ज्ञान को प्राप्त करने के →

स. ४४-यह दिव्य वाणी सर्वप्रथम किसे और किसके द्वारा प्राप्त हुई? अन्य को किसके माध्यम से मिल रही है?

ज. ४४- ब्रह्मधाम से आई यह दुर्लभातिदुर्लभ तारतम वाणी सर्वप्रथम श्री श्यामाजी अवतार रूह अल्लाह के प्रथम जामे द्वारा ब्रह्मधाम की →

स. ४५-यह दिव्य वाणी बारी-बारी से स्वप्निक संसार में किन-किन को, क्या प्रदान करनेवाली है? पुनः इस ब्रह्मज्ञानरूपी वाणी का विस्तार कहाँ तक होनेवाला है?

ज. ४५- यह दिव्य ब्रह्मवाणी स्वप्निक संसार में क्रमशः बारी-बारी से ब्रह्म, →

स. ४६-अभी अक्षर ब्रह्म किस अवस्था में हैं और क्या कर रहे हैं? वे प्रसन्नचित्त होकर इस स्वप्नवत् संसार को जागृतावस्था में कब परिवर्तित करेंगे?

→ वाणी की छत्र-छाया के तले संसार में रहते हुए भी आत्माएँ आनन्द-मंगल के साथ हमेशा क्षण-क्षण, पल-पल आत्मा-परात्मा के ज्ञान और प्रेम में *"संतोषं परं सुखम्"* रूप से छकी रहेंगी।

→ हुई थी। अन्य की तो बात ही क्या करना, जब सृष्टि के महारथियों-पंचदेवों को भी अप्राप्य है। अब वि. सं. १७३५ से उनका नसीब खुल गया और उन्हें सुनने, विचार-विवेककर मनन करने तथा आत्मोद्धार करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

→ सर्वप्रथम अधिकारी उस धाम की ब्रह्मात्माएँ हुईं क्योंकि वे आद-अनाद से ही इस ज्ञान की अधिकारी-पात्र हैं। अतः उन्हें यह ज्ञान स्वतः ही मिल गया।

→ ३१३ ब्रह्मात्माओं को मिली। पुनः उनके दूसरे जामे-महामति श्रीजी साहेब स्वरूप से तीनों सृष्टियों का नसीब खुल गया। तीनों सृष्टि की आत्माएँ अपनी-अपनी पात्रतानुसार इस अमृतमयी वाणीरस का पान कर रही हैं।

→ ईश्वरी और जीवात्माओं का आवागमन छुड़ाकर अखण्ड में कायम-अमर करनेवाली है। इस ब्रह्मवाणी का प्रचार-प्रसार सृष्टि के अन्त महाप्रलय तक है। पहली बारी ब्रह्मात्माओं की है, दूसरी बारी मुमुक्षु अर्थात् ईश्वरी आत्माओं की है और तीसरी बारी जीवात्माओं की है।

ज. ४६- अभी अक्षर ब्रह्म फरामोशी के आधार पर स्वप्नावस्था में हैं और स्वप्न देख रहे हैं। जब वे स्वप्नावस्था से जागृत होकर फरामोशी से मुक्त होंगे, तब प्रसन्नचित्त होकर इस स्वप्नवत् संसार को →

→ जागृतावस्था में परिवर्तित कर स्मरण करेंगे तथा ब्रह्मात्माएँ और ईश्वरी आत्माएँ अपने-अपने धाम में अपनी परात्मा में उठेंगी →

स. ४७-आठ प्रकार के मोक्षस्थान कहाँ-किस प्रकार हैं?

ज. ४७- आठ प्रकार के मुक्तिस्थान बेहद भूमिका में अक्षर ब्रह्म के देश में हैं। उत्क्रम से जाते प्रथम मुक्तिस्थान अव्याकृत के स्थूल में पर प्रणव धाम की बाईं ओर है, जिसे जग्जीवों का मुक्तिस्थान (आम खलक बहिश्त) कहते हैं। यह आखर के स्वरूप का दिया हुआ मुक्तिस्थान है।

दूसरा मुक्तिस्थान अव्याकृत के कारण में इच्छाशक्ति सात शून्य की बाईं ओर है, जिसे ऋषि-महर्षियों का मुक्तिस्थान (पैगम्बरी बहिश्त) कहते हैं। यह भी आखर के मुहम्मद की देन है।

तीसरा मुक्तिस्थान भी अव्याकृत के महाकारण मण्डल के सूक्ष्म पाद में चार द्वीप की बाईं ओर है, जिसे नित्य वैकुण्ठ का मुक्तिस्थान (मलकूती बहिश्त) कहते हैं। यह अव्वल के मुहम्मद की देन है।

चौथा मुक्तिस्थान सबलिक ब्रह्म के कारण में अखण्ड ब्रज की बाईं ओर है जिसे *"दो मिस्त अव्वल लैलमें"* से ब्रज का मुक्तिस्थान अथवा हूद तूफान का मुक्तिस्थान कहा जाता है। →

स. ४८-इस वाणी के प्रताप से अक्षर ब्रह्म जागृत होने के पश्चात् कहाँ की-किन लीलाओं का अनुभव करने लगेंगे?

स. ४९-तारतम वाणी का तेज कैसा है और वह कहाँ-कहाँ का ज्ञान कराते हुए, अंत में कहाँ तक का ज्ञान कराता है?

ज. ४९- तारतम वाणी का तेज अपरम्पार है। इस तेज ने पाताल से लेकर सभी स्थानों का निर्णय कर दिखाते-दिखाते हद का क्षेत्र पार →

➞ एवम् सृष्टि की जीवात्माएँ भी अष्ट बहिश्तों में कायम हो जायेंगीं। सृष्टि में कुछ भी शेष नहीं रह जाएगा।

➞ यह अव्वल के मुहम्मद की देन है।

पाँचवाँ मुक्तिस्थान सबलिक ब्रह्म के महाकारण में अखण्ड महारास की बाईं ओर है, जिसे *"दी मिस्त अव्वल लैल में"* से महारास का मुक्तिस्थान अथवा नूह तूफान का मुक्तिस्थान कहते हैं। यह अव्वल के मुहम्मद की देन है।

छठाँ मुक्तिस्थान सबलिक ब्रह्म के निर्मल चेतन में (शास्त्रीय पक्ष से) अथवा केवल ब्रह्म में (वाणी द्वारा निश्चित) है। इसे तृतीय श्याम स्वरूप का मुक्तिस्थान (मुहम्मदी बहिश्त) कहते हैं। यह अव्वल के स्वरूप की देन है।

सातवाँ मुक्तिस्थान सत्स्वरूप के महाकारण के बाईं ओर है, जिसे ईश्वरी सृष्टि के अधिष्ठात्री जीवों का मुक्तिस्थान (मलायकी बहिश्त) कहते हैं। यह आखर के स्वरूप की देन है।

आठवाँ मुक्तिस्थान सत्स्वरूप के निर्मल चेतन में है, जिसे ब्रह्मसृष्टियों की सुरताओं के अधिष्ठात्री जीवों का मुक्तिस्थान (मोमिन रूहों के प्रतिभासिक की बहिश्त) कहते हैं। यह आखर के स्वरूप की देन है।

ज. ४८- इस वाणी के प्रताप से अक्षर ब्रह्म जागृत होने के पश्चात् अक्षरातीत श्री रंगमहल के अन्दर की अर्थात् अन्तःपुर (अंतरंग) की लीलाओं का अनुभव करने लगेंगे।

➞ किया। तत्पश्चात् यह तेज बेहद स्थित अखण्ड व्रज और रास लीला सहित अष्ट प्रकार के मुक्तिस्थानों का निर्णय करते हुए आगे बढ़ा तथा अंत में परलोक की राजधानी पचीस पक्ष में से एक-एक पक्ष का ज्ञान करा दिया। इतना ही नहीं, इस तेज ने अक्षरातीत ब्रह्मधाम की ब्रह्मलीलाओं का भी ज्ञान करा दिया।

स. ५०-यह तारतम वाणी ब्रह्मधाम और ब्रह्मलीला के विषय में क्या स्पष्टतः कहती है?

स. ५१-यह वाणी इस ब्रह्मधाम के दायें-बायें तथा आगे-पीछे, चारों ओर स्थित किन-किन स्थानों का वर्णन कर देती है?

ज. ५१- यह वाणी ब्रह्मधाम श्री रंगमहल के दायें, दक्षिण में स्थित बट-पीपल की चौकी, कुंज-निकुंज वन, हौज कौसर ताल, चौबीस हाँस का महल, माणिक पहाड़ और बायें, उत्तर में स्थित पुखराज →

स. ५२-ब्रह्मधाम श्री रंगमहल की दक्षिण दिशा में क्या-क्या है? पुनः उत्तर दिशा में क्या-क्या है?

स. ५३-अद्वैत ब्रह्मधाम श्री रंगमहल के चारों ओर दूर-दूर में गोलावृतरूप में क्या-क्या फिरे हुए हैं?

ज. ५३- अद्वैत ब्रह्मधाम श्री रंगमहल से लगभग साढ़े तेरह लाख योजन →

स. ५४-आठों सागर रंगमहल के कहाँ-कितनी दूरी पर स्थित हैं? सागरों के मध्य भाग की रचना-बनक कैसी है? यह सब वर्णन किसके प्रताप से जाना जाता है?

ज. ५४- आठों सागर रंगमहल की पाँचवीं भोम में स्थित मध्य के रंग →

स. ५५-उस अक्षरातीत ब्रह्मधाम-परमधाम में क्या-क्या है? उसे पुराण और कुरान किन-किन नामों से पुकारते हैं? पुनः इन उभय पक्षों का समन्वयात्मक ज्ञान कहाँ है?

ज. ५०- यह तारतम (ब्रह्म) वाणी अक्षरातीत ब्रह्मधाम श्री रंगमहल की नौ भूमिकाओं सहित इन नवों भूमिकाओं में कैसी-कैसी लीलाएँ होती हैं, इन बातों को भी स्पष्टतः समझा देती है।

→ पर्वत एवम् उत्तर की घाटी का वर्णन कर देती है। पुनः निजधाम श्री रंगमहल के आगे अर्थात् सामने स्थित सातों घाट, श्री यमुनाजी, दोनों पुल महल, अक्षर धाम की तरफ के सात घाट और अक्षर धाम तथा पश्चिम की फूलबाग, नूरबाग, अन्नवन, दूबदुलीचा, पश्चिम की चौगान सहित जवेर की नहर, माणिक पहाड़ की हद, वन की नहर, छोटी रांग और बड़ी रांग सहित आठों सागर इत्यादि का भी स्पष्टतः वर्णन कर समझा देती है।

ज. ५२- यह वाणी रंगमहल की उत्तर दिशा में लाल चबूतरा से लेकर जवेरों की नहर तक का वर्णन करती है, तो दक्षिण दिशा में स्थित बट-पीपल की चौकी से लेकर जवेरों की नहर तक का वर्णन करती है।

→ (कोस) की दूरी पर चारों ओर गोलावृतरूप में सर्वप्रथम जवेरों की नहर फिरी है। उसके पश्चात् क्रमशः माणिक पहाड़ की हद, वन की नहर, चार हार हवेली (छोटी रांग) और बड़ी रांग की हवेलियों सहित अष्ट सागर और अष्ट क्षितियाँ फिरी हुई हैं।

→ परवाली मंदिर से लगभग सोलह करोड़ छाछठ लाख छः हजार योजन की दूरी पर जगमग-जगमग जगमगा रहे हैं। हर सागर के बीच के तीसरे हिस्से में जलजवत् बारह हजार महलों की बारह हजार हारें अर्थात् कुल चौदह करोड़ चालीस लाख हवेलियाँ सौरभ बढ़ा रही हैं। इन सब बातों की जानकारी तारतम वाणी के प्रताप से जानी जाती है।

ज. ५५- उक्त अक्षरातीत ब्रह्मधाम-श्री परमधाम में हिन्दू शास्त्र के अनुसार पचीस पक्ष हैं, जिसमें अद्वैत ब्रह्मानन्द स्वरूप श्री युगलजोड़ी-श्री राजश्यामाजी और द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माएँ रहती हैं। उक्त तीन स्वरूप और अक्षर ब्रह्म तथा उनकी अर्धांग लक्ष्मीजी सहित →

→ अद्वैत ब्रह्म के इन पाँचों स्वरूपों को एक अद्वैत स्वरूप कहा जाता है। उक्त प्रकार से उभय पक्षों के धर्मग्रन्थों में उक्त बातें →

स. ५६-श्री राजश्यामाजी और ब्रह्मात्माओं अथवा हक, हादी और रूहों की पचीस पक्ष की विहार-लीला का वर्णन किस वाणी में है?

ज. ५६- चौथे आसमान श्री परमधाम-ब्रह्मधाम में रहनेवाले श्री राजश्यामाजी तथा ब्रह्मात्माओं को वेद-शास्त्रादि उक्त कथित →

स. ५७-किन आत्माओं को और कहाँ ब्रह्म के मित्र और "औलिया लिल्ला" कहा है?

ज. ५७- श्री अक्षरातीत ब्रह्म और ब्रह्मधाम की ब्रह्मात्माओं को श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कन्ध में *"यन्मित्रं परमानन्दं* →

स. ५८-ये ब्रह्ममुनि उस धाम में कब से, कब तक रहते हैं? इस ज्ञान की निर्णयात्मक समझ कहाँ-कहाँ और किस वाणी में है?

ज. ५८- ये ब्रह्ममुनि-मोमिन आत्माएँ उस अक्षरातीत ब्रह्मधाम में →

स. ५९-इस तारतम वाणी ने किन-किन बातों का स्पष्टतः उल्लेख किया है?

स. ६०-इस वाणी को संसार में अपनाने और समझनेवालों को किस प्रकार सहारा मिलता है?

ज. ६०- इस वाणी को अपनाने और समझनेवाले इस वाणी के प्रताप से हमेशा के लिए त्रितापरूपी दुःखों से दूर हो जाते हैं और आवागमन →

→ स्पष्टतः वर्णन की गई हैं। पुनः इन उभय पक्षों का समन्वयात्मक ज्ञान इस तारतम वाणी में मिलता है।

→ नाम से पुकारता है, तो कुरान-हदीसों में इन्हीं को हक, हादी और रूहों के नाम से पुकारा गया है। उक्त आत्माओं-रूहों का क्रीड़ा-स्थल परलोक की राजधानी पचीस पक्ष है। आत्माओं की इस विहार-लीला के ज्ञान की गर्जना निशदिन इस तारतम वाणी द्वारा होती रहती है।

→ *पूर्ण ब्रह्म सनातनम्''* कहा गया है और उपनिषदादि में ब्रह्म के मित्र कहा है। पुनः कुरान-हदीसों में इन्हें ही खुदा का दोस्त- *''औलिया लिल्ला''* कहा है। ये अनादि काल से ही श्री परमधाम में रहते हैं।

→ आदिकाल से लेकर अनादिकाल तक अर्थात् जब से ब्रह्म हैं और जब तक ब्रह्म रहेंगे, तब तक ब्रह्म के साथ ही रहेंगी। इस बात की निर्णयात्मक समझ श्री तारतम वाणी में है और साक्षियाँ वेद और कुरान दोनों पक्षों में हैं।

ज. ५९- इस तारतम वाणी ने परमधाम के परमात्मा ब्रह्म की परमसत्ता, उनकी महिमा और उनकी साहेबी का अविकल्प और स्पष्टतः उल्लेख किया है।

→ रहित मुक्तिस्थान प्राप्त करते हैं। संसार में होते हुए भी सभी प्रकार की बाधाओं और सिर पर आई बलाओं से मुक्त हो जाते हैं। शैतान सदैव इस वाणी से भयभीत होकर काँपते ही रहता है। यह वाणी जिस मन में अथवा दिल में आसन बनाती है, वहाँ शैतान कभी प्रविष्ट हो ही नहीं सकता।

स. ६१-श्री बंगलाजी में ब्रह्मात्माएँ किसके द्वारा चर्चा करतीं हैं? इस चर्चा को श्रीजी किस प्रकार-कैसे सुन रहे हैं? पुनः किनके नयनों में निद्रा नहीं आती?

स. ६२-श्रीजी साहेबजी स्वरूप बंगलाजी में कैसे और कितनी देर शयन करते हैं?

स. ६३-बारी गायन करने-करानेवालों को श्रीजी स्वरूप किस वक्त सचेत करते हैं और सचेत करते हुए क्या कहते हैं?

ज. ६३- श्रीजी साहेबजी "*गुडाकेश*" हैं। उनकी आँखों ने झपकी ली या →

स. ६४-धामधनी श्रीजी साहेबजी के सावचेत करनेवाले वचन सुनकर बारी गायन करनेवाले कैसा विनय करते हैं?

स. ६५-बिरत (वृत) अर्थात् धाम वर्णन का समय कौनसा है? चर्चा करते-करते समय कितना हो गया?

स. ६६-इस समय मुरलीधर भाई क्या करके सुन्दरसाथ को प्रणाम करते हैं? सुन्दरसाथजी इस समय क्यों-किस लिए उठने लगे?

स. ६७-इस समय श्री बंगलाजी में सुन्दरसाथजी क्या-क्या करते और सोचते हैं? मंगला आरती के पूर्व कौन, किस सेवा के लिए तत्पर हो जाते हैं?

ज. ६१- श्री बंगलाजी में ब्रह्मात्माएँ इस अद्वैत वाणी द्वारा अहर्निश चर्चा करतीं हैं। श्री धनीजी इस चर्चा को पलंग पर विश्राम करते हुए भी सुनते रहते हैं। उस वक्त श्री धनीजी के नयनों में नींद नहीं आती।

ज. ६२- श्रीजी साहेब-श्री प्राणनाथजी स्वरूप बंगलाजी में *"स्वान् निद्रा तथैव च"* की भाँति अर्थात् *"कछू आंख मिली के ना मिली"* की तरह शयन करते हैं। नींद नहीं लेते।

→ नहीं ली, किंतु बारी गायन करने-करानेवालों में से किसी ने यदि गाने में भूल से कोई शब्द आगे-पीछे कह दिया हो, तो वे उन्हें उसी समय सचेत करते हुए कह देते हैं कि "अरे! आपने शब्द आगे-पीछे क्यों कहा? आप यह शब्द भूल कैसे गए?"

ज. ६४- धामधनी श्रीजी साहेबजी के सावचेत करनेवाले वचनों को सुनकर बारी गायन करनेवाले चुप रह जाते और विनय करते हुए कहते हैं, "हे धामधनी! हमें याद नहीं रहा। हमसे भूल हो गई।"

ज. ६५- चर्चा करते-करते, रात्रि की चार घड़ी अवशेष रह गई अर्थात् रात्रि के साढ़े चार बज गए। यही समय है-बिरत अर्थात् धाम वर्णन का।

ज. ६६- इस समय मुरलीधर भाई श्री राजजी का स्वरूप वर्णन करके समस्त सुन्दरसाथजी को प्रणाम करते हैं। अन्य सुन्दरसाथजी इस समय अपनी नित्य-क्रिया आदि के लिए उठने लगे।

ज. ६७- इस समय श्री बंगलाजी में कोई सुन्दरसाथ सोते हैं, तो कोई परमधाम की बिरत सुनना चाहते हैं। मंगला आरती के पूर्व ही लालदासजी बिरत का वर्णन करने के लिए तत्पर हो जाते हैं।

स. ६८-सुन्दरसाथजी किस समय नियमपूर्वक आते हैं? वे आरती के पश्चात् क्या करते हैं?

स. ६९-कौन-कौन साथ यहाँ इस समय एकाग्रचित्त होकर परमधाम का वर्णन (बिरत) सुनने बैठते हैं?

ज. ६९- इस समय में जो साथी लेटे-लेटे बिरत सुन रहे हैं, वे भी उठकर →

स. ७०-यहाँ पद्मावतीपुरी में सर्वप्रथम धाम की बिरत कहने का अंकुर कहाँ से उठा और यह कार्यक्रम सर्वप्रथम किसने आरम्भ किया?

स. ७१-श्री लालदासजी ने यह कार्य कहाँ से अपने सिर पर लिया?

स. ७२-पुनः श्री लालदासजी के पीछे अन्य सुन्दरसाथ यह कार्यक्रम किस तरह आगे बढ़ाते गए?

स. ७३-धाम की बिरत कहने का कार्यक्रम कुछ दिन किनके घर में हुआ?

स. ७४-किनके घर में बैठकर सुन्दरसाथ परिश्रमपूर्वक बिरत सीखते रहे?

स. ७५-उक्त प्रकार सुन्दरसाथ में श्री परमधाम की बिरत सीखने के प्रति हर्ष, उमंग, उत्साह, जोश कब तक रहा? वे कब से ठण्डे पड़ने लगे? पुनः यह बात कौन कह रहे हैं?

आग्रह



तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विषे रस लाग ।
पाउं पकड़ कहे इन्द्रावती, उठ खड़े रहो जाग ।।

- (प्रकाश हिं. प्र.१७/चौ.२१) ।

अर्थः- हे मेरे धाम के सुमन सुन्दरसाथजी !

आप सभी तो अत्यंत ही बुद्धिमान्, होशियार एवं समझदार हैं । सुनो, देखो और विचार करो ! पंचविषय के इन्द्रियजन्य स्वाद में ही मत लगे रहो । मैं इन्द्रावती आप सबके चरण पकड़कर कहती हूँ कि अज्ञानरूपी निद्रा में से ज्ञान लेकर जागो ! उठो !! खड़े हो जाओ !!! क्योंकि अब अपने घर जाने का समय हो गया है।

- लेखक

पुनश्चः-

❋ आत्मीय प्रेमाग्रह ❋

सुख लेने को आए हो, नहीं भेजे सोवन को ।
बिचार देखो हादीय की, बानी ले दिलमों ।।

- (श्री खुलासा, प्र.१६/चौ. ७९)।

हे मेरी प्यारी धामस्थ आत्माओं ! आप लोग निजधाम से इस दुःखरूपी ब्रह्माण्ड में क्यों आए हो ? असत्, जड़, दुःख और सत्, चिद्, आनन्द का तारतम ज्ञान के माध्यम से संतुलनात्मक ज्ञानार्जित कर उस ज्ञान के द्वारा आत्म-जागृति करो क्योंकि आत्म-जागृति का अपूर्व, अवर्णनीय सुखानुभव करने के लिए ही आप सब श्री राजजी से वचनबद्ध होकर आये हो । दिए हुए वचन को याद करो ।

श्री राजजी ने आप लोगों को दिए हुए वचन को बिलकुल भूलकर कुम्भकर्णवत् मायावी नशे में चूर होकर सोवने के अथवा भूलने के लिए खेल में नहीं भेजा है। यदि आप सब धामधनी सम्बन्धी आत्माओं में से हो, तो अपने हादी-सद्गुरु निजानन्द श्री देवचंद्रजी और महामति श्री प्राणनाथजी प्रदत्त उक्त वाणी की चौपाई को कोमल चित्त में धारण करो और निश्चिंत होकर शीघ्रातिशीघ्र निर्णय कर लो कि आप लोग धाम से संसार में क्यों आए हो तथा श्री राजजी ने क्यों भेजा है ? खेल में आकर क्या करना था ? विचार-विवेक करके देखो ! क्या आप सब दिए हुए वचनानुसार चल रहे हो ?

हे आत्माओं !

चरण पकड़ कहे यशवन्ती,
उठो ! खड़े रहो जाग ।

- प्रणाम ।

ज. ६८- सुन्दरसाथजी सुबह ब्राह्ममुहूर्त में मंगला आरती में उपस्थित होने के लिए मंगला आरती के पूर्व नियमपूर्वक आ जाते हैं। सब मिलकर आरती उतारने के पश्चात् बिरत सुनने के लिए बैठते हैं।

→ समीप आकर एकाग्रचित्त होकर परमधाम की बिरत सुनने बैठ जाते हैं। पुनः सोते हुए साथी भी जागृत होकर एकाग्रचित्त से परमधाम की बिरत सुनने के लिए सचेत होकर बैठ जाते हैं।

ज. ७०- यहाँ श्री पद्मावतीपुरी धाम में श्री परमधाम-पचीस पक्ष की बिरत कहने का अंकुर सर्वप्रथम श्री हंसा भाई के घर से उठा। इस शुभ कार्य का आरम्भ जयन्तीदास भाई ने सुन्दरसाथ को एकत्रित करके किया है।

ज. ७१- जयन्तीदास भाई के पश्चात् बिरत कहने का कार्य श्री लालदासजी ने हंसा भाई के घर से अपने सिर पर लिया।

ज. ७२- श्री लालदासजी के पीछे अन्य सुन्दरसाथ एक-एक दिन बारी-बारी से बिरत-वर्णन करने लगे। जिन्हें श्री परमधाम की जितनी पहचान है, वे उतना वर्णन करते हुए आगे बढ़ते चले।

ज. ७३- श्री परमधाम की बिरत कहने का कार्यक्रम कुछ दिन श्री वृन्दावन भाई के घर में भी हुआ।

ज. ७४- सभी सुन्दरसाथ मिलकर श्री वृन्दावन भाई के घर में बैठकर बड़ी मेहनत एवम् लगन से श्री धाम की बिरत सीखते रहे।

ज. ७५- उक्त प्रकार सुन्दरसाथ में श्री परमधाम के पचीस पक्षों की बिरत सीखने-सिखाने के प्रति ग्यारहवीं सदी तक हर्ष, उमंग, उत्साह, जोश रहा। ग्यारहवीं सदी के पश्चात् सीखने और सिखानेवालों अर्थात् दोनों पक्षों की जिज्ञासा, उत्साह, उमंग आदि धीरे-धीरे ठण्डे पड़ने लगे। ये बातें बीतककार श्री लालदासजी कह रहे हैं।

स. ७६-इस मजल पर पहुँचकर श्री धाम की बिरत कहने का कार्य-भार किसने और किसके हाथ में सौंप दिया?

स. ७७-पुनः मकरन्ददास भाई के पश्चात् वह कार्य-संचालन की जिम्मेदारी किसने अपने हाथ में ली?

स. ७८-श्री परमधाम की बिरत कहने-सिखाने की सेवा बारी-बारी से उठानेवाले भाई कितने हैं और कौन-कौन?

स. ७९-कब और क्या सुनकर धामधनी श्री प्राणनाथजी बड़े प्रसन्न होते हैं?

स. ८०-बिरत का विवेचन कब होता है? इस समय कौन उठकर सेज पर बैठ जाते हैं?

स. ८१-श्रीजी साहेबजी प्रातः क्या मँगवाकर पीते हैं और क्यों?

स. ८२-श्रीजी स्वयं किस विषय में अपने सुन्दरसाथ के पहचान की सराहना करते हैं?

ज. ८२- श्रीजी साहेबजी बिरत सुनने-कहनेवालों के उत्साह तथा उनके →

स. ८३-प्रतिदिन नियमपूर्वक निष्ठा लेकर कौन आते हैं और वे कब तथा कहाँ बैठ जाते हैं?

ज. ७६- उक्त प्रकार जब धीरे-धीरे सुन्दरसाथ में उत्साह, उमंग ठण्डा पड़ने लगा, तब श्री लालदासजी ने श्री धाम की बिरत कहने-सिखाने का कार्य मकरन्ददास भाई के हाथ में सौंप दिया।

ज. ७७- मकरन्ददास भाई के पश्चात् श्री धाम की बिरत सिखाने की जिम्मेदारी लाल खाँ ने अपने हाथ में ली।

ज. ७८- श्री परमधाम की बिरत कहने-सिखाने की सेवा बारी-बारी से चार भाइयों ने उठाई। उनके नाम हैं-जयन्तीदास, लालदासजी, मकरन्द भाई और लाल खाँ।

ज. ७९- प्रातःकाल के समय श्री परमधाम-पचीस पक्ष की बिरत सुनकर श्री प्राणनाथजी अत्यधिक प्रसन्न होते हैं।

ज. ८०- प्रातःकाल के समय बंगलाजी में बिरत का विवेचन होता है। विवेचन करनेवाले विवेचन करते हैं और श्रवण करनेवाले श्रवण करते हैं। इस समय श्रीजी साहेबजी पलंग पर उठकर बैठ जाते हैं।

ज. ८१- श्रीजी साहेबजी प्रातः समय में कहवा (एक प्रकार की वनस्पति का रस) मँगवाकर पीते हैं, जिससे कि पाखाना साफ होकर लगता है और पेट साफ रहता है।

→ श्रद्धा-विश्वास और लगन को देखकर यह श्री राजजी की प्रत्यक्ष कृपा है, ऐसा सुन्दरसाथ को जताते हुए उनके पहचान की सराहना करते हैं।

ज. ८३- प्रतिदिन नियमपूर्वक निष्ठा लेकर प्रातःकाल के समय में मावजी भाई आते हैं और आकर बिरत कहनेवाले भाई के समीप बैठ जाते हैं।

स. ८४-मावजी भाई इस समय उपस्थित होकर बिरत कहनेवाले भाई के समीप बैठकर कौनसी सेवा करते हैं?

स. ८५-वे किन-किन के अंग दबाने की सेवा करते हैं और क्यों?

ज. ८५- मावजी भाई प्रतिदिन अपने समय पर उपस्थित होते हैं और जो-जो भाई, जिस-जिस दिन बिरत सुनाने की सेवा करते हैं, उस- →

स. ८६-मावजी भाई के मन में किसकी, कौनसी सेवा करने की इच्छा है?

ज. ८६- मावजी भाई के मन में उन विज्ञ साथी की सेवा करने की इच्छा →

स. ८७-कौन-कौन भाई प्रसन्न मन से आते हैं और वे कौनसा नियम भंग नहीं होने देते?

स. ८८-कौन-कौन प्रातःकालीन स्वरूप सुनकर आनन्दित होने के लिए निष्ठा लेकर बंगलाजी में आते हैं?

ज. ८८- विशेष अग्रगण्य श्री गोविन्ददास और उनके साथ उनके परिवार →

स. ८९-बिरत के दौरान श्री रंगमहल के बाहर का वर्णन कर दर्शन करने के पश्चात् पुनःकहाँ प्रवेश होते हैं? पुनः कहाँ-कहाँ होते हुए, कहाँ का वर्णन करते हैं?

ज. ८९- बिरत के दौरान श्री रंगमहल के बाहर का वर्णन कर दर्शन करने →

स. ९०-मूल मिलावे का चौक अर्थात् गोल हवेली कैसी है? उसका क्रमशः वर्णन कैसा है?

ज. ९०- मूल मिलावे के गोलाकार चबूतरे की किनार पर चौंसठ थंभ →

ज. ८४- मावजी भाई इस समय उपस्थित होकर बिरत करनेवाले भाई के समीप बैठकर भली प्रकार से उनके अंग और चरण दबाने की सेवा करते हैं।

→ उस दिन उनके अंग दबाने की सेवा करते हैं क्योंकि बिरत सुनानेवाले भाई रात में बिना सोये सुन्दरसाथ को बिरत सुनाने की बड़ी में बड़ी सेवा कर रहे हैं।

→ है, जो सुन्दरसाथ को श्री परमधाम की बिरत कहकर सुनाते-सिखाते हैं। अतः वे बिरत सुनाने-सिखानेवाले भाई के अंग दबाने की सेवा के लिए कुछ रात्रि शेष रहते ही निष्ठापूर्वक उपस्थित हो जाते हैं। उन्हें यह सेवा अत्यन्त प्रिय है।

ज. ८७- इस समय प्रसन्न मन से आनेवाले निष्ठाबंधी भाइयों के नाम हैं-मोहनदास भाई और मूलचन्द मोदी। ये दोनों भाई अपना इस वक्त का दर्शन करने का नियम भंग नहीं होने देते।

→ के अन्य सदस्यों सहित अन्य बहुत से सुन्दरसाथ इस वक्त प्रातःकालीन *"श्री राज श्री ठकुराणीजी"* का स्वरूप वर्णन सुनकर अत्यधिक आनन्द प्राप्त करने के लिए निष्ठापूर्वक श्री बंगलाजी में आते हैं।

→ के पश्चात् अट्ठाईस थंभों के चौक के भी आगे चार चौरस हवेलियाँ उलंघकर आगे जाते हैं। इस प्रकार उक्त स्थानों से होते हुए तत्पश्चात् पाँचवाँ चौक मूल मिलावा में प्रवेश करते हैं।यहीं पर ब्रह्मात्माओं के परात्म समूह की मूल बैठक है और श्री युगलस्वरूप मध्य में सिंहासनासीन हैं।

→ फिरे हैं और इन थंभों के ऊपर चन्द्रवा ताना हुआ है। नीचे चबूतरा भरकर गलीचा बिछा हुआ है। इस गोलावृत हवेली के बीच में श्री युगलस्वरूप सिंहासनासीन हैं।

स. ९१-इस गोलावृत हवेली-मूल मिलावे के चौक में सखियाँ किस आकार में और कैसे बैठीं हैं?

ज. ९१- मध्य में स्थित श्री राजश्यामाजी के सिंहासन को चारों ओर से →

स. ९२-तत्पश्चात् किस चौक और वन एवम् इमारतों का वर्णन करते हैं?

स. ९३-पुनः दूसरी भोम में किस-किस की विशेषताओं का वर्णन करते हैं?

स. ९४-तीसरी भोम की क्या विशेषता है? वहाँ होनेवाली दैनिक लीला की अवधि कितनी है? इस भूमिका को भोग्यभूमि क्यों कहते हैं?

ज. ९४- तीसरी भोम की विशेषता वहाँ की बड़ी पड़साल है। यह पड़साल →

स. ९५-बिरत में चौथी भोम की क्या विशेषता बताते हैं? आज चौथी भोम में निरत करनेवाली सखी का नाम क्या है?

ज. ९५- बिरत में चौथी भोम की विशेषता निरत की बाखर अर्थात् →

स. ९६-पाँचवीं भोम को सभी भोमों में मुख्य क्यों माना गया है? पुनः वहाँ कैसी लीला होती है और कब से, कब तक?

ज. ९६- पाँचवीं भोम को सभी भोमों में मुख्य मानने का कारण यह है कि →

स. ९७-छट्ठी भोम की विशेषताएँ क्या-क्या हैं? सुखपाल और तखतरवा कहाँ-कहाँ रहते हैं?

→ घेरकर ब्रह्मात्माएँ चबूतरे पर तीन पंक्तियों में गोलाकार में बैठी हुई हैं। गोलाकार में बैठी ये सखियाँ एक-दूसरे के गले पर हाथ डालकर बिलकुल सटकर बैठी हैं। सखियों का सिंगार, वस्त्राभूषणादि तद्दोगत श्री श्यामाजी के समान ही समझना चाहिए।

ज. ९२- उक्त गोल हवेली के चौक के पश्चात् अन्दर तीसरे हिस्से में फूलवारियाँ और नौ चौक हैं। उन चौकों में छज्जों और वन इमारतों के अन्दर स्थित महलों का वर्णन अत्यंत सुन्दर और शोभादायक है।

ज. ९३- तत्पश्चात् प्रथम भोम से दूसरी भोम में चढ़ जाते हैं। दूसरी भोम में स्थित भूलवनी के मंदिर के थंभों और मेहराबों सहित उत्तर दिशा में स्थित खड़ोकली के कुण्ड का वर्णन करते हैं।

→ विशाल है। इस ठौर में दैनिक तीन पहर की अर्थात् सुबह के छः बजे से लेकर दिन के तीन बजे तक की लीला होती है। इसी भोम में श्री राजश्यामाजी की दोपहर की भोजन लीला भी होती है। इसीलिए इस भूमिका को भोग्यभूमिका भी कहा गया है।

→ नृत्यशाला का वर्णन करते हैं। चौथी भोम में कृष्ण पक्ष के पंद्रह दिन क्रमशः निरत होती है। आज वहाँ निरत करनेवाली सखी का नाम है- *"श्री नवरंगबाई"*।

→ इसी भोम में रात्रि के तीन पहर की लीला होती है। यह लीला आशिक-माशूक के बीच की अन्तरंग लीला होने के कारण विशेष कहलाती है। विलास के स्वरूप की यह लीला रात्रि के नौ बजे से सुबह छः बजे तक होती है।

ज. ९७- छट्ठी भोम की विशेषताएँ सुखपाल और तखतरवा हैं। *"छः छः हजार मंदिर दोऊ हार"* में से छट्ठी भोम की बाहरी हार मंदिरों के →

→ अन्दर सुखपाल रहते हैं, तो छट्ठी भोम के अट्ठाईस थंभों के →

स. ९८- सातवीं भोम और आठवीं भोम की विशेषताएँ क्या-क्या हैं?

ज. ९८- सातवीं और आठवीं भोम में हिंडोलों की विशेषताएँ हैं। सातवीं भोम में छः-छः हजार मंदिरों की दो हारों के बीच स्थित गली में आई छः-छः हजार थंभों की दो हारों में मेहराब लगकर, उन →

स. ९९- नौवीं भोम में कुल कितने छज्जे हैं? फिरते आठों दिशाओं के छज्जों की संख्या कितनी-कितनी है? श्री राजश्यामाजी सहित द्वादश सहस्त्र सखियाँ नौवीं भोम के छज्जों पर बैठकर कौनसी लीला करते हैं?

ज. ९९- नौवीं भोम में कुल दो सौ एक छज्जे हैं। पूर्व दिशा में छब्बीस →

स.१००- उक्त छज्जों पर बैठकर देखने से कहाँ-कहाँ तक की शोभा सुन्दरता दृष्टिगोचर होती है?

स.१०१- इन छज्जों पर बैठकर देखने से श्री यमुनाजी के उस पार सामने क्या-क्या देखने में आता है?

ज.१०१- इन छज्जों पर बैठकर देखने से श्री यमुनाजी के उस पार सामने →

स.१०२- दक्षिण दिशा में स्थित बट-पीपल की चौकी के आगे क्या-क्या है?

ज.१०२- दक्षिण दिशा की ओर देखने पर बट-पीपल की चौकी के आगे →

➞ चौक में तखतरवा रहता है। ये दोनों साधन ब्रह्मात्माओं के लिए पचीस पक्षों में विहार करने में प्रयोग में आते हैं।

➞ मेहराबों में दो हारें हिंडोलों की लगी हैं। पुनः आठवीं भोम में भी सातवीं भोम की तरह ही किंतु मेहराबों की दो हारों के मध्य में मेहराबों की एक हार और है। इन तीन हार मेहराबों में हिंडोलों की तीन हारें फिरीं हैं। उक्त दोनों भोमों में षट्छप्पर की भाँति के हिंडोले हैं । इन दोनों भोमों में क्रमशः दो ताली और चार ताली हिण्डोलों की विशेषता है।

➞ छज्जे हैं। अन्य सातों दिशाओं में पचीस-पचीस छज्जे हैं। श्री राजश्यामाजी द्वादश सहस्त्र सखियों को साथ लेकर नौवीं भोम के पूर्व के छज्जों पर बैठते हैं और वहाँ से दिखाई देनेवाले सुन्दर-सुन्दर दृश्यों जैसे-सातों घाटों के निराले दृश्यों सहित दूर-दूर की शोभा-सुन्दरता का वर्णन सुनने और सुनाने की लीला करते हैं।

ज.१००- उक्त छज्जों पर बैठकर सामने देखने से चारों ओर के पचीस करोड़ योजन तक की शोभा-सुन्दरता देखने में आती है।

➞ अक्षर धाम के तरफ के सातों घाट, श्री यमुनाजी की पाल और तट सहित अक्षर धाम दृष्टिगोचर होता है। अक्षर धाम के आगे पूर्व में जवेरों की नहर आदि सब कुछ दिखाई देता है।

➞ कुंज-निकुंज वन, हौज कौसर ताल, चौबीस हाँस का महल, जवेर की नहर आदि दृश्य दृश्यमान् होते हैं। उसके आगे माणिक पहाड़ की विस्तृत महिमा है।

स.१०३- श्री रंगमहल से कितनी-कितनी दूरी पर और कौन-कौनसी दिशा में माणिक पहाड़, पुखराज पर्वत और हौज कौसर ताल स्थित हैं?

ज.१०३- श्री रंगमहल से दक्षिण दिशा में लगभग एक करोड़ छब्बीस लाख →

स.१०४- इन सभी क्रीड़ा-स्थलों में से कहाँ, किन-किन क्रीड़ा-स्थलों में श्री राजश्यामाजी सखियों सहित लीला-क्रीड़ाएँ करते हैं?

ज.१०४- उक्त लीला-स्थलों में से श्री युगलस्वरूप सखियों सहित विशेषकर दक्षिण स्थित बट-पीपल की चौकियों में, हौज कौसर →

स.१०५- माणिक पहाड़ और हौज कौसर ताल के बीच में क्या है, जिसके चौबीस फुहारों तले श्री युगलस्वरूप सहित सखियाँ विहार के लिए जाते हैं?

ज.१०५- माणिक पहाड़ और हौज कौसर ताल के बीच में चौबीस हाँस →

स.१०६- माणिक पहाड़ के चबूतरे को घेरकर आई गोल और चौरस हवेलियों की संख्या कितनी है? ये हवेलियाँ गोलाकार में किस प्रकार फिरी हुई हैं?

ज.१०६- माणिक पहाड़ के चबूतरे पर गोल और चौरस हवेलियों की →

स.१०७- द्वादश सहस्त्र सखियों सहित श्री राजश्यामाजी कहाँ के विशाल थंभों पर और कैसे झूलते हैं?

ज.१०७- माणिक पहाड़ के बीच स्थित जलस्तंभ के चबूतरे के किनार →

→ योजन की दूरी पर माणिक पहाड़ है। पुनः हौज कौसर ताल श्री रंगमहल की दक्षिण दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर है तथा पुखराज पर्वत रंगमहल की उत्तर दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी पर स्थित है।

→ ताल के झुण्ड के घाट पर, पुनः हौज कौसर ताल के टापू महल में, चौबीस हाँस के महल में जाते हैं। पुनश्च उत्तर में पुखराज पर्वत के पश्चिम दिशा में स्थित बड़ोवन, मधुवन और महावन के चौकों में, ऊपर पुखराज पर्वत की चाँदनी के चार बड़े दरवाजों में तथा नीचे खजाने के ताल पर जहाँ से श्री यमुनाजी का उद्गम हुआ है, इन सभी स्थानों पर आनन्दमयी क्रीड़ाएँ करने जाते हैं।

→ का महल है, जिसकी चाँदनी में स्थित जलस्तम्भ से चौबीस फुहारे गुर्ज के कुण्डों में से होकर नीचे जमीन पर गिरते हैं। इस मनमोहक स्थान पर श्री युगलस्वरूप सखियों सहित रमण-क्रीड़ाओं के लिए जाते हैं।

→ बारह हजार की बारह हजार हारें फिरी हैं। इस चबूतरे पर आई कुल हवेलियों की संख्या चौदह करोड़ चालीस लाख है। इन हवेलियों की बनक कुंज-निकुंज की तरह अर्थात् चौरस-गोल, चौरस-गोल की तरह है। अतः देखने पर चार चौरस के बीच एक गोल हवेली और चार गोल हवेलियों के बीच एक चौरस हवेली का-सा दृश्य दिखाई देता है।

→ पर फिरते ग्यारह हजार नौ सौ अस्सी भोम ऊँचे विशाल १२००० थंभ लगे हुए हैं। उन थंभों पर लम्बी-लम्बी साँकल में बड़े-बड़े हिंडोले लगे हुए हैं। ये हिंडोले इतने विशाल हैं कि द्वादश सहस्त्र सखियों सहित श्री राजश्यामाजी एक ही हिंडोले पर झूल सकते हैं। माणिक पहाड़ के इन विशाल हिंडोलों पर →

→ द्वादश सहस्त्र सखियों सहित श्री राजश्यामाजी लीला-क्रीड़ा →

स.१०८- उक्त हिंडोलों की लीलाएँ सबसे न्यारी कही हैं। अतः कैसी लीलाएँ होती हैं?

ज.१०८- उक्त हिंडोलों पर झूला झूलने की लीलाएँ सबसे न्यारी कही →

स.१०९- महानद कहाँ-किसको घेरकर गोलावृत फिरी है? इसके दोनों तटों पर क्या बनी हैं और प्रत्येक मेहराबों में क्या लटक रहे हैं?

स.११०- उक्त स्थानों के आनन्दानुभवों के अधिकारी बड़भागी कौन हैं?

स.१११- कहाँ-किस स्थान पर चार, आठ और बारह कोणवाले जवेरों के महल हैं?

ज.१११- रंगमहल के चौदिश साढ़े तेरह लाख योजन की दूरी पर जो →

स.११२- वन के महलों का वर्णन कहाँ का है अर्थात् किस वन का है?

ज.११२- वन के महलों के वर्णन से तात्पर्य है वन की नहरों के अन्दर के →

स.११३- श्री रंगमहल की पश्चिम दिशा में ऐसा कौनसा मैदान है, जिसमें ब्रह्मात्माएँ खेलती हैं?

ज.११३- श्री रंगमहल की पश्चिम दिशा में साढ़े चार लाख कोस की दूरी →

→ के लिए आते हैं।

→ हैं क्योंकि इस चबूतरे पर श्री युगलस्वरूप और द्वादश सहस्त्र सखियाँ बारह हजार झुण्ड में होकर एक साथ बारह हजार हिंडोलों में झूलती हैं। पुनः लीला-क्रीड़ा के पश्चात् एक ही झुण्ड में परिवर्तित हो जाते हैं।

ज.१०९- माणिक पहाड़ को घेरकर चारों ओर से महानद फिरी है। इसके दोनों तटों पर देहुरियाँ बनी हुई हैं। महानद का तट भी श्री यमुनाजी के तट सदृश ही है। इस तट के पाल पर भी देहुरियाँ, थंभों की कतारें, उन थंभों में मेहराबें और प्रत्येक मेहराबों में हिंडोले लगे हुए हैं। यह पाल सुन्दरातिसुन्दर शोभायमान है।

ज.११०- उक्त अत्यंत सुहावने रमणीय स्थानों के आनन्दानुभवों के अधिकारी बड़भागी आत्माएँ द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माएँ हैं।

→ जवेरों की नहर फिरी है, उस जवेर की नहर में चार, आठ और बारह कोणवाले जवेरों के महल हैं और नहरों की तो पंक्ति की पंक्ति फिरी हैं।

→ बृहद्द् वन का वर्णन। यह वन रंगभवन से अढ़ाई करोड़ योजन की दूरी पर चारों ओर फिरा हुआ है। बृहद्द् वन को नीलगिरी का वन भी कहते हैं, जिसकी ऊपराऊपर साठ हजार भोमें हैं।

→ पर पश्चिम की चौगान है, जिसकी लम्बाई नौ लाख कोस और चौड़ाई साढ़े चार लाख कोस है। इसी मैदान-चौगान में कृष्ण पक्ष की पंचमी को द्वादश सहस्त्र ब्रह्मात्माएँ श्री युगलस्वरूप के साथ रमने आते हैं।

स.११४- छोटी रांग श्री रंगमहल से कितनी दूरी पर है तथा चार-चार हवेलियों की चार हारें कहाँ हैं?

ज.११४- छोटी रांग श्री रंगमहल से साढ़े तीन करोड़ योजन की दूरी पर →

स.११५- आठ सागर और उन आठ सागरों के बीच टापू महल कहाँ-किस जगह पर स्थित हैं?

स.११६- रंगभवन के नौवीं भोम के छज्जों से चारों दिशाओं में कहाँ तक दिखाई देता है?

ज.११६- ब्रह्मधाम-श्री रंगमहल के नौवीं भोम से चारों दिशाओं में देखने →

स.११७- श्री रंगमहल की दसवीं चाँदनी को चित्रशालिका क्यों कहा है?

ज.११७- ब्रह्मधाम-श्री रंगमहल की चाँदनी देहलान, गुमटियों, गुर्जों एवं काँगरियों से जगमगा रही है। पुनः देहलानों से लेकर अंदर →

स.११८- अब श्री रंगमहल की चाँदनी से कहाँ-कहाँ होते हुए मूल मिलावे में आ पहुँचे?

ज.११८- अब श्री रंगमहल की चाँदनी से पूर्व की देहलान के आगे स्थित भोम भर की सीढ़ी से उतरकर नौवीं भोम में आये। नौवीं भोम से क्रमशः आठवीं, सातवीं, छट्ठी, पाँचवीं, चौथी, तीसरी भोम →

स.११९- अभी वर्तमान में श्री राजश्यामाजी कहाँ विराजमान हैं?

→ स्थित है। छोटी रांग (दुर्ग) के चबूतरे पर चार-चार हवेलियों की चार हारें फिरीं हैं। एक हाँस में चार गुने चार अर्थात् सोलह हवेलियाँ हैं। ऐसी कुल बत्तीस हाँसें हैं।

ज.११५- आठ सागर और उन आठ सागरों के बीच टापू महल बड़ी रांग (दुर्ग) के चबूतरों के बीच के तीसरे हिस्से में हैं। आठों सागरों के बीच-बीच में आठ टापू महल अत्यंत सुन्दररूपेण शोभायमान हैं।

→ पर साढ़े तेरह लाख योजन तक की सारी सामग्रियों के साथ जवेरों के महल आदि दिखाई देते हैं। पुनः इससे भी आगे बड़ी रांग की बाहरी किनार तक स्पष्ट देखकर वर्णन कर सकते हैं।

→ बीच के चबूतरे तक की बड़ी चौड़ी जगह में नाना प्रकार की फूलवारियाँ, दूब की चौगान आदि तथा फूलों और फलों के बगीचे हैं। इन तीनों में नीचे नहरों, चहबच्चों और फुहारों की अकथनीय शोभा-सुन्दरता से जगमगाती बनावट होने के कारण चाँदनी को चित्रशालिका कहा है।

→ उतरते-उतरते दूसरी भोम में आये। पुनः दूसरी भोम से प्रथम भोम में आकर श्याम-श्वेत के बीच के मंदिर में स्थित सीढ़ी से नीचे उतर गए। वहाँ से सीधे चार चौरस हवेलियाँ पार कर पाँचवें चौक-गोल हवेली अर्थात् मूल मिलावे के चौक में आ पहुँचे।

ज.११९- अभी वर्तमान में श्री राजश्यामाजी श्री रंगमहल के अन्दर पाँचवें चौक-श्री मूल मिलावे के चबूतरे के मध्य स्थित सिंहासन पर विराजमान हैं।

स.१२०- तत्पश्चात् श्री राजश्यामाजी को प्रणाम कर मूल द्वार में किस रास्ते से पहुँचे? पुनः मूल दरवाजे के आगे तथा प्रांगण में क्या-क्या देखते हुए आगे बढ़े?

ज.१२०- मूल मिलावा के मध्य में स्थित सिंहासन पर विराजमान श्री युगलस्वरूप के चरणों में प्रेमपूर्वक प्रणाम किया। तत्पश्चात् मूल मिलावा के पूर्व दरवाजे से तीन सीढ़ी उतरकर चार मंदिर →

स.१२१- श्री रंगमहल के चाँदनी चौक से देखने पर सामने पूर्व में तीन लाख कोस तक क्या-क्या दिखाई देता है?

ज.१२१- श्री रंगमहल के चाँदनी चौक से देखने पर सामने पूर्व दिशा में →

स.१२२- उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवाहित श्री यमुनाजी कहाँ पहुँचकर विलीन हो जाती है?

ज.१२२- श्री परमधाम की उत्तर से दक्षिण दिशा की ओर प्रवाहित श्री →

स.१२३- किस टापू महल की शोभा अकथनीय एवम् निराली है?

स.१२४- पाँच वृक्षों की कतारों ने किसको आवृत किया है?

स.१२५- पश्चिम में किसके आगे स्थित दूबवन के सभी दूब पीले रंग के से भले-अच्छे मालूम पड़ते हैं?

स.१२६- कहाँ, किस-किस की शोभा का वर्णन सुनते ही आत्मा जागृत हो जाती है?

ज.१२६- अक्षरातीत धाम श्री रंगमहल की पश्चिम दिशा में ऊपर फूलबाग →

→ पूर्व की ओर चले। पुनः तेरह मंदिर उत्तर दिशा की ओर चले। पुनः पूर्व की ओर एक सौ एक मंदिर चलकर पुनः दक्षिण की ओर तेरह मंदिर चले। तब मूल दरवाजे के आगे पहुँचे। अब यहाँ से सीधे दस मंदिर पूर्व चलकर रंगमहल के मूल दरवाजे पर पहुँच गये। मूल दरवाजे पर खड़े होकर देखने से सामने उज्ज्वल रेतकणों से भरा हुआ प्रांगण देखा। उस प्रांगण की उत्तर और दक्षिण दिशा में हरे-लाल वृक्ष अति सुंदररूपेण शोभायमान हैं।

→ तीन लाख कोस तक सात घाट, बनदिश की रौस, पाल आदि से लेकर श्री यमुनाजी का तट और बट पुल तथा केल पुल दिखाई देते हैं।

→ यमुनाजी नौ लाख कोस दक्षिण की ओर जाकर पश्चिम दिशा में मुड़ जाती है। पुनः साढ़े चार लाख कोस पश्चिम दिशा में जाकर हौज कौसर ताल में विलीन हो जाती है।

ज.१२३- हौज कौसर ताल के मध्य में स्थित टापू महल की शोभा-सुन्दरता अकथनीय एवम् निराली है।

ज.१२४- बड़ेवन के वृक्षों की पाँच हारों ने हौज कौसर ताल के दोनों पालों अर्थात् चौरस पाल और ढालदार पाल को आवृत किया है।

ज.१२५- श्री रंगमहल की पश्चिम दिशा में स्थित फूलबाग, नूरबाग और अन्नवन के आगे स्थित दूबवन के सभी दूब पीले रंग के से अत्यंत भले-अच्छे मालूम पड़ते हैं।

→ है, तो नीचे नूरबाग है। दोनों में सौ नूरमयी बगीचे हैं। इन सबकी शोभा-सुन्दरता सुनते-सुनते, मन में गुनते-गुनते आत्मा में फजर हो जाती है।

स.१२७- कहाँ के और कौनसे चबूतरे की अलग ही महिमा है?

स.१२८- लाल चबूतरे से लगकर कौन-कौनसे वन, किस ओर चले गये हैं?

ज.१२८- लाल चबूतरे से लगते हुए बड़ेवन के वृक्षों ने लाल चबूतरे को ऊपर से छत्रीवत् छाया डाल रखी है। इस चबूतरे से लगते हुए →

स.१२९- बड़ेवन से पूर्व की ओर किस वन की शोभा झलक रही है?

स.१३०- हजार गुर्ज कहाँ फिरे हुए हैं और वे किससे लगे हुए हैं?

स.१३१- किसके चारों दरवाजों में श्री राजजी सखियों सहित लीला-क्रीड़ा करते हैं?

स.१३२- पुखराज पर्वत में आठ निशान कहाँ-कहाँ हैं और कौन-कौनसे?

ज.१३२- श्री रंगमहल की उत्तर दिशा में जो पुखराज नग का पर्वत है, उस पर्वत के गोल चबूतरे पर आठ निशान हैं। उक्त आठ निशानों में से पुखराज पर्वत के गोल चबूतरे के ऊपर स्थित चौरस चबूतरे पर आए पाँच निशानों को पाँच पेड़ कहा है, →

स.१३३- श्री यमुनाजी मूल में किसके नीचे होते हुए मूलकुण्ड से बाहर निकली हैं?

ज.१३३- पुखराजी ताल का पूर्व पेड़ श्री यमुनाजी का मूल है। अतः →

ज.१२७- रंगमहल के उत्तर दिशा की ओर स्थित लाल चबूतरे की महिमा और महत्त्व अलग ही है।

→ बड़ेवन के वृक्षों की पंक्तियाँ उत्तर दिशा की ओर चली गयी हैं। पुनः बड़ेवन से लगकर मधुवन और मधुवन से लगकर महावन के वृक्ष पुखराज पर्वत को प्रदक्षिणा देते हुए उत्तर की ओर चले गये हैं।

ज.१२९- बड़ेवन से पूर्व की ओर ताड़वन के विशाल वृक्षों की शोभा झलक रही है। इस वन के सामने से बड़ेवन के वृक्षों की पाँच हारें पूर्व स्थित श्री यमुनाजी की ओर गयी हैं।

ज.१३०- हजार गुर्ज पुखराज पर्वत की चाँदनी में फिरे हुए हैं। ये गुर्ज महावन के साथ लगे हुए हैं।

ज.१३१- पुखराज पर्वत की चाँदनी के चारों दिशाओं पर स्थित चार बड़े-बड़े दरवाजों पर श्री राजजी सखियों सहित नई-नई लीला-क्रीड़ाएँ करते हैं।

→ जिनमें से एक-एक पेड़ पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर हैं और एक पेड़ चारों पेड़ों के मध्य में है। उक्त पाँच निशानों के अलावा शेष तीन निशानों में से दो निशान उत्तर और पश्चिम में आई दो घाटियों को कहा है तथा अन्य एक निशान पूर्व की ओर आए बंगला को कहा है। इस तरह चार चबूतरों पर आठ निशान शोभायमान हैं।

→ वहाँ से पूर्व दिशा की ओर बंगला के नीचे-नीचे से होते हुए श्री यमुनाजी आगे बढ़ीं और अधबीच के कुण्ड में आईं। अब अधबीच के कुण्ड और ढँपा चबूतरे की तरहटी के नीचे-नीचे होते हुए मूलकुण्ड की तरहटी के पूर्व किनारे से श्री यमुनाजी →

→ प्रकट हुई हैं और बाहर निकली हैं। इसके आगे कुछ दूर तक श्री →

स.१३४- बट पुल और केल पुल के बीचों-बीच क्या है, जिसकी विशेष महिमा है?

स.१३५- श्री यमुनाजी के किनार पर किस तरह और कितने स्थान पर एक देहुरी (महल) एक चबूतरा है?

स.१३६- किस पुल के आगे श्री यमुनाजी मरोड़ खाकर पश्चिम की ओर जाकर, किसमें मिल गई है?

स.१३७- बिरत में इसके बीच किस वन की शोभा का वर्णन आता है?

स.१३८- दिन के तीन बजे श्री राजश्यामाजी उठकर सखियों से क्या पूछते हैं?

स.१३९- श्री राजश्यामाजी तथा सखियाँ सैर से वापस कब लौटते हैं और क्या करते हैं?

ज.१३९- श्री राजश्यामाजी तथा सखियाँ सैर से वापस छः बजे आते हैं। →

स.१४०- चौथी भोम कब आते हैं और कब तक रहते हैं? पुनः शयनार्थ कहाँ, कब जाते हैं?

ज.१४०- सायं रसाई के चौक में भोजन लीला के पश्चात् सीधे चौथी →

अक्षरातीत श्री कृष्ण परमात्मने नमः

(श्री कृष्ण प्रणामी धर्म-श्रीमन्निजानन्द संप्रदाय)

स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत बीतक साहेब

के -

श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज कृत

सवाल - जवाब

(उत्तरांश - तृतीय खण्ड)

लेखक -

"प्राणनाथ साहित्य भास्कर"-सम्मान से विभूषित

परमपूज्य "वाणी आचार्य"

श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज

संरक्षक - श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट

बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२

प्रकाशक -

१. हिन्दी - श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र के संस्थापक,
"प्राणनाथ साहित्य भास्कर"-सम्मान से विभूषित
परमपूज्य "वाणी आचार्य"
श्री १०८ श्री दीनदयालजी महाराज
बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२

२. गुजराती - ज्ञान केन्द्र -
C/O श्री प्राणनाथ महिला मंडल (रजि.),
बोरीवली (प.), मुंबई - ४०० ०९२.

पुस्तक प्राप्ति स्थान

१. श्री १०८ प्राणनाथजी मंदिर
श्री ५ पद्मावतीपुरी धाम (मुक्तिपीठ),पन्ना,
मध्य प्रदेश - ४८८ ००१. संपर्क: ०७७३२-२५२०४६

२. श्री ५ महामंगलपुरी धाम
श्री कृष्ण प्रणामी मोटा मंदिर,
सैयदवाड़ा, सूरत - ३. संपर्क: ०२६१-२४२४९८६

३. श्री कृष्ण प्रणामी मूल मिलावा मानव मंदिर
वेड रोड, सूरत. संपर्क: ०२६१-२५१२७२२

४. श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट
३, सुंदरधाम बिल्डिंग, जामली गली, बोरीवली (प.),
मुंबई - ४०० ०९२. संपर्क: ०२२-२८९९ ८७५८

५. श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर
डिल्ली बाजार, काठमाण्डौ (नेपाल).
संपर्क: ००९७७-९८४१२३१०३५

६. श्री कृष्ण प्रणामी मंदिर
सेवक रोड, सिलिगुड़ी, (पश्चिम बंगाल).
संपर्क: ०३५३-२६४२७२८

७. श्री कृष्ण प्रणामी साधनालय चे. ट्रस्ट
श्री प्राणनाथ वाणी प्रशिक्षण केन्द्र,
पोस्ट - गडऊमरिया, धरमपुर, दर्रामुरा,
रायगढ़, छत्तीसगढ़ - ४९६ ००१.
संपर्क: ०९९०७ ४४२ ४४२

→ यमुनाजी ढँपी होकर गई और तत्पश्चात् खुली होकर गई। अब पूर्व से मुड़कर सीधे दक्षिण दिशा में चली गई।

ज.१३४- बट पुल और केल पुल के बीचों-बीच सात घाट अत्यंत सुन्दररूपेण शोभायमान हैं। इन सातों घाटों की विशेष महिमा है।

ज.१३५- श्री यमुनाजी के किनारे पुल के उत्तर-दक्षिण पाल के ऊपर, पाल के बीच के तीसरे हिस्से में दोनों पाल पर चारों स्थान में एक महल एक चबूतरा है।

ज.१३६- बट पुल के आगे से मरोड़ खाकर श्री यमुनाजी पश्चिम की ओर साढ़े चार लाख कोस आगे जाकर हौज कौसर ताल में समा गई है।

ज.१३७- बिरत में इसके बीच वुंज-निवुंज बन की अत्यंत सुन्दरातिसुन्दर शोभा का वर्णन विशेषता सहित आता है।

ज.१३८- दिन के तीन बजे श्री राजश्यामाजी नीले-पीले मंदिर से उठकर सखियों से पूछते हैं कि "आज कहाँ, किस घाट में सैर के लिए जाने की इच्छा है?"

→ तत्पश्चात् एक जमात अन्दर रसोई तैयार करती है तथा अन्य सखियाँ पशु-जानवर को खिलातीं-नचातीं हैं। पुनः रसोई के चौक में भोजन लीला के पश्चात् चौथी भोम की नृत्यशाला में नृत्य करते हैं। तत्पश्चात् पाँचवीं भोम में शयन लीला होती है।

→ भोम में निरत देखने जाते हैं। साढ़े सात बजे रसोई के चौक में भोजन लीला के पश्चात् आठ बजे से नौ बजे तक चौथी भोम में निरत देखते हैं। पुनः नौ बजे पाँचवीं भोम में शयनार्थ जाते हैं।

स.१४१- पाँचवीं भोम में लीला-विलास की अवधि कब से, कब तक है?

स.१४२- दूसरे दिन की लीला किस भोम के छज्जे से शुरू होती है?

ज.१४२- दूसरे दिन की लीला तीसरी भोम के छज्जे से शुरू होती है। →

स.१४३- कहाँ की पड़साल, देहलान और चबूतरे की शोभा सबसे निराली है?

स.१४४- श्री राजश्यामाजी कब-किस कार्यक्रम के पश्चात् नीले-पीले मंदिर में विश्राम करते हैं?

स.१४५- सखियाँ किस समय तथा कब से, कब तक स्वतन्त्र रमतीं हैं?

स.१४६- श्री राजजी ने आज के दिन कौनसी बातें चित्त में लीं?

ज.१४६- श्री राजजी ने आज के दिन ऐसा विचार किया कि इन सखियों →

स.१४७- श्री राजजी द्वारा चित्त में धारण की हुई बातों के आधार पर क्या हुआ?

स.१४८- उस प्रेम-संवाद में श्री राजजी ने खेल के विषय में क्या भविष्य बताया?

ज.१४१- पाँचवीं भोम में सखियों सहित श्री राजश्यामाजी रात्रि के नौ बजे से सुबह छः बजे तक शयन लीला करते हैं। यहाँ विलास के स्वरूप की लीला होती है।

→ सुबह-सुबह श्री राजजी तीसरी भोम के छज्जे में छत्री के नीचे खड़े होकर पशु-पक्षियों को दर्शन देते हैं और सातों घाटों (बगीचों) को अमीरस दृष्टि से सींचन करते हैं। प्रतिदिन इसी तरह छः बजे से उक्त लीला शुरू होती है।

ज.१४३- तीसरी भोम में पड़साल, देहलान और चबूतरा-इन तीनों ने मिलकर कमाल की शोभा-सुन्दरता धारण की है, जो सबसे निराली है।

ज.१४४- श्री राजश्यामाजी दोपहर को राजभोग आरोगने की लीला के पश्चात् ठीक बारह बजे से लेकर तीन बजे तक नीले-पीले मंदिर में आराम-विश्राम करते हैं।

ज.१४५- सखियाँ दैनिक श्री राजश्यामाजी को पौढ़ाने के बाद दोपहर बारह बजे से तीन बजे तक पचीस पक्ष के विभिन्न स्थानों में स्वतंत्र स्वच्छंदरूप से रमतीं हैं।

→ को संसार में भेजकर मायावी नाटक दिखाऊँगा और इसी बहाने इन्हें धाम की पातशाही और अपने सच्चे प्रेम का अनुभव भी कराऊँगा, ऐसा चित्त में लिया।

ज.१४७- श्री राजजी द्वारा चित्त में धारण की हुई बातों के प्रतिफल आज सुबह नौ बजे अक्षर ब्रह्म और सखियों ने एक-दूसरे को देखा, जिसके कारण *"प्रेम-संवाद"* हुआ।

ज.१४८- आज श्री राजजी और सखियों के बीच प्रेम-संवाद में श्री राजजी ने सर्वप्रथम सखियों को बता दिया, "खेल दुस्तर है! देखने योग्य नहीं है!!" *"धनी बरजे बेर बेर बेर"* अर्थात् धनी ने →

→ सखियों को खेल देखने की जिद् के लिए बारम्बार मना किया। परंतु सखियों ने भी उनकी बातों पर अविश्वास प्रकट करते →

स.१४९- तले की भोम में स्थित मूल मिलावे के चौक में श्री राजजी ने सखियों को कब बैठाया अर्थात् प्रेम-संवाद के पहले या प्रेम-संवाद के बाद?

ज.१४९- तले की भोम में स्थित पाँचवें चौक-मूल मिलावे में श्री राजजी →

स.१५०- खेल में उतरने से पहले श्री राजजी ने सखियों को खेल के विषय में क्या कहा?

ज.१५०- खेल में उतरने से पूर्व श्री राजजी ने सखियों से कहा, "देखो! →

स.१५१- श्री राजजी की प्रेरणा से अक्षर ब्रह्म ने कैसे खेल की रचना की?

ज.१५१- जब प्रेम-संवाद में मनाने पर भी सखियाँ नहीं मानी, तब श्री →

स.१५२- पुनः श्री राजजी के हुकम (आदेश) ने सखियों को मूल मिलावे से कहाँ पहुँचा दिया? खेल में आकर सखियाँ अपने-आप को क्या मानने लगीं?

ज.१५२- मूल मिलावे में बैठते ही सखियों के ऊपर श्री राजजी ने नींदरूपी फरामोशी डाल दी। तब अक्षर ब्रह्म नींद में स्वप्न देखने लगे। →

स.१५३- धाम की सखियाँ ब्रजमण्डल में कितने समय तक रहीं? पुनः ब्रज से कैसे-किस प्रकार रासमण्डल में पहुँचीं और वहाँ क्या-क्या अनुभव किया?

→ हुए *"तब हम मांग्या फेर फेर फेर"* अर्थात् बार-बार खेल दिखाने की माँग की। अतः तत्पश्चात् श्री राजजी ने सखियों को आद-अनादरूपी भविष्य बता दिया।

→ ने सखियों को प्रेम-संवाद और आद-अनाद के प्रतिफलरूप कारण बताने के बाद बैठाया अर्थात् सर्वप्रथम प्रेम-संवाद हुआ। प्रेम-संवाद के बाद श्री राजजी ने सखियों को आद-अनाद की जानकारी दी और तत्पश्चात् वे सखियों को तीसरी भोम से प्रथम भोम-मूल मिलावे के चौक में ले गये। उस वक्त दिन के साढ़े चार बजे थे।

→ तुम सब खेल में जा रही हो। किन्तु माया बड़ी बलवन्ती है। खेल में जाकर मुझे भूलना नहीं।" तब सखियों ने कहा, "हम आपको भूलकर भला जी भी सकेंगे? हम आपको कदापि, किसी काल में नहीं भूलने का वचन दे रहे हैं।"

→ राजजी ने अक्षर ब्रह्म को प्रेरणा की कि अब तुम असत्, जड़, दुःखमय सृष्टि का विस्तार करो। तब अक्षर ब्रह्म ने इस सृष्टि का विस्तार किया।

→ स्वप्न में सखियाँ धाम छोड़कर नारायणी सृष्टि के चौदह लोक, चौदह लोक में भी मृत्युलोक, मृत्युलोक के सात द्वीपों के जम्बू द्वीप, जम्बू द्वीप के नौ खण्डों में भी भरतखण्ड के ब्रजमण्डल में उतरीं और अपने-आप को *"हम कुलवधू नार"* अर्थात् ब्रजमण्डल की गोपियाँ, अपने को कुल की रक्षक मानने लगीं तथा यह सोचकर खेल में तल्लीन हो गईं कि कोई आपत्ति-विपत्ति उन पर नहीं पड़ेगी।

ज.१५३- श्री अक्षरातीत धाम की सखियाँ ब्रजमण्डल में ग्यारह वर्ष बावन दिनों तक रहीं। तत्पश्चात् बंसी-ध्वनि के कान में पड़ते ही वे ब्रजमण्डल को छोड़कर रास के ब्रह्माण्ड में पहुँच गयीं। योगमाया →

→ अर्थात् महारास के ब्रह्माण्ड में सखियों ने विरह-विलास दोनों →

स.१५४- ब्रज और रास में रमण करनेवाली ये धाम की सखियाँ तीसरे जागनी के ब्रह्माण्ड में क्यों आईं अथवा उन्हें किस कारण से आना पड़ा?

ज.१५४- ब्रज और रास में रमण करनेवाली सखियों की ब्रज और →

स.१५५- कौनसे स्वरूप पुनः अरब में मुहम्मद साहेब के रूप में प्रकट हुये?

ज.१५५- वे ही स्वरूप जिन्होंने महारासमण्डल में रास रचाया था, रास →

स.१५६- वे स्वरूप अरब में क्यों-किस लिए आये और वहाँ उन्होंने कौनसे मुख्य कार्य किये? वे संसार में कितने साल रहे?

ज.१५६- ये तृतीय श्याम स्वरूप अरब के बसरा शहर में प्रकट होकर चालीस साल की उम्र में नूर परे नूर तजल्लाह पहुँचकर खुदा →

स.१५७- दसवीं सदी में कौन आये? पुनः वे कहाँ से आये और क्या लेकर आये?

ज.१५७- दसवीं सदी में रूह अल्लाह श्री श्यामाजी अवतार श्री →

स.१५८- ये स्वरूप कितने साल तक तपस्या करते रहे और धाम की कितनी आत्माओं को जागृत किया?

ज.१५८- रूह अल्लाह-श्यामाजी अवतार श्री देवचन्द्रजी निरंतर पैंतीस →

→ देखा तथा दोनों का अनुभव किया।

→ रासमण्डल में असत्, जड़, दुःखरूपी खेल देखने की इच्छा पूरी नहीं हो सकी। उनमें से भी विशेषकर छः हजार तामसी सखियों ने व्रज और रास में दुःख का लेशमात्र भी अनुभव नहीं किया। अतः अपनी इसी इच्छा के फलस्वरूप उन्हें इस तीसरे-जागनी के ब्रह्माण्ड में आना पड़ा।

→ लीला के पश्चात् बरारब में आये, जिन्हें संसार में मुहम्मद साहेब के नाम से जाना गया। इन्हें तृतीय श्याम स्वरूप भी कहते हैं।

→ से मिले। खुदा से मिलकर नब्बे हजार हरफ सुनकर मोमिनों के लिए साक्षी लेकर आये। धाम के मोमिन आत्माओं की सारी साक्षियाँ कुरान में लिखी हुई हैं। तीस हजार वचनों द्वारा मुहम्मद साहेब ने बसरा में मुसलिम धर्म-मार्ग चलाया। पुनः रूह अल्लाह सहित ब्रह्मात्माओं के आने का और कयामत के समय का भविष्य रखा। यही उनका मुख्य कार्य है। वे इस संसार में तिरसठ वर्ष तक रहे।

→ देवचन्द्रजी आये। उन्होंने निरन्तर पैंतीस साल मेहनत करके श्री राजजी को प्रसन्न किया और तीन-तीन बार उनके दर्शन भी किये। पुनः इन्होंने अक्षरातीत ब्रह्मधाम से ब्रह्मतारक तारतम महामंत्र-नूर कुंजी अवतरित की।

→ साल तक खोज करते रहे। तत्पश्चात् ब्रह्मतत्त्व-नूर कुंजी श्री तारतम महामंत्र प्राप्त करने के बाद चौंतीस साल तक उस नूर कुंजी के माध्यम से कुल ३९३ ब्रह्मात्माओं को जागृत किया।

स.१५९- रूह अल्लाह श्री देवचन्द्रजी को कुरान में किस विषय के संकेत मिले?

ज.१५९- रूह अल्लाह-श्यामाजी अवतार श्री देवचन्द्रजी, जिन्होंने →

स.१६०- प्रातः काल के समय में पचीस पक्ष-श्री परमधाम के बिरत की चर्चा सुन्दरसाथजी ने किनके संरक्षण में सुनी?

स.१६१- तारतम सम्बन्धी ब्रह्मलीला का विस्तार कहाँ तक है? पुनः ये गुह्य भेद कौनसी आत्माएँ ही समझतीं हैं?

ज.१६१- इस तारतम सम्बन्धी लीलाओं का विस्तार बहुत बड़ा है क्योंकि →

स.१६२- बिरत की चर्चा श्रीजी स्वरूप सुख-शय्या पर लेटे-लेटे कब तक सुनते हैं?

स.१६३- सेवा की महिमा-महत्त्व जानने के बाद सुन्दरसाथ क्या कर रहे हैं और किनके इंतजार में खड़े हैं?

स.१६४- बीतककार श्री लालदासजी इस समय सुन्दरसाथजी से क्या कहते हैं और इसके उपरान्त क्या वर्णन करने की सूचना दे रहे हैं?

ज.१६४- बीतककार श्री लालदासजी महाराज इस समय सुन्दरसाथजी से कहते हैं, "हे ब्रह्ममुनियों! अब तक श्री बंगलाजी में धनी श्री प्राणनाथजी की आठों पहर में होनेवाली सेवा का वर्णन →

→ चौहत्तर वर्ष तक संसार में रहकर तीन सौ तेरह ब्रह्मात्माओं की जागनी की, उन्हें कुरान ग्रंथ में भी श्री परमधाम के कुछ संकेत मिले।

ज.१६०- प्रातः काल के समय में पचीस पक्ष-श्री परमधाम के बिरत की चर्चा समस्त सुन्दरसाथजी ने महामति श्री प्राणनाथजी के संरक्षण में सुनी।

→ इसी लीला के ज्ञान द्वारा मायावी जीवों का उद्धार है। यसर्थ इस लीला का विस्तार महाप्रलय तक होते रहेगा। ये गुह्य भेद ब्रह्मात्माएँ ही समझ सकेंगीं, अन्य जीवात्माएँ नहीं।

ज.१६२- बिरत की चर्चा श्रीजी स्वरूप दैनिक पलंग पर लेटे-लेटे सूर्योदय तक बराबर सुनते हैं।

ज.१६३- सेवा की महिमा-महत्त्व जाननेवाले-समझनेवाले सुन्दरसाथ अपनी-अपनी सेवा में तत्पर हैं। सेवा करने के इंतजार में पहले से ही खड़े हैं।

→ किया गया। अब इसके उपरान्त धामधनी के परिवार अर्थात् धामधनी के साथ यहाँ श्री बंगलाजी में उपस्थित श्री सुन्दरसाथजी की जिन-जिन ब्रह्ममुनियों ने धनी के दिल के अनुकूल सेवा की, उन सेवा-भावी ब्रह्ममुनियों के नाम और उनके द्वारा किए गए सेवा-कार्य का वर्णन करेंगे। अतः ध्यानपूर्वक प्रेम से सुनने की विनंती है।"

- (प्रकरण ७१, सवाल-जवाब नं. १६४, कुल सं.५२६२+१६४ =५४२६)।

❀ छत्तीस कारखाना ❀

स. १ - सुन्दरसाथ को सौंपे गये नियमित सेवा-कार्य के भिन्न-भिन्न कितने विभाग उल्लेखित हैं?

स. २ - सम्पूर्ण विभागों के दीवान पद का कार्य सर्वप्रथम किसने किया?

स. ३ - गरीबदास भाई उक्त सेवा कहाँ से करते आये थे और नित्य ही वे श्रीजी के आगे क्या प्रार्थना किया करते थे और क्यों?

ज. ३ - दीवानगिरी का कार्य गरीबदास भाई सूरत से ही करते आये थे। →

स. ४ - गरीबदास भाई ने बड़ी व्याकुलतापूर्वक उक्त विनय कहाँ किया है?

स. ५ - गरीबदास भाई की व्याकुलता देखकर श्रीजी ने उक्त सेवा-कार्य किसे सौंप दिया?

स. ६ - बीच में कौनसा कार्य आ पड़ा, जिसके कारण दीवानगिरी की सेवा लालदासजी से लेकर पुनः वृन्दावन भाई को सौंपनी पड़ी?

स. ७ - पुनः जिस कार्य के लिए श्रीजी लालदासजी को भेज रहे थे, वह कार्य क्यों स्थगित कर दिया गया?

ज. ७ - श्रीजी द्वारा दिये गये आदेश के विषय में लालदासजी संकट में पड़ गये क्योंकि दिल्ली से लौटते समय वे शेख इसलाम काज़ी →

❀ छत्तीस कारखाना ❀

ज. १ - श्री पन्ना धाम में अष्ट पहर की जो-जो सेवाएँ सुन्दरसाथ को सौंपी गईं, उन नियमित सेवा-कार्यों के भिन्न-भिन्न छत्तीस विभाग उल्लेखित हैं।

ज. २ - सम्पूर्ण विभागों के दीवान पद का कार्य सर्वप्रथम सूरत से ही गरीबदास भाई ने किया।

→ किन्तु वे रामनगर पहुँचकर नित्य ही श्रीजी के आगे प्रार्थना किया करते थे, "अब मुझसे यह सेवा-कार्य किसी प्रकार नहीं हो पा रहा है। अवस्था के कारण शरीर साथ नहीं देता। अतः सेवा में ठीक-ठीक पहुँच नहीं पा रहा हूँ।"

ज. ४ - गरीबदास भाई ने बड़ी व्याकुलतापूर्वक उक्त विनय रामनगर पहुँचकर किया है और हाथ जोड़कर श्रीजी से कहा, "हे धनी! यह सेवा-कार्य आप किसी अन्य साथी को सौंपने की कृपा कीजिये।"

ज. ५ - गरीबदास भाई द्वारा की गई व्याकुलतापूर्वक विनती के कारण श्रीजी ने दीवानगिरी का सेवा-कार्य लालदासजी को सौंप दिया।

ज. ६ - धर्म अभियान का जुलूस जब गढ़ा पहुँचा, तब श्रीजी ने लालदासजी को बादशाह औरंगजेब के पास सन्देश पहुँचाने का आदेश दिया। अतः इस कारण दीवानगिरी की सेवा लालदासजी से लेकर पुनः वृन्दावन भाई को सौंपनी पड़ी।

→ से हुए झगड़े के दौरान प्रतिज्ञा करके आए थे, "आज के बाद मैं आपका मुख देखने कभी नहीं आऊँगा।" इसतरह लौट आये थे। पुनः वे श्रीजी साहेब की आज्ञा भी ठुकरा नहीं सकते थे। अतः इस दुविधा में उन्होंने कुरान का फाल देखा। उस फाल में मूसा और हारून की आयत मिलने पर लालदासजी ने वह बात श्रीजी →

→ को बताई और श्रीजी ने लालदासजी को बादशाह के पास जाने →

स. ८ - तत्पश्चात् श्रीजी ने लालदास महाराज को दिल्ली न भेजकर कहाँ भेजा? क्यों?

ज. ८ - श्रीजी ने सोचा कि लालदासजी द्वारा देखे गए फाल के अनुसार अब उन्हें एक ईमानदार राजा मिलेगा और वह अवश्य ही धाम →

स. ९ - वृन्दावन भाई ने दीवानगिरी की सेवा सँभालने में असमर्थता कब प्रकट की?

स. १०-तत्पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने दीवानगिरी का सेवा-कार्य किन्हें सौंपा?

स. ११-श्रीजी साहेबजी ने खजाने की कुंजी भेजकर लालदासजी से क्या कहा?

स. १२-छत्तीस कारखानों की सम्पूर्ण देख-रेख का दायित्व श्रीजी ने किन्हें सौंपा है?

स. १३-अब लालदासजी वह सेवा किस तरह उठाने लगे?

ज. १३- अब लालदासजी महाराज जब भी जिन्हें जो कुछ भी वस्तु आवश्यक होती, तुरंत ही वे वस्तुएँ उन्हें पहुँचा देते हैं। श्रीजी →

स. १४-लालदासजी प्राय: विशेषकर किनसे सलाह लिया करते हैं और क्यों? वे उनसे किन-किन विषयों की सलाह लिया करते हैं?

ज. १४- लालदासजी प्राय: विशेषकर श्री बाईज्यूराजजी से सलाह लिया →

→ का दिया हुआ आदेश स्थगित कर दिया।

→ की आत्मा में होगा। अतः इस राजा द्वारा कार्य के सफल होने की सूचना पाकर श्रीजी ने लालदासजी को देवकरण भाई की मदद हेतु पन्ना (मऊ) भेज दिया क्योंकि उन्हें लगा कि कहीं संदेश पहुँचाने में देरी होने के कारण छत्रसाल भी अपने हाथ से न निकल जायें।

ज. ९ - वृन्दावन भाई ने दीवानगिरी की सेवा सँभालने में असमर्थता तब प्रकट की, जब लालदासजी छत्रसाल से मिलकर वापस आये।

ज. १०- तत्पश्चात् श्रीजी साहेबजी ने खजाने की कुंजी भेजकर दीवानगिरी का सेवा-कार्य पुनः लालदासजी को ही सौंप दिया।

ज. ११- खजाने की कुंजी भेजकर श्रीजी साहेबजी ने लालदासजी को आदेश दिया, "यह सेवा श्री राजजी की आज्ञा से ही पुनः आपके हाथ में आई है। अतः आप ही यह सेवा कीजिए।"

ज. १२- छत्तीस कारखानों की सम्पूर्ण देख-रेख का दायित्व श्रीजी ने लालदासजी को सौंपा है।

→ स्वरूप सहित श्री बाईज्यूराज तथा अन्य सभी सुन्दरसाथ के लिए नित्य प्रति नये-नये रंग के शोभायुक्त वस्त्र और आभूषण प्रेम से उनकी सेवा में पहुँचा देते हैं।

→ करते हैं क्योंकि वे सभी प्रकार की सेवा में मूल से ही उपस्थित रहती हैं और इसीलिए उन्हें प्रायः सभी बातें मालूम होती हैं। यसर्थ लालदासजी प्रायः उनसे पूछा करते हैं, "श्रीजी को आज कौन-कौनसी वस्तुएँ, वस्त्राभूषण आदि चाहिए?" तत्पश्चात् उनके द्वारा इच्छित वस्त्राभूषण, साज-सज्जा, सिंगारादि की वस्तुएँ लालदासजी उनकी सेवा में पहुँचा देते हैं।

स. १५-श्रीजी साहेबजी, श्री बाईज्यूराज एवम् समस्त सुन्दरसाथ के लिए लालदासजी दैनिक कौन-कौनसी वस्तुएँ पहुँचाने की सेवा करते हैं?

स. १६-मोदीखाने के अंतर्गत किन-किन चीजों का समावेश होता है?

स. १७-छत्तीस कारखानों में से अलग-अलग वस्तुओं के किन्हीं सात विभागों के नाम सहित स्पष्ट करो कि उस विभाग में क्या-क्या आता है?

ज. १७- छत्तीस कारखानों (कोठारों) में क्रमशः - १) अनाज आदि का, जिसमें आटा, मैदा, ज्वार, बाजरा आदि का समावेश है। २) शाक-सब्जी का, जिसमें सभी शाक, सब्जियाँ, मसाला आदि →

स. १८-श्री लालदासजी हमेशा ही श्रीजी साहेबजी की सेवा में उपस्थित क्यों रहते हैं तथा वे सेवा-कार्य का नियम किस तरह निभाते हैं?

स. १९-धर्मदास और घनश्याम भाई कौन-कौनसे सेवा-कार्य में सम्मिलित हैं?

स. २०-दौलतखाना कोष में धर्मदास भाई को सहयोग देने की सेवा कौन-कौन करते हैं?

ज. १५- श्रीजी साहेबजी, श्री बाईज्यूराज एवम् समस्त सुन्दरसाथ के लिए लालदासजी दैनिक नये-नये रंगों के शोभायुक्त वस्त्र और आभूषण पहुँचाने की सेवा प्रेम से करते हैं।

ज. १६- मोदीखाने के अंतर्गत सभी प्रकार के अनाज, दाल, चावल, आटा, मैदा, ज्वार, बाजरा आदि हरेक प्रकार के अनाजों का समावेश रहता है।

→ हैं। ३) दूध, दही आदि का, जिसमें दूध, दही, तेल, घी आदि आता है। ४) वस्त्र, आभूषण का जिसमें सूत, रूई, साज-सिंगार के वस्त्र, आभूषण आदि आते हैं। ५) दवाइयों का, जिसमें विभिन्न दवाइयाँ, कस्तूरी, हरड़े आदि आते हैं। ६) वाद्य-सामग्रियों का जिसमें ताल, मृदंग आदि वाद्ययंत्रों का समावेश है। ७) गौशाला- जिसमें गाय, भैंस, भेड़, बकरी, उनकी खाद्य-सामग्रियों आदि का समावेश है। इस प्रकार सारी व्यवस्था कुल छत्तीस भागों में विभक्त है।

ज. १८- श्री लालदासजी हमेशा ही श्रीजी साहेबजी की सेवा में उपस्थित रहते हैं, जिससे कि कभी भी किसी कार्य में विलम्ब न हो। इस प्रकार वे अपने सेवा-कार्य का नियम बड़े ध्यानपूर्वक पालन करते हैं।

ज. १९- धर्मदास भाई दौलतखाना कोष में से रुपयों के लेन-देन की सेवा करने की सेवा करते हैं और घनश्याम भाई दफ्तर में बैठकर आय-व्यय का हिसाब रखने की सेवा करते हैं।

ज. २०- दौलतखाना कोष में धर्मदास भाई को सहयोग देने की सेवा सन्तदास, चतुरदास, मानिक भाई और कल्याण भाई करते हैं।

स. २१-खजाने की सेवा सर्वप्रथम किसने की और उनके बाद वह सेवा कौन-कौन करते गये?

स. २२-वस्त्रखाना में कौन-कौन भाई सेवा करते हैं? खेमकरन भाई श्रीजी के लिए और अन्य साथ के लिए कौनसी सेवा करते हैं?

स. २३-सर्वप्रथम वस्त्रखाना की सेवा कौन करते हैं? तत्पश्चात् वह सेवा किसके पास आई?

ज. २३- वस्त्रखाने में से वस्त्र आदि निकालकर देने की सेवा श्रीजी →

स. २४-क्या यहाँ धामधनी श्रीजी साहेबजी की सेवा करनेवाले सभी साथ का नाम आ गया? इस विषय में बीतककार श्री लालदासजी महाराज यहाँ क्या कह रहे हैं?

ज. २४- यहाँ धामधनी श्रीजी साहेबजी की सेवा करनेवाले सभी साथ का नाम नहीं आया। इस विषय में बीतककार श्री लालदासजी →

❋ गरमी के दिनों की सेवा ❋

स. १ - गर्मी के दिनों में कैसी-कैसी चीजों की व्यवस्था करने की जरूरत पड़ती है?

ज. १ - पन्ना धाम में गर्मी के मौसम में अत्यंत गर्मी होती है और ठण्डी के मौसम में अत्यंत ठण्डी होती है। अतः गर्मी के दिनों में ठण्डी →

ज. २१- दौलतखाना कोष में खजाने की सेवा सर्वप्रथम भिखारीदास ने की। कुछ दिनों के बाद वह सेवा-कार्य मकरन्द भाई को सौंपा गया। पुनः उनके बाद वही सेवा करने की आज्ञा गीगा भाई को हुई।

ज. २२- वस्त्रखाना का सेवा-कार्य सँभालने की सेवा मकरन्द भाई और खेमकरन भाई की है। खेमकरन भाई समस्त सुन्दरसाथ सहित धामधनी श्री प्राणनाथजी के वस्त्रों को प्रेम से सँभालकर रखने और देने-लेने की सेवा करते हैं।

→ साहेबजी की आज्ञानुसार सर्वप्रथम नारायणदासजी ने की। यह सेवा वे बड़े प्रेम से करते हैं। उनके बाद पुनः वह सेवा-कार्य खेमकरन भाई को सौंप दिया गया।

→ महाराज यहाँ कह रहे हैं, "उक्त प्रकार प्रेम से दिल लगाकर सेवा करनेवाले साथ में से कुछ सुन्दरसाथ का ही उल्लेख यहाँ हुआ है। किंतु जिन ब्रह्ममुनियों को धनी के चरणों से प्रेम है, उन्होंने तो सदैव ही तत्परतापूर्वक एक पैर से सेवा में उपस्थित रहकर सेवा की रीत निभायी है।"

- (प्रकरण ७२, सवाल-जवाब नं. २४, कुल सं. ५४२६+२४ =५४५०)।

❋ गरमी के दिनों की सेवा ❋

→ करने के लिए आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था करने की जरूरत पड़ती है। यसर्थ पन्ना धाम में ठण्डी करने के लिए सभी प्रकार की सुगन्धित वस्तुओं की व्यवस्था की गयी है। हर प्रकार के इत्र खरीदे जाते हैं और गुलाब जल के बड़े-बड़े शीशे भरकर लाए जाते हैं।

स. २ - गंगाराम भाई की जिम्मेदारी में कौन-कौनसे सेवा-कार्य हैं?

ज. २ - गंगाराम भाई की जिम्मेदारी में अगर, चोवा आदि सुगन्धित वस्तुएँ →

स. ३ - गंगाराम भाई अपने हाथों से बंगलाजी में कौन-कौनसी सेवा करते हैं और उस सेवा में उन्हें कौन-कौन सहयोग देते हैं?

ज. ३ - गंगाराम भाई स्वयं अपने हाथों से बंगलाजी में खस (घास की →

स. ४ - बंगलाजी में खस की टट्टियों को बाँधने की सेवा में कौन-कौन शामिल हैं?

स. ५ - लकड़ी का काम आने पर किन्हें बुलाया जाता है?

स. ६ - जंगल से चुन-चुनकर बाँस की कमचियाँ कौन भाई और किसमें लाते हैं?

स. ७ - जग्गु भाई और बीरजी भाई कौनसी सेवा करते हैं?

स. ८ - नारायणदासजी क्या लेकर आते हैं और क्यों?

स. ९ - खसखाना तैयार करने की सेवा में कौन-कौन संलग्न हैं? पुनः खसखाना किनके लिए बनाया गया है?

स. १०-इनायत खाँ, भगवानदास और गंगाराम-ये तीनों भाई मिलकर कौनसी सेवा करते हैं?

→ खरीदकर लाने और सँभालकर व्यवस्थित रखने की सेवा मुख्य है। पुनः खुशबोयखाना के साथ खसखाने की सेवा भी इनकी ही जिम्मेदारी में हैं।

→ एक प्रसिद्ध सुगन्धित जड़) की टट्टियाँ-चिकें (एक प्रकार की पर्दारूपी पतली भीत) बनाते हैं। छप्पर-छत को पानी से सींचते हैं। यह सेवा-कार्य गंगाराम भाई बड़े प्रेम से करते हैं। इस सेवा-कार्य में अन्य साथी भी उन्हें सहयोग पहुँचाते हैं।

ज. ४ - बंगलाजी में खस की टट्टियों को बाँधने की सेवा में गंगाराम भाई के साथ ओका भाई, कृष्णदास भाई, दयालदास भाई और मुहम्मद खाँ भाई शामिल हैं।

ज. ५ - लकड़ी का काम आने पर मोहन भाई और हीरामन भाई को बुलाया जाता है।

ज. ६ - जंगल से चुन-चुनकर बाँस की कमचियाँ पुरबिया भाई बैलगाड़ी में लादकर लाते हैं।

ज. ७ - सूचना मिलते ही जग्गु भाई और बीरजी भाई बाँस की कमचियों को सँवारने की सेवा के लिए तुरन्त उपस्थित हो जाते हैं।

ज. ८ - नारायणदासजी टट्टियों की किनार पर लाल कपड़े की गोट-किनारी लगाने के लिए लाल वस्त्र लाने की सेवा करते हैं।

ज. ९ - खसखाना तैयार करने की सेवा में समस्त सुन्दरसाथ संलग्न रहते हैं। यह खसखाना श्रीजी साहेबजी के लिए बनाया गया है। इसके अन्दर श्रीजी साहेबजी शयन करते हैं।

ज. १०- इनायत खाँ, भगवानदास और गंगाराम भाई-ये तीनों जन मिलकर सभी बिछौने उठाकर श्री बंगलाजी में जल छिड़कने की सेवा बड़े प्रेम से करते हैं।

स. ११-बिहारीदास भाई और वीरजी मोदी कौन-कौनसी सेवा करते हैं?

ज. ११- बिहारीदास भाई बिछौना उठाने की सेवा करते हैं। अन्य →

स. १२-नन्दराम भाई और वल्लभदास भाई बंगलाजी में कौन-कौनसी सेवा करते हैं?

ज. १२- नन्दराम भाई बाल्टी में पानी भरकर लाने की सेवा करते हैं और →

स. १३-जो साथी श्रीजी साहेबजी के समीप रहते हैं, वे कैसे-किस तरह श्रीजी की सेवा में उपस्थित रहते हैं?

स. १४-शंकरदास के हाथ में क्या रहता है और वे क्या करते हैं? जब महाराजा छत्रसाल आते हैं, तो वे कौनसी सेवा में संलग्न हो जाते हैं?

स. १५-हवा हाँकनेवाले साथी कबसे, कब तक हवा करने के लिए तत्पर रहते हैं?

स. १६-श्रीजी को हवा करनेवाले मुख्य चार भाई कौन-कौन हैं?

ज. १६- श्रीजी साहेबजी को शयन के समय में पंखों द्वारा हवा करनेवाले →

स. १७-उक्त चारों भाई विशेषकर किस समय श्रीजी के पास उपस्थित रहते हैं?

→ सुन्दरसाथ इन्हें इस सेवा में सहायता करते हैं। पुनः वीरजी मोदी श्रीजी को दिव्य परमात्मा स्वरूप मानकर श्री बंगलाजी में जल छिड़कने की सेवा करते हैं।

→ वल्लभदास भाई भूमि-फर्श पर जल छिड़कने की सेवा करते हैं अर्थात् ये दोनों भाई मिलकर बंगलाजी के फर्श को पानी से तर कर देते हैं, जिससे कि गर्मी अन्दर न पैठ सके।

ज. १३- श्रीजी साहेब श्री प्राणनाथजी के समीप रहनेवाले साथी बराबर एक पाँव पर सदैव श्रीजी की सेवा में तत्पर रहते हैं और पंखों से हवा करते हैं।

ज. १४- शंकरदास के हाथ में सदैव पंखा रहता है। इसके द्वारा वे श्रीजी स्वरूप को हवा करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। जब महाराजा छत्रसाल आते हैं, तो वे भी श्रीजी स्वरूप को हवा करने की सेवा स्वयं अपने हाथों से करने लगते हैं।

ज. १५- हवा हाँकनेवाले साथी जब श्रीजी पलंग पर शयन करने आते हैं, तब से लेकर जब तक श्रीजी पलंग पर शयन करते हैं, तब तक पंखों से हवा हाँकने की सेवा में तत्पर रहते हैं।

→ चार मुख्य भाई हैं-गंगादास भाई, गंगाराम भाई, बिहारीदास भाई और सन्तदास भाई। ये चारों उक्त सेवा में निष्ठाबन्धरूप से उपस्थित रहते हैं।

ज. १७- उक्त चारों भाई शयन के समय सदैव श्रीजी साहेबजी की सेवा में उपस्थित रहते हैं। इन भाइयों की तरह अन्य साथी भी इस सेवा में संलग्न रहते हैं।

स. १८-बंगलाजी में अन्य सुन्दरसाथ स्वामीजी के सम्मुख किस लिए तैयार खड़े रहते हैं?

स. १९-श्रीजी साहेबजी की सेवा में पहले कौन थे और उनके बाद वह विशेष सेवा किसने की?

स. २०-कौन-कौन भाई सभी अंगों से श्रीजी की सेवा करने में तत्पर रहते हैं?

स. २१-कौन-कौनसी स्त्रियाँ श्रीजी की सेवा में तत्पर रहतीं हैं? अन्त में उनके द्वारा की गई सेवा किसने की?

स. २२-हकीकत खाँ श्रीजी की सेवा में क्या भिजवाते हैं? पुनः गंगाराम भाई श्रीजी की सेज के ऊपर क्या छिड़कते हैं?

स. २३-प्रेमदास भाई महीन-पतले वस्त्र किन-किनके लिए लाते हैं? यह सेवा बाद में किसने उठाई? पुनः यह सेवा अंत में किन्हें सौंपी गई?

स. २४-किस भाई ने सेवा-धर्म का पालन करते हुए प्रसन्नता का अनुभव किया?

स. २५-इस समय पोरबन्दर से कौन भाई आये और वे कौन-कौनसी सेवा करते हैं?

ज. १८- बंगलाजी में अन्य सुन्दरसाथ सेवा करने के लिए सदैव स्वामीजी के सम्मुख तैयार खड़े रहते हैं।

ज. १९- श्रीजी साहेबजी की सेवा में पहले निर्मलदास रहते थे। उनके बाद प्रेमदास भाई ने विशेषरूप से वह सेवा की।

ज. २०- निर्मलदास सहित लालदास, मुकुन्ददास और गोविन्ददास एवम् सुरती भाई सभी अंगों से प्रेमपूर्वक श्रीजी की सेवा करने में सदा तत्पर रहते हैं।

ज. २१- जमुनाबाई, मानिकबाई और रामबाई हमेशा श्रीजी की सेवा में तत्पर रहतीं हैं। अन्त में उनके द्वारा की गई सेवा वल्लभदास भाई ने अत्यंत निकट रहकर की।

ज. २२- हकीकत खाँ गुलाब जल से भरी हुई शीशियाँ श्रीजी की सेवा में भिजवाते हैं। पुनः हकीकत खाँ द्वारा भेजे हुए गुलाब जल को श्रीजी के सेज के ऊपर छिड़कने की सेवा गंगाराम भाई करते हैं।

ज. २३- प्रेमदास भाई महीन-पतले वस्त्र श्रीजी साहेबजी और सुन्दरसाथजी के लिए लाते हैं। यह सेवा इनके बाद श्रीजी साहेबजी की इच्छा से नन्दराम भाई ने उठाई। पुनः यह सेवा अंत में वल्लभदास भाई को सौंपी गई।

ज. २४- वल्लभदास भाई ने सेवा-धर्म का पालन करते हुए बहुत प्रयासपूर्वक खोज-खोजकर सेवा करने में प्रसन्नता का अनूठा अनुभव किया।

ज. २५- इस वक्त पोरबन्दर से मावजी भाई आये। ये भाई श्रीजी की ओर से सुन्दरसाथ को चिट्ठी-पत्री लिखने की और अनार का फल रखने की सेवा करते हैं।

स. २६-उक्त वर्णित सेवाओं के विषय में बीतककार श्री लालदासजी क्या कहते हैं?

ज. २६- उक्त वर्णित सेवाओं के विषय में बीतककार श्री लालदासजी →

स. २७-महामति श्री प्राणनाथजी स्वरूप कब और किसे प्रसन्न होकर प्यार से अपने पास बुलाते हुए ले गए?

ज. २७- इस समय बीतककार श्री लालदासजी श्री प्राणनाथजी के चरणों में प्रणाम करते हैं। श्री प्राणनाथजी प्रसन्न होकर प्यार से उन्हें →



➞ महाराज कहते हैं, "यहाँ इस सेवा में वे आत्माएँ ही उपस्थित हो सकतीं हैं, जिन-जिन आत्माओं की बाँह धनी श्री राजजी ने पकड़ी हुई है।" अतः *"इहां तेही खड़े रहे, जाके धनीएं पकड़े हाथ।"*

➞ अपने पास बुलाते हैं और उन्हें लेकर परमधाम की ओर प्रस्थान करते हैं। जाते समय श्री लालदास महाराज सब सुन्दरसाथ को प्रणाम-प्रणाम बोलते हुए धनी के साथ चले गए।

- (प्रकरण ७३, सवाल-जवाब नं. २७, कुल सं. ५४५०+२७=५४७७)।

उत्तरांश - तृतीय खण्ड समाप्त।



नोट :-

यशवन्ती कहे मेरे श्रद्धा सुमन साथजी !

आपश्री घर में ही बैठे-बैठे, जरूर यह मनन करनाजी ।

मनन करके प्रेम धरके, शीघ्र ही परमधाम आनाजी ।।

यशवन्ती सखी कहे.....

- प्रणाम



आह्वान



निसदिन रंग मोहोलन में, साथ स्यामाजी स्याम ।
याद करो सुख सबों अंगों, जो करते आठों जाम ।।

- (परिक्रमा, प्र.४/चौ.५) ।

अर्थः- हे मेरे धामस्थ सुन्दरसाथजी !

हम सब अक्षरातीत ब्रह्मधाम-श्री रंगमहल में रात-दिन श्री श्यामश्यामाजी के साथ कैसे रहा करती थीं ? अपने अंग-प्रत्यंग से उन सुखों को याद करो, जिन्हें हम आठों पहर-चौबीसों घण्टों की लीलाओं द्वारा निरंतर प्राप्त किया करतीं थीं ! इतना तो करो !!

- लेखक

- श्री राज -

श्री प्राणनाथ ज्ञान केन्द्र चे. ट्रस्ट तथा श्री प्राणनाथ महिला मंडल (रजि.) बोरीवली, मुंबई

का ई. स. १९९८ से २०१४ तक का प्रकाशन -

१. विवरण पत्रको समीक्षा - नेपाली

२. विवरण पत्र की समीक्षा } (ई. स. १९७८ में नेपाल-धरान मंदिर से प्रकाशन हुआ है) - हिन्दी

३. मोहजलको पाँच प्रकरण - नेपाली

४. श्री दीनदयाल सूक्ति - हिन्दी to English

५. समीक्षा- संसार और मेरा भर्तार की - हिन्दी

६. समीक्षा- संसार और मेरा भर्तारनी - गुजराती

७. Samiksha - A reply to Sansar Aur Mera Bhartar - English

८. संसार और मेरा भर्तार की समीक्षा का 'उपसंहार' - हिन्दी

९. संसार और मेरा भर्तारनी समीक्षाना 'उपसंहार' - गुजराती

१०. विराट विज्ञान दर्पण - हिन्दी

११. विराट विज्ञान दर्पण - गुजराती

१२. अपना धाम दर्शन (दीनदयाल कृत मझली वृत्त) - हिन्दी

१३. आपणुं घर परमधाम (दीनदयाल कृत बचली वृत्त) - गुजराती

१४. आफ्नै घरको वर्णन (दीनदयाल कृत नेपाली वृत्त) - नेपाली

१५. चर्चनी के प्रश्नोत्तर (दीनदयाल कृत) - हिन्दी

१६. चर्चनीना सवाल-जवाब (दीनदयाल कृत) - गुजराती

१७. विराट विज्ञान दर्पण के सवाल-जवाब (दीनदयाल कृत)- हिन्दी

१८. विराट विज्ञान दर्पणना प्रश्नोत्तर (दीनदयाल कृत) - गुजराती

१९. अष्टादशोऽध्यायः (कुलजम स्वरूप साहेब के) - हिन्दी

२०. अष्टादशोऽध्यायः (" " " ") - गुजराती

२१. अष्टादशोऽध्यायः (" " " ") - नेपाली

२२. पञ्चरोशनी (" " " ") - हिन्दी

२३. पंचरोशनी (" " " ") - गुजराती

२४. पञ्चरोशनी (" " " ") - नेपाली

२५. त्रिरंगी बोध (" " " ") - हिन्दी

२६. त्रिरंगी ज्ञान (" " " ") - गुजराती

२७. द्वादश प्रकाश (" " " ") - हिन्दी

२८. द्वादश प्रकाश (" " " ") - गुजराती

२९. मेहेर सागर-नित्य पाठ (" " " ") - हिन्दी

३०. मेहेर सागर-नित्य पाठ (" " " ") - गुजराती

३१. सेवा-पूजा (दैनिक) - हिन्दी

३२. सेवा-पूजा (दैनिक) - गुजराती

३३. चर्चनी पट दर्शन - हिन्दी

३४. अभिनन्दन ग्रंथ (१०८ श्री दीनदयालजी महाराज हीरक जयन्ती) - हिन्दी

३५. सेवा-पूजा (अर्थ सहित) - गुजराती

३६. अष्ट प्रहर सेवा-पूजा (अर्थ सहित) - गुजराती

३७. स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत
बीतक साहेब के श्री दीनदयाल कृत - हिन्दी
- सवाल-जवाब ३ खण्डों में
१.पूर्वांश-प्रथम खण्ड-मजल शुरूआत से सूरत पर्यन्त
२.मध्यांश-द्वितीय खण्ड-मजल सूरत से उदयपुर पर्यन्त
३.उत्तरांश-तृतीय खण्ड-मजल मंदसोर से बीतक समाप्ति

३८. स्वामी श्री लालदासजी महाराज प्रणीत
बीतक साहेबना श्री दीनदयाल कृत - गुजराती
- प्रश्नोत्तर ३ खण्डोमां
१. पूर्वांश-प्रथम खण्ड-मजल शरूआतथी सूरत पर्यन्त
२. मध्यांश-द्वितीय खण्ड-मजल सूरतथी उदयपुर पर्यन्त
३. उत्तरांश-तृतीय खण्ड-मजल मंदसोरथी बीतक समाप्ति

३९. श्री प्राणनाथजी प्रणीत कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत स्थित
श्री किरंतन और श्री प्रकाश ग्रंथ के 'पुराना किरंतन' और
'भागवत का सार' - हिन्दी

४०. श्री प्राणनाथजी प्रणीत कुलजम स्वरूप साहेब अंतर्गत स्थित
श्री किरंतन अने श्री प्रकाश ग्रंथना 'पुराना किरंतन' अने
'भागवत नो सार' - गुजराती

- पुस्तक क्रम समाप्त ।

❖ प्रणाम ❖

